श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी

जैन कान्फरन्स
स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थ

स्थापना
सन १९०६

स्वर्ण-जयन्ती
सन १९५६

संपादक
भीखालाल गिरधरलाल शेठ
धीरजलाल के० तुरखिया

प्रकाशक
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फरन्स
१३९० चाँदनी चौक, दिल्ली

[तेरहवां अधिवेशन]
भीनासर-बीकानेर
ता० ४-५-६ अप्रैल ५६

ई० सं०
१९५६

वी० सं० २४८२
वि० सं० २०१२

आमुख

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स के ५० वर्षीय स्वर्ण-जयन्ती अधिवेशन के शुभ-प्रसंग पर कॉन्फरन्स के संक्षिप्त इतिहास-ग्रन्थ को प्रकाशित करते हुए अति हर्ष होता है। इस इतिहास का प्रकाशन का भी एक लघुतम इतिहास है। आज से छः माह पूर्व कॉन्फरन्स का इतिहास प्रकाशित करने का विचार उत्पन्न हुआ था और तभी इस विचार को मूर्त रूप देने का निर्णय भी किया गया। किसी भी इतिहास के आलेखन के लिये तद्रूप लेखन-सामग्री व्यवस्थित संपादन करने की समय-मर्यादा, तथा जैन समुदाय की सक्रिय सहानुभूति होना नितान्त आवश्यक है। किन्तु समयाभाव तथा कार्याधिकता के कारण इस स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ को चाहिए जैसा समृद्ध नहीं बना सके इसके लिये हमें खेद है। तदपि ग्रन्थ के गौरव को बढ़ाने के लिये यथाशक्य प्रयत्न किया है। हमको ज्ञात है कि इस जयन्ती-ग्रन्थ को चिरस्मरणीय बनाने के लिये इसके अन्तर्गत अनेक विषयों का समावेश करना अत्यावश्यक था किन्तु हमें यथासमय श्रावक-संघों श्रीमन्तों, विद्वानों तथा संस्थाओं के परिचय-पत्र नहीं मिल सके अतः इस ग्रन्थ में स्थान नहीं दे सके। इसके लिये हम क्षमा-प्रार्थी हैं। हमारी हार्दिक इच्छा है कि यह ग्रन्थ स्था० जैन समाज की भावी डिरेक्टरी बनाने में अवश्यमेव उपयोगी सिद्ध होगा।

यह ग्रन्थ निम्नोक्त नौ परिच्छेदों में विभक्त किया गया है —

प्रथम-परिच्छेद में—जैन संस्कृति, धर्म, साहित्य व तत्त्वज्ञान का संक्षिप्त परिचय

द्वितीय-परिच्छेद में—स्थानकवासी जैनधर्म का संक्षिप्त इतिहास

तृतीय-परिच्छेद में—स्था० जैन कॉन्फरन्स का संक्षिप्त इतिहास

चतुर्थ-परिच्छेद में—स्था० जैन कॉन्फरन्स की विशिष्ट प्रवृत्तियां

पंचम-परिच्छेद में—स्था० जैन साधु-सम्मेलन का संक्षिप्त इतिहास

षष्ठम-परिच्छेद में—स्था० जैनधर्म के उन्नायक मुनिराजों का संक्षिप्त परिचय

सप्तम परिच्छेद में—वर्तमान स्था० साधु-साध्वी नामावली, स्था० जैन धर्म के उन्नायक श्रावकों का संक्षिप्त परिचय

अष्टम-परिच्छेद में—स्था० जैन शिक्षण संस्थाओं, श्रीसंघों, प्रकाशन संस्थाओं तथा पत्र-पत्रिकाओं का संक्षिप्त परिचय

संक्षेपतः इस जयन्ती-ग्रन्थ में स्था० जैन समाज के चतुर्विध श्रीसंघ का संक्षिप्त परिचय देने का यथाशक्य प्रयत्न किया गया है।

जैन शिक्षण संस्थाओं, प्रकाशन संस्थाओं और पत्र-पत्रिकाओं का इस ग्रन्थ में नाम-निर्देश के साथ परिचय देने का सम्यक प्रयत्न किया है। विलंब से मेटर आने के कारण विशेष परिचय दे नहीं सके हैं इसके लिये क्षमार्थी हैं।

इस ग्रन्थ में सार और असार का हंसवृत्तिवत् विवेक करके सारवस्तु को ग्रहण करने तथा योग्य सूचना भिजवाने की विनम्र प्रार्थना है। ताकि भविष्य में उसका सदुपयोग किया जा सके।

जिन २ धर्म प्रेमी बन्धुओं ने इस ग्रन्थ के गौरव को वृद्धिगत करने में अपने नाम अग्रिम ग्राहकश्रेणी में लिखवाये हैं तथा लेखन, संशोधन एवं प्रकाशनादि कार्यों में सक्रिय सहकार प्रदान किया है उन सबको हम इस स्थल पर आभार मानते हैं।

दिल्ली

ता० २६-३-१९५६

निवेदक

भीखालाल गिरधरलाल सेठ

धीरजलाल के० तुरखिया

संपादक—स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थ

प्रथम-परिच्छेद

जैन-संस्कृति, धर्म, साहित्य व तत्वज्ञान का संक्षिप्त-परिचय

संस्कृति का स्रोत

संस्कृति का स्रोत ऐसे नदी के प्रवाह के समान है जो अपने प्रभव-स्थान से अन्त तक अनेक दूसरे छोटे-मोटे जल-स्रोतों से मिश्रित, परिवर्धित और परिवर्तित होकर अनेक दूसरे मिश्रणों से भी युक्त होता रहता है और उद्गमस्थान में पाए जाने वाले रूप, रस, गन्ध तथा स्वाद आदि में कुछ न कुछ परिवर्तन भी प्राप्त करता रहता है। जैन कहलाने वाली संस्कृति भी उस संस्कृति-सामान्य के नियम का अपवाद नहीं है। जिस संस्कृति को आज हम जैन-संस्कृति के नाम से पहचानते हैं उसके सर्वप्रथम आविर्भावक कौन थे और उनसे वह पहिले-पहल किस स्वरूप में उद्गत हुई इसका पूरा पूरा सही वर्णन करना इतिहास की सीमा के बाहर है। फिर भी उस पुरातन-प्रवाह का जो और जैसा स्रोत हमारे सामने है तथा वह जिन आधारों के पट पर बहता चला आया है उस स्रोत तथा उन साधनों के ऊपर विचार करते हुए हम जैन-संस्कृति का हृदय थोड़ा बहुत पहिचान पाते हैं।

जैन-संस्कृति के दो रूप

जैन-संस्कृति के भी, दूसरी संस्कृतियों की तरह, दो रूप हैं। एक बाह्य और दूसरा आन्तर। बाह्य रूप वह है जिसे उस संस्कृति के अलावा दूसरे लोग भी आँख, कान आदि बाह्य इन्द्रियों से जान सकते हैं। पर संस्कृति का आन्तर-स्वरूप ऐसा नहीं होता। क्योंकि किसी भी संस्कृति के आन्तर-स्वरूप का साक्षात् आकलन तो सिर्फ उसी को होता है जो उसे अपने जीवन में तन्मय कर ले। दूसरे लोग उसे जानना चाहें तो साक्षात् दर्शन कर नहीं सकते। पर उस आन्तरसंस्कृतिमय जीवन बिताने वाले पुरुष या पुरुषों के जीवन-व्यवहारों से तथा आस-पास के वातावरण पर पड़ने वाले उनके प्रभावों से वे किसी भी आन्तर-रूप का, संस्कृति का अन्दाज़ा लगा सकते हैं। संस्कृति का हृदय या उसकी आत्मा इतनी व्यापक और स्वतन्त्र होती है कि उसे देश, काल, जात पांत, भाषा और रीति-रस्म आदि बाह्य-स्वरूप न तो सीमित कर सकते हैं और न अपने साथ बांध सकते हैं।

जैन-संस्कृति का हृदय-निवर्त्तक-धर्म

अब प्रश्न यह है कि जैन-संस्कृति का हृदय क्या चीज है? उसका संक्षिप्त जवाब तो यही है कि निवर्त्तक धर्म जैन संस्कृति की आत्मा है। जो धर्म निवृत्ति कराने वाला अर्थात् पुनर्जन्म के चक्र का नाश करने वाला हो या उस निवृत्ति के साधनरूप से जिस धर्म का आविर्भाव, विकास और प्रचार हुआ हो वह निवर्त्तक-धर्म कहलाता है। यह निवर्त्तक-धर्म, प्रवर्त्तक-धर्म का बिल्कुल विरोधी है। प्रवर्त्तक-धर्म का उद्देश्य समाज-व्यवस्था के

साथ-साथ जन्मान्तर का सुधार करता है, न कि जन्मान्तर का उच्छेद। प्रवर्त्तक-धर्म के अनुसार काम, अर्थ और धर्म, तीन पुरुषार्थ हैं। उसमें मोक्ष नामक चौथे पुरुषार्थ की कोई कल्पना नहीं है। प्रवर्त्तक धर्मानुयायी जिन उच्च और उच्चतर धार्मिक अनुष्ठानों से इस लोक तथा परलोक के उत्कृष्ट सुखों के लिए प्रयत्न करते थे उन धार्मिक अनुष्ठानों को निवर्त्तक-धर्मानुयायी अपने साध्य मोक्ष या निवृत्ति के लिए न केवल अपर्याप्त ही समझते बल्कि वे उन्हें मोक्ष पाने में बाधक समझ कर उन सब धार्मिक अनुष्ठानों को आत्यन्तिक हेय बतलाते थे। उद्देश्य और दृष्टि में पूर्व-पश्चिम जितना अन्तर होने से प्रवर्त्तक-धर्मानुयायियों के लिए जो उपादेय वही निवर्त्तक-धर्मानुयायियों के लिए हेय बन गया। यद्यपि मोक्ष के लिए प्रवर्त्तक-धर्म बाधक माना गया पर साथ ही मोक्षवादियों को अपने साध्य मोक्ष-पुरुषार्थ के उपादेयरूप से किसी सुनिश्चित मार्ग की खोज करना भी अनिवार्य-रूप से प्राप्त था। इस खोज की सूझ ने उन्हें एक ऐसा उपाय सुझाया जो किसी बाहरी साधन पर निर्भर न था। वह एकमात्र साधक की अपनी विचार शुद्धि और वर्त्तन-शुद्धि पर अवलंबित था। यही विचार और वर्तन की आत्यन्तिक शुद्धि का मार्ग निवर्त्तक धर्म के नाम से या मोक्ष-मार्ग के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

हम भारतीय-सस्कृति के विचित्र और विविध ताने-बाने जांच करते हैं तब हमे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि भारतीय आत्मवादी दर्शनों मे कर्म-काण्डी मीमासक के अलावा सभी निवर्त्तक धर्मवादी हैं। अवैदिक माने जाने वाले बौद्ध और जैन-दर्शन की सस्कृति तो मूल मे निवर्त्तक धर्मस्वरूप है ही पर वैदिक समझे जाने वाले न्याय-वैशेषिक, सांख्य, योग तथा औपनिषद-दर्शन की आत्मा भी निवर्त्तक-धर्म पर ही प्रतिष्ठित है। वैदिक हो या अवैदिक सभी निवर्त्तक-धर्म, प्रवर्त्तक-धर्म को या यज्ञ-यागादि अनुष्ठानों को अन्त मे हेय ही बतलाते हैं। और वे सभी सम्यग् ज्ञान या आत्म-ज्ञान को तथा आत्मज्ञानमूलक अनासक्त जीवन-व्यवहार को तथा आत्मज्ञानमूलक अनासक्त जीवन व्यवहार को उपादेय मानते है एव उसी के द्वारा पुनर्जन्म के चक्र से छुट्टी पाना सम्भव बतलाते हैं।

निवर्त्तक-धर्म के मन्तव्य और आचार

शताब्दियों ही नहीं बल्कि सहस्राब्दि पहिले से लेकर जो धीरे-धीरे निवर्त्तक-धर्म के अङ्ग-प्रत्यङ्ग रूप से अनेक मन्तव्यों और आचारों का भ० महावीर-बुद्ध तक के समय मे विकास हो चुका था वे सक्षेप मे ये हैं :—

१ आत्म शुद्धि ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है, न कि ऐहिक या पारलौकिक किसी भी पद का महत्त्व।

२ इस उद्देश्य की पूर्ति मे बाधक आध्यात्मिक मोह, अविद्या और तज्जन्य तृष्णा का मूलोच्छेद करना।

३ इसके लिए आध्यात्मिक ज्ञान और उसके द्वारा सारे जीवन व्यवहार को पूर्ण निस्तृष्ण बनाना। इसके वास्ते शारीरिक, मानसिक, वाचिक, विविध तपस्याओं का तथा नाना प्रकार के ध्यान, योग-मार्ग का अनुसरण और तीन, चार या पाच महाव्रतों का यावज्जीवन अनुष्ठान करना।

४. किसी भी आध्यात्मिक वर्णन वाले वचनों को ही प्रमाणरूप से मानना, न कि ईश्वरीय या अपौरुषेय रूप से स्वीकृत किसी खास भाषा में रचित ग्रन्थों को।

५. योग्यता और गुरुपद की कसौटी एकमात्र जीवन की आध्यात्मिक शुद्धि, न कि जन्मसिद्ध वर्ण-विशेष। इस दृष्टि से स्त्री और शूद्र तक का धर्माधिकार उतना ही है, जितना एक ब्राह्मण और क्षत्रिय पुरुष का।

६. मद्य, मांस आदि का धार्मिक और सामाजिक-जीवन में निषेध। ये तथा इनके जैसे लक्षण जो प्रवर्त्तक-धर्म के आचारों और विचारों से जुदा पड़ते थे वे देश में जड़ जमा चुके थे और दिन-ब-दिन विशेष बल पकड़ते जाते थे।

निग्रंथ जैन-धर्म

न्यूनाधिक उक्त लक्षणों को धारण करने वाली अनेक सस्थाओं और सम्प्रदायों मे एक ऐसा पुराना निवर्त्तक-धर्मी सम्प्रदाय था, जो भ० महावीर के पहिले बहुत शताब्दियों से अपने खास ढंग से विकास करता जा रहा था। इसी सम्प्रदाय मे पहिले अभिनन्दन ऋषभदेव, यदुनन्दन, नेमिनाथ और काशीराजपुत्र पार्श्वनाथ हो चुके थे, या वे इस सम्प्रदाय में मान्य पुरुष बन चुके थे। इसी सम्प्रदाय के समय-समय पर अनेक नाम प्रसिद्ध रहे। यति, भिक्षु, मुनि, अणगार, श्रमण आदि जैसे नाम तो इस सम्प्रदाय के लिए व्यवहृत होते थे पर जब दीर्घ-तपस्वी महावीर इस सम्प्रदाय के मुखिया बने तब समवतः वह सम्प्रदाय 'निर्ग्रन्थ' नाम से विशेष प्रसिद्ध हुई। आज 'जैन' शब्द से महावीर-पोषित सम्प्रदाय के 'त्यागी', 'गृहस्थ' सभी अनुयायिओं का जो बोध होता है इसके लिए पहिले 'निग्गथ' और 'समणोवासग' आदि 'जैन शब्द व्यवहृत होते थे।

जैन-संस्कृति का प्रभाव

यों तो सिद्धान्ततः सर्वभूतदया को सभी मानते हैं पर प्राणिरक्षा के ऊपर जितना जोर जैन-परपरा ने दिया, जितनी लगन मे उसने इस विषय मे काम किया उसका नतीजा सारे ऐतिहासिक-युग मे यह रहा है कि जहां-जहां और जब-जब जैन लोगों का एक या दूसरे क्षेत्र मे प्रभाव रहा सर्वत्र आम जनता पर प्राणिरक्षा का प्रबल सस्कार पड़ा है। यहां तक कि भारत के अनेक भागो मे अपने को अजैन कहने वाले तथा जैन-विरोधी समझने वाले साधारण लोग भी जीव-मात्र की हिंसा से नफरत करने लगे हैं। अहिंसा के इस सामान्य सस्कार के ही कारण अनेक वैष्णव आदि जैनेतर परम्पराओं के आचार-विचार पुरानी वैदिक-परम्परा से बिल्कुल जुदा हो गए हैं। तपस्या के बारे मे भी ऐसा ही हुआ है। त्यागी हो या गृहस्थ सभी जैन तपस्या के ऊपर अधिकाधिक झुकते रहे है। इसका फल पड़ोसी समाजो पर इतना अधिक पड़ा है कि उन्होंने भी एक या दूसरे रूप से अनेकविध सात्विक तपस्याए अपना ली है। और सामान्य रूप से साधारण जनता जैनों की तपस्या की ओर आदरशील रही है। यहां तक कि अनेक बार मुसलमान सम्राट् तथा दूसरे समर्थ अधिकारियों ने तपस्या से आकृष्ट होकर जैन-सम्प्रदाय का बहुमान ही नहीं किया है बल्कि उसे अनेक सुविधाएं भी दी हैं, मद्य-मांस आदि सात व्यसनों को रोकने तथा उन्हें घटाने के लिए जैन-धर्म ने इतना अधिक प्रयत्न किया है कि जिससे वह व्यसनसेवी अनेक जातियों में सुसमर्थ हुआ है। यद्यपि बौद्ध आदि दूसरे सम्प्रदाय पूरे बल से इस सुसस्कार के लिए प्रयत्न करते रहे पर जैनों का प्रयत्न इस दिशा में आज तक जारी है और जहां जैनों का प्रभाव ठीक-ठीक है वहां इस स्वैर-विहार के स्वतंत्र युग में भी मुसलमान और दूसरे मांसभक्षी लोग भी खुल्लम-खुल्ला मद्य-मांस का उपभोग करने मे सकुचाते हैं। लोकमान्य तिलक ने ठीक ही कहा था कि गुजरात आदि प्रान्तों मे जो प्राणिरक्षा और निर्मांस-भोजन का आग्रह है वह जैन-परम्परा का ही प्रभाव है।

जैन-विचारसरणी का मौलिक सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक वस्तु का विचार अधिकाधिक पहलुओं और अधिकाधिक दृष्टिकोणों से करना और विवादास्पद विषय में बिल्कुल अपने विरोधी-पक्ष के अभिप्राय को भी उतनी

ही सहानुभूति से समझने का प्रयत्न करना जितनी कि सहानुभूति अपने पक्ष की ओर हो। और अन्त में समन्वय पर ही जीवन व्यवहार का फैसला करना। यों तो यह सिद्धान्त सभी विचारकों के जीवन में एक या दूसरे रूप से काम करता ही रहता है। इसके सिवाय प्रजाजीवन न तो व्यवस्थित बन सकता है और न शांति लाभ कर सकता है। पर जैन विचारकों ने उस सिद्धांत की इतनी अधिक चर्चा की है और उस पर इतना अधिक जोर दिया है कि जिससे कट्टर-से-कट्टर विरोधी सम्प्रदायों को भी कुछ-न-कुछ प्रेरणा मिलती ही रही है। रामानुज का विशिष्टाद्वैत, उपनिषद् की भूमिका के ऊपर अनेकान्तवाद ही तो है।

जैन-परम्परा के आदर्श

जैन-संस्कृति के हृदय को समझने के लिए हमें थोड़े से उन आदर्शों का परिचय करना होगा जो पहिले से आज तक जैन परम्परा में एक से मान्य हैं और पूजे जाते हैं। सब से पुराना आदर्श जैन-परम्परा के सामने ऋषभदेव और उनके परिवार का है। भ० ऋषभदेव ने अपने जीवन का बहुत बडा भाग उन जवाबदेहियों को बुद्धि पूर्वक अदा करने मे बिताया जो प्रजापालन की जिम्मेवरी के साथ उन पर आ पडी थी। उन्होंने उस समय के बिल्कुल अपढ़ लोगों को लिखना-पढ़ना सिखाया, कुछ काम-धन्धा जानने वाले वनचरों को उन्होंने खेती-बाडी तथा बढ़ई, कुम्हार आदि के जीवनोपयोगी धन्धे सिखाए, आपस में कैसे बरतना, कैसे समाज-नियमों का पालन करना यह सिखाया। जब उनको महसूस हुआ कि अब बडा पुत्र भरत प्रजाशासन की सब जवाबदेहियों को निबाह लेगा तब उसे राज्य-भार सौंप कर गहरे आध्यात्मिक प्रश्नो की छान-बीन के लिए उत्कट तपस्वी होकर घर से निकल पड़े।

ऋषभदेव की दो पुत्रियां ब्राह्मी और सुन्दरी नाम की थीं। उस जमाने मे भाई-बहिन के बीच शादी की प्रथा युगल-युग में प्रचलित थी। सुन्दरी ने इस प्रथा का विरोध करके अपनी सौम्य तपस्या से भाई भरत पर ऐसा प्रभाव डाला कि जिससे भरत ने न केवल सुन्दरी के साथ विवाह करने का विचार ही छोड़ा बल्कि वह उसका भक्त बन गया। ऋग्वेद के यमीसूक्त मे भाई यम ने भगिनी यमी की लग्न-मांग को तपस्या में परिणत कर दिया और फलत' भाई-बहिन के लग्न की युगल-युग में प्रतिष्ठित प्रथा ही नाम-शेष हो गई।

ऋषभ के भरत और बाहुबली नामक पुत्रों में राज्य के निमित्त भयानक युद्ध शुरू हुआ। अन्त में द्वन्द्व युद्ध का फैसला हुआ। भरत का प्रचण्ड-प्रहार निष्फल गया। जब बाहुबली की बारी आई तो समर्थतर बाहुबली को जान पडा कि मेरे मुष्टि-प्रहार से भरत की अवश्य दुर्दशा होगी तब उसने उस भ्रातृविजयाभिमुख क्षण को आत्मविजय मे बदल दिया। उसने यह सोचा कि राज्य के निमित्त लड़ाई में विजय पाने और वैर, प्रतिवैर तथा कुटुम्ब-कलह के बीज बोने की अपेक्षा सच्ची विजय अहकार और तृष्णा-जय मे ही है। उसने अपने बाहुबल को क्रोध और अभिमान पर ही जमाया और अवैर से वैर के प्रतिकार का जीवन-दृष्टान्त स्थापित किया। फल यह हुआ कि अन्त मे भरत का भी लोभ तथा गर्व खर्व हुआ।

एक समय था जब कि केवल क्षत्रियों में ही नहीं पर सभी वर्गों मे मांस खाने की प्रथा थी। नित्यप्रति के भोजन, सामाजिक-उत्सव, धार्मिक-अनुष्ठान के अवसरों पर पशु-पक्षियों का वध ऐसा ही प्रचलित और प्रतिष्ठित था जैसे आज नारियलों और फलों का चढ़ाना। उस युग मे यदुनन्दन नेमिकुमार ने एक अजीब कदम उठाया। उन्होंने अपनी शादी पर भोजन के वास्ते कत्ल किये जाने वाले निर्दोष पशु-पक्षियों की आर्त्त मूक वाणी से सहसा पिघल कर निश्चय किया कि वे ऐसी शादी न करेंगे जिसमें अनावश्यक और निर्दोष पशु पक्षियों का वध होता

हो। उस गम्भीर निश्चय के साथ वे सबकी सुनी अनसुनी करके बारात से शीघ्र वापिस लौट आए। द्वारका से सीधे गिरनार पर्वत पर जाकर उन्होंने तपस्या की। कौमारवय मे राजपुत्री का त्याग और ध्यान-तपश्चर्या का मार्ग अपना कर उन्होंने उस चिर-प्रचलित पशु-पक्षी-वध की प्रथा पर आत्म-दृष्टान्त से इतना सख्त प्रहार किया कि जिससे गुजरात-भर में और गुजरात के प्रभाव वाले दूसरे प्रान्तों में भी वह प्रथा नाम-शेष हो गई और जगह जगह आज तक चली आने वाली पिंजरापोलों की लोकप्रिय संस्थाओं मे परिवर्तित हो गई।

भ० पार्श्वनाथ का जीवन-आदर्श कुछ और ही रहा है। उन्होंने एक बार दुर्वासा जैसे सहजकोपी तापस तथा उनके अनुयायियों की नाराजगी का खतरा उठाकर भी एक जलते सांप को गीली लकड़ी से बचाने का प्रयत्न किया। फल यह हुआ कि आज भी जैन-प्रभाव वाले क्षेत्रों में कोई सांप तक को नहीं मारता।

दीर्घ-तपस्वी महावीर ने भी एक बार अपनी अहिंसा वृत्ति की पूरी साधना का ऐसा ही परिचय दिया। जब जगल मे वे ध्यानस्थ खडे थे, एक प्रचण्ड विषधर ने उन्हें डस लिया, उस समय वे न केवल ध्यान में अचल ही रहे बल्कि उन्होंने मैत्री-भावना का उस विषधर पर प्रयोग किया जिससे वह 'अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्याग ।' इस योगसूत्र का जीवित उदाहरण बन गया। अनेक प्रसगों पर यज्ञ-यागादि धार्मिक कार्यों में होने वाली हिंसा को तो रोकने का भरसक प्रयत्न वे आजन्म करते ही रहे।

ऐसे ही आदर्शों से जैन-सस्कृति उत्प्राणित होती आई है और अनेक कठिनाइयों के बीच भी उसने अपने आदर्शों के हृदय को किसी न किसी तरह सभालने का प्रयत्न किया है, जो भारत के धार्मिक, सामाजिक और राजकीय इतिहास मे जीवित है। जब कभी सुयोग मिला तभी त्यागी तथा राजा, मन्त्री तथा व्यापारी आदि गृहस्थों ने जैन-सस्कृति के अहिंसा, तप और सयम के आदर्शों का अपने ढग से प्रचार किया।

संस्कृति का उद्देश्य

संस्कृति मात्र का उद्देश्य है मानवता की भलाई की ओर आगे बढ़ना। यह उद्देश्य तभी वह साध सकती है जब वह अपने जनक और पोषक राष्ट्र की भलाई में योग देने की ओर सदा अग्रसर रहे। किसी भी संस्कृति के बाह्य अङ्ग केवल अभ्युदय के समय ही पनपते हैं और ऐसे ही समय वे आकर्षक लगते हैं। पर संस्कृति के हृदय की बात जुदी है। समय आफत का हो या अभ्युदय का, उसकी अनिवार्य आवश्यकता सदा एक सी बनी रहती है। कोई भी सस्कृति केवल अपने इतिहास और पुरानी यशोगाथाओं के सहारे न जीवित रह सकती है और न प्रतिष्ठा पा सकती है जब तक वह भावी निर्माण में योग न दे। इस दृष्टान्त से भी जैन-सस्कृति पर विचार करना संगत है। हम ऊपर बतला आए हैं कि यह सस्कृति मूलतः प्रवृत्ति, अर्थात् पुनर्जन्म से छुटकारा पाने की दृष्टि से आविर्भूत हुई। इसके आचार-विचार का सारा ढाचा उसी लक्ष्य के अनुकूल बना है। पर हम यह भी देखते हैं कि आखिर में वह सस्कृति व्यक्ति तक सीमित न रही। उसने एक विशिष्ट समाज का रूप धारण किया।

निवृत्ति और प्रवृत्ति

समाज कोई भी हो वह एक मात्र निवृत्ति की भूल-भुलैयों पर न जीवित रह सकता है और न वास्तविक निवृत्ति ही साध सकता है। यदि किसी तरह निवृत्ति को न मानने वाले और सिर्फ प्रवृत्तिचक्र का ही महत्त्व मानने वाले आखिर में उस प्रवृत्ति के तूफान और आंधी में ही फंसकर मर सकते हैं तो यह भी उतना ही सच है कि प्रवृत्ति का आश्रय बिना लिये निवृत्ति हवा का किला ही बन जाता है। ऐतिहासिक और दार्शनिक सत्य यह है कि

प्रवृत्ति और निवृत्ति एक ही मानव-कल्याण के सिक्के के दो पहलू हैं। दोष, गलती, बुराई और अकल्याण से तब तक कोई नहीं बच सकता जब तक वह साथ उसकी एवज में सद्गुणों की पुष्टि और कल्याणमय प्रवृत्ति में बल न लगावे। कोई भी बीमार केवल अपथ्य और कुपथ्य से निवृत्त होकर जीवित नहीं रह सकता। उसे साथ-ही-साथ पथ्य सेवन करना चाहिए। शरीर से दूषित रक्त को निकाल डालना जीवन के लिये अगर जरूरी है तो उतना ही जरूरी उसमें नए रुधिर का सचार करना भी है।

निवृत्तिलक्षी प्रवृत्ति

ऋषभ से लेकर आज तक निवृत्तिगामी कहलाने वाली जैन-संस्कृति भी जो किसी न किसी प्रकार जीवित रही है वह एक मात्र निवृत्ति के बल पर नहीं किन्तु कल्याणकारी प्रवृत्ति के सहारे पर। यदि प्रवर्त्तक-धर्मी ब्राह्मणों ने निवृत्ति मार्ग के सुन्दर तत्त्वों को अपनाकर एक व्यापक कल्याणकारी संस्कृति का ऐसा निर्माण किया है जो गीता में उज्जीवित होकर आज नये उपयोगी स्वरूप में गांधीजी के द्वारा पुनः अपना संस्करण कर रही है तो निवृत्तिलक्षी जैन-संस्कृति को भी कल्याणाभिमुख आवश्यक प्रवृत्तियों का सहारा लेकर ही आज की बदली हुई परिस्थिति में जीना होगा। जैन-संस्कृति में तत्त्वज्ञान और आचार के जो मूल नियम हैं और वह जिन आदर्शों को आज तक पूंजी मानती आई है उनके आधार पर वह प्रवृत्ति का ऐसा मंगलमय योग साध सकती है जो सबके लिए क्षेमकर हो।

श्रमण-परम्परा के प्रवर्तक

श्रमण-धर्म के मूल प्रवर्तक कौन कौन थे, वे कहाँ कहाँ और कब हुए इसका यथार्थ और पूरा इतिहास अद्यावधि अज्ञात है पर हम उपलब्ध साहित्य के आधार से इतना तो निःशंक कह सकते हैं कि नाभिपुत्र ऋषभ तथा आदि विद्वान् कपिल ये साम्य धर्म के पुराने और प्रबल समर्थक थे। यही कारण है कि उनका पूरा इतिहास अंधकार-ग्रस्त होने पर भी पौराणिक-परंपरा में से उनका नाम लुप्त नहीं हुआ है। ब्राह्मण-पुराण ग्रंथों में ऋषभ का उल्लेख उग्र तपस्वी के रूप में है सही पर उनकी पूरी प्रतिष्ठा तो केवल जैन परंपरा में ही है, जब कि कपिल का ऋषि रूप से निर्देश जैन कथा-साहित्य में है फिर भी उनकी पूर्ण प्रतिष्ठा तो सांख्य-परंपरा में तथा सांख्यमूलक-पुराण ग्रंथों में ही है। ऋषभ और कपिल आदि द्वारा जिस आत्मौपम्य भावना की और तन्मूलक अहिंसा-धर्म की प्रतिष्ठा जमी थी उस भावना और उस धर्म की पोषक अनेक शाखा-प्रशाखायें थीं जिनमें से कोई बाह्य तप पर, तो कोई ध्यान पर, तो कोई मात्र चित्तशुद्धि या असंगता पर अधिक भार देती थी, पर साम्य या समता सब का समान ध्येय था।

जिस शाखा ने साम्यसिद्धि-मूलक अहिंसा को सिद्ध करने के लिए अपरिग्रह पर अधिक भार दिया और उसी में से अगार-गृह-ग्रंथ या परिग्रहबंधन के त्याग पर अधिक भार दिया और कहा कि जब तक परिवार एवं परिग्रह का बंधन हो तब तक कभी पूर्ण अहिंसा या पूर्ण साम्य सिद्ध हो नहीं सकता, श्रमणधर्म की वही शाखा निर्ग्रन्थ नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके प्रधान प्रवर्तक नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथ ही जान पड़ते हैं।

वीतरागता का आग्रह

अहिंसा की भावना के साथ-साथ तप और त्याग की भावना अनिवार्य रूप से निर्ग्रन्थ धर्म में प्रथित तो हो ही गई थी परंतु साधकों के मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि बाह्य तप और बाह्य त्याग पर अधिक भार

देने से क्या आत्मशुद्धि या साम्य पूर्णतया सिद्ध होना सभव है ? इसी के उत्तर मे से यह विचार फलित हुआ कि राग-द्वेष आदि मलिन वृत्तियों पर विजय पाना ही मुख्य साध्य है। इस साध्य की सिद्धि जिस अहिंसा, जिस तप या जिस त्याग से न हो सके वह अहिंसा, तप या त्याग कैसा ही क्यों न हो पर आध्यात्मिक दृष्टि से अनुपयोगी है। इसी विचार के प्रवर्तक 'जिन', कहलाने लगे। ऐसे जिन अनेक हुए हैं। सच्चक, बुद्ध, गोशालक और महावीर ये सब अपनी-अपनी परम्परा में जिन रूप से प्रसिद्ध रहे हैं परतु आज जिनकथित जैन धर्म कहने से मुख्यतया महावीर के धर्म का ही बोध होता है जो राग-द्वेष के विजय पर ही मुख्यतया भार देता है। धर्म विकास का इतिहास कहता है कि उत्तरोत्तर उदय मे आने वाली नयी-नयी धर्म की अवस्थाओं मे उस-उस धर्म की पुरानी अविरोधी अवस्थाओं का समावेश अवश्य रहता है। यही कारण है कि जैन धर्म निर्ग्रन्थ-धर्म भी है और श्रमण-धर्म भी है।

श्रमण-धर्म की साम्य दृष्टि

अब हमें देखना यह है कि श्रमण-धर्म की प्राणभूत साम्य-भावना का जैन परपरा में क्या स्थान है ? जैन श्रुत रूप से प्रसिद्ध द्वादशांगी या चतुर्दश पूर्व में 'सामाइय'—'सामायिक' का स्थान प्रथम है, जो आचारांग सूत्र कहलाता है। जैनधर्म के अतिम तीर्थंकर महावीर के आचार-विचार का सीधा और स्पष्ट प्रतिबिम्ब मुख्यतया उसी सूत्र में देखने को मिलता है। इसमें जो कुछ कहा गया है उस सब मे साम्य, समता या सम पर ही पूर्णतया भार दिया गया है।' 'सामा' इस प्राकृत या मागधी शब्द का सबध साम्य, समता या सम से है। साम्य-दृष्टिमूलक और साम्य-दृष्टि पोषक जो-जो आचार-विचार हों वे सब सामाइय-सामायिक रूप से जैन-परपरा में स्थान पाते हैं। जैसे ब्राह्मण-परपरा मे सन्ध्या एक आवश्यक कर्म है वैसे ही जैन-परपरा मे भी गृहस्थ और त्यागी सब के लिए छः आवश्यक कर्म बतलाये हैं जिनमें मुख्य सामाइय है। अगर सामाइय न हो तो और कोई आवश्यक सार्थक नहीं है। गृहस्थ या त्यागी अपने-अपने अधिकारानुसार जब-जब धार्मिकजीवन को स्वीकार करता है तब-तब वह 'करेमि भते ! सामाइय' ऐसी प्रतिज्ञा करता है। इसका अर्थ है कि हे भगवन् ! मैं समता या समभाव को स्वीकार करता हूँ। इस समता का विशेष स्पष्टीकरण आगे के दूसरे ही पद में किया गया है। उसमें कहा है कि मैं सावद्ययोग अर्थात् पाप व्यापार का यथाशक्ति त्याग करता हूँ। 'सामाइय' की ऐसी प्रतिष्ठा होने के कारण सातवीं सदी के सुप्रसिद्ध विद्वान जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने उस पर विशेषावश्यकभाष्य नामक अति विस्तृत ग्रंथ लिख कर बतलाया है कि धर्म के अ गभूत श्रद्धा, ज्ञान और चारित्र ये तीनों ही 'सामाइय' हैं।

सच्ची वीरता के विषय में जैन धर्म

साख्य, योग और भागवत जैसी अन्य परपराओं मे पूर्व काल मे सम्यदृष्टि की जो प्रतिष्ठा थी उसीका आधार लेकर भगवद्गीताकार ने गीता की रचना की है। यही कारण है कि हम गीता मे स्थान-स्थान पर समदर्शी साम्य, समता जैसे शब्दों के द्वारा साम्यदृष्टि का ही समर्थन पाते हैं। गीता और आचारांग की साम्य भावना मूल में एक ही है, फिर भी वह परपरा भेद से अन्यान्य भावनाओं के साथ मिलकर भिन्न हो गई है। अर्जुन को साम्य भावना के प्रबल आवेग के समय भी भैक्ष्य-जीवन स्वीकार करने से गीता रोकती है और शस्त्रयुद्ध का आदेश करती है, जब कि आचाराग-सूत्र अर्जुन को ऐसा आदेश न कर के यही कहेगा कि अगर तुम सचमुच क्षत्रिय वीर हो तो साम्यदृष्टि आने पर हिंसक शस्त्रयुद्ध नहीं कर सकते बल्कि भैक्ष्यजीवन पूर्वक आध्यात्मिक शत्रु के साथ युद्ध के द्वारा ही सच्चा क्षत्रियत्व सिद्ध कर सकते हो। इस कथन की द्योतक भरत-बाहुबली की कथा

जैन साहित्य मे प्रसिद्ध है, जिसमें कहा गया है कि सहोदर भरत के द्वारा-उग्र प्रहार पाने के बाद बाहुबली ने जब प्रतिकार के लिए हाथ उठाया तभी समभाव की वृत्ति के आवेग मे बाहुबली ने भैक्ष्यजीवन स्वीकार किया पर प्रतिप्रहार करके न तो भरत का बदला चुकाया और न उससे अपना न्यायोचित राज्यभाग लेने का सोचा। गांधीजी ने गीता और आचारांग आदि मे प्रतिपादित साम्य भाव को अपने जीवन मे यथार्थ रूप से विकसित किया और उसके बल पर कहा कि मानव संहारक युद्ध तो छोड़ो, पर साम्य या चित्तशुद्धि के बल पर ही अन्याय के प्रतिकार का मार्ग भी ग्रहण करो। पुराने सन्यास या त्यागी जीवन का ऐसा अर्थ-विकास गांधीजी ने समाज में प्रतिष्ठित किया है।

साम्य-दृष्टि और अनेकान्तवाद

जैन-परपरा का साम्य-दृष्टि पर इतना अधिक भार है कि उसने साम्य-दृष्टि को ही ब्राह्मण-परपरा में लब्धप्रतिष्ठ ब्रह्म कहकर साम्यदृष्टिपोषक सारे आचार विचार को 'ब्रह्मचर्य' 'बम्भचेराई' कहा है, जैसा कि बौद्ध मे परपरा ने मैत्री आदि भावनाओं को ब्रह्मविहार कहा है। इतना ही नहीं पर धम्मपद और शांतिपर्व की तरह जैन ग्रथ में भी समत्व धारण करनेवाले श्रमण को ही ब्राह्मण कहकर श्रमण और ब्राह्मण के बीच का अंतर मिटाने का प्रयत्न किया है।

साम्य-दृष्टि जैन परपरा मे मुख्यतया दो प्रकार से व्यक्त हुई है—(१) आचार में (२) विचार में। जैन धर्म का बाह्य अभ्यन्तर, स्थूल-सूक्ष्म सब आचार साम्य-दृष्टि मूलक अहिंसा के केन्द्र के आस-पास ही निर्मित हुआ है। जिस आचार के द्वारा अहिंसा की रक्षा और पुष्टि न होती हो ऐसे किसी भी आचार को जैन-परंपरा मान्य नहीं रखती। यद्यपि सब धार्मिक-परपराओं ने अहिंसा-तत्त्व पर न्यूनाधिक भार दिया पर जैन परंपरा ने उस तत्त्व पर जितना भार दिया है और उसे जितना व्यापक बनाया है उतना भार और उतनी व्यापकता अन्य धर्म परपरा मे देखी नहीं जाती। मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतग और वनस्पति ही नहीं बल्कि पार्थिव जलीय आदि सूक्ष्मातिसूक्ष्म जन्तुओं तक की हिंसा से आत्मौपम्य की भावना द्वारा निवृत्त होने के लिए कहा गया है।

विचार मे साम्य-दृष्टि की भावना पर जो भार दिया गया है उसी मे से अनेकान्त-दृष्टि या विभाज्यवाद का जन्म हुआ है। केवल अपनी दृष्टि या विचारसरणी को ही पूर्ण अन्तिम सत्य मान कर उस पर आग्रह रखना यह साम्य दृष्टि के लिए घातक है। इसलिए कहा गया है कि दूसरों की दृष्टि का भी उतना ही आदर करना जितना अपनी दृष्टि का। यही साम्य दृष्टि अनेकान्तवाद की भूमिका है। इस भूमिका मे से ही भाषाप्रधान स्याद्वाद और विचारप्रधान नयवाद का क्रमश: विकास हुआ है। मीमांसक और कपिल दर्शन के उपरात न्याय दर्शन में भी अनेकान्तवाद का स्थान है। महात्मा बुद्ध का विभाज्यवाद और मध्यममार्ग भी अनेकान्त दृष्टि के ही फल हैं, फिर भी जैन परपरा ने जैसे अहिंसा पर अत्यधिक भार दिया है वैसे ही उसने अनेकान्त दृष्टि पर भी अत्यधिक भार दिया है। इस लिए जैन-परपरा मे आचार या विचार का कोई भी विषय ऐसा नहीं है जिस पर अनेकान्तदृष्टि लागू न की गई हो या जो अनेकान्त दृष्टि की मर्यादा से बाहर हो। यही कारण है कि अन्यान्य परपराओं के विद्वानो ने अनेकांत-दृष्टि को मानते हुए भी उस पर स्वतत्र साहित्य रचा नहीं है, जब कि जैन परपरा के विद्वानों ने उसके अंगभूत स्याद्वाद, नयवाद आदि के बोधक और समर्थक विपुल स्वतत्र साहित्य का निर्माण किया है।

अहिंसा

हिंसा से निवृत्त होना ही अहिंसा है। यह विचार तब तक पूरा समझ में आ नहीं सकता जब तक यह न बतलाया जाय कि हिंसा किस की होती है और हिंसा कौन और किस कारण से करता है और उसका परिणाम क्या है। इसी प्रश्न को स्पष्ट समझाने की दृष्टि से मुख्यतया चार विद्यायें जैन परंपरामें फलित हुई हैं–(१) आत्मविद्या (२) कर्मविद्या (३) चारित्रविद्या और (४) लोकविद्या। इसी तरह अनेकांत-दृष्टि के द्वारा मुख्यतया श्रुतविद्या और प्रमाणविद्या का निर्माण व पोषण हुआ है। इस प्रकार अहिंसा, अनेकांत और तन्मूलक विद्यायें ही जैन धर्म का प्राण हैं जिस पर आगे संक्षेप में विचार किया जाता है।

आत्मविद्या और उत्क्रान्तिवाद

प्रत्येक आत्मा चाहे वह पृथ्वीगत, जलगत, या वनस्पतिगत हो या कीट, पतंग, पशु, पक्षी-रूप हो या मानव रूप हो वह सब तात्त्विक दृष्टि से समान है। यही जैन आत्मविद्या का सार है। समानता के इस सैद्धान्तिक विचार को अमल में लाना उसे यथासंभव जीवन व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र में उतारने के भाव से प्रयत्न करना यही अहिंसा है। आत्मविद्या कहती है कि यदि जीवन-व्यवहार में साम्य का अनुभव न हो तो आत्म साम्य का सिद्धान्त कोरा वाद मात्र है। समानता के सिद्धान्त को अमली बनाने के लिए ही आचारांग-सूत्र के अध्ययन में कहा गया है कि जैसे तुम अपने दुःख का अनुभव करते हो वैसे ही पर दुःख का अनुभव करो। अर्थात् अन्य के दुःख का आत्मीय दुःख रूप में संवेदन न हो तो अहिंसा सिद्ध होना संभव नहीं।

जैसे आत्म समानता के तात्त्विक विचार में से अहिंसा के आचार का समर्थन किया गया है वैसे ही उसी विचार में से जैन-परंपरा में यह भी आध्यात्मिक मंतव्य फलित हुआ है कि जीवगत शारीरिक, मानसिक आदि वैषम्य कितना ही क्यों न हो पर आगंतुक है–कर्ममूलक है, वास्तविक नहीं है। अतएव क्षुद्र अवस्था में पड़ा हुआ जीव भी कभी मानवकोटि में आ सकता है और मानव कोटिगत जीव भी क्षुद्रतम वनस्पति अवस्था में जा सकता है, इतना ही नहीं बल्कि वनस्पति जीव विकास के द्वारा मनुष्य की तरह कभी सर्वथा बंधनमुक्त हो सकता है। ऊँच-नीच गति या योनि का एवं सर्वथा मुक्ति का आधार एक मात्र कर्म है। जैसा कर्म, जैसा संस्कार या जैसी वासना वैसी ही आत्मा की अवस्था, पर तात्त्विक रूप से सब आत्माओं का स्वरूप सर्वथा एक-सा है जो नैष्कर्म्य अवस्था में पूर्ण रूप से प्रकट होता है। यही आत्मसाम्यमूलक उत्क्रान्तिवाद है।

कर्म-विद्या

जब तत्त्वतः सब जीवात्मा समान हैं तो फिर उनमें परस्पर वैषम्य क्यों? तथा एक ही जीवात्मा में कालभेद से वैषम्य क्यों? इस प्रश्न के उत्तर में से ही कर्मविद्या का जन्म हुआ है। जैसा कर्म वैसी अवस्था यह जैन मान्यता वैषम्य का स्पष्टीकरण तो कर देती है, पर साथ ही साथ यह भी कहती है कि अच्छा या बुरा कर्म करने एवं न करने में जीव ही स्वतंत्र है, जैसा वह चाहे वैसा सत् या असत् पुरुषार्थ कर सकता है और वही अपने वर्तमान और भावी का निर्माता है। कर्मवाद कहता है कि वर्तमान का निर्माण भूत के आधार पर और भविष्य का निर्माण वर्तमान के आधार पर होता है। तीनों काल की पारस्परिक संगति कर्मवाद पर ही अवलंबित है। यही पुनर्जन्म के विचार का आधार है।

वस्तुतः अज्ञान और रागद्वेष ही कर्म हैं। अपने-पराये की वास्तविक प्रतीति न होना अज्ञान या जैन परंपरा के अनुसार दर्शन मोह है। इसी को सांख्य, बौद्ध आदि अन्य-परंपराओं में अविद्या कहा है। अज्ञान-जनित

इष्टानिष्ट की कल्पनाओं के कारण जो-जो वृत्तियां, या जो-जो विकार पैदा होते हैं वही संक्षेप में राग-द्वेष कहे गये हैं। यद्यपि राग द्वेष हिंसा के प्रेरक हैं पर वस्तुतः सब की जड़ अज्ञान-दर्शन मोह या अविद्या ही है, इसलिए हिंसा की असली जड़ अज्ञान ही है। इस विषय में आत्मवादी सब परम्पराएं एकमत हैं।

आध्यात्मिक जीवन की आधार-शिला चारित्र-विद्या

आत्मा और कर्म के स्वरूप को जानने के बाद ही यह जाना जा सकता है कि आध्यात्मिक उत्क्रान्ति में चारित्र का क्या स्थान है। मोक्षतत्त्वचिंतकों के अनुसार चारित्र का उद्देश्य आत्मा को कर्म से मुक्त करना ही है। चारित्र के द्वारा कर्म से मुक्ति मान लेने पर भी यह प्रश्न रहता ही है कि स्वभाव से शुद्ध ऐसे आत्मा के साथ पहले पहल कर्म का संबंध कब और क्यों हुआ या ऐसा संबंध किसने किया? इसी तरह यह भी प्रश्न उपस्थित होता है कि स्वभाव से शुद्ध ऐसे आत्मतत्त्व के साथ यदि किसी न किसी तरह से कर्म का संबंध हुआ मान लिया जाय तो चारित्र के द्वारा मुक्ति सिद्ध होने के बाद भी फिर कर्म संबंध क्यों नहीं होगा? इन दो प्रश्नों का उत्तर आध्यात्मिक सभी चिंतकों ने लगभग एकसा ही दिया है। सांख्य-योग हो या वेदान्त, न्यायवैशेषिक हो या बौद्ध इन सभी दर्शनों की तरह जैन दर्शन का भी यही मंतव्य है कि कर्म और आत्मा का संबंध अनादि है क्योंकि उस संबंध का आदिक्षण सर्वथा ज्ञानसीमा के बाहर है। सभी ने यह माना है कि आत्मा के साथ कर्म अविद्या या माया का संबंध प्रवाह रूप से अनादि है फिर भी व्यक्तिरूप से वह कर्मवासना की उत्पत्ति जीवन में होती रहती है सर्वथा कर्म छूट जाने पर जो आत्मा का पूर्ण शुद्ध रूप प्रकट होता है उसमें पुनः कर्म या वासना उत्पन्न क्यों नहीं होती इसका खुलासा तर्कवादी आध्यात्मिक चिंतकों ने यों किया है कि आत्मा स्वभावतः शुद्ध पक्षपाती है। शुद्ध के द्वारा चेतना आदि स्वाभाविक गुणों का पूर्ण विकास होने के बाद अज्ञान या रागद्वेष जैसे दोष जड़ से ही उच्छिन्न हो जाते हैं अर्थात वे प्रयत्नपूर्वक शुद्धि को प्राप्त ऐसे आत्मतत्त्व में अपना स्थान पाने के लिए सर्वथा निर्बल हो जाते हैं।

चारित्र का कार्य जीवनगत वैषम्य के कारणों को दूर करना है, जो जैन परिभाषा में 'संवर' कहलाता है। वैषम्य के मूल कारण अज्ञान का निवारण आत्मा की सम्यक् प्रतीति से होता है और रागद्वेष जैसे क्लेशों का निवारण माध्यस्थ्य की सिद्धि से। इसलिए आन्तर चारित्र में दो ही बातें आती हैं। (१) आत्मज्ञान विवेक ख्याति (२) माध्यस्थ्य या रागद्वेष आदि क्लेशों का जय। ध्यान, व्रत, नियम, तप, आदि जो-जो उपाय आन्तर चारित्र के पोषक होते हैं वे ही बाह्य चारित्र रूप से साधक के लिए उपादेय माने गये हैं।

आध्यात्मिक जीवन की उत्क्रान्ति आन्तर-चारित्र के विकासक्रम पर अवलम्बित है। इस विकासक्रम का गुणस्थान रूप से जैन परंपरा में अत्यंत विशद और विस्तृत वर्णन है। आध्यात्मिक उत्क्रान्ति-क्रम के जिज्ञासुओं के लिए योगशास्त्रप्रसिद्ध मधुमती आदि भूमिकाओं का बौद्धशास्त्र-प्रसिद्ध सोतापन्न आदि भूमिकाओं का, योगवाशिष्ठप्रसिद्ध अज्ञान और ज्ञान भूमिकाओं का, आजीवक-परंपरा प्रसिद्ध मन्दभूमि आदि भूमिकाओं का और जैन परंपरा प्रसिद्ध गुणस्थानों का तथा योगदृष्टियों का तुलनात्मक अध्ययन बहुत रसप्रद एवं उपयोगी है, जिसका वर्णन यहाँ संभव नहीं। जिज्ञासु अन्यत्र प्रसिद्ध लेखों से जान सकता है।

मैं यहाँ उन चौदह गुणस्थानों का वर्णन न करके संक्षेप में तीन भूमिकाओं का ही परिचय दिये देता हूँ, जिनमें गुणस्थानों का समावेश हो जाता है। पहिली भूमिका है बहिरात्म, जिसमें आत्मज्ञान या विवेक-ख्याति का उदय ही नहीं होता। दूसरी भूमिका अन्तरात्म है जिसमें आत्मज्ञान का उदय होता है पर रागद्वेष

आदि क्लेश मद होकर भी अपना प्रभाव दिखलाते रहते हैं। तीसरी भूमिका है परमात्म। इसमें रागद्वेश का पूर्ण उच्छेद होकर वीतारागत्व प्रकट होता है।

लोक-विद्या

लोकविद्या में लोक के स्वरूप का वर्णन है। जीव—चेतन और अजीव-अचेतन या जड़ इन दो तत्त्वों का सहचार ही लोक है। चेतन-अचेतन दोनों तत्त्व न तो किसी के द्वारा कभी पैदा हुए हैं और न कभी नाश पाते हैं फिर भी स्वभाव से परिणामान्तर पाते रहते हैं। ससार काल में चेतन के ऊपर अधिक प्रभाव डालने वाला द्रव्य एकमात्र जड़-परमाणुपु ज-पुद्गल है, जो नानारूप से चेतन के सबध मे आता है और उसकी शक्तियों को मर्यादित भी करता है। चेतन-तत्त्व की साहजिक और मौलिक शक्तियां ऐसी है जो योग्य दिशा पाकर कभी न कभी उन जड़ द्रव्यों के प्रभाव से उसे मुक्त भी कर देती हैं। जड और चेतन के पारस्परिक प्रभाव का क्षेत्र ही लोक है और उस प्रभाव से छुटकारा पाना ही लोकान्त है। जैन-परम्परा की लोकक्षेत्र विषयक कल्पना साख्ययोग, पुराण और बौद्ध आदि परम्पराओं की कल्पना से अनेक अशों में मिलती जुलती है।

जैन-परम्परा न्यायवैशेषिक की तरह परमाणुवादी है, सांख्ययोग की तरह प्रकृतिवादी नहीं है तथापि जैन-परम्परा समत परमाणु का स्वरूप साख्य-परम्परा-समत प्रकृति के स्वरूप के साथ जैसा मिलता है वैसा न्यायवशेषिक-समत परमाणु स्वरूप के साथ नहीं मिलता, क्योंकि जैन समत परमाणु साख्य समत प्रकृति की तरह परिणामी है, न्यायवैशेषिक समत परमाणु की तरह कूटस्थ नहीं है। इसी लिये जैसे एक ही सांख्य समत प्रकृति पृथ्वी, जल, तेज, वायु आदि अनेक भौतिक सृष्टियों का उपादान बनती है वैसे ही जैन संमत एक ही परमाणु पृथ्वी, जल, तेज आदि नानारूप मे परिणत होता है। जैन परम्परा न्यायवैशेषिक की तरह यह नहीं मानती कि पार्थिव, जलीय आदि भौतिक परमाणु मूल मे ही सदा भिन्न जातीय हैं। इसके सिवाय और भी एक अन्तर ध्यान देने योग्य है। वह यह कि जैन समत परमाणु वैशेषिक समत परमाणु की अपेक्षा इतना अधिक सूक्ष्म है कि अन्त में वह सांख्य समत प्रकृति जैसा ही अव्यक्त वन जाता है। जैन-परम्परा का अनन्त परमाणुवाद प्राचीन सांख्य समत पुरुष-बहुत्वानुरूप प्रकृतिबहुत्ववाद से दूर नहीं है।

जैनमत और ईश्वर

जेन-परंपरा सांख्योग मीमांसक आदि परपराओं की तरह लोक को प्रवाह रूपसे अनादि और अनत ही मानती है। वह पौराणिक या वैशेषिक-मत की तरह उसका सृष्टि-सहर नहीं मानती। अतएव जैन परपरा में कर्ता सहर्ता रूप से ईश्वर जैसे स्वतत्र व्यक्ति का कोई स्थान ही नहीं है। जैन सिद्धान्त कहता है कि प्रत्येक जीव अपनी-अपनी सृष्टि का आप ही कर्ता है। उसके अनुसार तात्त्विक-दृष्टि से प्रत्येक जीव में ईश्वरभाव है जो मुक्ति के समय प्रकट होता है। जिसका ईश्वर-भाव प्रकट हुआ है वही साधारण लोगों के लिए उपास्य बनता है। योगाशास्त्र समत ईश्वर भी मात्र उपास्य है। कर्ता-सहर्ता नहीं, पर जैन और योगशास्त्र की कल्पना में अन्तर है। वह यह कि योगशास्त्र-समत सदा मुक्त होने के कारण अन्य पुरुषों से भिन्न कोटि का है, जबकि जैनशास्त्र समत ईश्वर वैसा नहीं है। जैनशास्त्र कहता है कि प्रयत्नसाध्य होने के कारण हर कोई योग्य-साधन ईश्वरत्व लाभ करता है और सभी मुक्त समानभाव से ईश्वररूप से उपास्य हैं।

श्रुत विद्या और प्रमाण विद्या

पुराने और अपने समय तक मे ज्ञात ऐसे अन्य विचारकों के विचारों का तथा अपने स्वानुभवमूलक अपने विचारों का सत्यलक्षी संग्रह ही श्रुतविद्या है। श्रुतविद्या का ध्येय यह है कि सत्यस्पर्शी किसी भी विचार या विचारसरणी की अवगणना या उपेक्षा न हो। इसी कारण से जैन परम्परा की श्रुतविद्या नव-नव विद्याओं के विकास के साथ विकसित होती रही है। यही कारण है कि श्रुतविद्या में सग्रह नयरूप से जहां प्रथम सांख्य-समत सदद्वैत लिया गया वहीं ब्रह्माद्वैत के विचार-विकास के बाद सग्रहनय रूप से ब्रह्माद्वैत-विचार ने भी स्थान प्राप्त किया है। इसी तरह जहां ऋजुसूत्र नयरूप से प्राचीन बौद्ध क्षणिकवाद सग्रहीत हुआ है वहीं आगे के महायानी विकास के बाद ऋजुसूत्र नयरूप से वैभाषिक, सौत्रान्तिक, विज्ञानवाद और शून्यवाद इन चारों प्रसिद्ध बौद्ध-शाखाओं का सग्रह हुआ है।

अनेकान्त-दृष्टि का कार्यप्रदेश इतना अधिक व्यापक है कि इसमें मानव-जीवन की हितावह ऐसी सभी लौकिक-लोकोत्तर विद्यायें अपना अपना योग्य स्थान प्राप्त कर लेती हैं। यही कारण है कि जैन श्रुतविद्या मे लोकोत्तर विद्याओं के अलावा लौकिक विद्याओं ने भी स्थान प्राप्त किया है।

प्रमाणविद्या में प्रत्यक्ष, अनुमिति आदि ज्ञान के सब प्रकारों, का उनके साधनों का तथा उनके बलाबल का विस्तृत विवरण आता है। इसमे भी अनेकान्त-दृष्टि का ऐसा उपयोग किया गया है कि जिससे किसी भी तत्त्वचिंतक के यथार्थ विचार की अवगणना या उपेक्षा नहीं होती, प्रत्युत ज्ञान और उसके साधन से सबध रखने वाले सभी ज्ञान विचारो का यथावत् विनियोग किया गया है।

यहा तक का वर्णन जैन परपरा के प्राणभूत अहिंसा और अनेकान्त से सबध रखता है। जैसे शरीर के बिना प्राण की स्थिति असभव है वैसे ही धर्म-शरीर के सिवाय धर्मप्राण की स्थिति भी असभव है। जैन-परपरा का धर्म-शरीर भी संघ-रचना, साहित्य, तीर्थ, मन्दिर आदि धर्मस्थान, शिल्पस्थापत्य, उपासनविधि, ग्रथसग्राहक भांडार आदि अनेक रूप विद्यमान है। यद्यपि भारतीय-सस्कृति विरासत के अविकल अध्ययन की दृष्टि से जैनधर्म के ऊपर सूचित अगों का तात्त्विक एव ऐतिहासिक वर्णन आवश्यक एवं रसप्रद भी है।

जैनागम

बारह अंगः—अब यह देखा जाय कि जैनों के द्वारा कौन-कौन से ग्रन्थ वर्तमान मे व्यवहार मे आगमरूप से माने गये हैं ?

जैनों के तीनों सम्प्रदायों मे इस विषय में तो विवाद है ही नहीं कि सकल श्रुत का मूलाधार गणधर ग्रथित द्वादशाग है। तीनों सम्प्रदाय मे बारह अगों के नाम से विषय में भी प्राय. ऐकमत्य है। वे बारह अग ये हैं:-

(१) आचार, (२) सूत्रकृत, (३) स्थान, (४) समवाय, (५) व्याख्याप्रज्ञप्ति, (६) ज्ञातृधर्मकथा, (७) उपासकदशा, (८) अतकृद्दशा, (९) अनुत्तरौपपातिकदशा, (१०) प्रश्नव्याकरण, (११) विपाकसूत्र, (१२) दृष्टिवाद।

तीनों सम्प्रदाय के मत से अन्तिम अग दृष्टिवाद का सर्वप्रथम लोप हो गया है।

स्थानकवासी के आगम-ग्रन्थ

श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के मत से दृष्टिवाद को छोड़ कर सभी अग सुरक्षित हैं। अगबाह्य के विषय मे स्था० सम्प्रदाय का मत है कि सिर्फ निम्नलिखित ग्रन्थ ही सुरक्षित हैं।

अंगबाह्य मे १२ उपांग, ४ छेद, ४ मूल और १ आवश्यक इस प्रकार सिर्फ २१ ग्रंथ का समावेश है, वह इस प्रकार से हैं:—

बारह उपांग—(१) औपपातिक (२) राजप्रश्नीय (३) जीवाभिगम (४) प्रज्ञापना (५) सूर्यप्रज्ञप्ति (६) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति (७) चन्द्रप्रज्ञप्ति (८) निरयावली (९) कल्पवंतसिका (१०) पुष्पिका (११) पुष्पचूलिका (१२) वृष्णिदशा।

शास्त्रोद्धार मीमांसा मे (पृ० ४१) आ० अमोलखऋषिजी म०ने लिखा है कि चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति ये दोनों ज्ञाताधर्म के उपांग हैं। इस अपवाद को ध्यान मे रख कर क्रमशः आचारांग का औपपातिक इत्यादि क्रम से अंगों के साथ उपांगों की योजना कर लेना चाहिए।

४ छेद—१ व्यवहार २ बृहत्कल्प ३ निशीथ ४ दशा-श्रुतस्कन्ध।

४ मूल—१ दशवैकालिक २ उत्तराध्ययन ३ नन्दी ४ अनुयोग और १ आवश्यक इस प्रकार सब मिलकर २१ अंग बाह्यग्रंथ वर्तमान मे हैं।

२१ अंगबाह्य ग्रन्थों को जिस रूप में स्थानकवासियों ने माना है, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक उन्हें उसी रूप मे मानते हैं। इसके अलावा कई ऐसे ग्रंथों का भी अस्तित्व स्वीकार किया है जिन्हें स्थानकवासी प्रमाणभूत नहीं मानते या लुप्त मानते हैं।

स्थानकवासी के समान उसी सम्प्रदाय का एक उपसम्प्रदाय तेरहपथ को भी ११ अंग और २१ अंगबाह्य ग्रंथों का ही अस्तित्व और प्रामाण्य स्वीकृत है, अन्य ग्रथों का नहीं।

यद्यपि वर्तमान मे कुछ स्थानकवासी विद्वानों की, आगम के इतिहास के प्रति दृष्टि जाने से तथा आगमों की निर्युक्ति जैसी प्राचीन टीकाओं के अभ्यास से, वे यह स्वीकार करने लगे हैं कि दशवैकालिक आदि शास्त्रों के प्रणेता गणधर नहीं किन्तु शय्यभव आदि स्थविर हैं तथापि जिन लोगों का आगम के टीका-टिप्पणियों पर कोई विश्वास नहीं तथा जिन्हें संस्कृत टीका ग्रन्थों के अभ्यास के प्रति ध्यान नहीं है उन का यही विश्वास प्रतीत होता है कि अंग और अगबाह्य दोनों प्रकार के आगम के कर्त्ता गणधर ही थे, अन्य स्थविर नहीं।

आगमों का विषय

जैनागमों मे से कुछ तो ऐसे है जो जैन आचार से सम्बन्ध रखते हैं जैसे आचारांग, दशवैकालिक आदि। कुछ उपदेशात्मक है जैसे उत्तराध्ययन, आदि। कुछ तत्कालीन भूगोल और खगोल आदि सम्बन्धी मान्यताओं का वर्णन करते हैं जैसे जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति आदि। छेदसूत्रों का प्रधान विषय जैन साधुओं के आचार सम्बन्धी औत्सर्गिक और आपवादिक नियमों का वर्णन व प्रायश्चित्तों का विधान करता है। कुछ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनमे जिनमार्ग के अनुयायियोंका चरित्र दिया गया है जैसे उपासकदशांग, अनुत्तरोपपातिक दशा आदि। कुछ में कल्पित कथाए देकर उपदेश दिया गया है जैसे ज्ञातृधर्म कथा आदि। विपाक में शुभ और अशुभ-कर्म का विपाक कथाओं द्वारा बताया गया है। भगवती सूत्रमें भगवान महावीर के साथ हुए सवादों का सग्रह है। बौद्धसुत्तपिटक की तरह नाना विषयके प्रश्नोत्तर भगवती मे सगृहीत हैं।

दर्शनके साथ सम्बन्ध रखने वालों मे खासकर सूत्रकृत, प्रज्ञापना, राजप्रश्नीय, भगवती, नन्दी, स्थानांग, समवाय और अनुयोग सूत्र मुख्य है।

सूत्रकृत मे तत्कालीन मन्तव्योंका निराकरण करके स्वमत की प्ररूपणा की गई है। भूतवादियों का निराकरण करके आत्माका पृथक अस्तित्व वतलाया है। ब्रह्मवाद के स्थान मे नानात्मवाद स्थिर किया है। जीवन और शरीरको पृथक वताया है। कर्म है। और उसके फलकी सत्ता स्थिर की है। जगदुत्पत्ति के विषय मे नानावादों का निराकरण करके विश्वको किसी ईश्वर या ऐसे ही किसी व्यक्ति ने नहीं बनाया, वह तो अनादि अनन्त है, इस वात की स्थापना की गई है। तत्कालीन विनयवाद, प्रक्रियावाद और अज्ञानवाद का निराकरण करके सुसस्कृत क्रियावाद की स्थापना की गई है।

प्रज्ञापनामे जीवके विविध भावों को लेकर विस्तार से विचार किया गया है।

राजप्रश्नीय में पार्श्वनाथ की परम्परा मे हुए केशीश्रमण ने श्रावस्ती के राजा पएसी के प्रश्नों के उत्तर में नास्तिकवाद का निराकरण करके आत्मा और तत्सम्बन्धी अनेक वातों को दृष्टान्त और युक्ति पूर्वक समझाया है

भगवतीसूत्र के अनेक प्रश्नोत्तरो मे नय, प्रमाण आदि अनेक दार्शनिक विचार विखरे पड़े हैं।

नन्दीसूत्र जैन दृष्टि से ज्ञान के स्वरूप और भेदोंका विश्लेषण करनेवाली एक सुन्दर कृति है।

स्थानांग और समवायाग की रचना बौद्धों के अगुत्तरनिकाय के ढग की है। इन दोनों मे भी आत्मा, पुद्गल, ज्ञान, नय और प्रमाण आदि विषयों की चर्चा की गई है। भगवान् महावीर के शासन मे हुए निन्हवों का वर्णन स्थानांग मे है। ऐसे सात व्यक्ति वताए गये हैं जिन्होंने कालक्रम से भगवान् महावीर के सिद्धांतों की भिन्न भिन्न वात को लेकर अपना मतभेद प्रगट किया है। वे ही निन्हव कहे गये हैं।

अनुयोग मे शब्दार्थ करने की प्रक्रिया का वर्णन मुख्य है किन्तु प्रसङ्ग से उसमें प्रमाण और नय का तथा तत्त्वों का निरूपण भी अच्छे ढग से हुआ है।

जैन तत्त्वज्ञान का मूल तत्त्व—अनेकान्त

जैनधर्म का मूल

कोई भी विशिष्ट दर्शन हो या धर्म पन्थ, उसकी आधारभूत—उसके मूल प्रवर्तक पुरुष की—एक खास दृष्टि होती है, जैसे कि—शकराचार्य की अपने मतनिरूपण मे 'अद्वैतदृष्टि' और महात्मा बुद्ध की अपने धर्म-पन्थ प्रवर्तन मे 'मध्यम प्रतिपदा दृष्टि' खास दृष्टि है। जैनदर्शन भारतीय दर्शनों मे एक विशिष्ट दर्शन है और साथ ही एक विशिष्ट धर्म—पन्थ भी है, इसलिए उसके प्रवर्तक और प्रचारक मुख्य पुरुषों की एक खास दृष्टि उसके मूल में होनी ही चाहिए और वह है भी। यही दृष्टि अनेकान्तवाद है। तात्त्विक जैन विचारणा अथवा आचार व्यवहार कुछ भी हो वह सब अनेकान्त-दृष्टि के आधार पर किया जाता है और उसी के आधार पर सारी विचार धारा फैलती है। अथवा यों कहिये कि अनेक प्रकार के विचारों तथा आचारों में से जैन विचार और जैनाचार क्या है? कैसे हो सकते हैं? इन्हें निश्चित करने वा कसने की एक मात्र कसौटी भी अनेकान्त-दृष्टि ही है।

अनेकान्त का विकास और उस का श्रेय

जैन-दर्शन का आधुनिक मूल-रूप भगवान महावीर की तपस्या का फल है। इसलिए सामान्य रूप से यही समझा जा सकता है कि जैन-दर्शन की आधार भूत अनेकान्त-दृष्टि भी भगवान महावीर के द्वारा ही पहले पहल स्थिर की गई या उद्भावित की गई होगी। परन्तु विचार के विकास क्रम और पुरातन इतिहास के चिंतन करने से साफ मालूम पड़ जाता है कि अनेकान्त दृष्टि का मूल भगवान महावीर से भी पुराना है। यह ठीक है कि जैन साहित्य में अनेकान्त दृष्टि का जो स्वरूप आजकल व्यवस्थित रूप से और विकसित रूप से मिलता है वह स्वरूप भगवान महावीर के पूर्ववर्ती किसी जैन या जैनेतर साहित्य में और उसके समकालीन बौद्ध साहित्य में अनेकान्त दृष्टि-गर्भित बिखरे हुए विचार थोड़े बहुत मिल ही जाते हैं। इसके सिवाय भगवान महावीर के पूर्ववर्ती भगवान पार्श्वनाथ हुए हैं जिनका विचार आज यद्यपि उन्हीं के शब्दों में—असल रूप में नहीं पाया जाता फिर भी उन्होंने अनेकान्त दृष्टि का स्वरूप स्थिर करने में अथवा उसके विकास में कुछ न कुछ भाग जरूर लिया है, ऐसा पाया जाता है। यह सब होते हुए भी उपलब्ध-साहित्य का इतिहास स्पष्टरूप से ही यही कहता है कि २५०० वर्ष के भारतीय साहित्य में जो अनेकान्त-दृष्टि का थोड़ा बहुत असर है या खास तौर से जैनवाङ मय में अनेकान्त दृष्टि का उत्थान होकर क्रमशः विकास होता गया है और जिसे दूसरे समकालीन दार्शनिक विद्वानों ने अपने-अपने ग्रन्थों में किसी न किसी रूप में अपनाया है उसका मुख्य श्रेय तो भगवान महावीर को ही है, क्योंकि जब हम आज देखते हैं तो उपलब्ध जैन-प्राचीन ग्रंथों में अनेकान्त दृष्टि की विचार धारा जिस स्पष्ट रूप में पाते हैं उस स्पष्ट रूप में उसे और किसी प्राचीन ग्रन्थ में नहीं पाते।

जैन विचारकों ने जितना जोर और जितना पुरुषार्थ अनेक दृष्टि के निरूपण में लगाया है, उसका शतांश भी किसी दर्शन के विद्वानों ने नहीं लगाया। यही कारण है कि आज जब कोई 'अनेकान्तवाद' या 'स्याद्वाद' का उच्चारण करता है तब सुनने वाला विद्वान् उससे सहसा जैन दर्शन भाव ग्रहण करता है। आजकल के बड़े-बड़े विद्वान् तक भी समझते हैं कि 'स्याद्वाद' यह तो जैनों का ही एक वाद है। इस समझ का कारण है कि जैन विद्वानों ने स्याद्वाद के निरूपण और समर्थन में बहुत बड़े-बड़े ग्रन्थ लिख डाले हैं, अनेक युक्तियों का आविर्भाव किया है और अनेकान्तवाद के शस्त्र के बल से ही उन्होंने दूसरे दार्शनिक विद्वानों के साथ कुश्ती की है।

इस चर्चा से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं—एक तो यह कि भगवान महावीर ने अपने उपदेशों में अनेककान्तवाद का जैसा स्पष्ट आश्रय लिया है। वैसा उनके समकालीन और पूर्ववर्ती दर्शन प्रवर्तकों में से किसी ने भी नहीं लिया है। दूसरी बात यह कि भगवान महावीर के अनुयायी जैन आचार्यों ने अनेकान्त दृष्टि के निरूपण और समर्थन करने में जितनी शक्ति लगाई है उतनी और किसी भी दर्शन के अनुगामी आचार्यों ने नहीं लगाई।

अनेकांत दृष्टि के मूल तत्त्व

जब सारे जैन विचार और आचार की नींव अनेकान्त दृष्टि ही है तब पहले यह देखना चाहिए कि अनेकान्त दृष्टि किन तत्त्वों के आधार पर खड़ी की गई है? विचार करने और अनेकान्त दृष्टि के साहित्य का अवलोकन करने से मालूम होता है कि अनेकान्त दृष्टि सत्य पर ही खड़ी है। यद्यपि सभी महान् पुरुष सत्य को पसन्द करते हैं और सत्य की ही खोज तथा सत्य के ही निरूपण में अपना जीवन व्यतीत करते हैं, तथापि सत्य निरूपण की पद्धति और सत्य की खोज सब की एक सी नहीं होती। म० बुद्ध जिस शैली से सत्य का निरूपण

करते हैं या शंकराचार्य उपनिषदों के आधार पर जिस ढग से सत्य का प्रकाशन करते हैं उससे भ० महावीर की सत्य प्रकाशन की शैली जुदा है। भ० महावीर की सत्य प्रकाशन शैली का ही दूसरा नाम 'अनेकान्तवाद' है। उसके मूल में दो तत्त्व हैं—पूर्णता और यथार्थता। जो पूर्ण है और पूर्ण होकर भी यथार्थ रूप से प्रतीत होता है वही सत्य कहलाता है।

अनेकान्त की खोज का उद्देश्य और उसके प्रकाशन की शर्तें

वस्तु का पूर्ण रूप में त्रिकालाबाधित—यथार्थ दर्शन होना कठिन है, किसी को वह हो भी जाय तथापि उसका उसी रूप में शब्दों के द्वारा ठीक-ठीक कथन करना उस सत्यद्रष्टा और सत्यवादी के लिए भी बड़ा कठिन है। कोई उस कठिन काम को किसी अंश में करने वाले निकल भी जाए तो भी देश, काल, परिस्थिति, भाषा और शैली आदि के अनिवार्य भेद के कारण उन सब के कथन में कुछ न कुछ विरोध या भेद का दिखाई देना अनिवार्य है। यह तो हुई उन पूर्णदर्शी और सत्यवादी इनेगिने मनुष्यों की बात, जिन्हें हम सिर्फ कल्पना या अनुमान से समझ या मान सकते हैं। हमारा अनुभव तो साधारण मनुष्यों तक परिमित है और वह कहता है कि साधारण मनुष्यों में भी बहुत से यथार्थवादी होकर भी अपूर्ण दर्शी होते हैं। ऐसी स्थिति मे यथार्थवादिता होने पर भो अपूर्ण दर्शन के कारण और उसे प्रकाशित करने की अपूर्ण सामग्री के कारण सत्यप्रिय मनुष्यों की भी समझ मे कभी-कभी भेद आ जाता है और सस्कार भेद उनमे और भी पारस्परिक टक्कर पैदा कर देता है। इस तरह पूर्णदर्शी और अपूर्णदर्शी सभी सत्यवादियों के द्वारा अन्त मे भेद और विरोध की सामग्री आप ही आप प्रस्तुत हो जाती है या दूसरे लोग उनसे ऐसी सामग्री पैदा कर लेते हैं।

ऐसी वस्तुस्थिति देख कर भ० महावीर ने सोचा कि ऐसा कौन सा रास्ता निकाला जाय जिससे वस्तु का पूर्ण या अपूर्ण सत्यदर्शन करने वाले के साथ अन्याय न हो। अपूर्ण और अपने से विरोधी होकर भी यदि दूसरे का दर्शन सत्य है, इसी तरह अपूर्ण और दूसरे से विरोधी होकर भी यदि अपना दर्शन सत्य है तो दोनों को ही न्याय मिले, इसका भी क्या उपाय है ?. इसी चिंतनप्रधान तपस्या ने भगवान को अनेकान्तदृष्टि सुझाई, उनका सत्य सशोधन का सकल्प सिद्ध हुआ। उन्होंने उस मिली हुई अनेकान्तदृष्टि की चाबी से वैयक्तिक और सामष्टिक जीवन की व्यावहारिक और पारमार्थिक समस्याओं के ताले खोल दिये और समाधान प्राप्त किया। तब उन्ह ने जीवनोपयोगी विचार और आचार का निर्माण करते समय उस अनेकान्त दृष्टि को निम्नलिखित मुख्य शर्तो पर प्रकाशित कि।। और उसके अनुसरण का अपने जीवन द्वारा उन्हीं शर्तों पर उपदेश दिया। वे शर्तें इस प्रकारहैं :—

१—राग और द्वेषजन्य सस्कारों के वशीभूत न होना अर्थात् तेजस्वी मध्यस्थ भाव रखना।

२—जब तक मध्यस्थ भाल का पूर्ण विकास न हो तब तक उस लक्ष्य की ओर ध्यान रखकर केवल सत्य की जिज्ञासा रखना।

३—कैसे भी विरोधी भासमान पक्ष से न घबराना और अपने पक्ष की तरह उस पक्ष पर भी आदरपूर्वक विचार करना तथा अपने पक्ष पर भी विरोधी पक्ष की तरह तीव्र समालोचक दृष्टि रखना।

४—अपने तथा दूसरों के अनुभवों मे से जो-जो अंश ठीक जचें, चाहे वे विरोधी ही प्रतीत क्यों न हों—उन सबका विवेक—प्रज्ञा से समन्वत करने की उदारता का अभ्यास करना और अनुभव बढ़ने पर पूर्व के समन्विय मे जहां गलती मालूम हो वहां मिथ्याभिमान छोड कर सुधार करना और इसी क्रम से आगे बढ़ना।

अनेकान्त साहित्य का विकास

भगवान महावीर ने अनेकान्त दृष्टि को पहिले अपने जीवन मे उतारा था और उसके बाद ही दूसरों को इसका उपदेश दिया था इसलिए अनेकान्त दृष्टि की स्थापना और प्रचार के निमित्त उनके पास काफी अनुभव बल और तप बल था। अतएव उनके मूल उपदेश मे से जो कुछ प्राचीन अवशेष आजकल पाये जाते है उन आगमग्रन्थों मे हम अनेकान्त दृष्टि को स्पष्टरूप से पाते हैं सही, पर उसमें तर्कवाद या खण्डनमण्डन का वह जटिल जाल नहीं पाते जो कि पिछले साहित्य मे देखने में आता है। हमे उन आगम ग्रन्थों मे अनेकान्त दृष्टि का सरलस्वरूप और संक्षिप्त विभाग ही नजर आता है। परन्तु भगवान के बाद जब उनकी दृष्टि पर सम्प्रदाय कायम हुआ और उसका अनुगामी समाज स्थिर हुआ तथा बढ़ने लगा, तब चारों ओर प्रश्न होने पर हमले होने लगे। महावीर के अनुगामी आचार्यो में त्याग और प्रज्ञा होने पर भी, महावीर जैसा स्पष्ट जीवन का अनुभव और तप न था। इसलिए उन्होंने उन हमलों से बचने के लिए नैयायिक गौतम और वात्स्यायन के कथन की तरह कथावाद के उपरान्त जल्प और कहीं कहीं वितण्डा का भी आश्रय लिया है। अनेकान्त दृष्टि का जो तत्त्व उनको विरासत मे मिला था उसके संरक्षण के लिए उन्होंने जैसे बन पड़ा वैसे कभी वाद किया, कभी जल्प और कभी वितण्डा। परन्तु इसके साथ ही साथ उन्होंने अनेकान्त दृष्टि को निर्दोष स्थापित करके उसका विद्वानों में प्रचार भी करना चाहा और इस चाहजनित प्रयत्न से उन्होंने अनेकान्त दृष्टि के अनेक मर्मो को प्रकट किया और उनकी उपयोगिता स्थापित की। इस खण्डन-मण्डन, स्थापन और प्रचार के करीब दो हजार वर्षो मे महावीर के शिष्यों ने सिर्फ अनेकान्तदृष्टि विषयक इतना बड़ा ग्रन्थ समूह बना डाला है कि उसका एक खासा पुस्तकालय बन सकता है। पूर्व पश्चिम और दक्खिन-उत्तर हिन्दुस्तान के सब भागों में सब समयों में उत्पन्न होने वाले अनेक छोटे बड़े और प्रचन्ड आचार्यो ने अनेक भाषाओं में केवल अनेकान्तदृष्टि और उसमें से फलित होने वाले वादों पर दण्डकारण्य से भी कहीं विस्तृत, सूक्ष्म और जटिल चर्चा की है। शुरु मे जो साहित्य अनेकान्त दृष्टि के अवलम्बन से निर्मित हुआ था उसके स्थान पर पिछला साहित्य, खास कर तार्किक साहित्य —मुख्यतया अनेकान्तदृष्टि के निरूपण तथा उसके ऊपर अन्य वादियों के द्वारा किये गये आक्षेपो के निराकरण करने के लिए रचा गया। इस तरह सम्प्रदाय की रक्षा और प्रचार की भावना में से जो केवल अनेकान्त विषयक साहित्य का विकास हुआ है उसका वर्णन करने के लिए एक खासी जुदी पुस्तिका की जरूरत है। तथापि इतना तो यहां निर्देश कर देना ही चाहिए कि समन्तभद्र और सिद्धसेन, हरिभद्र और अकलङ्क, विद्यानन्द और प्रभाचन्द्र, अभयदेव और वादिदेवसूरि तथा हेमचन्द्र और यशोविजयजी जैसे प्रकाण्ड विचारको ने जो अनेकान्तदृष्टि के बारे मे लिखा है वह भारतीय दर्शन साहित्य में बड़ा महत्त्व रखता है और विचारकों को उनके ग्रन्थों में से मनन करने योग्य बहुत कुछ सामग्री मिल सकती है।

फलितवाद

अनेकान्तदृष्टि तो एक मूल है, उसके ऊपर से और उसके आश्रय पर विविध वादों तथा चर्चाओं का शाखाप्रशाखाओं की तरह बहुत बड़ा विस्तार हुआ है। उसमे से मुख्य दो वाद यहां उल्लिखित किये जाने योग्य हैं- एक नयवाद और दूसरा सप्तभंगीवाद। अनेकान्तदृष्टि का आविर्भाव आध्यात्मिक साधना और दार्शनिक प्रदेश में हुआ इसलिए उसका उपयोग भी पहले पहल वहीं होना अनिवार्य था। भगवान के इर्दगिर्द और उनके अनुयायी आचार्यों के समीप जो-जो विचार धाराएं चल रहीं थीं उनका समन्वय करना अनेकान्तदृष्टि के लिए आवश्यक

था। इसी प्राप्त कार्य में से 'नयवाद' की सृष्टि हुई। यद्यपि किसी किसी नय के पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती उदाहरणों में भारतीय दर्शन के विकास के अनुसार विकास होता गया है। तथापि दर्शन प्रदेश में से उत्पन्न होने वाले नयवाद की उदाहरणमाला भी आज तक दार्शनिक ही रही है। प्रत्येक नय की व्याख्या और चर्चा का विकास हुआ है पर उसकी उदाहरण माला तो दार्शनिकक्षेत्र के बाहर से आई ही नहीं। यही एक बात यहां समझाने को पर्याप्त है कि सब क्षेत्रों को व्याप्त करने की ताकत रखने वाले अनेकान्त का प्रथम आविर्भाव किस क्षेत्र में हुआ और हजारों वर्षों के बाद तक भी उसकी चर्चा किस क्षेत्र तक परिमित रही ?

भारतीय दर्शनों मे जैन दर्शन के अतिरिक्त, उस समय जो दर्शन अति प्रसिद्ध थे और पीछे से जो अति प्रसिद्ध हुए उनमें वैशेषिक, न्याय, सांख्य, औपनिषद्-वेदान्त, बौद्ध और शाब्दिक—ये ही दर्शन मुख्य हैं। इन प्रसिद्ध दर्शनों को पूर्ण सत्य मानने में वस्तुत तात्त्विक और व्यावहारिक दोनों आपत्तियां थीं और उन्हें बिल्कुल असत्य कह देने मे सत्य का घात था इस लए उनके बीच में रहकर उन्हीं में से सत्य के गवेषण का मार्ग सरल रूप मे लोगों के सामने प्रदर्शित करना था। यही कारण है कि हम उपलब्ध समग्र जैन-वाङ्मय में नयवाद के भेद प्रभेद और उनके उदाहरण तक उक्त दर्शनों के रूप में तथा उनकी विकसित शाखाओं के रुप में ही पाते हैं। विचार की जितनी पद्धतियां उस समय मौजूद थीं, उनके समन्वय करने का आदेश—अनेकान्तदृष्टि ने किया और उसमें से नयवाद फलित हुआ। जिससे कि दार्शनिक मारामारी कम हो, पर दूसरी तरफ एक एक वाक्य पर अधैर्य और नासमझी के कारण पण्डितगण लड़ा करते थे। एक पण्डित यदि किसी चीज को नित्य कहता तो दूसरा सामने खड़ा होकर यह कहता कि वह तो अनित्य है, नित्य नहीं। इसी तरह फिर पहला पण्डित दूसरे के विरुद्ध बोल उठता था। सिर्फ नित्यत्व के विषय में ही नहीं किन्तु प्रत्येक अंश में यह झगड़ा जहां तहां होता ही रहता था। यह स्थिति देखकर अनेकान्त दृष्टि वाले तत्कालीन आचार्यों ने उस झगड़े का अन्त अनेकान्त दृष्टि के द्वारा करना चाहा और उस प्रयत्न के परिणाम स्वरूप 'सप्तभङ्गीवाद' फलित हुआ। अनेकान्त दृष्टि के प्रथम फलस्वरूप नयवाद में तो दर्शनों को स्थान मिला है और उसी के दूसरे फलस्वरूप सप्तभङ्गीवाद में किसी एक ही वस्तु के विषय में प्रचलित विरोधी कथनों को या विचारों को स्थान मिला है। पहले वाद में समूचे सब दर्शन संगृहीत हैं और दूसरे में दर्शन के विशकलित मन्तव्यों का समन्वय है। प्रत्येक फलितवाद की सूक्ष्म चर्चा और उसके इतिहास के लिए यहां स्थान नहीं है और न उतना अवकाश ही है तथापि इतना कह देना जरूरी है कि अनेकान्त दृष्टि ही महावीर की मूल दृष्टि और स्वतन्त्र दृष्टि है। नयवाद तथा सप्तभङ्गीवाद आदि तो उस दृष्टि के ऐतिहासिक परिस्थिति—अनुसारी प्रासंगिक फल मात्र हैं। अतएव नय तथा सप्तभङ्गी आदि वादों का स्वरूप तथा उनके उदाहरण बदले भी जा सकते हैं, पर अनेकान्त दृष्टि का स्वरूप तो एक ही प्रकार का रह सकता है-भले ही उसके उदाहरण बदल जायें।

अनेकान्त दृष्टि का असर

जब दूसरे विद्वानों ने अनेकान्त-दृष्टि को तत्त्वरूप में ग्रहण करने की जगह सांप्रदायिकवाद रूप में ग्रहण किया तब उ के ऊपर चारों ओर से आक्षेपों के प्रहार होने लगे। बादरायण जैसे सूत्रकारों ने उसके खण्डन के लिए सूत्र रच डाले और उन सूत्रों के भाष्यकारों ने उसी विषय में अपने भाष्यों की रचनाएँ कीं। वसुबन्धु, दिग्नाग, धर्मकीर्ति और शांतरक्षित जैसे बड़े बड़े प्रभावशाली बौद्ध विद्वानों ने भी अनेकान्तवाद की पूरी खबर ली। इधर से जैन विचारक विद्वानों ने भी उनका सामना किया। इस प्रचण्ड संघर्ष का अनिवार्य परिणाम यह आया कि एक ओर से अनेकान्त-दृष्टि का तर्कबद्ध विकास हुआ और दूसरी ओर से उसका प्रभाव दूसरे विरोधी

सांप्रदायिक विद्वानों पर भी पड़ा। दक्षिण हिन्दुस्तान में प्रचण्ड दिगम्बराचार्यों और प्रकाण्ड मीमांसक तथा वेदान्त विद्वानों के बीच शास्त्रार्थ की कुश्ती हुई उससे अन्त में अनेकान्त-दृष्टि का ही असर अधिक फैला। यहाँ तक कि रामानुज जैसे बिल्कुल जैनत्व विरोधी प्रखर आचार्य शङ्कराचार्य के मायावाद के विरुद्ध अपना मत स्थापित करते समय आश्रय सामान्य उपनिषदों का लिया पर उनमें से विशिष्टाद्वैत का निरूपण करते समय अनेकान्त-दृष्टि का उपयोग किया, अथवा यों कहिये कि रामानुज ने अपने ढग से अनेकान्त-दृष्टि को विशिष्टाद्वैत की घटना में परिणत किया और औपनिषद तत्त्व का जामा पहना कर अनेकान्त-दृष्टि में से विशिष्टाद्वैतवाद खड़ा करके अनेकान्त दृष्टि की ओर आकर्षित जनता को वेदान्त मार्ग पर स्थिर रखा। पुष्टि मार्ग के पुरस्कर्ता वल्लभ जो दक्षिण हिन्दुस्तान में हुए, उनके शुद्धाद्वैत विषयक सब तत्त्व हैं तो औपनिषदिक पर उनकी सारी विचारसरणी अनेकान्त-दृष्टि का नया वेदान्तीय स्वांग है। इधर उत्तर और पश्चिम हिन्दुस्तान में जो दूसरे विद्वानों के साथ श्वेताम्बरीय महान् विद्वानों का खण्डनमण्डन-विषयक द्वन्द्व हुआ उसके फल स्वरूप अनेकान्तवाद का असर जनता में फैला और सांप्रदायिक ढंग से अनेकान्तवाद का विरोध करने वाले भी जानते अनजानते अनेकान्त-दृष्टि को अपनाने लगे। इस तरह वाद रूप में अनेकान्तदृष्टि आज तक जैनों की ही बनी हुई है। विकृत रूप में हिन्दुस्तान के हरएक भाग में फैला हुआ है। इसका सबूत सब भागों के साहित्य में से मिल सकता है।

व्यवहार में अनेकान्त का उपयोग न होने का नतीजा

जिस समय राजकीय उलट फेर का अनिष्ट परिणाम स्थायीरूप से ध्यान आया न था, सामाजिक बुराइयां आज की तरह असह्यरूप में खटकती न थीं, औद्योगिक और खेती की स्थिति आज के जैसी अस्तव्यस्त हुई न थी, समझ पूर्वक या बिना समझे लोग एक तरह से अपनी स्थिति में सन्तुष्ट-प्राय थे और असंतोष का दावानल आज की तरह व्याप्त न था, उस समय आध्यात्मिकसाधना में से आविर्भूत अनेकान्तदृष्टि केवल दार्शनिक प्रदेश में रही और सिर्फ चर्चा तथा वादविवाद का विषय बन कर जीवन से अलग रह कर भी उसने अपना अस्तित्व कायम रखा, कुछ प्रतिष्ठा भी पाई, यह सब उस समय के योग्य था। परन्तु आज स्थिति बिलकुल बदल गई है, दुनिया के किसी भी धर्म का तत्त्व कैसा ही गंभीर क्यों न हो, पर अब वह यदि उस धर्म की संस्थाओं तक या उसके पण्डितों तथा धर्मगुरुओं के प्रवचनों तक ही परिमित रहेगा तो इस वैज्ञानिक प्रभाव वाले जगत में उसकी कदर पुरानी कब्र से अधिक नहीं होगी। अनेकान्त-दृष्टि और उसकी आधारभूत अहिंसा—ये दोनों तत्त्व महान् से महान् हैं, उनका प्रभाव तथा प्रतिष्ठा जमाने में जैन सम्प्रदाय का बड़ा भारी हिस्सा भी है पर कोई बीसवीं सदी के विषम राष्ट्रीय तथा सामाजिक जीवन में उन तत्त्वों से यदि कई खास फायदा न पहुँचे तो मन्दिर, मठ और उपाश्रयों में हजारों पण्डितों के द्वारा चिल्लाहट मचाये जाने पर भी उन्हें कोई पूछेगा नहीं, यह निःसंशय बात है। जैन लिंगधारी सैकड़ों धर्मगुरु और सैकड़ों पंडित अनेकान्त के बाल की खाल दिन रात निकालते रहते हैं और अहिंसा की सूक्ष्म चर्चा में खून सुखाते तथा सिर तक फोड़ा करते हैं, तथापि लोग अपनी स्थिति के समाधान के लिए उनके पास नहीं फटकते। कोई जवान उनके पास पहुँच भी जाता है तो वह तुरन्त उनसे पूछ बैठता है कि "आप के पास जब समाधानकारी अनेकान्त दृष्टि और अहिंसा तत्त्व मौजूद हैं तब आप लोग आपस में ही गैरों की तरह बात-बात में क्यों टकराते हैं? मन्दिर के लिए, तीर्थ के लिए, धार्मिक प्रथाओं के लिए, सामाजिक रीति रिवाजों के लिए-यहां तक कि वेश रखना, कैसा रखना, हाथ में क्या पकड़ना इत्यादि बालसुलभ बातों के लिए-आप लोग क्यों आपस में लड़ते हैं? क्या आप का अनेकान्तवाद ऐसे विषयों में कोई मार्ग निकाल नहीं सकता? क्या आप के अनेकान्तवाद में और अहिंसा तत्त्व में प्रीविकाउन्सिल, हाईकोर्ट अथवा

मामूली अदालत जितनी भी समाधानकारक शक्ति नहीं है? क्या हमारी राजकीय तथा सामाजिक उलझनों को सुलझाने का सामर्थ्य आप के इन दोनों तत्त्वों में नहीं है? यदि इन सब प्रश्नों का अच्छा सामाधानकारक उत्तर आप असली तौर से 'हां' में नहीं दे सकते तो आप के पास आकर हम क्या करेंगे? हमारे जीवन में तो पद पद पर अनेक कठिनाइयां आती रहती हैं उन्हें हल किये बिना यदि हम हाथ मे पोथियां लेकर कथंचित् एकानेक, कथंचित् भेदाभेद और कथंचित् नित्यानित्य के खाली नारे लगाया करें तो इससे हमें क्या लाभ पहुँचेगा? अथवा हमारे व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक जीवन में क्या फर्क पड़ेगा?" और यह सब पूछना है भी ठीक, जिसका उत्तर देना उनके लिए असंभव हो जाता है।

इस में सन्देह नहीं कि अहिंसा और अनेकान्त की चर्चावाले पोथियों की उन पोथीवाले भण्डारों की उनके रचने वालों के नामों की तथा उनके रचने के स्थानों की इतनी अधिक पूजा होती है कि उसमें सिर्फ फूलों का ही नहीं किन्तु सोने-चांदी तथा जवाहरात तक का ढेर लग जाता है तो भी उस पूजा के करने तथा करानेवालों का जीवन दूसरों जैसा प्रायः पामर ही नजर आता है और दूसरी तरफ हम देखते हैं तो स्पष्ट नजर आता है कि गांधीजी के अहिंसा तत्त्व की ओर सारी दुनिया देख रही है और उनके समन्वयशील व्यवहार के कायल उनके प्रतिपक्षी तक हो रहे हैं। महावीर की अहिंसा और अनेकान्तदृष्टि की डौंडी पीटने वालों की ओर कोई श्रीमान् आंख उठा कर देखता तक नहीं और गांधीजी की तरफ सारा विचारक-वर्ग ध्यान दे रहा है इस अंतर का कारण क्या है? इस सवाल के उत्तर में सब कुछ आजाता है।

अब कैसा उपयोग होना चाहिए?

अनेकान्त दृष्टि यदि अध्यात्मिक मार्ग में सफल हो सकती है और अहिंसा का सिद्धान्त यदि आध्यात्मिक कल्याणसाधक हो सकता है तो यह भी मानना चाहिए कि ये दोनों तत्त्व व्यावहारिक जीवन का श्रेय अवश्य कर सकते हैं क्योंकि जीवन व्यावहारिक हो या आध्यात्मिक पर उसकी शुद्धि के स्वरूप में भिन्नता हो ही नहीं सकती और हम यह मानते हैं कि जीवन की शुद्धि अनेकान्तदृष्टि और अहिंसा के सिवाय अन्य प्रकार से हो ही नहीं सकती। इस लिए हमें जीवन व्यावहारिक या आध्यात्मिक कैसा ही पसंद क्यों न हो पर यदि उसे उन्नत बनाना इष्ट है तो उस जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनेकान्तदृष्टि को तथा अहिंसा तत्त्व को प्रज्ञापूर्वक लागू करना ही चाहिए। जो लोग व्यावहारिक जीवन में इन दो तत्त्वों का प्रयोग करना शक्य नहीं समझते उन्हें सिर्फ आध्यात्मिक कहलानेवाले जीवन का धारण करना चाहिए। इस दलील के फलस्वरूप अन्तिम प्रश्न यही होता है कि तब इस समय इन दोनों तत्त्वों का उपयोग व्यावहारिक जीवन में कैसे किया जाय? इस प्रश्न का देना ही अनेकान्तवाद की मर्यादा है।

जैन समाज के व्यावहारिक जीवन की कुछ समस्याएं ये हैं:—

१—समग्र विश्व के साथ जैन धर्म का असली मेल कितना और किस प्रकार का हो सकता है?

२—राष्ट्रीय आपत्ति और संपत्ति के समय जैन धर्म कैसा व्यवहार रखने की इजाजत देता है?

३—सामाजिक और साम्प्रदायिक भेदों तथा फूटों को मिटाने की कितनी शक्ति जैन धर्म में है?

यदि इन समस्याओं को हल करने के लिए अनेकान्तदृष्टि तथा अहिंसा का उपयोग हो सकता है तो वही उपयोग इन दोनों तत्त्वों की प्राण पूजा है और यदि ऐसा उपयोग न किया जासके तो इन दोनों की पूजा सिर्फ पाषाणपूजा या शब्दपूजा मात्र होगी परन्तु मैंने जहां तक गहरा विचार किया है उससे यह स्पष्ट जान पड़ता है कि उक्त तीनों का ही नहीं किन्तु दूसरी भी वैसी सब समस्याओं

का व्यावहारिक समाधान, यदि प्रज्ञा है तो अनेकान्तदृष्टि के द्वारा तथा अहिंसा के सिद्धान्त के द्वारा पूरे तौर से किया जा सकता है उदाहरण के तौर पर जैनधर्म प्रवृत्ति मार्ग है या निवृत्ति मार्ग ? इस प्रश्न का उत्तर, अनेकान्तदृष्टि की योजना करके, यों दिया जा सकता है—"जैन धर्म प्रवृत्ति और निवृत्ति उभय मार्गावलम्बी है। प्रत्येक क्षेत्र मे जहा सेवा का प्रसग हो वहा अर्पण की प्रवृत्ति का आदेश करने क कारण जैन धर्म प्रवृत्तिगामी है और जहा भोगवृत्ति का प्रसग हो वहाँ निवृत्ति का आदेश करने के कारण निवृत्तिगामी भी है।" परन्तु जैसा आज कल देखा जाता है, भोग मे—अर्थात् दूसरों से सुविधा ग्रहण करने में-प्रवृत्ति करना और योग में-अर्थात् दूसरों को अपनी सुविधा देने मे-निवृत्ति धारण करना, यह अनेकान्त तथा अहिंसा का विकृतरूप अथवा इनका स्पष्ट भग है। श्वेताम्बरीय झगडों मे से कुछ को लेकर उन पर भी अनेकान्तदृष्टि लागू करनी चाहिये नग्नत्व और वस्त्रधारित्व के विषय में द्रव्यार्थिक,पर्यायार्थिक—इन दो नयों का समन्वय बराबर हो सकता है। जैनत्व अर्थात् वीतरागत्व यह तो द्रव्य (सामान्य) है और नग्नत्व, तथा वस्त्रधारित्व, एव नग्नत्व तथा वस्त्रधारण के विविधस्वरूप-ये सब पर्याय (विशेष) हैं। उक्त द्रव्य शाश्वत है पर उसके उक्त पर्याय सभी अशाश्वत तथा अव्यापक है। प्रत्येक पर्याय यदि द्रव्यसम्बद्ध है-द्रव्य का बाधक नहीं है—तो वह सत्य है अन्यथा सभी असत्य हैं। इसी तरह जीवनशुद्धि यह द्रव्य है और स्त्रीत्व या पुरुषत्व दोनों पर्याय हैं। यही बात तीर्थ के और मन्दिर के विषय में घटानी चाहिए। न्यात, और फिर्कों के बारे मे भेदाभेद भङ्गो का उपयोग करके ही झगड़ा निपटाना चाहिए। उत्कर्ष के सभी प्रसङ्गों में अभिन्न अर्थात् एक हो जाना और अपकर्ष के प्रसगों मे भिन्न रहना अर्थात् दलबन्दी न करना। इसी प्रकार वृद्धलग्न अनेकपत्नीग्रहण, पुनर्विवाह जैसी विवादास्पद विषयों के लिए भी कथंचित् विधेय अविधेय की भगी प्रयुक्त किये बिना समाज समजस रूप से जीवित रह नहीं सकता।

चाहे जिस प्रकार से विचार किया पर आज कल की परिस्थिति में तो यह सुनिश्चित है कि जैसे सिद्धसेन समतभद्र आदि पूर्वाचार्यों ने अपने समय के विवादास्पद पक्ष-प्रतिपक्षों पर अनेकान्त का और तज्जनित नय आदि वादों का प्रयोग किया है वैसा ही हमें भी उपस्थित प्रश्नों पर उनका प्रयोग करना ही चाहिए। यदि हम ऐसा करने के तैयार नहीं हैं तो उत्कर्ष की अभिलाषा रखने का भी हमें कोई अधिकार नहीं है।

अनेकान्त की मर्यादा इतनी विस्तृत और व्यापक है कि उसमें से सब विषयों पर प्रकाश डाला जा सकता है। इसलिए कोई ऐसा भय न रखें कि प्रस्तुत व्यावहारिक विषयों पर पूर्वाचार्यों ने तो चर्चा नहीं की फिर यहां क्यों की गई ? क्या यह कोई उचित समझेगा कि एक तरफ से समाज मे अविभक्तता की शक्ति की जरूरत होने पर भी वह छोटी-छोटी जातियों अथवा उपजातियों मे विभक्त होकर बरबाद होता रहे दूसरी तरफ से विद्या और उद्योग की जीवनप्रद संस्थाओं मे बल लगाने के बजाय धन, बुद्धि और समय की सारी शक्ति को समाज तीर्थ के झगड़ों मे खर्च करता रहे और तीसरी तरफ जिस विधवा मे संयम पालन का सामर्थ्य नहीं है उस पर संयम का बोझ समाज बलपूर्वक लादता रहे तथा जिसमे विद्याग्रहण एव सयमपालन की शक्ति है उस विधवा को उसके लिये पूर्ण मौका देने का कोई प्रबन्ध न करके उससे समाज कल्याण की अभिलाषा रखे और हम पण्डितगण सन्मतितर्क तथा आप्तमीमांसा के अनेकान्त और नयवाद विषयक शास्त्रार्थों पर दिन रात सिरपच्ची किया करें ? जिसमे व्यवहार बुद्धि होगी और प्रज्ञा की जागृति होगी वह तो यही कहेगा कि अनेकान्त भाव की मर्यादा मे से जैसे कभी आप्त मीमांसा का जन्म और सन्मतितर्क का आविर्भाव हुआ था वैसे ही उस मर्यादा मे से आजकल 'समाज मीमांसा' और 'समाज तर्क' का जन्म होना चाहिए तथा उसके द्वारा अनेकान्त के इतिहास का उपयोगी पृष्ठ लिखा जाना चाहिए।

अपेक्षा या नय

मकान किसी एक कोने मे पूरा नहीं होता। उसके अनेक कोने भी किसी एक ही दिशा में नहीं होते। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण आदि परस्पर विरुद्ध दिशा वाले एक-एक कोने पर खड़े रहकर किया जाने वाला उस मकान का अवलोकन पूर्ण तो नहीं होता, पर वह अयथार्थ भी नहीं। जुदे जुदे सम्भवित सभी कोनों पर खड़े रहकर किये जाने वाले सभी सम्भवित अवलोकनो का सार समुच्चय ही उस मकान का पूरा अवलोकन है। प्रत्येक कोणसम्भवी प्रत्येक अवलोकन उस पूर्ण अवलोकन का अनिवार्य अङ्ग है। वैसे ही किसी एक वस्तु या समग्र विश्व का तात्त्विक चिन्तन दर्शन भी अनेक अपेक्षाओं से निष्पन्न होता है। मन की सहज रचना, उस पर पड़ने वाले आगन्तुक संस्कार और चिन्त्य वस्तु का स्वरूप इत्यादि के सम्मेलन से ही अपेक्षा बनती है। ऐसी अपेक्षाएं अनेक होती हैं, जिनका आश्रय लेकर वस्तु का विचार किया जाता है। विचार को सहारा देने के कारण या विचार स्रोत के उद्गम का आधार बनने के कारण वे ही अपेक्षाएँ दृष्टि-कोण या दृष्टि बिन्दु भी कही जाती हैं। सम्भवित सभी अपेक्षाओं से—चाहे वे विरुद्ध ही क्यों न दिखाई देती हों—किये जाने वाले चिन्तन व दर्शनों का सारसमुच्चय ही उस विषय का पूर्ण—अनेकान्त दर्शन है। प्रत्येक अपेक्षासम्भवी दर्शन उस पूर्ण दर्शन का एक-एक अङ्ग है जो परस्पर विरुद्ध होकर भी पूर्ण दर्शन मे समन्वय पाने के कारण वस्तुतः अविरुद्ध ही है।

जब किसी मनोवृत्ति विश्व के अन्तर्गत सभी भेदों को—चाहे वे गुण, धर्म या स्वरूप कृत हों या व्यक्तित्वकृत हों—भुलाकर अर्थात् उनकी ओर झुके बिना ही एक मात्र अखण्डताका ही विचार करती है, तब उसे अखण्ड या एक ही विश्व का दर्शन होता है। अभेद की उस भूमिका पर से निष्पन्न होने वाला 'सत्' शब्द के मात्र अखण्ड अर्थ का दर्शन ही संग्रह नय है। गुण धर्म कृत या व्यक्तित्व कृत भेदों की ओर झुकने-वाली मनोवृत्ति से किया जाने वाला उसी विश्व का दर्शन व्यवहार नय कहलाता है, क्योंकि उसमे लोक सिद्ध व्यवहारों की भूमिका रूप से भेदो का खास स्थान है। इस दर्शन मे 'सत्' शब्द की अर्थ मर्यादा अखण्डित न रहकर अनेक खण्डों मे विभाजित हो जाती है। वही भेदगामिनी मनोवृत्ति या अपेक्षा—सिर्फ कालकृत भेदों की ओर झुककर सिर्फ वर्तमान का ही कार्यक्षम होने के कारण जब सत् रूप से देखती है और अतीत अनागत का 'सत्' शब्द की अर्थ मर्यादा मे से हटा देती है तब उसके द्वारा फलित होने वाला विश्व का दर्शन ऋजुसूत्र क्योंकि वह अतीत-अनागत के चक्रव्यूह को छोड़कर सिर्फ वर्तमान की सीधी रेखा पर चलता है।

उपर्युक्त तीनो मनोवृत्तिया ऐसी हैं जो शब्द या शब्द के गुण-धर्मों का आश्रय बिना लिये ही किसी भी वस्तु का चिन्तन करती हैं। अतएव वे तीनों प्रकार के चिन्तन अर्थ नय हैं। पर ऐसी भी मनोवृत्ति होती है जो शब्द के गुण धर्मों का आश्रय लेकर ही अर्थ का विचार करती है। अतएव ऐसी मनोवृत्ति से फलित अर्थचिन्तन शब्द नय कहे जाते हैं। शाब्दिक लोग ही मुख्यतया शब्द नय के अधिकारी हैं, क्योंकि उन्ही के विविध दृष्टि बिन्दुओं से शब्दनय में विविधता आई है।

जो शाब्दिक सभी शब्दों का अखण्ड अर्थात् अव्युत्पन्न मानते हैं वे व्युत्पत्ति भेद से अर्थ भेद न मानने पर भी लिङ्ग, पुरुष, काल आदि अन्य प्रकार के शब्दधर्मों के भेद के आधार पर अर्थ का वैविध्य बतलाते हैं। उनका वह अर्थभेद का दर्शन शब्द नय या साम्प्रत नय है। प्रत्येक शब्द को व्युत्पत्ति सिद्ध ही मानने वाली शाब्दिक पर्याय अर्थात् एकार्थक समझे जाने वाले शब्दों के अर्थ में भी व्युत्पत्ति भेद से भेद बतलाते हैं। उनका शक्र, इन्द्र आदि जैसे पर्याय शब्दों के अर्थ भेद का दर्शन समभिरूढ नय कहलाता है। व्युत्पत्ति के भेद

से हीं नहीं, बल्कि एक ही व्युत्पत्ति से फलित होने वाले अर्थ की मौजूदगी के भेद के कारण से भी जो दर्शन अर्थ भेद मानना है वह एवंभूत नय कहलाता है। इन तार्किक छ नयों के अलावा एक नैगम नाम का नय भी है। जिसमें निगम अर्थात् देश रूढ़ि के अनुसार अभेदगामी और भेदगामी सब प्रकार के विचारों का समावेश माना गया है। प्रधानतया ये ही सात नय हैं। पर किसी एक अंश को अर्थात् दृष्टिकोण को अवलम्बित करके प्रवृत्त होने वाले सब प्रकार के विचार उस-उस अपेक्षा के सूचक नय ही हैं।

शास्त्र में द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक ऐसे दो नय भी प्रसिद्ध हैं पर वे नय उपर्युक्त सात नयों से अलग नहीं हैं किन्तु उन्हीं का संक्षिप्त वर्गीकरण या भूमिका मात्र है। द्रव्य अर्थात् सामान्य, अन्वय, अभेद या एकत्व को विषय करने वाला विचार मार्ग द्रव्यार्थिक नय है। नैगम- संग्रह और व्यवहार—ये तीनों द्रव्यार्थिक ही हैं। इनमें से संग्रह तो शुद्ध अभेद का विचार होने से शुद्ध या मूल ही द्रव्यार्थिक है जब कि व्यवहार और नैगम की प्रवृत्ति भेदगामी होकर भी किसी न किसी प्रकार के अभेद को भी अवलम्बित करके ही चलती है। इसलिए वे भी द्रव्यार्थिक ही माने गये हैं। अलबत्ता वे संग्रह की तरह शुद्ध न होकर अशुद्ध— मिश्रित ही द्रव्यार्थिक हैं।

पर्याय अर्थात् विशेष, व्यावृत्ति या भेद को ही लक्ष्य करके प्रवृत्त होने वाला विचार पथ पर्यायार्थिक नय है। ऋजुसूत्र आदि बाकी के चारों नय पर्यायार्थिक ही माने गए हैं। अभेद को छोड़कर एक मात्र भेद का विचार ऋजुसूत्र से शुरू होता है इसलिए उसी को शास्त्र में पर्यायार्थिक नय की प्रकृति या मूलाधार कहा है। पिछले तीन नय उसी मूलभूत पर्यायार्थिक के एक प्रकार से विस्तारमात्र हैं।

केवल ज्ञान को उपयोगी मान कर उसके आश्रय से प्रवृत्त होनेवाली विचार धारा ज्ञान नय है तो केवल क्रिया के आश्रय से प्रवृत्त होनेवाली विचार धारा क्रिया नय है। नयरूप आधार-स्तम्भों के अपरिमित होने के कारण विश्व का पूर्ण दर्शन-अनेकान्त भी निस्सीम है।

सप्तभंगी

भिन्न भिन्न अपेक्षाओं दृष्टिकोणों या मनोवृत्तियों से जो एक ही तत्त्व के नाना दर्शन फलित होते हैं उन्हीं के आधार पर भंगवाद की सृष्टि खड़ी होती है। जिन दो दर्शनों के विषय ठीक एक दूसरे के बिल्कुल विरोधी पड़ते हों ऐसे दर्शनों का समन्वय बतलाने की दृष्टि से उनके विषयभूत भाव अभावात्मक दोनों अंशों को लेकर उन पर जो सम्भावित वाक्य—भङ्ग बनाये जाते हैं। वही सप्तभंगी है। सप्तभंगी का आधार नयवाद है, और उसका ध्येय तो समन्वय है अर्थात् अनेकान्त कोटि का व्यापक दर्शन कराना है, जैसे किसी भी प्रमाण से जाने हुए पदार्थ का दूसरे को बोध कराने के लिए परार्थ अनुमान वाक्य की रचना की जाती है, वैसे ही विरुद्ध अंशों का समन्वय श्रोता को समझाने की दृष्टि से भंग वाक्य की रचना भी की जाती है। इसतरह नयवाद और भंगवाद अनेकान्त दृष्टि के क्षेत्र में आप ही आप फलित हो जाते हैं।

दर्शनान्तर में अनेकान्तवाद

यह ठीक है कि वैदिक परम्परा के न्याय, वेदान्त आदि दर्शनों में तथा बौद्ध दर्शन में किसी एक वस्तु के विविध दृष्टियों से निरूपण की पद्धति तथा अनेक पक्षों के समन्वय की दृष्टि भी देखी जाती है। फिर भी प्रत्येक वस्तु और उसके प्रत्येक पहलू पर संभवित समग्र दृष्टि बिन्दुओं से विचार करने का आत्यंतिक आग्रह तथा उन समग्र दृष्टि बिन्दुओं के एक मात्र समन्वय में ही विचार की परिपूर्णता मानने का दृढ़ आग्रह जैन परंपरा के सिवाय अन्यत्र कहीं नहीं देखा जाता। इसी आग्रह में से जैन तार्किकों ने अनेकान्त, नय और सप्तभंगी वाद

का बिल्कुल स्वतंत्र और व्यवस्थित शास्त्र निर्माण किया जो प्रमाण शास्त्र का एक भाग ही बन गया और जिसकी जोड का ऐसा छोटा भी ग्रन्थ इतर परंपराओं में नहीं बना। विभज्यवाद और मध्यम मार्ग होते हुए भी बौद्ध परंपरा किसी भी वस्तु में वास्तविक स्थायी अंश देख न सकी उसे मात्र क्षणभंग ही नजर आया। अनेकान्त शब्द से ही अनेकान्त दृष्टि का आश्रय करने पर भी नैयायिक परमाणु, आत्मा आदि को सर्वथा अपरिणामी ही मानने-मनवाने की धुन से बच न सके। व्यावहारिक व पारमार्थिक आदि अनेक दृष्टियों का अवलम्बन करते हुए भी वेदान्ती अन्य सब दृष्टियों को ब्रह्म-दृष्टि से कम दर्जे की या बिल्कुल ही असत्य मानने मनवाने से बच न सके। इसका एक मात्र कारण यही जान पडता है कि उन दर्शनों में व्यापक रूप से अनेकान्त भावना का स्थान न रहा जैसा दर्शन में रहा। इसी कारण से जैन दर्शन सब दृष्टियों का समन्वय भी करता है और सभी दृष्टियों को अपने अपने बल पर यथार्थ मानता है। भेद-अभेद, सामान्य-विशेष, नित्यत्व अनित्यत्व आदि तत्त्वज्ञान के प्राचीन मुद्दों पर ही सीमित रहने के कारण वह अनेकान्त दृष्टि और तन्मूलक अनेकान्त व्यवस्थापक शास्त्र पुनरुक्त, चर्वित चर्वण या नवीनता शून्य जान पडने का आपातत: सम्भव है फिर भी उस दृष्टि और उस शास्त्र निर्माण के पीछे जो अखण्ड और सजीव सर्वांश सत्य को अपनाने की भावना जैन परम्परा में रही और जो प्रमाण शास्त्र में अवतीर्ण हुई उसका जीवन के समग्र क्षेत्रों में सफल उपयोग होने की पूर्ण योग्यता होने के कारण ही उसे प्रमाण शास्त्र को जैनाचार्यों की देन कहना अनुपयुक्त नहीं।

जैन शासन में गण-तन्त्र

गणतन्त्र-प्रजातन्त्र भारतवासियों की पुरानी वस्तु है। अगर हम में अन्याय मात्र का सामना करने का नैतिक बल मौजूद हो तथा निस्सार मतभेदों एवं स्वार्थों को तिलांजलि देकर राष्ट्र, समाज और गणधर्म की रक्षा करने के लिये बलिदान करने की क्षमता आजाय तो किसका सामर्थ्य है जो हमें अपने पूर्वजों की संपत्ति के अधिकार या उपयोग से वंचित कर सके? गणधर्म में जो असीम शक्ति विद्यमान है, उसका अगर हम लोग सदुपयोग करना सीख लें तो जैनधर्म विश्व में सूर्य की भांति चमक उठे।

गण अर्थात् समूह। गण का प्रत्येक सभ्य राष्ट्र की प्रतिष्ठा तथा व्यवस्था बनाये रखने के लिए उत्तरदायी रहे, उसे कहते हैं गणतन्त्र। सबल के द्वारा निर्बल का सताया जाना या इसी प्रकार का कोई दूसरा अत्याचार गणतन्त्र कभी सहन नहीं कर सकता। निर्बल की सहायता करना, निर्बल को न्याय दिलाने के लिये सर्वस्व का भोग देना पडे तो भी पैर पीछे न देना, यह गणधर्म पालने वालों का महान् व्रत होता है।

गणतन्त्र की यह व्यवस्था आधुनिक प्रजासत्तात्मक राज्यप्रणाली से तनिक भी उतरती श्रेणी की नहीं थी। जैनयुग में नवलिच्छवी और नवमल्ली जाति के अठारह गण राजाओं का गणतन्त्र इतिहास में प्रसिद्ध है। अठारह गणराजाओं का वह गणतन्त्र सबलों द्वारा सताई जाने वाली निर्बल प्रजा को पीड़ा से मुक्त कराने के लिये और उनकी सुख-शान्ति की व्यवस्था करने के लिए तन, मन, धन का व्यय करने में नहीं झिझकता था। असहायों की सहायता करने में ही गौरव मानता था।

गणतन्त्र की इस पद्धति में गणधर्म का पालन करने वाली प्रजा को कितना सहन करना पड़ता था उसका इतिहास-प्रसिद्ध उल्लेख जैन-शास्त्रों में मिलता है।

(नोट—प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलालजी पं० दलसुखभाई मालवणिया तथा श्री शान्तिलालभाई व० सेठ के लेखों में से साभार संकलित)।

ओ३म् अर्हम्

श्री अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन कोन्फरन्स-स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थ

द्वितीय-परिच्छेद

जैन धर्म का संक्षिप्त इतिहास

लेखक : प० रत्न मुनि श्री सुशील कुमार जी "भास्कर" सा० रत्न, शास्त्री.

आदि-युग

आदि युग का आरम्भ प्राचीनतम है। वह जितना प्राचीन है उतना ही अज्ञात भी है। मानव-सभ्यता का अरुणोदय हुआ—उस दिन को ही आदि काल का प्रथम दिन मान लें तो अनुचित न होगा।

इस युग का नाम भगवान आदिनाथ के नाम से ही आदि-युग रखा गया है।

भगवान आदिनाथ आर्य-संस्कृति के सृष्टा, वर्तमान अव-सर्पिणी-काल में जैन धर्म के प्रथम संस्थापक, परम दार्शनिक और मानव-सभ्यता के जन्म-दाता के रूप में प्रसिद्ध हैं।

वर्तमान इतिहास भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) के विषय में मौन है क्योंकि इतिहासकारों की दृष्टि २५०० वर्ष से पूर्व काल को जानने तथा पहुँचने में असमर्थ है।

इसलिए भगवान ऋभषदेव के विषय में जानने के लिये हमें जैन शास्त्र, वेद, पुराण और स्मृति ग्रन्थों का आधार लेना पड़ता है।

भगवान ऋषभदेव के संबंध में वैदिक साहित्य मे बहुत कुछ वर्णन मिलता है। श्रीमद् भागवत् के पंचम और बारहवें स्कंध में उनके विषय में विस्तृत उल्लेख है। इस स्थान पर भगवान ऋषभदेव को मोक्ष धर्म के आद्य-प्रवर्तक माने गये हैं।

भगवान ऋषभदेव के काल को जैन धर्म में युगलिया काल कहा जाता है। पुराणों में भी ऐसा ही कहा गया है। वेद में यम-यमी के संवाद से भी जैनधर्म के अनुकूल वर्णन की सत्यता प्रमाणित होती है।

तत्कालीन मानव, प्राकृतिक-जीवन यापन करते थे और उनका मन प्राकृतिक दृश्यों और उनकी समृद्धि ही में लवलीन रहता था। उस समय के मानव सरल स्वभाव के थे और उनकी व्यवस्था भी अत्यन्त सरल थी। उनका निर्वाह प्रकृति-जन्य-कल्पवृक्षों द्वारा होता था। एक ही मां-बाप से युगल रूप में पैदा हुए वे कन्या और पुत्र आगे जाकर दम्पति के रूप में जीवन व्यतीत करने लगते थे।

उत्तरोत्तर कल्पवृक्ष अल्प फलदायी होने लगे जिसके कारण युगलियों मे कलह और असंतोष व्याप्त होने लगा। ऐसे समय में भगवान ऋषभदेव का जन्म हुआ। उन्होंने लोगों को केवल प्रकृति पर आश्रित ही न रखा किन्तु स्वावलम्बी बनने के लिये उपदेश दिया। लोगों को असि, मसि और कृषि आदि जीवन निर्वाह के साधन और जीवनोपयोगी वस्तुएं बनाना सिखाया अर्थात् युगलिया-युग का निवारण किया।

एक ही माता-पिता की संतान के बीच में जो दाम्पत्य-जीवन यापन किया जाता था—उसका भी निराकरण कर भगवान ऋषभदेव ने वैवाहिक प्रथा प्रारंभ की। अपने साथ में पैदा हुई सहोदरा सुमंगला के साथ अपना दाम्पत्य-जीवन तो व्यतीत किया ही किन्तु विवाह-प्रणाली को व्यवस्थित रूप देने के लिए और इस प्रणाली को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में विकसित करने के लिये सुनन्दा नाम की एक कन्या के साथ विधिवत् विवाह किया। यह कन्या अपने सहोदर भाई के अवसान के कारण हतोत्साहित और अनाथ बन गई थी। इस काल में और इस क्षेत्र में यह सर्व प्रथम विधि पूर्वक विवाह था।

इन दोनों स्त्रियों से भरत-बाहूबली आदि सौ पुत्र और ब्राह्मी तथा सुन्दरी नाम की दो कन्याओं की प्राप्ति हुई।

वर्तमान संस्कृति के आद्य-पुरुष को मिले हुए सौभाग्य को लेकर ही आज भी "शत पुत्रवान् भव' का आशीर्वाद दिया जाता है।

भगवान ऋषभदेव का जन्म स्थान अयोध्या था, जिसको विनीता भी कहा जाता है। आपका जन्म तीसरे आरे के अंतिम भाग में चैत्र वद अष्टमी को मध्य रात्रि में और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में नाभि कुलकर की रानी मरुदेवी की कुक्षि से हुआ था।

भगवान ऋषभदेव के राज्य-शासन के समय को हम निर्माण काल कह सकते हैं क्योंकि उनके ज्येष्ठ पुत्र भरत युवावस्था के पश्चात् राज्याधिकारी बनने के मार्ग पर आगे बढ़ रहे थे। वे राजनीति में भी अत्यन्त निपुण थे। बाहूबली में शारीरिक बल तत्कालीन वीरों के लिये स्पर्धा का विषय बन गया था।

भगवान ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी ने ब्राह्मी-लिपि का आविष्कार किया था और सुन्दरी ने गणित-शास्त्र का प्रचलन जारी किया था।

भगवान ऋषभदेव आत्मदर्शी और वस्तु तत्त्व के विज्ञाता थे। इस देश में कल्याण चाहने वाले लोगों के लिए एक सुयोजित मार्ग स्थापित करना चाहते थे। इस कारण ससार के प्रति उन्हें वैराग्य होना-यह स्वाभाविक था। उन्होंने अपना राज्य अपने पुत्रों को बांट दिया और स्वयं ससार का त्याग करके चार हजार पुरुषों के साथ भगवती दीक्षा अंगीकार कर ली।

एक हजार वर्ष तक आत्म साधना और तपश्चर्या करते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान तथा जनपद विहार करते हुए अन्त में पुरिमताल नगर में उनको केवलज्ञान हुआ। केवलज्ञान के पश्चात् आपने चतुर्विध संघ रूप तीर्थ की स्थापना की। अत इस अवसर्पिणी काल में ही आप आदि तीर्थंकर कहलाये। वैदिक-शास्त्रों के अनुसार वे प्रथम 'जिन' बने और उपनिषदों के अनुसार 'ब्रह्म' तथा 'भगवान और परम-पद प्राप्त करने वाले सिद्ध, बुद्ध तथा अजर-अमर परमात्मा हुए।

प्रहार करने के लिए उठा हुआ बाहूबली का हाथ निष्प्रयोजन वापिस कैसे लौटता? सामने वाले का अथवा अपना घात करने के स्थान पर उन्होंने उस मुष्टि का उपयोग अभिमान का घात करने में लगाया। उन्होंने ऊपर को उठे हुए हाथों से ही केश-लोचन किया और साधु-व्रती बने।

इस प्रकार इस क्षेत्र में सर्व प्रथम सम्राट बनने का सौभाग्य भरत को प्राप्त हुआ। भरत के सबध में विस्तृत वर्णन जैन अथवा जैनेतर ग्रन्थों में सहज ही मिल सकता है।

भरत और बाहूबली

भगवान ऋषभदेव के इन दोनों पुत्रों के नाम जैन ग्रन्थों में सुविख्यात हैं।

भरत के नाम से ही इस क्षेत्र का नाम 'भरत' या 'भारत' हुआ। इस अवसर्पिणी काल में भरत सर्व प्रथम चक्रवर्ती राजा थे। उनकी सत्ता स्वीकार करने के लिये उनका भाई बाहूबली किसी प्रकार भी तैयार नहीं था। बाहूबली को अपने बल पर अभिमान था। परिणामत दोनों के बीच में युद्ध हुआ। जैन शास्त्रों में यह-युद्ध घटना सर्वाधिक प्राचीन है।

यद्यपि इस समय सेनाओं का निर्माण हो चला था, फिर भी मानव जाति का निष्प्रयोजन विनाश करना उस समय अनुचित समझा जाता था। इसलिए पांच प्रकार के युद्ध निश्चित किये गये जैसे कि :-दृष्टि-युद्ध, नाद युद्ध, मल्ल युद्ध, चक्र-युद्ध और मुष्टि-युद्ध।

१-दृष्टि-युद्ध में जो पहले आँख बन्द करदे वह हारा हुआ माना जाय।

२-नाद युद्ध में जिसकी आवाज अपेक्षा कृत क्षीण हो, वह हारा हुआ माना जाय।

अथवा जिसकी आवाज अपेक्षाकृत सशक्त हो या अधिक समय तक टिक सके, वह जीता हुआ माना जाय।

विश्व के लोग वैज्ञानिक आविष्कारों के आधार पर अगणित मानव-संहार-युद्ध भी करते हैं—उनके स्थान पर इस प्रकार के निर्दोष युद्ध यदि हों तो मानव जाति का कितना कल्याण हो! मल्ल-युद्ध, चक्रयुद्ध और मुष्टि-युद्ध जैसे संहारक और घातक युद्ध उस समय भी थे किन्तु इनका उपयोग अन्तिम समय में किया जाता था। जबकि उनका उपयोग अनिवार्य एवं अपरिहार्य हो जाता था।

चौथे युद्ध में भरत ने चक्र छोड़ा किन्तु बन्धुओं पर उसका असर नहीं होता है। अतः वह वापिस लौट गया।

अन्तिम युद्ध में बाहूबली ने भरत को मारने के लिए घूंसा उठाया किन्तु शीघ्र ही उन्हें विवेक जागृत हुआ और इन्द्र ने समझाया अतः उन्होंने अपनी मुट्ठी ऊपर ही रोक ली। यदि इस मुट्ठी का प्रहार हो जाता तो भरत न जाने कहाँ लुप्त हो जाते! उनका पता तक न लगता। इस प्रकार की असीम शक्ति बाहूबली की कही जाती है।

छद्मावस्था और केवलज्ञानावस्था मिलकर कुल एक लाख पूर्व दीर्घ काल तक संयम का आराधन करके अष्टापद गिरि पर पद्मासन से स्थित होकर अभिजित नक्षत्र में वे परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।

ऋषभदेव के पश्चात् के बाईस तीर्थंकर

भगवान ऋषभदेव के बाद के बाईस तीर्थंकरों का इतिहास संभवित है और महत्त्व पूर्ण है किन्तु उसके संबन्ध में विस्तृत वर्णन नहीं मिल सकता। इसलिए उनके नाम और उनके सम्बन्ध की सामान्य जानकारी ही यहां दी जाती है।

क्रम	नाम	पिता	माता	स्थान
२.	अजितनाथ	जितशत्रु	विजयादेवी	अयोध्या
३	संभवनाथ	जितारिराजा	सैन्यादेवी	श्रावस्ती
४.	अभिनन्दन	सवर राजा	सिद्धारथरानी	विनिता
५	सुमतिनाथ	मेघरथराजा	सुमंगला	कुशलपुरी
६	पद्मप्रभु	धर राजा	सुसिमा	कौशाम्बी
७	सुपार्श्वनाथ	प्रतिष्ठ सेन	पृथ्वी	काशी
८	चन्द्र प्रभु	महासेन	लक्ष्मा	चन्द्रपुरी
९.	सुविधिनाथ	सुग्रीव	रामादेवी	काकन्दी
१०.	शीतलनाथ	दृढ़रथ	नन्दारानी	भद्दिलपुर
११	श्रेयांसनाथ	विष्णुसेन	विष्णुदेवी	सिंहपुरी
१२	वासुपूज्य	वसुपूज्य	जयादेवी	चंपापुरी
१३	विमलनाथ	कृतवर्म	श्यामा	कपिलपुर
१४.	अनंतनाथ	सिंहसेन	सुयशा	अयोध्या
१५	धर्मनाथ	भानुराजा	सुव्रता	रतनपुर
१६.	शांतिनाथ	विश्वसेन	अचिरा	हस्तिनापुर

१७.	कुंथुनाथ	सूरराजा	श्रीदेवी	हस्तिनापुर
१८.	अरहनाथ	सुदर्शनराजा	श्रीदेवी	हस्तिनापुर
१९.	मल्लिनाथ	कुंभ राजा	प्रभावती	मिथिला (मथुरा)
२०.	मुनिसुव्रत	मित्रराजा	पद्मावती	राजग्रही
२१.	नमिनाथ	विजयसेन	वप्रादेवी	मिथिला (मथुरा)
२२.	नेमनाथ (अरिष्टनेमी)	समुद्रसेन	शिवादेवी	द्वारिका
२३.	पार्श्वनाथ	अश्वसेन	वामादेवी	बनारस

इन बाईस तीर्थंकरों में से १६ वें श्री शांतिनाथ, १७ वें श्री कुंथुनाथ और १८ वे श्री अहरनाथ ये तीन तीर्थंकर अपने राज्य काल में चक्रवर्ती थे।

उन्नीसवें श्री मल्लीनाथजी स्त्री रूप मे थे। जैन धर्म मे स्त्री भी तीर्थंकर हो सकती है। यह सत्य का सर्व श्रेष्ठ प्रमाण है। विश्व के किसी भी धर्म में स्त्री को धर्म संस्थापक के रूप मे महत्व नहीं दिया गया है। जैनधर्म की यह उल्लेखनीय विशेषता है।

बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतजी के समय में श्रीराम और सीता हुए तथा बाईसवें अरिष्टनेमी (नेमनाथ) के समय में नवमे वासुदेव श्री कृष्ण हुए थे।

अरिष्टनेमी जब विवाह करने के लिए जा रहे थे तब मांसाहार के लिए बाडे मे बन्द किये गये पशुओं का करुण-क्रन्दन सुनकर उन्हें बचाने के लिए विवाह-मंडप से वापिस लौट गए और परम कल्याणकारी संयम-धर्म को स्वीकार किया। श्री कृष्ण और उनका परस्पर का संवाद जैनागमों मे काफी मिलता है।

तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने पशु-संरक्षण और जीव-दया का महात्म्य बताया। उनका कमठ ऋषि के साथ का वार्तालाप जैन आगमों में प्रसिद्ध है।

भगवान-महावीर

भगवान पार्श्वनाथ के २५० वर्ष पश्चात् और आज से २५५२ वर्ष पूर्व चौवीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन क्षत्रिय-कुंड नगर के सिद्धार्थ राजा और रानी त्रिशला देवी की कूख से हुआ। उनका जन्म से नाम वर्द्धमान था।

बाल सुलभ खेल-कूद करते हुए वे युवावस्था को प्राप्त हुए और उनका विवाह यशोदा नाम की राजकन्या के साथ हुआ और जिसके परिणाम स्वरूप आपको प्रियदर्शना नाम की एक कन्या हुई।

अपने माता पिता के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् आपने दीक्षा लेने की तैयारी बताई किन्तु बडे भाई नंदी-वर्धन ने आपको बहुत समय तक संसार में रुकने के लिये कहा। पिता श्री की अनुपस्थिति में छोटे भाई को बडे भाई की आज्ञा का पालन करना चाहिये। इस आदर्श को मूर्तरूप देने के लिये श्री वर्द्धमान दो वर्ष तक संसार मे रहे। इस बीच में सचित्त जल त्याग आदि तपश्चर्या स्वीकार कर संयम के लिये प्राथमिक भूमिका तैयार करते रहे। अंत मे एक वर्ष तक "वार्षिक दान" देकर दीक्षित हो गये।

दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् साढे बारह वर्ष और एक पक्ष तक भगवान महावीर ने घोर तपश्चर्या की जिससे चार घनघाती कर्म क्षय हुए। जृंभिका नगरी के बाहर ऋजुवालिका नदी के उत्तरवर्ती नदी के किनारे सामाजिक गाथापति कृष्णी के क्षेत्र मे चउविहार छट्ठ करके शाल वृक्ष के समीप दिवस के पिछले प्रहर में गोदोहन

के आसन में बैठे हुए जब धर्मध्यान में विचरण कर रहे थे—वैशाख शुक्ला दशमी को अत्यन्त प्रकाशमय केवलज्ञान और केवलदर्शन प्रकट हुए।

केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद धर्मदेशना देते हुए ३० वर्ष तक भगवान ने ग्रामानुग्राम विचरण किया।

हुंडावसर्पिणी-काल के प्रभाव से भगवान महावीर का प्रथम उपदेश खाली गया क्योंकि उस देशना में केवल देवता थे, मनुष्य नहीं। दूसरे समय की देशना में वेद-वेदांगों के पारंगत ब्राह्मण पंडित शिष्य बने जिनमें इन्द्रभूति (गौतम) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

भगवान महावीर के समय में समाज का अधःपतन हो चला था। उस समय मानव जाति की एकता के स्थान पर ऊँच-नीच की भावना का भूत जातिवाद के नाम पर खड़ा कर दिया गया था। स्त्रियों और शूद्रों को धर्म और पुण्य-कार्य के लाभ से वंचित कर दिया गया था।

धर्म से प्राप्त होने वाला सुख मरने के बाद की बात कहलाती थी। स्वर्ग की कुंजी यज्ञ और यज्ञ की कुंजी उसके अधिकारी ब्राह्मणों के यज्ञोपवीतों में बंधी रहती थी। यज्ञों में पशुओं की हिंसा और सोमरस का पान होता था। नरमेध यज्ञ भी होते थे और मजे की बात उस समय की यह थी कि वैदिक हिंसा—हिंसा नहीं किंतु स्वर्ग प्राप्ति का आधार मानी जाती थी।

धर्म के नाम पर चलने वाले किन्तु वास्तविक धर्म से विरुद्ध क्रियाकांडों के विरोध में भगवान महावीर ने क्रांति की। धार्मिक मान्यताओं का मूल्यांकन बदलने के लिए एक अद्भुत क्रांति की। आपका उपदेश था "धर्म का मूल अहिंसा, संयम और तप है। मानव मानवता के नाते एक समान है। भले वह स्त्री हो या पुरुष—चाहे कोई क्यों न हो—धर्माराधन का सब को समान अधिकार है।'

दूसरी देशना के समय इन्द्रभूति आदि मुख्य ग्यारह विद्वानों और उनके साथ में ४४०० ब्राह्मण जो भगवान महावीर से वाद-विवाद कर उन्हें पराजित करने की भावना से आये थे—उन्होंने उपदेश सुना और यथार्थता समझ कर सबके सब भगवान महावीर के शिष्य हो गये। ये ग्यारह विद्वान जैन शास्त्रों में ग्यारह गणधर के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं:—

(१) इन्द्रभूति (२) अग्निभूति (३) वायुभूति (४) व्यक्त (५) सुधर्मा (६) मंडित (७) मौर्यपुत्र (८) अंकपित (९) अचलभ्रात (१०) मैतार्य (११) प्रभास।

प्रभु की वाणी के उपदिष्ट तत्त्वों को सूत्र रूप में गूंथ कर द्वादशांग को व्यवस्थित रूप से बनाये रखने का कार्य इन गणधरों ने किया।

जैनागमों में भ० महावीर और गौतम तथा पंचम गणधर सुधर्मा और जंबूस्वामी के बीच में होने वाले वार्तालाप के प्रसंग स्थान स्थान पर मिलते हैं।

भगवान महावीर के ३० वर्ष के धर्मोपदेश के समय में उनके चतुर्विध संघ में १४,००० साधु और ३६,००० साध्वियां हुईं। लाखों की संख्या में जैनधर्म के अनुसार आचरण करने वाले श्रावक एवं श्राविकाएं बनीं।

साधुओं में जिस प्रकार इन्द्रभूति (गौतम) मुख्य थे उसी प्रकार साध्वियों में महासती चन्दनबाला मुखिया थीं।

छद्मावस्था और केवल-पर्याय मिलकर ४२ वर्ष की दीक्षा पर्याय के समय में उन्होंने एक अस्थिग्राम में, एक वाणिज्यग्राम में, पांच चम्पा नगरी में, पांच पृष्ठ चम्पा में, चौदह राजग्रही में, १ नालंदापाडा में ६ मिथिला

में, २ भद्रिका नगरी मे, १ आलभिका नगरी मे १ सावत्थिया नगरी में इस प्रकार ४१ चातुर्मास किये और ४२ वें चातुर्मास के लिये वे पावापुरी मे पधारे—जिसका अपर नाम अपापापुरी था। भगवान महावीर का यहा यह अंतिम चातुर्मास था। यह चातुर्मास पावापुरी के राजा हस्तिपाल की विनती से उनकी शाला मे व्यतीत किया। भगवान का मोक्ष-समय निकट था अतः अपनी पुण्यमयी और जगत के समस्त हित से जीवों की हितकारी वाग्धारा अविरत रूप से प्रवाहित कर रहे थे, जिससे भव्य जीवों को यथार्थ मार्ग प्राप्त हो सके।

आयुष्य कर्म का क्षय निकट जान कर प्रभु ने आसोज वद १४ को संथारा किया। अपने शिष्य गौतम स्वामी को समीपवर्ती ग्राम मे देवशर्मा नाम के एक ब्राह्मण को बोध देने के लिये भेजा। चतुर्दशी और अमावस्या के दो दिन के १६ प्रहर तक प्रभु ने सतत उपदेश दिया। जीवन के उत्तरभाग में दिये गये ये उपदेश "उत्तराध्ययन सूत्र" में सम्रहीत हैं। इस प्रकार उपदेश देते-देते आजसे २४६१ वर्ष के ऊपर जब चौथे आरे के तीन वर्ष और साढे आठ महिने शेप थे—कार्तिक वदी अमावस्या अर्थात् दीपावली की रात्रि मे भगवान महावीर निर्वाण पद को प्राप्त हुए।

देवशर्मा को प्रतिबोध देने के लिए गये हुए गौतम-स्वामी जब वापिस लौटे और जब उन्होंने भगवान महावीर के निर्वाण होने का समाचार जाना तब अत्यन्त आर्द्र बन गये। भगवान महावीर के प्रति उनके हृदय में अत्यधिक स्नेह था किन्तु महापुरुषों मे रही हुई निर्बलता क्षणिक होती है। गौतम स्वामी को भी थोडी देर बाद सत्य का प्रकाश मिला। उन्होंने जान लिया कि प्रभु के प्रति दर्शाया जाने वाला स्नेह भी केवल ज्ञान की प्राप्ति मे विघ्न रूप है। विचारश्रेणी का रूप बदला "सत्य ही—मैं मोह मे पडा हुआ हूँ। प्रभु तो वीतरागी थे। प्रत्येक आत्मा अकेली होती है, मैं अकेला हूँ। मेरा कोई नहीं—उसी प्रकार मैं भी किसीका नहीं" इस प्रकार की एकत्व भावना विचारने लगे। क्षपक श्रेणी पर आरूढ हुए गौतम स्वामी ने तत्क्षण घनघाती कर्मों का क्षय कर दिया और भगवान महावीर की निर्वाण गमन की रात्रि में लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया।

—०—

बुद्ध और महावीर

भगवान महावीर और बुद्ध समकालीन थे। बुद्ध शाक्य वंशीय कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन के पुत्र थे। इन्होंने भी ससार को निस्सार समझ कर उसका त्याग किया और तपश्चर्या धारण कर बोधिसत्व बने। बुद्ध अपने को 'आर्हत' मानते थे। भगवान महावीर को यदि अधिक मे अधिक सामना करना पड़ा था तो बुद्ध से।

महावीर और बुद्ध की तुलना हम इस प्रकार कर सकते हैं:—

	महावीर	बुद्ध
पिता	सिद्धार्थ	शुद्धोधन
माता	त्रिशला	महामाया
जन्म स्थान	क्षत्रिय-कुंडग्राम	कपिल वस्तु
काल	ई पू ५९८	ई. पू ५६५ या ५७५
पत्नि	यशोदा	यशोधरा
सन्तान	प्रियदर्शना (पुत्री)	राहुल (पुत्र)

आदितप	१२॥ वर्ष	६ वर्ष
निर्वाण	वि० सं० पूर्व ४७० वर्ष	वि० सं० पूर्व ४८५ वर्ष
आयुष्य	७२ वर्ष	८० वर्ष
व्रत	पञ्च महाव्रत	पंचशील
सिद्धांत	अनेकान्तवाद	क्षणिकवाद
मुख्य शिष्य	गौतम	आनन्द

भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध में जिस प्रकार विभिन्नता है उसी प्रकार कुछ समानता भी है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा तृष्णा-निवृत्ति आदि में महावीर के समान बुद्ध की दृष्टि भी अत्यन्त गहन थी। ब्राह्मण-संस्कृति के सामने ये दोनों श्रमण-संस्कृति के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे।

जीवन-शोधन, अहिंसा-पालन और श्रमणों के लिये आवश्यक नियमों में भी दोनों महापुरुषों के विधानों में बहुत कुछ समानता है।

निष्क्रमण के पश्चात् बुद्ध ने भी कठोर तप किया था, किन्तु पीछे से तप के प्रति उनमें घृणा के भाव पैदा हो गये और 'मध्यम प्रतिपदा' का मार्ग स्थापित किया।

भगवान महावीर की शिष्य परम्परा

भगवान महावीर के निर्वाण के बाद गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ। बारह वर्ष तक केवलज्ञानी के रूप में वे विचरण करते रहे और धर्म प्रचार तथा संघ-व्यवस्था आदि करते रहे।

१ सुधर्मा स्वामी—गौतम स्वामी के केवलज्ञानी हो जाने से भगवान महावीर के प्रथम पट्टधर-आचार्य पद-विभूषित होने का गौरव श्री सुधर्मा स्वामी को मिला। बारह वर्ष तक आपने संघ को आंतरिक तथा बाह्य-दोनों प्रकार से रक्षण, पोषण और संवर्धन किया। श्री सुधर्मा स्वामी को ९२ वें वर्ष की अवस्था में जब केवलज्ञान हुआ तब संघ-व्यवस्था का कार्य उनके शिष्य जम्बू स्वामी को दिया गया। श्री सुधर्मा स्वामी साठ वर्ष तक केवली के रूप में विचरण करते रहे और १०० वर्ष की आयुष्य पूर्ण कर निर्वाण-पद को प्राप्त हुए।

२ जम्बू स्वामी—सुधर्मा स्वामी को केवलज्ञान होने के पश्चात् श्री जम्बू स्वामी पाट पर आये। श्री जम्बू स्वामी एक श्रीमन्त व्यापारी के पुत्र थे। अखूट सम्पत्ति होने पर भी वैराग्य होने के कारण आपने विवाह के दूसरे दिन ही आठ पत्नियों को त्याग कर दीक्षा ले ली। इनके साथ विवाहित आठों स्त्रियां, उन स्त्रियों के माता पिता, अपने खुद के माता-पिता और उनके घर में चोरी करने के लिये आये हुए ५०० चोर-इस प्रकार कुल ५२७ विरक्त आत्माओं ने भगवती दीक्षा स्वीकार कर अपना जीवन सफल किया।

श्री सुधर्मा स्वामी के निर्वाण के पश्चात् श्री जम्बू स्वामी को केवलज्ञान हुआ। वे ४४ वर्ष तक केवलज्ञानी के रूप में विचरण कर मोक्ष पधारे।

इस अवसर्पिणी काल की जैन परम्परा में केवलज्ञान का स्रोत भगवान ऋषभदेव से प्रारंभ होता है। श्री जम्बू स्वामी अंतिम केवलज्ञानी थे। उनके निर्वाण के साथ-साथ दस विशेषताओं का भी लोप होगया:—

१. परम-अवधिज्ञान २. मन:पर्यवज्ञान ३. पुलाक लब्धि ४ आहारक शरीर ५ क्षायिक-सम्यक्त्व ६. केवलज्ञान ७. जिनकल्पी साधु ८. परिहार-विशुद्धि-चारित्र ९ सूक्ष्म संपराय-चारित्र १०. यथाख्यात चारित्र। इस प्रकार भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् ६४ वर्ष तक केवलज्ञान रहा।

३ प्रभव स्वामी—जम्बू स्वामी को केवलज्ञान होने के बाद प्रभव स्वामी आचार्य-पद पर विराजमान हुए। वे जयपुर के राजा जयसेन के कुमार थे। प्रजा को कष्ट देने के कारण उन्हें देश निकाला दिया गया। इस कारण ये भीमसेन नामक चोर के साथी बन गये और इस भीमसेन के मरण के पश्चात् वे ५०० चोरों के सरदार होगये।

जम्बू स्वामी विवाह करके जब पीछे लौटे तब उनको ९९ करोड का दहेज मिला। यह घटना सुन कर अपने साथियों को लेकर प्रभव जम्बू के यहां चोरी करने गया। प्रभव चोर की यह विशेषता थी कि वह जिस घर में चोरी करने जाता, उस घरवाला को मन्त्र-बल से निद्रामग्न कर देता था। इस प्रकार उसने सेवकों और प्रहरियों को निद्राधीन बना कर धन की गठड़िया बांध लीं और रवाना होने लगा। किन्तु आश्चर्य की बात यह हुई कि उठाने पर भी उसके पांव उठने न थे। वह विचार में पड गया कि ऐसा क्यों होता है ? ऐसा किसका प्रभाव है कि जिससे मेरा मन्त्र-बल निष्फल होता है।

दूसरी तरफ जम्बू स्वामी महा-सयमी और बालब्रह्मचारी थे। विवाह की प्रथम रात्रि में आठों स्त्रियो की विनती और अनेक प्रकार से समझाने पर भी उन्होने व्रतभग नहीं किया। प्रभव चोर उनके शयन-कक्ष के समीप गया और कमरे में होने वाली बातचीत ध्यान पूर्वक उसने सुनी। जम्बू स्वामी की वाणी सुनकर और चारित्र के प्रति दृढ़ता देखकर प्रभव प्रभावित हुआ और प्रातःकाल होने पर अपने साथियों सहित जम्बू स्वामी के साथ सयम स्वीकार कर लिया। इस समय प्रभव की आयु ३० वर्ष की थी। बीस वर्ष तक उन्होंने ज्ञानादि-साधना की और ५० वर्ष की आयु में वे समस्त जैन सघ के आचार्य बने।

४ स्वयभव स्वामी—प्रभव स्वामी के बाद स्वयभव आचार्य हुए। ये राजगृही के ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न हुए थे और वेद-वेदांगों में निष्णात थे। एक बार श्री प्रभव स्वामी से आपकी भेंट हुई। प्रभव स्वामी ने द्रव्य और भाव-यज्ञ का विलक्षण स्वरूप समझाया। इससे स्वयंभव को प्रतिबोध हुआ और उन्होंने दीक्षा ले ली।

स्वयभव स्वामी के 'मनक' नाम का एक पुत्र था। उसने भी दीक्षा ली। आचार्य ने अपने ज्ञान से जब यह जाना कि उनका अतकाल समीप है, तब अल्प समय मे जिन-वाणी का रहस्य समझाने के लिए शास्त्रों का मन्थन कर नवनीत के रूप में दशवैकालिक-सूत्र की रचना की।

५ यशोभद्र—वीर-निर्वाण स० ९८ में यशोभद्र आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित हुए। वीर-निर्वाण सं० १०८ मे सभूति विजय ने दीक्षा ली।

६ यशोभद्र और सभूति विजय—दोनों ही सघ के आचार्य थे। इन्होंने कुशलता पूर्वक सघ की व्यवस्था सभाली।

भद्रबाहू-युग

भद्रबाहू स्वामी की दीक्षा वीर नि० सं० १३९ के बाद आचार्य यशोभद्र स्वामी के पास हुई। स्थूलिभद्र दीक्षा वीर नि० स० १४६ अथवा सं० १५० में हुई। भद्रबाहू स्वामी गृहस्थाश्रम मे ४५ वर्ष तक रहे और ७० वर्ष तक गुरु महाराज की सेवा सुश्रूषा करके चौदह पूर्व का ज्ञान प्राप्त किया चौदह वर्ष तक संघ के एक मात्र आचार्य रहे। वीर नि० सं० १७० में ६६ वर्ष की अवस्था मे कालधर्म को प्राप्त किया। (सशयास्पद)

भद्रबाहू स्वामी के समय में भयकर दुष्काल पडा। एक समय की बात है कि कार्तिकशुक्ला पूर्णिमा के दिन महाराज चन्द्रगुप्त ने पौषध किया था। उस समय रात्रि के पिछले भाग में उन्होंने सोलह स्वप्न देखे। उन

स्वप्नों में एक बारह फन वाला साप भी था। इस स्वप्न का फल भद्रबाहू स्वामी ने बताया कि बारह वर्ष का दुष्काल पड़ेगा। संकट की इन घड़ियों मे उन्होंने महाराज चन्द्रगुप्त को दीक्षा दी और उसके बाद दक्षिण में कर्णाटक की तरफ विहार कर गए।

श्रुत-केवली भद्रबाहू स्वामी के जाने के पश्चात् संघ को बहुत ही क्षोभ हुआ। दुष्काल भी भयानक रूप से ताण्डव-नृत्य कर रहा था। ऐसे कठिन समय मे श्रावक-गण भद्रबाहू स्वामी को याद करने लगे।

भद्रबाहू स्वामी के जाने के पश्चात् सघ का नेतृत्व श्री स्थूलिभद्र के हाथों मे आया किन्तु वे शास्त्रों के पूर्ण रूप से ज्ञाता न थे। अतः भद्रबाहू स्वामी को वापिस लाने के लिये श्रावक-संघ दक्षिण में गया किन्तु उस समय आप 'महाप्राण' नाम के मौन व्रत में थे। फिर भी विचार-विनिमय करके उन्होंने सघ को बताया कि मैं अभी लौटने की स्थिति में नहीं हूं। तब श्रावक-सघ ने १४ पूर्व का ज्ञान स्थूलिभद्रश्री को देने के लिए भद्रबाहू स्वामी को समझाया।

श्री सघ मगध को वापिस लौटा और स्थूलिभद्रजी को समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। श्री स्थूलिभद्रजी कुछ और साधुओं के साथ विहार कर भद्रबाहू स्वामी के पास आये और विद्याभ्यास प्रारभ किया। कठोर ज्ञान-साधना से घबरा कर अन्य साधू तो अभ्यास में आगे न बढ सके किन्तु स्थूलिभद्रजी अपने अभ्यास में बढते ही गये। एक दिन 'रूप-परावर्तिनी' विद्या का निर्णय करने के लिये उन्होंने सिंह का रूप धारण किया। सिंह को देख कर निकटवर्ती साधू भयभीत हो गये। अपने साथी मुनिराजों को भयभीत हुआ जानकर वे अपनी पूर्वावस्था-मुनि-अवस्था में आ गये। रूप परिवर्तन का यह समाचार सुनकर भद्रबाहू स्वामी अत्यन्त खिन्न हुए जिससे उन्होंने अब तक पढाये हुए दस पूर्व के आगे पढाने मे इन्कार कर दिया। इस प्रकार १४ पूर्व में से १० पूर्व का विच्छेद हो गया।

श्री स्थूलिभद्र-युग

श्री स्थूलिभद्र नवमें नन्दराजा (नागर ब्राह्मण) के महामंत्री शकडाल के ज्येष्ठ-पुत्र थे। वीर-निर्वाण स० १४६ मे आपने दीक्षा ग्रहण की।

संसारावस्था मे समस्त कुटुम्ब को छोड़ कर बारह वर्ष तक वे कोशा नाम की वैश्या के घर मे रहे थे। उनके पिता की मृत्यु के बाद राजा ने उन्हें अपना मत्री बना लिया, किन्तु पिता की मृत्यु से उन्हें वैराग्य हो गया और राज दरबार छोड़कर चल दिये। मार्ग मे सभूतिविजय नाम के आचार्य मिले। आचार्य के चरणों में उन्हें शान्ति मिली और उनसे दीक्षा ग्रहण करली।

दीक्षा लेने के बाद गुरु की आज्ञा लेकर कोशा वैश्या के घर चातुर्मास किया। वहां वे तनिक भी विचलित नहीं हुए और वैराग्यभाव मे दृढ बने रहे।

भद्रबाहू स्वामी के अतेवासी-शिष्य विशाखाचार्य अपने गुरु भद्रबाहू स्वामी के कालधर्म प्राप्त करने के बाद मगध में आये और उन्होंने देखा कि स्थूलिभद्र के साधू वनों और उद्यानों के बदले नगर में रहने लगे हैं। इससे उन्हें बहुत ही बुरा लगा। इस सम्बन्ध में स्थूलिभद्रजी से उनकी चर्चा हुई किन्तु दोनों मे कोई खास समाधान नहीं हो सका। इस कारण दोनो के साधू अलग-अलग विचरने लगे। यहां से जैन संघ मे दो शाखाएं फूटीं, किन्तु अलग-अलग सम्प्रदायें नहीं बनीं। श्री स्थूलिभद्र जी के पास वीर नि० स० १७६ मे आर्य महागिरी ने दीक्षा ग्रहण की।

श्री स्थूलिभद्रजी ने सघ व्यवस्था, धर्म प्रचार तथा आत्म-साधना करते हुए वीर नि० सं० २१५ में कालधर्म प्राप्त किया।

श्री स्थूलिभद्रजी से लेकर लौंकाशाहजी के समय तक का विहंगावलोकन

श्री स्थूलिभद्रजी के पश्चात् आर्य महागिरी और आर्य सुहस्ति के नाम आचार्य के रूप में हमारे सामने आते हैं।

भद्रबाहू स्वामी और स्थूलिभद्रजी के समय में सचेलकत्त्व और अचेलकत्त्व के प्रश्न पर उठा हुआ मतभेद कालान्तर में उग्र बनता गया और उसमें से जैन धर्म की दो सम्प्रदायें चल निकलीं। सचेलकत्त्व को मानने वाले श्वेताम्बर कहलाये और अचेलकत्त्व को मानने वाले दिगम्बर।

आर्य महागिरी, आर्य सुहस्ति, आर्य सुप्रतिबद्ध, उमास्वाति, आचार्य गुणसुन्दरजी और कालिकाचार्य का समय विक्रम् के पूर्व का है। वीर निर्वाण के ४७० वर्ष बाद विक्रम-संवत् प्रारंभ हुआ।

इसके बाद श्री विमल-सूरी आर्यस्कन्दिल अथवा स्कन्दिलाचार्य और पादलिप्तसूरी हुए। इस समय के बीच में भगवान महावीर द्वारा प्रयुक्त लोकभाषा, अर्ध-मागधी की तरफ से हट कर शनैः शनैः जैनाचार्य, विद्वानों की भाषा अर्थात् संस्कृत की तरफ झुके। मूल आगमों के आधार पर संस्कृत में महान ग्रन्थों की रचना होने लगी।

अब आचार्य वृद्धवादि तथा कल्याण-मंदिर स्तोत्र के रचयिता श्री सिद्धसेन दिवाकर और दूसरे भद्रबाहु स्वामी का समय आया।

वीर नि० सं० ९८० और विक्रम सं० ५१० मे देवर्द्धीगणि क्षमाश्रमण ने वल्लभीपुर में श्रुत-रक्षा के लिए साधु-मुनिराजों की एक परिषद् बुलाई जिसमे आज तक जो भी आगम-साहित्य कण्ठस्थ रहने के कारण विलुप्त होता जाता था—उसे लिपिबद्ध कराया।

इसके बाद श्री भक्तामर स्तोत्र के रचयिता श्री मानतुंगाचार्य, जिनभद्रगणि, हरिभद्र सूरि आदि आचार्य हुए। इनके बाद नव अंगों के टीकाकार श्री अभयदेव सूरि, जिनदत्त सूरि और गुजरात में जैनधर्म की विजय पताका फहराने वाले हेमचन्द्राचार्य आदि अनेक संत हुए। इनके संबंध में भी काफी साहित्य उपलब्ध हो सकता है।

सामान्यतः जैसा सब जगह बनता है—वैसे ही जैन श्रमण संघ में भी शनैः शनैः शिथिलता आने लगी। क्रिया-कांड और समाचारी के संबंध में मतभेद खड़े हो जाने के कारण पृथक-पृथक संघ और गच्छ अस्तित्व में आने लगे। इन मतभेदों के बावजूद भी अब तक संघ में जो एकता-अविछिन्नता दिखने में आती थी, किन्तु अब चौरासी गच्छ खडे हो गये।

अनेक बार दुष्काल पड़ने के कारण श्रमण-साधुओं के लिए विशुद्ध रूप से चारित्र का पालन अति कठिन होगया था। संकट काल की इस विषमता में चैत्यवाद प्रारंभ हुआ और सहज सुलभ साधन-प्राप्ति की लालसा से इसका उत्तरोत्तर विकास होता गया।

चारित्र कठोरतम मार्ग मे रही हुई कठिनाइयों के कारण साधु-वर्ग अपनी साधना के मार्ग से पीछे हटने लगा और प्रायः अर्ध-संसारी जैसी स्थिति में आगया।

पन्द्रहवीं और सौलहवीं शताब्दी में जैन संघ में एकता अथवा संगठन नाममात्र का भी न रहा। यति-वर्ग अपनी महत्ता बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा था। यह वर्ग वैद्यकी, औषधि, यंत्र, मंत्र एवं तांत्रिक आदि विद्या द्वारा लोक-संग्रह की भावना का अनुसरण करने लगा।

इस शिथिल-काल में जैन संघ में एक ऐसे महायुद्ध की आवश्यक्ता थी जो संघ में ऐक्यता स्थापित करता, साम्प्रदायिकता के स्थान पर संगठन का बिगुल बजाता, धार्मिक ज्ञान का प्रचार करता और क्रियोद्धार के लिए सक्रिय कार्य करता।

धर्म-क्रान्ति का उदय काल

यूरोप और एशिया इन दोनों महाद्वीपों में विक्रम की पन्द्रहवीं और सोलहवीं सदी का समय अत्यन्त महत्व का है।

एक तरफ राजनैतिक परिवर्तन, अराजकता और स्वर्ण-युग था तो दूसरी तरफ धार्मिक उथल-पुथल, असहिष्णुता और शांति।

इन दोनों शताब्दियों मे धर्म-क्रांति की ज्वाला और क्रियाकांडों के प्रति उदासीनता, संतों की पवित्र परम्परा, सुधारकों का समुदाय, सर्वधर्म-समभाव की भावना, अहिंसा की प्रतिष्ठा और गुणों का पूजन-अर्चन इस समय का उतार-चढाव था।

चौदहवीं शताब्दि के अंत से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दि के प्रारम्भ तक समस्त जगत में अराजकता और धार्मिक असहिष्णुता फैल गई थी।

यूरोप मे धर्म के नाम पर अनेक अत्याचार हुए। रोमन, केथोलिक और प्रोटेस्टेन्टों ने ईश्वर के नाम पर एक दूसरे के प्रति भयंकर घृणा और विद्वेष का विष फैलाया। जर्मनी के मार्टिन ल्यूथर ने और फ्रांस में जॉन ऑफ आर्क ने अपना बलिदान देकर नव-चेतना का संचार किया।

धार्मिक अव्यवस्था परिवर्तन के इस काल में सुधारवादी और शांति प्रेमियों की शक्ति भी अपना काम कर रही थी और अंत में इसकी ही विजय हुई। धार्मिक अशांति का अंधकार दूर हुआ और भारत में अकबर बादशाह ने, इंग्लैण्ड में रानी एलिजाबेथ ने तथा अन्य-अनेक व्यक्तियों ने इस स्वर्णिम युग में सामाजिक नव चेतना और सुरक्षा के कार्य किये।

भारत में इसका सर्वाधिक प्रभाव जातिवाद की संकुचितता के विरुद्ध पड़ा। इतिहास में यह प्रथम समय था कि मुगल बादशाह–"देवानाम् प्रिय' कहलाये। उनकी राज्य सभा सर्व धर्मों का समन्वयात्मक-सम्मेलन के समान बन गई।

वीर पुरुषों ने राज्यसभा मे राजपुरुषों को प्रभावित करके धर्म और समाज की सुरक्षा के प्रयत्न प्रारंभ किये। इस समय संतों, महन्तों, साधुओं, सन्यासियों, ओलियाओं, पीरों और फकीरों ने भी अपने अपने ढंग के कार्य दर्शाये।

"अल्लाह एक है"—"ईश्वर एक है" और इनका स्थान प्रेम में रहा हुआ है—इस प्रकार की ध्वनि गूंज रही थी।

धर्म और राजनीति के एकीकरण का जो श्रेय आज गांधीजी को दिया जारहा है उसका वास्तविक बीजारोपण तो कबीर, नानक और सूफी संतों के समय में ही हो चला था।

जितना महत्व क्रांति की व्यापकता का है उतना ही महत्व उसके प्रणेताओं का भी है। इस दृष्टि से क्रांति के अग्रगण्य नायकों में वीर लोंकाशाह केवल धार्मिक ही नहीं किन्तु सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों मे भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

धर्मप्राण लौंकाशाह

स्थानकवासी समाज वीरवर लौंकाशाह के पुण्य प्रयत्नों का परिणाम है। जैन समाज की रूढ़िवाद और जड़ता का नाश करने के लिए उन्होंने अपना जीवन-प्रदीप प्रज्वलित किया और जड़-पूजा के स्थान पर गुण-पूजा की प्रतिष्ठा की। जड़ता केवल स्वरूप को जानती थी जबकि गुण-पूजा ने उपयोगिता और कल्याणकारिता को बल देकर मानव मात्र को महत्व दिया।

शक्रेन्द्र ने एक बार भगवान महावीर से पूछा कि, "भगवन्! आपके नाम-नक्षत्र पर महाभस्म नाम का नक्षत्र बैठा है, उसका फल क्या है?"

तब भगवान ने उत्तर मे कहा कि "हे इन्द्र! इस-भस्म ग्रह के कारण दो हजार वर्ष तक सच्चे साधू-साध्वियों की पूजा मंद होगी। ठीक दो हजार वर्ष बाद यह ग्रह उतरेगा, तब फिर से जैनधर्म मे नव-चेतना जागृत होगी और योग्य पुरुष तथा साधू सतो का यथोचित सत्कार होगा।"

भगवान महावीर की यह भविष्य वाणी अक्षरशः सत्य निकली। वीर-निर्वाण के ४७० वर्ष बाद विक्रम-सवत् प्रारभ हुआ और विक्रम के १५३१ वें वर्ष मे अर्थात् (४७०+१५३१=२००१) वीर-संवत् २००१ के वर्ष में वीर लौंकाशाह ने धर्म के मूल-तत्त्वों को प्रकाशित किया और इस प्रकार गुण-पूजक धर्म विस्तार पाने लगा।

धर्मप्राण लौंकाशाह के जन्म-स्थान, समय और माता पिता के नाम आदि के संबंध मे भिन्न-भिन्न अभिप्राय मिलते हैं, किन्तु विद्वान सशोधनों के आधारभूत निर्णय के अनुसार श्री लौंकाशाह का जन्म अरहटवाडे मे चौधरी गौत्र के, ओसवाल गृहस्थ सेठ हेमाभाई की पवित्र पति परायणा भार्या गगाबाई की कूख से विक्रम-संवत् १४७२ कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को शुक्रवार ता० १८—७—१४१५ के दिन हुआ था।

लौंकाशाह का मन तो प्रारभ से ही वैराग्यमय था, किन्तु माता-पिता के आग्रह के कारण उन्होंने स० १४८७ मे सिरोही के सुप्रसिद्ध शाह ओधवजी की विचक्षण तथा विदुषी पुत्री सुदर्शना के साथ विवाह किया। विवाह के तीन वर्ष बाद उन्हें पूर्णचन्द्र नाम का एक पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। इनके तेईसवें वर्ष की अवस्था मे माता का और चौवीसवें वर्ष मे पिता का देहावसान होगया।

सिरोही और चन्द्रावती इन दोनों राज्यों के बीच मे युद्धजन्य-स्थिति के कारण अराजकता और व्यापारिक अव्यवस्था प्रसरित हो जाने से वे अहमदाबाद मे आ गए और वहां जवाहिरात का व्यापार करने लगे अल्प समय मे ही आपने जवाहिरात के व्यापार में अच्छी ख्याति प्राप्त करली।

तत्कालीन अहमदाबाद के बादशाह मुहम्मद उनकी बुद्धि-चातुर्य से अत्यंत प्रभावित हुये और लौंकाशाह को अपना खजाची बना लिया।

एक समय मुहम्मदशाह के पुत्र कुतुबशाह ने अपने पिता को मतभेद होने के कारण विष देकर मरवा डाला। ससार की इस प्रकार की विचित्र स्थिति देख कर लौंकाशाह का हृदय कांप उठा। संसार से विरक्त होने के लिये उन्होंने राज्य की नौकरी छोड़ दी।

श्री लौंकाशाह प्रारभ से ही तत्त्व शोधक थे। उन्होंने एक लेखक-मडल की स्थापना की और बहुत से लहिये (लिखने वाले) रख कर प्राचीन शास्त्रों और ग्रन्थों की नकलें करवाने लगे तथा अन्य धार्मिक कार्य में अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

एक समय ज्ञानसुन्दरजी नाम के एक यती इनके यहां गोचरी के लिये आये। उन्होंने लौंकाशाह

के सुन्दर अक्षर देख कर अपने पास के शास्त्रों की नकल कर देने के लिये कहा। लौंकाशाह ने श्रुत-सेवा का यह कार्य स्वीकार कर लिया।

ज्यों-ज्यों वे शास्त्रों की नकलें करते गये त्यों-त्यों शास्त्रों की गहन बातों और भगवान की प्ररूपणाओं का रहस्य भी समझने गये। उनके नेत्र खुल गये। सघ और समाज मे बढ़ती हुई शिथिलता और आगमों के अनुसार आचरण का अभाव उन्हें दृष्टि-गोचर होने लगा।

जब वे चैत्यवासियों के शिथिलाचार और अपरिग्रही-निर्ग्रन्थों के असि-धारा के समान प्रखर संयम का तुलनात्मक विचार करते तब उनको मन में अत्यत क्षोभ होता था।

मन्दिरों, मठों और प्रतिमाग्रहों को आगम की कसौटी पर कसने पर उन्हें मोक्ष-मार्ग में कहीं पर भी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा का विधान नहीं मिला। शास्त्रों का विशुद्ध ज्ञान होने से अपने समाज की अध-परम्परा के प्रति उन्हें ग्लानि हुई। शुद्ध जैनागमों के प्रति उनमे अडिग श्रद्धा का आविर्भाव हुआ। उन्होंने दृढ़ता पूर्वक घोषित किया कि "शास्त्रों में बताया हुआ निर्ग्रन्थ-धर्म आज के सुखाभिलाषी और सम्प्रदायवाद को पोषण करने वाले कलुषित हाथों मे जाकर कलक की कालिमा से विकृत हो गया है। मोक्ष की सिद्धि के लिये मूर्तियों अथवा मदिरों की जड़-उपासना की आवश्यकता नहीं है किन्तु तप, त्याग, सयम और साधना के द्वारा आत्म शुद्धि की आवश्यक्ता है।"

अपने इस दृढ़ निश्चय के आधार पर उन्होंने शुद्ध शास्त्रीय उपदेश देना प्रारभ किया। भगवान महावीर के उपदेशों के रहस्य को समझ कर उनके सच्चे प्रतिनिधि बन कर ज्ञान दिवाकर-धर्मप्राण लौंकाशाह ने अपनी समस्त शक्ति को संचित कर मिथ्यात्व और आडम्बर के अधकार के विरुद्ध सिंह-गर्जना की। अल्प समय मे ही उन्हें अद्भुत सफलता मिली। लाखों लोग उनके अनुयायी बन गये। सत्ता के लोलुपी व्यक्ति लौंकाशाह की यह धर्म-क्रांति देख कर घबरा गये और यह कहने लग गये कि "लौंकाशाह नाम के एक लहिये ने अहमदाबाद मे शासन के विरोध मे विद्रोह खड़ा कर दिया है।" इस प्रकार उनके विरोध मे उत्सूत्र-प्ररूपणा और धर्म-भ्रष्टता के आक्षेप किये जाने लगे।

इस प्रकार की इन बातों को अनहिलपुर पाटन वाले श्रावक लखमशी भाई ने सुनीं। लखमशी भाई उस समय के प्रतिष्ठित, सत्ता सम्पन्न तथा साधन-सम्पन्न श्रावक थे। लौंकाशाह को सुधारने के विचार से वे अहमदाबाद मे आये। उन्होंने लौंकाशाह के साथ गंभीरता पूर्वक बातचीत की। अत में उनकी भी समझ मे आगया कि लौंकाशाह की बात यथार्थ है और उनका उपदेश आगम के अनुसार ही है।

मूर्तिपूजा और लौंकाशाह

मूर्तिपूजा के सम्बन्ध मे श्री लखमशीभाई के प्रश्नों के उत्तर में लौंकाशाह ने कहा कि:—
"जैनागमों मे मूर्तिपूजा के सम्बन्ध मे कहीं भी विधान नहीं है। ग्रन्थों और टीकाओं की अपेक्षा हम आगमों को विश्वसनीय मानते हैं। जो टीका अथवा टिप्पणी शास्त्रों के मूलभूत हेतु के अनुकूल हो वही मान्य की जा सकती है। किसी भी मूल आगम मे मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रतिमा की पूजा का उल्लेख नहीं है। दान, शील, तप और भावना अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप आदि धार्मिक अनुष्ठानों मे मूर्ति पूजा अतर्निहित नहीं हो सकती।"

"शास्त्रों में पञ्च महाव्रत, श्रावक के बारह व्रत, बारह प्रकार की भावना तथा साधू की दैनिक-चर्या आदि सबका विस्तार युक्त वर्णण है। किन्तु प्रतिमा-पूजा का मूल-आगमों मे कहीं पर भी वर्णन नहीं है"।

"ज्ञातासूत्र तथा रायप्पसेणी-सूत्र में अन्य चैत्यों के वंदन का वर्णन है, किन्तु मुक्ति की सहायता के लिए किसी भी जैन साधू अथवा श्रावक ने नित्य-कर्म के अनुसार तीर्थंकर की प्रतिमा का कहीं पूजन किया हो—ऐसा वर्णन नहीं आता"।

जो लखमशी लौंकाशाह को समझाने के लिए आये थे, वे खुद समझ गये। लौंकाशाह की निर्भीकता और सत्य प्रियता ने उनके हृदय को प्रभावित कर दिया और वे लौंकाशाह के शिष्य बन गये।

एक समय अरहट्टवाडा, सिरोही, पाटण और सूरत इस प्रकार चार शहरों के संघ यात्रा के लिए निकले। वे अहमदाबाद मे आये। उस समय वर्षा की अधिकता के कारण उनको अहमदाबाद मे रुक जाना पडा। इसलिये चारों संघों के संघपति-नागजी, दलीचंदजी, मोतीचंदजी और शभूजी को श्री लौंकाशाह से विचार विनिमय करने का अवसर मिला।

लोंकाशाह के उपदेश, उनके जीवन, वीतराग-परमात्मा के प्रति सची भक्ति और आगमिक-परम्परा पर गहरी श्रद्धा का उन चारों संघो पर गहरा असर पडा। इस गहरे प्रभाव का यह परिणाम हुआ कि उनमें से पैंतालीस श्रावक लौंकाशाह की प्ररूपणा के अनुसार मुनि बनने के लिए तैयार होगये।

इसी समय ज्ञानजीमुनि हैदराबाद की तरफ विहार कर रहे थे। उनको लौंकाशाह ने बुलाया और वैशाख शुक्ला ३ स० १५२७ मे उन पैंतालीस व्यक्तियों को ज्ञानजी मुनि द्वारा दीक्षा दिलवाई।

इन पैंतालीस मुनियों ने अपने मार्ग-दर्शक और उपदेशक के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के लिए अपने संघ का नाम "लौंकागच्छ" रखा और अपने आचार-विचार और नियम लौंकाशाह के उपदेश के अनुसार बनाये।

लौंकाशाह का धर्मप्रचार और स्वर्गवास

जैसा कि हमने पहले पढा है कि लौंकाशाह की आगम मान्यता को अब बहुत अधिक समर्थन मिलने लगा था। अब तक तो वे अपने पास आने वालों को ही समझाते और उपदेश देते थे, परन्तु जब उन्हें विचार हुआ कि क्रियोद्धार के लिये सार्वजानिक रूप से उपदेश करना और अपने विचार जनता के समक्ष उपस्थित करना आवश्यक है, तब उन्होंने वैसाख शुक्ला ३ संवत् १५२६ ता० ११—४—१४७० से सरे आम सार्वजनिक उपदेश देना प्रारम्भ-कर दिया। इनके अनुयायी दिन प्रतिदिन बढने लगे। स्वभावतः ये विरक्त तो थे ही किन्तु अब तक कुछ कारणों से दीक्षा नहीं ले सके। जबकि क्रियोद्धार के लिये यह आवश्यक था कि उपदेशक पहले स्वय आचरण करके बताये अतः मिगसर शुक्ला ५ संवत् १५३६ को ज्ञानजी मुनि के शिष्य सोहनजी से आपने दीक्षा अगीकार कर ली। अल्प समय में ही आपके ४०० शिष्य और लाखों श्रावक आपके श्रद्धालु बन गये। अहमदाबाद से लेकर दिल्ली तक आप ने धर्म का जयघोष गुंजा दिया। आपने आगम-मान्य संयम-धर्म का यथार्थ पालन किया और इसी का उपदेश दिया।

अपने जीवन काल में किसी भी क्रांतिकार की प्रतिष्ठा नहीं होती। सामान्य जनता उसे एक पागल के रूप में मानती है। यदि वह शक्तिशाली होता है तो उसके प्रति ईर्ष्या से भरी हुई विष की दृष्टि से देखा जाता है और उसे शत्रु के रूप में मानती है। लौंकाशाह के सम्बन्ध में भी ऐसा ही बना। जब वे दिल्ली से लौट रहे थे तब बीच मे अलवर में मुकाम किया। उन्होंने अट्ठम (तीन दिन का उपवास) का पारणा किया था।

समाज के दुर्भाग्य से श्री लोंकाशाह का प्रताप और प्रतिष्ठा नहीं सही जाने के कारण उनके शिथिलाचारी और ईर्ष्यालु विरोधी लोगों ने उनके विरुद्ध में कुचक्र रचा। तीन दिन के इस उपवासी तपस्वी को पारने में किसी दुष्ट बुद्धि के अभागे ने विषयुक्त आहार बहरा दिया। मुनि श्री ने उस आहार का सेवन कर लिया।

औदारिक शरीर और वह भी जीवन की लम्बी यात्रा से थका हुआ होने के कारण उस पर विष का तात्कालिक असर होने लगा। विचक्षण पुरुष शीघ्र ही समझ गए कि उनका अन्तिम काल समीप है, किन्तु महा मानव मृत्यु से घबराता नहीं है। वे शांति से सो गये और चौरासी लाख जीव योनियों को क्षमा कर शुक्लध्यान में लीन हो गये। इस प्रकार इस युग-सृष्टा ने अपने जीवन से नये युग को अनुप्राणित करके चैत्र शुक्ला एकादशी संवत् १५४६ ता० १३ मार्च को देवलोकवासी हुए।

लोंकाशाह की परम्परा और स्थानकवासी सम्प्रदाय

लोंकाशाह की परम्परा की देखभाल करने वाला एक विशाल समुदाय तो उनके जीवन-काल में ही खड़ा होगया था, परन्तु उसे कोई विशेष नाम नहीं दिया गया।

लोंकाशाह के उपदेश से जो ४५ श्रीमन्तों ने दीक्षा ग्रहण की थी, उन्होंने अपने धर्म गुरु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये अपने गच्छ का नाम "लोंका-गच्छ' रखा। किन्तु उन्होंने यति-धर्म को ही स्वीकार कर उसमें कुछ नवीनता ला दी थी। वे दया धर्म को सर्वोत्कृष्ट धर्म मानते थे और आरम-समारभ का—यहां तक कि उपाश्रय बनाने तक का निषेध करते थे।

शिथिलाचारी चैत्यवासियों को धर्मप्राण लोंकाशाह के—विशुद्ध शास्त्र-सम्मत निर्ग्रन्थ-धर्म के स्पष्टीकरण से विद्वेष खड़ा होगया और उनके द्वारा उपदिष्ट शुद्ध-धर्म का पालन करने वाले सघ को विद्वेषी 'ढूंढिया' कहने लगे। किन्तु शुद्ध सनातन-धर्म का आचरण करने वाले सहिष्णु श्रावकों ने समभाव से ऐसा विचार किया कि :—

"वास्तव में यह 'ढूंढिया शब्द लघुता का द्योतक नहीं है। धार्मिक क्रियाओं के आडम्बर-युक्त-आवरणों को भेद कर उसमें से अहिंसामय सत्य-धर्म-शोधन (ढूंढने) करने वालों को दिया गया 'ढूंढिया' शब्द का यह विरुद सत्य ही गौरवान्वित करने वाला है।

इस सबंध में स्व० श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह ने अपनी तटस्थता बताते हुए अपने 'ऐतिहासिक नोंध' में लिखा है कि "मूलतः इस शब्द का रहस्य इस प्रकार है :—

"ढूँढत ढूँढत ढूँढ लियो सब, वेद, पुराण, किताब में जोई।
जैसे मही में माखन ढूँढत, ऐसो दया मे लियो है जोई॥
ढूंढत है तब ही वस्तु पावत, विन ढूंढे नहीं पावत कोई।
ऐसो दया में धर्म है ढूँढ्यो," जीवदया" विन धर्म न होई।"

लोंकाशाह के १०० वर्ष बाद ही लोंकागच्छ तीन विभागों में विभाजित होगया और वे गादीधारी यतियों के रूप में फिरने रहने लगे—(१) गुजराती लोंकागच्छ (२) नागौरी लोंकागच्छ (३) उत्तरार्ध लोंकागच्छ।

लोंकागच्छ के दसवें पाट पर वजांगजी यति हुए। उनकी गादी सूरत में थी। उनका चारित्र-बल क्षीण होगया था। उनमें शिथिलता और परिग्रह घर कर गया था अतः उनके समय में भिन्न भिन्न स्थानों पर क्रियोद्धारक संत दिखाई दिये।

सोलहवीं सदी के उत्तरार्ध मे और सतरहवीं सदी में पांच महापुरुष आगे आये। उन्होंने लौंकाशाह की अमर-क्रांति को पुनर्जागृत किया। इन पांच महापुरुषों के नाम इस प्रकार हैं:—

(१) पूज्य श्री जीवराजजी महाराज (२) पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज (३) पूज्य श्री लवजीऋषिजी महाराज (४) पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज (५) पूज्य श्री हरजीऋषीजी महाराज (इनका इतिहास अभी उपलब्ध नहीं है)

पूज्य श्री जीवराजजी महाराज

पूज्य श्री जीवराजजी महाराज का जन्म सूरत शहर में श्रावण शुक्ला १४ सं० १५८१ को मध्य रात्रि में श्री वीरजीभाई की धर्म परायणा और पति परायणा भार्या श्रीमती केसर बाई की कुक्षि से हुआ।

जिस घर मे आपका जन्म हुआ वह केवल कुल-दीपक पुत्र के अतिरिक्त और सब दृष्टियों से सम्पन्न था। यह कमी भी बालक जीवराज के जन्म से दूर हो गई। अत इस बालक का जन्मोत्सव धूम धाम से किया गया। इनका बचपन और लालन-पालन स्नेह मधुर वातावरण में व्यतीत हुआ था। ये अत्यन्त रूपवान थे और वाणी से अत्यंत मधुर थे।

बाल्यावस्था में से ज्यों ही आपने किशोरावस्था में प्रवेश किया कि आपको पाठशाला में बिठा दिया गया। अपनी विचक्षण-बुद्धि और अद्भुत-स्मरण शक्ति के कारण अत्यल्प समय में ही आपने पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर ली।

विद्याभ्यास के बाद एक सुन्दर कन्या के साथ आपका विवाह कर दिया गया। यतियों के सम्पर्क के कारण बचपन से ही श्री जीवराजजी को धार्मिक ज्ञान मिलता रहा था। आप प्रारंभ से ही वैराग्य-भावना वाले थे। विवाह, विलास, ललना और लावण्य, रूप, रस, रंग और गंध ये सब मिल करके भी इन्हें अपनी ओर नहीं खींच सके। उनकी वैराग्य वृत्ति और उनके जल-कमलवत निर्लिप्त व्यवहार ने बहुत काल तक उन्हें संसार मे नहीं रहने दिया। हृदय में रही हुई वैराग्य-भावना तरंगित होने लगी। बुद्धि की प्रौढ़ता ज्ञान के साक्षात्कार के लिये उन्हें आह्वान कर रही थी। अत में संसार-त्याग की प्रबल-भावना और प्रबल लालसा जगी और इसके लिए माता-पिता के पास से दीक्षा की आज्ञा मांगी। माता-पिता ने आपको बहुत समझाया किन्तु ज्ञान के आग्रह के सामने ससार का आग्रह नहीं टिक सका। इस प्रकार स० १६०१ मे उन्होंने पूज्य श्री जगाजी यति के पास से दीक्षा ग्रहण करली।

दीक्षा ले लेने के पश्चात् आपने आगमों का अभ्यास प्रारंभ किया। ज्यों ज्यो अभ्यास बढ़ता गया त्यों-त्यों आगम प्रणीत साधु-चर्या और यति-जीवन दोनों के बीच का अतर उन्हें दृष्टिगोचर होने लगा और आपको दृढ़ विश्वास होगया कि :—"आगम-प्रणीत—आगम-प्रतिपादित मार्ग से ही आत्मा का कल्याण सम्भवित हैं।'

जब यति-मार्ग में आगमिक अनुकरण और अपरिग्रही जीवन की तेजस्विता—इन दोनों का अभाव आपको विदित हुआ तब यति मार्ग के प्रति आपको असन्तोष होने लगा। आपके मन में केवल यही गूंज रहा था कि :— "सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज भिक्खू।"

अपने अन्तर्द्वन्द्व की बात आपने गुरुदेव को कही किन्तु क्रान्तिकारियों के अनुरूप तेज और शक्ति

आपमें नहीं थी। गुरु ने आपको समझाया कि — "हे शिष्य! आज के इस भयंकर समय मे साधु-धर्म युक्त कठोर जीवन का पालन शक्य नहीं है। शास्त्रों का मार्ग आदर्श-मार्ग है किन्तु वह व्यवहार्य नहीं है।"

गुरु के इस प्रकार समझाने से आपका विचार-द्वन्द्व शांत न हुआ अपितु उनकी अशांति उग्रतर बढ़ती ही गई। अपने गुरु को आगमानुसारी जीवन-यापन करने का आग्रह करते रहे। एक समय गुरुदेव के सामने श्री भगवती-सूत्र के बीसवें शतक का पाठ सामने रख दिया उसमें यह अधिकार था कि—"भगवान महावीर का शासन लगातार २१,००० वर्ष तक अटूट चलेगा।"

तब गुरुदेव ने कहा कि—"मैं तो जिस मार्ग पर चल रहा हूँ उसी मार्ग पर चल सकूंगा, किन्तु तुम्हारी यदि इच्छा हो तो तुम आगमानुसार संयम-मार्ग वहन करो।"

लगातार ७ वर्ष से चला आरहा यह वैचारिक द्वन्द्व आज समाप्त हुआ। सवत् १६०८ मे पांच साधुओं के साथ आपने पंच-महाव्रत युक्त आर्हती दीक्षा ग्रहण करली।

आर्हती-दीक्षा लेने के पश्चात् शास्त्राज्ञानुसार आपने वेष धारण किया। आज स्थानकवासी साधुओं का जो वेष है उसका प्रामाणिक रूप से पुन. प्रचलन श्री जीवराजजी महाराज द्वारा प्रारभ हुआ।

भद्रबाहु स्वामी के युग से स्थविर-कल्प में आने वाले मुनियों ने वस्त्र और पात्र ग्रहण किये थे और दुष्काल की भीषणता के कारण वे अपने पास मे दण्ड आदि भी रखने लग गये थे।

श्वेताम्बर-परम्परा में साधुओं के चौदह उपकरण ग्रहण किये गये हैं। समयानुसार और भी आगे बढ़ा गया और अब कान तक का लम्बा दण्डा (दण्डी) स्थापनाचार्य (ठवणी) और सिद्धचक्र आदि कैसे और कब आये! इसके लिये तो हम इतना ही कह सकते हैं कि मुखवस्त्रिका, रजोहरण, चादर और चोलपट्टा आदि के अतिरिक्त जो भी वस्तुए हैं, उन सब का समावेश परिस्थितिवश हुआ है।

इन सब उपकरणों मे से श्री जीवराजजी महाराज ने वस्त्र, पात्र, मुंहपत्ती, रजोहरण, रजस्त्राण एव प्रमार्जिका के अतिरिक्त अन्य उपकरणों का त्याग किया अथवा आवश्यक्ता पड़ने पर उन्हें ऐच्छिक वस्तुओं का रूप दिया गया। किन्तु स्थापनाचार्य और सिद्धचक्र आदि को तो अनावश्यक बता कर मुनियो को निर्लोभता का मार्ग बताया। उपकरणों के सबध में यह सर्व प्रथम व्यवस्था निर्धारित की गई।

साधुमार्गियों की तीन मान्यताएं

(१) बत्तीस आगम (२) मुंहपत्ती (३) चैत्यपूजा की सर्वांशतः विमुक्ति।

(१) श्री जीवराजजी महाराज ने आगमों के विषय मे लौंकाशाह की बात स्वीकार की परन्तु आवश्यक-सूत्र को प्रामाणिक मान कर इकतालीस आगम के बदले बत्तीस आगम माने। लौंकाशाह की तरह ही उन्होंने अन्य टीका और टिप्पणियों की अपेक्षा मूल आगमों को ही श्रद्धापात्र माने। इस परम्परा को स्थानकवासी समाज ने आज तक मान्य रखा है। स्थानकवासी समाज निम्नकित आगमों को प्रमाणभूत मानता है.—

११ अंग-सूत्र:—१ आचारांग २ सूत्रकृतांग ३ स्थानांग ४ समवायांग ५ व्याख्या प्रज्ञप्ति (भगवती) ६ ज्ञाताधर्मकथा - ७ उपासकदशांग ८ अतकृत ९ अनुत्तरोपपातिक १० प्रश्न-व्याकरण ११ विपाक-सूत्र

१२ उपांग सूत्र—१ उववाई २ रायप्पसेणी ३ जीवाभिगम ४ पन्नवणा ५ सूर्य-प्रज्ञप्ति ६ जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति ७ चन्द्र-प्रज्ञप्ति ८ निरयावलिका ९ कल्पवतंसिका १० पुष्पिका ११ पुष्पचूलिका १२ वह्निदशा

४ मूलसूत्र — १ दशवैकालिक २ उत्तराध्ययन ३ नंदी ४ अनुयोगद्वार

४ छेदसूत्रः— १ बृहत्कल्प २ व्यवहार ३ निशीथ ४ दशाश्रुतस्कंध। १ आवश्यक सूत्रः—इन प्राचीन शास्त्रों में जैन परम्परा की दृष्टि से आचार, विज्ञान, उपदेश, दर्शन, भूगोल, एव खगोल आदि का वर्णन है।

आचार के लिये—आचारांग, दशवैकालिक आदि, उपदेशात्मक-उत्तराध्ययन, वि० दर्शनात्मक सूत्रकृतांग, प्रज्ञापना, रायप्पसेणी नंदी, ठाणांग, समवायांग, अनुयोगद्वार। वि० भूगोल-खगोल के लिये-जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, चन्द्र-प्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति, वि० प्रायश्चित विशुद्धि के लिये-छेदसूत्र और आवश्यक। जीवन-चरित्रों का समावेश उपासक दशांग, अनुत्तरोववाइ आदि में हैं। ज्ञाताधर्म कथांग आख्यानात्मक है। विपाक-सूत्र कर्म विपयक और भगवती-संवादात्मक है।

इन सूत्रों में जैन-दर्शन के मौलिक तत्त्वों की प्ररूपणा विस्तृत रूप से देखी गई है। अनेकान्त-दर्शन आदि के विचार, अग और दृष्टि-समस्त विषय जैनागमों में सग्रहीत और सग्रथित हैं।

२—जैन धर्म की समस्त शाखाओं में स्थानकवासी शाखा की विशेष रूप से दो विशेषताए हैं। १-स्थानकवासी मुहपत्ती को आवश्यक और २-मूर्तिपूजा को आगम विरुद्ध होने से अनावश्यक मानते हैं।

जैन साधुओं का सर्वाधिक प्रचलित और परिचित चिन्ह है "मुहपत्ती" किन्तु दुर्भाग्य से जैन मुनियों के जितने प्रतीक हैं उनमे से एक के सबध में भी समस्त समाज एक मत नहीं है।

मुहपत्ती और रजोहरण ये दोनों जैन मुनियों की खास निशानियां हैं। साधु के मुख पर मुंहपत्ती और बगल में रजोहरण इन दोनों के पीछे जैनधर्म की आत्माहिंसा की महान भावना रही हुई है। रजोहरण की उपयोगिता के लिये श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदाय एक मत हैं। दिगम्बर साधु रजोहरण के स्थान पर मोर पिच्छी का उपयोग करते हैं। इसमे वस्तु भिन्नता है किन्तु उद्देश्यभिन्नता नहीं।

मुहपत्ती की उपयोगिता और महत्ता के लिये विवाद है। श्वेताम्बर मुहपत्ती को आवश्यक साधन मानते हैं कि जिसके बिना वाणी और भाषा निरवद्य नहीं हो सकती और वायुकाय के जीवों की रक्षा असंभव हो जाती है। किन्तु दिगम्बर मुंहपत्ती को अनावश्यक और समूर्च्छिम जीवों की उत्पत्ति का कारण मानते हैं।

शास्त्रों के आधारभूत प्रमाणों को स्वीकार करें तो दिगम्बरों और श्वेताम्बरों के दृष्टिकोण शास्त्रों से भिन्न चले जाते हैं। सैद्धांतिक दृष्टि से जैन साधु के आदर्श के सबध में भगवान महावीर के अहिंसा-सिद्धान्त के आधार पर हम विचार कर सकते हैं। श्वेताम्बर शास्त्रों में मुहपत्ती के लिये आवश्यक विधान है। साधु के चौदह उपकरणों में मुहपत्ती को मुख्य उपकरण माना गया है। भगवती-सूत्र के १६ वें शतक के दूसरे उद्देशे में भगवन् का फरमान है कि —

"गोयमा! जाहेणं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं अणिजूहित्ताणं भासं भासइ, ताहेणं सक्के देविंदे देवराया सावज्ज भास भासइ।"

अर्थात्—हे गौतम! शक्र-देवेन्द्र जब वस्त्रादिक से मुख ढांके विना (खुले मुंह) बोलता है, तब उसकी भाषा सावद्य होती है।

अभयदेव सूरि ने अपनी व्याख्या में मुंह ढकने का विधान किया है। उन्होने लिखा है कि-"वस्त्रादिक से मुख ढांक कर बोलना यह ही सूक्ष्मकाय जीवों का रक्षण है"।

योगशास्त्र के तृतीय प्रकाश के ८७ वें श्लोक का विवरण देते हुए श्री हेमचन्द्राचार्य लिखते हैं कि:—

"मुखवस्त्रमपि सम्पातिम जीव रक्षणादुष्ण मुखवात विराध्यमान बाह्य वायुकाय जीव रक्षणात् मुखे धूलि प्रवेश रक्षणाच्चोपयोगीति।"

अर्थात् मुख-वस्त्र संपातिम जीवों की रक्षा करता है। मुख से निकलते हुए उष्ण-वायु द्वारा विराधित होते हुए बाह्य वायुकाय के जीवों की रक्षा करता है तथा मुख में जाती हुई धूलि को अटकाता है अतः यह उपयोगी है।

इस प्रकार श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने मुंहपत्ती को स्वीकार किया है, किन्तु मूर्तिपूजक समाज हमेशा मुख पर मुंहपत्ती बांधी हुई रखने का विरोधी है। इसलिये वे हाथ में मुंहपत्ती रखते हैं। किन्तु स्थानकवासी हमेशा मुख पर मुंहपत्ती बांधना आवश्यक मानते हैं। दोनों ही अपनी-अपनी मान्यता के अनुसार प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

किन्तु जैनेतर ग्रन्थों में जो जैन साधुओं का वर्णन आता है उसके आधार पर मुंह पर मुंहपत्ती बांधने की प्रणाली प्राचीन मालूम होती है। जैसे कि शिव-पुराण के इक्कीसवें अध्याय के पन्द्रहवें श्लोक में जैन साधु का वर्णन इस प्रकार किया है:—

हस्ते पात्र दधानश्च, तुण्डे वस्त्रस्य धारकाः।
मलिमान्येव वस्त्राणि, धारयन्तोऽल्प भाषिणः॥

अर्थात्—जैन साधु हाथ में पात्र रखते हैं, मुंह पर वस्त्र धारण करते हैं, वस्त्र मलिन होते हैं और अल्प-भाषण करते हैं।

पुराण चाहे जितने अर्वाचीन हों किन्तु मुंहपत्ती मुंह पर बांधना या हाथ में रखना इस विवाद की अपेक्षा तो पुराण प्राचीन ही हैं। इसलिये स्थानकवासियों का मुंह पर मुंहपत्ती बांधना भी प्राचीन है।

हित शिक्षा रास के उपदेशक अधिकार में भी कहा गया है कि—

मुख बांधी ते मुहपत्ती, हेठी पाटे धार।
अति हेठी दाढी थई, जेतर गले निराधार॥
एक काने ध्वज सम कही, खमे पछेड़ी ठाम।
केड़े खोसी कोथली, नावी पुण्य ने काम॥

जैनागमों में तथा जैन साहित्य में मुंहपत्ती को वाचना, पृच्छना, परावर्तना तथा धर्म-कथा के समय में आवश्यक उपकरण कहा गया है।

वसति-प्रमार्जन, स्थंडिल-गमन, व्याख्यान-प्रसंग तथा मृतक-प्रसंग में मुंहपत्ति का आवश्यक विधान करने में आया है।

पन्यास जी महाराज श्री रत्नविजयजी गणि ने "मुंहपत्ती चर्चा सार" नाम की एक पुस्तक का संग्रह किया है, जिसमें इस विषय पर काफी प्रकाश डाला गया है।

स्थानकवासियों से अपने को अलग बताने के लिये ही मूर्तिपूजक मुंह पर मुंहपत्ती नहीं बांधते ऐसा हम श्री विजयानन्द सूरि (आत्मारामजी) महाराज ने कार्तिक वद अमावस्या सं० १९६७ दुधगर के सूरत से मुनि श्री आलमचन्दजी महाराज को जो पत्र लिखा था, उस पर से जान सकते हैं। श्री विजयवल्लभ सूरिजी जो कि उस समय वल्लभविजयजी कहलाते थे। उनके द्वारा लिखित पत्र की प्रतिलिपि इस प्रकार है:—

"मुंहपत्ती विषे हमारा कहना इतना ही है कि मुंहपत्ती बांधनी अच्छी है और घणे दिनों से परम्परा चली आई है, इनको लोपना अच्छा नहीं है। हम बंधनी अच्छी जाणते हैं, परन्तु हम ढूंढिये लोक में से मुंहपत्ती तोडके निकले हैं, इस वास्ते हम बंध नहीं सकते है और जो बंधनी इच्छीए तो यहां बड़ी निंदा होती हैं।"

श्री जीवराजजी महाराज ने भी शास्त्रों के प्रमाणानुसार और उभय पक्षों के तर्कों पर विचार करके मुंह पर मुंहपत्ती बांधने का निश्चय किया।

साम्प्रदायिकता मनुष्य के मानस को गुलाम बना देती है। मुंहपत्ती की उपयोगिता स्वीकार करने वाले भी मुंहपत्ती में उपयोग में लिये जाने वाले धागे का विरोध करते हैं। किन्तु एक कान से दूसरे कान तक मुंहपत्ती बांधने में कपड़ा अधिक काम में लाना पड़ेगा। इस दृष्टि से यदि इसका काम केवल थोडे से धागे से ही चल सकता हो तो उतना ही परिग्रह कम हुआ। परिग्रह बढ़ाने में धर्म है या घटाने में ? इन सब दृष्टियों से विचार कर जीवराजजी महाराज ने धागे के साथ मुंहपत्ति बांधना स्वीकार किया।

मूर्तिपूजा के संबंध में लोंकाशाह के विचार हम जान गये हैं उन्हीं विचारों को श्री जीवराजजी महाराज ने मान्य रखा और मूर्तिपूजा को धार्मिक विधियों में अनावश्यक माना।

श्री जीवराजजी महाराज यति-धर्म में से जब अलग हुए तब उनके साथ अन्य पांच यति भी निकले और उन्होंने आपको पूरा सहयोग दिया।

इनका शुद्ध संयम-मार्ग देखकर लोगों की उनके प्रति भाव-भक्ति बढ़ने लगी, इस कारण यति वर्ग ने उनके विरुद्ध में विरोध खड़ा करना प्रारंभ किया। किन्तु उन सब विरोधों से न घबराते हुए वे अहिंसा के सजग प्रहरी बन कर अनेक प्रान्तों में घूमते रहे। मालव-प्रदेश में धर्म जागृति लाने का श्रेय भी आपको ही है।

अनेक प्रान्तों में विचरते हुए वे आगरा आये। यहां आपका शरीर निर्बल बनने लगा। अंतिम समय निकट जान कर, आहार का सम्पूर्ण रूप से परित्याग कर आपने समाधि-पूर्वक काल-धर्म प्राप्त किया।

आपके समय में ही आपके अनुयायियों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई थी। आपके स्वर्गवास के पश्चात् आचार्य धनजी, विष्णुजी, मनजी तथा नाथूरामजी हुए।

कोटा-सम्प्रदाय, अमरचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय, स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय, नाथूरामजी महाराज की सम्प्रदाय, स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय एवं नाथूरामजी महाराज की सम्प्रदाय आदि दस-ग्यारह सम्प्रदायें आपको अपना मूल-पुरुष मानती हैं।

मुनि श्री धर्मसिंहजी

जिस प्रकार श्री लौंकाशाह ने जड़वाद और आडम्बर के विरोध में मोर्चा खड़ा किया था, उसी प्रकार श्री धर्मसिंहजी महाराज ने भी लौंकागच्छ में आई हुई कुरीतियों को उन्मूलन करने के लिए उद्घोषणा की।

लौंकाशाह की सेना की आंतरिक स्थिति को सुदृढ़ करने वाले स्थानकवासी समाज के मूल प्रणेताओं में आप द्वितीय हैं।

श्री धर्मसिंहजी महाराज का जन्म सौराष्ट्र के हालार प्रान्त के जामनगर में हुआ था। दशा श्रीमाली जिनदास आपके पिता और शिवादेवी आप की माता का नाम था।

एक समय लौंकागच्छीय मुनि श्री देवजी का व्याख्यान श्रवण कर आपको संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न हुआ और दीक्षा लेने का निर्णय किया। पन्द्रह वर्षीय कुमार धर्मसिंहजी ने माता-पिता से जब आज्ञा मांगी

तो माता-पिता ने आपको बहुत समझाया किन्तु प्रबल वैराग्य-भावना के कारण वे झुके नहीं। इतना ही नही आपकी वैराग्य-वृत्ति से प्रभावित होकर इनके माता-पिता ने भी आपके साथ दीक्षा ग्रहण कर ली।

अप्रतिम बुद्धि तथा विलक्षण प्रतिभा का आपको प्रकृति से वरदान था। अल्प समय में ही बत्तीस आगम, तर्क, व्याकरण, साहित्य तथा दर्शन का ज्ञान आपने प्राप्त कर लिया। श्री धर्मसिंहजी मुनि एक साथ दोनों हाथों से लिख सकते थे और अवधान कर सकते थे। किन्तु विद्वत्ता के साथ चारित्र का सामान्यतया मेल बहुत कम दिखने मे आता है। तब श्री धर्मसिंहजी में विद्वत्ता के साथ २ चारित्र की उत्कृष्टता भी विद्यमान थी।

आपके हृदय में यतियों के शिथिलाचारी जीवन के प्रति असतोष जागृत हुआ। आपने अत्यन्त नम्रता-पूर्वक यति श्री शिवजी के सन्मुख निवेदन किया कि:—"गुरुदेव! पांचवे आरे का बहाना लेकर आज जो शिथिलाचार का पोषण हो रहा है, उसको देखकर आपके समान सिंह पुरुष भी यदि विशुद्ध मुनि-धर्म का पालन नहीं करेंगे तो फिर कौन करेगा? आप मुनि-धर्म के पालन की प्रतिज्ञा लीजिये—मैं भी आपके साथ आज्ञानुसार संयम का पालन करूंगा।" गुरु ने अत्यन्त प्रेम-पूर्वक शिष्य की बात सुनी और कुछ समय तक प्रतीक्षा करने के लिये कहा।

श्री धर्मसिंहजी ने गुरु की आज्ञा मानली और श्रुत-धर्म की सेवा करने के लिए आपने सूत्रों के ऊपर टब्बा लिखना आरंभ किया। आपने सत्ताईस सूत्रों के टब्बे लिखे। ये टब्बे इतने सुन्दर ढंग से लिखे गये कि इन टब्बों को आज तक स्थानकवासी साधु प्रामाणिक मानते आये हैं। सुन्दरता और स्पष्टता इसी से जानी जा सकती है कि गुजराती भाषा होने पर भी स्थानकवासी साधुओं को समझने में कोई अड़चन पैदा नहीं होती।

इसके बाद आपने फिर से गुरु को निवेदन किया कि:-"अब विशुद्ध संयम पालन करने के लिये बाहर निकल जाने की मेरी तीव्र लालसा है। यदि आप तैयार होते हों तो हम दोनों शुद्ध-चारित्र के मार्ग की ओर मुड़ें।"

गुरु ने कहा कि:-"हे देवानुप्रिय! तुम देख सकते हो कि मैं इस गादी और वैभव को छोड़ सकने की स्थिति में नहीं हूँ। फिर भी तुम्हारे कल्याण के मार्ग मे विघ्न रूप बनना मैं नहीं चाहता। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम आगमानुसार चारित्र का पालन करो। किन्तु यहां से निकलने पर तुम्हारे सामने अनेक प्रकार के विरोध खड़े होंगे। उनके सामने टिक सकने की क्या तुममें क्षमता है? यह जानने के लिए मुझे तुम्हारी परीक्षा लेनी होगी। अत: आज रात को दिल्ली दरवाजे के बाहर (अहमदाबाद में) जो दरगाह है—वहां आज रात भर रह कर कल सवेरे मेरे पास आना।"

धर्मसिंह मुनि ने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके दरगाह में प्रवेश किया और उसके अधिकारी से रात्रिवास करने की आज्ञा मांगी।

यह वह समय था जब अहमदाबाद का इतना विकास नहीं हुआ था। रात को शहर से बाहर कोई भी नहीं निकल सकता था। और उस दरगाह मे तो रात्रि मे कोई भी नहीं रह सकता था। अतः वहॉ के मुसलमान अधिकारी ने कहा कि:—"महाराज यहाँ रात को कोई नहीं रह सकता। रात के समय जो भीतर जाता है उसका केवल शव ही प्रातः काल हाथ लगता है। आप व्यर्थ ही क्यों मरना चाहते हैं?" किन्तु धर्मसिंहजी ने कहा कि:—"मुझे अपने गुरु की आज्ञा है कि मैं रात को यहां रहूँ। अतः आप मुझे आज्ञा दीजिये।"

वहां के लोगों ने विचारा कि यह कोई अद्भुत आदमी है। यदि यह मरना ही चाहता है तो हम क्या

++

करें! अत. उन्होंने कहा कि "महाराज! यदि आप रात को रहना ही चाहते हैं तो हमें इसमें कुछ भी आपत्ति नहीं है, किन्तु यदि आपको कुछ हो गया तो उसके हम जिम्मेवार नहीं।' इस पर धर्मसिंहजी ने कहा कि:—"वे किसी को किसी प्रकार का दोषी नहीं ठहरायेंगे।'

वे दरगाह मे पहुँचे। सन्ध्या काल होने पर वे ध्यान, कायोत्सर्ग और शास्त्र-स्वाध्याय में लग गये। एक प्रहर रात बीत गई तब दरगाह का पीर अपनी क । पर आया और उसने देखा कि एक साधु स्वाध्याय मे बैठा हुआ है। उसने शास्त्रो की वाणी सुनी। आज तक ऐसी वाणी उसने कभी भी नहीं सुनी थी। साधु की तरफ उसने नजर दौड़ाई तो उसने मुनि को स्वाध्याय मे लीन पाया। मुनि की दृष्टि मे किसी प्रकार की विचलितता का उसने अनुभव नहीं किया। यक्ष का हृदय परिवर्तित हो गया। जो आज तक मिलने वाले मनुष्यों का संहार करता आ रहा था वह आज इस मुनि की सेवा-सुश्रूषा करने लगा। धर्मसिंहजी ने उसे उपदेश दिया जिसके फलस्वरूप यक्ष ने किसी को न मारने की प्रतिज्ञा मुनि से ग्रहण की।

जिन लोगों ने दरगाह मे जाते हुए कल साधु को देखा था आज प्रात' काल उसका शव देखने को कौतूहल से विशाल सख्या मे एकत्रित हो गये, किन्तु लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब सूर्योदय होने पर धीर, वीर, गभीर, प्रतापी, तथा ओजस्वी श्री धर्मसिंहजी मुनि बाहर पधारे।

श्री शिवजी मुनि ने यह घटना सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की और उन्होंने धर्मसिंहजी को शास्त्र-सम्मत शुद्ध-सयम के मार्ग पर विचरने की आज्ञा दे दी।

अपने गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर और उनसे अलग होकर श्री धर्मसिंहजी अहमदाबाद पधारे। उस समय अहमदाबाद में चैत्यवासियों की शक्ति अत्यन्त प्रबल थी और मुनि लोग अर्ध ससारी के समान होकर रहते थे। इस स्थिति में इस पूर्ण संयमी को योग्य स्थान कैसे मिलता! अत. आपने दरियापुर दरवाजे के पहरेदार की कोठडी मे रह कर दरवाजे पर ही बैठ कर उपदेश देना शुरू किया। इसलिये आपकी सम्प्रदाय "दरियापुरी सम्प्रदाय" इस नाम से प्रसिद्ध हुई। श्री धर्मसिंहजी मुनि के उपदेश का प्रभाव अहमदाबाद निवासियों पर खूब पडा। तत्कालीन अहमदाबाद के बादशाह के कामदार श्री दलपतराय भी आपसे प्रभावित हुए। इस प्रकार क्रमशः आपका शिष्य-परिवार और अनुयायी बढ़ने लगे। यह घटना वि० स० १६९२ की है।

पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज का अध्ययन अत्यन्त गहन था। अपने जीवन काल में जैन-साहित्य की बेजोड़ सेवा का महान् कार्य आपने किया।

श्री धर्मसिंहजी महाराज की मान्यताओं में दूसरी सम्प्रदायो से कुछ भिन्नता है। उसमें मुख्य भेद श्रावकों के प्रत्याख्यान मे है। और यह भेद छः कोटि और आठ कोटि का है। साधुओं को तो तीन करण और तीन योग से-नौ कोटि से त्याग होता है किन्तु इनमें से दूसरी सम्प्रदायों के श्रावक दो करण तीन योग से—छः कोटि से प्रत्याख्यान करते हैं। जबकि धर्मसिंहजी की यह मान्यता थी कि श्रावक मन की अनुमोदना के सिवाय शेष आठ कोटि से प्रत्याख्यान कर सकता है समाचारी के विषय मे प्राय प्रत्येक सम्प्रदाय की पारस्परिक-तुलना मे भिन्नता मालूम होती है। दरिया पुरी और अन्य सम्प्रदायों के बीच मे भी अन्तर है। आयुष्य टूटने की मान्यता मे भी भिन्नता है।

धर्मसिंहजी महाराज का प्रचार क्षेत्र समस्त गुजरात और सौराष्ट्र का प्रदेश था। पूज्य श्री धर्मसिंहजी मारण गाठ के दर्द के कारण दूरवर्ती प्रदेशों मे विहार नहीं कर सके। वि० सं० १७२८ के आसोज वदी ४ को ४३ वर्ष की अवस्था मे आप देवलोक सिधारे।

श्री धर्मदासजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज का जन्म अहमदाबाद के पास 'सरखेज' नामक ग्राम में संघपति जीवन-लाल रालीदासजी की धर्मपत्नि हीराबाई की कुक्षि से चैत्र शुक्ला ११ सं० १७०१ में हुआ था। आप जाति के भावसार थे। उस समय सरखेज मे ७०० घर थे। ये सब लौंकागच्छी थे।

सरखेज मे उस समय लौंकागच्छ के केशवजी यति के पक्ष के श्री पूज्य तेजसिंहजी विराजते थे। आपके पास ही श्री धर्मदासजी ने धार्मिक-ज्ञान प्राप्त किया।

एक समय 'एकल-पात्रिया' पंथ के एक अगुआ श्री कल्याणजी भाई अपने पंथ के प्रचारार्थ सरखेज आये। धर्मदासजी प्रारंभ से ही वैराग्यमय थे अतः कल्याणजी के उपदेश का आप पर उत्तम प्रभाव पड़ा शास्त्रों में वर्णित शुद्ध संयमी-जीवन के आचारों के साथ तुलना करते हुए यतियों के शिथिलाचारी-जीवन से उन्हें दुःख हुआ। इस कारण यतियों से दीक्षा लेने की आपकी इच्छा नहीं थी। कल्याणजी भाई के उपदेश से प्रभावित होकर माता पिता से आज्ञा लेकर धर्मदासजी उनके शिष्य बन गये।

एक वर्ष तक कल्याणजी के सम्पर्क में रहकर आपने शास्त्राभ्यास किया। शास्त्रों का अभ्यास करते हुए उनकी एकल-पात्रिया-पंथ से श्रद्धा हट गई। आपने इस अज्ञान-मूलक मान्यता का परित्याग किया और वि० सं० १७१६ में अहमदाबाद के दिल्ली दरवाजे के बाहर स्थित बादशाह की वाटिका में स्वतन्त्र-रूप से शुद्ध-दीक्षा अंगीकार करली।

ऐसा कहा जाता है कि एक समय अहमदाबाद में आपका पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० से विचार-विनिमय हुआ था किन्तु आठ कोटि और आयुष्य टूटने की मान्यता पर एकमत नहीं हो सके।

इसी प्रकार लवजी ऋषिजी के साथ भी आपका मिलन हुआ था, किन्तु यहां भी सात विषयों पर समाधान नहीं हो सकने के कारण आपने स्वतन्त्र-रूप से दीक्षा ग्रहण की। फिर भी मुनि धर्मसिंहजी और धर्मदासजी महाराज के बीच में अत्यधिक प्रेम था।

दीक्षा के बाद पहले दिन गौचरी लेने के लिये आप शहर में गये। अकस्मात् वे ऐसे घर में पहुंचे जहां साधुमार्गियों के द्वेषी रहते थे। उन्होंने मुनि को आहार के बदले राख बहराई। पवन के कारण राख हवा में उड़ गई और थोड़ी सी पात्र में रह गई। धर्मदासजी महाराज यह राख लेकर शहर में विराजित धर्मसिंहजी महाराज के पास आये और गौचरी में राख मिलने की घटना कह सुनाई।

धर्मसिंहजी मुनि ने कहा कि:—"धर्मदासजी! इस राख का उड़ना यह सूचित करता है कि उसके समान आपकी कीर्ति भी फैलेगी और आपकी परम्परा खूब विकसित होगी। जिस प्रकार बिना राख के घर नहीं होता, उसी प्रकार ऐसा कोई ग्राम अथवा प्रान्त नहीं रहेगा जहां आपके भक्त न होंगे।"

यह घटना वि० सं० १७२१ की है। आपके गुरुदेव का स्वर्गवास आपकी दीक्षा के २१ दिन के बाद मिगसर वद ५ को हुआ था। इस कारण लोगों में ऐसा भ्रम फैल गया कि धर्मदासजी म० स्वयंबोधी थे।

अब धर्मदासजी पर पूर्ण सम्प्रदाय की जिम्मेवरी थी और आपने इस जिम्मेवरी को अत्यन्त कुशलतापूर्वक निभाई। भारत के अनेक प्रान्तों में विचरण कर आपने धर्म का प्रचार किया।

आपके गुणों से आकर्षित होकर आपके अनुयायी-संघ ने सं० १७२१ में मालव-प्रान्त के मुख्य नगर उज्जैन में भव्य-समारोह के साथ आपको आचार्य-पद से विभूषित किया।

पूज्य धर्मदासजी महाराज ने कच्छ, काठियावाड़, बागड़, खानदेश, पंजाब, मेवाड़, मालवा, हाड़ौती और ढुंढार आदि प्रांतों में धर्म का प्रचार करते हुए परिभ्रमण किया।

करें। अतः उन्होंने कहा कि "महाराज! यदि आप रात को रहना ही चाहते हैं तो हमें इसमें कुछ भी आपत्ति नहीं है, किन्तु यदि आपको कुछ हो गया तो उसके हम जिम्मेवार नहीं।' इस पर धर्मसिंहजी ने कहा कि:—"वे किसी को किसी प्रकार का दोषी नहीं ठहरायेंगे।'

वे दरगाह में पहुँचे। सन्ध्या काल होने पर वे ध्यान, कायोत्सर्ग और शास्त्र-स्वाध्याय में लग गये। एक प्रहर रात बीत गई तब दरगाह का पीर अपनी क ्र पर आया और उसने देखा कि एक साधु स्वाध्याय में बैठा हुआ है। उसने शास्त्रों की वाणी सुनी। आज तक ऐसी वाणी उसने कभी भी नहीं सुनी थी। साधु की तरफ उसने नजर दौडाई तो उसने मुनि को स्वाध्याय में लीन पाया। मुनि की दृष्टि में किसी प्रकार की विचलितता का उसने अनुभव नहीं किया। यक्ष का हृदय परिवर्तित हो गया। जो आज तक मिलने वाले मनुष्यों का संहार करता आ रहा था वह आज इस मुनि की सेवा-सुश्रूषा करने लगा। धर्मसिंहजी ने उसे उपदेश दिया जिसके फलस्वरूप यक्ष ने किसी को न मारने की प्रतिज्ञा मुनि से ग्रहण की।

जिन लोगों ने दरगाह में जाते हुए कल साधु को देखा था आज प्रातःकाल उसका शव देखने को कौतूहल से विशाल संख्या में एकत्रित हो गये, किन्तु लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब सूर्योदय होने पर धीर, वीर, गभीर, प्रतापी, तथा ओजस्वी श्री धर्मसिंहजी मुनि बाहर पधारे।

श्री शिवजी मुनि ने यह घटना सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की और उन्होंने धर्मसिंहजी को शास्त्र-सम्मत शुद्ध-संयम के मार्ग पर विचरने की आज्ञा दे दी।

अपने गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर और उनसे अलग होकर श्री धर्मसिंहजी अहमदाबाद पधारे। उस समय अहमदाबाद में चैत्यवासियों की शक्ति अत्यन्त प्रबल थी और मुनि लोग अर्ध संसारी के समान होकर रहते थे। इस स्थिति में इस पूर्ण संयमी को योग्य स्थान कैसे मिलता! अतः आपने दरियापुर दरवाजे के पहरेदार की कोठडी में रह कर दरवाजे पर ही बैठ कर उपदेश देना शुरू किया। इसलिये आपकी सम्प्रदाय "दरियापुरी सम्प्रदाय" इस नाम से प्रसिद्ध हुई। श्री धर्मसिंहजी मुनि के उपदेश का प्रभाव अहमदाबाद निवासियों पर खूब पडा। तत्कालीन अहमदाबाद के बादशाह के कामदार श्री दलपतराय भी आपसे प्रभावित हुए। इस प्रकार क्रमशः आपका शिष्य-परिवार और अनुयायी बढ़ने लगे। यह घटना वि० सं० १६६२ की है।

पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज का अध्ययन अत्यन्त गहन था। अपने जीवन-काल में जैन-साहित्य की बेजोड सेवा का महान् कार्य आपने किया।

श्री धर्मसिंहजी महाराज की मान्यताओं में दूसरी सम्प्रदायों से कुछ भिन्नता है। उसमें मुख्य भेद श्रावकों के प्रत्याख्यान में है। और यह भेद छः कोटि और आठ कोटि का है। साधुओं को तो तीन करण और तीन योग से-नौ कोटि से त्याग होता है किन्तु इनमें से दूसरी सम्प्रदायों के श्रावक दो करण तीन योग से—छः कोटि से प्रत्याख्यान करते है। जबकि धर्मसिंहजी की यह मान्यता थी कि श्रावक मन की अनुमोदना के सिवाय शेष आठ कोटि से प्रत्याख्यान कर सकता है समाचारी के विषय में प्रायः प्रत्येक सम्प्रदाय की पारस्परिक तुलना में भिन्नता मालूम होती है। दरिया-पुरी और अन्य सम्प्रदायों के बीच में भी अन्तर है। आयुष्य टूटने की मान्यता में भी भिन्नता है।

धर्मसिंहजी महाराज का प्रचार क्षेत्र समस्त गुजरात और सौराष्ट्र का प्रदेश था। पूज्य श्री धर्मसिंहजी सारण गाठ के दर्द के कारण दूरवर्ती प्रदेशों में विहार नहीं कर सके। वि० सं० १७२८ के आसोज बदी ४ को ४३ वर्ष की अवस्था में आप देवलोक सिधारे।

श्री धर्मदासजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज का जन्म अहमदावाद के पास 'सरखेज' नामक ग्राम में संघपति जीवन-लाल कालीदासजी की धर्मपत्नि हीराबाई की कुक्षि से चैत्र शुक्ला ११ सं० १७०१ में हुआ था। आप जाति के भावसार थे। उस समय सरखेज में ७०० घर थे। ये सब लौंकागच्छी थे।

सरखेज में उस समय लौंकागच्छ के केशवजी यति के पक्ष के श्री पूज्य तेजसिंहजी विराजते थे। आपके पास ही श्री धर्मदासजी ने धार्मिक-ज्ञान प्राप्त किया।

एक समय 'एकल-पात्रिया' पंथ के एक अगुआ श्री कल्याणजी भाई अपने पंथ के प्रचारार्थ सरखेज आये। धर्मदासजी प्रारंभ से ही वैराग्यमय थे अतः कल्याणजी के उपदेश का आप पर उत्तम प्रभाव पड़ा शास्त्रों में वर्णित शुद्ध संयमी-जीवन के आचारों के साथ तुलना करते हुए यतियों के शिथिलाचारी-जीवन से उन्हें दुःख हुआ। इस कारण यतियों से दीक्षा लेने की आपकी इच्छा नहीं थी। कल्याणजी भाई के उपदेश से प्रभावित होकर माता पिता से आज्ञा लेकर धर्मदासजी उनके शिष्य बन गये।

एक वर्ष तक कल्याणजी के सम्पर्क में रहकर आपने शास्त्राभ्यास किया। शास्त्रों का अभ्यास करते हुए उनकी एकल-पात्रिया-पंथ से श्रद्धा हट गई। आपने इस अज्ञान-मूलक मान्यता का परित्याग किया और वि० सं० १७१६ में अहमदाबाद के दिल्ली दरवाजे के बाहर स्थित बादशाह की वाटिका में स्वतन्त्र-रूप से शुद्ध-दीक्षा अंगीकार करली।

ऐसा कहा जाता है कि एक समय अहमदावाद में आपका पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० से विचार-विनिमय हुआ था किन्तु आठ कोटि और आयुष्य टूटने की मान्यता पर एकमत नहीं हो सके।

इसी प्रकार लवजी ऋषिजी के साथ भी आपका मिलन हुआ था, किन्तु यहां भी सात विषयों पर समाधान नहीं हो सकने के कारण आपने स्वतन्त्र-रूप से दीक्षा ग्रहण की। फिर भी मुनि धर्मसिंहजी और धर्मदासजी महाराज के बीच में अत्यधिक प्रेम था।

दीक्षा के बाद पहले दिन गौचरी लेने के लिये आप शहर में गये। अकस्मात् वे ऐसे घर में पहुचे जहां साधुमार्गियों के द्वेषी रहते थे। उन्होंने मुनि को आहार के बदले राख बहराई। पवन के कारण राख हवा में उड़ गई और थोड़ी सी पात्र में रह गई। धर्मदासजी महाराज यह राख लेकर शहर में विराजित धर्मसिंहजी महाराज के पास आये और गौचरी में राख मिलने की घटना कह सुनाई।

धर्मसिंहजी मुनि ने कहा कि:—"धर्मदासजी! इस राख का उड़ना यह सूचित करता है कि उसके समान आपकी कीर्ति भी फैलेगी और आपकी परम्परा खूब विकसित होगी। जिस प्रकार बिना राख के घर नहीं होता, उसी प्रकार ऐसा कोई ग्राम अथवा प्रान्त नहीं रहेगा जहां आपके भक्त न होंगे।"

यह घटना वि० सं० १७२१ की है। आपके गुरुदेव का स्वर्गवास आपकी दीक्षा के २१ दिन के बाद मिगसर वद ५ को हुआ था। इस कारण लोगों में ऐसा भ्रम फैल गया कि धर्मदासजी म० स्वयबोधी थे।

अब धर्मदासजी पर पूर्ण सम्प्रदाय की जिम्मेवरी थी और आपने इस जिम्मेवरी को अत्यन्त कुशलतापूर्वक निभाई। भारत के अनेक प्रान्तों में विचरण कर आपने धर्म का प्रचार किया।

आपके गुणों से आकर्षित होकर आपके अनुयायी-संघ ने सं० १७२१ में मालव-प्रान्त के मुख्य नगर उज्जैन में भव्य-समारोह के साथ आपको आचार्य-पद से विभूषित किया।

पूज्य धर्मदासजी महाराज ने कच्छ, काठियावाड़, वागड़, खानदेश, पंजाब, मेवाड़, मालवा, हाड़ौती और ढुंढार आदि प्रांतों में धर्म का प्रचार करते हुए परिभ्रमण किया।

श्री धर्मदासजी महाराज की शिष्य-परम्परा तत्कालीन मुनियों से सर्वाधिक है। आपके ६६ शिष्य थे, जिनमें से ३५ तो संस्कृत और प्राकृत के विद्वान थे। इन ३५ विद्वान मुनियों के साथ शिष्यों का एक-एक समुदाय बन गया था।

इतने शिष्यों और प्रशिष्यों के बडे परिवार की व्यवस्था तथा शिक्षण का प्रबन्ध करना एक व्यक्ति के लिये अत्यन्त कठिन था। इस कारण पूज्य धर्मदासजी महाराज ने धारा नगरी में समस्त शिष्य-परिवार को एकत्रित कर चैत्र शुक्ला १३ स० १७७२ को २२ सम्प्रदायों में विभाजित कर दिया। स्थानकवासी समाज में २२ सम्प्रदायों का नाम अत्यधिक प्रचलित है। इसे 'बाईस टोला' भी कहा जाता है। ये एक ही गुरु के परिवार की अलग-अलग बाईस टोलियां हैं। इन बाईस सम्प्रदायों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) पूज्य श्री धर्मदासजी म० की सम्प्रदाय (२) पू० श्री धन्नाजी म० की सं० (३) पू० श्री लालचन्दजी म० की स० (४) पू० श्री मन्नाजी म० की स० (५) पू० श्री बड़े पृथ्वीराजजी म० की सं० (६) पू० श्री छोटे पृथ्वीराजजी म० की स० (७) पू० श्री बालचन्दजी म० की स० (८) पू० श्री ताराचन्दजी म० की सं० (९) पू० श्री प्रेमचन्द जी म० की स० (१०) पू० श्री खेतसीजी म० की स० (११) पू० श्री पदार्थजी म० की स० (१२) पू० श्री लोकमलजी म० की स (१३) पू० श्री भवानीदासजी म० की सं० (१४) पू० श्री मलूकचन्दजी म० की स० (१५) पू० श्री पुरुषोत्तमजी म० की स० (१६) पू० श्री मुकुटरायजी म० की स० (१७) पू० श्री मनोहरदासजी म० की स० (१८) पू० श्री रामचन्द्रजी म० की स० (१९) पू० श्री गुरुसहायजी म० की स० (२०) पू० श्री वाघजी म० की स० (२१) पू० श्री रामरतनजी म० की स० (२२) पू० श्री मूलचन्दजी म० की स०। इस प्रकार २२ मुनियों के नाम से २२ सम्प्रदायों का गठन हुआ।

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के स्वर्गवास की घटना उनके जीवन काल से भी अधिक उज्जवल और रोमांचक है। जब आपने यह सुना कि धारा नगरी में आपके एक शिष्य ने संथारा धारण किया है किन्तु मन के भाव शिथिल पड जाने के कारण और अनशन की प्रतिज्ञा नहीं निभा सकने के कारण तोड़ना चाहता है। तो यह बात सुनते ही आपने यह सन्देश पहुँचाया कि मैं वहां आता हूँ और मेरे आने तक तुम प्रतिज्ञा भग न करना। उस मुनि ने आपकी आज्ञा मान ली।

पूज्य श्री ने शीघ्रता से विहार किया और सन्ध्या होते होते धारा नगरी में पहुँच गये। भूख और प्यास से आकुल-व्याकुल संथारा लिये हुए मुनि अन्न और जल के लिए बिल-बिला रहे थे। पूज्य श्री ने इस मुनि को प्रतिज्ञा पालन के लिए खूब समझाया किन्तु मुनि के साहस और सहनशीलता की शक्ति का बांध टूट चुका था। अतः उन पर उपदेश का कुछ भी असर न पड़ा।

पूज्य श्री ने शीघ्र ही अपने कंधे पर का बोझ उतारा। सम्प्रदाय की जिम्मेवरी मूलचन्दजी महाराज को दी। समस्त सघ के सन्मुख अपना मतव्य प्रगट किया और शीघ्र ही धर्म की दीप-शिखा को जाज्वल्यमान बनाये रखने के लिये आपने उस शिष्य के स्थान पर खुद संथारा करके बैठ गये।

शरीर का धर्म तो विलय होने का ही है। क्रमशः शरीर कृश होता गया। एक दिन शांत-वातावरण मे जब वर्षा की झिरमिर २ बूंदें पड रही थीं तब ऐसे सुखद और स्निग्ध समय मे नश्वर देह को त्याग कर आप पंडित-मरण को प्राप्त हुए।

स० १७६६ अथवा १७२७ में धर्म की कीर्ति की रक्षा के लिए आपने अपने शरीर का इस प्रकार बलिदान दिया।

धन्य हो उस महान् आत्मा को!!

आज आपके चौवीसवें पाट पर पूज्य श्री ईश्वरलालजी महाराज आचार्य-पद पर विराजमान हैं। आप बड़े ही शांत, दांत, धीर, गंभीर और शास्त्रों के समर्थ-ज्ञाता हैं।

इस सम्प्रदाय की यह एक और विशेषता है कि इसमें से शाखा-प्रशाखाओं के समान अन्य सम्प्रदायें नहीं फूटीं। आज तक एक ही शृंखला अविछिन्न-रूप से चली आ रही है।

श्री लवजीऋषिजी महाराज

श्री लवजी ऋषिजी के पिताजी का देहावसान उनकी बाल्यावस्था में ही हो गया था अतः अपनी विधवा माता फूलाबाई के साथ अपने नाना वीरजी वोरा के यहां रहते थे। वीरजी वोरा दशा श्रीमाली वणिक थे। खंभात के नवाब साहब भी आपकी धाक मानते थे। आपके पास लाखों की सम्पदा थी।

इस समय सूरत में लौंकागच्छ की गादी पर वज्रांगजी यति थे। वीरजी वोरा आपके पास आते-जाते थे। बालक लवजी भी अपनी माता के साथ वहां आते-जाते थे। अपनी धर्म परायण माता के पास बैठ कर धर्म-क्रिया के पाठ सुनते और मन में उनका चिन्तन-मनन करते थे।

एक समय वीरजी वोरा अपनी पुत्री और बालक लवजी के साथ श्री वज्रांगजी के दर्शनार्थ उपाश्रय में गये थे। उस समय प्रसंग वशात् वज्रांगजी ने लवजी का हाथ देखा और सामुद्रिक-शास्त्र के आधार पर अनुमान किया कि यह बालक बड़ा होने पर महापुरुष बनेगा।

वीरजी वोरा ने वज्रांगजी मुनि से इस बालक को शास्त्राभ्यास कराने के लिए कहा। यतिजी ने कहा कि सर्वप्रथम इन्हें सामायिक-प्रतिक्रमण सीखना चाहिए। लवजी ने उत्तर दिया कि—"सामायिक-प्रतिक्रमण तो मुझे याद है।"

यतिजी ने आपकी परीक्षा ली। सात वर्ष के बालक से पूछने पर जब आपको मालूम हुआ कि इन्हें सामायिक-प्रतिक्रमण आते हैं तो आपको अत्यन्त हर्ष हुआ और इन्हें पढ़ाना मंजूर किया।

शास्त्राभ्यास करते हुए भगवान महावीर की वैराग्यमयी-वाणी से अध्यात्म-रस में ये लवलीन होने लगे। पार्थिव-विषय बाहर से मधुर किन्तु भीतर से हलाहल-विष से परिपूर्ण किंपाक-फल के समान क्षणभंगुर के स्वभाव-वाले प्रतीत होने लगे। अपनी माता तथा मातामह को संसार त्यागने की आपने भावना प्रगट की। माता तथा स्वजनों ने आपको खूब समझाया किंतु लवजी अपने निश्चय में दृढ़ बने रहे। आखिर इनकी जीत हुई।

वि० सं० १६९२ में अत्यन्त भव्य-समारोह के साथ आपने दीक्षा धारण की और ध्यान पूर्वक शास्त्राभ्यास में तल्लीन हो गये। गुरु वज्रांगजी को भी लवजी मुनि पर प्रगाढ़-स्नेह था। अत्यन्त सावधानी और प्रेम के साथ आप लवजी को अभ्यास कराते और अपने अनुभव सुनाते थे।

निरंतर श्रुताभ्यास से लवजी मुनि में संयम के प्रति दृढ़-रुचि उत्पन्न हुई। वे सर्वत्र व्याप्त यति-वर्ग की शिथिलाचारिता और संग्रहवृत्ति के प्रति गुरु का लक्ष्य खींचते और शुद्ध-संयम पालन करने के लिए विनती करते।

गुरुदेव उनकी बात को स्वीकार करते किन्तु शुद्ध-संयम पालन के लिये परम्परा का परिवर्तन करने अथवा यति-वर्ग से अलग होने के लिए वे तैयार नहीं थे। गहन विचार-विमर्श के पश्चात् लवजी ऋषिजी ने यति-वर्ग से अलग होकर वि० सं० १६९४ में शुद्ध-दीक्षा ग्रहण की। एक प्राचीन पट्टावली के अनुसार अपने दो गुरु भाइयों भाणजी और सुखाजी के साथ शुद्ध-दीक्षा धारण करने का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार इस सम्बन्ध में दो मान्यतायें हैं।

लवजी ऋषिजी की मधुर-वाणी और उनके तप-तेज के कारण उनका प्रचार होने लगा। श्री जीवराजजी महाराज और धर्मसिंहजी महाराज ने यति-वर्ग के विरुद्ध जो विद्रोह जगाया था, उसमें तीसरे लवजी ऋषिजी भी सम्मिलित हो गये। इसलिए यति-वर्ग लवजी ऋषिजी को अपना शत्रु समझने लगा।

यति-वर्ग द्वारा रचित षड़यन्त्र के कारण वीरजी वोरा भी लवजी ऋषिजी से क्रुद्ध हो गये और खभात के नवाब को पत्र लिखकर लवजी ऋषिजी को कैद करा दिया। जेल के पहरेदारों ने इस साधु की धर्मचर्या और जीवन की दिव्यता देख कर बेगम साहिबा के द्वारा नवाब सा को समझाया और पूर्ण सम्मान के साथ आपको मुक्त कराया।

इस प्रकार यति-वर्ग का षड़यन्त्र निष्फल हो जाने से वे और भी अनेक प्रकार से आपको दुःख देने लगे किन्तु लवजी ऋषिजी शान्त और अक्रोध-भाव से अपनी सयम-साधना में मग्न रहते थे।

एक वार अहमदावाद में लवजी ऋषिजी विराजते थे। यति-वर्ग ने उस समय षड़यन्त्र रच कर उनके तीन शिष्यों को मरवा डाला। इस सम्बन्ध की शिकायत लवजी ऋषिजी के श्रावकों ने दिल्ली के दरबार मे पहुँचाई। उसकी जांच होने पर उनके शिष्यों के शव जो मदिरों मे गाड दिये गये थे—बरामद हुए। अतः काजी ने उस मदिर को तोड़ देने का आदेश दिया।

ऐसा होते देख कर लवजी ऋषिजी के पच्चीस श्रावकों ने काजी से प्रार्थना की कि.— "भले ही ये लोग मार्ग भूल गये हों और इन्होंने चाहे जितना निकृष्ट कार्य किया हो, फिर भी ये हमारे भाई ही हैं। हम मूर्ति पूजा को नहीं मानते किन्तु ये लोग मूर्ति-पूजा द्वारा ही जिनेश्वर देव की आराधना करते हैं। इसलिये यदि मंदिर तोड़ दिया जायगा तो इन्हें अपार-वेदना होगी। हम वीतराग प्रभु के उपासक हैं अतः इनके दुख के निमित्त बनना हमारे लिए शोभनीय नहीं है। अतः मदिर तोड़ देने का आदेश आप रद्द कीजिये।"

काजी ने अपना आदेश रद्द किया और भविष्य में साधुमार्गियों को ऐसे सकट सहन न करने पड़ें—ऐसा प्रबध कर दिल्ली चले गये।

इस प्रकार हम जान सकते हैं कि लवजी ऋषिजी के समय मे यतियों का विरोध करना कितना सकटमय था। अन्त में एक समय विहार करते हुए लवजी ऋषिजी बुरहानपुर पधारे। वहां इनके प्रतिस्पर्धियों ने एक हलवाई की पत्नि के द्वारा विष-मिश्रित मोदक बहराये। आहार पानी निपटाने के बाद विष की प्रतिक्रिया होने लगी। लवजी ऋषिजी ने सब कुछ समझ लिया और अपने शिष्यों को गुजरात की तरफ विहार करने की आज्ञा प्रदान की। आपने अत्यन्त शांति पूर्वक समाधि मरण से स्वर्ग गमन किया।

दरियापुरी-सम्प्रदाय पट्टावली में ऐसा उल्लेख मिलता है कि पूज्य श्री धर्मसिंहजी और लवजी ऋषिजी का अहमदाबाद में सम्मिलन हुआ था किन्तु छः कोटि और आठ कोटि तथा आयुष्य टूटने के अभिप्राय दोनों के समान नहीं हो सके।

पूज्य श्री लवजी ऋषिजी की परम्परा अति विशाल है। आज भी स्थानकवासी समाज में खंभात सघाड़ा-गुजरात में, ऋषि सम्प्रदाय मालवा तथा दक्षिण मे और पजाब मे पूज्य अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय आप द्वारा अनुप्राणित विशाल सख्या में विद्यमान हैं।

स्थानकवासी समाज का पुनरुत्थान

पू० श्री धर्मसिंहजी महाराजकी सम्प्रदाय सुसगठित और अविछिन्न रही। उनके सिवाय पूज्य श्री जीवराजजी महाराज, लवजी ऋषिजी महाराज और धर्मदासजी तथा हरजी ऋषिजी महाराज की शिष्य-परम्परा मे विभाजन होकर अनेक सम्प्रदायें खड़ी होगई। थोड़े-थोड़े विचार-मतभेद को लेकर एक दूसरे के बीच में से एकता की भावना लुप्त होती गई। "नमो लोए सव्व साहूणं" की आराधना करने वाले श्रावकों के हृदयों मे भी "यह मेरे गुरू "वे तुम्हारे गुरू" की मनोवृत्ति जागृत होगई थी। इस प्रकार अत्यन्त विशाल होता हुआ भी स्थानकवासी समाज छिन्न-भिन्न होने की हालत मे होगया।

सन् १८६४ मे दिगम्बर भाइयों ने आंतरिक और साम्प्रदायिक दल-बन्दियों से ऊपर उठ कर एक दिगम्बर कॉन्फरन्स की स्थापना की। सन् १६०२ में मूर्तिपूजक कॉन्फरन्स का निर्माण हुआ।

स्था० समाज की खंभात सम्प्रदाय के उत्साही मुनि श्री छगनलालजी महाराज ने स्थानकवासी समाज का सगठन के प्रति ध्यान आकर्षित कराया। जैन-समाज के सुविख्यात लेखक, निडरवक्ता, प्रसिद्ध-दार्शनिक, स्वतन्त्र-विचारक स्व० श्री वाड़ीलाल मोतीलाल शाह ने श्रावक-समाज को एकीकरण के लिए प्रेरणा दी।

सामाजिक कार्यों मे तो श्रावक एक रूप थे ही, किन्तु धार्मिक कार्यों मे साम्प्रदायिकता के कारण विभाजित हो गये थे। समय को समझ कर, कलह के परिणामों को देखकर सभी लोगों ने एकीकरण की योजना की सराहना की, जिसके फलस्वरूप सन् १६०६ में अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रन्स की स्थापना की गई।

स्था० जैन कॉन्फरन्स के अधिवेशन किस समय और कहां २ हुए उनका विवरण इस प्रकार है:—

प्रथम्	सन् १६०६	मौरवी		द्वितीय	सन् १६०८	रतलाम
तृतीय	,, १६०६	अजमेर		चतुर्थ	,, १६१०	जालन्धर (पंजाब)
पंचम	,, १६१३	सिकन्द्राबाद		षष्ठम	,, १६२५	मलकापुर
सप्तम	,, १६२७	बम्बई		अष्टम	,, १६२७	बीकानेर
नवम	,, १६३३	अजमेर				

अजमेर के नवमें अधिवेशन के समय स्थानकवासी समाज के साधुओं का सम्मेलन भी हुआ था।

सम्राट खारवेल, राजा सम्प्रति, मथुरा तथा अंत में वल्लभीपुर के साधु-सम्मेलन के १४७६ वर्ष पश्चात् विविध सम्प्रदायों के साधुओं को एक साथ और एक ही जगह देखने का प्रसग अहोभाग्य से स्थानकवासी समाज को अजमेर मे ही मिला।

उस समय स्थानकवासी-समाज मे ३० सम्प्रदायें थीं। उनमें से २६ सम्प्रदायों के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित हुए। साधु-सम्मेलन में मुनियों की सख्या ४६३ और साध्वियों की सख्या ११३२ थी। इस प्रकार कुल श्रमण-सघ मे १५६५ साधु-साध्वी विराजमान थे।

इस सम्मेलन मे दूर-दूर के साधुओं का पारस्परिक-परिचय और उनमे ऐक्यता का बीजारोपण हुआ।

इसके बाद दसवां अधिवेशन घाटकोपर मे और ग्यारहवां अधिवेशन मद्रास मे हुआ। उसी समय बृहत् साधु-सम्मेलन यथाशीघ्र भरने का निर्णय किया गया।

अजमेर साधु-सम्मेलन के समय के बीजारोपण का फलरूप परिणाम सादडी बृहत्-साधु-सम्मेलनके समय देखा गया। सम्मेलन मे सम्मिलित मुनिवरों ने विचार-विमर्ष के पश्चात् अपनी-अपनी सम्प्रदायों को एक बृहत्-सघ में विलीन करना स्वीकार किया।

वैसाख शुक्ला ३ (अक्षय-तृतीया) के पवित्र दिन सम्मेलन प्रारभ हुआ और वैसाख शुक्ला ७ को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-सघ के नेतृत्व मे संघ-प्रवेश-पत्र पर हस्ताक्षर कर के पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज को आचार्य के रूप में स्वीकार कर बाईस सम्प्रदायों के एक महान श्रावक-सघ का निर्माण हुआ।

व्यवस्था के लिये समितियां निर्माण की गई। कितने ही महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए और कॉन्फरन्स ने मुनि-सम्मेलन के सभी प्रस्तावों का उत्साह पूर्वक अनुमोदन किया और सम्पूर्ण सहयोग देने की प्रतीज्ञा की। मुनि-सम्मेलन के निर्देशानुसार श्रावक-सघ को सुव्यवस्थित बनाने की तरफ भी ध्यान दिया गया। इसके साथ साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों को अमल में लाने के लिए इक्कावन सभासदों की एक संघ-ऐक्य स० समिति की नियुक्ति हुई।

१७ फरवरी सन् १९५३ को मत्री मुनिवरों तथा निर्णायक-समिति के मुनिवरों का सम्मेलन सोजत में हुआ। सादड़ी-सम्मेलन के समय चातुर्मास निकट होने के कारण पूरी तरह से विचार-विमर्ष नहीं हो सका था। अतः जो कार्य अधूरे रह गये थे, उनके संबध में यहां विचार किया गया।

इस समय में मुनियों की एकता, पारस्परिक सद्भाव, आत्म-साधना और समाज-कल्याण की भावना सर्व मुनिराजों के हृदय में झलकती थी।

इस सम्मेलन में सचित्ताचित्त, ध्वनिवर्धक-यन्त्र, तिथि-निर्णय के प्रश्न आदि पर गंभीरता से विचार-विनिमय हुआ, किंतु अंतिम रूप से निर्णय नहीं हो सका। पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० सा० के स्थ० मुनि श्री रत्नचंद्रजी म० आदि ठा० ५ तथा श्री नन्द कुंवरजी म० की सतियां जो वर्द्धमान स्था० श्रमण-सघ मे सम्मिलित नहीं हुई। उनके प्रतिनिधि रूप में पं० समर्थमलजी म० सा० के साथ विचार-विनिमय हुआ। फलतः उनसे वात्सल्य सम्बध आगामी-सम्मेलन तक कायम हुआ। विवादास्पद बातों पर सब साथ मिल कर विचार कर सकें इसके लिए उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज, प्रधानमत्री श्री आनन्द ऋषिजी महाराज, सहमंत्री श्री हस्तीमलजी महाराज, कविरत्न श्री अमरचन्दजी महाराज, शांति-रक्षक व्याख्यान-वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज—इन पाच बड़े सतों का एकत्रित-चातुर्मास कराने का निर्णय किया गया। प० मुनि श्री समर्थमलजी महाराज का चातुर्मास भी कराया गया। इसके लिये जोधपुर श्री-सघ की विनती स्वीकृत की गई। विवादास्पद वस्तुओं का उपयोग आगामी सम्मेलन तक न करने का आदेश दिया गया इस प्रकार अत्यन्त प्रेम पूर्वक इस सम्मेलन की समाप्ति हुई।

श्री लौंकागच्छ और पांच धर्मसुधारकों की परम्परा

श्री लौंकाशाहजी के बाद लौंकागच्छ के नाम से पुनः यति-परम्परा निम्न प्रकार चालू हो गई:—

श्री भाणजी, भिदाजी, भीमाजी, जगमालजी, सखोजी, रूपचंदजी तथा श्री जीवाजी।

श्री जीवाजी महाराज के तीन शिष्य थे:—जगाजी महाराज, वड़े वरसिंहजी, तथा कुंवरजी ऋषि।

१. जगाजी महाराज के शिष्य श्री जीवराजजी हुए। आपने वि० स० १६०८ में क्रियोद्धार किया।

२. वड़े वरसिंहजी महाराज और बाद की परम्परा इस प्रकार है:—छोटे वरसिंहजी, यशवन्त ऋषिजी, रूपसिंहजी, दामोदरजी, कर्मसिंहजी, केशवजी, और तेजसिंहजी।

अ'–केशवजी पक्ष के यतियों में से वजांगजी के पाट पर श्री लवजी ऋषिजी वि० स० १६९२-१७०४ में महावीर स्वामी के ७७ वें पाट पर हुए।

व:–केशवजी के शिष्य तेजसिंहजी के समय में एकल-पात्रिया-श्रावक कल्याणजी के शिष्य धर्मदासजी हुए। लौंकागच्छ की यति-परंपरा में से ५ सुधारकों की परम्परा इस प्रकार चली:—

क:–केशवजी यति की परम्परा में श्री हरजी ऋषि हुए। आपने स० १७८५ में क्रियोद्धार किया।

३. कुंवरजी ऋषि के बाद, श्रीमलजी, श्री रत्नसिंहजी, केशवजी, और शिवजी ऋषि हुए।

अ:–श्री शिवजी ऋषिजी के दो शिष्य हुए:—श्री संघराजजी और इनके पाट पर–श्री सुखमलजी, भागचंदजी, बालचंदजी, मानकचंदजी, मूलचंदजी, जगतचंदजी, रत्नचंदजी, नृपचंदजी (यह यति परंपरा चली)–इनकी गादी बालापुर में है।

श्री शिवजी ऋषिजी के दूसरे शिष्य धर्मसिंहजी मुनि हुए। आपने स० ११८५ में शुद्ध मुनि-धर्म अंगीकार कर दरियापुरी-सम्प्रदाय चलाया।

(१) श्री जीवराजजी महाराज की परम्परा

श्री शिवराजजी महाराज के दो शिष्य हुए:—श्रीधनजी महाराज और श्री लालचंदजी महाराज।

१. आचार्य श्री धनजी के बाद में श्री विष्णुजी, मनजी ऋषिजी और नाथूरामजी हुए। श्री नाथूरामजी महाराज के लक्ष्मीचंदजी, और रायचंदजी म० हुए।

श्री लक्ष्मीचंदजी के शिष्य छत्रपालजी के दो शिष्य हुए:–राजा रामाचार्य और उत्तमचन्द्राचार्य।

श्री राजा रामाचार्य के पाट पर श्री रामलालजी और फकीरचंदजी महाराज हुए। श्री फकीरचंदजी महाराज के शिष्य फूलचंदजी महाराज इस समय विद्यमान हैं।

श्री उत्तमचन्द्राचार्य के पाट पर श्री रत्नचन्द्रजी और श्री भज्जुलालजी हुए। और इनके शिष्य मोतीलालजी हुए।

श्री रायचंदजी के शिष्य रतिरामजी और इनके शिष्य नंदलालजी हुए जिनके तीन शिष्य हुए:— श्री जोंकीरामजी, किशनचंदजी और रूपचंदजी।

श्री जोंकीरामजी के बाद चैनरामजी और घासीलालजी हुए। श्री घासीलालजी के तीन शिष्य हुए:– श्री गोविंदरामजी, जीवनरामजी और कुन्दनलालजी। इनमें से गोविंदरामजी के शिष्य श्री छोटेलालजी इस समय विद्यमान हैं।

श्री किसनचन्दजी के बाद मे अनुक्रम से-बिहारीलालजी, महेशदासजी, वृषभाणजी और सादिरामजी हुए।

२ पूज्य श्री लालचन्दजी महाराज के चार शिष्य हुए :-श्री अमरसिंहजी, शीतलदासजी, गंगारामजी, और दीपचंदजी।

१. श्री अमरसिंहजी महाराज का पाटानुक्रम इस प्रकार है:—श्री तुलसीदासजी, सुजानमलजी, जीतमलजी, ज्ञानमलजी, पूनमचंदजी, जेठमलजी, नैनमलजी, दयालुचंदजी, और ताराचंदजी।

२ श्री शीतलदासजी महाराज का पाटानुक्रम :-श्री देवीचंदजी, हीराचंदजी, लक्ष्मीचंदजी, भैरुंदासजी, उदयचन्दजी, पन्नालालजी, नेमचंदजी, वेणीचंदजी, प्रतापचंदजी, और कजौड़ीमलजी।

३ श्री गंगारामजी महाराज का पाटानुक्रम :—श्री जीवनरामजी, श्रीचन्दजी, जवाहरलालजी, माणकचंदजी, पन्नालालजी, और चन्दन मुनिजी।

४ दीपचंदजी महाराज के दो शिष्य हुए :—श्री स्वामीदासजी, और मलूकचन्दजी।

(अ) स्वामीदासजी म० की परम्परा इस प्रकार है :—श्री उग्रसेनजी, घासीरामजी, कनीरामजी, ऋषिरायजी, रंगलालजी और फतहचन्दजी।

(ब) श्री मलूकचन्दजी महाराज के शिष्य नानगरामजी हुए। इनके शिष्य वीरभानजी हुए।

श्री वीरभानजी के बाद क्रमशः-श्री लक्ष्मणदासजी, मगनमलजी, गजमलजी, धूलमलजी और पन्नालालजी हुए। बाद मे श्री सुखलालजी, हरकचंदजी, दयालचंदजी और हगामीलालजी हुए।

(२) पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की परम्परा

पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० के पाट पर, श्री सोमजी ऋषिजी, मेघजी ऋषिजी, द्वारकादासजी, मोरारजी, नाथाजी, जयचंदजी, मोरारजी, नाथाजी, जीवनजी, प्रागजी ऋषि, शकर ऋषिजी, खुशालजी, हर्षसिंहजी, मोरारजी, झवेर ऋषिजी, पुंजाजी, छोटे भगवानजी, मलूकचंदजी, हीराचन्दजी, श्री रघुनाथजी, हाथीजी, उत्तमचन्दजी और ईश्वरलालजी, (श्री ईश्वरलालजी महाराज इस समय विद्यमान हैं)।

यह सम्प्रदाय दरियापुरी आठ कोटि सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें एक ही पाटानुक्रम चलता आया है।

(३) पूज्य श्री लवजी ऋषिजी महाराज की परम्परा

पूज्य श्री लवजी ऋषिजी के बाद मे उनके शिष्य सोमजी ऋषिजी पाट पर आये। आपके दो शिष्य हुए :- श्री कानजी ऋषि और हरदासजी ऋषि।

श्री कानजी ऋषि के शिष्य तिलोक ऋषिजी और इनके दो शिष्य हुए :—श्री काला ऋषिजी और मगला ऋषिजी।

१ काला ऋषिजी दक्षिण की तरफ विचरे और इनकी सम्प्रदाय 'ऋषि सम्प्रदाय' कहलाई। इनके पाटानुक्रम मे-बक्षुजी ऋषिजी, धन्ना ऋषिजी, खुबाजी ऋषि, चेना ऋषिजी, अमोलख ऋषिजी, देवजी ऋषिजी, और श्री आनन्द ऋषिजी म०। (श्री आनन्द ऋषिजी म० वर्तमान मे श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ के प्रधान मंत्री-पद पर विराजमान हैं)।

२ श्री मगला ऋषिजी गुजरातमे खंभात की तरफ विचरे अतः आपकी सम्प्रदाय 'खंभात सम्प्रदाय' के नाम से प्रसिद्ध हुई। आपका पाटानुक्रम इस प्रकार चला:-श्री रणछोडजी, नाथाजी, बेचरदासजी, बड़े माणकचन्दजी, हरखचंदजी, भायाजी, गिरधरलालजी, छगनलालजी और गुलाबचंदजी। (इस सम्प्रदाय में वर्तमान काल में कोई साधु नहीं है-केवल साध्वियां हैं)।

३ श्री सोमजी ऋषिजी के दूसरे शिष्य हरदास ऋषिजी के पाट पर श्री वृन्दावनजी, भवानीदासजी, मलूकचन्दजी, महासिंहजी, कुशालसिंहजी, छजमलजी, और रामलालजी हुए।

श्री रामलालजी महाराज के शिष्य श्री अमरसिंहजी महाराज की 'पंजाब सम्प्रदाय' बनी। इस सम्प्रदाय में अनुक्रम से:-श्री मोतीरामजी, सोहनलालजी, काशीरामजी और पू० श्री आत्मारामजी महाराज हुए। (श्री आत्मारामजी म० वर्तमान में श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ के आचार्य-पद पर विराजमान हैं)।

श्री रामलालजी महाराज के दूसरे शिष्य श्री रामरतनजी म० मालवा प्रान्त में विचरे। आपकी (मालवा-सम्प्रदाय) रामरतनजी महाराज की सम्प्रदाय कहलाती है।

(४) पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज को परम्परा

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के ९९ शिष्य थे। उनमें से सर्व प्रथम शिष्य श्री मूलचन्दजी महाराज काठियावाड में विचरे। बाद में श्री धन्नाजी, छोटे पृथ्वीराजजी, मनोहरदासजी और रामचन्द्रजी हुए।

ये पांचों सम्प्रदायें इस प्रकार विकसित हुई:—

१. श्री मूलचन्दजी महाराज के ७ शिष्य हुए:—श्री पंचाणजी, गुलाबचन्दजी, वणारसीजी, श्री इच्छाजी, विट्ठलजी, वनाजी, और इन्द्रजी।

(क) श्री पचाणजी महाराज के दो शिष्य हुए:—श्री इच्छाजी और रतनशी स्वामी।

श्री इच्छाजी स्वामी के पाट पर:—श्री हीराजी स्वामी, छोटे कानजी म०, अजरामरजी स्वामी, देवराजजी, भाणजी, करमशी और अविचलजी स्वामी। यह सम्प्रदाय 'लींबडी-सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है।

श्री अविचलजी स्वामी के शिष्य हरचंदजी स्वामी हुए। आपकी सम्प्रदाय 'लींबडी मोटी-सम्प्रदाय' बनी। इसका पाटानुक्रम इस प्रकार है:—श्री हरचंदजी, देवजी, गोविन्दजी, कानजी, नथुजी, दीपचदजी, लाधाजी, मेघराजजी, देवचदजी, लवजी, गुलाबचदजी और धनजी स्वामी।

श्री अविचलजी स्वामी के दूसरे शिष्य श्री हीमचंदजी से 'लींबडी छोटी-सम्प्रदाय' चली। इस सम्प्रदाय में पाटानुक्रम से:—श्री हीमचदजी, गोपालजी, मोहनलालजी, मणीलालजी और केशवलालजी महाराज हुए।

(ख) श्री पचाणजी महाराज के दूसरे शिष्य श्री रतनशी स्वामी का पाटानुक्रम इस प्रकार है:-श्री रतनशी स्वामी डुगरशी स्वामी, रवजी, मेघराजजी, डाह्याजी, नेनशीजी, आंबाजी, छोटे नेनशीजी और देवजी स्वामी। श्री देवजी के शिष्य जयचन्दजी और उनके शिष्य प्राणलालजी महाराज हुए। देवजी स्वामी के शिष्य जादवजी और इनके शिष्य पुरुषोत्तमजी महाराज हुए। ये दोनों विद्यमान हैं। यह सम्प्रदाय "गौंडल सम्प्रदाय" के नाम से प्रसिद्ध हुई।

२. श्री गुलाबचदजी महाराज की परम्परा इस प्रकार है:—श्री गुलाबचदजी, बालजी, बड़े नागजी, मूलजी म०, देवचदजी म० तथा मेघराजजी म०, पूज्य संघजी महाराज। यह सम्प्रदाय 'सायला-सम्प्रदाय' कहलाती है।

३. श्री वणारसीजी म० के शिष्य जयसिंगजी म० हुए। यह सम्प्रदाय 'चूडा-सम्प्रदाय' कहलाती है। इस समय इसमें कोई साधु नहीं है।

४ श्री इच्छाजी महाराज के शिष्य रामजी महाराज हुए। इनकी सम्प्रदाय 'उदयपुर-सम्प्रदाय' कहलाती है। आजकल इसमें कोई साधु नहीं है।

५. श्री विट्ठलजी महाराज से 'धांगध्रा-सम्प्रदाय' चली इसमें अनुक्रमसे-श्री विट्ठलजी, भूखणजी और वशरामजी हुए। श्री वशरामजी के शिष्य जसाजी महाराज बोटाद की तरफ आये। इसलिये आपकी सम्प्रदाय

'बोटाद-सम्प्रदाय' कहलाई। इसका पाटानुक्रम इस प्रकार है:—श्री जसाजी महाराज, अमरचन्दजी महाराज, और माणकचन्दजी महाराज।

६ श्री वनाजी महाराज की सम्प्रदाय 'बरवाला-सम्प्रदाय' कहलाई। इसका पाटानुक्रम इस प्रकार है:—श्री वनाजी, पुरुषोत्तमजी, बणारसीजी, कानजी महाराज, रामरूपजी, चुन्नीलालजी, उम्मेदचन्दजी, और मोहनलालजी महाराज।

७ श्री इन्द्रजी महाराज कच्छ में विचरे। आपकी परम्परा इस प्रकार चली:—श्री इन्द्रजी, भगवानजी, सोमचन्दजी, करसनजी, देवकरणजी, और डाह्याजी।

श्री डाह्याजी महाराज के दो शिष्य हुए—श्री देवजी महाराज और श्री जसराजजी महाराज। इनकी पृथक सम्प्रदाय चली।

श्री देवजी महाराज की परम्परा 'कच्छ आठ कोटि बड़ी-पक्ष' के नाम से कहलाती है। इस परम्परा में अनुक्रम से:—श्री देवजी, रंगजी, केशवजी, करमचदजी, देवराजजी, मोणशीजी, करमशीजी, वृजपालजी, कानजी, नागजी, और श्री कृष्णजी महाराज हुए। जो इस समय विद्यमान हैं।

(ग) श्री जसराजजी महाराज की परम्परा:—'कच्छ आठ कोटि छोटी-पक्ष' के नाम से कहलाती है। इस सम्प्रदाय की परम्परा इस प्रकार है:—श्री जसराजजी, नथुजी, हंसराजजी, वृजपालजी, डुंगरशी, शामजी और श्री श्री लालजी स्वामी (जो इस समय विद्यमान हैं)

(२) पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के दूसरे शिष्य धन्नाजी महाराज के शिष्य भूदरजी महाराज के तीन शिष्य हुए:—श्री जयमलजी, रघुनाथजी और श्री कुशालाजी म०।

(क) श्री जयमलजी महाराज की पाट परम्परा में:—श्री रामचन्द्रजी, आसकरणजी, सबलदासजी और श्री हीराचन्दजी। यह सम्प्रदाय 'जयमलजी म० की सम्प्रदाय' कहलाती है।

(ख) पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज के समय मे उनके एक शिष्य भीखणजी हुए। इनके द्वारा उत्सूत्र की प्ररूपणा होने के कारण पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज ने सवत् १८१५ के चैत्र वदी ६ शुक्रवार को अपनी सम्प्रदाय से बाहर कर दिया। सवत् १८१७ के आषाढ़ शुक्ला १५ को १३ साधुओं और १३ श्रावकों का सहयोग लेकर दया-दान विरोधी तेरह-पंथ की स्थापना की, जो इस समय भी विद्यमान है।

श्री रघुनाथजी महाराज के पाट पर:—श्री टोडरमलजी, दीपचन्दजी और श्री भैरु दासजी हुए। श्री भैरुदासजी के दो शिष्य हुए—श्री खेतशीजी और चौथमलजी। दोनों की अलग-अलग सम्प्रदायें चलीं।

(क) श्री खेतशीजी म० के पाट पर अनुक्रम से:—श्री भीखणजी, फौजमलजी और श्री संतोकचन्दजी हुए।

(ख) श्री चौथमलजी म० के पाट पर:—श्री सतोकचन्दजी, रामकिशनजी, उदयचन्दजी और शार्दूलसिंहजी महाराज हुए।

(ग) श्री कुशालाजी महाराज के शिष्य—श्री गुमानचन्दजी और रामचन्द्रजी हुए। इनकी भी अलग-अलग सम्प्रदायें चलीं।

श्री गुमानचन्द्रजी म० के पाटानुक्रम में:—श्री दुर्गादासजी, रत्नचन्दजी, कजोड़ीमलजी, विनयचन्दजी, सौभाग्यचन्द्रजी और पू० मुनि श्री हस्तीमलजी महाराज हैं। जो वर्तमानमें श्री वर्ध० श्रमण-संघ में सहमंत्री-पद पर हैं।

श्री रामचन्द्रजी महाराज के पाटानुक्रम में:—श्री चिमनीरामजी, नरोत्तमजी, गंगारामजी, जीवनजी, ज्ञानचन्दजी और श्री समर्थमलजी हुए। यह सम्प्रदाय श्री समर्थमलजी महाराज की सम्प्रदाय कहलाती है।

३. पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के तीसरे शिष्य श्री छोटे पृथ्वीराजजी म० का पाट इस प्रकार है:—श्री दुर्गादासजी, हरिदासजी, गंगारामजी, रामचन्द्रजी, नारायणदासजी, पूरणमलजी, रोड़ीदासजी, नरसीदासजी, एकलिंगदासजी और श्री मोतीलालजी।

४. पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के चौथे शिष्य श्री मनोहरदासजी म० का पाट इस प्रकार चला:—श्री भागचन्दजी, शीलारामजी, रामदयालजी, लूनकरणजी, रामसुखदासजी, ख्यालीरामजी, मंगलसेनजी, मोतीरामजी और पृथ्वीचन्द्रजी।

५ पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के पांचवें शिष्य श्री रामचन्द्रजी की सम्प्रदाय की पट्टावली इस प्रकार है—श्री माणकचन्द्रजी, जीवराजजी, पृथ्वीचन्द्रजी, बड़े अमरचन्द्रजी, केशवजी, मोकमसिंहजी, नन्दलालजी, छोटे अमरचन्दजी, चंपालालजी, माधव मुनिजी और श्री ताराचन्दजी महाराज। (जो आज विद्यमान है।)

महाराष्ट्र-मंत्री श्री किशनलालजी महाराज, श्री नन्दलालजी महाराज के शिष्य हैं। प्र० वक्ता श्री सौभाग्यमलजी महाराज श्री किशनलालजी महाराज के शिष्य हैं।

पूज्य धर्मदासजी महाराज ने अपने बड़े शिष्य समुदाय को व्यवस्थित रखने के लिए सभी शिष्यो और प्रशिष्यों को बुलाकर चैत्र शुक्ला १३ स० १७७२ में उन्हें बाईस-सम्प्रदायों में विभाजित कर दिया। इन बाईस-सम्प्रदायों के नाम इस प्रकार हैं:-(१) पू० श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय (२) श्री धन्नाजी म० की स० (३) श्री लालचंदजी म० की सं० (४) श्री मन्नाजी म० की स० (५) श्री बडे पृथ्वीराज जी म० की सं० (६) श्री छोटे पृथ्वीराज जी महाराज की स० (७) श्री बालचंदजी म० की सं० (८) श्री ताराचंदजी म० की सं० (९) श्री प्रेमचंदजी म० की सं० (१०) श्री खेतशीजी म० की स० (११) श्री पदारथजी म० की सं० (१२) श्री लोकमलजी म० की सं० (१३) श्री भवानीदासजी म० की सं० (१४) श्री मलूकचंदजी म० की सं० (१५) श्री पुरुशोत्तमजी म० की सं० (१६) श्री मुकुटरायजी म० की सं० (१७) श्री मनोहरदासजी म० की सं० (१८) श्री रामचंद्रजी म० की सं० (१९) श्री गुरुसहायजी म० की सं० (२०) श्री वाघजी म० की स० (२१) श्री रामरतनजी म० की सं० तथा (२२) श्री मूलचंदजी म० की सं०।

(५) पूज्य श्री हरजी ऋषिजी म० की परम्परा

श्री केशवजी पक्ष के यतियों की परम्परा में स० १७८५ में पांचवें धर्म-सुधारक हरजी ऋषिजी हुए। उनके पाट पर श्री गोदाजी ऋषि और परशुरामजी महाराज हुए।

श्री परशुरामजी महाराज के शिष्य श्री लोकमलजी और खेतशीजी की अलग-अलग सम्प्रदायें चलीं।

श्री लोकमलजी महाराज के पाट पर:—श्री मयारामजी और दौलतरामजी हुए।

(अ) श्री दौलतरामजी के गोविंदरामजी और लालचंदजी ये दो शिष्य हुए।

श्री गोविंदरामजी की पाट-परम्परा इस प्रकार है:—श्री फतहचंदजी, ज्ञानचन्दजी, छगनलालजी, रोडमलजी, और प्रेमराज जी हुए।

श्री लालचंदजी के पाट पर श्री शिवलालजी, उदयसागरजी और चौथमलजी महाराज हुए।

श्री चौथमलजी महाराज के बाद यह सम्प्रदाय दो भागों मे विभाजित हो गई। पहले विभाग मे पू० श्री श्रीलालजी म०, पू० श्री जवाहरलालजी महाराज और पूज्य श्री गणेशीलालजी म० हैं। (पू० श्री गणेशीलालजी म० वर्तमान में श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ के उपाचार्य-पद पर हैं)

दूसरे विभाग मे पू० श्री मन्नालालजी, नंदलालजी, खूबचदजी और सहस्रमलजी महाराज हैं—जिन्होंने श्रमण-संघ की एकता के लिए आचार्य-पद का त्याग किया और अभी मन्त्री-पद पर हैं।

श्री खेतशीजी का पाटानुक्रम इस प्रकार हैं:- श्री खेमशीजी, फतहचदजी, अनोपचदजी, देवजी महाराज, चम्पालालजी, चुन्नीलालजी, किशनलालजी, बलदेवजी, हरिश्चद्रजी और मांगीलालजी।

भगवान महावीर से लेकर श्री लौंकाशाह तक की परम्परा

स्थानकवासी-धर्म के स्तम्भ-रूप और धार्मिक-क्रांति के पांच प्रणेताओं का इतिहास और इन पांच के शिष्य-समुदाय का परिचय तथा वर्णन हम पिछले पृष्ठों से जान चुके है। अब हम भगवान् महावीर से लौंकाशाह तक की परम्परा बतलाना आवश्यक समझते हैं।

भगवान् महावीर स्वामी के पश्चात् पाटानुक्रमः-(१) श्री सुधर्मास्वामी वीर स० ६ (२) श्री जम्बूस्वामी वीर स० १२ (३) श्री प्रभव स्वामी वी० स० २० (४) श्री स्वयभव स्वामी वीर स० ७५ (५) श्री यशोभद्रस्वामी वीर स० ६६ (६) श्री सभूति विजय वी० स० १४८ (७) श्री भद्रबाहु स्वामी वी० स० १५६ (८) श्री स्थूलिभद्रजी वी० स० १७० (६) श्री आर्य महागिरि वी० स० २१५ (१०) श्री आर्य सुहस्ति अथवा बाहुल स्वामी वी० स० २४५ (११) श्री सायन स्वामी अथवा सुवन स्वामी अथवा सुप्रति बद्ध स्वामी वी० स० २६१ (१२) श्री इन्द्रदिन्न अथवा वीर स्वामी वी० स० ३३६ (१३) श्री सु दिलाचार्य अथवा आर्यदिन्न स्वामी वी० स० ४२१ (१४) श्री वैर स्वामी अथवा जीतधर स्वामी अथवा आर्य समुद्र स्वामी वी० स० ४७६ (१५) श्री वज्रसेन स्वामी अथवा मगु स्वामी वी० स० ५८४ (१६) श्री भद्रगुप्त अथवा आर्य रोह स्वामी अथवा नदला स्वामी वी० स० ६६६ (१७) श्री वयर स्वामी अथवा फाल्गुणी मित्र अथवा नाग हस्त स्वामी (१८) श्री आर्य रक्षित अथवा धरणीधर अथवा रेवत स्वामी (१६) श्री नदिल स्वामी अथवा शिवभूति अथवा सिंहगण स्वामी (२०) श्री आर्य नाग हस्ती अथवा आर्यभद्र अथवा थडलाचार्य (२१) श्री रेवती आचार्य अथवा हेमवत स्वामी अथवा आर्य नक्षत्र स्वामी (२२) श्री नागजिन स्वामी अथवा सिंहाचार्य वी० स० ८२० (२३) श्री गोविन्द स्वामी अथवा सु दिलाचार्य अथवा नागाचार्य अथवा भूत-दिन्न स्वामी (२५) श्री गोविंदाचार्य अथवा श्री छोहगण स्वामी (२५) श्री भूत दिन्नाचार्य अथवा दूसगणी (२७) श्री देवर्द्धिगणि क्षमा-श्रमण।

उपरोक्त सत्ताईस पाटों के नाम अलग-अलग पट्टावलियों मे लगभग एक समान ही नाम पढ़ने मे आते हैं। भले ही उनका क्रम आगे पीछे हो सकता है किन्तु सत्ताईसवें पाट पर श्री देवर्द्धिगणि क्षमा-श्रमण का नाम सब तरह की पट्टावलियों मे पाया जाता है।

पजाब की पट्टावली के अनुसार अट्ठाईसवें पाट से आगे पाटों की परम्परा इस प्रकार है:—

(२८) श्री वीरभद्र स्वामी (२६) श्री शकर भद्र स्वामी (३०) श्री यशोभद्र स्वामी (३१) श्री वीरसेन स्वामी (३२) श्री वीर ग्रामसेन स्वामी (३३) श्री जिनसेन स्वामी (३४) श्री हरिसेन स्वामी (३५ श्री जयसेन स्वामी (३६) श्री जगमाल स्वामी (३७) श्री देवर्षिजी स्वामी (३८) श्री भीमऋषिजी (३६) श्री कर्मजी (४०) राजर्षिजी (४१) श्री देवसेनजी (४२) श्री शक्रसेनजी (४३) श्री लक्ष्मीलालजी (४४) श्री रामर्षिजी (४५) श्री पद्मसूरिजी (४६) श्री हरिसेनजी (४७) श्री कुशलदत्तजी (४८) श्री जीवन ऋषिजी (४६) श्री जयसेनजी (५०) श्री विजय ऋषिजी (५१) श्री देवर्षिजी (५२) श्री सूर-सेनजी (५३) श्री महासूरसेनजी (५४) श्री महासेनजी (५५) श्री जयराजजी (५६ श्री गजसेनजी (५७) श्री मिश्रसेनजी

(५८) श्री विजयसिंहजी (५६) श्री शिवराज ऋषिजी (६०) श्री लालजी (६१) श्री ज्ञान ऋषिजी। श्री ज्ञान ऋषिजी के पास लौंकाशाह के उपदेश से (६२) श्री भानुलुनाजी, भीमजी, जगमालजी तथा हरसेनजी ने दीक्षा ग्रहण की। (६३) श्री पल्जी महाराज और (६४) श्री जीवराजजी।

दरियापुरी सम्प्रदाय की पट्टावली के अनुसार २८ वें पाट से परम्परा इस प्रकार है :—

(२८) श्री आर्य ऋषिजी (२६) श्री धर्माचार्य स्वामी (३०) शिवभूति आचार्य (३१) सोमाचार्य (३२) आर्यभद्र स्वामी (३३) विष्णुचन्द्र स्वामी (३४) धर्मवर्धमानाचार्य स्वामी (३५) भूराचार्य (३६) सुदत्ताचार्य (३७) सुहस्ति आचार्य (३८) वरदत्ताचार्य (३६) सुबुद्धि आचार्य (४०) शिवदत्ताचार्य (४१) वीरदत्ताचार्य (४२) जयदत्ताचार्य (४३) जयदेवाचार्य (४४) जयघोषाचार्य (४५) वीर चक्रधराचार्य (४६) स्वातिसेनाचार्य (४७) श्रीवंताचार्य (४८) श्री सुमति आचार्य (४६) श्री लौंकाशाह जिन्होंने अपने उपदेश से ४५ भव्यात्माओं को दीक्षा दिला कर और स्वयं ने सुमति-विजयजी के पास सं० १५०६ में पाटण में दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा-पर्याय मे आपका नाम श्री लक्ष्मी विजय मुनि था।

इस प्रकार कोई भी पट्टावली किसी भी पट्टावली से नहीं मिलती, किन्तु प्रयत्न और संशोधन किया जाय, तो निश्चित परम्परा और क्रम मिल सकता है। यदि इसके संबंध में विस्तृत और निश्चित रूप से गवेषणात्मक अनुसंधान किया जाय तो इतिहास के लिये वह सामग्री अतीव उपयोगी सिद्ध होगी।

महत्वपूर्ण-इतिहास

वीर सं० २० मे	श्री जंबू स्वामी मोक्ष गये तब दस बोलों का विच्छेद हो गया।
वीर सं० १६४ मे	राजा चन्द्रगुप्त हुए।
वीर सं० १७० के	(आसपास) आर्य सुहस्ति के १२ शिष्यों के ३३ गच्छ हुए।
वीर सं० ४७० में	विक्रम-संवत् शुरु हुआ।
वीर सं० ६०५ में	शालिवाहन का संवत् प्रारम्भ हुआ।
वीर सं० ६०६ में	दिगम्बर और श्वेताम्बर इस प्रकार जैन धर्मावलंबियों के दो विभाग हुए।
वीर सं० ६२० में	चन्द्र-गच्छ की चार शाखायें प्रारम्भ हुईं।
वीर सं० ६७० मे	साचेर में वीर-स्वामी की प्रतिमा स्थापित हुई।
वीर सं० ८८२ में	चैत्यवास प्रारम्भ हुआ।
वीर सं० ६८० में	श्री देवद्धिगणि (देवर्द्धिगणि) क्षमा-श्रमण द्वारा वल्लभीपुर मे सूत्र लिपि बद्ध कराये गये।
वीर सं० ६६३ मे	कालिकाचार्य ने पंचमी के बदले चतुर्थी को सांवत्सरिक-प्रतिक्रमण किया।
वीर सं० १००० मे	समस्त पूर्वों का विच्छेद हो गया।
विक्रम सं० ६६४ में	बड़-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम सं० १०२६ मे	तक्षशिलाका-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम सं० ११३६ में	नवांगी टीकाकार अभयदेव सूरि हुए।
विक्रम सं० ११८४ में	अचल-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम सं० १२२६ में	हेमचन्द्राचार्य हुए।
विक्रम सं० १२०४ मे	मूर्तिपूजक खरतर-गच्छ की स्थापना हुई।
विक्रम सं० १२१३ मे	जगतचन्द्रजी के द्वारा मूर्तिपूजक तपा-गच्छ की स्थापना हुई।

विक्रम सं० ११३६ में पुनमिया-मत स्थापित हुआ।

विक्रम सं० १२५० मे आगमिया-मत स्थापित हुआ।

विक्रम सं० १५३१ में भस्मग्रह उतरा और श्री लौंकाशाह ने शुद्ध-धर्म का पुनरुद्धार किया। साधुओं में आई हुई शिथिलता दूर की गई।

विक्रम सं० १८१७ में आषाढ़-शुक्ला १५ को दया-दान विरोधी तेरह-पंथ प्रारम्भ हुआ।

विक्रम सं० १९६१ में श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की गई। (ई० सन् १९०६)

विक्रम सं० १९८९ में श्री स्थानकवासी साधु-समाज का प्रथम साधु-सम्मेलन अजमेर में हुआ और इस सम्मेलन की प्रथम बैठक चैत्र शुक्ला १० बुधवार के दिन हुई।

विक्रम सं० २००९ मे स्थानक-वासी समाज के बाईस-सम्प्रदायों के मुनिवरों का सम्मेलन वैशाख शु० ३ को सादड़ी (मारवाड़) में प्रारम्भ हुआ और वैशाख शु० ९ को बाईस-सम्प्रदायों का एक "श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ" बना और जैन-धर्म दिवाकर पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज को आचार्य के रूप में स्वीकृत किया गया।

नोटः—कृपया पाठक निम्न पृष्ठों पर सुधार कर पढ़ें।

१. पृष्ठ ३३ पंक्ति ८ पर—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तया तृष्णा-निवृत्ति आदि मे महावीर के समान बुद्ध की दृष्टि भी अत्यन्त गहन थी—इसके स्थान पर—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, तृष्णा-निवृत्ति आदि के लिये बुद्ध उपदेश देते थे। किन्तु उनकी दृष्टि भ० महावीर के समान गहन नहीं थी—ऐसा पढ़ें।

२. पृष्ठ ३३ पक्ति ८ पर—ता० १३ मार्च—के साथ सन् १४९० और जोड़ कर पढ़े।

३. पृष्ठ ४० पंक्ति २३ में—ता० ११—४—१४७ के बदले सन् १४७३ पढ़ें।

४. पृष्ठ ३५ पक्ति १७ पर—१० पूर्व का विच्छेद के बदले ४ पूर्व का विच्छेद हो गया ऐसा पढ़ें।

५. पृष्ठ ३५ पक्ति २० पर—वीर स० १५६ के बदले १४६ या १५० पढ़ें।

तृतीय-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स का संक्षिप्त-इतिहास

श्री० श्वे० स्था० जैन कान्फरन्स की स्थापना

हिन्दुस्तान मे जब राजकीय और सामाजिक सस्थाओं की स्थापना कर विविध संगठन स्थापित किये जा रहे थे, तब जैन-समाज के मुख्य-मुख्य फिर्कों मे भी इस तरह की प्रवृत्तियां शुरु हुई और उन्होंने भी अपने अपने संगठन कायम किये। श्वेताम्बर जैनों ने मिलकर श्वेताम्बर जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की और दिगम्बरों ने अपनी दिगम्बर जैन-महासभा की। ईस्वी सन् १९०० के आसपास इन सगठनों की शुरुआत हुई। स्थानकवासी जैन समाज के अग्रगण्य सज्जनों ने भी अपना सगठन करने का निवेदन किया और सन् १९०६ में मोरवी (काठियावाड़) में कुछ भाइयों ने मिल कर अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना की। कॉन्फरन्स की स्थापना मे मोरवी के प्रतिष्ठित शेठ श्री अम्बावीदासजी डोसाणी और धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी का मुख्य भाग रहा और उन्हीं की प्रेरणा से कॉन्फरन्स का प्रथम अधिवेशन मोरवी मे हुआ।

प्रथम-अधिवेशन, स्थान-मोरवी

कॉन्फरन्स का प्रथम अधिवेशन सन् १९०६ में ता० २६, २७, २८, फरवरी को मोरवी में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता राय सेठ चांदमलजी अजमेर वालों ने की थी। मोरवी में यह कॉन्फरन्स का सर्व प्रथम अधिवेशन होने पर भी समाज मे उत्साह की लहर फैल गई और स्थान-स्थान से समाज-प्रिय सज्जनों ने उपस्थित होकर इसमें सक्रिय-भाग लिया। इस अधिवेशन में कुल १४ प्रस्ताव पास किये गये थे–जिनमें से उल्लेखनीय प्रस्ताव निम्न हैं :–

प्रस्ताव १–मोरवी के महाराजा सा० सर वाघजी बहादुर जी० सी० आई० ई० ने कॉन्फरन्स का पेट्रन-पद स्वीकार किया एतदर्थ उनका आभार माना गया।

इससे स्पष्ट है कि कॉन्फरन्स के प्रति मोरवी-नरेश की पूर्ण सहानुभूति थी और मोरवी-स्टेट में स्थानकवासी जनों का कितना प्रभुत्व था!

प्रस्ताव २–दूसरी विशेषता इस अधिवेशन की यह थी कि–इस अधिवेशन का सारा खर्च मोरवी निवासी सेठ श्री अम्बावीदास भाई डोसाणी ने दिया था अतः दूसरे प्रस्ताव में उनका आभार माना गया।

प्रस्ताव ३-जिन-जिन स्थानों पर जैन शाला हों, उन्हें भली-भाँति चलाने की, जहां न हों वहां स्थापित करने की तथा उनके लिये एक व्यवस्थित पाठ्य-क्रम (जैन-पाठावली) तैयार करने की एवं साधु-साध्वियों के लिये सिद्धान्त-शाला-की सुविधा कर देने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है।
प्रस्ताव ४-में हुनर, उद्योग तथा शिक्षा पर भार दिया गया।
प्रस्ताव ५-यह कॉन्फरन्स अपने विविध-फिर्कों के भाइयों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने की भारपूर्वक विनती करती है।
प्रस्ताव ९-स्थानकवासी जैन जाति की डिरेक्टरी तैयार करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है।
प्रस्ताव १०-बाल, वृद्ध विवाह तथा कन्या-विक्रय करने का निषेध किया गया। मृत्यु-भोज मे पैसे का खर्च न कर—वह रुपया शिक्षा प्रसार में खर्च करने की भलामण की गई।
प्रस्ताव १२-मुनिराजों के सबध मे था। उसमे सरकार से प्रार्थना की गई थी कि जैन मुनिराजों को बिना टैक्स लिये ही पुल के ऊपर से जाने दिया जाय।"

(नोटः—प्रथम मोरवी-अधिवेशन की मेनेजिंग कमेटी तथा प्रान्तिक-सेक्रेट्रियों की नामावली कॉन्फरन्स के इतिहास के अन्त मे दी जा रही है।)

द्वितीय-अधिवेशन, स्थान रतलाम

मोरवी-अधिवेशन के दो वर्ष बाद सन् १६०८ मे ता० २७, २८, २६ मार्च को रतलाम मे कॉन्फरन्स का दूसरा अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता अहमदाबाद निवासी सेठ केवलदास त्रिभुवनदास ने की थी।

इस अधिवेशन में रतलाम और मोरवी के महाराजा सा० तथा शिवगढ़ के ठाकुर सा० भी पधारे थे। प्रारभ मे कॉन्फरन्स के प्रति राजा-महाराजा की भी पूर्ण सहानुभूति थी तथा स्था० जैन-सघों की भी राज्यों मे अच्छी प्रतिष्ठा थी। जिससे राजा, महाराजा भी समय २ पर उपस्थित होकर कार्यवाही में सक्रिय-भाग लिया करते थे—यह उपरोक्त दोनों अधिवेशनों की कार्यवाही से स्पष्ट है। इस अधिवेशन में रतलाम के महाराजाधिराज सज्जनसिंहजी बहादुर ने कॉन्फरन्स का पेट्रन पद स्वीकार किया अत उन्हें धन्यवाद दिया गया। प्रस्ताव न. ३ और न० ४ में मोरवी नरेश तथा शिवगढ़ ठाकुर साहब का आभार माना गया, जिन्होंने इस अधिवेशन मे पधारने का कष्ट किया। अन्य प्रस्तावों मे से मुख्य २ प्रस्ताव ये हैं —

गत अधिवेशन की तरह जैनियों के सभी फिर्कों मे मेल जोल बढ़ाना, परस्पर निदात्मक-लेख नहीं लिखना, जीवदया के प्रचार में सहयोगी होना, धार्मिक-शिक्षण तथा धार्मिक पाठ्य क्रम आदि के लिये प्रस्ताव पास किये गये।
प्रस्ताव ६-में गत वर्ष कॉन्फरन्स में जो फड हुआ और दाताओं ने अपनी इच्छानुसार जिन २ खातों मे रकम प्रदान की, वह रकम उन २ खातों में ही व्यय करने का तय किया गया।
प्रस्ताव १२-हर एक प्रान्त के स्था० जैन भाई अपने २ प्रान्तों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये तथा कॉन्फरन्स के ध्येयों का प्रचार करने के लिये अपने २ प्रान्तों मे प्रान्तीय-कॉन्फरन्स भराने का प्रयत्न करें।
प्रस्ताव १३-आगामी एक वर्ष के लिये कॉन्फरन्स का हैड-ऑफिस अजमेर में रखने का निर्णय किया गया।
प्रस्ताव १४-कॉन्फरन्स के जनरल सेक्रेट्री के स्थान पर निम्नोक्त सज्जनों की नियुक्ति की गई :—

(१) राय सेठ चांदमलजी, अजमेर (२) शेठ केवलदास त्रिभुवनदास, अहमदाबाद (३) सेठ अमरचदजी पितलिया, रतलाम (४) श्री गोकलदासजी राजपाल, मोरवी (५) लाला गोकलचदजी जौहरी, देहली।

प्रस्ताव १९–प्रत्येक जगह के संघ अपने यहां हर एक घर से प्रति वर्ष चार आना वसूल करें और उस रकम की व्यवस्था कॉन्फरन्स इस प्रकार करे:—

३/४ आना हिस्सा	धार्मिक-शिक्षा में	१ आना हिस्सा	स्वधर्मी सहायता में
३/४ „ „	व्यवहारिक-ज्ञान मे	३/४ „ „	जीव-दया में
३/४ „ „	कॉन्फरन्स-निभाव मे		

उक्त प्रस्ताव का अमल हर एक प्रतिनिधि तथा विजीटर अपने २ सघ में करायेंगे ऐसी कॉन्फरन्स आशा रखती है।

अन्य प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे-जिनमें श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी को दो वर्ष तक कॉन्फरन्स की निस्वार्थ सेवा करने के लिये, श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह का अखबारी प्रचार करने के लिये तथा स्वयसेवकों का आभार माना गया था। इस अधिवेशन मे कुल २० प्रस्ताव पास हुए।

तृतीय–अधिवेशन, स्थान–अजमेर

कॉन्फरन्स का तीसरा अधिवेशन सन् १९०९ में ता० १०, ११, १२ को अजमेर मे हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रीमान् सेठ बालमुकन्दजी मूथा अहमदनगर वालों ने की थी।

इस अधिवेशन में मोरवी-नरेश सर वाघजी बहादुर और लीम्बड़ी के ठाकुर सा० श्री दौलतसिंहजी पधारे थे अतः उनके प्रति धन्यवाद प्रदर्शित किया गया। बड़ौदा-नरेश सर सियाजीराव गायकवाड पधार न सके थे, परन्तु उन्होंने अधिवेशन की सफलता के लिये अपनी शुभ-कामना का मार्ग-दर्शक पत्र भेजा था. अतः उनके प्रति भी आभार प्रदशिदत किया गया। उक्त मार्ग-दर्शक पत्र नीचे दिया जा रहा है :—

H. H. THE GAEKWAD'S LETTER.

Laxmi Vilas Palace,
Baroda 7th March 1909.

Dear Seth Chandmal,

The desirability of such conferences

It was with very great pleasure that I received the deputation from your Sangh led by your son, inviting me to attend the Third Swetamber Sthanakwasi Conference that meets in your City, in the middle of March Had it not been for the pressure of important work I should have very gladly availed myself of this opportunity to join you in your deliberation and once more testify to my personal interest in the reform movement that your conference is carrying on I recall with pleasure the Third Swetamber Conference that assembled in Baroda in the year 1904, and I followed with interest the proceedings of its next sessions in my state at Pattan, the succeding year.

The ideal to be striven for

2 Conferences such as yours are capable of doing much good provided they do not become completely sectarian and re-aetionary The aim of all such conferences should be the removal of social evils that are special to the sect or community holding them, and the preparation of such community for the greater unification of the nation. Having this ideal in mind, I could even wish that there should be more conferences of a similar nature in India—Conferences that devote time and energy for the up-lifting of the illiterate, caste—ridden, and unenterprising masses from their depressed condition.

Necessity of Social Reform

3. I have gone through the proceedings of your first two conferences, and I am glade to observe that in the short yet comprehensive programme you have very rightly given prominence to social reform and education Some of the present customs, such as early marriage, kanya vikraya, polygamy, are a great descredit to any society They could easily be abolished or modified by the abolishment of sub-castes, the existence of which, I learn, is against the principles and spirit of Jainism. The mere passing of resolutions will not achieve much It is for every intelligent man among you to set his face sternly against the continuance practices in his own private and family relationship

The root—evil of Caste

4 But the root evil is the system of caste Caste in its present form has done more evil than good It has limited the horizo in life of all who were bound by it. It has prohibited that free intercourse among other communities which is the soundest mode of education It has a most disintegrating effect upon national spirit and unity It has obscured national ideals and interests It may have some good points, but in its present development it has proved a great enemy to reform and the conservor of ignorant superstition Your community has not the sanction (so called) of the Shastras to justify the existence of caste The history of caste among Jains show that for centuries you struggled against Its introduction and it was very recently that intercourse with other sects or communities was prohibited For centuries you admitted among your brotherhood—for yours was a brotherhood with a common belief—people of different castes and professions, and had full intercourse with them after admission in spite of differences in social status and mode of life Not many generations ago, Jains of all castes used to interdine and intermarry with the people of the corresponding castes among Hindus, and it is a pity that the tendency is to discourage such intercourse During the last century castes have multiplied by scores, but there is scarcely a single instance where the contrary process has been observed Therefore further disintegration must be stopped and the unification of the existing divisions ought to be commenced. Caste is essentially an *artificial* distinction between man and man There are so many natural differences between men, in the way of physical, moral and intellectual endowment, that there is really no necessity for us to set up unnatural differences, to further draw them apart. The experience and example of other peoples ought to convince us that men may be trusted to find their natural level in society,

without any effort on the part of those in authority to establish artificial barriers, which only serve to choke and dam the great stream of progress *Just as you revolted against the orthodox belief in idolatry*, you can also set aside the unmeaning distinctions of caste, at least so far as your sect is concerned. If that be done I do not conceive of any stronger evidence to justify the existance of your conference Besides doing a great service to your community you can set a practical example for other sects to follow

But it must be borne in mind that mere breaking of castes is not necessarily an end in itself The narrow caste ideal must be replaced by a broader ontlook and wider sympathy for national welfare. Just as you are zealous of your caste observances, you should with a like tenacity strive to encourage national unity. The ultimate goal is the welfare of the conntry.

Education.

5 Most of the injurious social customs you will find upon close scrutiny, are the outcome of ignorance of moral, social and physical laws

Diffuse knowledge of those laws among the people, and I am sure these pernicious growths upon the social organism will automatically disappear You shall not then have to pass empty resolutions to unheeding and careless audiences You must therefore strain every effort for the enlightenment of the masses. Education is the surest panacea of social evils in India.

Village Schools

6 It is gratifying to note in the resolutions of the last conference that you have recognised the responsibility of every local Sangha to provide proper facilities for the Education of the children of your community in their town or village By means of a strong and sympathetic supervising staff you can see how far this duty is properly discharged In this respect you should always try to be self—reliant and independent of external help You must be prepared to have your own schools if necessary and impart therein instructions best suited to your requirements.

Illiteracy

7 I dare say you have studied the last census statistics Do they not reveal a very sad and depressing situation for a practical and business community such as yours? Among the Jains of all India only 48% of the males are literate and in the Bombay Presidency 52%. Of your ladies only 1·8 P.C are "literate" in all India, and 2% in the Bombay Presidency. No country can claim a high place in civilization when 50% of males and 98 P C of females remain uneducated and illiterate Here is a vast field for your energies to work and achieve some substantial results

Scholarship Funds.

8 In this connection you can organize funds for scholarships for higher education, especially for the advanced study of commerce and some of the applied Sciences. You are a

business community and it is quite proper that your sons should have training in these subjects. This will do a material good to your people.

Historical research

9 But I am sorry to miss in your programme any provision for research work in your history and Sacred books The history and tenents of your creed are hardly known to non Jains beyond the narrow circle of a few oriental scholars. It was believed for centuries by all outsiders that Jainism was an offshoot of Buddhism and its study was neglected no account of this belief And who dispelled this misunderstanding? Not the members of your community A German scholar was required to announce to the world that Jainism was independent of Buddhism and was able to prove that your 23rd Tirthankara was not a mythological personage and that he lived as early as 700 B C. I do not hereby means to say that there are not learned men among you I know full well that there are a good many who are well-versed in all the details of your abstruse philosophy and subtle intricacies of logic The age of blind belief is gone and the world is not going to believe in anything on mere authority, however old it may be You shall have to establish by the concrete evidence of Science and sound reasoning that your religion antedates the Vedas, if it is to be accepted by the world of scholar-ship

The Sacred books

10 In the first place you must find out where and what your Scriptures are Most of them are buried in the archives of Pattan and Jasalmere. For centuries they have remained uncared for—the food for moth and worm I fear some of them have already perished It will be advantageous in the interest of your religion and its preservation to have a central collection, if the custodians are inclined to be liberal and part with them for a noble purpose They may be edited, translated and printed Perhaps your Sadhus with the aid of some Shastries may do this You might start a few research scholarships for young men of your religion, who could be sent to Germany to be trained under Oriental Scholars in research work and higher studies, and on their return entrusted with some particular line of work

History yet to be written.

11. The history of your religion has yet to be written—when and how it originated, how it developed, the schism between Swetambaras and Digambaras, its spread in Southern India, its influence at Court, causes of its decline. At present, there is no one book where all the principles of your religion could be had in a readable form You can have such a comprehensive work prepared in English as well as in Vernaculars, for the information of outsiders You can have special subjects investigated, such as origin and development of caste among Jains, effects of Hinduism upon your religion and the habits and customs of your people, effects of Jain religion upon Brahmanism and other sects, the differences among the various sects of Jainism, their origin and effect upon the community in general I am sure the result of these investigations would be to your advantage You will be in a position to place before orthodox and conservative members of your sect an authoritative statement to guide them in

future This will make your reform movements easier and will remove the misunderstanding and ignorance that pervade our people.

Emphasis on the national ideal.

12 As I said in the beginning, in all your attempts at reform and progress do not for a moment miss the national ideal. Always remember that you form a part of that larger society which must be moulded into the Indian nation India has suffered much from disunion and apathy Unity must be your watch-word within and outside your religion

All India Jain Conference

13 I know an attempt was made to hold a combined conference of all sects of your religion, instead of holding separate ones. If you have once failed in the attempt you can renew it and I am sure, some day, with better counsel prevailing, you will succeed It seems the younger generation is willing to join and they have made a start by holding an All India Jain Conference at Surat The ball has been set rolling and you can accelerate its motion by your help There is no inherent difficulty in the matter All the sects have identical programmes as I find upon comparison of the resolutions of all the three Conferences

Regard for humanity

14. Before I conclude there are one or two other matters on which, with your indulgence I may be permitted to say a few words. You know that all religions are apt to go to extremes in some particular In your care for animal and lower life you are not to forget the welfare of your fellow mortals I know that you are alive to the necessity of rendering all possible help to your backward and poor co-religionists, but you will realise that the larger circle of humanity has better claim for sympathy and help than the lower life. Every act of mercy to the animal world is a good deed, but such good deeds are intensified in equality when done to the poor and the out-caste among human beings

15. There are so many urgent problems to be solved in the realm of social reform that our first attention and most earnest care should be given to them There is evil of infant marriage which is the cause of puny and defective off-spring and the source of much unnecessary physical suffering. The rate of mortality among infants in this country is shamefully high, and a determined effort must be made to stamp out this evil by training up nurses and midwives, and by inculcating the need of more sanitary habits, of better food, better houses and better clothing And then there are the problems of enforced widowhood, which is the source, I fear in many cases of much misery The so-called "*Social-evil*" may not be as acute in this country as in the Western Society, yet it is a problem which all thinking men cannot afford to ignore. I shall not attempt to set forth a panacea for this evil, but merely suggest the problem to you as one that should not escape the attention of any Society that wishes to raise itself and maintain a proud and distinguished position among the nations of the world, which it cannot do unless it is prepared to cope courageously with the evils of life

Free expression of opinion.

16. On several occasions I have observed that free discussion is not permitted in some of the Conferences. Only approved speakers are allowed to deliver set speeches. On this account it is very seldom that divergent views are placed before the audience Perhaps you think that free discussion is not convenient in large assemblies but at least in the Committee on resolutions there should be the freest opportunity for the discussion of all points of view, radical, moderate or conservative If this is inconvenient you may have fewer subjects taken up But no radical view should be crushed And in particular no attempt should be made to coerce the opinions of the younger and more progressive element in your Conference.

Free discussion of ideas

17 I attach great importance to free discussion and ventilation of thought. Thought is a measure of progress of a community In India where even people's minds move in one groove and are hide-bound by usage and custom, it is highly desirable that more than usual facility should be given for the expression of new ideas. And if, under your present organization you can not permit more time for discussion, I would suggest that different speeches should be written, taken as read, and published for the good of all. Another alternative would be that people should be encouraged to write essays on different social topics, to be published under the authority of the Conference, and with its criticisms. Let reason be your guide rather than your mere authority

Conclusion.

18 In conclusion I want to thank you for the kind invitation to attend your Conference, which I should be glad to do were it not for the pressure of other engagements You will pardon me for the few remarks I have made in this letter if they appear too candid When I am called to attend your Conference, which has my hearty sympathy, I feel that I must speak out the truth as I see it, even though it may be somewhat unpalatable, my regard is for the welfare of India, and when that is concerned there should be no compromise of views

Wishing the Conference every success

I am,

Yours sincerely,

(Sd) SAYAJI RAO GAEKWAR.

इस अधिवेशन में शिक्षा-प्रसार तथा बेकारी निवारण आदि २ प्रस्ताव पास किये गये जिनमें से मुख्य २ इस प्रकार हैं:—

प्रस्ताव ६—(धार्मिक शिक्षा बढ़ाने के विषय में) हिन्दुस्तान में कई स्थानों पर अपने संघों की तरफ से जैन पाठशालाएँ चल रही हैं जिन्हें देख कर कॉन्फरन्स को बड़े सन्तोष का अनुभव होता है। जहां ऐसी धार्मिक संस्थाएं नहीं हैं वहाँ के अग्रगण्य सज्जनों से कॉन्फरन्स विनती करती है कि वे भी अपने यहां ऐसी संस्थाएँ शुरू करें।

जैन तत्त्वज्ञान तथा साहित्य के प्रचार के लिये और प्राचीन इतिहास-संशोधन के लिये जैन ट्रेनिंग कॉलेज, रतलाम में खोलने का जो पिछली मेनेजिंग कमेटी में प्रस्ताव पास किया गया था और उसके लिये १००) रु० मासिक की स्वीकृति दी गई थी, उसके बजाय अब २५०) रु० मासिक की स्वीकृति दी जाती है। यह रुपया धार्मिक फंड में से दिया जाएगा।

इस कार्य के लिए सेठ श्री अमरचन्दजी सा० पित्तलिया रतलाम, लाला गोकुलचंदजी नाहर दिल्ली तथा श्री सुजानमलजी बाठिया पिपलोदा निवासी की जनरल-सेक्रेटरी के रूप में नियुक्ति की जाती है। ये जैसा उचित समझें योग्य मेम्बरों का सलाहकार बोर्ड और कार्यकारिणी-समिति का चुनाव कर सकेंगे।

प्रस्ताव ७—(व्यवहारिक-शिक्षा बढ़ाने के विषय में)

उच्च शिक्षा के लिये बम्बई में एक बोर्डिंग-हाउस खोलने का प्रस्ताव रख कर उसके लिये मासिक १००) रु० की सहायता देने का जो प्रस्ताव पिछली मेनेजिंग कमेटी ने पास किया था, परन्तु इतनी सी रकम में निर्वाह होना कठिन होने से २५०) रु० मासिक सहायता व्यवहारिक-फंड में से देने की स्वीकृति दी जाती है।

(क) बोर्डिंग-हाउस में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को धार्मिक-शिक्षा अवश्य लेनी पड़ेगी। अध्यापकों का वेतन चार आना फंड के अन्तर्गत ३/४ आना हिस्सा व्यवहारिक शिक्षण-फंड में से देने का पिछली मेनेजिंग कमेटी में पास किया गया था, परन्तु अब वेतन उपरोक्त सहायता में से ही देने का तय किया जाता है।

(ख) इस बोर्डिंग के सेक्रेटरी के रूप में श्री गोकुलदास राजपाल मोरबी, वकील पुरुषोत्तम मावजी राजकोट, सेठ जेसंग भाई उजमसी अहमदाबाद तथा सेठ मेघजी भाई थोभण, बम्बई की नियुक्ति की जाती हैं। ये जैसा भी उपयुक्त समझें उतने मैम्बरों की सलाहकार-समिति और कार्यवाहक-कमेटी बनालें।

प्रस्ताव ६—गत वर्ष जो मेनेजिंग-कमेटी बनाई गई थी, उसे निम्नोक्त अधिक सत्ताएं दी गईं :—

(अ) प्रति वर्ष कॉनफरन्स कहां और कैसे करना ? उसकी व्यवस्था तथा प्रमुख चुनने का अधिकार। जो संघ अपने खर्च से कॉन्फरन्स भराएगा, उसे प्रमुख की नियुक्ति का अधिकार वहां की स्वागत-समिति को रहेगा, परन्तु कॉनफरन्स की जनरल-कमेटी की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक होगा।

(ब) चार आना फंड की व्यवस्था, चौथी कॉन्फरन्स हो वहां तक करने की सत्ता दी जाती है।

(क) कॉनफरन्स का हैड-ऑफिस कहां रखना और उसकी व्यवस्था कैसे करनी ?

प्रस्ताव १०—(विरोध मिटाने के लिये) कॉन्फरन्स-फंड की वसूली में यदि कोई विरोधी प्रयत्न करेगा तो कॉन्फरन्स उसके लिये योग्य विचार करेगी।

प्रस्ताव ११—(श्रमण-संघ को सुसंगठित करने के विषय में)

जिन २ मुनि-महाराजों की सम्प्रदाय में आचार्य नहीं हैं उन २ सम्प्रदायों में आचार्यों की नियुक्ति कर दो वर्ष में गच्छ की मर्यादा बांध देनी चाहिए—ऐसी सभी मुनिराजों से नम्र प्रार्थना की गई।

प्रस्ताव १२—(स्वधर्मी भाइयों का नैतिक-जीवन-स्तर उच्च बनाने के लिये)

प्रत्येक शहर या गांव के अग्रेसरों को कॉन्फरन्स ने यह सलाह दी कि अपने यहां किसी स्वधर्मी भाई मे यदि नैतिक-व्यवहार से विरुद्ध कोई बड़े दोष प्रतीत हों तो उसे योग्य शिक्षा दें जिससे दूसरों को भी शिक्षा मिले।

प्रस्ताव १६—गत वर्ष जो जनरल-सेक्रेट्री नियुक्त किये गये हैं इन्हें ही चतुर्थ-अधिवेशन तक चालू रखे जायें। श्रीमान् सेठ बालमुकन्दजी मूथा, सतारा को भी जनरल-सेक्रेट्री के रूप मे चुना जाता है।

प्रस्ताव १७—बी० बी० एंड सी० आई० रेलवे, आर० एस० रेलवे, नार्थ वेस्टर्न रेलवे, साउथ रोहिल-खंड रेलवे, बी० जी० रेलवे, शहादरा-सहारनपुर रेलवे आदि ने कॉन्फरन्स मे आने वाले सज्जनों को कन्सेशन देने की जो सुविधा दी अतः उनका तथा बम्बई-समाचार, सांज-वर्तमान एवं जैन-समाचार आदि पत्रों ने अपने रिपोर्टर भेजे अतः उनका भी आभार माना गया।

प्रस्ताव १८—इस अधिवेशन के कार्य मे अजमेर के स्वयंसेवकों ने जिस उत्साह से भाग लेकर सेवा की है उसके लिये उनका आभार माना गया और अध्यक्ष श्री बालमुकन्दजी मूथा की तरफ से उनको रजत-पदक भेंट देने का निश्चय घोषित किया गया।

प्रस्ताव १९—अजमेर कॉन्फरन्स के कार्य को सफलता पूर्वक सपन्न कराने मे अजमेर-संघ का और मुख्यतः दी० बहादुर सेठ श्री उम्मेदमलजी तथा राय सेठ श्री चांदमलजी का अंतःकरण से आभार माना गया। राय सेठ श्री चांदमलजी ने कॉन्फरन्स का सम्पूर्ण खर्च तथा हेड-ऑफिस का कार्यभार अपने सिर पर लेकर जो महान सेवा की है उसके लिये उन्हें मान-पत्र देने का तय किया गया। इस अधिवेशन में मुख्य २२ प्रस्ताव पास हुए।

चतुर्थ-अधिवेशन, स्थान-जालंधर (पंजाब)

कॉन्फरन्स का चतुर्थ-अधिवेशन मार्च सन् १९१० मे ता० २७, २८, २९ को दी० बहादुर सेठ श्री उम्मेदमलजी लोढ़ा की अध्यक्षता मे जालधर (पजाब) मे सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन मे कुल २७ प्रस्ताव पास हुए। जिनमें से मुख्य ९ प्रस्ताव ये हैं—

प्रस्ताव ३—(सरकारों मे जैन-त्यौहारों की छुट्टियों के विषय में)

बम्बई सरकार ने कुछ जैन त्यौहारों की छुट्टियाँ स्वीकार करली हैं अतः कॉन्फरन्स उसका हार्दिक आभार मानती है तथा अन्य प्रान्तों की सरकारों से व भारत सरकार से भी अनुरोध करती है कि वह भी जैन त्यौहारों की छुट्टियाँ स्वीकार कर आभारी करे।

प्रस्ताव ६—(अधिवेशनों मे फीस मुकर्रर करने के विषय मे)

कॉन्फरन्स-अधिवेशन मे भविष्य के लिये प्रतिनिधियों का शुल्क ४) रु० दर्शकों का ३) रु० बालकों का १॥) रु० (१२ वर्ष से छोटे) तथा स्त्रियों का २) रु० तय किया गया।

प्रस्ताव ७—(हिन्दी भाषा की प्रमुखता के लिये) भविष्य मे कॉन्फरन्स की कार्यवाही हिन्दी-भाषा और हिन्दी-लिपि में ही रखी जावे।

प्रस्ताव १०—(जीवदया के विषय में)

कई प्रसगों पर जीवित जानवरों का भोग दिया जाता है। इसी तरह पशुओं का मांस तथा उनके अवयवों से बनी हुई वस्तुओं का प्रचार बढ़ जाने से बहुत हिंसा होती है। उसको अटकाने के लिये उपदेशकों द्वारा, लेखकों द्वारा प्रचार, तथा साहित्य द्वारा योग्य-प्रचार कराने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है।

(ब) छोटे बड़े जानवरों के लिये पांजरापोल खोलने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और जहां ऐसी संस्थायें हैं उनके कार्य को बढ़ाने की सूचना करती है।

(स) जीव-हिंसा बंद करने वाले और जीवदया के काम में प्रोत्साहन देने वाले राजा-महाराजा तथा अहिंसा के प्रचारकों को यह कॉन्फरन्स धन्यवाद देती है।

प्रस्ताव १२–(स्वधर्मियों की सहायता के विषय में)

हमारी समाज के अशक्त, निरुद्यमी और गरीब जैन बन्धुओं, विधवा-बहिनों और निराश्रित-बालकों की दुखी अवस्था दूर करने के लिये उन्हें औद्योगिक-कार्यों में लगाने तथा अन्य तरह से सहायता पहुँचाने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और श्रीमन्त-भाइयों का ध्यान इस ओर केन्द्रित करने का आग्रह करती है।

प्रस्ताव १३–(रात्रि-भोजन बंद करने के विषय में)

हमारी समाज में कई स्थानों पर तो जातीय रात्रि-भोजन बद ही हैं पर जहां बंद न हों वहां के श्री-संघ से कॉन्फरन्स अनुरोध करती है कि वे भी अपने यहां रात्रि-भोजन बंद करदें।

प्रस्ताव १४–(साधु-साध्वियों को टॉल-टैक्स से मुक्त कराने के विषय में)

पजाब-प्रान्त में जहां २ रेलवे पुलों पर चलने का 'टॉल-टैक्स' लगता है वहां जैन साधु-साध्वियों से ऐसे टैक्स की मांग न की जाय। इस सम्बन्ध में जैसे अन्य रेलवे-कम्पनियों ने टैक्स माफ किये हैं वैसे ही पंजाब की एन० डब्ल्यू० आर० से भी अनुरोध करने के लिये एक डेप्युटेशन भेजा जावे। रेलों के पुल पर से गुजरने की स्वीकृति के लिये पंजाब-सरकार को दरख्वास्त भेजी जावे।

प्रस्ताव १६–कॉन्फरन्स का अधिवेशन आयदा से दिसम्बर माह में भरा जावे।

प्रस्ताव १७–(कॉन्फरन्स के प्रचार के विषय में)

कॉन्फरन्स को सुदृढ़ बनाने के लिये तथा उसके प्रस्तावों का अमल कराने के लिये कॉन्फरन्स के अग्र-गण्य-सज्जनों की एक कमेटी बनाई जाय और वह इसके लिये प्रवास करे। सुयोग्य-उपदेशकों द्वारा भी प्रचार कराया जाय।

प्रस्ताव १९–इस कॉन्फरन्स का पांचवा-अधिवेशन हो वहां तक निम्नोक्त सज्जनों को जनरल-सेक्रेट्री के पद पर नियुक्त किये जाते हैं:—

राय सेठ चांदमलजी रियांवाले अजमेर, दी० बहादुर सेठ उम्मेदमलजी लोढा अजमेर, सेठ बालमुकन्दजी मूथा सतारा, सेठ अमरचन्दजी पित्तलिया रतलाम, लाला गोकलचन्दजी नाहर जौहरी दिल्ली, श्री गोकलदास राजपाल महेता मोरवी तथा दीवान ब० विशनदासजी जैन जम्मु (काश्मीर)

इस कॉन्फरन्स में भी मोरवी-नरेश सर वाघजी बहादुर अपने युवराज श्री लखधीरजी के साथ पधारे थे। चूडा के ठाकुर सा० श्री जोरावरसिंहजी भी पधारे थे अतः इन दोनों का आभार माना गया।

कपूरथला के महाराजा सा० की तरफ से भी कॉन्फरन्स को सहायता प्राप्त हुई थी। रेलवे-कम्पनियों ने अधिवेशन में आने वाले सज्जनों को कन्सेशन दिया एतदर्थ इनका तथा पंजाब-संघ-स्वयं-सेवकों का भी आभार माना गया। स्वयं-सेवकों को प्रमुख सा० तथा दी० ब० सेठ उम्मेदमलजी सा० की तरफ से रजत-पदक देने की घोषणा की गई।

पंचम-अधिवेशन, स्थान-सिकन्द्राबाद

कॉन्फरन्स का पांचवा अधिवेशन सन् १९१२ मे ता० १२, १३, १४ अप्रैल को सिकन्द्राबाद में जलगांव निवासी सेठ लछमनदासजी मुलतानमलजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव तथा निर्णय किये गये। सभी मिला कर २१ प्रस्ताव पास हुए जिनमें से मुख्य २ निम्न हैं :—

प्रस्ताव ४ (अ)—(शास्त्रोद्धार के विषय में) जैन-शास्त्रों के सशोधन और प्रकाशन के लिये यह कॉन्फरन्स प्रयास करेगी।

शास्त्रोद्धार के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी नियुक्त की जाती है :—

श्रीमन् रा० ब० ला० सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदराबाद, श्रीमान् शास्त्रज्ञ बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्रीमान् अमरचन्दजी पित्तलिया रतलाम, श्रीमान् केसरीचन्दजी भंडारी इन्दौर, श्रीमान् दामोदर भाई जगजीवन भाई दामनगर, श्रीमान् पोपटलाल केवलचन्द शाह राजकोट, डा० जीवराज घेलाभाई अहमदाबाद, डॉ० नागरदास मूलजी ध्रुव वढवाण-कैम्प, श्रीमान् हजारीमलजी बांठिया भीनासर तथा श्रीमान् मुलतानमलजी मेघराजजी ब्यावर। नाम बढ़ाने की सत्ता कॉन्फरन्स ऑफिस को दी जाती है।

प्रस्ताव ४ (ब)—(धार्मिक तथा व्यवहारिक-शिक्षण के विषय में)

रतलाम जैन ट्रेनिंग-कॉलेज तथा बम्बई बोर्डिंग-स्कूल की नींव मजबूत बनाने के लिये, उसके विधान मे आवश्यक परिवर्तन करने के लिये तथा ग्रान्ट बढ़ाने की जरूरत हो तो उसका निर्णय करने के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक सिलेक्ट कमेटी बनाई जाती है :—

श्रीमान् लछमनदासजी मुल्तानमलजी मूथा, जलगांव, श्रीमान् बालमुकन्दजी चन्दनमलजी मूथा, सतारा, श्रीमान् कुंवर छगनमलजी रियांवाले अजमेर, श्रीमान् गोकलचन्दजी राजपाल भाई मेहता, मोरवी व इन्दौर, श्रीमान् कुन्दनमलजी फ़िरोदिया, अहमदनगर, श्रीमान् फतहचन्दजी कपूरचन्दजी लालन, श्रीमान् कुंवर वर्धमानजी पित्तलिया, रतलाम, श्रीमान् केसरीचन्दजी भंडारी, इन्दौर, श्रीमान् वाडीलाल मोतीलाल शाह अहमदाबाद, श्रीमान् दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी जयपुर व मोरवी, श्रीमान् लखमीचन्दजी खोरवानी मोरवी, श्रीमान् किशनसिंहजी, श्रीमान् मिश्रीमलजी वोहरा, श्रीमान् फूलचन्दजी कोठारी भोपाल, श्रीमान् बछराजजी रूपचन्दजी, श्रीमान् कुंवर मानकचन्दजी मूथा अहमदनगर तथा डॉ० धारसी भाई गुलाबचन्द, गौंडल।

प्रस्ताव ५—जिन प्रान्तों में से चार आना फंड ७५% नियमित प्राप्त होगा, उन प्रान्तों मे यदि बोर्डिंग खोले जायेंगे तो कॉन्फरन्स-फंड में से बोर्डिंग खर्च का एक तृतीयांश खर्च दिया जायगा। ऐसी स्थिति मे वहां धार्मिक-शिक्षण अनिवार्य होना चाहिये।

प्रस्ताव ६—विद्वान् मुनि श्री जवाहरलालजी म० के सम्बन्ध में दक्षिण में जो असन्तोष फैल रहा है, उसका निराकरण करने के लिये कॉन्फरन्स की सब्जेक्ट-कमेटी ने निम्नोक्त सज्जनों की एक स्पेशियल-कमेटी नियुक्त की:—

श्रीमान् बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्रीमान् लछमनदासजी मूथा जलगांव, श्रीमान् गोकलदास भाई जौहरी मोरवी, श्रीमान् कुं० छगनमलजी रियांवाले अजमेर, श्रीमान् वर्धमानजी पित्तलिया, श्रीमान् बछराजजी रूपचन्दजी श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्रीमान् फूलचदजी कोठारी भोपाल, श्रीमान् नथमलजी चौरडिया

नीमच, श्रीमान् वीरचंदजी सूरजमलजी, श्रीमान् शिवराजजी सुराना सिकन्द्राबाद, श्रीमान् लल्लूभाई-नारायणदास पटेल इटोला।

इस कमेटी ने ता० १३ को जो निम्नोक्त प्रस्ताव तैयार किया है उसे यह कॉन्फरन्स मान्य रखती है।

'इन्दौर के बारे में शुरुआत में जो लेख कॉलेज-सेक्रेट्री श्री केसरीचंदजी भंडारी तथा कॉलेज के प्रिंसिपल श्री प्रीतमलाल भाई कच्छी के प्रकट हुए हैं उन्हें पढ़ने से, अन्य पत्रों की जांच करने से तथा हकीकत सुनने से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों को भगाने का जो आरोप मुनि श्री मोतीलालजी म० तथा श्री जवाहरलालजी म० पर लगाया है, वह सिद्ध नहीं होता है अतः कमेटी मुनि श्री को निर्दोष ठहराती है।

प्रस्ताव ७—(बालाश्रम खोलने के विषय में)

दक्षिण-प्रान्त में एक जैन बालाश्रम खोला जाय जिसको कॉन्फरन्स की तरफ से मासिक १००) रु० की सहायता देने का तय किया जाता है। उस आश्रम की व्यवस्था करना और कहां खोलना इसका निर्णय निम्नोक्त सज्जनों की कमेटी करेगी :—

श्री लछमनदासजी मुल्तानमलजी जलगांव, श्री बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदराबाद तथा श्री बछराजजी रूपचंदजी पांचोरा।

प्रस्ताव ८—(समाज-सुधार के विषय में)

बाल-लग्न, वृद्ध-विवाह, तथा कन्या-विक्रय, आदि हानिकारक रिवाजों को दूर करने से अपनी समाज का हित किया जा सकेगा। अतः कॉन्फरन्स आग्रह-पूर्वक अनुरोध करती है कि :—

(अ) पुत्र की उम्र कम से कम १६ वर्ष और कन्या की उम्र कम से कम ११ वर्ष की होने से पूर्व उनका विवाह नहीं किया जाय।

(ब) अधिक से अधिक ४५ वर्ष की उम्र के बाद विवाह नहीं किया जाय।

(ए) अनिवार्य कारणों के सिवाय जाति की आज्ञा लिये बिना एक स्त्री की मौजूदगी में दूसरा विवाह नहीं किया जाय।

(ड) कन्या-विक्रय का रिवाज बन्द करने के लिये हर एक संघ के सद्गृहस्थों को ठोस प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।

(ई) आतिशबाजी, वैश्या-नृत्य, विवाह और मृत्यु-प्रसंगों में फिजूल खर्च बंद करना या कम करना चाहिए।

प्रस्ताव ९—स्थायी-ग्रांट के सिवाय अन्य सभी तरह की ग्रांट की व्यवस्था के बारे में सभी जनरल-सेक्रेट्रियों की सलाह ली जाय और बहुमति के अनुसार ऑफिस द्वारा कार्य किया जाय।

(ब) जालंधर-कॉन्फरन्स में प्रतिनिधि, दर्शक आदि के शुल्क के बारे में जो प्रस्ताव पास किया गया उसमें कम-ज्यादा करने का अधिकार भविष्य में आमंत्रण देने वाले संघ को नहीं रहेगा।

(क) कॉन्फरन्स का अधिवेशन प्रति वर्ष किया जाय। यदि किसी गांव के संघ की तरफ से आमंत्रण प्राप्त न हो तो कॉन्फरन्स के खर्च से किसी अनुकूल स्थान पर अधिवेशन भरने का निर्णय किया जाय।

(ड) कॉन्फरन्स में आने वाले डेलिगेट (प्रतिनिधि) तथा विजीटर आदि की व्यवस्था उनके स्वय के खर्च से की जायगी।

(ई) यह कॉन्फरन्स प्रत्येक गांव और शहर के स्वधर्मी-भाइयों से आग्रह पूर्वक भलामण करती है कि वे चार आना-फंड में अपनी सहायता भेजें। सहायक-मंडल के मैम्बर बन कर और धर्मार्थ-पेटी मंगाकर शक्ति अनुसार कॉन्फरन्स को सहायता पहुँचावें।

प्रस्ताव १२—(संवत्सरी-पर्व एक साथ मनाने के विषय में)

अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन भाई एक ही दिन सम्वत्सरी-पर्व का आराधन करें यह आवश्यक है। इस बारे में भिन्न २ सम्प्रदायों के मुनि-महात्माओं और श्रावकों के साथ पत्र-व्यवहार द्वारा योग्य निर्णय कर लेने की सूचना कॉन्फरन्स हैड-ऑफिस को करती है।

प्रस्ताव १३—(दीक्षा में दखल न करने के बारे में जोधपुर-स्टेट से निवेदन)

हाल ही में जोधपुर स्टेट में ऐसा क़ानून लागू हुआ है कि २१ वर्ष से कम उम्र के व्यक्ति को साधु नहीं बनाना यानि दीक्षा नहीं देना और मारवाड़ में जितने भी साधु हैं उनका नाम सरकारी रजिस्टर में लिखा जाना चाहिये—ये दोनों ही बातें जैन-शास्त्रों के फरमान से विरुद्ध हैं। अतः यह कॉन्फरन्स नम्रता-पूर्वक जोधपुर स्टेट से निवेदन करती है कि यह धर्म से सम्बन्धित बात है और धर्म के बारे में ब्रिटिश-सरकार भी जब एतराज़ नहीं करती है तो जोधपुर-स्टेट को भी मेहरबानी कर जैन साधुओं को उक्त कानून से मुक्त कर देना चाहिये। ऐसा उक्त प्रस्ताव कॉन्फरन्स-ऑफिस द्वारा जोधपुर-स्टेट की सेवा में योग्य आज्ञा मंगवाने के लिए भेजा जाय।

प्रस्ताव १४—(योग्य-दीक्षा के विषय में)

यह कॉन्फरन्स हिन्दुस्तान के समस्त स्था० जैन श्री-संघों को सूचना करती है कि जिस वैरागी को दीक्षा देनी हो, उसकी योग्यता आदि की पूरी २ जांच स्थानीय-संघ को कर लेनी चाहिये। यदि ५० घरों की संख्या गांव में न हो तो पास के दूसरे गांव के ५० घरों की लिखित सम्मति प्राप्त किये बाद ही दीक्षा दिलानी चाहिये।

निम्न प्रान्तों के निम्नोक्त सज्जन मंत्री नियुक्त किये जाते हैं:-

श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर (दक्षिण), श्री मोतीलालजी पित्तलिया अहमदनगर (दक्षिण)। श्री वीरचंदजी चौधरी, इच्छावर (सी० पी०), श्री गुमानमलजी सुराना बुरहानपुर (सी० पी०)। श्री केसरीमलजी गुगलिया धामनगांव (बरार), श्री मोहनलालजी हरकचंदजी आकोला (बरार)। श्री राजमलजी ललवानी जामनेर (खानदेश), श्री रतनचंदजी दोलतरामजी बाघली (खानदेश)। श्री मगनलालजी नागरदास वकील लींबडी (झालावाड)। श्री दुर्लभजी केशवजी खेतानी बम्बई (बम्बई), श्री जगजीवन दयालजी घाटकोपर (बम्बई)। श्री उमरशी कानजी भाई देशलपुर (कच्छ)। श्री आनंदराजजी सुराना जोधपुर (मारवाड़), श्री विजयमलजी कुंभट (जोधपुर)। श्री सिरेमलजी लालचंदजी गुलेजगढ़ (कर्नाटक)।

प्रांतीय-मंत्रियों को यह अधिकार दिया जाता है कि वे अपने २ क्षेत्र की एक कमेटी बना लें और 'चार आना-फंड धर्मार्थ-पेटी' की रकम अपने २ प्रांतों से वसूल कर के ऑफिस को भेज दें। इस फंड की व्यवस्था पूर्व निर्णयानुसार अलग २ फंडों में की जायगी। (प्रमुख सा० की ओर से)

प्रस्ताव ३—(बम्बई में कॉन्फरन्स-ऑफिस रखने के विषय में)

कॉन्फरन्स-ऑफिस आगामी दो साल के लिए सं० १६८२ की कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा से बम्बई में रहे और 'जैन प्रकाश' पत्र भी बम्बई से ही प्रकट किया जाय। ऑफिस की वर्किंग-कमेटी में सेठ श्री मेघजी भाई थोभण जे० पी० प्रेसिडेन्ट, सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी तथा जौहरी सूरजमल लल्लूभाई को जॉइन्ट सेक्रेट्री नियत किये जाते हैं। उपरोक्त तीनों सज्जनों ने बम्बई जैसे केन्द्र-स्थान में ऑफिस को ले जाने का जो सेवा-भाव दिखलाया है उसके लिये कॉन्फरन्स हार्दिक धन्यवाद देती है। प्र० श्री मोतीलालजी मूथा। अनु० श्री बरधमानजी पित्तलिया, श्री सरदारमलजी भंडारी।

प्रस्ताव ४—(जैन ट्रेनिंग कॉलेज खोलने के बारे में)

सभ्य कही जाने वाली सारी दुनिया का ध्यान आजकल अहिंसा की ओर आकर्षित हुआ है। ऐसे समय मे यह आवश्यक है कि अहिंसा का सर्वदेशीय-स्वरूप बतलाने वाला जैन तत्वज्ञान का शिक्षण ठीक पद्धति से प्राप्त हो सके, अतः एक जैन ट्रेनिंग कॉलेज खोलने का निश्चय किया जाता है और उसके लिये स्थान आदि के बारे में योग्य निर्णय करने का अधिकार निम्नोक्त सदस्यों की इस समिति को दिया जाता है :—

श्री प्रमुख सा० मेघजी भाई J. P बम्बई, श्री लजीभाई वेलखमसी बम्बई, श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह बम्बई, श्री दुर्लभजी भाई त्रिभुवन जौहरी जयपुर, श्री नथमलजी चौरडिया नीमच, श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री मोतीलालजी कोटेचा मलकापुर, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह घाटकोपर, श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर तथा श्री लक्ष्मणदासजी मुल्तानमलजी जलगांव। प्रस्तावक—श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह। अनु० वर्धमानजी पित्तलिया, दुर्लभजी भाई जौहरी तथा पद्मसिंहजी जैन।

प्रस्ताव १५—(जैन फिर्कों के साथ भ्रातृ-भाव बढ़ाने के विषय में)

यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है कि जैन-धर्म की उन्नति के लिए भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के साथ परस्पर भ्रातृ-भाव और प्रेम-पूर्ण व्यवहार की नितान्त आवश्यकता है। अतः प्रत्येक गांव और शहर के संघों को सूचना करनी है कि वे अपने क्षेत्र के क्लेश दूर कर शांति और प्रेम बढ़ाने का प्रयत्न करें। जैनों के तीनों फिर्कों में ऐक्य की स्थापना के लिए प्रत्येक सम्प्रदाय के २५-२५ गृहस्थों का एक सम्मेलन हो। ऐसा यदि प्रसंग आवे तो अपनी तरफ से द्रव्य और श्रम का सहयोग भी दिया जाय ऐसी कॉन्फरन्स अपनी इच्छा प्रकट करती है।

प्रस्ताव १६—(जीव दया के विषय में)

(अ) निराधार-जानवरों की रक्षा करने के लिए जिन २ स्थानों पर पांजरापोल हों उनकी अधिक उन्नति करने के लिए तथा जिन २ स्थानों पर पांजरापोल न हों वहां स्थापित करने के लिए यह कॉन्फरन्स प्रत्येक-संघ को भलामण करती है।

(ब) यह कॉन्फरन्स जिन-जिन वस्तुओं की बनावट में जीव-हिंसा होती है उन-उन वस्तुओं का उपयोग नहीं करने की भलामण करती है।

(क) अन्य धर्मावलंबियों में भोजन के निमित्त या देवी-देवताओं के नाम पर जो जीव-हिंसा होती है उसे पैम्फ्लेटों और उपदेशकों द्वारा बंद कराने का प्रयत्न किया जाय।

प्रस्ताव १७—इस कॉन्फरन्स का छठा अधिवेशन न हो वहां तक निम्नोक्त सज्जनों की जनरल-सेक्रेट्री के रूप में नियुक्ति की जाती है :—

श्री सेठ चांदमलजी रियांवाले अजमेर, दी० ब० उम्मेदमलजी लोढा अजमेर, श्री बालमुकन्दजी मूथा सतारा, श्री अमरचंदजी पित्तलिया रतलाम, श्री गोकलचंदजी नाहर दिल्ली, श्री गोकलदास राजपाल मेहता मोरवी, दी० ब० श्री० विशनदासजी जैन जम्मु, श्री लछमनदासजी मुलतानमलजी जलगांव तथा ला० सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी हैदराबाद।

इस कॉन्फरन्स में सेवा देने वाले स्वयं सेवकों को श्री नथमलजी चौरडिया और सभापति श्री लछमनदासजी मुल्तानमलजी की तरफ से पदक भेंट दिये गये।

षष्ठम-अधिवेशन, स्थान-मलकापुर

कॉन्फरन्स का छठा अधिवेशन बारह वर्ष बाद मलकापुर में सन् १९२५ मे ता० ७-८-९ जून को हुआ जिसकी अध्यक्षता श्रीमान् सेठ मेघजी थोभण जे० पी० बम्बई ने की। स्वागताध्यक्ष श्री मोतीलालजी कोटेचा, मलकापुर निवासी थे। इस अधिवेशन मे कुल २७ प्रस्ताव पास किये गये जिनमे से निम्न मुख्य २ हैं:—

प्रस्ताव २—(प्रान्तों के विषय मे) समस्त भारतवर्ष के निम्नोक्त विभाग किये जाते है:—

१ पंजाब २ मारवाड़ ३ मेवाड़ ४ मालवा ५ संयुक्तप्रांत ७ मध्यभारत ७ मध्यप्रदेश ८ उत्तर गुजरात ९ दक्षिण गुजरात १० हालार ११ झालावाड़ १२ गोहिलवाड १३ सोरठ १४ कच्छ १५ दक्षिण १६ खानदेश १७ बरार १८ बंगाल १९ निजाम हैदराबाद २० मद्रास २१ बम्बई २२ सिंध और २३ कर्णाटक।

निम्नोक्त प्रांतों के निम्नोक्त सज्जन मंत्री नियुक्त किये जाते है :—

(दक्षिण) (१) श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, (२) श्री मोतीलालजी पित्तलिया अहमदनगर, (सी०पी०) —(१) श्री पीरचंदजी चौधरी इच्छावर,(२) श्री गुमानमलजी सुराना बुरहानपुर, (बरार)—(१) श्री केसरीमलजी गुगलिया धामनगांव, (२) श्री मोहनलालजी हरकचंदजी आकोला, (खानदेश)—(१) श्री राजमलजी ललवानी जामनेर, (२) श्री रतनचंदजी दोलतरामजी वाघली, (झालावाड)—(१) श्री मगनलालजी नागरदासजी वकील लींबडी, (बम्बई)—(१) श्री दुर्लभजी केशवजी खेताणी बम्बई, (२) श्री जगजीवन दयालजी घाटकोपर, (कच्छ)—(१) श्री उमरशी कानजी भाई देशलपुर, (मारवाड)—(१) श्री आनंदराजजी सुराना जोधपुर, (२) श्री विजयमलजी कुंभट जोधपुर, (कर्नाटक)—(१) श्री सिरेमलजी लालचंदजी गुलेजगढ़।

प्रांतीय-मन्त्रियों को यह अधिकार दिया जाता है कि वे अपने २ क्षेत्र की एक कमेटी बनालें और 'चार आना फंड' धर्मार्थ-पेटी की रकम अपने २ प्रांत से वसूल कर ऑफिस को भेज दें। इस फंड की व्यवस्था पूर्व निर्णयानुसार अलग २ फंडों मे की जायगी। (प्रमुख सा० की ओर से)

प्रस्ताव ३—(बम्बई में कॉन्फरन्स-ऑफिस रखने के विषय में)

कॉन्फरन्स-ऑफिस आगामी दो साल के लिये सं० १९८२ की कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा से बम्बई मे रहे और प्रकाश-पत्र भी बम्बई से ही प्रकट किया जाय। ऑफिस की वर्किंग-कमेटी मे सेठ श्री मेघजीभाई थोभण जे० पी० प्रेसिडेन्ट, और सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी तथा जौहरी सूरजमल लल्लुभाई को जॉइन्ट-सेक्रेट्री नियत किये जाते हैं। उपरोक्त तीनों सज्जनों ने बम्बई जैसे केन्द्र स्थान मे ऑफिस को ले जाने का जो सेवा-भाव दिखलाया है उसके लिये कॉन्फरन्स हार्दिक धन्यवाद देता है। प्रस्तावक मोतीलालजी मूथा। अनु० श्री वर्धमानजी पित्तलिया, श्री सरदारमलजी भंडारी।

प्रस्ताव ४—(जैन ट्रेनिंग कॉलेज खोलने के बारे में)

सभ्य कही जाने वाली सारी दुनिया का ध्यान आजकल अहिंसा की ओर आकर्षित हुआ है। ऐसे समय में यह आवश्यक है कि अहिंसा का सर्वदेशीय-स्वरूप बतलाने वाला जैन तत्वज्ञान का शिक्षण ठीक पद्धति से प्राप्त हो सके, अतः एक जैन ट्रेनिंग कॉलेज खोलने का निश्चय किया जाता है और उसके लिए स्थान आदि के बारे में योग्य निर्णय करने का अधिकार निम्नोक्त सदस्यों की समिति को दिया जाता है।

प्रमुख सा० श्री मेघजी भाई थोभण बम्बई, श्री वेलजी भाई लखमसी बम्बई, श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह बम्बई, श्री दुर्लभजी भाई त्रिभुवन जौहरी जयपुर, श्री नथमलजी चौरडिया

नीमच, श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री मोतीलालजी कोटेचा मलकापुर, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह घाटकोपर, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री लक्ष्मणदासजी मुल्तानमलजी जलगांव,

प्रस्तावक—श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह, श्री वर्धमानजी पित्तलिया, श्री दुर्लभजीभाई जौहरी, श्री पद्मसिंहजी जैन

प्रस्ताव ५—(हानिकारक रिवाजों को त्यागने के विषय में)

जैन समाज में से बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या-विक्रय, एक स्त्री होते हुए दूसरी स्त्री (शादी) करना, मद्य-सेवन, वैश्या-नृत्य कराना आदि हानिकारक रिवाजों को दूर करने की व लग्न तथा मृत्यु-प्रसग पर फिजूल खर्ची कम कर सन्मार्ग में व्यय करने की प्रत्येक श्री-संघ के शिश करे।

प्रस्तावक—श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया। अनु० श्री राजमलजी ललवानी, श्री अमरचंदजी पूगलिया।

प्रस्ताव ६—(जनरल-सेक्रेट्री का चुनाव)

निम्नोक्त सद्गृहस्थों को जनरल-सेक्रेटरी के पद पर नियुक्त किये जाते हैं:—

सेठ श्री मेघजी भाई थोभण जे० पी० बम्बई, सेठ श्री लक्ष्मणदासजी मुल्तानमलजी जलगांव, सेठ श्री मगनमलजी रियॉवाले अजमेर, सेठ श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, सेठ श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, सेठ श्री ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैदराबाद, सेठ श्री गोकलचदजी नाहर दिल्ली, सेठ श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी नप्पु बम्बई, सेठ श्री केशरीमलजी गूगलिया धाणक, सेठ श्री मोतीलालजी कोटेचा मलकापुर।

प्रस्ताव ६—(जीव-हिंसा बद कराने वालों को धन्यवाद)

माहियर राज्य मे शारदा देवी पर होता हुआ पशु-वध हमेशा के लिये बद कर दिया, इसके लिये यह कॉन्फरन्स माहियर-महाराजा सा० व दीवान हीरालाल भाई अ जारिया और सेठ श्री मेघजी भाई थोभण को धन्यवाद देती है। (प्रमुख सा० की तरफ से)

प्रस्ताव १०—(अनाथ बालकों के लिये) अनाथ बालकों के उद्धार के लिये आगरा मे जैन-अनाथालय खोला गया है उसके प्रति इस कॉन्फरन्स की सहानुभूति है। (प्रमुख सा० की तरफ से)

प्रस्ताव ११—श्रीमान् दानवीर सेठ नाथूलालजी गोदावत छोटी सादड़ी वालों ने सवा लाख रु० की बड़ी रकम निकाल कर, 'श्री स्थानकवासी सेठ नाथूलालजी गोदावत जैन गुरुकुल' और जैन-पाठशाला खोली हैं और बीकानेर वाले सेठ अगरचदजी भैरोंदानजी सेठिया ने जैन-शास्त्रोद्धार, कन्याशाला, पाठशाला, लायब्रेरी, आदि संस्थाएं करीब दो लाख रुपयों की उदारता से खोली हैं अतः यह कॉन्फरन्स इन दोनों महाशयों को धन्यवाद देती है। (प्रमुख सभा की तरफ से)

प्रस्ताव १३—(श्री सुखदेवसहाय प्रिन्टिंग-प्रेस का स्थानान्तर इन्दौर में)

कॉन्फरन्स-ऑफिस का सुखदेवसहाय जैन प्रिंटिंग-प्रेस को सब सामान के साथ श्रीयुत् सरदारमलजी भंडारी की देख रेख में स० १९८२ की कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा के पहले-पहले इन्दौर भेज दिया जाय। इसमे जब तक अर्धमागधी कोष के तीनों भाग छप न जाय वहां तक वहीं छापते रहें। इसके खर्च के लिये मासिक रु० ४५०) तक श्रीयुत् सरदारमलजी भंडारी को दिये जायं। पुस्तक छप जाने पर प्रेस इन्दौर में रखना या दूसरी जगह,

यह ऑफिस की इच्छा पर रहेगा। कोष छप जाने का काम अधिक से अधिक दो वर्ष में पूरा हो जाना चाहिए। पुस्तकों की मालिकी कॉन्फरन्स की रहेगी। अजमेर से इन्दौर प्रेस पहुँचाने का तथा फिट करने का जो खर्च होगा वह ऑफिस की तरफ से दिया जायगा। मत्री तरीके श्री सरदारमलजी भडारी को नियत किये जाते हैं और वर्किंग कमेटी इन्दौर में बनाली जायगी।

प्रस्ताव २४—(खादी प्रचार के विषय में)

जैन धर्म के मूल आधारभूत अहिंसा-धर्म को ख्याल में रखकर यह कॉन्फरन्स सभी स्थानकवासी भाई-बहिनों से अनुरोध करती है कि वे शुद्ध-खादी का व्यवहार करें। अन्य प्रस्ताव, शोक प्रस्ताव व धन्यवादात्मक थे।

पगार फड–इस अधिवेशन मे जैन ट्रेनिंग कॉलेज फड के लिए अपील की गई थी फलस्वरूप १२ हजार रुपयों का फड हुआ था।

मलकापुर-अधिवेशन टिकिट-शुल्क की आय से ही पूर्ण सफल हो गया, यह इस अधिवेशन की विशेषता थी। आम जनता खर्च के भय से भी अधिवेशन कराने मे घबराती थी। लेकिन इस अधिवेशन में यह बतला दिया कि डेलीगेट, विजीटर और स्वागत समिति के सदस्यो की फीस से ही अधिवेशन जैसा महान् कार्य किया जा सकता है और आमत्रण देने वालो को यश और सफलता प्राप्त हो सकती है।

सप्तम-अधिवेशन, स्थान-बम्बई

कॉन्फरन्स का सातवां अधिवेशन बम्बई मे दानवीर सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। स्वागत-प्रमुख सेठ श्री मेघजी भाई थोभण बम्बई थे। इस अधिवेशन मे कुल ३२ प्रस्ताव पास किये गये जो पिछले सभी अधिवेशनों से सख्या की दृष्टि से अधिक थे। मुख्य-मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार हैं :-

प्रस्ताव १—(स्वामी श्रद्धानन्दजी के खून के प्रति दुःख प्रकाशन)

अपने देश के प्रसिद्ध नेता और कर्म-वीर स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज का एक धर्मान्ध मुसलमान द्वारा खून हुआ है उसे यह सभा महान राष्ट्रीय हानि समझ कर अत्यत खेद तथा खूनी के प्रति तिरस्कार प्रकट करती है।

प्रस्ताव न० १–(प्रान्तीय-शाखाओं के विषय में)

कॉन्फरन्स का प्रचार-कार्य योग्य पद्धति से तथा व्यवस्थित रुप से चले इसके लिये प्रत्येक प्रांत मे एक-एक ऑनेररी प्रान्तीय-मत्री की नियुक्ति की जाती है।

(ब) प्रत्येक प्रान्तीय-मत्री को उनकी सूचनानुसार एक वैतनिक-सहायक रखने की छूट दी जाती है। उसके खर्च के लिये ऑफिस की तरफ से आधी सहायता दी जायगी और यह सहायता २०) रू० मासिक से अधिक नहीं होगी। शेष खर्च के लिये प्रान्तीय मत्री स्वय प्रबन्ध करें। उस प्रान्त में से एकत्रित हुए रुपया फड मे से कॉन्फरन्स के नियमानुसार जो रकम उस प्रान्त को दी जायगी, उसका उपरोक्त खर्च मे उपयोग करने का अधिकार रहेगा।

(क) जिन सज्जनों ने प्रातीय-मत्री बनना स्वीकार किया है और भविष्य मे भी जो बनने को तैयार हैं उनमें से ऑफिस प्रांतीय-सेक्रेट्री का चुनाव करें।

प्रस्ताव ३—(वीर-संघ स्थापना के विषय में)

श्री श्वे०स्था० जैन समाज के हित के लिये अपना जीवन समर्पण करने वाले सज्जनों का एक वीर-संघ स्थापित करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। इसके लिये आवश्यक नियमोपनियम बनाने के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी बनाई जाती है। यह कमेटी ३ मास के अन्दर अपनी रिपोर्ट कार्य कारिणी समिति को सौंप दे।

सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, सेठ श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, सेठ श्री वेलजी-लखमशी नप्पु बम्बई, सेठ श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, सेठ श्री अमृतलालभाई दलपतभाई रायपुर, सेठ श्री राजमलजी ललवानी जामनेर, सेठ श्री चिमनलाल चक्कुभाई शाह बम्बई।

प्रस्ताव ४—(संवत्सरी की एकता के विषय में)

समस्त स्थानकवासी-समाज में संवत्सरी-पर्व एक ही दिन मनाया जाय, यह आवश्यक है। इसके लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी नियत की जाती है। वे सज्जन अपनी-अपनी संप्रदाय का पक्ष न करते हुए पूर्ण विचार विनिमय द्वारा संवत्सरी के लिये एक दिन निश्चित करें, तदनुसार समस्त संघ संवत्सरी पालें। सभी मुनि-महाराजों से भी प्रार्थना है कि वे इस प्रस्ताव को कार्य रूप में परिणत करने के लिये उपदेश दें और स्वय भी इसे कार्य रूप मे परिणत करें।

कमेटी के मेम्बर—श्री सेठ चन्दनमलजी मूथा, सतारा, श्री सेठ किशनदासजी मूथा, अहमदनगर, श्री ताराचन्दजी बांठिया, जामनगर, श्री देवीदासजी लक्ष्मीचंदजी घेवरिया, पोरबंदर।

प्रस्ताव ६—(विविध-प्रवृत्तियों की आवश्यकता के विषय में)

अपनी समाज को सुसंगठित करने के लिये प्रत्येक गांव और शहर में मित्र-मंडल, भजन-मंडली, व्यापार शाला और स्वय-सेवक-मंडलों की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और हर एक गांव के आगेवानों से ऐसे मंडल शीघ्र स्थापित करने का आग्रह करती है।

प्रस्ताव ७—(जाति बहिष्कार के विरोध में)

किसी भी स्थान के पंच छोटे-छोटे दोषों के लिये किसी व्यक्ति या परिवार का जन्म भर के लिये जाति बहिष्कार नहीं करें ऐसा यह कॉन्फरन्स उनसे आग्रह करती है।

प्रस्ताव ८—(शिक्षण-प्रचार के सम्बन्ध में)

यह कॉन्फरन्स प्रत्येक प्रकार की शिक्षा के साथ-साथ आवश्यक धार्मिक-शिक्षण रख कर एक 'स्थानकवासी जैन शिक्षा-प्रचार-विभाग' की स्थापना करती है। वह निम्नोक्त कार्य करने का अधिकार जनरल-कमेटी को देती है।

(१) गुरुकुल जैसी संस्था स्थापित करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और जनरल-कमेटी को सूचना करती है कि फंड की अनुकूलता होते ही गुरुकुल खोल दिये जायें।

(२) जहां-जहां कॉलेज हों वहां-वहां उच्च-शिक्षण लेने वाले विद्यार्थियों के लिये छात्रालय खोलना और स्कॉलरशिप देने की व्यवस्था करना।

(३) उच्च-शिक्षण प्राप्त करने के लिये भारतवर्ष से बाहर जाने वाले विद्यार्थियों को 'लोन' के रूप में छात्रवृत्ति भी देना और कॉलेजियन-छात्रों को कला-कौशल, शिल्प और विज्ञान की उच्च-शिक्षा प्राप्त करने के लिये छात्रवृत्ति देना।

(४) प्रौढ़ अध्यापक तथा अध्यापिकाएं तैयार करना। (५) स्त्री शिक्षण के लिये स्त्री समाजों की स्थापना करना। (६) जैन ज्ञान प्रचारक मंडल द्वारा निश्चित की गई योजना को कार्य में परिणत करना और जैन-साहित्य का प्रचार करना।

(७) हिन्दी तथा गुजराती दोनों विभागों के लिये अलग अलग सैन्ट्रल-लायब्रेरी स्थापित करना तथा पब्लिक लायब्रेरियों में जैन-साहित्य की अलमारियां (कपाट) रखना

इसके बाद सेठ मेघजीभाई थोभणभाई ने खड़े होकर कहा कि:- "पूना की आबोहवा अच्छी है, शिक्षा के साधन भी प्रचुर हैं तथा खर्च भी कम आवेगा अतः पूना मे उच्च शिक्षण लेने वाले विद्यार्थियों के लिये एक बोर्डिंग खोली जाय। इसके लिये निम्न सज्जनों की एक कमेटी बनाई गई जिसके हाथ में बोर्डिंग संबंधी पूरी सत्ता रहेगी।

सेठ सुरजमल लल्लुभाई जौहरी बम्बई, सेठ वेलजी लखमसी नप्पु बम्बई, सेठ वृजलाल खीमचन्द शाह सोलीसीटर बम्बई, सेठ मोतीलालजी मूथा सतारा, सेठ कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, सेठ मेघजी भाई थोभण भाई जे० पी० बम्बई।

इन प्रस्ताव का सेठ सूरजमल लल्लु भाई जौहरी तथा अन्य सज्जनों के अनुमोदन करने से जयजिनेन्द्र की ध्वनि के बीच इसके लिये फंड की शुरुआत की गई और उसी समय अच्छा फंड भी हो गया।

प्रस्ताव ९—(सादड़ी के स्था० भाइयों के विषय में)

जैन धर्म के तीनों सम्प्रदायों मे ऐक्य और प्रेम-भाव उत्पन्न करने का समय आ गया है और इसके लिये तीनों सम्प्रदायों में प्रयत्न भी शुरु हो रहे है। ऐसी स्थिति में घाणेराव-सादड़ी के स्थानकवासी भाइयों के प्रति वहा के मन्दिरमार्गी भाइयों की तरफ़ से जो अन्याय हो रहा है, वह सर्वथा अयोग्य है। ऐसा समझ कर यह कॉन्फरन्स श्वे० जैन कॉन्फरन्स और उसके कार्य-कर्ताओं को सूचित करती है कि वे इस संबध में शीघ्र ही योग्य व्यवस्था कर सादड़ी स्थानकवासी भाइयों पर जो अन्याय हो रहा है उसे दूर करें और परस्पर में प्रेम बढावें।

यह कॉन्फरन्स मारवाड, मेवाड, मालवा और राजपूताना के स्वधर्मी-बंधुओं को सूचित करती है कि वे अपने सादडी निवासी स्वधर्मी-बंधुओं के साथ जाति नियमानुसार बेटी-व्यवहार कर सहायता करें। इस प्रस्ताव को सफल करने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस व्यवस्था करे।

प्रस्ताव १०—(शत्रुंजय-तीर्थ के टैक्स के विरोध में सहानुभूति)

समस्त भारतवर्ष के स्था० जैनों की यह परिषद् श्री शत्रुंजय-तीर्थ संबंधी उपस्थित हुई परिस्थिति पर अपना आन्तरिक दुख प्रकट करती है और पालीताणा के महाराजा तथा एजेंट टु दी गवर्नर जनरल के निर्णय के विरुद्ध अपना विरोध प्रकट करती है। आशा है ब्रिटिश सरकार इस विषय में श्वेताम्बर-बंधुओं का अवश्य न्याय करेगी। मुख्यतः पालीताणा-नरेश से यह परिषद् ऐसी आशा करती है कि श्वेताम्बर-बंधुओं की धार्मिक-भावना और हक को मान लेने की उदारता प्रकट करेगी।

प्रस्ताव १२—(महिला-परिषद् के विषय में)

कॉन्फरन्स-अधिवेशन के साथ २ 'महिला-परिषद्' का अधिवेशन भी अवश्य होना चाहिये। यह महिला-परिषद् कॉन्फरन्स की एक संस्था है अतः उसका ऑफिस-व्यय कॉन्फरन्स दे।

प्रस्ताव १६-(जोधपुर-नरेश को धन्यवाद ! मादा-पशुओं की निकास-बंदी और संवत्सरी को जीव-हिंसा बंदी के लिये)

महाराजाधिराज जोधपुर-नरेश ने अपनी स्टेट मे मादा-पशुओं का निकास हमेशा के लिये बद कर दिया है और जैनियों की प्रार्थना स्वीकार कर सम्वत्सरी के दिन जीव-हिंसा बंद रख कर उस दिन छुट्टी रखने का हुक्म फरमाया है। और इसके लिये परिषद् धन्यवाद देती है। और आशा करती है कि वे भविष्य में भी ऐसे पुण्य-कर्म में योग देते रहेंगे। इस प्रस्ताव की नकल महाराजा जोधपुर-नरेश की सेवा में तार द्वारा भेजी जाय।

प्रस्ताव १७—(श्राविकाश्रम की आवश्यकता के विषय में)

यह परिषद् श्राविकाश्रम की आवश्यकता स्वीकार करती है और बम्बई में श्राविकाश्रम स्थापित कर या अन्य चालू स स्था के साथ चलाने के लिये प्रमुख सा० ने जो १०००) रु० प्रदान किये हैं, उसमें सहायता देने के लिये अन्य भाई-बहिनों से आग्रह-पूर्वक अनुरोध करती है। साथ ही दूसरी सस्था को साथ २ चलाने में धर्म संबधी कोई बाधा उपस्थित न हो इसका पूरा ध्यान रखने को सूचित करती है।

मारवाड़ के लिये बीकानेर में सेठियाजी द्वारा स्थापित श्राविकाश्रम का लाभ लेने के लिये मारवाड़ी बहिनों का ध्यान आकर्षित किया जाता है और इस उदारता के लिये सेठियाजी को हार्दिक धन्यवाद देती है।

प्रस्ताव १८—(गौ-रक्षा व पशु-रक्षा के विषय में)

यह परिषद् बम्बई सरकार से प्रार्थना करती है कि गौ-वध तथा दूध देने वाले और खेती के लायक उपयोगी पशुओं का वध बद करने का प्रबध करे। बम्बई-कौन्सिल के सभी सदस्यों से आग्रह पूर्वक निवेदन करती है कि वे इसको सफल बनाने का योग्य प्रयास करें।

प्रस्ताव १९—(जैन-गणना के विषय में)

भारतवर्ष के समस्त स्थानकवासियों की डिरेक्टरी कॉन्फरन्स के खर्च से प्रति दस वर्ष मे तैयार की जाय। प्रथम डिरेक्टरी कॉन्फरन्स की तरफ से चालू वर्ष में की जावे।

प्रस्ताव २०—(वेजीटेबल-घी के बहिष्कार के विषय में)

यह कॉन्फरन्स प्रस्ताव करती है कि वर्तमान में भारतवर्ष में अधिक परिमाण में वेजीटेबल-घी के प्रचार से देश के दुधारु और खेती के उपयोगी पशुओं को हानि पहुंचने की संभावना है। इस वेजीटेबल घी में चरबी का मिश्रण होता है और स्वास्थ्य सुधारक-तत्व उसमें बिल्कुल नहीं होने से उससे धार्मिक-क्षति के साथ २ स्वास्थ्य की भी हानि होती है। अतः यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि अहिंसा और आरोग्य को लक्ष्य में रख कर वेजीटेबल-घी का सर्वथा बहिष्कार किया जाय और उसके प्रचार में किसी भी तरह का उत्तेजन न दिया जाय।

प्रस्ताव २१—(बर्मा के बौद्धों का मांसाहार रोकने के विषय में)

बर्मा प्रांत मे रहने वाली बर्मन-जनता अपने बौद्ध-सिद्धान्त के विरुद्ध मांसाहार कर रही है। अतः यह कॉन्फरन्स प्रस्ताव करती है कि अच्छे उपदेशकों को भेज कर बर्मा में मांसाहार रोकने का प्रबध किया जाय।

प्रस्ताव २२—(तीनों जैन फिर्कों की कॉन्फरन्स बुलाने के विषय में)

समाज के साथ सबंध रखने वाले अनेक सामान्य प्रश्न समाज के सामने आते हैं। उन प्रश्नों का निराकरण करने के लिये तथा जैनियों के तीनों फिर्कों मे परस्पर सद्भाव उत्पन्न करने के

लिये यह परिषद तीनों सम्प्रदायों की एक संयुक्त-कॉन्फरन्स की आवश्यकता स्वीकार करती है और यह प्रवृत्ति शुरु करने के लिये सभी फिर्कों के आगेवान-नेताओं की एक कमेटी बुलाने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को सत्ता देती है।

प्रस्ताव २३—(साधु-सम्मेलन की आवश्यकता के विषय में)

भारत के समस्त स्था० जैन साधु मुनिराजों का सम्मेलन यथा शीघ्र भरने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। इसके लिये कॉन्फरन्स ऑफिस को योग्य प्रबंध करने की सूचना दी जाती है।

प्रस्ताव २४—(चार आने के स्थान पर १) रुपया फंड के लिये)

कॉन्फरन्स ने जो चार आना फंड स्थापित किया है, उसके बजाय अब से प्रत्येक घर से १) रु० प्रति वर्ष लेने का तय किया जाता है। प्रतिनिधि वही हो सकेगा जिसने वार्षिक १) रु० दिया होगा।

प्रस्ताव २८—(गुरुकुल प्रारंभ करने के विषय में)

ब्रह्मचर्याश्रम अथवा गुरुकुल की अपनी समाज की बड़ी जरूरत है। उससे हम सच्चे सेवक पैदा कर सकेंगे। कॉन्फरन्स यदि ऐसी स्वतंत्र संस्था के लिये आवश्यक सहायता नहीं दे सकती हो तो जैन ट्रेनिंग कॉलेज के साथ ही यह काम चलाया जाय। कॉलेज को मिलने वाले ग्रांट (सहायता) से ३ वर्ष तक हम कार्य चला सकेंगे—ऐसी योजना की जा सकती है। इस संबंध में निर्णय करने की सत्ता निम्नोक्त सदस्यों की कमेटी को दी जाती है। वे यथाशीघ्र अपना अभिप्राय प्रकट करें।

श्रीयुत सेठ भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, श्रीयुत सेठ वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्रीयुत सेठ दुर्लभजी भाई जौहरी जयपुर, श्रीयुत सेठ आनंदराजजी सुराणा जोधपुर, श्रीयुत बाबू हुक्मीचंदजी उदयपुर, श्रीयुत सेठ फूलमचंदजी खींवसरा, ब्यावर श्रीयुत सेठ मगनमलजी कोचेटा भैंवाल। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

इस अधिवेशन के साथ स्था० जैन महिला-परिषद का भी आयोजन किया गया था ,जिसमे श्री आनंदकुंवर बाई (धर्मपत्नी सेठ वर्धमानजी पित्तलिया, रतलाम) आदि के भाषण हुए थे।

महिला-समाज के लिये कई उपयोगी तथा प्रगतिशील प्रस्ताव भी पास किये गये थे। शिक्षा-प्रसार गृहोद्योग, पर्दा-प्रथा का परित्याग तथा मृत्यु के बाद शोक रखने की प्रथा आदि को समाप्त करने के प्रस्ताव पास हुए थे।

अष्टम-अधिवेशन, स्थान-बीकानेर (राज०)

कॉन्फरन्स का आठवां-अधिवेशन सन् १९२७ में ता० ६, ७, ८ अक्टूबर को श्रीमान् भिलापचंदजी बेद (झांसी वाले) के खर्चे से बीकानेर में सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता जैन धर्म के प्रखर विचारक श्रीयुत वाडीलाल मोतीलाल शाह ने की। इस अधिवेशन के स्वागत-प्रमुख श्रीमान् भिलापचंदजी बेद बीकानेर थे। इस अधिवेशन में लगभग ४ हजार प्रतिनिधि और प्रेक्षकों की उपस्थिति थी। महिलाएं भी काफी संख्या में उपस्थित हुई थीं। इस अधिवेशन की सफलता के लिये देश के गण्यमान नेताओं तथा संस्थाओं, महात्मा गांधीजी, लाला लाजपतराय, श्वे० मूर्ति पू० कॉन्फरन्स, पं० अर्जुनलालजी सेठी अजमेर, बाबू चम्पतरायजी जैन बैरिस्टर, श्री ए० बी० लट्ठे दीवान कोल्हापुर, सेठ बिड़लाजी,

बम्बई, श्रीयुत अंबालाल भाई सारा भाई अहमदाबाद, श्री नानालाल भाई दलपतराय कवि, ब्रह्मचारी शीतल प्रसादजी आदि के शुभ-संदेश प्राप्त हुए थे।

इस अधिवेशन में कुल २७ प्रस्ताव पास किये गये जिनमें से मुख्य-मुख्य इस प्रकार हैं:—

प्रस्ताव १–(जैन समाज की अखंड-एकता के लिये)

जैन-समाज की उज्ज्वलता और जैन समाज की रक्षा तथा प्रगति के लिये यह कॉन्फरन्स चाहती है कि भिन्न २ जैन-सम्प्रदायों के त्यागी तथा गृहस्थ-उपदेशकों, नेताओं तथा पत्रकारों में आजकल जो धार्मिक प्रेम के रूप में खोटा (झूठा) दिखावा दिखाई देता है उसे दूर करने के लिये पूर्ण सावधानी रखी जाय। जैन तत्व-ज्ञान, व्यवहारिक-शिक्षण, समाज सुधार और स्वदेश सेवा से सम्बन्धित सभी काम सभी सम्प्रदायों के सयुक्त बल से किये जाय। इसके लिये बम्बई कॉन्फरन्स के समय जो प्रस्ताव नं० २२ पास किया गया था उसका शीघ्र अमल होना यह कॉन्फरन्स चाहती है।

प्रस्ताव २–(सार्वजनिक-जीवदया-खाता, घाटकोपर की प्रशसा)

दुधारू गाय भैंसों तथा उनके बच्चों को कसाई-खाने में जाने से बचाकर उनकी परम रक्षा का जो महान कार्य घाटकोपर सार्वजनिक-जीवदया खाता कर रहा है उसकी यह कॉन्फरन्स प्रशंसा करती है और सभी सघों से तथा ट्रस्टियों से भलामण करती है कि वे इस संस्था की तन, मन और धन से योग्य मदद करें।

प्रस्ताव ३—कॉन्फरन्स के विधान में सशोधन करने के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी बनाई जाती है। यह कमेटी अपने बनाये हुए विधान को जनरल-कमेटी के सभ्यों को पोस्ट द्वारा भेजकर उनकी राय मालूम करे और योग्य प्रतीत हो तो तदनुसार सुधार कर नया विधान छपा कर प्रकट करे।

सभापतिजी, रेजीडेन्ट जनरल-सेक्रेट्री, श्री मेघजीभाई थोभण बम्बई, श्री सूरजमल लल्लुभाई जौहरी, श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री नगीनदासभाई अमुलखराय घाटकोपर, श्री अमृतलाल रायचद भाई जौहरी बम्बई।

प्रस्ताव ६–(जैन शिक्षक बनाने के संबंध में)

जैनशाला, तथा धार्मिक-ज्ञान के साथ २ प्राथमिक-शिक्षण देने वाली अपनी जैन स्कूलों के लिये जैन शिक्षकों की कमी न रहे इसके लिये जहां-जहां सरकार तथा देशी-राज्यों की तरफ से ट्रेनिंग कॉलेज चलते हों वहां २ के जैन स्कॉलरों को जैनधर्म संबंधी शिक्षा देने की तथा उनकी वापिस परिक्षा लेने की व्यवस्था के साथ-साथ उनको छात्रवृत्ति भी दी जाय।

प्रस्ताव १०–('जैन-प्रकाश' की व्यवस्था के संबध में)

यह कॉन्फरन्स आग्रह करती है कि धर्म, संघ और कॉन्फरन्स के हितार्थ जैन प्रकाश की व्यवस्था अब से सभापतिजी अपने हाथ में रखें और इसकी हिंदी तथा गुजराती दोनों भिन्न २ आवृत्ति निकालें।

प्रस्ताव १२–(जैन धर्मानुयायियों में रोटी-बेटी का व्यवहार चालू करने के संबध में)

उच्च-कोटि की जातियों में से जो व्यक्ति खुले रूप में जैनधर्म स्वीकार करें उसके साथ रोटी-बेटी का व्यवहार करना जैनियों का कर्तव्य है, ऐसा यह कॉन्फरन्स तय करती है।

प्रस्ताव १३–(बोर्डिंग को सहायता देने के बारे में)

जेतपुर(कठियावाड़) में स्था० जैन विद्यार्थियों के लिये एक बोर्डिंग-हाउस खोल दिया जाय तो उसके लिये

पांच वर्ष तक ७५)रु मासिक किराये वाला अपना मकान विना किराये के देना और मासिक २५) रु० की आय करा लेना तथा ५० गद्दे अपनी तरफ से बोर्डिंग को भेंट देना-ऐसे वचन जेतपुर निवासी भाई जीवराज देवचंद दलाल की तरफ से प्राप्त हुए थे। अतः इस पर से कॉन्फरन्स यह ठहराती है कि उपरोक्त व्यवस्थानुसार संस्था शुरु हो तब से पाँच वर्ष तक संस्था को व्यवहारिक शिक्षण-फंड में से मासिक ५०) रु० की सहायता दी जाय। संस्था में धार्मिक-शिक्षण का प्रबंध रखना आवश्यक होगा।

इसी तरह के प्रस्ताव जयपुर और ओसिया (मारवाड़) के आस-पास भी बोर्डिंग खुलने पर कॉन्फरन्स की तरफ से ५०) रु० की सहायता देने के किये गये।

प्रस्ताव २०—मेसर्स अमृतलाल रायचंद जौहरी, श्री जेठालाल संघवी, श्री मोतीलालजी मूथा तथा श्री जीवराज देवचंद की एक कमेटी बनाई जाती है। यह कमेटी हिंद के किसी भी भाग में से अपंग जैनों, विधवाओं और अनाथ बालकों को ढूंढ कर उनकी रक्षा के लिये स्थापित की हुई संस्थाओं में उन्हें पहुँचायेगी और शक्य हुआ तो उन्हें वहां से स्वधर्म संबंधी ज्ञान भी मिलता रहे, ऐसा प्रबंध भी करावेगी। इस कार्य के लिये निराश्रित फंड में से ५०) की रकम श्रीयुत अमृतलाल रायचंद जौहरी को सौंप दी जाय।

प्रस्ताव २५ (सादड़ी प्रकरण के संबंध में)

(अ) मारवाड़, मेवाड़ तथा मालवा के स्थानकवासी-भाइयों से यह कॉन्फरन्स आग्रह पूर्वक भलामण करती है कि घाणेराव सादड़ी के स्वधर्मी भाइयों को धर्म के लिये जिस कठिनाई का सामना करना पड़ा है उसका ख्याल करके उनके साथ प्रेम से कन्या-व्यवहार करें।

(ब) गोडवाड़-प्रांत के श्वेताम्बर मूर्ति-पूजक तथा स्थानकवासी जैनों के बीच सैकड़ों वर्षों से लग्न व्यवहार होने पर भी कुछ धार्मिक झगड़ों को निमित्तभूत बना कर सामाजिक ऐक्य में जो विघ्न डाला गया है उसे दूर करने के लिये तथा सामाजिक व्यवहार के बीच में नहीं पड़ने की मुनि-महाराजों से प्रार्थना करने के लिये श्वेताम्बर मूर्तिपूजक कॉन्फरन्स-ऑफिस को यह कॉन्फरन्स समस्त जैन-समाज के हित के लिये आग्रह पूर्वक भलामण करती है।

(क) इस प्रस्ताव को क्रियान्वित करने के लिये आवश्यक-कार्यवाही करने की सत्ता सभापतिजी को दी जाती है।

प्रस्ताव २६—(सादगी धारण करने वाली विधवा बहिनों को धन्यवाद)

श्रीमती केशरबेनजी (सुपुत्री श्री नथमल चौरड़िया), श्रीमती आशीबाई, (सुपुत्री श्री गणपतदासजी पूंगलिया), श्रीमती जीवाबाई (सुपुत्री श्री चतुर्भुजजी बोरा) आदि विधवा बहिनों ने गहने तथा रंगीन-वस्त्र पहनने का त्याग कर हाथ से कती और बुनी हुई खादी के वस्त्र पहनने की जो प्रतिज्ञा धारण की है उसके लिये यह कॉन्फरन्स उनको धन्यवाद देती है और अन्य विधवा-बहिनों को उनका अनुसरण करने की भलामण करती है। शेष-प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

नवम-अधिवेशन, स्थान-अजमेर

कॉन्फरन्स का नवमां अधिवेशन साढ़े पांच वर्ष बाद अजमेर में ता० २२, २३, २४, २५ अप्रैल सन् १९३३ को सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रीयुत हेमचंदभाई रामजीभाई महेता, भावनगर ने की। इस अधिवेशन के स्वागत-प्रमुख राजा बहादुर ज्वालाप्रसादजी थे। यह अधिवेशन विगत अधिवेशनों से अधिक महत्त्वपूर्ण था। विगत

अधिवेशनों में सभी प्रस्ताव सलाहरूप के रूप में ही मुख्यतः हुए थे, परन्तु इस अधिवेशन के प्रस्तावों में स्पष्ट निर्देश दिया गया था। इतना तो मानना ही पड़ेगा कि अजमेर-अधिवेशन स्था० जैन समाज में क्रांति की चिनगारी प्रकट करने वाला था। श्री बृहत्साधु-सम्मेलन के साथ २ यह अधिवेशन होने से ४०-४५ हजार की उपस्थिति इस समय थी। अधिवेशन के लिये खास लोंकाशाह नगर बसाया गया था। यह अधिवेशन अभूत पूर्व था। इस अधिवेशन में आभार प्रस्तावों को छोड़ कर २५ प्रस्ताव पास किये गये थे, जिन में से मुख्य-मुख्य ये हैं:-

प्रस्ताव २-(जेल-निवासी श्री पूनमचंदजी रांका के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिये)

इस कॉन्फरन्स को श्री पूनमचंदजी रांका नागपुर वाले जैसे धार्मिक-नेता की आज की अनुपस्थिति से खेद है। उनके ता० ९ मार्च से लिए गए अनशन व्रत के लिये चिन्ता है। उन्हें खंडवा की गरम-जेल में भेजे गये हैं अतः यह कॉन्फरन्स सरकार से प्रार्थना करती है कि उनकी मांगों को स्वीकार करले अथवा उनको जेल से शीघ्र मुक्त कर दे।

प्रस्ताव ३- (धार्मिक संस्थाओं की संगठित व्यवस्था के विषय में)

यह कॉन्फरन्स प्रस्ताव करती है कि हिन्दुस्तान में स्था० जैनों की जहां २ धार्मिक और व्यवहारिक संस्थाएं चलती हैं या जो नई शुरू हों उन संस्थाओं की तरफ से शिक्षण-क्रम, पाठ्य-पुस्तकें, फंड, बालक-बालिकाओं की संख्या आदि आवश्यक विवरण मंगा कर एकत्रित किया जाय और शिक्षण-परिषद् के प्रस्ताव पर ध्यान देते हुए अब क्या कार्य करने योग्य हैं इस पर सलाहकार और परीक्षक-समिति जैसा पूरा काम करने के लिये एक-बोर्ड नियत किया जाय। इस बोर्ड में हर एक प्रांत की तरफ से एक-एक मेम्बर की नियुक्ति की जाय और सभी शिक्षण-संस्थाएं मिल कर अपने पांच सभ्यों को इस बोर्ड में भेजें।

प्रस्ताव ४ – (वीर-संघ के विषय में)

श्री श्वे० स्थानकवासी समाज के हित के लिये स्वयं अपना जीवन-समर्पण करने वाले सज्जनों का वीर-संघ और त्यागी-वर्ग (ब्रह्मचारी-वर्ग) स्थापित करने की आवश्यकता को यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। इसके लिये कौन २ से साधनों की आवश्यकता है, उनको किस प्रकार एकत्रित करना, किन २ सेवकों की कैसी योग्यता होनी चाहिये, संघ का क्रम और उसके नियमोपनियम क्या हैं इत्यादि हर एक विषय का निर्णय करने के लिये निम्नोक्त भाइयों की एक कमेटी नियुक्त की जाती है। उक्त दोनों वर्गों द्वारा जैनधर्म का प्रचार भी किया जायगा अतः इस संबंध में आज से तीन मास के अंदर यह कमेटी अपनी स्कीम तैयार करके 'प्रकाश' में प्रकट करे और जनरल-कमेटी में पेश करे। इस संबंध में जो कोई सूचनाएं करनी हों वे कमेटी के मंत्रीजी को देवें। कमेटी के सभ्यों के नाम नीचे मुजब हैं:-

प्रमुख श्री और मंत्री श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्री वेलजी भाई लखमशी नप्पु बम्बई, श्री मोती-लालजी मूथा सतारा, श्री जेठालालभाई रामजीभाई बम्बई, श्री अमृतलाल रायचंद जौहरी बम्बई, ला० जगन्नाथजी जैन खार, डॉ० वृजलालजी डी० मेघाणी बम्बई, तथा श्री दुर्लभजीभाई जौहरी जयपुर।

इस कमेटी का कोरम चार का होगा। मंत्री पद पर श्री चिमनलाल चक्कुभाई शाह रहेंगे।

प्रस्ताव ५- (जैन-फिर्कों की एकता के विषय में)

जैनों के सभी फिर्कों में परस्पर प्रेम बढ़ाने से जैनधर्म प्रगति पाकर आगे बढ़ सकता है। ऐसा यह कॉन्फरन्स मानती है और इसलिये प्रस्ताव करती है कि जैनियों के अन्य फिर्कों को उनकी कॉन्फरन्स द्वारा प्रेम

बढ़ाने तथा मतभेद भूल कर ऐक्य-साधन से जो-जो कार्य संयुक्त-बल से हो सकें, वे सभी कार्य करने की विनती करें। यह प्रवृत्ति कॉन्फरन्स ऑफिस करेगा।

प्रस्ताव ६—(सादड़ी के स्थानकवासी-जैनों के विषय में)

एकता के इस युग में सादड़ी के स्थानकवासी भाइयों का जो अठारह वर्ष से श्वे० मूर्तिपूजक-भाइयों ने बहिष्कार किया है इस विषय में बम्बई कॉन्फरन्स के प्रस्तावानुसार श्वे० मूर्तिपूजक कॉन्फरन्स को इस कॉन्फरन्स की तरफ से पत्र दिया गया था, लेकिन उसने मौन ही रक्खा इसलिये यह कॉन्फरन्स उसके इस व्यवहार पर अत्यन्त असंतोष प्रकट करती है और उससे पुनः विनती करती है कि वह इस बहिष्कार को दूर करने का भगीरथ प्रयत्न करे और एकता संबधी अपनी कॉन्फरन्स में किये हुए प्रस्तावों का सच्चा परिचय दे।

नोट-यह कॉन्फरन्स खुशी से यह नोंध करती है कि श्रीयुत गुलाबचंदजी ढढ्ढा की सूचनानुसार सादड़ी के दोनों पक्षों का समाधान करने के लिये दोनों पक्षों के चार-चार और एक मध्यस्थ—इस प्रकार नौ सभ्यों की एक पंच-कमेटी नियत कर जो निर्णय आवे वह दोनों पक्षों को मान्य रखने का ठहराया जाता है। अपनी तरफ से चार नाम निम्न लिखित हैं :—

श्री दुर्लभजीभाई जौहरी जयपुर, श्री नथमलजी चौरडिया नीमच, दी० ब० श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, तथा श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर। मध्यस्थ – पं० प्यारेकिशनजी भाबुआ दीवान।

मूर्तिपूजक जैनों की तरफ के चार नाम श्री गुलाबचंदजी ढढ्ढा से लेकर कॉन्फरन्स-ऑफिस भिजवा दिए जाए जिससे कार्यारंभ हो सके।

प्रस्ताव ७—(खादी और स्वदेशी-प्रेम बढ़ाने के विषय में)

अहिंसा-धर्म के कट्टर उपासकों को चर्बी वाले और रेशमी कपड़े त्याज्य होने चाहिये। बिना चर्बी का स्वदेशी तथा हाथ का कता बुना शुद्ध कपड़ा काम में लाने से स्वदेश-सेवा का भाव भी प्रकट होता है। इस लिये यह कॉन्फरन्स सभी को शुद्ध कपड़े और स्वदेशी चीज काम में लाने का आग्रह करती है।

प्रस्ताव ८—(साधु-सम्मेलन कार्यवाही-योजना की स्वीकृति)

साधु-सम्मेलन के लिये दूर २ प्रांतों से बहुत कष्ट उठा कर जो २ मुनिराज यहां पधारे हैं उनका यह सभा उपकार मानती है। साधु-सम्मेलन का कार्य अत्यन्त दुःसाध्य और कष्टमय होते हुए भी मुनिराजों ने १५ दिनों में परिश्रमपूर्वक पूरा किया है। इस सम्मेलन में मुनि-महाराजों ने जो योजना बनाई है, वह इस सभा को मंजूर है। पूज्य श्री जवाहरलालजी म० ने जो जाहिर निवेदन का नोट दिया वह ऑफिस में रख लिया गया है। पूज्य श्री जवाहरलालजी म० इस सम्मेलन में १६३ साधु-साध्वियों की ओर से आते हैं, ऐसा फॉर्म भरकर आया है। योजनायें बनाने में समय २ पर शामिल रहकर सम्मति देते रहे हैं अतः वे योजनायें उन पर भी बंधनकारक हैं।

ये योजनायें समस्त स्था० जैन साधुओं के लिये बनाई गई हैं, जो उपस्थित और अनुपस्थित सभी साधुओं के लिये बंधनकारक हैं। ऐसा यह कॉन्फरन्स ठहराती है।

रतनचंदजी जैन अमृतसर, (मंत्री) ठाकुर किशनसिंहजी चौधरी (सदस्य), ठा० सुगनसिंहजी चौधरी (सदस्य), डॉ० श्री बृजलाल मेघाणी (सदस्य), श्री डाह्यालाल मणिलाल मेहता (सदस्य), श्री सुगनचंदजी लूणावत, (सदस्य) श्री शांतिलाल दुर्लभजीभाई जौहरी (सदस्य), श्री सेठ राजमलजी ललवानी जामनगर (सदस्य), श्री हरलालजी बरलोटा पूना (सदस्य), श्री दीपचंदजी गोठी बेतूल (सदस्य), श्री चांदमलजी मास्टर मन्दसौर (सदस्य), श्री छोटेलालजी जैन दिल्ली (सदस्य), श्री मगनमलजी कोटेचा अचरपाकम् (सदस्य), श्री आनन्दराजजी सुराणा जोधपुर (सदस्य), श्री अमोलखचंदजी लोढ़ा बगड़ी, (सदस्य)।

श्री श्वे० स्था० जैन महिला–परिषद् अजमेर

श्री श्वे० स्था० जैन महिला परिषद् का अधिवेशन ता० २५ अप्रैल सन् १९३३ को अजमेर में हुआ था। इसकी अध्यक्षता श्रीमती भगवती देवीजी (धर्मपत्नी सेठ अचलसिंहजी जैन आगरा) ने की। स्वागत-भाषण श्रीमती केसर बेन चौरडिया (सुपुत्री श्री नथमलजी चौरडिया, नीमच) ने पढ़ा। महिला-परिषद् में जो प्रस्ताव पास किए गए थे उनमें से मुख्य ये हैं:—

प्रस्ताव १—(शिक्षण प्रचार के विषय में)

यह महिला-परिषद् समस्त जैन-समाज की महिलाओं में शिक्षा की कमी पर खेद प्रकट करती है और भविष्य में पुरुषों की तरह ही अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये सब बहिनों से अनुरोध करती है।

प्रस्ताव २—(पर्दा-प्रथा हटाने के विषय में)

यह परिषद् पर्दे की प्रथा को स्त्री-जाति की उन्नति में बाधक और त्याज्य समझ कर उसे घृणा की दृष्टि से देखती है और सब बहिनों से उसे छोड़ने का अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ३—(स्वदेशी-वस्त्रों के विषय में)

यह परिषद् समस्त बहिनों से अपील करती है कि वे अपने देश तथा धर्म की रक्षा के लिये खद्दर या स्वदेशी-वस्त्रों का ही उपयोग करें।

प्रस्ताव ४—(बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह के विरोध में)

यह परिषद बाल-विवाह तथा वृद्ध-विवाह को स्त्री-जाति के अधिकारों का हरण करने वाला तथा उन पर अत्याचार समझती है। अतः इन्हें सर्वथा बंद कर देने का जोरदार अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ५—(रोने-पीटने की कुप्रथा का त्याग करने के विषय में)

यह परिषद् स्त्रियों में प्रचलित रोने-पीटने की प्रथा को निन्दनीय मानती है और बहिनों से अनुरोध करती है कि वे इस अमानवीय कार्य को बिल्कुल बंद कर दें।

प्रस्ताव ६—(कुरूढ़ियों के त्याग के विषय में)

यह परिषद् उन सभी निरर्थक-रूढ़ियों की निंदा करती है, जो हमारे स्त्री-समाज में प्रचलित हैं। जैसे कि ग्गालियाँ, कामोत्तेजक गीतों का गाना, मिट्टी ढेले (शीतलादि) कबरें, भैरू भवानी की पूजा करना आदि। साथ ही सभी बहिनों से इन्हें छोड़ने का अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ७—(कन्या-गुरुकुल के विषय में)

यह परिषद् श्री सेठ नथमलजी चौरडिया को उनके सत्तर हजार रुपयों के दान पर धन्यवाद देती है और आग्रह करती है कि जितना शीघ्र हो सके इस धन से कन्या-गुरुकुल की स्थापना की जाय।

श्री श्वे० स्था० जैन शिक्षा परिषद

अजमेर-अधिवेशन के समय विशेष रूप से निर्मित 'लौंका नगर' में श्वे० स्था० जैन परिषद का भी आयोजन किया गया था। इस परिषद के अध्यक्ष शांति-निकेतन के प्रो० श्री जिनविजयजी थे। बनारस से पं० सुखलाल जी भी आये थे। अध्यक्ष का विद्वतापूर्ण भाषण हुआ था। परिषद मे पास हुए मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार हैं :-

प्रस्ताव १—(स्था० जैन सस्था का सगठन)

यह परिषद ऐसा मन्तव्य प्रकट करती है कि स्थानकवासी जैन-समाज की भिन्न-भिन्न प्रांतों मे चलने वाली अथवा भविष्य मे शुरु होने वाली सभी शिक्षण सस्थायें बोर्डिंग, बालाश्रम, गुरुकुल आदि कम मे कम खर्च में अधिक कार्यसाधक सिद्ध हों इस हेतु वे सभी सस्थायें एक ऐसे तत्र (व्यवस्था) के नीचे आवे कि जो तत्र उन सस्थाओं का निरीक्षण, शक्य सहयोग और उनकी कठिनाइयॉ तथा त्रुटियो को दूर करने का जवाबदारी अपने उपर ले और इस तरह उस तत्र को स्वीकार कर सभी संस्थाएं उनके प्रति जवाबदार रहें।

प्रस्ताव २—(धार्मिक पाठय-क्रम के विषय मे)

यह शिक्षण परिषद निम्न तीन बातों के लिये विशेष प्रबध करने की आवश्यकता महसूस करती है :-

(अ) केवल धार्मिक-पाठशालाओं मे तथा अन्य सस्थाओ के लिये धार्मिक अभ्यास-क्रम ऐसा होना चाहिए कि वह जगत को उपयोगी सिद्ध हो तथा समयानुकूल भी हों।

(ब) गुरुकुल तथा ब्रह्मचर्याश्रम के लिये, धार्मिक तथा व्यवहारिक शिक्षण के लिये और भिन्न सस्थाओं के लिये उक्त दृष्टि से अभ्यास-क्रम बनाना चाहिये।

(क) उपरोक्त प्रस्तावों को अमल मे लाने के लिये पाठ्य पुस्तकें तथा आवश्यक पाठ्य पुस्तकें तय करनी चाहियें।

प्रस्ताव ३—(साधु-सध्वियों के विषय मे)

यह शिक्षण-परिषद् वर्तमान परिस्थिति मे साधु सध्वियों के लिये व्यवस्थित तथा कार्य-साधक अभ्यास की खास आवश्यकता मानती है। जिससे शास्त्रोक्त तथा इतर ज्ञान भलि भांति प्राप्त किया जाय। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये इस परिषद के तत्वावधान में एक केन्द्र-सस्था तथा अन्य सस्थाएं प्रान्तवार स्थापित करे। इस सस्था का मुख्य तत्त्व ऐसा होना चाहिये कि समस्त साधु-सघ को अनुकूल हो और शिक्षण के लिये बाधक न हो।

इस सस्था मे पढ़ने वाले साधु-सध्वियों को उनकी योग्यतानुसार प्रमाण-पत्र देना और विविध शिक्षण द्वारा उनके जीवन को अधिक कार्यसाधक एव-विशाल बनाना।

प्रस्ताव ४—(दीक्षार्थियों की परीक्षा के विषय में)

इस परिषद की दृढ़ मान्यता है कि साधु-पद सुशोभित करने और सुशिक्षित बनाने के लिये प्रत्येक साधु-साध्वी दीक्षार्थी की परीक्षा करें। योग्य शिक्षण देने से पहले दीक्षा देने से वह गुरु-पद की अवहेलना करेगा अतः साधुत्व के लिये निरीक्षण और परीक्षा कर लेने के बाद ही दीक्षा दी जाय।

दसवां-अधिवेशन, स्थान-घाटकोपर

कॉन्फरन्स का दसवां अधिवेशन अजमेर-अधिवेशन के ८ वर्ष बाद सन् १९४१ में घाटकोपर (बम्बई) में किया गया इस अधिवेशन के प्रमुख श्रीमान् सेठ वीरचन्द भाई मेघजी थोभण बम्बई थे। स्वागताध्यक्ष

श्री धनजीभाई देवशी भाई घाटकोपर थे। इस अधिवेशन में कुल २८ प्रस्ताव पास किये गये थे, जिनमें से मुख्य ये थे :—

प्रस्ताव ३—(राष्ट्रीय महासभा की प्रवृत्तियों में सहयोग देने के विषय में)

राष्ट्रीय महासभा के रचनात्मक कार्य-क्रम में और मुख्यतः निम्नोक्त कार्यों मे शक्य सहयोग देने के लिये यह कॉन्फरन्स प्रत्येक भाई-बहिन से साग्रह अनुरोध करती है।

खादी से आर्थिक असमानता दूर होती है। सामाजिक समानता की भावना प्रकट होती है। गरीबी और भुखमरी कम होती है। खादी में कम से कम हिंसा होती है अतः प्रत्येक जैनधर्मी का कर्तव्य है कि वह खादी का ही उपयोग करे।

ग्रामोद्योग के उत्तेजन मे तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग में राष्ट्र की आर्थिक आबादी है, हिन्द के गावों का उद्धार है और राजकीय परतन्त्रता दूर करने का उत्तम साधन है। अतः प्रत्येक जैनी को स्वदेशी वस्तुए ही उपयोग में लानी चाहिये।

जैन धर्म में अस्पृश्यता को कोई स्थान नही है। जैन-धर्म प्रत्येक मनुष्य की सामाजिक-समानता को मानता है अतः प्रत्येक जैन का यह कर्तव्य है कि अस्पृश्यता को दूर करें और राष्ट्रीय महासभा हरिजन उद्धार के के कार्य में योग्य सहयोग दे।

प्रस्ताव ४—(धार्मिक शिक्षण-समिति की स्थापना)

यह कॉन्फरन्स मानती है कि जैन-धर्म के सस्कारों का सिन्चन करने वाला धार्मिक-शिक्षण हमारी प्रगति के लिये आवश्यक है। अत. चालू शिक्षण मे जो कि निर्जीव और सत्वहीन है, परिवर्तन कर उसे हृदय-स्पर्शी और जीवित-शिक्षण बनाने को नितान्त आवश्यकता है। इसके लिये शिक्षण-क्रम और पाठ्य-क्रम तैयार करने के लिये तथा समस्त हिंद में एक ही क्रम से धार्मिक-शिक्षण दिया जाय, परीक्षा ली जाय तथा इसके लिये एक योजना बनाने के निमित्त निम्नोक्त भाइयों की को-ओप्ट करने की सत्ता के साथ एक धार्मिक-शिक्षण-समिति बनाई जाती है। इस शिक्षण-समिति की योजना मे जैन-नीति का गहरा अभ्यास करने वालों के लिये भी अभ्यास-क्रम का प्रबध किया जायगा।

श्रीमान् मोतीलालजी मूथा, सतारा प्रमुख, श्रीमान खुशालभाई खेंगारभाई बम्बई, श्रीमान जेठमलजी सेठिया बीकानेर, श्रीमान् चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्रीमान मोतीलालजी श्रीश्रीमाल रतलाम, श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्रीमान् लाला हरजसरायजी जैन अमृतसर, श्रीमान् केशवलाल अम्बालाल खम्भात, श्रीमान् चुन्नीलाल नागजी वोरा राजकोट, श्रीमान् माणकचन्दजी किशनदासजी मूथा नगर, श्रीमान् धीरजलाल के० तुरखिया ब्यावर मन्त्री।

प्रस्ताव ५—(महावीर-जयन्ती की छुट्टी के विषय में)

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स भगवान महावीर के जन्म दिवस की आम छुट्टी के लिये सभी प्रान्तीय एव केन्द्रीय-सरकार से अपनी माग करती है। भारत के समस्त जैनियों को चाहिये कि वे इसके लिये सहयोग पूर्वक योग्य प्रवृत्ति करें।

(ब) जिन २ देशी राज्यों ने अपने २ प्रान्तो में भगवान महावीर के जन्म-दिवस की आम छुट्टी स्वीकार कर ली उनका कॉन्फरन्स पूर्ण आभार मानती है और शेष राज्यों से अनुरोध करती है कि वे भी तदनुसार आम छुट्टी की जाहिरात करें।

(ख) सभी जैन भाइयों को उस दिन अपना व्यापार आदि बंद रखने का अनुरोध करती है।

प्रस्ताव ६—(कन्या-शिक्षण के विषय में)

कन्या-शिक्षा की आवश्यकता के प्रति आज दो मत न होने पर भी इस दिशा में हमारी प्रगति बहुत मंद और असंतोषजनक है। अतः अपनी कन्याओं को योग्य शिक्षण देकर संस्कारी बनाना प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है।

प्रस्ताव ७—(सामाजिक-सुधार के विषय में)

बाल-लग्न, असमान वय के विवाह, कन्या-विक्रय तथा बहु-पत्नीत्व की अनिष्टता के बारे में मतभेद न होने पर भी यत्र-तत्र ऐसे बनाव बनते रहे हैं जो कि शोचनीय हैं। ऐसे प्रसग संभव न हों ऐसा लोकमत जागृत करना चाहिये और ऐसे अनिष्ट प्रसगों में किसी भी स्थानकवासी स्त्री-पुरुषों को भाग नहीं लेना चाहिये। यह कॉन्फरन्स भलामण करती है कि:—

१. विवाह की वय कन्या की कम से कम १६ वर्ष की और वर की २० वर्ष की होनी चाहिये।

२. विवाह-सम्बन्ध स्थापित करने में आज की प्रचलित भौगोलिक और जाति-विषयक मर्यादा आधुनिक सामाजिक-परिस्थिति के साथ बिलकुल असंगत और प्रगति में बाधक है अतः इन मर्यादाओं को दूर करना चाहिये।

३ लग्न वर-वधु की सम्मति से होने चाहियें। जिन २ क्षेत्रों में इसके लिये प्रतिबंध हो वहां ये शीघ्र उठ जाने चाहिये।

प्रस्ताव ८—(पूना बोर्डिंग का मकान फंड करने के विषय में)

पूना बोर्डिंग के लिये मकान बनाने के लिये बोर्डिंग समिति ने पूना में प्लॉट (जमीन) खरीद ली है, जहां ८० विद्यार्थी रह सकें ऐसा मकान बांधने का निर्णय किया जाता है। उस मकान के लिये तथा बोर्डिंग में अभ्यास करने वाले गरीब विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने के लिये फंड करने का प्रस्ताव किया जाता है और प्रत्येक भाई-बहिन इसमें अपना शक्य सहयोग अवश्य दे ऐसा यह कॉन्फरन्स अनुरोध करती है। यह फंड बोर्डिंग-समिति एकत्रित करे और उसने यथा-शीघ्र मकान बंधावे ऐसा निश्चय किया जाता है।

प्रस्ताव १०—(मुनि-समिति की बैठक करने के विषय में)

साधु-साध्वी संघ की एकता ही स्थानक वासी समाज के अभ्युत्थान का एकमात्र उपाय है। इसके लिये मुनि-समिति के चार सभ्यों ने एक योजना का मसविदा तैयार किया है, उसका मूल सिद्धान्त उपयोगी है। यह योजना साधु-समिति द्वारा विशेष विचारणीय है अतः अजमेर साधु-सम्मेलन में नियोजित मुनि-समिति की एक बैठक योग्य समय और स्थान पर बुलाने का यह अधिवेशन प्रस्ताव करता है। उस कार्य को करने के लिये निम्नोक्त भाइयों की एक समिति बनाई जाती है।

श्री चुनीलाल भाईचंद महेता बम्बई, श्री मानकलाल अमुलखराय मेहता बम्बई, श्री जगजीवन दयालजी बम्बई, श्री गिरधरलाल दामोदर दफ्तरी बम्बई, श्री जीवनलाल छगनलाल सघवी अहमदाबाद, श्री दीपचंद गोपालजी थाना व बम्बई, श्री जमनादास उदाणी घाटकोपर, श्री कालुरामजी कोठारी ब्यावर, श्री पूनमचंदजी गांधी हैद्राबाद, दी० ब० श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, श्री रतनलालजी नाहर बरेली, रा० सा० श्री टेकचदजी जैन जडियाला, श्री ला० रतनचदजी हरजसरामजी जैन अमृतसर, दी० ब० श्री बिशनदासजी जम्मु, श्री चोंडीरामजी मूथा पूना, श्री नवलमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री कल्याणमलजी वेद अजमेर, श्री प्रेमराजजी बोहरा पीपलिया, श्री जीवाभाई भणसाली पालनपुर, श्री मानमलजी गुलेच्छा खींचन, श्री चुन्नीलाल नागजी वोरा राजकोट, रा० सा० श्री ठाकरसीभाई

प्रस्ताव—१० (साधु-सम्मेलन के नियम पलवाने के लिये श्रावक-समिति)

साधु-सम्मेलन द्वारा प्रदत्त आज्ञा और चतुर्विध श्री-संघ को की हुई प्रार्थना को शिरोधार्य कर साधु-सम्मेलन के नियमों का योग्य पालन कराने के लिये श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स को एक स्टेन्डिग कमेटी बनाने की आवश्यकता प्रतीत होती है। उक्त कमेटी में ३८ प्रान्तों के ३८ मैम्बर चुने जावें। इनके अतिरिक्त प्रमुख सा० और दोनों मन्त्रीजी मिलकर कुल ४१ मैम्बर चुने जाय। ये सभी मैम्बर मिलकर १० को-ओप्ट मैम्बरों का चुनाव करें। उपरोक्त क्रम से निम्नोक्त नाम प्रांतवार चुने गये हैं:—

श्री ला० टेकचदंजी जंडियाला, श्री चुनीलालजी डेराइस्माइलखान, श्री ला० गोकलचदंजी नाहर दिल्ली, श्री आनदराजजी सुराणा जोधपुर, श्री भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, श्री अनोपचदजी पुनमिया सादड़ी, श्री केशुलालजी ताकड़िया उदयपुर, श्री कन्हैयालालजी भडारी इन्दौर, श्री हीरालालजी नांदेचा खाचरोद, श्री चोथमलजी मूथा उज्जैन, श्री कल्याणमलजी वेद अजमेर, श्री सरदारमलजी छाजेड़ शाहपुरा, श्री सुलतानसिंहजी जैन बड़ौत, श्री फूलचदंजी जैन कानपुर, श्री अचलसिंहजी जैन आगरा, श्री दीपचदंजी गोठी बेतुल, श्री सुगनचदजी लुणावत धामणगाव, श्री रतीलाल हकिमचद कलोल, श्री वाडीलाल डाह्याभाई अहमदावाद, श्री जेसिंहभाई हरकचद अहमदावाद, डॉ० श्री पोपटलाल श्री कमलाल संघवी, श्री मोहनलाल मोतीचद गठडा, श्री पुरुषोतमचद झवेरचंद जुनागढ, श्री उमरसीभाई कानजी देशलपुर, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, दी० ब० श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, श्री पूनमचंदजी नाहटा भुसावल।

यह जनरल स्टेंडिंग-कमेटी के मैम्बर आगामी कॉन्फरन्स जब तक नई कमेटी न चुने वहां तक कायम रहे। कोई भी साधु-साध्वी शिथिल बनें और श्रावकों की तरफ से उनके लिये योग्य कार्यवाही करने की मांग साधुओं की कमेटी से की गई हो तो तीन मास के अदर वह योग्य कार्यवाही करे। यदि वह तदनुसार न करे और आवश्यक कदम न उठावे तो यह स्टेंडिंग-कमेटी इस प्रबध मे विचार कर अन्तिम निर्णय दे। इस प्रकार यह कॉन्फरन्स निश्चय करती है।

प्रस्ताव—११ (आगम-विद्या-प्रचारक-फड के विषय में)

यह सभा श्रीयुत हंसराजभाई लक्ष्मीचदजी की ओर से आई हुई 'हंसराज जिनागम विद्या प्रचारक-फंड" नामक स्कीम पढ़ कर इसके अनुसार उनके १५०००) रु० की भेट सधन्यवाद स्वीकार करने का प्रस्ताव करती है। और उसके विषय में उनके साथ समस्त प्रबध करने का अधिकार जनरल कमेटी को देती है। तथा श्री हंसराज भाई से यह विनती करने का तय करती है कि जहां तक सभव हो ग्रन्थों का प्रकाशन हिन्दी भाषा में हो तो अधिक उपयोगी होगा।

प्रस्ताव १२—(कुप्रथाओं को त्यागने के विषय में)

अपनी समाज मे चलने वाली निम्न बातें धर्म विरुद्ध और अनुचित हैं। जैसे कि कन्या-विक्रय वर-विक्रय, वृद्ध-विवाह, बाल-विवाह, बहु-विवाह, अनमेल-विवाह, मृत्युभोज, वैश्या-नृत्य, आतिशबाजी, हाथीदांत, रेशम आदि को मांगलिक समझ कर उपयोग करना, विधवाओं को अनादर की दृष्टि से देखना, अश्लील गीतों का गाना, होली-खेलना, लौकिक-पर्वो का मनाना, मिथ्यात्वी देवी-देवताओं को मनाना आदि बातें शीघ्र बंद हों, तो ऐसी साधु-सम्मेलन की भी सूचना है। अतः यह कॉन्फरन्स सभी जैन भाइयों से आग्रह करती है कि इन कुरिवाजों को यथा-शीघ्र छोड़ दें।

प्रस्ताव १३—(धार्मिक-उत्सवों में भी कम खर्च करने के विषय में)

धर्म के निमित्त होने वाले तप-महोत्सव, दीक्षा-महोत्सव, संथारा-महोत्सव, चातुर्मास में दर्शनार्थ आना-जाना, लोच-महोत्सव तथा मृत्यु-महोत्सव आदि के लिये आमंत्रण देना उत्सव करना और अधिक खर्च करना यह सब धार्मिक और आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद नहीं है। ऐसा साधु-सम्मेलन का भी मन्तव्य है। अतः उक्त उत्सवों में खर्च कम किया जाय।

प्रस्ताव १४—(सिद्धान्त-शाला के विषय में)

वैरागियों को शिक्षा देने के लिए अनुकूल-स्थान पर सिद्धान्त-शाला खोलना आवश्यक प्रतीत होता है। फिलहाल तो सेठ हंसराज भाई के दान का कार्य जहां आरम्भ हो वहीं पर शाला का कार्य शुरू किया जाय। दीक्षित मुनिराज भी अपने कल्पानुसार सिद्धान्त-शाला का लाभ ले सकेंगे। पाँच वैरागी मिलने से मासिक १००) रु० श्री जैन ट्रेनिंग-कालेज फंड में से दिये जावें। सिद्धान्त-शाला की व्यवस्था, नियमोपनियम निश्चय करना, और आचार संबंधी क्रियाओं में विद्वान मुनियों की सलाह अनिवार्य होगी।

प्रस्ताव १६—(श्रावक-जीवन के विषय में)

मुनिवर्ग के सुधार की जितनी आवश्यकता है उतनी ही श्रावक-श्राविकाओं के जीवन सुधार और धार्मिक-भावना से वृद्धि करने की भी आवश्यकता है अतः साधु-सम्मेलन की तरफ से जो निम्न सूचनायें आई हैं उनका पालन-करने के लिये यह कॉन्फरन्स सभी भाई-बहिनों से अनुरोध करती है।

(१) पांच वर्ष के बालक तथा बालिकाओं को धार्मिक शिक्षा दी जावे।
(२) १८ वर्ष तक लड़के को व १४ वर्ष तक लड़की को ब्रह्मचारी रखना चाहिये।
(३) छः तिथियों में पलिलोती (हरी) का त्याग करें।
(४) रात्रि-भोजन का त्याग करें।
(५) कन्द-मूल का त्याग करें। जीमणवार में कंद-मूल का उपयोग न करें।
(६) पर्व के दिन उपवास आदि व्रत करें और ब्रह्मचर्य रखें। सामायिक-प्रतिक्रमण अवश्य करें।
(७) अभक्ष्य-पदार्थों का सेवन बन्द करें।
(८) विधवा-बहिनों के साथ आदर का आचरण करना चाहिये।
(९) हर रोज श्रावक को कम से कम सामायिक और स्वाध्याय तो अवश्य करना चाहिये।
(१०) प्रान्त वार ४१ गृहस्थों की कमेटी जो साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों का पालन कराने का ध्यान रखेगी वही श्रावकों के नियम पालन की भी देख-रेख रखे।

प्रस्ताव १७—(दान प्रणालि द्वारा कॉन्फरन्स की सहायता के विषय में)

अपनी समाज में दान की नियमित प्रणालि शुरु हो और सामाजिक-सुधार का कार्य कॉन्फरन्स भली प्रकार कर सके, इसके लिये यह कॉन्फरन्स सभी स्थानकवासी जैनों से आग्रह करती है कि—

(अ) प्रत्येक स्थानकवासी जैन के घर से प्रतिदिन एक पाई नियमित निकाली जाय और इस तरह मासिक या छः मासिक रकम एकत्रित करके हरएक गांव का श्री-संघ कॉन्फरन्स को भेजता रहे।

(ब) हिंद में हर एक स्था० जैन अपने यहां जब भी विवाह-शादी हो तो उस समय १) रु० कॉन्फरन्स फंड में दे।

(स) लग्न, जीमनवार, धार्मिक-उत्सव (दीक्षा, तप, मृत्यु, लोच) आदि के खर्च घटाकर बचत की रकम पारमार्थिक कार्य में लगाने के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को भेज दें। कॉन्फरन्स, दाता की इच्छानुसार सदुपयोग करेगी।

नोट – (अ, ब) के अनुसार आई हुई सहायता का उपयोग चार आना-फंड की तरह भिन्न-भिन्न पारमार्थिक कार्यों में होगा।

प्रस्ताव १८—(कॉन्फरन्स-ऑफिस-कार्यवाही हिन्दी मे हो)

हिन्दी भाषा में अधिक लोग समझते हैं और राष्ट्रीय-भावना से भी हिन्दी का प्रयोग करना योग्य है। अतः यह कॉन्फरन्स तय करती है कि कॉन्फरन्स की कार्यवाही जहां तक हो सके हिन्दी मे की जाय।

प्रस्ताव १९—(जीव-दया के विषय मे)

दूध देने वाले पशुओं का कत्ल होने से देश का पशु धन नष्ट होता है तथा धर्म, राष्ट्र और समाज को धार्मिक तथा आर्थिक दृष्टि से भयकर हानि होती है। उसको रोकने में ही सच्ची जीव-दया है। अतः इस सबध में होने वाले भिन्न २ सस्थाओं के प्रयास अधिक उपयोगी और कार्यसाधक हों, ऐसा प्रबध करने के लिये यह परिषद् निम्नोक्त सज्जनों की एक कमेटी बनाती है और सभी जैनों से अपने घर गाय-भैंस रखने का आग्रह करती है।

श्री वर्धमानजी पित्तलिया, रतलाम, श्री अमृतलाल रायचद भाई जौहरी बम्बई, श्री मोतीलालजी मूथा सतारा, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्री जगजीवन दयाल भाई।

प्रस्ताव २०—(एकल-विहारी साधु-साध्वियों के विषय में)

वर्तमान समय मे एकल विहार असह्य होने से यह कॉन्फरन्स अकेले विचरने वाले साधु-साध्वियों को चेतावनी देती है कि वे आषाढ़ शुक्ला १५ तक वे किसी न किसी सम्प्रदाय मे मिल जाय। यदि वे नहीं मिले तो कोई भी श्री-सघ एकल-विहारी साधु का चतुर्मास न करावे। वृद्धावस्था, अस्वस्थता, आदि अनिवार्य कारणों से अकेले रह गये हों तो उनकी बात अलग है। चारित्र-हीनों का यह भेष रखना जैन समाज को धोखा देना है। इस तरह साधु-भेष रखने का उन्हें कोई हक नहीं है, जो कि धार्मिक चिह्न हैं। अतः किसी भी ऐसे भेषधारी में दोष देख कर उनका भेष उतारने का प्रयत्न भी श्री-सघ कर सकेगा और कॉन्फरन्स भी योग्य कार्यवाही करेगी। बीमारी, वृद्धावस्था आदि से विहार न कर सकने वालों की सेवा में सम्प्रदाय के साधुओं को भेजना चाहिये।

प्रस्ताव २१—(साहित्य-निरीक्षण के लिये उप-समिति)

अपनी समाज में साहित्य-प्रकाशन का कार्य बढ़ाना जरूरी है, परन्तु जो भी साहित्य हो वह समाज और धर्म को उपयोगी होना चाहिये। अतः यह कॉन्फरन्स प्रकाशन के योग्य साहित्य को सर्टिफाइड (प्रमाणित) करने के लिये निम्न साधुओं तथा श्रावकों की एक समिति नियत करती है। हर तरह का साहित्य ऑफिस द्वारा इस समिति को भेजकर सर्टिफाई कराकर प्रकट किया जाय।

शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म०, उपाध्याय प० मुनि श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म०, पं० मुनि श्री घासीलालजी म०, श्री भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री हरजसरायजी जैन अमृतसर, श्री ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी देवास, श्री धीरजलाल भाई के० तुरखिया, ब्यावर।

प्रस्ताव २२—(समाज सेवकों का सम्मान)

यह कॉन्फरन्स श्री दुर्लभजीभाई जौहरी की अनन्य धर्म-सेवा की कदर करते हुए 'जैन धर्मवीर' की और श्री नथमलजी चोरड़िया को 'जैन समाज-भूषण' की उपाधि से सुशोभित करती है।

प्रस्ताव २३—(बीकानेर-सरकार से अनुरोध)

श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० द्वारा रचित 'सद्धर्म-मंडन' और चित्रमय अनुकम्पा-विचार नामक जो पुस्तकें प्रकट हुई हैं, उनके विषय में बीकानेर सरकार की ओर से बीकानेर निवासी स्थानकवासी जैनियों को ऐसा नोटिस मिला है कि ये पुस्तकें जब्त क्यों न की जावें ? इस नोटिस का उत्तर बीकानेर निवासी स्था० जैनियों की ओर से बीकानेर गवर्नमेंट को दिया जा चुका है। आशा है बीकानेर गवर्नमेंट उस पर न्याय दृष्टि से विचार करेगी। फिर भी यह कॉन्फरन्स बीकानेर-सरकार से प्रार्थना करती है कि उक्त दोनो पुस्तकें धार्मिक विचारों का प्रचार करने के लिये और स्था० जैन समाज को अपने धर्म-मार्ग पर स्थिर रखने के निमित्त से ही प्रकाशित की गई है, किसी के धार्मिक-भावों पर आघात पहुँचाने के लिये नहीं। अतः बीकानेर-सरकार इन पुस्तकों पर हस्तक्षेप करने की कृपा करे।

नोटः—इस प्रस्ताव की नकल बीकानेर-नरेश को भेजने की सत्ता प्रमुख सा० को दी जाती है।

शेष प्रस्ताव आभारात्मक थे। इस अधिवेशन मे लींबड़ी-नरेश सर दौलतसिंहजी पधारे थे अतः उनका आभार माना गया।

इस अधिवेशन के साथ २ श्री स्था० जैन नवयुवक परिषद, महिला परिषद और शिक्षण परिषद भी हुई थी-जिनकी संक्षिप्त-कार्यवाही नीचे दी जाती है।

श्री श्वे० स्था० जैन युवक-परिषद, अजमेर

स्था० जैन युवक-परिषद का अधिवेशन सन् १९३३ में ता० २४ अप्रैल को सेठ अचलसिंहजी जैन आगरा की अध्यक्षता में अजमेर में सम्पन्न हुआ। इसके स्वागताध्यक्ष श्री सुगनचंदजी लूणावत, धामणगांव वाले थे। सभा मे जो प्रस्ताव पास किये गये थे उनमें से मुख्य-मुख्य ये हैं :—

प्रस्ताव ४—(अस्पृश्यता निवारण के विषय मे)

यह परिषद् जैन सिद्धान्तानुसार अस्पृश्यता का निषेध करती है और अनुरोध करती है कि अन्य जैनेतर भाइयों की तरह ही अस्पृश्य (हरिजन) भाइयों से भी व्यवहार किया जाय।

प्रस्ताव २६—(अहिंसक स्वदेशी-वस्तुओं का व्यवहार करने के विषय में)

यह परिषद धार्मिक तथा देश-हित की दृष्टि से, रेशम, हिंसक-वस्त्र और हाथी-दांत के चूड़े के उपयोग का निषेध करती है और नवयुवकों तथा नवयुवतियों से अनुरोध करती है कि केवल स्वदेशी-वस्तुओं का ही व्यवहार करें।

प्रस्ताव ६—(कुप्रथाओं को त्यागने के विषय में)

यह परिषद, अयोग्य-विवाह, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या-विक्रय, वर-विक्रय, फिजूलखर्ची, मृत्युभोज आदि कुप्रथाओं का सर्वथा विरोध करती है। और जो पर्दा-प्रथा अत्यन्त हानिकारक है, उसे यथाशक्य हटाने का प्रयत्न करने का प्रस्ताव करती है।

अन्त में एक प्रस्ताव पास कर निम्नोक्त सज्जनों की एक कार्यकारिणी-समिति बनाई गई।

सेठ श्री अचलसिंहजी जैन आगरा, अध्यक्ष, लाला मस्तरामजी M. A. अमृतसर, (मंत्री), लाला

मकनजी घीया राजकोट, रा० सा० मणिलाल वनमालीदास शाह राजकोट, श्री सरदारमलजी छाजेड शाहपुर (मंत्री), श्री धीरजलाल भाई के० तुरखिया व्यावर।

उपरोक्त समिति को इस कार्य के लिये सम्पूर्ण प्रबंध करने तथा फंड करने की सत्ता दी जाती है।

प्रस्ताव ११—(स्त्री शिक्षण-सहायता फंड के विषय में)

कन्या तथा स्त्री-शिक्षण और विधवा-बहिनों की शिक्षा के लिये एक फंड एकत्रित करने का तय किया जाता है। यह फंड कॉन्फरन्स के पास रहेगा परन्तु उसकी व्यवस्था बहिनों की एक समिति करेगी। इसके लिये निम्न बहिनों की एक समिति को-ऑप्ट करने की सत्ता के साथ बनाई जाती है:—

श्रीमती नवलबेन हेमचंदभाई रामजीभाई बम्बई, श्रीमती लक्ष्मीबेन वीरचंदभाई मेघजीभाई बम्बई, श्रीमती चंचलबेन टी० जी० शाह बम्बई, श्रीमती केशरबेन अमृतलाल रामचंद जौहरी बम्बई, श्रीमती शिवकुंवरबेन-पुंजाभाई, बम्बई, श्रीमती चंपाबेन-उमेदचंद गुलाबचंद बम्बई,

प्रस्ताव १२—(संघ-बल बनाने के विषय में)

यह अधिवेशन दृढ़ता पूर्वक मानता है कि अपने में जहां तक संघ बल उत्पन्न न हो वहां तक संघ की उन्नति होना बहुत कठिन है। अतः प्रत्येक संघ को अपना २ विधान तैयार कर संगठन करने के लिये यह अधिवेशन आग्रह करता है।

प्रस्ताव १३—(वीर-संघ की नियमावली व संचालन के विषय में)

वीर-संघ का प्रस्ताव और फंड बम्बई, अधिवेशन से हुआ है, नियमावली भी बनाई गई है, परन्तु अब तक कार्यरूप में वीर-संघ बना नहीं है। अतः यह कॉन्फरन्स निर्णय करती है कि स्था० जैन-समाज को आजीवन अथवा उचित समय के लिये सेवा देनेवाले स्था० जैन-समाज के सच्चे श्रावक, फिर चाहे वे गृहस्थी हों या ब्रह्मचारी उनका 'वीर सेवा-संघ' शीघ्र बना लिया जाय। वीर-संघ के सदस्य की योग्यता और आवश्यकतानुसार जीवन प्रबंध के लिये 'वीर-संघ फंड' का उपयोग किया जाय।

वीर-संघ की नियमावली में संशोधन करने और वीर-संघ की योजना को शीघ्र अमल मे लाने के लिये निम्नोक्त सज्जनों की एक समिति बनाई जाती है।

श्री वर्धमानजी पित्तलिया रतलाम, श्री सरदारमलजी छाजेड शाहपुरा, श्री कुंदनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री जगजीवन दयालजी घाटकोपर।

प्रस्ताव १४—बनारस गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज में जैन दर्शन शास्त्री और जैन-दर्शन-आचार्य परीक्षाओं की योजना को यह कॉन्फरन्स सन्तोष की दृष्टि से देखती। परन्तु उपरोक्त नियमों का अभ्यास करने-कराने के लिये अभी तक किसी भी अध्यापक की नियुक्ति नहीं हुई है, इस पर खेद प्रकट किया जाता है। जैन-दर्शन का भारतवर्ष और संसार की विभिन्न संस्कृतियों में एक आदरणीय स्थान है। इस संबंध में केवल परीक्षाओं की योजना ही पर्याप्त नहीं है अतः यह कॉन्फरन्स यू० पी० सरकार से भार पूर्वक अनुरोध करती है कि उपर्युक्त कॉलेज मे जैन-दर्शन के अध्ययन और अध्यापन के लिये अध्यापक की नियुक्ति के लिये बजट में उचित फंड का प्रबंध करे।

इस प्रस्ताव की एक नकल यू० पी० प्रांत के गवर्नर, शिक्षण-मंत्री तथा कॉलेज के प्रिंसिपल और रजिष्ट्रार को भेजा जावे।

प्रस्ताव १५—(सिद्धांत-शालाओं के विषय में)

वर्तमान में साधु-साध्वियों के शास्त्राभ्यास के लिये विभिन्न-स्थानों पर वैतनिक पंडित रखे जाते हैं जिससे

अलग २ संघों को काफी व्यय उठाना पड़ता है। इससे छोटे २ गांवों में ये चतुर्मास भी नहीं हो सकते हैं। अतः यह सभा भिन्न २ प्रान्तों में सिद्धान्त-शालाएँ खोलने के लिये अलग २ प्रान्तों के संघों से विनती करती है। जब ये संस्थाएँ आरम्भ हो जायं तब उस प्रान्त मे विचरने वाले सभी सम्प्रदायों के साधु-मुनिराज अपने शिष्यों को पढाने के लिये वहां भेजें ऐसी प्रार्थना की जाती है।

प्रस्ताव १६—(साम्प्रदायिक-मंडल विरोध के विषय में)

यह कॉन्फरन्स समाज से अनुरोध करती है कि समाज का संगठन बढ़ाने के लिये और साम्प्रदायिक क्लेश न बढ़े इसके लिये साम्प्रदायिक-संगठनों की स्थापना न करे।

प्रस्ताव १७—(जैन-गणना के विषय में)

अखिल भारतवर्ष के स्था० जैनों की संख्या तथा वास्तविक परिस्थिति का अभ्यास करने के लिये जन-गणना करना नितान्त आवश्यक है। अतः यह निर्णय किया जाता है कि इस कार्य को आरंभ कर दिया जाय इसके लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस द्वारा तैयार किये गये फॉर्म सभी संघों को भेज दिये जाय और अमुक समय की मर्यादा मे उनसे वापिस भरवाकर भिजवा देने का अनुरोध किया जाय।

प्रस्ताव १८—(स्था० जैन गृह बनाने के विषय में)

व्यापार, उद्योग या नौकरी के लिए दूर-देशावरों मे अपने स्वधर्मी-भाई निर्भयता और आसानी से जा सकें और परदेश में स्वधर्मी-भाइयों के सहवास में रह कर उनके सहयोग से व्यापार-धंधों द्वारा अपने जीवन को सुख-शांतिमय बना सकें इसके लिए हिंद से बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, करांची, अहमदाबाद, दिल्ली, इन्दौर, कानपुर आदि बड़े २ व्यापार-केन्द्रों में तथा हिन्द से बाहर रंगून, एडन, मोम्बासा, कोबे (जापान) आदि केन्द्रों में अपने स्वधर्मी भाइयों को उचित रूप से रहने और खाने की सुविधा मिले, ऐसी व्यवस्था के साथ-साथ श्री स्थानकवासी जैन-गृह, (S. S. Jain Homes) सर्वत्र स्थापित करने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। आर्थिक प्रश्न का निवारण करने और इस योजना को अमल में लाने के लिये उन २ केन्द्रों के श्री संघों और श्रीमन्त सज्जनों से भलामण करती है।

प्रस्ताव २०—हिन्द की स्था० जैनों की व्यापारिक पेढ़ियों, दुकानो और कारखानों के नाम तथा यूनिवर्सिटी में पास हुए ग्रेजुएट—बी० ए० भाई-बहिन अपने नाम के साथ १) रु०, कॉन्फरन्स-ऑफिस को भेज दें। उनके नाम कॉन्फरन्स की तरफ से पुस्तक-रूप में प्रकट किये जायेंगे।

प्रस्ताव २२—(पार्श्वनाथ-विद्याश्रम, बनारस के विषय में)

'श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक-समिति, अमृतसर'—जो जैन दर्शन और इतिहास के उच्चाभ्यास के लिए स्था० जैन विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देती है, जिसका कार्य श्री पार्श्वनाथ-विद्याश्रम, बनारस द्वारा हो रहा है उसे यह कॉन्फरन्स पसंद करती है और स्था० विद्यार्थियों तथा श्रीमन्तो का ध्यान उस तरफ आकर्षित करती है।

प्रस्ताव २३—(जैनों की एकता के विषय में)

यह कान्फरन्स जैन-समाज की एकता का आग्रह पूर्वक समर्थन करती है और जब कभी परस्पर की एकता में बाधक प्रसंग खड़ा हो तो उसका योग्य उपाय कर एकता को पुष्ट करने का प्रयत्न करने के लिए हर एक स्था० जैन भाई-बहिन से प्रार्थना करती है। जैन समाज के तीनों फिर्कों के कतिपय मान्यता-भेद बाजू रख कर परस्पर में समान रूप से स्पर्श करने वाले ऐसे अनेक प्रश्नों की चर्चा करने के लिए तथा आन्तरिक एकता बढ़ाने

के लिये समस्त जैन समाज की संयुक्त-परिषद् बुलाने की आवश्यकता यह कॉन्फरन्स स्वीकार करती है। और ऐसी को योजना होगी तो उसमें पूर्ण सहयोग देना जाहिर करती है।

प्रस्ताव २५-(बेकारी निवारण के विषय में)

अपने समाज में व्याप्त बेकारी निवारण के लिये आज की यह सभा (Jain unemployment Information Bureau) स्थापित करने का निश्चय करती है। अपनी समाज के श्रीमन्त और उद्योगपतियों से विनती करती है कि वे शक्य हों उतने जैन भाइयों को अपने यहां काम पर लगा कर इस बेकारी को कम करें।

प्रस्ताव २७-श्री अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन संघों का प्रतिनिधित्व करने वाली यह कॉन्फरन्स श्री राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति वर्धा के संचालकों से विनती करती है कि समिति की परीक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों में जिस तरह अन्य धर्मों के विशिष्ट पुरुषों का चरित्र-वर्णन दिया गया है उसी तरह जैन-महापुरुषों का जीवन-चरित्र भी देने की आवश्यकता समझें। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

घाटकोपर का यह दसवां अधिवेशन, फंड की दृष्टि से भी सर्वोत्तम रहा। पूना-बोर्डिंग के लिये ४५ हजार का फंड जमा हुआ। स्त्री शिक्षण और विधवा सहायक-फंड में भी १० हजार रु० का फंड हुआ। दूसरी विशेषता इस अधिवेशन की यह थी कि कॉन्फरन्स के पुराने विधान में परिवर्तन कर नया लोकशाही-विधान बनाया गया जिसमें सदस्य फीस १) रु० रख कर हर एक भाई को सभासद का अधिकार दिया गया था।

अ० भा० श्वे० स्था० जैन युवक-परिषद्

स्था० जैन युवक-परिषद का द्वितीय-अधिवेशन ता० १०—४—४१ को घाटकोपर मे हुआ। प्रमुख के स्थान पर पंजाब के सुप्रसिद्ध लाला हरजसराय जी जैन B A. शोभायमान थे। स्वागताध्यक्ष थे डा० बृजलाल धरमचंद मेघाणी। सभा मे कुल १८ प्रस्ताव पास किये गये, जिनमे से मुख्य ये थे:—

(४) वीर-संघ की योजना (६) सर्वदेशीय शिक्षा-प्रचारक-फंड की योजना (७) आर्थिक-असमानता निवारण (८) ऐच्छिक-वैधव्य पालन अर्थात् बलात् नहीं। (६) जैनों के तीनों फिर्कों का एकीकरण (१२) स्त्री-शिक्षा प्रचार (१४) जैन बैंक की स्थापना (२७) जैन युवक-संघ की स्थायी संस्था बनाना (१८) युवक-संघ का विधान बनाना आदि २। लाला हरजसरायजी जैन का भाषण बड़ा मननीय था। आपने सामयिक समस्याओं पर अच्छा प्राकश डाला था।

स्था० जैन महिला-परिषद

घाटकोपर-अधिवेशन के समय महिला-परिषद का भी आयोजन किया गया था, जिसकी अध्यक्षा थीं श्रीमती नवलबेन हेमचंदभाई रामजीभाई मेहता। आपका भी भाषण बड़ा सुन्दर था जिसमें स्त्री-समाज की उन्नति के उपाय बताये गये थे।

सम्मेलन में स्त्री शिक्षा-प्रचार, समाज-सुधार, प्रौढ़-शिक्षण आदि कई प्रस्ताव पास किये गये थे।

ग्यारहवां-अधिवेशन, स्थान-मद्रास

घाटकोपर-अधिवेशन से लगभग ८ साल बाद कॉन्फरन्स का ग्यारहवां अधिवेशन सन् १६४६ ता० २४-२५-२६ को मद्रास में किया गया। जिसकी अध्यक्षता बम्बई लेजिस्लेटिव-असेम्बली के स्पीकर माननीय श्री

कुन्दनमलजी फिरोदिया ने की। स्वागताध्यक्ष सेठ मोहनमलजी चोरडिया, मद्रास थे। अधिवेशन का उद्घाटन मद्रास-राज्य के मुख्य मंत्री श्री कुमारस्वामी राजा ने किया था।

दूर प्रान्त में यह अधिवेशन होने पर भी समाज में जागृति की लहर व्याप्त हो गई थी। उपस्थिति ५-६ हजार के लगभग हो गई थी। अधिवेशन व्यवस्था बहुत अच्छी थी। आने वाले महमानों को हर तरह की सुविधा प्रदान की गई थी। विगत अधिवेशनों से यह अधिवेशन अपने ढग का अलौकिक ही था, जो आज भी लोगों की जबान पर छाया हुआ है।

इस अधिवेशन में सभी मिलाकर १६ प्रस्ताव पास किए गये। कार्यवाही का सचालन बड़ी सुन्दरता से प्रमुख महोदय ने किया। कई पेंचीदे प्रश्न भी उपस्थित हुए थे, परन्तु उन सबका निराकरण बड़ी शांति के साथ हुआ। इसका श्रेय इस अधिवेशन के सुदक्ष और योद्धा प्रमुख श्री फिरोदियाजी सा० को ही है।

अधिवेशन की सफलता के लिए कई तार व सदेश प्राप्त हुए थे जिनमें से मुख्यतः—भारत के प्रथम गवर्नर-जनरल माननीय श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, दिल्ली-केन्द्रीय-सरकार के रेल्वे-मत्री माननीय श्री के० सथानम्, दिल्ली-केन्द्र धारा-सभा (Parliament) के स्पीकर माननीय श्री गणेशवासुदेव मावलंकर, दिल्ली-बम्बई प्रांत के मुख्य मत्री श्री बी० जी० खेर, बम्बई, श्री नगीनदास मास्टर श्री भू० पू० प्रमुख बम्बई प्रांतीय-कॉन्ग्रेस कमेटी, बम्बई, श्री एल० एल० सीलम, बम्बई, श्री सिद्धराज ढढ्ढा, जयपुर, श्री मेघजी सोजपाल, प्रमुख-जैन श्वेताम्बर-कॉन्फरन्स, बम्बई, श्री चीनु भाई लालभाई सोलीसीटर, बम्बई, श्री दामजी भाई जेठाभाई, मंत्री-श्री जैन श्वे० कॉन्फरन्स, बम्बई, श्री श्रेयांसप्रसादजी जैन, बम्बई, श्री अमृतलाल कालीदास जे० पी० बम्बई, श्री कांतिलाल ईश्वरलाल जे० पी० बम्बई, श्री शातिलाल एम० शाह बम्बई, राय बहादुर राज्य-भूषण सेठ श्री कन्हैयालालजी भडारी, इन्दौर, कॉन्फरन्स के भूतपूर्व प्रमुख श्री हेमचदभाई रामजीभाई मेहता, गोंडल, दीवान बहादुर श्री मोतीलालजी मूथा, सतारा, श्रीमान् सेठ भैरोंदासजी सेठिया, बीकानेर, सेठ श्री शांतिलाल मगलदास, अहमदाबाद, सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया, भीनासर और ला० हरजसरायजी जैन, अमृतसर थे।

इस अधिवेशन में कुल १६ प्रस्ताव पास हुए थे जिनमें से मुख्य २ ये हैं.—

प्रस्ताव १—सैंकड़ों वर्षों की गरीबी और अज्ञानतापूर्ण गुलामी के बाद विश्वव्यापी प्रचड ब्रिटिश सल्तनत से अहिंसक मार्ग द्वारा भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, यह समस्त हिन्दुस्तानियों के लिए महान् गौरव, स्वाभिमान और आनद का विषय है। आजादी के बाद प्रथम बार होने वाला कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन भारत को प्राप्त आजादी के लिए अपना हार्दिक आनद व्यक्त करता है। हिंद जैसे महान भव्य और प्राचीन राष्ट्र की आजादी विश्व के लिए अति महत्व का प्रसग है। इससे वर्तमान विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय-प्रवाह में अनेक परिवर्तन होना सभव है तथा समस्त एशियाई प्रजा में नूतन जागृति पैदा होगी। इस प्रकार हिन्द आजाद होने से समस्त विश्व को विशिष्ट अहिंसक-प्रकाश और मार्ग-दर्शन मिलेगा और विश्व की समस्त गुलाम-प्रजा का मुक्ति-मार्ग सरल होगा।

प्रस्ताव ५—(जन-गणना के सम्बन्ध में) श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन केन्द्रीय-सरकार से प्रार्थना करता है कि आगामी जन-गणना के समय हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, सिक्ख, क्रिश्चियन जैसे धर्मवाचक शब्द हैं वैसे जैन भी धर्म-वाचक शब्द होने से जन संख्या की जानकारी के लिए 'माहिती-पत्रक' में जैन का भी कॉलम रखा जावे और उसे भरने वालों को यह विशेष रूप से सूचना दी जावे कि जनता को पूछकर जैन हों तो

उनके नाम जैन कालम में भर दिये जायं। साथ ही जैन भाइयों को सूचित किया जाता है कि आगामी जन-गणना में वे अपना नाम जैन कॉलम में ही लिखावें।

इस प्रस्ताव की नकल केन्द्रीय-सरकार के गृह-विभाग को भेजने की सत्ता प्रमुख श्री को दी जाती है।

प्रस्ताव ६— (संघ-ऐक्य योजना के लिये)

धर्म और समाज के उत्थान के लिए संगठन और उच्च चरित्र की आवश्यकता है। स्था० जैन धर्म में भी वर्षों से संगठन का विचार चल रहा है। अजमेर का साधु सम्मेलन भी इसी विचार का फल था। अजमेर व घाटकोपर के अधिवेशनों में भी यही आन्दोलन था। संगठन की अखंड विचारधारा से ता० २२-१२-४८ को ब्यावर में कॉन्फ़रन्स की जनरल-कमेटी हुई उसमें संघ-ऐक्य का प्रस्ताव हुआ। ब्यावर श्री-संघ ने संघ-ऐक्य की त्रिवर्षीय प्रतीक्षा की और जनरल-कमेटी के बाद तुरन्त ही मान्यवर फिरोदिया जी सा० के नेतृत्व में डेप्युटेशन संघ-ऐक्य के लिये निकल पड़ा। संघ-ऐक्य की योजना बनाई गई, जिसमें आरंभ में एकता की भूमिका रूप सात कलमें तात्कालिक अमल में लाने की तथा स्थायी रूप में एक आचार्य और एक समाचारी में सभी स्था० जैन सम्प्रदायों का एक श्रमण-संघ बनाने की योजना तैयार की गई। इस योजना के यह अधिवेशन हृदय से स्वीकार करता है और उसकी सिद्धि में स्था० जैन धर्म का उत्थान देखता है। आज तक कॉन्फ़रन्स ने इसके बारे में जो कार्य किया है उसके प्रति यह अधिवेशन संतोष व्यक्त करता है।

जिन सम्प्रदायों के मुनिवरों और श्री-संघों ने इसे स्वीकार किया है, उन्हें यह अधिवेशन साभार धन्यवाद देता है, वैसे ही जिन्होंने अजमेर साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों का पालन किया है उनका भी आभार मानता है। और जिनकी स्वीकृति नहीं मिली है उनसे साग्रह अनुरोध करता है कि वे यथाशीघ्र संघ-ऐक्य की योजना को स्वीकार करें।

प्रस्ताव ७—(साधु-सम्मेलन बुलाने के विषय में)

यह अधिवेशन संघ-ऐक्य योजना को सफल बनाने के लिए भारत की सभी सम्प्रदायों का सम्मेलन योग्य स्थान व समय पर बुलाने की आवश्यक्ता महसूस करता है और साधु-सम्मेलन बुलाने के लिए तथा उस कार्य में सर्व प्रकार से सहयोग देने के लिए निम्न सदस्यों की एक 'साधु सम्मेलन नियेजक समिति' नियुक्त करता है। बृहत्साधु-सम्मेलन दो वर्ष तक में बुला लेना चाहिये और इसकी पृष्ठ भूमिका तैयार करने के लिये यथावश्यक प्रांतीय साधु-सम्मेलन करना चाहिये। इसका सयोजन श्री धीरजलाल केशवलाल तुरखिया करेंगे। समिति के निम्न सदस्य हैं:—

श्री धीरजलाल के० तुरखिया, ब्यावर, श्री जवाहरलालजी मुणोत, अमरावती, श्री गिरधरलाल दामोदर दफ्तरी, बम्बई, श्री शांतिलाल दुर्लभजी जौहरी, जयपुर, श्री देवराजजी सुराना, ब्यावर, श्री सरदारमलजी छाजेड़, शाहपुरा, श्री हरजसरायजी जैन, अमृतसर, श्री गणेशमलजी बोहरा, अजमेर, श्री आनंदराजजी सुराना, दिल्ली, श्री जगजीवन दयाल बम्बई, श्री वल्लभजी लेराभाई सुरेन्द्रनगर, श्री बालचंदजी श्रीश्रीमाल रतलाम, श्री खेतसीभाई खुशालचंद कोठारी, श्री जादवजी भगनलाल भाई वकील, सुरेन्द्रनगर, श्री जसवन्तलालजी इन्जीनियर, मद्रास। इस समिति को आवश्यकतानुसार विशेष सदस्यों को सम्मिलित करने की सत्ता दी जाती है।

प्रस्ताव ६—(धार्मिक-सस्थाओं का सयोजन)

(अ) समस्त स्थानकवासी समाज मे धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्य करने वाली संस्थाओं का निम्न प्रकार से Affiliation (सयोजन) करने का यह अधिवेशन ठहराव करता है।

(१) सस्थाओं का एफिलिएशन करने की सत्ता मैनेजिंग-कमेटी को रहेगी।

(२) एफीलिएशन फीस २) रु० रहेगी। (३) एफीलिएशन करने की अर्जी के साथ संस्था को अपने विधान की नकल और अन्तिम वर्ष का आय-व्यय का हिसाव भेजना पड़ेगा।

(४) एफीलिएटेड सस्था को प्रति वर्ष आय व्यय का पक्का हिसाब एवं वार्षिक विवरण भेजना पड़ेगा।

(५) 'जैन प्रकाश' एफीलिएटेड संस्था को २५ प्रतिशत कम चदे मे भेजा जायगा।

(६) 'जैन प्रकाश' मे सिर्फ एफीलिएटेड-संस्थाओं के ही समाचार विवरण एव आर्थिक सहायता की अपीलें प्रकट होंगी। (७)एफीलिएटेड सस्थाओं की सूची प्रतिवर्ष जनरल कमेटी मे रखी जायगी। (८) शक्य होगा वहां एफीलिएटेड सस्था को कॉन्फरन्स आर्थिक सहायता देगी।

(ब) पाठशालाऐं, जैन कन्याशालाऐं तथा अन्य जैन शिक्षण-सस्थाओं को सुव्यवस्थित और सम्बन्धित करने के लिये तथा धार्मिक-शिक्षण के प्रचार के लिये यथाशक्य व्यवस्था करना यह अधिवेशन आवश्यक समझता है और इसको सक्रिय बनाने के लिये एक सुयोग्य-विद्वान निरीक्षक रख कर कार्य करने के लिये कॉन्फरन्स ऑफिस को सत्ता देता है।

प्रस्ताव ९—(तीनों फिर्कों की एकता के लिये)

वर्तमान प्रजातत्रीय-भारत में जैन समाज को सुदृढ़, एक और अखडित रखना बहुत आवश्यक है। कई साम्प्रदायिक-मान्यता-भेदों को दूर रख कर जैनों के तीनों फिर्कों की सामान्य बातें और मूल सिद्धान्तों पर एक होकर कार्य करने को प्रवृत होना चाहिये। अतः यह अधिवेशन अपने श्वेताम्बर और दिगम्बर भाइयों की महासभाओं से सम्पर्क रख कर समस्त जैनों के सगठन की प्रवृत्ति मे ही शासन-उन्नति मानता है। और इसके लिए सक्रिय प्रयत्न करते रहने का कॉन्फरन्स-ऑफिस को आदेश देता है।

प्रस्ताव १०—(धार्मिक पाठ्य-पुस्तकों के विषय मे)

धार्मिक-शिक्षण समिति द्वारा जैन विद्यार्थियों के लिये पाठ्य पुस्तकें जनरल-कमेटी की सूचनानुसार तैयार कराई हैं, जिनमें से दो पुस्तकें हिन्दी में छप गई हैं और पाच पुस्तकें छपने वाली हैं। इस कार्य पर यह अधिवेशन सतोष प्रकट करता है और रतलाम व पाथर्डी परीक्षा-बोर्ड को तथा सब स्था० जैन शिक्षण संस्थाओं को इन पाठ्य-पुस्तकों को पाठ्य-क्रम में स्थान देने का साग्रह अनुरोध करता है।

प्रस्ताव १२—(सरकारी-कानून के बारे मे)

अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन भारत की वर्तमान प्रजातत्रीय-केन्द्रीय और प्रांतीय-सरकारों से मान पूर्वक किन्तु दृढ़ता पूर्ण सानुरोध करता है कि नये २ ऐसे कानून न बनायें जाय जिससे कि जैनधर्म की मान्यताओं, सिद्धातों और सस्कृति को बाधा पहुँचती हो अथवा जैनों के दिल दुखते हों। सरकार की शुभ भावना और दिल दुखाने की वृत्ति न होने पर भी धार्मिक मान्यता और सिद्धांतों के रहस्य की अनभिज्ञता के कारण गत वर्षों मे कुछ ऐसी घटनाऐं लोगों के सामने आई हैं। जैसे कि:—

(अ) हिन्दू शब्द की व्याख्या स्पष्ट करते हुए हिन्दू व्याख्या मे जैनियों का समावेश करना।

नोट:—हिन्दू की प्रजा के किसी वर्ग का या अमुक एक धर्म का अनुयायी तरीके उल्लेख किया जावे तब जैनों का स्पष्ट और स्वतत्र उल्लेख करना चाहिये।

(ख) बेकार भिखारियों में ही अपरिग्रही और आत्मार्थी साधु-मुनियों को गिन लेना । (क) दीक्षार्थियों के अभ्यास की योग्यता के विषयों में कानूनी पराधीनता लाना आदि। धर्म और संस्कृति के संरक्षण के लिए जैन धर्म को स्वतंत्र रखना चाहिये।

यह प्रस्ताव केन्द्रीय और प्रांतीय-सरकारों के मुख्य मंत्रियों को भेजने की सत्ता प्रमुख श्री को दी जाती है।

प्रस्ताव १३—(पशु-वध बंदी के लिये)

यह अधिवेशन वर्तमान भारत-सरकार को श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखता है, क्योंकि भारत सरकार महात्मा गांधीजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त को मानती है। अतः सरकार से सानुरोध प्रार्थना करता है कि भारतवर्ष में गो वध और दूध देने वाले मवेशियों का कत्ल कानून द्वारा रोका जावे तथा खेती की रक्षा के लिये बंदर, सुअर, रोझ, हिरण आदि पशुओं को मारने के लिए प्रान्तीय सरकारें जो कानून बनाती हैं वे न बनाये जायं, जिससे राष्ट्र का हित होगा तथा अहिंसक गौ प्रेमी भारतवासियों के दिल को सन्तोष होकर भारत सरकार के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी।

इस प्रस्ताव की नकल केन्द्रीय धारा-सभा के प्रधान को भेजने की सत्ता प्रमुख श्री को दी जाती है।

प्रस्ताव १४—(साहित्य-सर्टिफाइ तथा तिथि-निर्णय-समिति)

यह अधिवेशन कॉन्फरन्स की विविध प्रवृत्तियों को सुव्यवस्थित और वेग पूर्वक चलाने के लिए निम्नोक्त विभिन्न समितियां नियुक्त करता है। इससे पूर्व बनी हुई समितियों के सदस्य मौजूद नहीं हैं और कुछ नये उत्साही कार्य-कर्ताओं की आवश्यकता होने से पुरानी समितियों की पुनर्रचना इस प्रकार की जाती है:—

(क) साहित्य सार्टिफाइ-समिति—अपने समाज में साहित्य प्रकाशन का कार्य बढ़ाना जरूरी है, किन्तु साहित्य जितना भी हो, समाज एवं धर्म को उपयोगी होना चाहिये। अतः प्रकाशन-योग्य साहित्य को प्रमाणित करने के लिये निम्न मुनिवरों और श्रावकों की एक समिति बनाई जाती है। इस प्रकार का साहित्य कॉन्फरन्स-ऑफिस द्वारा उक्त समिति को भेजकर प्रमाणित करा कर प्रकट किया जावे।

पूज्य श्री आत्मारामजी म०, श्री आनंदऋषिजी म०, श्री उपा० श्री अमरचंदजी म०, प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म०, श्री धीरजलाल के० तुरखिया, श्री हरजसरायजी जैन, श्री बालचंदजी श्रीश्रीमाल, श्री दलसुखभाई मालवणिया,

कॉन्फरन्स-ऑफिस कम से कम २ मुनिवर और गृहस्थों की अनुमति लेकर इस पर प्रमाण-पत्र देगी। जिसके पास साहित्य अवलोकनार्थ भेजा जाय वे अधिक से अधिक १ मास में देखकर अपने अभिप्रायों के साथ साहित्य लौटा देवें। कॉन्फरन्स-आफिस ४ मास के अन्दर २ प्रमाण पत्र या अभिप्राय लेखक को लौटा दें। जो मुनिराज और श्रावक साहित्य-प्रकाशन करने की इच्छा रखते हैं उनको यह अधिवेशन अनुरोध करता है कि वे अपना साहित्य प्रमाणित करके प्रसिद्ध करें।

(ख) तिथि निर्णायक-समितिः—वार्षिक तिथियां और पर्व तिथियों का निर्णय करके प्रकाशित करने के लिये निम्न सदस्यों की समिति बनाई जाती है।

पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म०, पं० मुनि श्री छोटेलालजी म० पं० मुनि श्री अमरचंदजी म०, पूज्य श्री ईश्वरलालजी म०, श्री उमरसी कानजीभाई भाराणी देशलपुर, श्री हर्षचंद कपूरचंद दोशी

बम्बई, श्री खीमचद मगनलाल वोरा बम्बई, श्री धीरजलाल के० तुरखिया ब्यावर, श्री चुनिलाल कल्याणजी कामदार बम्बई।

उक्त सदस्यों के अभिप्राय एकत्रित करके कॉन्फरन्स-ऑफिस अतिम निर्णय करेगी।

प्रस्ताव १५—(जिनागम-प्रकाशन के लिये)

कॉन्फरन्स की जयपुर जनरल-कमिटी के प्रस्ताव न० १२ के अनुसार जिनागम-प्रकाशन-समिति ब्यावर ने जो कार्यारम्भ किया है और अभी जो मूल-पाठों का संशोधन करा कर अनुवाद का कार्य किया जा रहा है, इस कार्य से यह अधिवेशन सतोष प्रकट करता है और अब प्रकाशन प्रारम्भ करना जरूरी समझता है। प्रकाशन प्रारंभ होने से पहले पूज्य श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री आनन्दऋषिजी महाराज, पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, और पं० हर्षचन्द्रजी महाराज को बता कर बहुमत से मिलने वाले संशोधन पूर्वक इसे प्रकाशित किया जाये।

आर्थिक-व्यवस्था के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को निम्न प्रकार से व्यवस्था करने की सूचना दी जाती है:—

(क) आगम प्रकाशन के लिए एक लाख रुपये तक का फंड करे।

(ख) आगम प्रेमी श्रीमानों से एक आगम-प्रकाशन खर्च का वचन ले।

(ग) आगम-बत्तीसी की ग्राहक सख्या अधिकाधिक प्राप्त करने का प्रयास करे।

प्रस्ताव १६—(श्राविकाश्रम के लिये)

ब्यावर की गत सामान्य सभा मे श्राविकाश्रम-फड को और अधिक बढ़ाने के लिये जो प्रस्ताव हुआ था' उसे मूर्त स्वरूप देने मे श्री टी० जी० शाह, श्री लीलाबेन कामदार तथा श्री चचलबेन शाह ने जो परिश्रम उठाया था उस के लिये आज का यह अधिवेशन उनको हार्दिक धन्यवाद देता है।

घाटकोपर में आगरा रोड पर खरीदे गये ८५०००) रु० के मकान को यह सभा मान्य करती है।

उक्त मकान को आवश्यकतानुसार ठीक करा कर उसमें श्राविकाश्रम शुरु करने तथा उसकी व्यवस्था करने के लिये और आवश्यक नियमादि बनाकर श्राविकाश्रम संचालन के लिये एक समिति नियुक्त करने की सत्ता जनरल-कमेटी को दी जाती है।

प्रस्ताव १७—(विधान संबधी)

यह अधिवेशन कॉन्फरन्स की विधान-समिति के द्वारा तैयार किये गये और जनरल-कमेटी के द्वारा सशोधित हुए विधान को मजूर करता है।

प्रस्ताव १८— (बाल-दीक्षा विरोधी प्रस्ताव)

दीक्षा देने के लिये यह आवश्यक है कि जिसको दीक्षा दी जावे वह इस योग्य हो कि दीक्षा के अर्थ और मर्म को समझ सके। साधु-जीवन का ग्रहण करना इतने महत्व का है कि वह बाल्यावस्था के बाद ही किया जाना चाहिये। बाल-दीक्षा के अनेक प्रकार के अनिष्ट परिणाम वर्तमान में देखे गये हैं। यह कॉन्फरन्स हमारे पूज्य मुनिवरों एवं महा सतियों से सविनय प्रार्थना करता है कि वे देशकाल एव समय की गतिविधि का ध्यान रखते हुए राजकीय कानून बने उसके पूर्व ही १८ वर्ष से कम उम्र के किसी भी बालक को दीक्षा न देने का निश्चय करके देश के सामने आदर्श उपस्थित करें।

अगर कोई दीक्षार्थी कुछ कम उम्र का हो व उसकी सर्वदेशीय योग्यता मालूम होती हो तो कॉन्फरन्स के सभापति को अपवाद रूप में उसे दीक्षित कराने के बारे में सम्मति का अधिकार दिया जाता है।

शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे। इस अधिवेशन में आने वाले भाइयों की भोजन व्यवस्था के लिए स्व० जैसिंगभाई की तरफ से २५ हजार रुपये प्रदान किये गये थे। इस अधिवेशन के स्वागत-मंत्री श्री ताराचन्दजी गेलडा और श्री जसवन्तमलजी इंजीनियर थे। खजांची श्रीमान इन्द्रचन्दजी गेलडा और शकरलालजी श्रीश्रीमाल थे। अधिवेशन की व्यवस्था में श्रीमान् मांगीचन्दजी भंडारी, श्री शंभूमलजी वेद, श्री सूरजमलभाई जौहरी, श्री कन्हैयालाल ईश्वरलाल, डॉ० यू० एम० शाह, श्री खींवरावजी चौरडिया, श्री मगनमलजी कुंभट, श्री भागचन्दजी गेलडा, श्री कपूरचन्दभाई सुतरिया-केप्टेन-स्वय-सेवक दल एवं श्रीमती सवितावेन गिजुभाई-नायिका महिला स्वय सेविका दल का प्रमुख हाथ था। इस अधिवेशन की फिल्म भी उतारी गई थी।

इस अधिवेशन के मौके पर ही भारत जैन-महामंडल का भी वार्षिक-अधिवेशन किया गया था।

स्था० जैन युवक-सम्मेलन व महिला-परिषद् भी हुई थी, जिसका विवरण आगे दिया गया है।

अ० भा० श्वे० स्था० जैन युवक-परिषद् का तृतीय-अधिवेशन स्थान—मद्रास

युवक परिषद् का तीसरा अधिवेशन मद्रास में ता० २५—१२—४६ को श्रीयुत दुर्लभजी भाई केशवजी खेताणी, बम्बई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष महोदय का भाषण काफी विचारणीय था जिसमे आधुनिक प्रश्नों की चर्चा की गई थी।

इस परिषद् में कुल ११ प्रस्ताव पास किये गये थे जिनमे से मुख्य ये हैं:—

प्रस्ताव ३—(संघ-ऐक्य योजना मे सहयोग देना)

यह संघ निश्चय करता है कि अ० भा० श्वे० स्थानकवासी कॉन्फरन्स की तरफ से सम्प्रदायों को समाप्त कर जो बृहत्साधु-संघ बनाने का निश्चय किया गया है, जिसके लिये कार्य भी शुरु कर दिया गया है, उस कार्य को पूर्णतया सफल बनाने में हार्दिक-सहयोग देंगे और उसके लिए जितने भी त्याग की आवश्यकता होगी वह करने के लिए कटिबद्ध रहेंगे।

प्रस्ताव ४—(खेती का कार्य अपनाने के विषय मे)

यह परिषद् युवकों से आग्रह करती है कि दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई बेकारी और भविष्य मे आने वाली आर्थिक मंदी को लक्ष्य मे रखकर युवकों को हुनर, उद्योग और खेती की तरफ अपना लक्ष्य केन्द्रित करना चाहिए। विशेषत: सामुदायिक खेती का कार्य करते हुए अपनी आजीविका के साथ देश की अन्न की कमी को पूरी करने में अपना पूर्ण सहयोग दें।

प्रस्ताव ५—(जन-गणना के लिए प्रचार)

सन् ५०-५१ मे भारत-सरकार की ओर से सारे देश की जन-गणना होने वाली है। जैनों की सही संख्या जानी जा सके, इसके लिये यह परिषद् युवक-मंडलों तथा जैन भाइयों से प्रार्थना करती है कि वे जाति या धर्म के खाने में अपने को जैन ही लिखावें। इस कार्य के लिये यह परिषद् अध्यक्ष महोदय को यह अधिकार देती है कि योग्य कार्य-कर्ताओं की एक प्रचार-समिति का निर्माण करें।

प्रस्ताव ६—(जैन-एकता के विषय में)

जैनों के सब सम्प्रदायों में आपसी प्रेम, भाई-चारा और सहयोग-भावना की वृद्धि के लिए अपनी २ साम्प्रदायिक मान्यता का पालन करते हुए भी दूसरे कई क्षेत्रों मे, खास कर सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक

क्षेत्रों में सब सम्प्रदायों के युवक जैनधर्म और समाज को स्पर्श करने वाले विषयों मे एकमत होकर मिले-जुले और एक मच पर एकत्र हो सकें ऐसे प्रयत्न करने के लिये यह परिषद् युवकों से प्रार्थना करती है

भारत जैन-महामडल और भारतीय जैन स्वय सेवक-परिषद् जैसी सस्थायें इस दिशा मे जो प्रयत्न कर रही हैं, उन्हें यह परिषद आदर की दृष्टि से देखती है और उनके कार्यों की प्रगति के लिये जैन युवक-परिषद् के कार्य कर्ताओं से प्रार्थना करती है।

प्रस्ताव ७—(जाति-भेद निवारण)

समय के प्रभाव को देखते हुए यह परिषद् जैन धर्मावलम्बियों मे प्रचलित जाति भेद के निवारण को बहुत आवश्यक मानती है। दस्सा-बीसा, ढाया-पांचा ओसवाल, पोरवाल आदि जाति-भेद के कारण पारस्परिक सामाजिक सबधों में कई कठिनाइयां आती हैं, और क्षेत्र सकुचित होने से कई प्रकार की हानियां होती हैं। इस दिशा में आवश्यक कदम बढ़ाने के लिये भिन्न २ प्रान्तों के युवक कार्य-कर्ताओं की एक समिति स्थापित की जाती है, जो इन जातियों में पारस्परिक विवाह सबधों द्वारा जाति भेद निवारण का प्रयत्न करेगी। परिषद् अपने इस कार्य मे कॉन्फरन्स के सहयोग की आशा रखती है।

प्रस्ताव ६—(जैन साहित्य-प्रचार)

अखिल भारतीय श्वे० स्थानकवासी जैन युवक-परिषद का यह अधिवेशन निश्चय करता है कि हमारी कॉन्फरन्स प्राचीन तथा अर्वाचीन जैन-साहित्य का पर्यालोचन करके कुछ ऐसी पुस्तकें चुनें और प्रमाणित करें जिनसे सर्व साधारण विशेषतया जैन समाज, जैन-सस्कृति का परिचय प्राप्त कर सके। साथ मे यह भी निश्चय करती है कि कॉन्फरन्स ऐसे साहित्य को विभिन्न भाषाओं मे छपाकर भारत तथा विदेश के विश्व-विद्यालयों को मुफ्त भेजें जिससे समस्त विश्व को एक प्राचीन और महान धर्म की जानकारी मिले।

जैन महिला-परिषद, स्थान-मद्रास

अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन महिला-परिषद का अधिवेशन ता० २४—१२—४६ को श्रीमती जमना बहिन नवलमलजी फिरोदिया, अहमदनगर की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। परिषद् में पास किये गये कतिपय मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार हैं:—

प्रस्ताव ४—(स्त्री-शिक्षण के विषय में)

जमाना बदल गया है। स्त्रियों के लिये पुरुषों के समकक्ष होने के सभी सयोग प्राप्त हैं, ऐसे समय मे लग्न के बाजार मे मूल्यांकन बढे इस दृष्टि से नहीं, किन्तु आर्थिक स्वावलम्बन का गौरव प्राप्त हो और मुसीबत मे सहायक हो उतना शिक्षण वर्तमान मे स्त्रियों को मिलना चाहिए और माता-पिता को पढाना चाहिये ऐसा आज की यह परिषद मानती है।

प्रस्ताव ५—(पर्दा-प्रथा के विरोध में)

मध्यकालीन युग के मुस्लिम राज्य काल में चारित्र के रक्षण के लिए सौन्दर्य को छुपाने के लिए पर्दा प्रथा प्रचलित हुइ थी, किन्तु आज उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। इतना ही नहीं वर्तमान में यह प्रथा स्त्रियों के विकास को रोकने वाली और घरेलू व्यवस्था में अति कठिनाइयाँ पैदा करने वाली होने से उनका बिल्कुल त्याग करने और कराने का जोर से प्रयत्न करना चाहिए।

प्रस्ताव ६—(मृत्यु के बाद की कुप्रथा निवारण के विषय में)

किसी की मृत्यु होने पर उसके पीछे रोना-धोना. छाती-पीटना और युवक, युवतियों के हृदयद्रावक

अवसान के बाद खूब घी से चुपड़ी हुई रोटी, दाल, भात, शाक आदि जीमना, तथा वृद्धों की मृत्यु के बाद जीमनवार करना यह बहुत ही घृणास्पद रूढि है। यह प्रथा बिल्कुल बंद करनी चाहिए और प्रत्येक मृतात्मा की शांति के लिए उसके आप्त-जनों को मिल कर दिन के कुछ भाग में नवकार-मंत्र का मौन-जाप करना चाहिए।

प्रस्ताव ७—(लग्न क्षेत्र विशाल करने के विषय में)

लग्न करना यह प्रत्येक मनुष्य का व्यक्तिगत प्रश्न होने पर भी समाजिक जीवन के साथ वह इतना ओत-प्रोत हो गया है कि हमें इसमें समयानुसार परिवर्तन करना चाहिये। हम जैन हैं, भगवान महावीर के अर्थात् श्रमण संस्कृति के उपासक हैं अतः एक ही प्रकार के संस्कारी-क्षेत्र तक अर्थात् समस्त भारत के जैनों तक लग्न की मर्यादा बनाई जाय तो हमारे पुत्र-पुत्रियों को योग्य वर कन्या प्राप्त होने में सरलता होगी। इस कार्य में आज समाज या राज्य का कोई बन्धन नहीं है, केवल मत के बन्धन को तोड़ने का आन्दोलन जगाना चाहिये।

प्रस्ताव ८—(दुःखी बहिनों के लिये आश्रम-व्यवस्था)

(अ) श्वसुर-गृह में दुःखी होने पर भी इज्जत को हानि पहुँचे इस कारण से अथवा लोक-निंदा के भय से पीहर में रखे नहीं, तब ऐसी बहिनें मृत्यु का आश्रय लेती हैं। ऐसी बहिनों के लिये समाज की ओर से निर्भय-आश्रय स्थान की आवश्यकता है।

(ब) ऐसे मरण-प्रसंग पर समाज को केवल हाहाकार करके, चुप न रहते हुए उस मृत्यु में जो निमित्त-भूत हो उनको कठोर शिक्षा देनी चाहिये तथा पति के दुख से मरने पर उस पुरुष को कोई अपनी लड़की न दे।

प्रस्ताव ९—(संघ-ऐक्य योजना को सहयोग)

सम्प्रदाय-वाद के किले को तोड़ कर संघ-ऐक्य योजना के लिये हमारी कॉन्फरन्स की ओर से जो प्रयत्न हो रहे हैं, उसमें पुरुषों के साथ बहिनों को भी अपना सहयोग देना चाहिये। इस योजना के भंग करने वाले को कोई सहयोग न दे।

बारहवां-अधिवेशन, स्थान-सादड़ी (मारवाड़)

कॉन्फरन्स का बारहवां अधिवेशन सन् १९५२ को ता० ४-५-६ श्रीमान् सेठ चम्पालालजी सा० बाठिया, भीनासर की अध्यक्षता में सादड़ी (मारवाड़) में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन का उद्घाटन राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री टीकारामजी पालीवाल ने किया। आप के साथ राजस्थान-सरकार के वित्त और शिक्षा-मंत्री श्री नाथुरामजी मिरधा भी थे। स्वागत प्रमुख श्री दानमलजी बरलोटा, सादड़ी निवासी थे।

यह अधिवेशन ऐतिहासिक-अधिवेशन बन गया था, क्योंकि यह बृहत्-साधु-सम्मेलन के अवसर पर ही किया गया था। इस सम्मेलन और अधिवेशन के समय लग-भग ३५ हजार स्त्री-पुरुष बाहर से आये थे। ग्रीष्म-ऋतु होने पर भी व्यवस्थापकों ने जो व्यवस्था की थी वह बहुत सुन्दर थी।

अधिवेशन के सफलता-सूचक तार व पत्र काफी संख्या में आये थे। जिनमें से मुख्य ये थे:—मान० श्री कन्हैयालालजी एम० मुंशी, खाद्य-मंत्री-भारत-सरकार न्यू० दिल्ली, मान० श्री अजीतप्रसादजी जैन पुनर्वासमंत्री-भारत-सरकार, मान० श्री शांतिलालजी शाह, श्रम-मंत्री—बम्बई सरकार। श्री भोलानाथजी मास्टर, पुनर्वास-मंत्री-राजस्थान सरकार, श्री यू० एन० ढेबर मुख्यमंत्री—सौराष्ट्र सरकार, श्री रसिकभाई पारिख, गृह-मंत्री—सौराष्ट्र सरकार। जोधपुर महाराणीजी दादीजी साहिबा, जोधपुर। श्री सिद्धीराजजी ढढ्ढा, खेमली। इनके सिवाय स्था० जैन-संघों के व अग्रेसरों के भी शुभ-संदेश प्राप्त हुए थे।

अधिवेशन मे कुल १५ प्रस्ताव पास किये गये थे, जिनमें से मुख्य २ निम्न हैं:—

प्रस्ताव २—(जैन-दर्शन को सरकारी पाठ्य-क्रम मे स्थान देने के विषय में)

भारतीय-सस्कृति में जैन-दर्शन, साहित्य, स्थापत्य, प्राकृत और अर्ध-मागधी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है, परन्तु यह खेदकी बात है कि भारतीय विश्व-विद्यालयों के पाठ्य-क्रम मे उसे योग्य स्थान नहीं दिया गया है। इससे आज का यह अधिवेशन भारत-सरकार एव सभी विश्व-विद्यालयों से अनुरोध करता है कि भारतीय-संस्कृति के सर्वांगीण-अध्ययन के लिये उपरोक्त विषयों के अध्ययन की भी व्यवस्था करें।

इस सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार तथा अन्य कार्यवाही करने के लिये निम्न सज्जनों की एक समिति नियुक्त की जाती है।

श्री चम्पालालजी बांठिया-प्रमुख-भीनासर, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह बम्बई, श्री अचलसिंहजी जैन आगरा, श्री हरजसहायजी जैन अमृतसर।

प्रस्ताव ३—(महावीर जयन्ती की छुट्टी के विषय में)

सन्० १९४० की सरकारी जन-गणना के अनुसार भारत मे जैनों की संख्या लगभग ११ लाख है। परन्तु भारत में जैनों की सख्या २० लाख से भी अधिक है ऐसी जैनों की तीनों मुख्य सस्थाओं की मान्यता है। जैन समाज हमेशा से राष्ट्रवादी रहा है। इतना ही नहीं किन्तु आजादी की लड़ाई में भी वह आगे रहा है। आजादी प्राप्त होने के बाद भी जैनों ने अपने विशिष्टाधिकार की माग नहीं की है, बल्कि जब भी ऐसा प्रसग आया है तो, अलग मताधिकार के लिये अपना विरोध ही प्रदर्शित किया है। जैन समाज भारत-सरकार के समक्ष केवल इतनी ही मांग करता है कि जिस अहिंसक-शास्त्र के बल पर आजादी प्राप्त हुई है उस अहिंसा के प्रवर्तक भगवान महावीर के जन्म दिन चैत्र शुक्ला १३ को हिंद भर में आम छुट्टी के रूप मे मान्य किया जाय।

(२) यह अधिवेशन जैन समाज को भी अनुरोध करता है कि वह महावीर-जयती के दिन अपना व्यवसाय व्यपार-धधा आदि बद रखें।

(३) बम्बई-सरकार, राजस्थान-सरकार और अन्य जिन २ सरकारों ने 'महावीर जयन्ती' की आम छुट्टी स्वीकृत करली है, उनका यह अधिवेशन आभार मानता है।

प्रस्ताव ४—(धार्मिक पाठ्य-पुस्तकों की मान्यता बढ़ाने के विषय में)

स्थानकवासी जैन समाज की धार्मिक एव व्यवहारिक शिक्षण-संस्थाओं मे विद्यार्थियों को धार्मिक-शिक्षण देने के लिये कॉन्फरन्स ने विद्वद्-समिति के सहयोग से मैट्रिक तक की कक्षाओं के लिये जो पाठ्य-पुस्तके तैयार की हैं, उनमें से चार भाग गुजराती और पांच भाग हिन्दी में प्रकट हो चुके हैं। इस कार्य के प्रति यह अधिवेशन संतोष प्रकट करता है और समस्त हिन्द की जैन पाठशालाओं से एवं श्री संघ के सचालकों से अनुरोध करता है कि वे इन पाठ्य-पुस्तकों को सभी शिक्षण सस्थाओं में पाठ्य-क्रम के रूप मे मंजूर करें।

प्रस्ताव ५—(स्वधर्मी सहायक फड के विषय में)

पजाब-सिंध राहत-फड में से स० २००८ के वर्ष के लिये रू० ५०००) का बजट मंजूर किया गया है। उस रकम को पजाब-सिंध राहत-फड में रख कर शेष रकम रु० ७१९०९-२-६ रहते हैं, जिसमें से दी गई लोन की रकम रू० ५६३९५) लोन खाते में रखकर शेष रु० १४२११-२-६ स्वधर्मी सहायक फड में ले जाने का निश्चित किया जाता है।

(२) लोन खाते में जो रकम जमा आवे, उसके बारे में आगे विचार किया जायगा।

(३) स्वधर्मी सहायक फंड में ले ली गई रकम की व्यवस्था के लिये निम्नोक्त कमेटी बनाई जाती है:—

श्रीमान् चम्पालालजी बांठिया, श्री कुंदनमलजी फिरोदिया, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह, श्री आनंदराजजी सुराना, श्री वनेचंद भाई दुर्लभजी जौहरी, श्री हरजसरायजी जैन, कॉन्फरन्स के एक मानद् मंत्री Ex-officio

प्रस्ताव ६—(जीव-हिंसा रोकने के विषय में)

पशु-पक्षियों का निकास अन्य देशों मे वेक्सीनेशन एवं अन्य प्रयोगों के लिये हो रहा है, उसे एवं प्रान्तीय-सरकारों द्वारा समय २ पर बंदर-जैसे मूक प्राणियों को मारने के जो हुक्म निकाले गये हैं, ये राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की मान्यता अहिंसा के सिद्धान्त तथा राष्ट्रीय-सरकार की शान के विरुद्ध है। अतः कॉन्फरन्स का यह बारहवां अधिवेशन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि यह निकास शीघ्रातिशीघ्र बंद कर दिया जाय एवं बंदर आदि के मारने के जिन प्रान्तों में हुक्म चालू हैं वे हुक्म वहां की प्रान्तीय-सरकारें वापस खींच लें। देवी-देवताओं के निमित्त से जिन लाखों पशुओं का वध होता है, उसे बंद करने का भी यह अधिवेशन राष्ट्रीय-सरकार एवं प्रान्तीय-सरकारों से अनुरोध करता है।

प्रस्ताव ७—(गौ-वध और जीव-हिंसा रोकने के विषय में)

यह कॉन्फरन्स भारत की वर्तमान राष्ट्रीय-सरकार के प्रति आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखती है, क्योंकि हमारी सरकार अहिंसा के परम उद्धारक भगवान महावीर प्ररूपित सिद्धान्त का एवं महात्मा गांधीजी की अहिंसा की नीति का अनुकरण करती है। उनकी इस नीति के अनुसार यह अधिवेशन मध्यस्थ-सरकार को अनुरोध करता है कि

(अ) भारतवर्ष में गौ-वध एवं दूध देने वाले पशुओं भी एव मादा-पशुओं के क़त्ल को रोकने के लिये खास क़ानून बनाया जाय।

(ब) कृषि-उद्योग की कही जाने वाली रक्षा के नाम पर प्रान्तीय-सरकारें रोझ, बंदर, हिरन, हाथी आदि प्राणियों की हिंसा करने के लिये कायदे बना रही हैं, उसे एवं प्रान्तीय सरकारों ने जहां २ मछली मारने का आदेश दिया है उसे त्वरित रोका जाय।

यह अधिवेशन स्पष्ट रूप से मानता है कि इस तरह की हिंसा रोकने से, जिन अहिंसा के सिद्धांतों से आजादी मिली है उन सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों का प्रचार होगा और राष्ट्र का भी एकान्ततः हित ही होगा। इतना ही नहीं सत्य, अहिंसा एवं गौरक्षा के प्रेमी भारतवासियों को इससे सन्तोष होगा और परिणाम-स्वरूप जनता की राष्ट्रीय-सरकार के प्रति श्रद्धा में विशेष वृद्धि होगी।

प्रस्ताव ८—(आगम-प्रकाशन के लिये)

जयपुर की कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी के प्रस्ताव नं० १२ और मद्रास अधिवेशन के प्रस्ताव नं० १५ के अनुसार ब्यावर में आगम-बत्तीसी के मूल-पाठों का संशोधन कार्य हमारे समाज के विद्वान् एवं शास्त्र-विशारद मुनिराजों के मार्ग-दर्शन द्वारा हो रहा है। इन मूल-पाठों का कार्य और पांच अंग-सूत्रों का शब्दानुलक्षी अनुवाद पूर्ण हुआ है। इनमें से 'आचारांग-सूत्र' प्रकाशन हेतु गुरुकुल प्रिंटिंग प्रेस, ब्यावर को सौंपा गया है। इस कार्य को समाज की ओर से अत्याधिक सहयोग मिला है और कई सूत्रों के प्रकाशन के लिये दाताओं की तरफ से नियत रकम भेंट दी गई है, उसकी इस अधिवेशन में नोंध ली जाती है और आगम-प्रकाशन के इस कार्य के प्रति

संतोष प्रकट किया जाता है। इसे शीघ्र ही पूर्ण करने के लिये आवश्यक कार्यवाही करने का यह अधिवेशन कॉन्फरन्स-ऑफिस को अनुरोध करता है।

प्रस्ताव १०-(साधु-सम्मेलन के विषय में)

कॉन्फरन्स की तरफ से शुरू की गई संघ-ऐक्य योजना जो पिछले तीन वर्ष से चल रही है और जिसे सफल बनाने के लिये कॉन्फरन्स एवं साधु-सम्मेलन नियोजक समिति ने सतत् अविश्रांत प्रयत्न किया है। फलस्वरूप अधिकांश पू० मुनिराजों ने हार्दिक सहयोग दिया है। इतना ही नहीं, परन्तु भीषण गर्मी में भी अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना दूर-दूर से उग्र विहार कर बृहत् साधु सम्मेलन सादड़ी में पधार कर और साम्प्रदायिक मतभेदों को दूर कर प्रेम-पूर्वक संगठित होकर स्थानकवासी जैन-समाज और धर्म के उत्कर्ष के लिये एक आचार्य और एक समाचारी की सुदृढ़ योजना बनाकर 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ' की, स्थापना की है, उसके लिये सब मुनिराजों के प्रति यह अधिवेशन सम्पूर्ण श्रद्धा और आदर प्रदर्शित करता है और बहुमान की दृष्टि से देखता है। भगवान महावीर के शासन मे बृहत्-साधु-सम्मेलन एक अद्वितीय और अभूतपूर्व घटना है—जो जैन शासन के इतिहास में स्वर्णाक्षरों मे चिरस्मरणीय स्थान प्राप्त करती है।

(ब) बृहत्-साधु-सम्मेलन-सादड़ी मे हुई कार्यवाही का यह अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स का १२-वा अधिवेशन हार्दिक अनुमोदन करता है और सम्मेलन के प्रस्तावों के पालन मे श्रावकोचित सर्वांगी और हार्दिक सहकार दृढ़ता पूर्वक देने की अपनी सभी तरह की जवाबदारी स्वीकार करता है और इसके लिये हिंद के सभी स्था० जैन-संघों को यह अधिवेशन अनुरोध करता है कि साधु-सम्मेलन के प्रत्येक प्रस्तावों का पूर्ण पालन कराने के लिये सभी अपनी २ जवाबदारी के साथ सक्रिय कार्य करें।

(क) जो-जो सम्प्रदाय और मुनिराजों के प्रतिनिधि सादड़ी साधु-सम्मेलन मे किसी कारणवश नहीं पधारे हैं, उन्हें यह अधिवेशन साग्रह अनुरोध करता है कि वे श्री 'वर्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ' में एक वर्ष मे शामिल हो जायं, इसमें ही उनका व स्था० जैन समाज का गौरव है।

(ड) यह अधिवेशन भारपूर्वक घोषणा करता है कि समस्त हिंद के 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ' के संगठन में जो साधु-साध्वीजी शामिल नहीं हो जावेंगे, उनके लिये कॉन्फरन्स को गंभीर विचार करना होगा।

सन् १९३३ में अजमेर साधु सम्मेलन मे आरंभित कार्य आज सफल हो रहा है, इससे यह अधिवेशन हार्दिक सन्तोष प्रकट करता है।

प्रस्ताव ११-सादडी बृहत् साधु-सम्मेलन में हुए 'श्री वर्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ' की स्थापना और उसमे बनाये गये विधान और नियमों के पालन कराने के लिये एवं वर्तमान श्रमण संघ के आचार्य और मंत्री-मंडल के साथ सतत सम्पर्क मे रह कर साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों का अमल कराने के लिये निम्न सभ्यों की को-ऑप्ट करने की सत्ता के साथ एक 'स्थायी समिति' बनाई जाती है।

श्री चम्पालालजी बांठिया-प्रमुख-भीनासर, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्री धीरजलाल के० तुरखिया-मंत्री-ब्यावर, श्री मोतीलालजी मुथा सतारा, श्री मानकचंदजी मुथा अहमदनगर, श्री देवराजजी सुराना, ब्यावर, श्री मोहनमलजी चौरड़िया मद्रास, श्री जवाहरलालजी मुणोत अमरावती, श्री रतनलालजी मित्तल आगरा, वनेचंदभाई दुर्लभजी जौहरी जयपुर, श्री रतनलालजी चौरड़िया फलौदी, श्री शांतिलाल मगलदास शेठ अहमदाबाद,

श्री जेठमलजी सेठिया बीकानेर, श्री आदवजी मगनलाल वकील सुरेन्द्रनगर, श्री जेठालाल प्रागजी रूपाणी जुनागढ़, श्री गांडालाल नागरदास वकील वोटाद, श्री रा० व० मोहनलाल पोपटभाई राजकोट, श्री सरदारमलजी छाजेड शाहपुरा, श्री अनोपचद हरिलाल शाह खभात, श्री वेलजी लखमशी नप्पु वम्बई, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह वम्बई, श्री दुर्लभजी केशवजी खेताणी, वम्बई, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह वम्बई, श्री प्राणलाल इ दरजी सेठ वम्बई, श्री गिरधरलाल दामोदर दप्तरी वम्बई, श्री सुगनराजजी वकील रायचूर, श्री सौभाग्यमलजी कोचेटा जावरा, श्री डॉ० नाराणजी मोनजी वेरा वम्बई, श्री मिश्रीलालजी वाफना मन्दसौर, श्री राजमलजी चौरडिया चालीसगांव, श्री हीराचद-जी खींवसरा पूना, श्री ताराचदजी सुराना यवतमाल, श्री चिम्मनसिंहजी लोढ़ा व्यावर, श्री सेठ छगनमलजी मूथा वगलौर, श्री हीरालालजी नांदेचा खाचरोद, श्री चांदमलजी मारु मदसौर, श्री सुजानमलजी मेहता जावरा, श्री वापूलालजी वोथरा रतलाम, श्री रतनचदजी सेमलानी सादड़ी (मारवाड़), श्री अनोपचदजी पूनमिया सादड़ी (मारवाड) श्री लल्लुभाई नागरदास लींवडी, श्री प्रेमचदभाई भूराभाई लींवडी, श्री सुगनचदजी नाहर धामणगांव, श्री कल्याणमलजी वेद अजमेर, श्री अर्जुनलालजी डांगी भीलवाडा, श्री उमरावमलजी ढढ्ढा अजमेर, श्री जेवतभाई दामजीभाई मांडवी, श्री जेसिंगभाई पोचाभाई अहमदावाद, श्री माणकचदजी छल्लाणी मैसूर, श्री कॉन्फरन्स के मत्री। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

इस अधिवेशन के साथ महिला-परिषद् भी हुई थी जिसकी अध्यक्षता श्रीमती ताराबेन वांठिया (धर्मपत्नी सेठ चम्पालालजी वांठिया) ने की। आपका स्त्री-समाज की उन्नति के लिये वडा सुन्दर भाषण हुआ। अन्य कई वहिनों के भाषण हुए थे, जिनमे प्रमुख वक्ता श्री लीलावेन कामदार थीं।

इसके साथ २ युवक-परिषद का भी आयोजन किया गया था। जिसकी अध्यक्षता प्रो० इन्द्रचन्द्रजी जैन एम० ए० ने की थी। कई वक्ताओं के सामाजिक विषयों पर भाषण हुए थे।

कॉन्फरन्स का विधान

कॉन्फरन्स की स्थापना तो सन् १९०६ में हो गई थी, परन्तु कॉन्फरन्स का विधान सर्व प्रथम सन् १९१७ की मैनेजिंग-कमेटी में अहमदावाद में वनाया गया था। जो सन् २५ में मलकापुर-अधिवेशन द्वारा सशोधित किया गया था। शुरू-शुरू में कॉन्फरन्स की मैनेजिंग कमेटी ही सर्वोपरि सत्ता थी। इस विधान के वाद जनरल कमेटी को सर्वोच्च सत्ता दी गई। सन् ४१ मे कॉन्फरन्स का दसवां अधिवेशन घाटकोपर में हुआ। उसमें श्री चिमनलाल चकुभाई शाह ने कॉन्फरन्स का नया विधान वनाकर पेश किया जिसमें हर एक व्यक्ति को कॉन्फरन्स का मैम्वर वनने का अधिकार दिया गया था। इससे पूर्व कम से कम १०) रू० देने वाला ही कॉन्फरन्स का मैम्वर वन सकता था परन्तु इस नये विधान में सामान्य मैम्वर फीस १) रू० कर दी गई। यद्यपि उस समय जव कि यह विधान घाटकोपर अधिवेशन में पेश किया गया था सभा मे काफी ऊहापोह हुआ था। परन्तु अन्त में यह लोकशाही विधान स्वीकृत कर लिया गया।

कॉन्फरन्स का यह नया विधान स्वीकृत हो जाने पर भी समाज में वह सफलता के साथ चल न सका। आखिरकार एक लोकशाही विधान वनाने के लिये, जो कि समाज मे सफलता के साथ चल सके, एक समिति वनाई गई और उस समिति ने सन् ५० में मद्रास के ग्यारहवे अधिवेशन में अपना नया लोकशाही विधान प्रस्तुत किया जो प्रस्ताव १७-द्वारा सर्वानुमति से स्वीकार किया गया। इस अधिवेशन मे लोकशाही विधान के लिये वातावरण निर्माण हो चुका था और चारों तरफ सघ-ऐक्य की भावना प्रसरित हो चुकी थी अतः इस नये विधान का सभी ने स्वागत किया। तव से कॉन्फरन्स का यह विधान अमल में आ रहा है।

सन् १९५३ में कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी जोधपुर में हुई, उस समय इस विधान में कुछ संशोधन किया गया था। वर्तमान में कॉन्फरन्स का जो विधान अमल में आरहा है वह इस प्रकार है:—

श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स का संशोधित नया

विधान

ग्यारहवाँ मद्रास-अधिवेशन में प्रस्ताव न० १७ द्वारा सर्वानुमति से स्वीकृत और जोधपुर
जनरल-कमेटी द्वारा संशोधित

१. नाम—इस संस्था का नाम श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स रहेगा।

२ उद्देश्य निम्न होंगे:—(अ) मानव समाज के नैतिक और धार्मिक-जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयत्न करना। (ब) गरीब, असहाय और अपंग को हर प्रकार से सहायता देना। (क) स्त्री-समाज के उत्थान के लिये शिक्षण-संस्थाएँ और हुनर-उद्योगशाला आदि चलाना। (ख) श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैनों की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक शिक्षा विषयक और सर्वदेशीय उन्नति और प्रगति करना। (ग) जैनधर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करना और एतदर्थ उपदेशक एवं प्रचारक तैयार करना, और नियुक्ति करना। (घ) धार्मिक-शिक्षा देने का प्रबन्ध करना, एतदर्थ संस्थाएँ चलाना, पाठ्य-पुस्तकें तैयार करना, शिक्षक तैयार करना आदि। (ङ) जैन इतिहास, जैन-साहित्य आदि का संशोधन कराना और प्रकाशन करना। (च) जैन-शास्त्रों का प्रकाशन करना-कराना। (श) साधु-साध्वियों के अभ्यास का प्रबन्ध करना। (ज) साधु-साध्वियों के आचार विचार की शुद्धि के साथ पारस्परिक व्यवहार विस्तृत हो ऐसे प्रयत्न करना। (झ) विभिन्न सम्प्रदायों को मिटाकर एक श्रमण-संघ और एक श्रावक-संघ की स्थापना के लिए कार्यवाही करना। (ञ) स्थानकवासी जैनों का संगठन करना और एकता की स्थापना करना। (ट) सामाजिक-रिवाजों में समयानुकूल सुधार करना। (ठ) जैनधर्म के सभी फिर्कों में प्रेम स्थापित करना।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आवश्यकतानुसार

(१) संस्थायें स्थापित करना, स्थापितों को चलाना अथवा चलती हुई असाम्प्रदायिक संस्थाओं की मदद करना। (२) अनुकूल समय पर सम्मेलन, प्रदर्शन, और अधिवेशन करना। (३) उपरोक्त उद्देश्यों से काम करने वाली संस्थाओं और व्यक्तियों के साथ मिल कर कार्य करना, कराना और ऐसी संस्थाओं के साथ सम्मिलित होना या अपने में समावेश करना अथवा उनको मदद करना। (४) व्याख्यानों का आयोजन करना, पुस्तकें तैयार कराना, प्रकाशित करना तथा पत्र-पत्रिकाएँ प्रसिद्ध करना। (५) जनरल-कमेटी समय २ पर निश्चित करे ऐसी प्रवृत्तियाँ आरंभ करना। (६) कॉन्फरन्स के उद्देश्यों को पूर्ण करने में मदद रूप हो सके इसके लिये फंड करना कराना और स्वीकार करना तथा उसका उपयोग जनरल-कमिटी की मंजूरी से करना। (७) शक्य हो वहां जैनों के अन्य फिर्कों तथा अजैनों के साथ मिल कर कार्य करना।

(३) रचना—कॉन्फरन्स सभासदों के प्रकार नीचे मुजब रहेंगे:—

(१) अठारह वर्ष या इससे अधिक उम्र के कोई भी स्थानकवासी स्त्री या हो पुरुष:—(अ) वार्षिक रुपया १) एक शुल्क दे वो सामान्य सभासद माना जावेगा। (ब) वार्षिक रु० १०) दस शुल्क

सहायक सभासद् माना जावेगा। (क) एक साथ रु० ५०१) या इससे अधिक शुल्क देने वाले प्रथम-श्रेणी के और २५१) रु० देने वाले द्वितीय-श्रेणी के आजीवन-सभासद माने जावेंगे। (ख) एक साथ रु० १५०१) देने वाले वाइस-पेट्रन और रु० ५००१) देने वाले पेट्रन कहलायेंगे।

(२) जनरल-कमेटी मान्य करे ऐसे संघ और संस्थाओं के प्रतिनिधि, जिनमें से प्रत्येक प्रतिनिधि को वार्षिक रु० १०) भरने पड़ेंगे वे सभासद, प्रतिनिधि-सभासद कहलायेंगे। प्रत्येक संघ या संस्था प्रति दो वर्ष में अपने प्रतिनिधि नियुक्त करेगी।

(३) जो व्यक्ति कॉन्फरन्स की ऑनेररी सेवा करते हैं, वे कॉन्फरन्स के मानद् सभासद गिने जावेंगे। मानद् सभ्य पद देने का अधिकार कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी को रहेगा। यह अधिकार दूसरी जनरल-कमेटी मिले वहां तक ही रहेगा और प्रति वर्ष मानद् सदस्यों की नामावली जनरल-कमेटी में तय की जायगी। ऐसे सभ्य जनरल कमेटी के भी सभ्य माने जावेंगे।

नोटः—(१) यह विधान अमल में आये तब तक जिन्होंने कॉन्फरन्स के किसी भी फंड में एक मुश्त रु० २५१) या इससे अधिक रकम दी हो, वे कॉन्फरन्स के आजीवन-सदस्य माने जावेंगे।

(२) सभासदों को मताधिकार प्राप्त करने का समय आये तब कम से कम ३ मास पूर्व उन्हें सभासद बन जाना चाहिए और अपना शुल्क जमा कर देना चाहिए।

(३) व-क-ख के सभासदों को 'जैन प्रकाश' बिना मूल्य दिया जावेगा।

(४) वंश-परम्परा के मौजूदा सभ्य चालू रहेंगे लेकिन उन्हें आजीवन-सभासद बनने के लिये प्रार्थना की जाय।

४. प्रांत—कॉन्फरन्स के इस विधान के लिये भारतवर्ष के निम्न प्रांत निश्चित किये जाते हैं:—

(१) बम्बई (शहर और उपनगर), (२) मद्रास और तामिलनाड, (३) आंध्र और हैद्राबाद (४) बंगाल, उड़ीसा और बिहार (५) संयुक्त-प्रान्त (दिल्ली सहित) (६) पंजाब और ओरिसा (७) पूर्वी राजस्थान (८) पश्चिमी राजस्थान (अजमेर प्रान्त सहित) (९) मध्यभारत, (१०) मध्यप्रदेश (सी० पी०) (११) महाराष्ट्र, (१२) गुजरात, (१३) सौराष्ट्र, (१४) कच्छ (१५) केरल (कोचीन, मलबार, त्रावणकोर), (१६) कर्नाटक।

जनरल-कमेटी मंजूर करेगी उस स्थान पर प्रान्त का कार्यालय रहेगा। जनरल-कमेटी प्रांतों की भौगोलिक मर्यादा निश्चित कर सकेगी और ऐसी भौगोलिक मर्यादा में एवं प्रांतों की संख्या में आवश्कतानुसार परिवर्तन कर सकेगी।

५. प्रांतिक-समिति—कार्यवाहक-समिति समय-समय पर प्रांतिक-समितियाँ रचेगी और उसकी रचना-कार्य एवं सत्ता निश्चित करेगी।

६. जनरल-कमेटी—जनरल-कमेटी निम्नोक्त सभासदों की होगी:—(१) सर्व आजीवन सभासद, सर्व वाइस-पेट्रन और पेट्रन (२) सर्व प्रतिनिधि सभासद। (३) सामान्य और सहायक-सभासदों के प्रतिनिधि-जो प्रति दस सभ्यों में से चुने जावेंगे। (४) गतवर्षों के प्रमुख।

७. कार्यवाहक समिति—प्रति वर्ष जनरल-कमेटी कार्यवाहक समिति के लिए ३० सभ्यों का चुनाव करेगी। कार्यवाहक समिति अपने अधिकारी नियुक्त करेगी। कार्यवाहक समिति के अधिकारी जनरल-कमेटी एव कॉन्फरन्स के अधिकारी माने जावेंगे। अधिवेशन के प्रमुख बाद में दो वर्ष तक कार्यवाहक-समिति के प्रमुख रहेंगे।

८ कार्य विभाजन और सत्ता—(१) कॉन्फरन्स अधिवेशन के प्रस्तावों के आधीन रहकर जनरल-कमेटी कॉन्फरन्स का सम्पूर्ण कार्य एव व्यवस्था करेगी। कॉन्फरन्स की सम्पूर्ण सत्ता जनरल-कमेटी के हस्तक रहेगी।

(२) कार्यवाहक-समिति कॉन्फरन्स के अधिवेशन एव जनरल-कमेटी के प्रस्तावों के आधीन रह कर, कॉन्फरन्स की सम्पूर्ण प्रवृत्तियों को अमल मे लाने के लिये योग्य कार्यवाही करेगी और उसके लिये उत्तरदायी रहेगी।

(३) इस विधान को अमल में लाने और इस विधान मे उल्लेख न हुआ हो ऐसी सभी बातों के सम्बन्ध में इस विधान से विरोधी न हो ऐसे नियमोपनियम बनाने और समय पर प्रांतीय एव अन्य समितियों को आदेश देने की एव उसमें समय २ पर परिवर्तन करने की कार्यवाहक-समिति को सत्ता रहेगी। कार्यवाहक-समिति प्रांतीय और अन्य समितियों की कार्यवाही पर नजर एव नियन्त्रण रखेगी और उसका हिसाब देखेगी।

९. समिति की बैठकें—(१) प्रमुख और मंत्रियों की आवश्यकतानुसार अथवा कार्यवाहक-समिति के ७ सभ्यों की लिखित विनती से कार्यवाहक-समिति की बैठक, कार्यवाहक-समिति की आवश्यकतानुसार, अथवा जनरल-कमेटी के २५ सभ्यों की लिखित विनती से जनरल-कमेटी की बैठक बुलाई जायगी।

लिखित विनती से बुलाई गई कार्यवाहक और जनरल-कमेटी की बैठक के लिए उस विनती मे बैठक बुलाने का हेतु स्पष्ट होना चाहिये।

कार्यवाहक-समिति की बैठक के लिये ७ दिन और जनरल-कमेटी की बैठक के लिये १४ दिन पूर्व सूचना देनी होगी। प्रमुख एव मन्त्रियों को तात्कालिक आवश्यकता महसूस हो तो इससे भी कम मुद्दत मे बैठक बुला सकेंगे।

(२) कार्यवाहक-समिति की बैठक के लिये ७ सभ्य और जनरल-कमेटी की बैठक के लिए ३० सभ्य या उसके कुल सभ्यों की १।५ सख्या की उपस्थिति (दोनों में से जो सख्या कम हो) कार्य साधक उपस्थिति मानी जायगी। जिसमें १० सभ्य आमत्रण देने वाले प्रात के सिवाय अन्य प्रांतों के होना जरूरी हैं। किसी बैठक में कार्य साधक उपस्थिति न हो तो वह स्थगित रहेगी और दूसरी बैठक मे कार्य साधक उपस्थिति की आवश्यकता नहीं रहेगी। किन्तु ऐसी दूसरी बैठक में प्रथम की बैठक में जाहिर हुए कार्य-क्रम के अलावा अन्य कार्य नहीं हो सकेंगे। स्थगित हुई बैठक २४ घटे बाद मिल सकेगी।

(३) जनरल-कमेटी की बैठक वर्ष में कम से कम एक बार, वर्ष पूर्ण होने पर तीन मास मे बुलानी पड़ेगी और उस बैठक में अन्य कार्यों के उपरान्त निम्न कार्यवाही की जायगी—(अ) कार्यवाहक-समिति का चुनाव। (ब) कार्यवाहक-समिति एक वर्ष के अपने कार्य का विवरण पेश करेगी। (क) ऑडिट हुआ हिसाब और आगामी वर्ष का आनुमानिक बजट भी स्वीकृति के लिये पेश किया जायेगा।

(४) अधिवेशन के पूर्व कम से कम एक दिन और अधिवेशन के बाद यथाशीघ्र जनरल-कमेटी की बैठक बुलाई जावेगी।

१०. अधिवेशन—(१) कार्यवाहक समिति निश्चित करे उस समय और स्थल पर कॉन्फरन्स का अधिवेशन होगा।

(२) जिस सघ की ओर से अधिवेशन का आमंत्रण मिलेगा, वह सघ अधिवेशन के खर्च के लिये जिम्मेवर रहेगा और अधिवेशन के लिये सम्पूर्ण प्रबन्ध करेगा।

कार्यवाहक-समिति की निगहरानी में और सूचनानुसार आमंत्रण देने वाला संघ स्वागत-समिति की रचना करेगा और अधिवेशन की संपूर्ण व्यवस्था करेगा। अधिवेशन का खर्च वाद करते हुए जो वचत रहे, उसका २५ प्रतिशत उस सघ का रहेगा और शेष रकम कॉन्फरन्स की रहेगी।

अधिवेशन के वाद तीन मास मे स्वागत-समित को अधिवेशन का सम्पूर्ण हिसाब कार्यवाहक-समिति के आगे पेश करना पड़ेगा।

(३) तीन वर्ष तक किसी भी संघ की ओर से अपने खर्च से अधिवेशन करने का आमंत्रण न मिले तो कॉन्फरन्स के खर्च से अधिवेशन किया जा सकेगा।

(४) अधिवेशन के प्रमुख का चुनाव स्वागत समिति का अभिप्राय जानकर कार्यवाहक-समिति करेगी।

(५) अधिवेशन में मताधिकार निम्न सभ्यों को रहेगा:—(अ) प्रतिनिधि की टिकिट खरीदने वाले। (व) स्वागत-समिति की टिकिट खरीदने वाले। (क) कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी के सभी सभ्यों को।

(नोट:—प्रतिनिधि एव स्वागत समिति की टिकटों का शुल्क अधिवेशन के पहले कार्यवाहक-समिति तय करेगी।)

(६) अधिवेशन की विषय-विचारिणी-समिति की रचना इस प्रकार होगी :—(अ) जनरल-कमेटी के उपस्थित सभ्यों मे से २५ प्रतिशत सभ्य। (व) प्रत्येक प्रात के पॉच सभ्य। (क) स्वागत-समिति के सभ्यों में से २५ सभ्य (ख) अधिवेशन के प्रमुख की ओर से ४ सभ्य। (ग) कॉन्फरन्स के वर्तमान सर्व अधिकारी (घ) भूतकाल के प्रमुख ।

११ अधिवेशन के प्रमुख की समय-मर्यादा—अधिवेशन के प्रमुख उसके वाद दो वर्ष तक कॉन्फरन्स एवं जनरल-कमेटी के प्रमुख रहेंगे। दो वर्ष में अधिवेशन न हो तो वाद में होने वाली जनरल-कमेटी की प्रथम बैठक में दो वर्ष के लिए प्रमुख का चुनाव होगा।

१२ विशिष्ट फड—विशिष्ट उद्देश्य से कॉन्फरन्स को प्राप्त फडों में से कॉन्फरन्स के खर्च के लिये कार्यवाहक-समिति निश्चित करे तदनुसार १० प्रतिशत तक लेने का कॉन्फरन्स को अधिकार रहेगा।

विशिष्ट उद्देश्य को लेकर किये गये फण्ड का उपयोग उस उद्देश्य के लिये निरुपयोगी या अशक्य मालूम हो तो कॉन्फरन्स के दूसरे उद्देश्यों के लिये उस फण्ड अथवा उसकी आय का उपयोग करने की सत्ता जनरल-कमेटी की खास बैठक को होगी।

१३. ट्रस्टी—अपनी प्रथम बैठक के ससय जनरल-कमेटी आजीवन सभासदों, पेट्रनों, वाइस प्रेट्रनों मे से पॉच ट्रस्टियों का चुनाव करेगी। तत्पश्चात् प्रति पॉच वर्षों में ट्रस्टियों का चुनाव जनरल-कमेटी करेगी।

१४. कॉन्फरन्स की मिल्कियत—(१) जनरल-कमेटी के मजूर किये गये वजट के अनुसार आवश्यक रकम कॉन्फरन्स के मन्त्रियों के पास रहेगी। कॉन्फरन्स की तदुपरांत की रोकड़, जामिनगीरियॉ, जरूरी खत, दस्तावेज आदि कॉन्फरन्स के ट्रस्टियों के पास रहेंगे।

(२) जनरल-कमेटी अथवा कार्यवाहक-समिति के प्रस्तावानुसार ट्रस्टी-गण कॉन्फरन्स के मन्त्रियो को आवश्यक रकम देंगे।

१५ स्थावर मिल्कियत—कॉन्फरन्स की सभी स्थावर मिल्कियत ट्रस्टियों के नाम रहेगी।

१६. करार आदि—कॉन्फरन्स की ओर से स्थावर मिल्कियत से संबंधित न हो ऐसे खत-पत्र, लेखन और करारनामे कॉन्फरन्स के मंत्रियों के नाम रहेंगे। कॉन्फरन्स को दावा करना पड़ेगा तो कॉन्फरन्स के मंत्रियों के नाम से होगा।

१७ कार्यालय—कॉन्फरन्स का कार्यालय जनरल-कमेटी निश्चित करेगी उस स्थान पर रहेगा।

१८ वर्ष—कॉन्फरन्स का वर्ष १ जुलाई से ३० जून तक का होगा।

१६ चुनाव और मताधिकार—चुनाव या मताधिकार संबंधी कोई मतभेद या तकरार हो, अथवा निर्णय की आवश्यकता हो तब कार्यवाहक-समिति का निर्णय अंतिम माना जावेगा।

२०. विधान में परिवर्तन—इस विधान में परिवर्तन करने की सत्ता जनरल-कमेटी को रहेगी। बैठक मे उपस्थिति सभ्यों की ३।४ बहुमति से विधान मे परिवर्तन हो सकेगा। विधान मे संशोधन एवं परिवर्तन की स्पष्ट सूचना कार्य-विवरण में प्रकट कर देनी चाहिये।

२२ मध्यकालीन व्यवस्था—(१) इस विधान को अमल मे लाने और तदनुसार प्रथम जनरल-कमेटी तथा कार्यवाहक-समिति की रचना करने के लिये जो कुछ भी कार्यवाही करनी पड़े तो तदनुकूल करने की सत्ता इस अधिवेशन के प्रमुख को दी जाती है।

(२) इस विधान को अमल मे लाने मे जो कुछ भी कठिनाई या असुविधा मालूम हो तो उसे दूर करने के लिये योग्य कार्यवाही करने की सत्ता इस अधिवेशन के प्रमुख को रहेगी।

(३) यह विधान चैत्र शुक्ला त्रयोदशी सं० २००६ (चैत्री सं० २००७) से अमल में आता है।

नोटः—किसी कारण इस समय के बीच में इस विधान के अनुसार सभ्य बनाना और जनरल-कमेटी तथा कार्यवाहक-समिति की रचना न हो सके तो तब तक पुराने विधान के अनुसार सभ्यपद, जनरल-कमेटी तथा कार्यवाहक-समिति चालू रहेगी।

अन्य बातों में यह विधान अमल मे आवेगा और इन सभी कालमों में बताई गई सभी बातों का निर्णय इस अधिवेशन के प्रमुख करेंगे।

मोरवी-अधिवेशन के पश्चात् कॉ० ऑफिस के संचालनार्थ बनाई गई निम्न सर्व प्रथम मैनेजिंग-कमेटी

प्रमुख—राय सेठ श्री चांदमलजी सा० रियांवाले, अजमेर। सभ्य (१) नगर सेठ श्री अमृतलालभाई वर्धमानभाई, मोरवी (२) देशाई श्री वनेचन्दभाई राजपालभाई मोरवी (३) सेठ श्री अंबावीदासभाई डोसाणी मोरवी (४) पारिख श्री वनेचन्दभाई पोपटभाई मोरवी (५) दफ्तरी श्री गोकलदास भाई राजपाल भाई, ऑ० मेनेजर, (६) श्री वनेचन्द भाई पोपटभाई, मोरवी, एकाउन्टेन्ट (७) मेहता श्री सुखलालभाई मोनजीभाई मोरवी, ट्रेजरर (८) श्री लखमीचन्दभाई माणकचन्दभाई खोखाणी मोरवी, ऑ० सेक्रेट्री (६) सेठ श्री गिरधरलालभाई सौभाग्यचन्द्रभाई मोरवी, ऑ० जॉइन्ट सेक्रेट्री (१०) मेहता श्री मनसुखलालभाई जीवराजभाई मोरवी, ऑ० ज० सेक्रेट्री (११) जौहरी श्री दुर्लभजीभाई त्रिभुवनदासभाई मोरवी ऑ० ज० सेक्रेट्री।

प्रारंभ में बहुत वर्षों तक कॉ० ऑफिस का कार्य-संचालन निम्न जनरल-सेक्रेटरियों तथा प्रांतिक सेक्रेटरियों के नेतृत्व में होता रहा

जनरल-सेक्रेटरीः—

(१) सेठ श्री केवलदासभाई त्रिभुवनदासभाई, अहमदाबाद (२) सेठ श्री अमरचन्दजी पित्तलिया, रतलाम, (३) लाला श्री सादीरामजी गोकलचन्दजी, दिल्ली, (४) श्री गोकलदासभाई राजपालभाई, मोरवी, (५) राय सेठ श्री चांदमलजी रियांवाले, अजमेर, (६) सेठ श्री वालमुकन्दजी चन्दनमलजी मूथा, सतारा। (७) दी० व० श्रीविशनदासजी, जम्मु। (८) दी० व० श्री उम्मेदमलजी लोढ़ा, अजमेर।

प्रांतिक-सेक्रेटरीः—

(पजाव)—(१) लाला श्री नथमलजी, अमृतसर, (२) लाला श्री रलारामजी, जालंधर। (मालवा)—(१) सेठ श्री चांदमलजी, पित्तलिया, जॉवरा (२) श्री सुजानमलजी वांठिया, पिपलोदा, (३) श्री फूलचन्दजी कोठारी, भोपाल। (मेवाड़)—(१) श्री वलवंतसिंहजी कोठारी, उदयपुर, (२) श्री नथमलजी चौरड़िया, नीमच। (मारवाड़)—(१) सेठ श्री समीरमलजी वालिया, पाली, (२) श्री नोरत्नमलजी भांडावत, जोधपुर, (३) सेठ श्री गणेशमलजी मालू, बीकानेर। (राजपूताना)—(१) सेठ श्री शार्दूलसिंहजी मुणोत, अजमेर, (२) श्री आनन्दमलजी चौधरी, अजमेर (३) श्री राजमलजी कोठारी, जयपुर, (४) श्री गुलावचन्दजी कांकरिया, नयाशहर (५) श्री छोटेलालजी चुन्नीलालजी जौहरी, जयपुर, (६) श्री घीसूलालजी चौरड़िया, जयपुर। (ग्वालियर)—(१) श्री चांदमलजी नाहर, भोपाल, (२) श्री सौभाग्यमलजी मूथा, इच्छावर (भोपाल)। (हाडौती, ढुंढार, शेखावाटी)—(१) लाला श्री कपूरचन्दजी, आगरा। (काठियावाड़)—(१) श्री पुरुषोत्तमजी मावजी वकील, राजकोट, (२) श्री वनेचन्दभाई देशाई, मोरवी, (३) सेठ श्री देवशीभाई धरमशी (मोटी-पक्ष) मांडवी, (४) सेठ श्री देवशीभाई भाणजी (नानी-पक्ष) खंधार। (कच्छ)—(१) सेठ श्री मेघजी देवचन्दभाई, भुज, (२) सेठ श्री अनोपचन्दभाई वीरचन्दभाई, भुज, (३) सेठ श्री माणकचन्दभाई पानाचन्दभाई सघवी, मांडवी। (उत्तर-गुजरात)—(१) सेठ श्री जमनादासभाई नारायणदासभाई, अहमदावाद, (२) सेठ श्री माणकलालभाई अमृतलालभाई अहमदावाद। (दक्षिण-गुजरात) (१) रा० व० श्री कालीदासभाई नारायणदासभाई, डटोला, (२) वकील श्री मगनलालभाई प्रेमचन्दभाई, सूरत। (सिंध)—(१) सेठ श्री प्रागजीभाई पानाचन्दभाई, करांची। (वम्बई)—(१) सेठ श्री मेघजीभाई थोभण जे० पी०, वम्बई, (२) श्री सूरजमलभाई भोजूभाई सोलीसीटर, वम्बई, (३) ज० से० श्री वृजलालभाई खीमचन्दभाई शाह, वम्बई। (खानदेश-वरार)—(१) सेठ श्री लछमनदासजी श्रीमाल, जलगांव। (निजाम-राज्य)—(१) लाला नेतरामजी रामनारायणजी, हैद्रावाद, (२) ज० से० श्री रामलालजी कीमती, हैद्रावाद। (दक्षिण)—(१) सेठ वालमुकन्दजी चदनमलजी मूथा, सतारा, (२) श्री उत्तमचन्दजी चांदमलजी कटारिया श्रीगोंदा, (३) श्री भगवानदासजी चदनमलजी, पित्तलिया, अहदनगर। (मद्रास)—(१) श्री सोहनराजजी कुचेरावाले, मद्रास। (मलवार)—(१) श्री भगवानजी डूंगरशी, कोचीन। (बंगाल)—(१) सेठ श्री अगरचन्दजी भैरोंदानजी सेठिया, कलकत्ता, (२) ज० से० श्री धारसीभाई गुलावचन्दभाई सघाणी, कलकत्ता। (ब्रह्मदेश)—(१) सेठ श्री पोपटलालभाई डाह्याभाई, रगून। (अरविस्तान)—(१) सेठ श्री हीराचन्दभाई सुन्दरजी, एडन। (अफ्रीका)—(१) श्री मोहनलालभाई माणकचन्दभाई, खडारिया, पिटर्सवर्ग।

गत ५० वर्षों में स्था० जैन कॉन्फरन्स के तेरह बृहत्-अधिवेशन हुए

क्रम	स्थान—सन्—तारीख	अध्यक्ष—स्वागताध्यक्ष
प्रथम	मोरवी फरवरी सन् १९०६ ता० २६, २७, २८	अ०— सेठ श्री चांदमलजी रियांवाले, अजमेर। स्वा०—सेठ श्री अमृतलाल वर्धमाण, मोरवी।
द्वितीय	रतलाम मार्च सन् १९०८ ता० २७, २८, २९	अ०— सेठ श्री केवलदास त्रिभुवनदास अहमदाबाद। स्वा०—सेठ श्री अमरचन्दजी पित्तलिया, रतलाम।
तृतीय	अजमेर मार्च सन् १९०९ ता० १०, ११, १२	अ०— शास्त्रज्ञ सेठ वालमुकन्दजी मूथा, सतारा। स्वा०—राय सेठ श्री चादमलजी सा० अजमेर।
चतुर्थ	जालधर मार्च सन् १९१० ता० २७, २८, २९	अ०— दी० ब० श्री उम्मेदमलजी लोढा, अजमेर
पञ्चम	सिकन्द्राबाद अप्रैल सन् १९२३ ता० १२, १३, १४	अ०— सेठ श्री लछमनदासजी श्रीश्रीमाल जलगांव। स्वा०—रा० ब० श्रीसुखदेवसहायजी हैदराबाद।
षष्ठम	मल्कापुर (म० प्र०) जून सन् १९२५ ता० ७, ८, ९	अ०— सेठ श्री मेघजीभाई थोभण जे० पी० बम्बई। स्वा०—सेठ श्री मोतीलालजी कोटेचा, मल्कापुर।
सप्तम	बम्बई दिस०-जन० सन् १९२६-२७ ता० ३१, ता० १, २	अ०— सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया, बीकानेर। स्वा०—सेठ श्री मेघजीभाई थोभण, बम्बई।
अष्टम	बीकानेर अक्टूबर सन् १९२७ ता० ६, ७, ८	अ०— तत्वज्ञ श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह, घाटकोपर। स्वा०—सेठ श्री मिलापचन्दजी वेद, झांसी-बीकानेर।
नवम	अजमेर अप्रैल सन् १९३३ ता० २२, २३, २४, २५	अ०— सेठ श्री हेमचन्द रामजीभाई, भावनगर। स्वा०—लाला ज्वालाप्रसादजी जैन, महेन्द्रगढ़।
दशम	घाटकोपर अप्रैल सन् १९४१ ता० ११, १२, १३	अ०— सेठ श्री वीरचन्द मेघजीभाई, बम्बई। स्वा०—सेठ श्री धनजीभाई देवशीभाई, घाटकोपर।
एकादशम	मद्रास दिसम्बर सन् १९४९ ता० २४, २५, २६	अ०— श्रीमान कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर। स्वा०—सेठ श्री मोहनमलजी चौरडिया, मद्रास।
द्वादशम	सादडी मई सन् १९५२ ता० ४, ५, ६	अ०— सेठ श्री चंपालालजी बांठिया, भीनासर। स्वा०—सेठ श्री मोहनमलजी बरलोटा, सादडी।
त्रयोदशम	भीनासर (बीकानेर रा०) अप्रैल सन् १९५६ ता० ४, ५, ६	अ०— सेठ श्री बनेचन्द दुर्लभजी, जौहरी, जयपुर। स्वा०—सेठ श्री जयचन्दलालजी रामपुरिया, बीकानेर।

अजमेर-ऑफिस से दिल्ली-ऑफिस पर्यन्त कॉन्फरन्स-ऑफिस के निम्न संचालक मंत्रीगण रहे

अजमेर-कॉ०-ऑफिस —(१) ज० से० राय सेठ श्री चांदमलजी, रियांवाले, (२) ऑ० सेक्रेट्री-कुं० श्री छगनमलजी (३) असि० से० श्री बेचरदासभाई वीरचन्दभाई तलसाणिया। तदनन्तर-(१) डॉ० श्री धारसी भाई गुलाबचन्दभाई संघाणी तथा (२) श्री भवेरचन्दभाई जादवजी कामदार ने कार्य किया।

दिल्ली—कॉ०-ऑफिस (१) ज० से० लाला गोकलचन्दजी जौहरी।

रतलाम—कॉ०-ऑफिस (१) ज० से० सेठ श्री वर्धमानजी पित्तलिया।

सतारा—कॉ०-ऑफिस (१) ज० से० टी० व० श्री मोतीलालजी मूथा।

बम्बई-कॉ०-ऑफिस—

(१) ज० से० सेठ श्री वेलजीभाई लखमशी नप्पुभाई, (२) ज० से० सेठ श्री सूरजमलभाई लल्लूभाई जौहरी, (३) ज० से० श्री चिम्मनलाल चक्कुभाई शाह, सोली० (४) ज० से० श्री खीमचन्दभाई मगनलालभाई वोरा, (५) मंत्री श्री चिमनलालभाई पोपटलालभाई शाह, (६) मंत्री—श्री टी० जी० शाह, (७) मंत्री—श्री निहालचन्दभाई मूलचन्दभाई सेठ, (८) मंत्री श्री नवलचन्दभाई अभयचन्दभाई मेहता, (९) मंत्री—श्री चुन्नीलालभाई कल्याणजीभाई कामदार, (१०) मंत्री—श्री गिरधरलालभाई दामोदरभाई दफ्तरी, (११) उप—प्रमुख—श्री दुर्लभजीभाई के० खेताणी।

दिल्ली-कॉ०-ऑफिस आने के पश्चात् मंत्री पद पर जिन्होंने सेवा दी

उप प्रमुख—डॉ० श्री दौलतसिंहजी कोठारी M. A. Ph D,

प्रधान-मंत्री—सेठ श्री आनन्दराजजी सुराना, M. L A,

मंत्रीगण—

लाला हेमचन्दजी नाहर, लाला गुलाबचन्दजी जैन,
लाला हरजसरायजी जैन, श्री भीखालालभाई गि० सेठ,
श्री धीरजलालभाई के० तुरखिया, लाला गिरधरलालजी जैन M A.,
लाला उत्तमचन्दजी जैन B. A. L. L. B, लाला अजितप्रसादजी जैन B A L L B

नोट :—पृष्ठ न० ७६, ७७ पर सिकन्द्राबाद अधिवेशन के प्रस्ताव न० १४ के बाद भूल से मल्कापुर अधिवेशन के प्रस्ताव न० २, ३, ४ छप गए हैं अतः कृपया पाठक इन्हें न पढ़ें।

प्रारंभिक अल्प समय में प्रान्तिक-कॉन्फरन्सें बुलवाईं

(१) बोटेश्वर (लींबडी) में झालावाड़ बीसा श्रीमाली स्थानकवासी जैनों की प्रथम-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स सं० १९६२ में भाद्र शुक्ला ६ मगलवार को लींबड़ी-नरेश श्री यशवन्त सिंहजी K. C I. की अध्यक्षता में हुई। जिसमें ग्यारह ताल्लुके के अग्रगण्य सज्जन पधारे थे। कार्यवाही आठ दिन तक चली। कॉन्फरन्स का संपूर्ण खर्च सघवी श्री धारसी भाई रवा लींबड़ी निवासी ने उठाया।

(२) श्री गौंदा (दक्षिण) में श्रीमान् सेठ बालमुकन्दजी, हजारीमलजी सतारा निवासी की अध्यक्षता में श्री ओसवाल जैन प्रान्तिक-कॉन्फरन्स हुई। इसमें समाज सुधार विषयक प्रस्तावों के अतिरिक्त श्वेताम्बर मूर्ति-पूजक तथा स्थानकवासी जैनों की सयुक्त कॉन्फरन्स करके ऐक्यता सस्थापन करने का प्रस्ताव भी हुआ।

(३) बढवाण (सौराष्ट्र) में झालावाड़ बीसा श्रीमाली स्था० जैनों की तृतीय बैठक हुई।

(४) गोहिलवाड़ दशा श्रीमाली जैनों की कॉन्फरन्स बोघा (सौराष्ट्र) में बुलाई।

(५) कलोल में गुजरात के विभिन्न ग्रामों की कॉन्फरन्स बुलाई।

(६) पंजाब-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स का प्रथम अधिवेशन जंडियाला में हुआ।

(७) पजाब-प्रान्तिक-कॉन्फरन्स का द्वितीय अधिवेशन स्यालकोट मे हुआ।

(८) झालावाड दशा श्रीमाली स्थानकवासी जैनों की प्रान्तिक-कॉन्फरन्स लींबड़ी में बुलाई।

चतुर्थ-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स की विशिष्ट प्रवृत्तियां

कॉन्फरन्स प्रारम्भ होने के पश्चात् आरम्भ होने वाली शुभ प्रवृत्तियां

(१) जैन समाज की विभिन्न सम्प्रदायों में एक ही दिवस सवत्सरी कराने के लिये सतत-प्रयत्न किया गया।

(२) जगह २ उपदेशकों द्वारा धर्म प्रचार, कुरूढ़िएं तथा फिजूल खर्ची बद कराने के लिए शुभ प्रयत्न किए गये।

(३) कॉन्फरन्स के विविध खातों के लिये फड किया गया।

(४) स्था० समाज की डिरेक्टरी अर्थात् जन-गणना के लिए प्रयत्न किया गया।

(५) बम्बई, तथा अहमदाबाद मे परीक्षा निमित्त जाने वाले परीक्षार्थियों को ठहराने एव भोजनादि का प्रबन्ध किया गया।

(६) करीब एक सौ देशी राज्यों को जीव-दया अर्थात् प्राणियों का वध बद कराने के लिए अपीलें भेजकर जगह २ हिंसा बद कराने का प्रयत्न किया गया।

(७) जैन मुनियों को रेल्वे पुल पार करने पर लगने वाले टॉल टैक्स से मुक्त कराने का प्रयत्न किया गया।

(८) जैन मुनियों तक की तलाशी लेकर नये वस्त्रों पर जो कस्टम लिया जाता था उसे बद कराने का प्रयत्न किया गया।

(९) कच्छ मांडवी-खाते में सेठ मेघजी भाई थोमणभाई से रु० २५ हजार दिलवाकर 'सस्कृत-पाठशाला' खुलवाई।

(१०) लींबडी-सम्प्रदाय के साधुओं का लींबडी मे, दरियापुरी स० के साधुओं का कलोल में और खभात स० के साधुओं का खभात मे सम्मेलन करवा कर सुधार करवाए। इसी समय लींबडी-सम्प्रदाय के शिथिलाचारियों को सघाडे से पृथक किये तथा कइयों को उसी वक्त अलग कराए।

(११) व्यवहारिक-शिक्षण के लिये बम्बई में बोर्डिंग-हाउस तथा धार्मिक-शिक्षण के लिये रतलाम मे जैन ट्रेनिंग-कॉलेज की स्थपना की।

(१२) 'अर्ध-मागधी-भाषा शिक्षण-माला' की रचना करने के लिये प्रयत्न किया।

(१३) सम्प्रदाय वार साधु-साध्वियों की गणना की गई।

(१४) जैन साधु-साध्वियों को पब्लिक-भाषण देने के योग्य बनवाए।

(१५) अहमदाबाद मे शा नाथालाल मोतीलालजी की उदारता से 'दशा श्रीमाली-श्राविकाशाला' तथा जामनगर में 'बीसा श्रीमाली-श्राविकाशाला' की स्थापना कराई।

(१६) श्री पीताम्बर हाथीभाई मालगपुर वालों से रु० १८ हजार की उदारता से स्थानकवासी जैन विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप दिलवाले की व्यवस्था की।

(१७) धार्मिक ज्ञान के प्रचारार्थ स्थान स्थान पर जैन पाठशालाएं, कन्या शालाएं, श्राविका-शालाएं, पुस्तकालय मडल, सभाए तथा वाचनालय खुलवाए। और व्यवहारिक शिक्षण प्रचार के लिये बोर्डिंग, तथा उद्योगशालाएं खुलवाई।

(१८) जैनियों में ऐक्य वृद्धि के लिये प्रयत्न किए।

(१९) सम्प्रदायों को अपनी मर्यादा बाधने के लिये, एकल विहार तथा आज्ञा से पृथक रहने का निषेध किया और आचार्य नियुक्ति के लिये प्रेरणा देकर व्यवस्थित करने के लिये प्रयत्न किये।

(२०) निराश्रित बहिनों, भाइयों, और बालकों को आश्रय दिलवाने के प्रयत्न किए।

(२१) हजारों भीलों से मसाहार तथा मदिरा-पानादि छुडवाए। दशहरा एवं नवरात्रियों मे राजा महाराजाओं द्वारा होनेवाली जीव-हिंसा को कम करवाई तथा देवस्थानों में होती हुई पशु पक्षी-हिंसा को रुकवाने के लिये प्रयत्न किये।

(२२) साधु-मुनिराजों को अन्यान्य प्रान्तों मे विचरण करने की तथा पब्लिक-भाषण देने के लिए सफल प्रेरणा दी। जिसके फल स्वरूप राजा-महाराजा, सरकारी अधिकारी तथा अजैन लोग आकर्षित हुए और उन्होंने हिंसा, शिकार, मद्य-मांस, कुव्यसन आदि सेवन करने के त्याग किए। इस प्रकार जैनधर्म, नीति और सदाचार का प्रचार बढने लगा।

(२३) जैन तिथि पत्र (अष्टमी-पक्खी की टीप) तैयार कराया।

(२४) जैनों के तीनों फिर्कों की सयुक्त-कॉन्फरन्स बुलाने का प्रयत्न किया और परस्पर विरोधी लेखों, पेम्फ्लेटों का तथा दीक्षित साधुओं को भगाने या बदलाने की विरोधी प्रकृति को रुकवाने के लिए प्रयत्न किए।

(२५) महावीर-जयती, समस्त फिर्कों के जैन एक साथ मिलकर मनाए इसके लिए प्रेरणा दी और प्रयत्न किया।

(१) श्री स्था० जैन-बोर्डिंग, बम्बई

व्यवहारिक शिक्षण मे विद्यार्थियों को सुविधा देने के लिये बम्बई में ता०-१-६-१६०१ मे एक 'श्री स्था० जैन-बोर्डिंग' आरंभ किया गया, जिसका प्रबध निम्न लिखित सज्जनों को सुपुर्द किया गया:—

जनरल-सेक्रेट्री :—श्रीमान् सेठ मेघजीभाई थोमणभाई, बम्बई, श्रीमान् वकील पुरुषोत्तमभाई मावजीभाई, राजकोट, श्रीमान् गोकलदासभाई राजपाल, मोरवी, श्रीमान् जेसिंहभाई उजमशीभाई, अहमदाबाद,

कुछ वर्षों के बाद श्री बृजलालभाई खीमचंदभाई शाह सोलीसीटर के मंत्रीत्व में बोर्डिंग चला और बादमे फंड के अभाव में बद करना पडा।

(२) श्री जैन ट्रेनिंग-कॉलेज, रतलाम

स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की तरफ से सन् १६०६ में श्री जैन ट्रेनिंग-कॉलेज की रतलाम में ता० २६-८-१६०६ को स्थापना की गई। कार्यवाहक-समिति निम्न प्रकार बनाई गई:—

श्री सेठ अमरचंदजी पित्तलिया, रतलाम (प्रमुख), श्री लाला गोकलचदजी जौहरी दिल्ली, (उप प्रमुख), ला० श्री सुजानमलजी बांठिया, पिपलोदा (मत्री), श्री वरदभाणजी पित्तलिया, रतलाम (मत्री), श्री केशरीचंदजी भंडारी देवास (मत्री), श्री मिश्रीमलजी बोराना रतलाम (सह-मंत्री)।

रतलाम में यह सस्था ८ वर्ष तक अच्छी तरह चलती रही। सेठ अमरचदजी बरधभाणजी पित्तलिया आदि ने इसकी अच्छी देख-रेख रखी। इस बीच इस सस्था से बहुत से सुयोग्य विद्वान भी तैयार होकर निकले। जैन समाजके प्रसिद्ध सन्त आत्मार्थी प० मुनि श्री मोहन ऋषिजी म०, श्री चुन्नीलालजी म० आदि इसी ट्रेनिंग कॉलेज की देन हैं, जिन्होंने तत्कालीन समाज में काफ़ी जागृति पैदा की थी। मारवाड़ जैसे क्षेत्र में अनेकों स्थानों पर आप मुनिवरों ने अपने उपदेशों द्वारा पाठशालाएं, गुरुकुल वाचनालय, श्राविकाशालाए आदि की स्थापना कराई और शिक्षा का प्रसार किया। बगड़ी, बलून्दा की पाठशाला, ब्यावर जैन-गुरुकुल व भोपालगढ़-विद्यालय की स्थापना में आपका ही उपदेश रहा हुआ था। जैन ट्रेनिंग-कॉलेज के तीन टर्म्स में अच्छे सुयोग्य कार्यकर्ता तैयार हुए और उन्होंने स्था० जैन धर्म और समाज की तथा कॉन्फरन्स की सुन्दर सेवा की। श्री धीरजलालभाई के० तुरखिया, तथा श्री मोतीरामजी श्रीश्रीमाल आदि इसी जैन ट्रेनिंग कॉलेज के स्नातक हैं।

यदि यह ट्रेनिंग कॉलेज इसी तरह आगे भी बराबर चलती रहती तो समाज को अच्छे कार्यकर्ताओं की आज कमी नहीं रहती। परन्तु दुर्भाग्य से ८ साल बाद सन् १९१८ में यह संस्था बद हो गई।

(३) 'जैन-प्रकाश' का प्रकाशन

श्री अ० भा० श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की स्थापना सन् १९०६ में मोरवी मे हुई। उसके ७ साल बाद 'जैन-प्रकाश' का प्रकाशन चालू किया गया। कॉन्फरन्स के प्रति धीरे-धीरे समाज में उत्साह फैलता गया और लोग उससे आकर्षित होते गये, तब यह आवश्यक समझा गया कि कॉन्फरन्स का एक निजी मुख-पत्र प्रकाशित होना चाहिये जिससे कि सारे समाज को कॉन्फरन्स की गति-विधियों से परिचित कराया जा सके। अत. सन् १९१३ मे 'जैन-प्रकाश' का जन्म हुआ, जो आज भी विगत ४२ वर्षों से समाज की सेवा करता चला जा रहा है।

प्रारभ मे 'जैन-प्रकाश' साप्ताहिक रूप से ही नियमित निकलता रहा। सन् सन्१९१३ से १९३६ तक साप्ताहिक रूप से नियमित निकलता रहा। १ जून सन् १९३६ से अहमदाबाद जनरल-कमेटी के प्रस्ताव न० १२ के अनुसार इसे पाक्षिक कर दिया गया।

ता० २९-१२-१९३६ को कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी भावनगर में हुई। उसमे यह निर्णय किया गया कि ता० १ जनवरी सन् १९३७ से पुन 'जैन प्रकाश' को साप्ताहिक कर दिया जाय। तदनुसार प्रकाश पुन. साप्ताहिक रूप से प्रकाशित होने लगा। सन् १९४१ तक 'प्रकाश' साप्ताहिक ही निकलता रहा। ता० २५-१२-१९४१ को अहमदनगर मे कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी हुई, उसमे पुन प्रस्ताव न० ११ द्वारा यह तय किया गया कि 'प्रकाश' की हिन्दी और गुजराती आवृत्ति दोनों एक साथ न निकाल कर अलग-अलग प्रकाशित की जाय। प्रति सप्ताह क्रमशः एक-एक आवृत्ति निकाली जाय। इस तरह सन् १९४१ के बाद 'प्रकाश' पुनः पाक्षिक कर दिया गया। महीने मे दो बार हिन्दी और दो बार गुजराती 'जैन प्रकाश' प्रकट होने लगा। और गुजराती तथा हिन्दी ग्राहकों को अलग-अलग आवृत्ति भेजी जाने लगी। सन् १९५४ के अन्त तक इसी तरह जैन-प्रकाश दोनों भाषाओं मे अलग-अलग पाक्षिक रूप में निकलता रहा। इस बीच कई बार 'जैन प्रकाश' को साप्ताहिक कर देने के लिये विचारा गया और जनरल-कमेटी में प्रस्ताव भी पास किये गये, परन्तु साप्ताहिक रूप से प्रकट न हो सका। आखिर जब कॉन्फरन्स का कार्यालय बम्बई से दिल्ली स्थानान्तरित हुआ तब पुनः 'जैन-प्रकाश' को साप्ताहिक करने का विचार किया गया और २ दिसम्बर सन् १९५४ से 'जैन प्रकाश' की दोनों आवृत्तियां (हिन्दी

और गुजराती) एक कर दी गईं और पुनः यह हिन्दी-गुजराती द्विभाषा-साप्ताहिक के रूप में कर दिया गया। इससे भी कइयों को संतोष न हुआ और हिन्दी व गुजराती भिन्न-भिन्न आवृत्तियां निकालने की सूचनाएं आने से बीकानेर ज० क० के आदेशानुसार सं० २०१२ तद० ता० १-१२-५४ से गुजराती और हिन्दी पृथक साप्ताहिक रूप में निकल रहा है। 'जैन प्रकाश' के अब तक निम्न सम्पादक रह चुके हैं :—

(१) डॉ० धारसीभाई गुलाबचंद संघाणी, (२) श्री झवेरचंद जादवजी कामदार, (३) पं० बालमुकुन्दजीशर्मा, (४) श्री रतनलालजी बघेलवाल, (५) पं० दुखमोचनजी झा, (सन् २२-२३ दो वर्ष) (६) श्री दुर्गाप्रसादजी (सन् २४-२५ दो वर्ष) (७) जौहरी सूरजमल लल्लुभाई (ऑ) (८) श्री झवेरचंद जादवजीभाई कामदार (९) श्री सुरेन्द्रनाथजी जैन (दो वर्ष) (१०) श्री त्रि० बी० हेमाणी (कुछ समय) (११) श्री डाह्यालाल मणिलाल मेहता (४ वर्ष) (१२) श्री हर्षचन्द्र भफरचद दोशी, (६ वर्ष) (१३) श्री नटवरलाल कपूरचंद शाह, (३ वर्ष) (१४) श्री गुलाबचंद नानचंद शेठ, (२ वर्ष) (१५) श्री रमणिकलाल तुरखिया, (१६) श्री एम० जे० देसाई, (६ वर्ष) (१७) श्री रत्नकुमार जैन 'रत्नेश' (८ वर्ष)

जैन प्रकाश पहले कुछ वर्षों तक अजमेर से निकला करता था, परन्तु बम्बई ऑफिस जाने के बाद वह बम्बई से ही प्रकाशित होता रहा। बम्बई से दिल्ली ऑफिस आजाने पर अब यह दिल्ली से ही प्रकाशित हो रहा है। वर्तमान में 'जैन प्रकाश' का सम्पादक-मंडल इस प्रकार है:—

श्री खीमचद मगनलाल वोरा	मानद सम्पादक	} {	सम्पादक
श्री धीरजलाल के० तुरखिया	,, ,,	} {	शांतिलाल वनमाली शेठ

'जैन प्रकाश' स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स का मुख पत्र है जो विगत ४२ वर्षों से समाज की सेवा कर रहा है। समाज की जागृति में और कॉन्फरन्स की प्रवृत्तियों के प्रचार में 'जैन प्रकाश' का महत्त्वपूर्ण भाग रहा है। स्था० जैन समाज का अभी यही एक मात्र प्रामाणिक साप्ताहिक-पत्र है। स्था० जैन साधु-साध्वियों के विहार-समाचार और मुनिराजों तथा विद्वानों के धार्मिक तथा सामाजिक-लेख तथा कॉन्फरन्स की प्रवृत्तियां आदि इसमें प्रकट होते रहते हैं।

(४) श्री सुखदेवसहाय जैन-प्रिंटिंग-प्रेस

स्व० राजा बहादुर श्री ला० सुखदेव सहायजी ने सन् १९१३ में पांच हजार रुपये कॉन्फरन्स को प्रेस के लिये प्रदान किये थे, जिनसे सन् १९१४ में प्रेस खरीदा गया। यह प्रेस सन् १९२५ तक अजमेर मे चलता रहा और कॉन्फरन्स का 'जैन प्रकाश' भी यहीं से प्रकाशित होता रहा। कॉन्फरन्स ने अपनी जनरल-कमेटी में यह प्रेस बेंच देने का प्रस्ताव किया। सन् १९२५ के बाद यह प्रेस इन्दौर चला गया था, जहां श्रीयुत् सरदारमलजी भंडारी इसकी देख-रेख रखते थे। अर्ध-मागधी भाषा का प्रसिद्ध कोष—पहला और दूसरा भाग इसी प्रेस में छपकर तैयार हुआ था। जब कॉन्फरन्स का दफ्तर बम्बई चला गया तो बम्बई-प्रेस का स्थानान्तर इन्दौर से बम्बई में करना व्ययशील होने से जनरल-कमेटी ने सन् १९२९ में उसे इन्दौर में ही बेंच देने का प्रस्ताव पास किया। सन् १९३० में भी पुनः इसी प्रस्ताव को दोहराया गया। अन्त में वह बेंच दिया गया। प्रेस की बिक्री से खर्च निकालने पर रु० १३९१।-)॥। मिले, जो कॉन्फरन्स की बहियों में 'श्रीसुखदेव सहाय जैन प्रिंटिंग-प्रेस' खाते में जमा कर लिये गये।

ता० १०-५-१६३६ को कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी अहमदाबाद में हुई। उसमें पुन. प्रेस खरीदने का निर्णय किया गया। रु० १३६१) तो पहले के जमा थे ही और रु० २५००) कॉन्फरन्स ने अपनी ओर से प्रदान किए। इस प्रेस का नाम 'सुखदेव सहाय जैन-प्रिंटिंग प्रेस' ही रखने का तय किया। तदनुसार बम्बई मे प्रेस खरीद लिया गया था और 'जैन-प्रकाश' तथा कॉन्फरन्स के अन्य प्रकाशन उसी में छपकर प्रकट होने लगे।

परन्तु आगे चल कर प्रेस में घाटा रहने लगा तो ता० २४-१-१६४१ की जनरल-कमेटी में प्रस्ताव नं० १० के द्वारा प्रेस को बेंच देने का निर्णय किया गया। इसके बाद कॉन्फरन्स का अपना प्रेस न रहा।

(५) श्री अर्ध-मागधी-कोष का निर्माण

जैन धर्म के साहित्य का अधिकांश भाग अर्ध-मागधी भाषा मे है। जिस भाषा का प्रामाणिक कोष होता है उस भाषा के अर्थों को समझने में कोई बाधा उपस्थित नहीं होती। बिना कोष के उस भाषा का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना कठिन है। कोष और व्याकरण भाषा के जीवन होते हैं। व्याकरण की गति तो विद्वानों तक ही सीमित होती है, परन्तु कोष वह वस्तु है जिसका उपयोग विद्वान और साधारण वर्ग भी समान रूप में कर सकते हैं। अतः कोष की महत्ता स्पष्ट है। इन्हीं विचारों से प्रेरित हो सर्व प्रथम सन् १६१२ में श्री केशरीचन्दजी भडारी, इन्दौर को 'अर्ध-मागधी-कोष' बनाने का विचार आया और वे इस ओर सक्रिय रूप से जुट भी गये। उन्होंने जैन सूत्रों मे से लगभग १४ हजार शब्दों का सकलन किया। उसी समय इटली के प्रसिद्ध विद्वान डॉ० स्वाली ने भी श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स को इसी प्रकार का एक कोष बनाने की अपनी इच्छा व्यक्त की थी। जब यह बात श्री केशरीचन्दजी भडारी को ज्ञात हुई तो उन्होंने अपना दिया हुआ शब्द सग्रह डॉक्टर स्वाली को भेजने के लिये श्वे० कॉन्फरन्स को भेज दिया। परन्तु बीच मे ही युद्ध प्रारभ हो जाने से तथा अन्य कई कारण उपस्थित हो जाने से डॉक्टर स्वाली यह काम नहीं कर सके। तब उन्होंने अपनी स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स से ही इस प्रकार का कोष प्रकट करने का अपना विचार प्रदर्शित किया और कॉन्फरन्स ने भी इस उपयोगी कार्य को अपने हाथ में लेना स्वीकार कर लिया।

कोष का कार्य कॉन्फरन्स ने अपने व्यय मे करना स्वीकार कर लिया था, पर उसके निर्माण आदि की सारी व्यवस्था का कार्यभार कॉन्फरन्स ने श्री भडारीजी को ही सौंप दिया था। शुरू मे विद्वानों की सहायता तथा अन्य साधनों के अभाव मे इस कार्य की सन्तोषप्रद प्रगति न हो सकी। सन् १६१६-१७ मे जब भडारीजी बम्बई गये तो वहां उनकी भेंट शतावधानी प० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० से हो गई। मुनि श्री सस्कृत और प्राकृत-भाषा के प्रकांड विद्वान थे। उनसे श्री भडारीजी ने कोष-निर्माण की बात की और यह कार्य अपने हाथ मे ले लेने का अनुरोध किया। मुनि श्री ने उनकी बात को स्वीकार करते हुए कोष बनाने का आश्वासन दिया। इस अवधि में भी दो वर्ष तो यों ही व्यतीत हो गये। मुनि श्री कारणवश कुछ न कर सके। लेकिन शेष तीन वर्षों में आपने अन-वरत श्रम करके कोष का काम पूरा कर दिया। इतनी थोड़ी अवधि मे इतना बड़ा कार्य कर देना, यह आप जैसे सामर्थ्यवान विद्वानों का ही काम था। इस कार्य मे लींबड़ी-सम्प्रदाय के पडित मुनि श्री उत्तमचदजी म०, पजाब के उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० तथा प० श्री माधव मुनिजी म० और कच्छ आठ कोटि-सम्प्रदाय के प० मुनि श्री देवचन्दजी स्वामी ने भी पूर्ण सहयोग दिया है। इस कोष में अर्ध मागधी के साथ २ आगमों, भाष्य, चूर्णिका आदि में आने वाले समस्त शब्दों का अर्थ दिया गया है। फिर भी यह कोष आगमों का होने से इसका नाम अर्ध-मागधी-कोष ही रखा गया है।

इस कोष के ५ भाग हैं। चार भागों में तो आगम-साहित्य के शब्दों का संग्रह किया गया है। पांचवें भाग में जो शब्द छूट गये, उनका और महाराष्ट्रीय तथा देशी प्राकृत-भाषा के शब्दों का भी संग्रह किया गया है जिससे यह कोष प्राकृत-भाषा का पूरा कोष हो गया है।

इस कोष में अर्ध-मागधी, संस्कृत, गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी, इस प्रकार पांच भाषाएं दी गई हैं। अर्ध-मागधी-कोष, ५ वें भाग के प्रकाशन में सेठ केदारनाथजी जैन, रोहतक वाले, सोरा कोठी, दिल्ली ने लगभग २५००) रु० की सहायता प्रदान की थी।

अर्ध-मागधी कोष का पहला भाग सन् १९२३ में, दूसरा सन् १९२७, तीसरा सन् १९३०, चौथा सन् १९३२ और पांचवां भाग सन् १९३८ में प्रकाशित हुआ।

यह उल्लेखनीय है कि कोष के आद्य प्रेरक श्री केशरीमलजी भंडारी, कोष का पहला भाग ही छपा हुआ देख सके, लेकिन उसमें भी वे मानसिक व्याधि से 'दो-शब्द' न लिख सके। सन् १९२५ में उनका स्वर्गवास हो गया। उनके बाद उनके सुपुत्र श्री सरदारमलजी भंडारी ने कोष की व्यवस्था संभाली और अपने पिता श्री का मनोरथ पूर्ण किया।

प्रस्तुत कोष के निर्माण में शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० ने जो श्रम उठाया वह उल्लेखनीय है। यह कोष आज अर्ध-मागधी भाषा का प्रामाणिक कोष माना जाता है। इंगलेंड, फ्रांस, जर्मनी आदि कई पाश्चात्य देशों में भी यह कोष भेजा गया है और अब भी वहां से इसकी मांग आ रही है।

जब तक यह कोष रहेगा तब तक शता० पं० रत्न श्री रत्नचन्द्रजी म० का नाम और उनका यह कार्य अमर बना रहेगा। पांचों भागों का मूल्य अभी २५०) रु० है।

(६) श्री जैन ट्रेनिंग-कॉलेज, बीकानेर

सन् १९२५ में मलकापुर अधिवेशन के समय, जो कि कॉन्फरन्स का छठा अधिवेशन था, पुनः जैन-ट्रेनिंग-कॉलेज स्थापित करने का प्रस्ताव पास किया गया और कुछ फंड भी एकत्रित किया गया। कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी ने जो कि ता० ३, ४, ५ अप्रेल सन् १९२६ को बम्बई में हुई थी, ट्रेनिंग-कॉलेज इस बार तीन वर्ष के लिये बीकानेर में चलाने का निर्णय कर उसकी सारी व्यवस्था का भार दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया को सौंप देने का तय किया। तदनुसार ता० १९-८-१९२६ को बीकानेर में जैन-ट्रेनिंग-कॉलेज का उद्घाटन हुआ। यह उद्घाटन-समारोह बीकानेर महाराजा श्री भैरोंसिंहजी K C S I. द्वारा सानंद सम्पन्न हुआ। कॉलेज में २० छात्र प्रविष्ट हुए, जिनमें से १२ गुजरात–काठियावाड़ के थे और ८ मेवाड़–मालवा के।

सुपरिन्टेन्डेन्ट के रूप में श्री धीरजभाई के० तुरखिया की नियुक्ति की गई। कॉलेज की कमेटी इस प्रकार बनाई गई थी :—

जौहरी सूरजमल लल्लुभाई बम्बई, सेठ वीरचंद मेघजीभाई थोभण बम्बई, सेठ वेलजीभाई लखमशी नप्पु बम्बई, सेठ भैरोंदानजी सेठिया बीकानेर, सेठ वरधभानजी पित्तलिया रतलाम, सेठ कनीरामजी बांठिया भीनासर, मेहता बुधसिंहजी वेद आबू, सेठ मोतीलालजी मूथा सतारा, सेठ सरदारमलजी भंडारी इंदौर, सेठ आनंदराजजी सुराना जोधपुर, सेठ दुर्लभजीभाई त्रिभुवन जौहरी जयपुर।

यह संस्था सन् १९२८ के मई मास तक बीकानेर में रही। बाद में कॉलेज-कमेटी के सभ्यों के निर्णय से यह जयपुर आई और उसका संचालन धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी को सौंपा। जुलाई सन् १९२८ से विद्यार्थी

जयपुर आए और कॉलेज का कार्य आरभ हुआ। ता० १५ फरवरी सन् १६३१ तक कॉलेज जयपुर रहा। बाद में अर्थाभाव की वजह से ब्यावर-गुरुकुल के साथ ही मिला दिया गया। इसकी दो टर्म्स में अच्छे २ युवक कार्यकर्ता तैयार हुए।

ट्रेनिंग-कॉलेज में विद्यार्थियों को न्यायतीर्थ तक अध्ययन करने की तथा संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं की पूरी २ जानकारी करने की सुव्यवस्था की गई थी। ट्रेनिंग-कॉलेज को ब्यावर-गुरुकुल के साथ मिलाने से पूर्व ही ट्रेनिंग-कॉलेज के छात्र अपना २ पाठ्य-क्रम समाप्त कर चुके थे। इसके बाद जो छात्र आगे अध्ययन करना चाहते थे उन्हें मासिक छात्रवृत्ति दी जाती थी। लेकिन ट्रेनिंग-कॉलेज के रूप में जो स्वतंत्र संस्था जैन समाज में बड़े आदर के साथ चल रही थी वह १५ फरवरी सन् १६३१ में बंद कर दी गई। समाज के उत्थान में इस कॉलेज का प्रमुख भाग रहा है क्योंकि इसी से तैयार होकर कार्यकर्ता निकले हैं जो समाज में आज भी अपनी सेवा दे रहे हैं। प० हर्षचन्द्रजी दोशी, प० खुशालचन्द्रजी, प० प्रेमचन्द्रजी लोढा, प० दलसुखभाई मालवणिया, पं० शांतिलाल व० शेठ आदि इसी ट्रेनिंग-कॉलेज का फल हैं। कॉलेज की उस समय समाज में बहुत प्रतिष्ठा थी। पं० बेचरदासजी, प० मुनि श्री विद्याविजयजी आदि विद्वानों ने कॉलेज का निरीक्षण कर प्रसन्नता प्रकट की थी। छात्रों को केवल शास्त्रीय और व्यवहारिक ज्ञान ही नहीं, किन्तु भ्रमण द्वारा भी उन्हें विशेष ज्ञान कराया जाता था।

दुर्भाग्य से यदि यह संस्था बंद न हुई होती तो आज समाज में कार्यकर्ताओं की कमी न होती। संस्थाएं तो उसके बाद कई खुलीं और बंद हुई, परन्तु इस जैसी संस्था का प्रादुर्भाव आज तक न हुआ। आज ऐसी संस्था की नितांत आवश्यकता है।

(७) श्री श्वे० स्था० जैन-विद्यालय, पूना

सन् १६२७ में कॉन्फरन्स का ७ वां अधिवेशन बम्बई में हुआ था, उस समय इस विद्यालय की शुरुआत हुई। शुद्ध जल-वायु और उच्च शिक्षा की सुव्यवस्था होने से पूना स्थल पसन्द किया गया। तब से सन् १६४० तक यह विद्यालय पूना में किराये के मकान में ही चलता रहा। सन् १६४१ में जब कॉन्फरन्स का घाटकोपर में अधिवेशन हुआ तो उसमें पूना-विद्यालय के लिये स्वतन्त्र मकान बनवाने का निर्णय किया गया। लेकिन उस समय लड़ाई के कारण कार्यारम्भ न हो सका। घाटकोपर-अधिवेशन में इसके लिये ५० हजार रुपयों का फण्ड भी हुआ था। सन् १६४६ में मकान का कार्य प्रारम्भ किया गया। श्री टी० जी० शाह इस कार्य के लिये बम्बई से पूना जा कर रहे। परन्तु मंहगाई की वजह से खर्च अधिक होने से ५० हजार रु० व्यय हो जाने पर भी ६० हजार रुपयों की और आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः ता० १५ जून सन् १६४७ की कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी में यह प्रश्न उपस्थित किया गया। पूना विश्व-विद्यालय की कमेटी ने टूटती रकम के लिये यह प्रस्ताव किया कि "कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी और बम्बई हाईकोर्ट की स्वीकृति लेकर पूना-विद्यालय की पूरी मिल्कियत जैन एज्युकेशन-सोसायटी बम्बई को इस शर्त पर सौंप दिया जाय कि पूना विद्यालय का भवन पूरा करने में जो कुछ भी टोटा रहे और इसके सम्बन्ध में पूना विद्यालय की कमेटी ने जो कुछ देना किया हो, जो सब मिला कर ६०,०००) रु० के लगभग होगा, उसे जैन एज्युकेशन-सोसायटी भरपाई करे और पूना-विद्यालय अभी जिस तरह से चल रहा है कम से कम उसी तरह से सोसायटी चलाती रहे।"

उपरोक्त प्रस्ताव कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी में पेश किया गया था। इसके साथ एक दूसरा प्रस्ताव भी पेश किया गया था कि यदि उपर का प्रस्ताव जनरल-कमेटी को मान्य न हो तो धन की तात्कालिक आव-

श्यकता के कारण कॉन्फरन्स फड मे पूना-विद्यालय को तीन टके के व्याज से १२ मास में भर देने की शर्त पर ३० हजार रुपयों की लोन दी जाय।

अन्त में काफी विचार-विमर्श के बाद पूना विद्यालय को ३० हजार रु० का लोन देने का प्रस्ताव पास किया गया।

इस तरह की सहायता से विद्यालय का नया मकान अक्टूबर सन् १९४७ मे जाकर एक मजिला बन पाया, पर उस पर ८५०००) रु० का कर्ज हो गया, जिसे एकत्रित कर चुकाना कठिन प्रतीत होने लगा। अतः पुनः ४ अप्रैल सन् १९४८ की कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी मे जो कि बम्बई में हुई थी, विद्यालय को ऐज्युकेशन-सोसायटी बम्बई को सौंप देने का बोर्डिंग-कमेटी ने प्रस्ताव किया। तत्कालीन परिस्थिति मे इतना रुपया एकत्रित करना कठिन था और किसी ने भी इसकी जिम्मेवरी लेना स्वीकार नहीं किया फलतः जनरल-कमेटी पूना-बोर्डिंग-कमेटी का वह प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हो गया। प्रस्ताव इस प्रकार है:—

(२) पूना बोर्डिंग कमेटी ने जैन एज्युकेशन-सोसायटी को पूना-बोर्डिंग सौंप देने का जो नीचे मूजब प्रस्ताव किया है उसे मजूर किया जाता है और तदनुसार पूना-बोर्डिंग सोसायटी को सौंप देने का निर्णय किया जाता है।

पूना बोर्डिंग कमेटी का प्रस्ताव।—कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी और बम्बई हाई-कोर्ट की मंजूरी लेकर पूना विद्यालय की तमाम मिल्कियत स्था० जैन एज्युकेशन सोसायटी, बम्बई को निम्न शर्तों पर सौंप देना—

(१) मकान का काम सोसायटी पूरा करे। (२) विद्यालय का जो देना है वह सोसायटी दे। (३) पूना विद्यालय अभी जिस प्रकार चलता है कम से कम उसी प्रकार सोसायटी चलावे। (४) कॉन्फरन्स के अधिवेशन की मजूरी बिना विद्यालय को सोसायटी स्थानान्तर नहीं करे और न बन्द करे।

(५) विद्यालय फड में जिसने एक साथ १०००) रु० अथवा इससे अधिक रकम दी हो और जो सोसायटी का सभ्य न हो उसको सोसायटी के नियमानुसार सभ्य मानें।

कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी और हाई-कोर्ट की मजूरी मिलने पर इस प्रस्ताव पर अमल करना और विद्यालय की मिल्कियत सोसायटी के नाम पर करने मे जो कोई दस्तावेज लिखना पड़े या दूसरी कोई लिखावट लिखनी पडे तो विद्यालय-ट्रस्टियों को इसकी सत्ता दी जाती है।

इस विद्यालय का मकान बनाने मे श्री टी० जी० शाह, स्थानीय मत्री श्री परशुरामजी चौरडिया, इंजीनियर, श्री शकरलालजी पोकरना और श्री नवलमलजी फिरोदिया ने काफी दिलचस्पी ली।

जनरल-कमेटी के एक प्रस्तावानुसार पूना विद्यालय स्था० जैन एज्युकेशन सोसायटी, बम्बई को सौंप दिया गया, जिसका सचालन अभी सोसायटी ही कर रही है।

इस विद्यालय में मैट्रिक से ऊपर के छात्र भरती किये जाते हैं। अब तक कई विद्यार्थी यहां से वकील, डॉक्टर और ग्रेजुएट होकर निकल चुके हैं।

(८) श्री श्राविकाश्रम की स्थापना

सन् १९२६ में कॉन्फरन्स का सातवां अधिवेशन बम्बई में हुआ था। उसमें सर्व प्रथम श्राविकाश्रम की स्थापना करने का एक प्रस्ताव पास किया गया और उसी समय अधिवेशन के प्रमुख दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया ने एक हजार रुपये प्रदान कर इस फंड की भी शुरुआत कर दी। धीरे धीरे यह फंड बढ़ता गया और सन्

१९४७ तक लगभग ११ हजार रुपये हो गये। इस बीच में श्राविकाश्रम की स्वतन्त्र व्यवस्था न हो सकी। लेकिन जो बहिनें पढ़ना चाहती थीं उन्हें बम्बई स्थित तारदेव मे चलने वाली दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम में छात्रवृत्ति देकर कॉन्फरन्स व्यवस्था कर देती थी। इस तरह इस फड का उपयोग केवल छात्रवृत्ति देने तक ही सीमित रहा।

ता० ३-४ अप्रैल सन् १९४८ को बम्बई मे कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी हुई, उसमें पुनः श्राविकाश्रम के लिये विचारणा की गई और उसकी आवश्यकता स्वीकार करते हुए इसके लिये योग्य प्रयत्न करने के लिए निम्न भाई-बहिनों की एक समिति बनाई गई। श्राविकाश्रम स्थापना-समिति निम्न प्रकार है:—

श्री केशरबेन अमृतलाल झवेरी, श्री चचलबेन टी० जी० शाह, श्री लीलावतीबेन कामदार, श्री फूलकुंवर-बेन चौरडिया, श्री रमाबेन गांधी, श्री विद्याबेन शाह, श्री कमलाबेन बसा, श्री चिमनलाल चकुभाई शाह, श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह, श्री चुनीलाल कामदार, श्री न्यालचद मूलचंद शेठ, श्री बचुभाई प्रेमजी कोठारी श्री टी० जी० शाह, श्री चुनीलाल रायचंद अजमेरा।

पुराना फड बढ़ाने के लिये कोशिश शुरु की गई पर हिन्दुस्तान का विभाजन हो जाने से निर्वासितों की व्यवस्था आदि कार्य पैदा हो गये जिससे श्राविकाश्रम-फड की वृद्धि न की जा सकी।

सन् १९४८ के दिसम्बर मास मे कॉन्फरन्स की जनरल-कमेटी हुई। उसमे पुनः श्राविकाश्रम की आवश्यकता का प्रस्ताव स्वीकार किया गया और उसके लिये आर्थिक सहयोग देने की समाज से प्रार्थना की गई।

ब्यावर की यह जनरल-कमेटी महत्त्वपूर्ण थी। सघ ऐक्य योजना भी इसी कमेटी में तैयार हुई थी। समाज के कई अग्रगण्य सज्जन इस कमेटी मे उपस्थित हुए थे। वातावरण में कुछ जोश आया हुआ था। अतः श्राविकाश्रम के इस प्रस्ताव की प्रस्ताविका श्रीमती चचल बेन शाह और लीलाबेन कामदार ने उसी समय यह प्रतिज्ञा ग्रहण की कि जब तक ५००००) रु० पूरे न होंगे तब तक हम बम्बई मे पैर नहीं रखेंगी। इन बहिनों की प्रतिज्ञा सुन कर श्री टी० जी० शाह के हृदय मे भी जोश उमड़ आया और उन्होंने भी 'जब तक इस फड मे एक लाख रुपये न होंगे तब तक दूध पीने का त्याग कर दिया।' श्राविकाश्रम के लिये की गई इस त्रिपुटी की प्रतिज्ञाओं का उस समय सभा पर अच्छा असर हुआ और जैन गुरुकुल-ब्यावर का वार्षिक महोत्सव होने से उसी मीटिंग में ८०००) रु० का फड भी हो गया।

ब्यावर से इस त्रिपुटी का प्रवास प्रारम्भ हुआ। क्रमश उन्होंने पाली, अजमेर, उदयपुर, चित्तौड़, निंबा-हेड़ा, मदसौर, रतलाम, जावरा, खाचरौद, इन्दौर, उज्जैन, अहमदाबाद, खभात, पालनपुर दिल्ली, जयपुर पूना आदि का प्रवास किया और श्राविकाश्रम के लिये रुपया एकत्रित किया। श्री चचलबेन और लीलाबेन की प्रतिज्ञा सेठ आनन्दराजजी सुराना के प्रयत्न से दिल्ली में आकर पूर्ण हुई। श्री टी० जी० शाह की प्रतिज्ञा सेठ रामजी भाई हसराज कामाणी, बम्बई ने, ११,१११) रु० देने की स्वीकृति देकर पूर्ण कराई। ता० २८ ३-१९५० तक इस फंड में १,१४२५१) रु०-१० आ०-६ पा० एकत्रित हुए।

इसके सिवाय दो हजार गज जमीन घाटकोपर मे डॉ० रामजी भाई के सुपुत्र श्री चुनीलाल भाई ने श्राविकाश्रम को भेंट प्रदान की है, उसकी कीमत २० हजार रु० के लगभग है। किन्तु यह जमीन टाउन प्लेनिंग स्कीम में होने से अभी तात्कालिक इसका उपयोग नहीं हो सकता है। ता० ३०-८-४९ को घाटकोपर मे स्टेशन के बिलकुल पास ही २५ सौ वर्ग गज जमीन वाला दो मजिला बना बनाया शेठ वरजीवनदास त्रिभोवनदास नेमचंद का बंगला ८५ हजार रु० में खरीदा गया। इस मकान में किरायेदार रहने से इसका उपयोग भी श्राविकाश्रम के

लिये नहीं हो सकता था अतः श्राविकाश्रम व्यवस्थापक-समिति ने इसके ऊपर एक और मञ्जिल बनाने का तय किया। २४-५-५३ को यह कार्य आरम्भ हुआ जो ता० २४-९-५३ को पूरा हुआ। इस अर्से मे बम्बई में श्री टी० जी० शाह जो इस समिति के उत्साही मत्री हैं, ने पर्यूषण-पर्व मे लगभग १० हजार रुपए का फड एकत्रित किया। फुटकर सहायता भी समय-समय पर कॉन्फरन्स के प्रचारकों द्वारा आती रहती है। लेकिन अब इस फड में मकान आदि बना लेने पर कुछ शेष नहीं रहता।

श्राविकाश्रम शुरु करने के लिये आवश्यक सामान तथा हुनर-उद्योग के साधन बसाने के लिये २५ हजार रुपयों की आवश्यकता है। श्राविकाश्रम व्यवस्थापक-समिति इसके लिये प्रयत्नशील है।

गत विजयादशमी (स० २०१२ गु० २०११) आसौज शु० १० से श्राविकाश्रम प्रारम्भ कर दिया है। सख्या मे श्राविकायें इसका लाभ लेवें यह जरूरी है।

(९) श्री पंजाब-सिंध सहायता-कार्य

देश के स्वतत्र होते ही पजाब पर जो मुसीबत आई उससे हमारे जैनी भाइयों को भी अवर्णनीय कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़ा। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के विभाजन से पजाब के कई शहरों पर जहां कि हमारे जैनी भाई काफी सख्या में रहते थे, मुसीबत का पहाड टूट पडा। सितम्बर सन् १९४७ मे कॉन्फरन्स पर निराश्रित भाइयों के लगातार पत्र, तार और सदेश आने शुरु हो गये और इस विषम-स्थिति में वे कॉन्फरन्स से यथाशक्य सहायता की मांग करने लगे। कॉन्फरन्स ने इस विकट प्रश्न को अपने हाथ मे लेने का निर्णय किया। रावलपिंडी मे अपने १२०० भाई फंसे हुए थे, अत सर्व प्रथम कॉन्फरन्स ने वहां का ही प्रश्न अपने हाथ में लिया। पजाब-सिंध निराश्रित सहायता फड की शुरुआत करते हुए सर्व प्रथम कॉन्फरन्स ने १००१) रु० प्रदान किये। बम्बई सकल श्री सघ ने भी १००१) रु० प्रदान कर इस फड को आगे बढ़ाया। 'जैन प्रकाश, मे इसकी जाहिरात प्रकट कर सहयोग देने की अपील की गई। फलतः समस्त समाज ने अपना लक्ष्य इस ओर केन्द्रित किया और शक्य सहयोग प्रदान करना आरभ किया। जोधपुर, सैलाना, मन्दसौर, ब्यावर, कुशालगढ, डग आदि २ शहरों के श्रीसघों ने निराश्रितों को यथोचित तादाद मे अपने यहां बसाने की इच्छा भी प्रकट की। इस तरह यह कार्य शीघ्रता पूर्वक चलने लगा।

रावलपिंडी के जैनों को बचाने के लिये सर्व प्रथम हवाई जहाज भेजने की कठिनाई कॉन्फरन्स के सम्मुख खडी हुई। क्योंकि इसके बिना और कोई साधन नहीं था। इसके साथ २ फौजी सिपाहियों की समस्या भी थी। क्योंकि रावलपिंडी शहर से हवाई स्टेशन लगभग २-३ मील की दूरी पर है, जहां पर बिना सिपाहियों की सरक्षणता के जाना खतरनाक था। अतः इसके लिये ता० २-१०-४७ को कॉन्फरन्स के मत्री श्री टी० जी० शाह दिल्ली गये। वहां उन्होंने बहुत प्रयत्न किये पर फौजी सिपाहियों की व्यवस्था न हो सकी। उधर निराश्रित भाइयों को बचाने की नितान्त आवश्यकता थी अतः कॉन्फरन्स ने अपना हवाई जहाज भेजने का निर्णय किया। ता० १८—१०—१९४७ को पहला विमान श्री रोशनलालजी जैन और श्री मुनीन्द्रकुमारजी जैन की सरक्षणता मे भेजा गया था इसके बाद दूसरा चार्टर विमान ता० २६—१०—१९४७ को श्री मुनीन्द्रकुमारजी जैन और श्री नौतमलालजी देसाई की सरक्षणता मे भेजा गया था। इन दोनों विमानों में कुल ५२ व्यक्तियों को रावलपिंडी से सही सलामत जोधपुर पहुँचाया गया। इन दोनों विमानों को भेजने में २२ हजार रु० खर्च हुए थे।

इसके बाद तीसरे विमान की योजना की जा रही थी, कि परिस्थिति ने पल्टा खाया और काश्मीर का जटिल बन गया। हमारी सरकार ने काश्मीर को तात्कालिक मदद पहुँचाने के लिये अपने सब विमान रोक

लिये। फल स्वरूप कॉन्फरन्स का यह कार्य स्थगित हो गया। लेकिन इसके कुछ दिनों बाद ही हमारी राष्ट्रीय सरकार ने पाकिस्तानी इलाकों से सभी निराश्रित भाई-बहिनों को सकुशल हिंद में पहुँचा दिया। रावलपिंडी के १२०० भाई-बहिनों में से शुरु में जब वहां दंगा शुरु हुआ था तब ४-५ भाई मारे गये थे, शेष सभी वहां से हिंद में आ गये। यह कार्य समाप्त हो जाने पर कॉन्फरन्स ने अपना ध्यान सहायता कार्य की ओर केन्द्रित किया और निम्न स्थानों पर सहायता केन्द्र स्थापित किये:—

दिल्ली, अमृतसर, अम्बाला, लुधियाना, जालंधर, और होशियारपुर।

इन सहायता केन्द्रों द्वारा शरणार्थी जैन भाइयों को खाने-पीने, रहने और वस्त्र आदि की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का तय किया गया। शरणार्थी भाई अपने पैरों पर खड़े रह सकें इसके लिये उन्हें ५००) रु० तक का लोन देने का भी तय किया।

पंजाब की तरह जनवरी सन् १९४८ मे कराची मे भी दंगे फसाद हुए। कॉन्फरन्स ने करांची-संघ को भी आश्वासन दिया और शक्य सहायता करने की तत्परता दिखाई। परन्तु कराची के हमारे भाई पहले ही सतर्क हो चुके थे अत: विशेष हानि नहीं उठानी पडी। फिर भी जिन २ भाइयों की मांग आई उन्हे कॉन्फरन्स ने लोन आदि देकर सहायता प्रदान की।

यह सब फंड लगभग पौने दो लाख रुपयों का हुआ था। उसमे से १,५००००) रु० तो एरोप्लेन, रेल, मोटर, आदि वाहनों द्वारा अपने भाइयों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने और लोन तथा पुनर्वास के कार्य मे खर्च किया गया।

शेष रुपया सादड़ी अधिवेशन के आदेशानुसार स्वधर्मी सहायक-फंड मे ले जाया गया, जिसमे से आज भी गरीब भाई-बहिनों को सहायता दी जाती है।

इस कार्य में दिल्ली केन्द्र के व्यवस्थापक सेठ आनंदराजजी सुराणा ने अत्यधिक श्रम और उत्साह से कार्य किया। अमृतसर के श्री हरजसरायजी जैन ने भी काफी परिश्रम किया और इसमे अपना सहयोग दिया।

यह उल्लेखनीय है कि इस फंड मे से मुख्यत: स्थानकवासी जैन भाइयों के अतिरिक्त श्वेताम्बर, दिगम्बर जैन भाइयों को व जैनेतर भाइयों को भी बिना किसी भेदभाव के सहायता दी गई। और अब भी दी जाती है।

विभाजन के समय तो पं० नेहरू, डॉ० जानमथाई, श्रीमती जानमथाई और उस समय के पुनर्वास-मंत्री श्री मोहनलाल सक्सेना की विशेष सूचनाओं से भी कई जैनेतर भाइयों को सहायता दी गई। उस समय हमारे ये नेता कॉन्फरन्स के इस कार्य से बडे प्रभावित हुए थे।

कॉन्फरन्स के विगत इतिहास में यह पहला रचनात्मक कार्य था जिसने कॉन्फरन्स की प्रतिभा बढाई ही नहीं, पर लोगों के दिलों में आदर्श भावना का भी निर्माण किया। इस कार्य का प्रभाव समाज में अच्छा पड़ा। फलत: कॉन्फरन्स के प्रति लोगों की श्रद्धा जागृत हुई और वह कुछ कर सकने में समर्थ भी हुई।

(१०) पुष्पाबेन वीरचंद मोहनलाल वोरा विद्योत्तेजक-फण्ड

चूडा निवासी श्री वीरचंद मोहनलाल वोरा की ओर से जैन बालक-बालिकाओं के लिये कॉन्फरन्स को ५ हजार रुपयों की भेंट मिली है। अत: इसी नाम से प्रतिवर्ष मैट्रिक से नीचे अभ्यास करने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष ५००) रुपये छात्र वृत्तियों मे दिये जाते हैं। श्री वीरचंद भाई व्यापारार्थ बम्बई आये थे, जहां उन्होंने

अपने श्रम से अच्छी प्रगति की। उनकी इकलौती पुत्री श्री पुष्पाबेन जिसे कि उन्होंने मैट्रिक तक अभ्यास कराया था, शादी होने से कुछ ही मास बाद स्वर्गवासी हो गई, जिसका उन्हें बडा दु:ख पहुँचा था। अपनी उसी प्रिय पुत्री की अमर यादगार मे वे कुछ रकम शिक्षण-कार्य मे खर्च करना चाहते थे अतः उन्होने अपनी यह भावना कॉन्फरन्स के मत्री श्री खीमचदभाई वोरा से प्रकट की। श्री वोराजी ने उन्हे 'पढम नाणं तओ दया' की उक्ति याद दिलाई और श्री वीरचद भाई ने उनके कथनानुसार जैन छात्रों को स्कूल फीस और पाठ्य-पुस्तकों के लिये ५ हजार रु० की भेंट दी। सन् १९४६ से इस खाते मे से प्रतिवर्ष ५००) रु० की छात्रवृत्ति दी जाती है। अब इस फड मे लगभग ५००) रु० ही शेष रहे है। जबकि आज इस फड की उपयोगिता बहुत है। क्योंकि कई गरीब छात्रों को इससे सहायता मिलती है अत किसी भी तरह यह फड चालू रहे यही हमारा प्रयत्न होना चाहिये।

(११) श्री आगम–प्रकाशन

हसराज जिनागम विद्या-प्रचारक फड'–सन् १९३३ मे श्री हंसराजभाई लखमीचद (धारीवाल) ने जिनागमों के सम्पादन और शिक्षण के लिये कॉन्फरन्स को १५ हजार रुपये प्रदान किये थे। कॉन्फरन्स के नवमे अजमेर–अधिवेशन में प्रस्ताव न० ११ द्वारा उनकी यह योजना स्वीकार करली गई थी। इस फड मे से उत्तराध्ययन, दशवै–कालिक, सूत्रकृताग और आचारांग इन चार सूत्रों का हिन्दी में प्रकाशन कराया गया। इसके बाद सन् १९४६ मे जयपुर की जनरल-कमेटी मे आगम-प्रकाशन के लिये पुनः प्रस्ताव पास किया गया और उसकी योग्य कार्यवाही करने के लिये कॉन्फरन्स के मत्री-मडल को निर्देश दिया गया था। तदनुसार ता०–२९–१२–४९ को बम्बई में एक मीटिंग (मत्री-मडल की) की गई, जिसमें इस पर गभीर विचार-विनिमय कर आगम सशोधन और प्रकाशन कार्य शीघ्र प्रारभ करने के लिये विज्ञ मुनिराजों का सम्पादक-मडल और पडित मुनिवृ द एव विद्वानो का सह-कारी-मडल बनाने का एव भाई श्री धीरजलाल के० तुरखिया को मत्रीत्व पद पर नियुक्त कर ब्यावर मे कार्यालय रखने का तय किया गया। आगम-सम्पादक-समिति निम्न प्रकार है:—

पूज्य श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री गणेशीलालजी म०, पूज्य श्री आनदऋषिजी म०, पूज्य श्री हस्ती-मलजी म०, पूज्य श्री माणकचदजी म०, पूज्य श्री नागचदजी म०, गणि श्री उदयचदजी म०, प० मुनि श्री चौथमलजी म०, प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म०, प० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म०, उपाध्याय श्री अमरचदजी म०, प० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म०, प० मुनि श्री पन्नालालजी म०, प० मुनि श्री नानचदजी म०, प० मुनि श्री मिश्रीमलजी महराज।

सहकारी मडल.–(विद्वद् मुनिवर्ग) युवाचार्य श्री शेषमलजी म०, प० मुनि श्री गब्बूलालजी म०, प० मुनि श्री हेमचन्द्रजी म०, प० मुनि श्री सिरेमलजी म०, प० मुनि श्री रत्नचन्दजी म०, आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म०, प० मुनि श्री पूनमचदजी म०, प० मुनि श्री कन्हैयालालजी म०, (विद्वद्वर्ग) प० बेचरदासजी, प्रो० बनारसीदासजी M A Ph D,प्रो० अमृतलाल स० गोपाणी M. A Ph D, श्री अमोलखचदजी एन० सुरपुरिया M A LL B. प कृष्णचन्द्रजी शास्त्री, प० पूर्णचन्द्रजी दक, राव साहब मणिलाल शाह, श्री प्राणजीवन मोरारजी शाह, श्री भवेरचद जादवजी, कामदार।

स्व० हसराजभाई ने आगम प्रकाशन के लिये १५०००) रु० प्रदान किये थे उसी से इस कार्य की शुरु आत हो सकी। उनका फोटू हर एक प्रकाशन में देने का कॉन्फरन्स ने स्वीकार किया। तदनुसार अब तक के प्रकाशनों मे उनका चित्र दिया गया है।

ता० १०-८-१९४८ के दिन मंत्री-मंडल की बैठक में किसी भी व्यक्ति का फोटू आगम-बत्तीसी में प्रकट न किया जाय, ऐसा निर्णय किया गया था। परन्तु स्व० हंसराजभाई के साथ में की गई उपर्युक्त शर्त के बाबत क्या किया जाय ? यह प्रश्न मंत्री-मंडल के सामने खड़ा हुआ। इस बारे मे मंत्री मंडल श्रीमान् रामजीभाई कामाणी से मिला और वार्तालाप किया। श्री कामाणीजी ने सहर्ष अपनी शर्त वापिस खींच ली और अपने पिता द्वारा शुरु किये गये इस ज्ञान-यज्ञ मे १० हजार रु० की और अधिक सहायता देने की स्वीकृति प्रदान की।

ब्यावर मे यह कार्य चलता रहा। ता० २४-२५-२६ डिसेम्बर सन् १९४९ को मद्रास में कॉन्फरन्स का ग्यारहवां अधिवेशन हुआ, उसमें प्रस्ताव नं १५ द्वारा इस कार्य के प्रति सन्तोष व्यक्त किया गया। प्रकाशन-कार्य प्रारंभ होने के पहिले पूज्य श्री आत्मारामजी म०, पूज्य श्री आनंदऋषिजी म०, पूज्य श्री हस्तीमलजी म० और पं० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म० को बताकर बहुमत से मिलने वाले संशोधनों सहित इसे प्रकाशित करने का निर्णय किया गया।

आर्थिक-व्यवस्था के लिये कॉन्फरन्स-ऑफिस को निम्नोक्त सूचनाएं भी की गई:—(क) आगम-प्रकाशन के लिये एक लाख रु० तक का फंड करे। (ख) आगम प्रेमी श्रीमानों से एक आगम-प्रकाशन के खर्च का वचन ले। (ग) आगम-बत्तीसी की ग्राहक-संख्या अधिक से अधिक प्राप्त करने का प्रयास करे।

आगम-प्रकाशन-समिति का ब्यावर मे निम्न कार्य हुआ:—

(१) 'जिनागम प्र० की योजना' प्रो० बनारसीदासजी M A Ph D को रखकर हिन्दी तथा गुजराती में प्रकाशित कराई गयी।

(२) स्था० जैन भंडारों (लींबडी, जेतपुर, बीकानेर, पाटण आदि) से आवश्यक सामग्री एकत्रित करके विद्वद् मुनिवरों एवं विद्वानों से आगमोदय-समिति के सूत्रों पर संशोधन करवाया। पं० मुनि श्री हस्तीमलजी म० सा०, पं० मुनि श्री आनंद ऋषिजी म० सा०, पं० मुनि श्री कन्हैयालालजी म० सा०, पं० चंपक मुनिजी म० सा०, पं० कवि श्री नानचंदजी म० सा०, पं० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म० सा० आद ने संशोधन कार्य में सहयोग दिया था। आगम-वारिधि पं० मुनि श्री आत्मारामजी म० सा० अन्तिम निर्णायक रहे।

(३) आगमों के पद्य-विभाग की संस्कृत-छाया तैयार कराई गई।

(४) पारिभाषिक शब्द-कोष हिन्दी व गुजराती मे तैयार किया गया।

(५) प्रथम ५ अंग-सूत्रों का शब्द-अर्थ हिन्दी व गुजराती मे तैयार किया गया।

तत्पश्चात् प्रकाशन कार्य प्रारंभ करना था। आचरांगादि मे आवश्यक टिप्पणियां भी तैयार करा ली गई थीं किंतु इसी बीच साधु-सम्मेलन सादड़ी के समय साहित्य-मंत्री आदि की व्यवस्था बदली। उस समय विद्वान् पं० मुनि श्री पुण्य विजयजी म० भी वहीं थे जो जेसलमेर के पुराने भंडार के आधार पर आगमों के मूल-पाठों का भी संशोधन कर रहे थे। श्वे० आगम-साहित्य के मूल-पाठ एकसा हों ऐसा विचार होने से तबतक के लिये प्रकाशन-कार्य स्थगित किया गया।

आगम प्रेमी श्रीमानों ने अपनी तरफ से अमुक २ आगम प्रकाशित करने के और सूत्र-बत्तीसी के पहिले से ग्राहक बनने के वचन भी दे दिये थे। भीनासर साधु-सम्मेलन में इस विषय में विचार होगा।

(१२) धार्मिक पाठ्य-पुस्तकें

कॉन्फरन्स के घाटकोपर अधिवेशन मे प्रस्ताव न० ४ से धार्मिक शिक्षण-समिति बनाई गई प्रस्ताव नं० ४ निम्न प्रकार है :—

प्रस्ताव ४—(धार्मिक-शिक्षण-समिति की स्थापना)

यह कॉन्फरन्स मानता है कि जैन धर्म के सस्कारों का सिंचन करनेवाला धार्मिक-शिक्षण हमारी प्रगति के लिये आवश्यक है। अतः चालू शिक्षण में जो कि निर्जीव और सत्वहीन है, परिवर्तन कर उसे हृदय-स्पर्शी और जीवित-शिक्षण बनाने की नितांत आवश्यकता है। इसके लिये शिक्षण-क्रम और पाठय-क्रम तैयार करने के लिये तथा समस्त हिंद मे एक ही क्रम से धार्मिक-शिक्षण दिया जाय तथा परीक्षा ली जाय, इसकी एक योजना बनाने के लिये निम्नोक्त भाइयों की को-ऑप्ट करने की सत्ता के साथ एक धार्मिक-शिक्षण समिति बनाई जाती है। इस शिक्षण समिति की योजना मे जैन-दर्शन का गहरा अभ्यास करने वालों के लिये भी अभ्यास-क्रम का प्रबन्ध किया जायेगा :—

श्रीमान् मोतीलालजी मूथा सतारा प्रमुख, श्रीमान् खुशालभाई खेंगार बम्बई, श्रीमान् जेठमलजी सेठिया बीकानेर, श्रीमान् चिमनलाल पोपटलाल शाह बम्बई, श्रीमान् मोतीलालजी श्रीश्रीमाल रतलाम, श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर, श्रीमान् ला० हरजसरायजी जैन अमृतसर, श्रीमान् केशवलाल अबालाल खभात, श्रीमान् चुन्नीलाल नागजी वोरा राजकोट, श्रीमान् माणकचदजी किशनदासजी मुथा नगर, श्रीमान् धीरजलाल के० तुरखिया मन्त्री ब्यावर।

उक्त प्रस्ताव के आधार पर धार्मिक-ज्ञान सस्थाओ मे और जैन-छात्रालयों तथा विद्यालयों में उपयोगी हो इसके लिए एक ही सरल पद्धति से सर्वांगीण धार्मिक-शिक्षण देने योग्य जैन पाठावली (सीरीज) तैयार करने का कार्य आरभ किया गया। विद्वानों की उपसमिति बनाई गई, पाठ्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित की गई और जैन पाठावली के सात भाग बनाने का निर्णय किया गया।

इस समिति का कार्यालय भी मानद् मत्री श्री धीरजलाल के० तुरखिया के पास ही जैन-गुरुकुल, ब्यावर में रखा था। कॉन्फरन्स-ऑफिस के सक्रिय सहयोग से मत्रीजी ने उत्साह पूर्वक उक्त कार्य प्रारभ किया। समाज के विद्वानों के सहयोग से जैन पाठावली के सात भागों का मजमून तैयार किया गया। इसमें श्रीमान् सतबालजी का परिश्रम मुख्य है। प० नटवरलाल क० शाह, न्यायतीर्थ का सहयोग, प्रो० अमृतलाल स० गोपाणी M A Ph. D. का सशोधित कॉपियॉ तैयार करने का प्रयत्न, प० शोभाचद्रजी भारिल्ल का हिन्दी अनुवादन, प० सौभाग्यचद्रजी गो० तुरखिया के लेखन कार्य आदि २ सहयोग से जैन-पाठावली का कार्य सम्पन्न हुआ। हिन्दी भाषा मे ५ भाग और गुजराती भाषा मे ५ भाग प्रकाशित कराये गये। गुजराती प्रूफ सशोधन और छपाई मे श्रीमान् चुन्नीलाल वर्धमान शाह, अहमदाबाद ने सेवा भाव से अच्छा सहयोग दिया।

प्रकाशन खर्च मे श्रीमान् हस्तीमलजी सा० ढेवडा, (बगडी निवासी) सिकन्द्राबाद वालों ने रु० ५०००) की उदार सहायता दी जिससे प्रकाशन कार्य शीघ्रता से हुआ।

जैन-पाठावली के प्रत्येक भाग मे ४-४ विभाग है। (१) मूलपाठ, (२) तत्त्व विभाग, (३) कथा-विभाग और (४) काव्य-विभाग। प्रथम चार भाग पाठावली मे नैतिक-शिक्षण के साथ २ सामायिक, प्रति-क्रमण मूल, विस्तृत अर्थ, भावार्थ, समझ आदि। तत्त्वज्ञान मे नव तत्त्व, षट्काल, षट्द्रव्य, २५ बोल, कर्म-स्वरूप आदि क्रमशः सक्षिप्त और विस्तृत बोधप्रद पद्धति से दिया है। रोचक शैली से धार्मिक कथाएं और काव्य दिये हैं।

जैन पाठावली पांचवें भाग में सक्षिप्त प्राकृत व्याकरण दिया है और बाद मे आगमों के छोटे २ सूत्र

मूल विभाग में, क्रमशः उच्च तत्त्वज्ञान, संक्षिप्त जैन इतिहास कथा विभाग में तथा आगमों के काव्यमय संवाद काव्य-विभाग में दिये हैं।

जैन पाठावली के प्रचार के लिये प्रयत्न किया, और 'धार्मिक-परीक्षा बोर्ड पाथर्डी' के पाठ्यक्रम में स्थान देने का भी आग्रह किया। परिणामतः अनेक धार्मिक पाठशालाओं ने इस पाठावली को अपनाई जिससे पहिले और दूसरे भाग की तीन २ आवृत्तियाँ तक छपानी पड़ी हैं। यही इसके आदर का प्रमाण है।

'श्री तिलोकरत्न स्था० जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड' ने पाठावलियों को पाठ्-क्रम में स्थान देने के साथ २ पाठावली के पाँचों ही भाग का पूरा स्टॉक खरीद लेने की, छठे और सातवें भागों तथा पांच भागों की नई आवृत्तियां कॉन्फरन्स की आज्ञा से और कॉन्फरन्स के नाम से छपाने की इच्छा जाहिर की। प्रचार और प्रबन्ध की दृष्टि से उचित समझ कर पाठावली का स्टॉक तथा पूछकर छपाने की आज्ञा प्रदान की। बोर्ड ने जैन पाठावली का छठा भाग भी छपा दिया है। सातवाँ भाग और स्था० जैन धर्म का इतिहास भी छपा देंगे।

(१३) संघ-ऐक्य योजना

कॉन्फरन्स को स्थापित हुए आज ४६ वर्ष व्यतीत हो गये हैं। इस लम्बी अवधि में कॉन्फरन्स ने यदि कोई अपूर्व और अद्वितीय कार्य किया है तो वह संघ ऐक्य योजना का है। यह कार्य केवल रचनात्मक ही नहीं क्रांतिकारी और आध्यात्मिक उन्नति का पोषक भी कहा जा सकता है। वर्षों के प्रयत्नों से इस योजना द्वारा सादड़ी (मारवाड़) में श्री वर्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ की स्थापना हुई। लगभग बत्तीस में से बाईस सम्प्रदायों का एकीकरण हुआ। उपस्थित सम्प्रदायों के साधु अपनी २ शास्त्रोक्त पदवियां छोड़कर श्रमण-संघ में सम्मिलित हुए। अपने देश में राजकीय-क्षेत्र में जैसे सात सौ राज्यों का विलीनीकरण होकर संयुक्त-राज्यों की स्थापना हुई वैसे ही लगभग डेढ हजार साधु-साध्वियों का यह एक ही आचार्य की नेश्राय में संगठन हुआ है। स्था० जैन समाज की यह अजोड़ सिद्धि कही जा सकती है। गुजरात-सौराष्ट्र और कच्छ की सम्प्रदायों का एकीकरण होना अभी शेष है। इसके लिये प्रयत्न चल रहे हैं। इन सभी सम्प्रदायों के श्रमण संघ में मिल जाने पर यह श्रमण-संघ स्था० समाज की एकता का एक अपूर्व प्रतीक बन जावेगा। पूरा वर्णन साधु सम्मेलन के प्रकरण में देखें।

(१४) अन्य सहायता कार्य

कॉन्फरन्स के पास निम्नोक्त फंड हैं, जिनमें से स्थानकवासी जैन भाई-बहनों को बिना किसी प्रान्त भेद के योग्य सहायता भेजी जाती है।

स्त्री–शिक्षण फंडः—

इस फंड में से विधवा बहिनों को और विद्याभ्यास करने वाली बहिनों को छात्रवृत्ति के रूप में सहायता दी जाती है। कोई भी अनाथ, दीन, दुखी बहिन अर्जी दे कर सहायता ले सकती हैं। सारे हिन्दुस्तान में से सैकड़ों अर्जियां आती हैं, जो लगभग सभी स्वीकार की जाती हैं और फंड के परिणाम में सबको यथायोग्य सहायता भेजी जाती है।

श्री आर० वी० दुर्लभजी छात्रवृत्ति फंडः—

कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष रु० ३०००) लगभग की छात्रवृत्तियां दी जाती हैं।

श्री खीमचन्द मगनलाल वोरा छात्रवृत्ति फण्डः—

कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों को प्रति वर्ष रु० १०००) लगभग की छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं।

स्वधर्मी सहायक-फण्ड:—

इस फंड मे से गरीब भाई-बहिनों को तात्कालिक सहायता दी जाती है।

उपरोक्त सभी फंडो मे अर्जियों की सख्या बहुत होती है। परन्तु फंडों में विशेष रकम न होने से और दी जाने वाली रकम बहुत थोड़ी होने से सबको अधिक प्रमाण मे योग्य सहायता नहीं भेजी जा सकती है। कई फंड तो लगभग पूरे होने आये हैं अतः दोनों श्रीमानों को उदारता प्रदर्शित कर इन फंडों की रकमों को बढ़ाना चाहिये, जिससे कि समाज के दीन दुखी भाइयों को थोड़ी बहुत भी मदद पहुंचती रहे।

(१५) प्रांतीय-शाखायें

कॉन्फरन्स का प्रचार और सेवा-क्षेत्र बढ़ाने के लिये 'प्रान्तीय-शाखायें' खोलने का निर्णय किया है। तदनुसार बम्बई, मध्यभारत, महाराष्ट्र और राजस्थान में प्रान्तीय शाखायें खुल गई हैं। कलकत्ता (बगाल, बिहार, आसाम), मद्रास (मद्रास प्रान्त, मैसूर, केरल), गुजरात (कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात) और पंजाब आदि मे भी प्रान्तीय शाखायें खोलने के प्रयत्न चल रहे हैं।

जिन २ प्रान्तों मे प्रान्तीय शाखायें नहीं खुली हैं, वहाँ के आगेवानों को अपने २ प्रान्त मे प्रान्तीय शाखायें खोलने का प्रयत्न करना चाहिये। वर्तमान प्रान्तीय शाखायें और मत्री इस प्रकार हैं:—

प्रान्त	केन्द्र-स्थान	मत्री
(१) मध्यभारत-मेवाड	जावरा	श्री सुजानमलजी मेहता
(२) राजस्थान (मारवाड)	जोधपुर	श्री ऋषभचदजी कर्णावट
(३) बृहत्-गुजरात व बम्बई	बम्बई	श्री खीमचदभाई म० वोरा श्री गिरधरलालभाई दफ्तरी
(४) बगाल बिहार-आसाम	कलकत्ता	श्री जसवन्तमलजी लोढा

(१६) कॉन्फरन्स की तरफ से प्रकाशित-साहित्य

(१) अर्ध-मागधी कोष—आगम तथा मागधी-भाषा के अभ्यास मे यह कोष प्रमाणभूत माना जाता है। शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० कृत यह शब्द कोष ५ भागों मे प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक भाग की छुट्टक कीमत ५०) रु० है। पाचों भागों की एक सेट की कीमत २५०) रु० है।

इग्लैंड, फ्रान्स, जर्मनी आदि पश्चिम के कई देशों मे यह कोष भेजा गया है और अब भी वहां से इस कोष की मांग आती रहती है।

(२) उत्तराध्ययन सूत्र—श्री सतबालजी कृत हिन्दी मे अनुवाद। पृष्ठ सं० ४१४, कीमत २) रु०, (३) दशवैकालिक सूत्र—श्री सतबालजी कृत हिन्दी में अनुवाद। पृष्ठ सं० १६० कीमत ।।।) आना। (४) आचारांग सूत्र—श्री गो० जी० पटेल कृत छायानुवाद। हिन्दी में पृष्ट १४४ कीमत ।।।) आना। (५) सूत्रकृतांग-सूत्र—श्री गो० जी० पटेल कृत छायानुवाद। पृष्ठ १४२, कीमत ।।।) आना। (६) सामायिक-प्रतिक्रमण-सूत्र-सामायिक और प्रतिक्रमण सरल और शुद्ध भाषा मे अर्थ सहित प्रकट किया गया है। गुजराती आवृत्ति की क़ीमत १० आना और हिन्दी आवृत्ति की छः आना। पोस्टेज चार्ज अलग।

नोट:—मिलने का पता—श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स, १३६०, चान्दनी चौक, दिल्ली

श्री श्वे० स्था० जैन कॉ० की सुदृढ़ता, समृद्धि तथा प्रगतिशीलता के लिये योजना व अपील

योजना :—हमारी यह कॉन्फरन्स (महासभा) भारत के समस्त स्थानकवासी (आठ लाख) जैनों की प्रतिनिधि-संस्था है। इसकी स्थापना सन् १९०६ में मोरवी (सौराष्ट्र) मे हुई थी। इसी कॉन्फरन्स-माता की कृपा से हम काश्मीर से कोलम्बो और कच्छ से वर्मा तक भारत के प्रत्येक प्रान्त में फैले हुए स्वधर्मी भाइयों के परिचय मे आये, एक-दूसरे के सुख दुःख के सम-भागी वने और पारस्परिक सहयोग से धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और व्यावसायिक सम्पर्क वढ़ा कर विकास कर सके। कॉन्फरन्स के लगभग ५० वर्ष के कार्यकाल मे भिन्न-भिन्न स्थानों पर १२ अधिवेशन हुए और जनरल-कमेटी की वैठकें प्रतिवर्ष होती रही हैं। कॉन्फरन्स ने स्था० जैन समाज एवं धर्म सम्वन्धी अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव एव कार्य किये, जो जैन इतिहास मे स्वर्णाक्षरों से अकित हैं। मुख्य कार्य निम्नानुसार हैं.—

'जैन-प्रकाश' हिन्दी और गुजराती-भाषा में ४२ वर्षों से पाक्षिक एव साप्ताहिक रूप मे नियमित प्रकाशित होता रहा है। जैन ट्रेनिंग-कॉलेज रतलाम, वीकानेर, जयपुर मे सफलता पूर्वक चला। वम्बई और पूना मे जैन-वोर्डिंग की स्थापना की। पजाव व सिंध के निर्वासित भाइयों के लिये रु० 1 लाख ६० हजार एकत्रित करके सहायता दी। अर्द्धमागधी-कोप के ५ भाग, कुछ आगमों के अनुवाद और धार्मिक पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन किया। स्थानकवासी श्रमण सम्प्रदायों का 'श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-सघ' के रूप मे सगठन किया। जीव-दया, स्वधर्मी-सहायता, विधवा-सहायता, सामाजिक-सुधार आदि अनेक कार्य किये और किये जा रहे हैं। श्राविकाश्रम के लिए सवा लाख रुपये का भवन घाटकोपर मे वन गया है और शीघ्र ही सचालित होने वाला है।

कॉन्फरन्स की अनेकविध प्रवृत्तियों द्वारा स्था० जैन समाज की अधिकाधिक सेवा करने के लिये स्थानकवासी जैन श्रीमानों, विद्वानों, सम्पादकों, युवकों आदि सव आवाल-वृद्ध के हार्दिक सक्रिय सहयोग की हमे अपेक्षा है। इतना ही नहीं हमारे त्यागी मुनिवरों और महासतियों के आशीर्वाद और पथ-प्रदर्शन भी प्रार्थनीय है।

सोजत में मत्री मुनिवरों की वैठक के समय कॉन्फरन्स की जनरल-सभा (ता० २५-१-५३) मे कॉन्फरन्स का प्रधान कार्यालय दिल्ली मे रखने का दीर्घदृष्टिपूर्ण निर्णय हुआ। तदनुसार कॉन्फरन्स ऑफिस फरवरी सन् १९५३ से (१३८०, चांदनी चौक) दिल्ली में चल रहा है। कॉन्फरन्स का प्रधान-कार्यालय, मानो स्थानकवासी जैन समाज का 'शक्ति गृह' (Power House) है। यह जितना स्थायी, समृद्ध और शक्ति-सम्पन्न होगा उतना ही अधिक समाज को सक्रिय-सहयोग, प्रेरणा तथा पथ-प्रदर्शन कर सकेगा यह निर्विवाद वात है। इसके लिये स्था० जैन समाज का गौरव युक्त मस्तक ऊंचा उठाने वाला एक भव्य 'कॉन्फरन्स-भवन' भी ले लिया है, जिसमे अनेकविध प्रवृत्तियां चलें जो समस्त स्था० जैन समाज शक्ति संचयगृह (Power House) वन कर भारत में और विदेशों मे भी जैनत्व, जैन संस्कृति, शिक्षण, साहित्य प्रचार, धर्म प्रचार, सगठन, सहायता, सहयोग रूप प्रकाश फैलाएगा, प्रेरणा देगा, मार्ग-दर्शन करेगा और स्था० धर्म व समाज को प्रगतिशील वनाएगा।

भवन निर्माण दिल्ली मे क्यों ?

भारतीय गणतन्त्र की राजधानी-दिल्ली का वर्तमान में सारे विश्व मे अभूतपूर्व और महत्वपूर्ण स्थान है। राजनीति के साथ २ संस्कृति, साहित्य, शिक्षण और व्यवसाय का भी केन्द्र स्थान है। संसार के सभी देशों के दूतावास (Ambassadors) यहां हैं। सारे विश्व का सम्पर्क दिल्ली से जोड़ा जा सकता है। यही कारण है कि भारत के सभी राजनैतिक दलो (Political Parties) के केन्द्र भी दिल्ली में ही

हैं। प्रत्येक समाज और धर्म की प्रतिनिधि संस्थाओं के प्रधान कार्यालय दिल्ली में स्थापित हुए हैं और हो रहे हैं, जिससे बहिर्जगत् के साथ वे अपना सम्पर्क स्थापित करके अपना परिचय और प्रचार का क्षेत्र बढ़ा सकेंगे।

दिल्ली, जैसे भारतवर्ष का केन्द्र है वैसे जैन समाज के लिये भी मध्यवर्ती स्थान है। पंजाब, राजस्थान, मध्यभारत, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, पेप्सु आदि सन्निकट प्रान्तों में स्था० जैनों की अधिक संख्या है। सौराष्ट्र, कच्छ, गुजरात, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, महाराष्ट्र आदि सुदूर प्रान्तों के जैन बन्धुओं का आवागमन राजनैतिक और व्यावसायिक कारणों से दिल्ली में होता ही रहता है। इस प्रकार सब का सम्पर्क दिल्ली से है।

केन्द्रीय-राजसभा (Parliament) में २२ सदस्य (M P) और दिल्ली स्टेट धारा-सभा मे ३ सदस्य (M L A) कुल २५ जैन होने से उनके सक्रिय सहयोग द्वारा जैन धर्म और समाज के हितों की रक्षा का सफल प्रयत्न किया जा सकता है। इतना ही नहीं राष्ट्रपति, मंत्री मंडल, अन्य धारासभाओं और विदेशी राजदूतों का ध्यान जैनधर्म के विश्वोपयोगी उदात्त सिद्धान्तों की ओर आकृष्ट किया जाय तो जैनधर्म के प्रचार में बहुत बड़ा योग मिल सकता है।

कॉन्फरन्स-भवन में निम्नोक्त कार्य प्रवृत्तियाँ प्रारम्भ करने की भावना है और उसी के अनुरूप ही 'भवन निर्माण' करने की योजना कार्यान्वित हुई है :—

१. प्रधान कार्यालय—जिसमें स्था० जैन समाज की समस्त कार्य-प्रवृत्तियों का केन्द्रीय-करण, चतुर्विध संघ से सम्पर्क और प्रान्तीय शाखाओं को तथा प्रचारकों को मार्गदर्शन एवं नियन्त्रण की व्यवस्था होगी।

२. 'जैन प्रकाश'-कार्यालय—जिसमें कॉन्फरन्स के साप्ताहिक मुख-पत्र जैन प्रकाश के संपादन, प्रकाशन व वितरण की व्यवस्था होगी।

३ जिनागम एवं साहित्य का सम्पादन और प्रकाशन-विभाग—का विद्वान मुनिवरों द्वारा कार्य संपन्न होगा। जिसमें ३२ जिनागमों का संशोधित मूल-पाठ, अर्थ, पाठांतर, टिप्पणियां, पारिभाषिक शब्द-कोष आदि नूतन शैली से समृद्ध संपादन व प्रकाशन होगा। इसके अतिरिक्त :—

(अ) जैनधर्म का परिचय ग्रन्थ (जैन-गीता)—के रूप में ३२ सूत्रों के सार रूप जैनधर्म के विश्वोपयोगी उदात्त सिद्धान्तों का सुन्दर संकलन किया जायगा। इसको भारतीय तथा विदेशीय भिन्न-भिन्न भाषाओं में अनुवाद करा कर विश्व में अन्य धर्मावलम्बियों के पास गीता, कुरान, बाइबिल, धम्मपद की तरह सर्व-मान्य जैनधर्म का संपूर्ण परिचय दे सके ऐसी महावीर-वाणी-जैन गीता निर्ग्रन्थ प्रवचन का प्रकाशन व घर-घर में प्रचार किया जायगा।
वर्तमान के तृष्णापूर्ण हिंसक-युग में एटम-बम्ब, हायड्रोजन-बम्ब की कल्पनामात्र से त्रस्त संसार के लिये अहिंसा के अवतार शान्तिदूत भगवान महावीर का यह शान्ति-शस्त्र (Peace-Bomb) का काम करेगा। विश्व-शांति स्थापित करने में सहायक हो सकेगा।

(ब) जैन साहित्य-माला का प्रकाशन—सर्वोपयोगी इस साहित्य-माला में अहिंसा, सत्य, आत्मिक-शान्ति, विश्वप्रेम, सेवाधर्म, कर्त्तव्य, संयम, संतोष आदि विविध विषयों का सुरुचिकर, सुपाच्य, आकर्षक प्रकाशन सस्ते मूल्य में वितीर्ण किया जायेगा। जिसको सर्व-साधारण जनता प्रेम से पढ़े और जीवन में उतार सके।

४. जैन स्थानक और व्याख्यान-भवन (Lecture-Hall)—नई दिल्ली में स्था० जैनों की अत्यधिक

संख्या होने पर भी स्था० जैनों का कोई धर्म-स्थानक नहीं है। अतः इसकी पूर्ति भी इस भवन से होगी। मुनिगण को ठहरने का और व्याख्यान-वाणी का तथा धर्मध्यान का इससे लाभ होगा। व्याख्यान-हॉल बन जाने से अनेक भारतीय और विदेशीय विद्वानों के व्याख्यान-द्वारा सपर्क स्थापित किया जा सकेगा और विश्व के नेताओं को आमन्त्रित कर जैनधर्म से प्रभावित किये जा सकेंगे।

५. शास्त्र-स्वाध्याय—इसी स्थान में नियमित शास्त्रों का और धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय-वांचन होता रहे ऐसी व्यवस्था की जायगी।

६ शास्त्र-भण्डार—हमारे श्वेताम्बर और दिगम्बर जैन भाइयों के आरा, जयपुर, जैसलमेर, पाटण, खंभात, कोडाई, बड़ौदा, कपडवंज आदि अनेक स्थानों पर प्राचीन शास्त्र-भण्डार और पुस्तक-सग्रह हैं परन्तु वैसा स्था० जैनधर्म का एक भी विशाल शास्त्र भडार कहीं भी नहीं है। स्था० जैन शास्त्र एव साहित्य आज कहीं गृहस्थों के पास तो कोई स्थानकों की आलमारियों मे, पिटारों मे या अन्य प्रकार से अस्त व्यस्त बिखरे पड़े हैं, उन सबको एकत्रित करके सुरक्षित और सुव्यवस्थित एक केन्द्रीय-शास्त्र-भडार (ग्रन्थ-सग्रह) की अनिवार्य आवश्यकता है।

७ सिद्धान्तशाला—स्था० जैन धर्म का आधार मुनिवर और महासतियांजी हैं। वे जितने ज्ञानी, स्वमत-परमत के ज्ञाता और चारित्रशील होंगे उतना ही जैनधर्म का प्रभाव बढेगा अतः साधु-साध्वियों के व्यवस्थित शिक्षण की आवश्यकता है। इसके लिए केन्द्रीय 'सिद्धान्तशाला' यहां स्थापित करना और उसकी शाखाए अन्य प्रान्तों में भी चालू करना अत्यावश्यक हैं।

८ वीर-सेवा सघ—जैन साधु-साध्वी पैदल-विहारी और मर्यादाजीवी होने से सुदूर-प्रान्तो में और विदेशों मे विचर नहीं सकते हैं। अल्प-सख्यक होने से सर्वत्र पहुँच भी नहीं सकते, जिससे सर्व क्षेत्रों में पूर्ण धर्म प्रचार नहीं होता। इसके लिए स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की कल्पना तथा बम्बई और बीकानेर कॉन्फरन्स के निर्णयानुसार साधु-वर्ग और गृहस्थ-वर्ग के बीच का एक त्यागी ब्रह्मचारी वर्ग तैयार करना जरूरी है। जो 'वीरसेवा सघ' के नाम से 'जैन मिशनरी' के रूप मे काम करेगा। ऐसे ससार से विरक्त और धर्म-प्रचार में जीवन देने वालोको सुविधा-पूर्वक रहने की और कर्म करने की व्यवस्था इस भवन मे की जायगी। इनके द्वारा देश विदेश में धर्म प्रचार और सास्कृतिक सम्पर्क बढाया जा सकेगा।

९. जैन ट्रे०-कॉलेज—समाज में कार्यकर्त्ता, उपदेशक, प्रचारक और धर्माध्यापक तैयार करने के लिए जैन ट्रेनिग-कॉलेज की अनिवार्य आवश्यकता है। कॉन्फरन्स ने पहिले भी रतलाम, बीकानेर तथा जयपुर में जैन ट्रेनिंग कॉलेज कुछ वर्षों तक चलाई थी। आज समाज में जो इनेगिने कार्य-कर्ता दीख रहे हैं, इसी कॉलेज का फल है। वर्तमान में समाज मे सच्चे प्रभावक कार्यकर्ता और धर्माध्यापकों की बहुत आवश्यकता दीख रही है अतः इसी भवन मे जैन ट्रेनिंग कॉलेज चलाने का विचार है।

१०. उद्योगशाला—कॉन्फरन्स की तरफ से गरीब स्वधर्मियों को, विधवा बहिनों को और विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष हजारों की सहायता दी जाती है, परन्तु यह तो, गर्म तवे पर जलबिंदु की तरह है। समाज में शिक्षा बढ़ने पर भी बेकारी बढ़ रही है। इसका एकमात्र उपाय उद्योग-उत्पादन बढ़ाना तथा जाति-परिश्रम की भावना जगाना ही है। इसके लिए कॉन्फरन्स भवन मे 'उद्योगशाला' स्थापित करना चाहते हैं। जिसमे गृह-उद्योग, मशीनरी, रिपेरिंग, बिजली आदि के हुन्नर-कला द्वारा परिश्रम प्रतिष्ठा जागृत करके रोजाना रु० ५-७ कमा सकें ऐसी व्यवस्था होगी जिससे स्वधर्मी भाई सुखपूर्वक जीवन निर्वाह कर सकें। आगरा के दयाल-बाग का प्रारभ भी इसी प्रकार हुआ था।

११. मुद्रणालय—(प्रिंटिंग-प्रेस) भी इस भवन में चलाया जायगा जो उद्योगशाला का एक अंग बनेगा और इसी में 'जैन-प्रकाश', आगम तथा साहित्य-प्रकाशन का कार्य भी होता रहेगा। जैन स स्थाओं का भी शुद्ध प्रकाशन कार्य किया जा सकेगा। कई स्वधर्मी भाइयों को इस उद्योग में लगा सकेंगे।

१२ अतिथिगृह—दिल्ली भारत का सब प्रकार का केन्द्र होने से अपने भाई दिल्ली आते है। नई दिल्ली में ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं है और होटलों मे ठहरना खर्चीला और असुविधा-जनक होता है अत उनको कुछ दिन ठहरने के लिए कॅन्फरन्स भवन मे समुचित प्रबन्ध वाला अतिथिगृह बनाना भी निहायत जरूरी हैं। अपनी कॉन्फरन्स इतनी समृद्ध होनी चाहिए कि—

भारत भर मे जहां २ स्था० जैनों के १५-२० घर हों, वहां सर्वत्र स्वाध्याय करने के लिए धर्मस्थान बनाने की व्यवस्था मे कम से कम आधा आर्थिक सहयोग दिया जा सके। जैसे श्वे० मूर्तिपूजक जैनों मे आणदजी कल्याणजी की पेढी है।

स्था० जैन समाज की सभी कार्य प्रवत्तियों को प्रगतिशील बनाने के लिए और केन्द्रीय दफ्तर को स्थायी, समृद्ध, प्रभावशाली और कार्यक्षम बनाने के लिये नई दिल्ली मे 'कॉन्फरन्स भवन' का निर्माण करना और उसमें प्रसिद्ध जैन तत्त्वज्ञ, स्व० वा० मो० शाह की 'महावीर मिशन की योजना' और स्व० धर्मवीर दुर्लभजी-भाई जौहरी की 'आदिनाथ आश्रम' की योजना को मूर्तरूप देना अब मेरे जीवन का ध्येय बन गया है। जिसे मैं अविलम्ब कार्यरूप मे देखना चाहता हू।

अपील

उपर्युक्त योजना को क्रियान्वित करने के लिये रु० २॥ लाख कॉन्फरन्स-भवन निर्माण मे, रु० १ लाख आगम और साहित्य के लिए तथा रु० १॥ लाख ऊपर वर्णित प्रवृत्तियों के लिए; इस प्रकार पांच लाख रुपए की मैं स्था० जैन समाज से अपील करता हू। इतने बड़े और समृद्ध समाज मे से:—

५१-५१ हजार रुपए देने वाले दो सज्जन, १०-१० हजार रुपये देने वाले दस सज्जन, ५-५ हजार रुपये देने वाले बीस सज्जन, १-१ हजार रुपये देने वाले सौ सज्जन मिलने पर शेष, १ लाख रुपये इससे छोटी २ रकमे जन साधारण से एकत्रित हो सकेंगी।

मेरे उक्त विचारों को सुनते ही समाज के पुराने सेवक श्री टी० जी० शाह ने रु० ११११) देने का तुरन्त ही लिख दिया है, परन्तु उनसे मैं रु० ५ हजार खुशी से ले सकू गा।

मुझे अत्यन्त खुशी है कि, स्व० धर्मवीर दुर्लभजी भाई के सुपुत्र श्रीमान् वनेचन्दभाई और श्री खेल-शकरभाई जौहरी ने इस कार्य के लिये रु० ५१ हजार का वचन देकर मेरी आशा को बल दिया है। तथा दिल्ली मे ४-५ भाइयों ने ५-५ हजार के वचन देकर मेरे उत्साह को बढ़ाया है। मेरी आशा के प्रदीप राजकोट के दानवीर वीराणी बन्धु, श्री केशुभाई पारेख, बम्बई के दानवीर मेघजीभाई का परिवार, सर चुन्नीलालभाई मेहता, कामाणी ब्रदर्स, श्री सघराजका आदि, मद्रास के सेठ श्री मोहनमलजी चौरडिया, गेलड़ा बन्धु आदि, कलकत्ता के-कांक-रिया बन्धु, दुगडजी आदि मारवाडी भाई और गुजराती साहसिक व्यापारी बन्धु आदि, अहमदाबाद के मिल मालिक सेठ शातिलालभाई मगलदास तथा अन्य श्रीमान व्यापारी बन्धु, बीकानेर, भीनासर के सेठिया, बांठिया

और वेद परिवार के बन्धुओं के अतिरिक्त खानदेश, दक्षिण, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, मध्यभारत और राजस्थान के धर्म प्रेमी श्रीमान सज्जन तथा कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, मारवाड के, देश विदेशों के साहसिक व्यापारी बन्धुओं के समक्ष पांच लाख रुपये की मांग बहुत बड़ी नहीं है। वे आसानी से मेरी इस मांग को पूरी कर सकते हैं।

मैं तो उम्मीद करता हू कि—मेरी इस प्रार्थना को पढ कर ही समझदार सज्जन स्था० जैन समाज के उत्थानकार्य के लिये अपने-अपने उदार आश्वासन (वचन) भेज देंगे।

इस प्रकार स्था० जैन समाज अपनी प्रगति के लिये, धर्म सेवा के लिये इस धर्मयज्ञ मे यथाशक्ति अपना 'अर्घ्य' देवें और इस योजना को सफल बनावें यही कामना है।

इस अपील को सम्पन्न करने के लिये कुछ समय के बाद प्रतिनिधि मण्डल (Deputation) भी प्रयत्न करेगा। स्था० जैन समाज अपने उत्थान के लिये सर्वस्व देने को तैयार है ऐसा जौहर दिखाने मे अग्रसर होगी इसी भावना और श्रद्धा के साथ। निवेदक —आनन्दराज सुराना M L. A (प्र० म० अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉ० दिल्ली)

संघ का महत्त्व

व्यक्ति से बढ़कर आज सघ का महत्त्व है। सघ के महत्त्व के सामने व्यक्ति का महत्त्व अकिंचन सा प्रतीत होता है। संघ मे समस्त व्यक्तियों की शक्तिया गर्भित हैं। संघ की उन्नति के लिये यदि व्यक्ति का सर्वस्व भी होम हो जाय तब भी वह ननूनच नहीं करे। व्यक्ति का व्यक्तित्व सघ को उन्नत शिखर पर पहुचाने मे ही है। सघ की भलाई व्यक्ति की भलाई और सघ की अवनति व्यक्ति की अवनति है। सघ का सम्मान करना, वात्सल्य भाव रखना तथा कमजोरी को दूर कर शुद्ध हृदय से सेवा करना ही व्यक्ति के जीवन का परम लक्ष्य है।

व्यक्ति को भद्रबाहु स्वामी के जीवन-आदर्श को सामने रखकर सघ की उत्तरोत्तर वृद्धि में सम-भागी बनना ही श्रेयस्कर है। उन्होंने सघ के बुलावे का तकाजा होने पर अपनी चिर साधना को भी वालाए ताक रख सघ की बिखरी हुई शक्तियों को एकत्रित करने में ही जीवन का महत्त्वपूर्ण अग समझा।

एकाकी रहने मे व्यक्ति की शोभा नहीं है। अकेला वृक्ष जिस प्रकार रेगिस्तान में सुशोभित नहीं होता उसी प्रकार सघ मे पृथक व्यक्ति मे भी सौंदर्य नहीं टपकता। एक से अनेक और अनेक से एकता के साकार रूप मे ही सौंदर्य है, प्रेम है, शक्ति है, जोश है और होश का आभास है। सघ के निराश्रित बन्धुओं को आश्रय देना, बेकारों को रोजगार देना, रोगियों को रोग से वचित करना, अशिक्षितों मे शिक्षा प्रचार करना, विधवा माता-बहिनों की सार संभाल करना, त्यागी वर्ग की सेवा करना तथा सघ की प्रत्येक शुभ प्रवृति में सक्रिय भाग लेकर सघबल मे अभिवृद्धि करना ही सच्चा सघ-वात्सल्य दर्शाना है।

आज प्रत्येक व्यक्ति मे यह भावना जागृत होनी ही चाहिये कि वह समाज का एक आवश्यक अग है। एक बडी मशीनरी का सचालन उसके आश्रित रहे हुए असख्य छोटे २ पुर्जों से ही होता है। यदि एक भी पुर्जे मे कोई खराबी आ जाती है तो वह मशीन गति-अवरुद्ध हो जाती है। ठीक इसी रूप में सघ भी एक महान यत्र है जिसमे चतुर्विध संघ रूप अलग २ आवश्यक पुर्जे सबन्धित है। यदि एक भी साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका। वर्ग रूप पुर्जा विचलित अवस्था मे हो जाएगा तो सघ रूप मशीनरी की अबाध गति मे भी रुकावट आजायेगी। अतः प्रत्येक वर्ग का कर्त्तव्य है कि सघ की शक्ति अविछिन्न रहे वही प्रयत्न करे।

आज भारतवर्ष के समस्त सघों का सगठन ही यह कॉन्फरन्स है। —धर्मपाल मेहता

नई दिल्ली में स्था० जैन-समाज का विशाल सांस्कृतिक केन्द्र

('जैन-भवन' के लिए खरीदी हुई कोठी का एक दृश्य)

लिखते हुए हर्ष होता है कि लम्बे समय से स्था० जैन-समाज जिसके लिये आतुरता से राह देख रहा था, उसकी पूर्ति हो गई है। अर्थात् नई दिल्ली में लेडी हार्डिंग रोड पर नं० १२ की शानदार कोठी ३४६४ वर्ग गज की जमीन खरीद कर रु० १० हजार देकर रसीद करा ली है और बहुत जल्दी रुपये देकर रजिस्ट्री कराना है। अभी यह कोठी एक मंजिला है। आगे आम सड़क लेडी हार्डिंग रोड है, पीछे डॉक्टर लेन है। दि० जैन नसियांजी के पास है, बिड़ला मन्दिर १॥ फर्लांग पर है। अतः यह कोठी बहुत अच्छे मौके पर अतीव उपयुक्त स्थान पर स्थित है। रजिस्ट्री सहित रु० १,८००००) खर्च होंगे और रु० ७५०००) उस पर लगाने से व्याख्यान हॉल, अतिथि गृह आदि की आवश्यकता पूरी हो सकेगी।

भारत की राजधानी में स्था० जैनों का भवन होना नितान्त आवश्यक था। कोठी के पास ही स्था० जैनों की बस्ती होने से धर्म स्थानक की पूर्ति हो जाती है! कॉन्फरन्स द्वारा स्था० जैन धर्म के प्रचारार्थ और समाज के हितार्थ जैन ट्रेनिंग कॉलेज, ब्रह्मचारी सेवासंघ, साहित्य-संशोधन, प्रकाशन और औद्योगिक-शिक्षण आदि २ अनेक-विध प्रवृत्तियां करने के लिए मैंने जो योजना और पांच लाख रुपयों की अपील स्था० जैनों के सामने रक्खी थी उसकी पूर्ति करने तथा धर्म और समाज का गौरव बढ़ाने का समय आ गया है।

प्रार्थी संघसेवक—आनन्दराज सुराणा M. L. A. प्र० मं० श्वे० स्था० जैन कॉ० दिल्ली।

पंचम-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन साधु-सम्मेलन का संक्षिप्त इतिहास

नई दिल्ली में स्था० जैन-समाज का विशाल सांस्कृतिक केन्द्र

('जैन-भवन' के लिए खरीदी हुई कोठी का एक दृश्य)

लिखते हुए हर्ष होता है कि लम्बे समय से स्था० जैन-समाज जिसके लिये आतुरता से राह देख रहा था, उसकी पूर्ति हो गई है। अर्थात् नई दिल्ली में लेडी हार्डिंग रोड पर न० १२ की शानदार कोठी ३४६४ वर्ग गज की जमीन खरीद कर रु० १० हजार देकर रसीद करा ली है और बहुत जल्दी रुपये देकर रजिस्ट्री कराना है। अभी यह कोठी एक मंजिला है। आगे आम सड़क लेडी हार्डिंग रोड है, पीछे डॉक्टर लेन है। दि० जैन नसियांजी के पास है, बिड़ला मन्दिर १॥ फर्लांग पर है। अतः यह कोठी बहुत अच्छे मौके पर अतीव उपयुक्त स्थान पर स्थित है। रजिस्ट्री सहित रु० १,८००००) खर्च होंगे और रु० ७५०००) उस पर लगाने से व्याख्यान हॉल, अतिथि गृह आदि की आवश्यकता पूरी हो सकेगी।

भारत की राजधानी मे स्था० जैनों का भवन होना नितान्त आवश्यक था। कोठी के पास ही स्था० जैनों की वस्ती होने से धर्म स्थानक की पूर्ति हो जाती है। कॉन्फरन्स द्वारा स्था० जैन धर्म के प्रचारार्थ और समाज के हितार्थ जैन ट्रेनिंग कॉलेज, ब्रह्मचारी सेवासघ, साहित्य-सशोधन, प्रकाशन और औद्योगिक-शिक्षण आदि २ अनेक-विध प्रवृत्तियां करने के लिए मैंने जो योजना और पाच लाख रुपयों की अपील स्था० जैनों के सामने रक्खी थी उसकी पूर्ति करने तथा धर्म और समाज का गौरव बढाने का समय आ गया है।

प्रार्थी संघसेवक—आनन्दराज सुराणा M. L. A. प्र० मं० श्वे० स्था० जैन कॉ० दिल्ली।

पंचम-परिच्छेद

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन साधु-सम्मेलन का संक्षिप्त इतिहास

समाज-सगठन और समाज-शान्ति के लिए पर्यूपण और सवत्सरी आदि पर्वो का सारे स्था० जैन-समाज मे एक ही साथ होना आवश्यक है। इसका प्रयत्न कॉन्फरन्स ने किया। अनेक साधु-श्रावकों ने इसे पसन्द किया। कॉन्फरन्स ने ५ वर्ष का तिथि-पत्र निकाला जिसको बहुतसी सम्प्रदायों ने स्वीकार किया। पजाब में इन दिनों में तिथि-विपयक पत्री और परपरा का अत्यन्त झगडा चला था। पंचवर्षीय तिथिपत्र मनवाने और पजाब का झगड़ा शान्त करने के लिए आचार्य श्री सोहनलालजी म० सा० की सेवा मे निम्न सज्जनों का प्रतिनिधि मडल ता० ७, ८, ९ अप्रैल सन् १९३१ को गया :—

१ लाला गोकुलचन्दजी जौहरी दिल्ली, २. सेठ वर्द्धमानजी पित्तलिया रतलाम, ३. सेठ अचलसिंहजी आगरा, ४ सेठ केशरीमलजी चोरड़िया जयपुर, ५ श्री धूलचन्दजी भडारी रतलाम, ६ रा० सा० टेकचन्दजी जडियाला और ७ सेठ हीरालालजी खाचरोद।

आचार्य श्री ने कॉन्फरन्स की वात स्वीकार की, परन्तु १ साल में अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन साधु-सम्मेलन बुला कर इसका निर्णय और सगठन करने का फरमाया।

आचार्य श्री से प्रेरणा पाकर कॉन्फरन्स अ० भा० साधु-सम्मेलन करने का आन्दोलन चलाया। ता० ११-१०-३१ को दिल्ली मे कॉन्फरन्स की ज० क० मे 'साधु सम्मेलन' करने का निर्णय किया गया। स्थान व समय निश्चित करने और व्यवस्था के लिए ३१ सदस्यों की समिति बनी। श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी को मन्त्री नियुक्त किये। स० १९८९ के माघ-फाल्गुन का समय विचारा। वहाँ तक प्रत्येक सम्प्रदायों को अपना २ साम्प्रदायिक और प्रान्तीय सगठन करके अपने २ मुनि प्रतिनिधि चुनने का ऐलान किया।

स्था० जैन समाज में उत्साह की लहर फैल गई। मन्त्रीजी श्री दुर्लभजी भाई जौहरी ने श्री धीरजभाई तुरखिया को अपना साथी बनाकर देशव्यापी दौरा प्रारम्भ कर दिया।

तीन बड़े प्रान्तीय-सम्मेलन और अन्य साम्प्रदायिक-सम्मेलन हुए।

गुर्जर साधु-सम्मेलन

राजकोट में माघ कृष्णा ८ ता० १-३-३२ से प्रारम्भ हुआ। उस वक्त जो साधु-साध्वी थे और राजकोट सम्मेलन मे मुनि पधारे थे वे निम्न थे :—

सम्प्रदाय	साधु	साध्वी	पधारे हुए मुनि
१ दरियापुरी	२१	६०	श्री पुरुषोत्तमजी म०, ईश्वरलालजी म० ठा० ५
१. लींबडी मोटा	२९	६६	श्री वीरजी म०, शता० रत्नचन्द्रजी म० ठा० ६
३ गोंडल	१५	६२	श्री कानजी म०, पुरुषोत्तमजी म० ठा० ३
४ लींबडी छोटा	७	१९	श्री मणिलालजी म० ठा० २
५ बोटाद	९	×	श्री माणकचन्दजी म० ठा० २
६ सायला	४	×	श्री सघजी स्वामी ठा० २
७ खंभात	८	१०	नहीं पधार सके
८ बरवाला	३	२४	नहीं पधार सके

निम्न प्रकार सगठन, साधु-समिति और प्रस्ताव हुए :—

भिन्न २ सम्प्रदायों का संगठन

इस सगठन में सम्मिलित होने वाली सम्प्रदायों की एक सयुक्त-समिति बनाई जाती है। वह इस तरह, कि जिस सम्प्रदाय में दो से दस तक साधु हों, उसका एक प्रतिनिधि, ११ से २० ठाणे तक के २ प्रतिनिधि, २१ से ३० तक तीन प्रतिनिधि। इस तरह प्रति १० ठाणे साधु के लिए एक प्रतिनिधि भज सकते हैं। आर्याजी चाहे जितने ठाणे हो, उनकी तरफ से एक प्रतिनिधि और जिस सम्प्रदाय मे केवल आर्याजी ही हों उस सम्प्रदाय की तरफ से समिति मे सम्मिलित चाहे जिस सम्प्रदाय के एक मुनि को प्रतिनिधि बना कर भेजा जा सकता है। शेष सम्प्रदायों की सख्या, अब फिर प्रकाशित होगी।

इस हिसाब से, वर्तमान मुनि सख्या के प्रमाण तथा आर्याजी की तरफ से एक मुनि प्रतिनिधि जोड कर, लींबडी बडी सम्प्रदाय ४ प्रतिनिधि, दरियापुरी सम्प्रदाय के ४ प्रतिनिधि, गोंडल सम्प्रदाय के ३ प्रतिनिधि लींबडी छोटी सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, बोटाद सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि, सायला सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि, खमात सम्प्रदाय के दो प्रतिनिधि और बरवाला सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि। इस तरह ८ सम्प्रदायों के १९ प्रतिनिधियों की एक समिति नियुक्त की जाती है। इस समिति मे एक अध्यक्ष और जितनी सम्प्रदायें हैं, उतने ही मन्त्री (कार्यवाहक) रहेंगे। अध्यक्ष और मन्त्रियों की पसन्दगी, समिति सर्वानुमत या बहुमत से करे और प्रतिनिधियों की पसन्दगी अपनी २ सम्प्रदाय वाले करें।

इस वर्ष के लिये पसन्द की हुई साधु-समिति

अध्यक्षः—शतावधानी पण्डित श्री रत्नचन्द्रजी महाराज

सम्प्रदायवार-मन्त्रीगण

लींबडी-सम्प्रदाय—	कवि श्री नानचन्द्रजी महाराज।
दयापुरि-सम्प्रदाय—	मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज।
गोंडल-सम्प्रदाय—	मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज।
लींबड़ी छोटी-सम्प्रदाय—	मुनि श्री मणिलालजी महाराज।
खभात-सम्प्रदाय—	मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज।
बोटाद-सम्प्रदाय—	मुनि श्री माणेकचन्द्रजी महाराज।
बरवाला सम्प्रदाय—	पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज।
सायला-सम्प्रदाय—	पूज्य श्री सघजी महाराज।

कच्छी मन्त्रियों तथा सम्प्रदायवार प्रतिनिधि-मुनियों के शेष नाम, अब फिर प्रकट होंगे।

२—इस समिति का नाम 'गुर्जर-साधु-समिति' रखा जाता है। (गुजराती-भाषा बोलने वालों का समावेश 'गुर्जर' शब्द में होता है)।

३—इस समिति की बैठकें, तीन २ वर्षों के पश्चात् माघ महीने में की जावें। स्थान और तिथि का निर्णय चार महीने पहले अध्यक्ष तथा मन्त्रियों से सलाह करके कर लेना चाहिए। सभ्यों को आमन्त्रण भेजने आदि का कार्य, प्रान्तिक-सम्मेलन-समिति के द्वारा हो सकता है।

४—समिति के एकत्रित होने का यदि कोई खास-प्रसग उपस्थित हो तो चातुर्मास के अतिरिक्त, चाहे जिस अनुकूल-समय में बैठक की जा सकती है। किन्तु इसके लिए प्रतिनिधियों को दो मास पहले आमन्त्रण मिल जाना चाहिए।

५—कम से-कम नौ सभ्यों के उपस्थित होने पर, समिति की कार्य-साधक हाजिरी (कोरम) गिनी जावेगी यानि कामकाज चालू किया जा सकेगा। किन्तु अध्यक्ष और मन्त्रियों की उपस्थिति आवश्यक होगी।

६—प्रत्येक बात का निर्णय, सर्वानुमति से और कभी बहुमत से हो सकेगा। जब दोनों तरफ समान मत होंगे, तब अध्यक्ष के दो मत गिनकर, बहुमत से प्रस्ताव पास किया जा सकेगा।

७—कामकाज का पत्र-व्यवहार, प्रत्येक सम्प्रदाय के मन्त्री के द्वारा करवाना चाहिए। मन्त्री-अध्यक्ष की सम्मति प्राप्त करके उसका निर्णय कर सकेंगे। यदि कोई विशेष कार्य होगा तो अध्यक्ष तथा सब मन्त्रीगण सर्वानुमति से और कभी बहुमत से पत्र द्वारा खुलासा कर सकेंगे।

समिति का कार्य

८—प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को, जहां तक हो सके अपनी-अपनी सम्प्रदाय की परिषद् करके साधु-साध्वियों का सगठन करना चाहिए। उसमे भी, खास कर जिस सम्प्रदाय में अलग-अलग भेद पड़े हुए हों, साधु-साध्वी, निरकुश होकर, अपनी २ मर्जी के मुताबिक आचरण कर रहे हों, उस सम्प्रदाय को तो अवश्य ही परिषद् करके अपना सगठन करना चाहिए। यदि, वह कार्य उस सम्प्रदाय के मन्त्री का किया न हो सके, तो दूसरी

सम्प्रदाय के मन्त्री या मन्त्रियों से मदद लेनी चाहिए। यदि ऐसा करने से भी कार्य न चले तो अध्यक्ष तथा सब मन्त्रियों से सहायता मांगनी चाहिए। यदि इससे भी कार्य पूरा न हो, तो समिति की बैठक बुलाई जावे और किसी भी तरह वह मतभेद मिटा कर सन्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को, अपने २ क्षेत्रों के मुख्य-मुख्य व्यक्तियों को बुलाकर, क्षेत्रों का संगठन करना चाहिए। इसमे भी, जिस सम्प्रदाय का क्षेत्र पर अकुश न हो, उस सम्प्रदाय को तो अवश्य ही क्षेत्रों के मुख्य व्यक्तियों की परिषद करनी चाहिए। जो क्षेत्र, सम्प्रदाय के साधुओं मे भेद डलवाने मे मददगार होते हों, उन्हें समझाकर एक सत्ता के लिए नीचे लाना चाहिए। चौमासे की विनती, प्रत्येक सम्प्रदाय की रीति के अनुसार उन जगहों पर भेजने का प्रबन्ध करवाना और समिति के नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। यह कार्य यदि उस सम्प्रदाय के मन्त्री न कर सकें, तो ऊपर कही हुई रीति से दूसरों से मदद मांगने पर दूसरों को उनकी मदद करनी चाहिए।

१०—एक सम्प्रदाय के क्षेत्र मे, समिति की किसी दूसरी सम्प्रदाय के साधुओं को, अपनी जरूरत से या क्षेत्र खाली रहता हो इस दृष्टि से चातुर्मास करने की आवश्यकता पडे तो चातुर्मास करने वालों को उस सम्प्रदाय के अग्रेसरों की अनुमति प्राप्त करके वहां चातुर्मास करना चाहिए। इस तरह दूसरे क्षेत्र में चातुर्मास करने वालों को उस सम्प्रदाय की परम्परा के विरुद्ध प्ररूपणा करनी चाहिए।

११—दूषितपन के कारण सम्प्रदाय मे बाहर निकाले हुए और स्वच्छन्द रीति से विचरने वाले साधु साध्वी को, चातुर्मास के किसी भी क्षेत्र वालो को अपने यहां चातुर्मास नही करवाना। यदि कोई ऐसे साधु साध्वियों का चातुर्मास करवाएगा, तो समिति उस क्षेत्र का समाधान होने तक बहिष्कार करेगी।

१२—एकलविहारी या संघाडे के बाहर निकाले हुए साधु साध्वी चाहे जिस तरह समाधान करके, एक वर्ष के भीतर अपनी सम्प्रदाय मे मिल जांय, यदि समिति चाहती है। यदि वे एक वर्ष मे न मिलें तो इसका बन्दोबस्त करने का कार्य साधु-समिति, श्रावक-समिति के सुपुर्द करे अर्थात् समिति को इसके लिए समुचित व्यवस्था करनी चाहिए।

१३—किसी साधु साध्वी को, अकेले न विचरना चाहिए। यदि किसी कारणवश कहीं जाना पडे, तो सम्प्रदाय के अग्रेसर की मन्जूरी के बिना न जाना चाहिए। कदाचित् कभी सहायता देने वाले के अभाव में अकेले ही रहना पड़े तो सम्प्रदाय के अग्रेसर कहें, उसी ग्राम मे रहना चाहिए। अग्रेसर की आज्ञा के बिना यदि दूसरे ग्राम में जायेंगे, तो सघाडे के बाहर गिने जावेंगे और उनके लिए नियम न० ११ तथा १२ लागू समझे जावेंगे।

१४—आज्ञा में रहने वाले किसी शिष्य अथवा शिष्या को असमर्थ होने या ज्ञान-शून्य होने के कारण गुरु पृथक् न कर सकेंगे। यदि अलग कर देंगे, तो उन्हें दूसरे नये शिष्य या शिष्या करने के लिए, उस सघाडे के अग्रेसर लोग स्वीकृति न दे सकेंगे।

१५—बडा अपराध करने वाले शिष्य को, उस ग्राम में श्रीसघ के अग्रेसरो को साथ रख कर गुरु पृथक् कर सकते हैं, इस तरह से गुरु द्वारा पृथक् किए हुए या भागे हुए साधु को सम्प्रदाय के अग्रेसरों की मंजूरी के बिना फिर सघाड़े मे नहीं मिलाया जा सकता।

१६—कोई साधु-साध्वी अपना समुदाय छोड़ें, अथवा किसी के दोष के कारण सम्प्रदाय वाले उन्हें सघाडे से बाहर निकालें, तो उनका परम्परा सम्बन्ध भण्डार की पुस्तकों पर कोई अधिकार न रहेगा।

१७—इस समिति में सम्मिलित प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को, बारह व्यवहारों (सम्भोगों) में से तीसरे, पांचवें और छठे व्यवहार के अतिरिक्त शेष नौ व्यवहार करने चाहिए। उन नौ के नाम नीचे दिये जाते हैं :—

(१) उपाधि वस्त्र-पात्र का लेना देना।
(२) सूत्र-सिद्धान्त का वांचन लेन देन।
(३) नमस्कार करना या खमाना।
(४) बाहर से आने पर खड़े होना।
(५) वैयावच्च करनी।
(६) एक ही जगह उतरना।
(७) एक आसन पर बैठना।
(८) कथा प्रबन्ध का कहना।
(९) साथ-साथ स्वाध्याय करना।

१८—यदि भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के विद्यार्थी-मुनियों के लिए कोई संस्था खड़ी हो और उसमें अपनी इच्छानुसार संस्कृत भाषा, प्राकृत भाषा तथा सूत्रों का अध्ययन करने के लिए विद्यार्थी-मुनि रहें तो वे विद्यार्थी-मुनि तथा अध्यापक मुनि परस्पर जब तक संस्था में रहें, बारहों प्रकार के व्यवहार कर सकते हैं, ऐसा यह समिति निश्चित करती है।

१९—किसी के भी दीक्षित शिष्य को, फिर वह चाहे अपनी सम्प्रदाय का हो या दूसरी सम्प्रदाय का हो, बुरी सलाह देकर अलग न करवाना चाहिए। निभाने की बात अलग है। ठीक इसी तरह किसी के उम्मीदवार को भी न बहकाना चाहिए।

एक संवत्सरी के सम्बंध में

२०—अष्टमी, पक्खी और संवत्सरी, अपनी सभी सम्प्रदाय वालों को एक ही दिन करनी चाहिये। महा-सम्मेलन के समय, सर्वानुमति से जो पद्धति मुकर्रर हो, वह पद्धति हमारी इस समिति को स्वीकार करनी चाहिये।

दीक्षा के सम्बंध में

२१—दीक्षा लेने वाले उम्मीदवार को, उसके अभिभावकों से छिपाकर इधर उधर भगाना नहीं। उम्मीदवार की शारीरिक सम्पत्ति अच्छी तरह देख लेना चाहिए। किसी प्रकार के दोष वाला न हो, कर्जदार या अपराधी भी न हो। प्रकृति अच्छी हो, वैराग्यवान हो, उसके आचरण में कोई ऐब न हो, ऐसे उम्मीदवार को ही पसन्द करना चाहिए। उम्मीदवार को एकाध वर्ष अपने साथ रखकर, प्रकृति तथा वैराग्य का पूर्ण परिचय करने के बाद, जब उसकी योग्यता का निर्णय हो जाय तब उसके अभिभावक की लिखित आज्ञा प्राप्त करके, श्रीसंघ तथा सम्प्रदाय के अग्रेसरों की सम्मति प्राप्त करने के बाद ही उसे दीक्षा देनी चाहिये। उम्मीदवार भाई या बाई की उम्र बिल्कुल कम या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिए, बल्कि योग्य अवस्था होनी चाहिए। अयोग्य दीक्षा पर समिति का अंकुश रहेगा।

शिक्षा प्रबंध

२२—विद्याभिलाषी मुनियों तथा विद्याभिलाषिनी साध्वियों के लिये, भिन्न २ दो संस्थाएं, स्थल, कल्प आदि का निर्णय करके कायम होनी चाहिए। संस्कृत, प्राकृत, थोकड़े और सूत्र का ज्ञान देने के बाद, उपदेश किस तरह देना चाहिए, यह भी सखलाना चाहिये। तीन वर्ष, पांच वर्ष, या सात वर्ष तक पूरा अभ्यास करके परीक्षा में पास हों, तब तक अपने चेले या चेलियों को, अच्छी देखरेख वाली संस्थाओं में रखना चाहिए। ऐसी संस्थाएं कायम हो जाने के बाद, अलग अलग जगहों पर शास्त्री रखने की प्रणाली बन्द कर देनी चाहिए। आर्याओं को, दूसरी आर्याओं अथवा स्त्री शिक्षिका के पास अभ्यास करना चाहिए, किन्तु पुरुष शिक्षक के पास नहीं।

व्याख्यान दाता की योग्यता

२३—व्याख्यानदाता को, शास्त्रकुशल होना चाहिए, स्वमत और परमत का ज्ञाता होना चाहिए और देशकाल का जानकार होना चाहिए। भीतर ही भीतर मनोमालिन्य पैदा करवाने वाला न होना चाहिए तथा अपनी महत्ता एवं दूसरों की हलकाई बतलाने वाला भी न होना चाहिए। एकान्त व्यवहार अथवा एकान्त निश्चय दृष्टि से स्थापन उत्थापन करने वाला न होना चाहिए, बल्कि व्यवहार तथा निश्चय इन दोनों नय को मान देने वाला होना चाहिए। ज्ञान का उत्थापन करने वाला न होना चाहिए। सरल, समदर्शी, धर्म की सच्ची लगन वाला और समाधि भाव में रहने वाला होना चाहिए। ऐसी योग्यता वाले को ही व्याख्यान देने का अधिकार मिलना चाहिये।

साहित्य-प्रकाशन संबंधी

२४—मुनियों को, साहित्य-प्रकाशन नहीं, बल्कि यदि हो सके तो, साहित्य रचना करनी चाहिए। साहित्य के दो भाग हो सकते हैं। आगम-साहित्य और आगम के बाद दूसरा धार्मिक-साहित्य। पहले आगम साहित्य का उद्धार होना चाहिए। आगम के सम्बन्ध में होने वाली शङ्काएं निर्मूल हों, आगम की सत्यता पूरी तरह प्रमाणित हो जाय, इस तरह से आगम-साहित्य की योजना होनी चाहिए। अभी अथवा महा-सम्मेलन के अवसर पर, विद्वान् मुनियों की एक कमेटी बना कर द्रव्यानुयोग और चरणकरणानुयोग का पृथक्करण करना चाहिए। मुनियों द्वारा रची हुई पुस्तकों का प्रकाशन करने के लिए विद्वान्-श्रावकों की एक संस्था स्थापित होनी चाहिए। अथवा कॉन्फरन्स की आन्तरिक सभा को यह कार्य अपने हाथ में लेना चाहिए। मुनियों को प्रकाशन कार्य से कुछ भी सम्बन्ध रखने की आवश्यकता न रहनी चाहिये। यदि रहे, तो केवल इतनी ही, कि छपने में किसी प्रकार की अशुद्धि न रह जाय, इस बात का ध्यान रखना चाहिए। पुस्तकों के क्रय-विक्रय के साथ मुनियों का कुछ सम्बन्ध न रहे, ऐसी श्रावकों की एक समिति स्थापित होनी चाहिए। निकम्मी पुस्तकें, जिनमें कि धार्मिक साहित्य न हो, विषयों की योजना न हो, भाषा की शुद्धि न हो और समाज के लिए उपयोगी भी न हों, ऐसे साहित्य के प्रकाशन में, कॉन्फरन्स को रोक लगानी चाहिए, ताकि समाज का पैसा बरबाद न हो। विद्वान् साधुओं और श्रावकों की समिति पास करे, वही पुस्तक पास हो सके, ऐसा बन्दोबस्त कॉन्फरन्स को करना चाहिए, ऐसी साधु-समिति की इच्छा है। शिक्षित समाज को, धार्मिक साहित्य के अनुशीलन की बड़ी आतुरता जान पड़ती है, किन्तु वैसे साहित्य के अभाव के कारण, अन्य धर्मों का साहित्य पढ़ा जा रहा है। परिणामतः बहुत से लोगों की श्रद्धा का घुमाव, अन्य धर्मों की तरफ हो जाता है। इस स्थिति को रोकने के लिये यह सम्मेलन अच्छे धार्मिक साहित्य की रचना को अत्यन्त आवश्यक समझता है। जिस तरह से बुद्ध चरित्र प्रकाशित हुआ है, उसी तरह से महावीर

चारित्र की अच्छी से अच्छी पुस्तक क्यों न प्रकाशित हो ? सम्मेलन की यह भी इच्छा है, कि विद्यार्थियों के लिए जैन पाठमाला, अच्छे से अच्छे रूप में तैयार की जावे। इसके अतिरिक्त बहुत साहित्य तैयार करना है। इस सम्बन्धमें, विद्वान् मुनियों तथा विद्वान् श्रावकों को, संयुक्त रूप में कार्य करना चाहिए, ऐसी समिति की इच्छा है। साहित्य की रचना करने वाले मुनियों को साहित्य रचना में पुस्तकों की आवश्यकता पड़ती है। उनकी पूर्ति साधु-समिति को अपने भण्डार से या बाहरी पुस्तकालयों से करनी चाहिए अथवा पुस्तक प्रकाशन-समिति को वैसे साहित्य की पूर्ति करनी चाहिए।

साधु-समाचारी

(प्राचीन से प्राचीन, जितनी समाचारियां प्राप्त हो सकीं, उन सबको हमने वांचा है और विचार किया है। उन सबको दृष्टि में रखकर, शास्त्रसम्मत और देशकालानुसार शक्य घटा बढ़ी भी की है। समाचारों के बहुत से बोल देश आश्रित, कुछ सम्प्रदाय आश्रित और कुछ बारीक तथा व्यावहारिक हैं। जितने जरूरी समझे गए, उतने ही बोल प्रकाशित किए जाते हैं। बाकी सब मुनियों की जानकारी मात्र के लिए गुप्त रख लिए जाते हैं।)

२५—दीक्षा के समय, समवसरण में पुस्तकों का खरडा न करवाना चाहिए और दीक्षा देने से पूर्व अंजलि में आई वस्तुओं या किसी को अनुराग पूर्वक दी हुई वस्तुओं में से, दीक्षा का पाठ बोल दिए जाने के बाद कुछ भी न लेना चाहिए। पहले से ही पुस्तक लिखने का आर्डर दे दिया गया हो, उसकी तो बात दूसरी है, किन्तु दीक्षा के अवसर पर, दीक्षा वाले के उपकरणों के अतिरिक्त दूसरे साधुओं या आर्याजी के लिए कुछ भी न लेना चाहिए।

२६—साधु-साध्वियों को, दीक्षा में या उसके बाद सब प्रकार रेशमी-वस्त्र डोरियें शरबती मलमल, वायल आदि पतले वस्त्र न लेने चाहिए। इसी तरह सिन्धी कम्बलों के समान पट्टी वाली चद्दरें या बड़ी रंगीन किनारी वाले टॉवल्स नए न लेने चाहिये। यदि पुराने हों तो उन्हें भीतर ही भीतर काम में लेना चाहिये। (जब तक बन सके, समय धर्म की रक्षा करते हुए वस्त्र वहरने चाहिए)।

२७—चातुर्मास के क्षेत्रों में, व्याख्यान अथवा वॉचन के समय के अतिरिक्त, साधुजी के उपाश्रय में स्त्रियों को और आर्याजी के उपाश्रय में पुरुषों को, आवश्यक कार्य के बिना न बैठे रहना चाहिए। बाहर ग्रामों से आये हुए लोगों की बात अलग है। किसी आर्याजी को सूत्र की वाचनी देनी हो तो अनुकूल समय पर, दो घण्टे से अधिक वांचनी न देनी चाहिये। और वह भी खुले हॉल में बैठकर, एकान्त में बैठकर नहीं।

२८—साधुओं को दो से कम और साध्वीजी को तीन से कम न विचरना चाहिए। यदि किन्हीं आर्याजी के साथ तीसरी आर्याजी विचरने वाली न हों और सम्प्रदाय के अग्रेसर उन्हें स्वीकृति दे दें, तो दूसरी बात है।

२९—प्रत्यक्ष में अप्रतीतिकारी गिने जाने वाले घर में, साधु-साध्वियों को अकेले न जाना चाहिये।

३०—श्रावकों को, अपनी धार्मिक क्रियायें करने के लिए जो मकान बनाये हों (फिर उनका नाम चाहे जो हो) उनमें साधु लोग उतर सकते हैं। हां, खास तौर पर मुनियों के लिए ही बनाये गये हों, तो उनमें नहीं उतर सकते।

३१—मन्त्र-तन्त्र का प्रयोग करके दूसरों को परेशान करना या भविष्य बतलाना यह मुनि-धर्म के विरुद्ध है, ऐसा यह समिति निश्चित करती है।

३२—साधु-साध्वी के फोटो खिंचवाना, उन्हें पुस्तकों में छपाना या गृहस्थ के घर पर दर्शन पूजन के लिए रखना, समाधि-स्थान बनाना, पाट पर रुपए रखना, पाट को प्रणाम करना आदि जड़पूजा, हम लोगों की परम्परा के विरुद्ध है। इसलिए समिति को इसकी रोक करनी चाहिये और श्रावक-समिति को इसमें मदद पहुचाना चाहिये।

३३—सवत्सरी सम्बन्धी कागज न छपवाये जावें, और न वैसे कागज लिखें या लिखवाये ही जावें। छोटे साधु-साध्वी को बड़ों की मन्जूरी के विना कागज न लिखवाने चाहिए। महत्वपूर्ण पत्र सघ के मुख्य व्यक्ति के हस्ताक्षर के विना न भेजने चाहिए।

३४—श्रावक समिति के सभ्यों का चुनाव, साधु-समिति की सलाह लेकर करना चाहिए, ऐसी साधु-समिति की इच्छा है।

३५—समिति के मन्त्री अथवा अध्यक्ष के नाम आये हुए महत्वपूर्ण पत्र, सम्मेलन समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई जौहरी के पास इस शर्त पर रक्खे जावें कि जब साधु-समिति की बैठक हो अथवा उस विषय पर विचार करने का मौका मिले, तब वे कागज समिति के सामने पेश करें।

३६—उपरोक्त जो नियम सर्वानुमति से बनाये गये हैं, उन्हें समिति के प्रत्येक साधु-साध्वी को प्रभु की साक्षी से पालना चाहिये। इसमें यदि कोई हस्तक्षेप करेगा या नियम का उल्लघन करेगा, तो समिति उसे उचित दण्ड देगी। अपराधी का कोई पक्षपात न करे। यदि कोई पक्षपात करेगा तो वह पक्षपाती भी अपराधी माना जावेगा।

उपरोक्त मसविदे में, एक मास के भीतर जो २ सूचनाए प्राप्त होंगी, वे समिति की दृष्टि से गुजर कर यह मसविदा पक्के के रूप मे प्रकाशित कर दिया जावेगा।

मुनिराजों की समिति द्वारा दी हुई सूची

कि साधु-समिति को, श्रावक-समिति की कहा २ मदद चाहियेगी ?

जिन २ सम्प्रदायों मे, साधु-साध्वियों मे दलबन्दी है, वहां मतभेद करने में, साधु-समिति के साथ श्रावक-समिति की आवश्यकता होगी। उसके लिये, सम्प्रदायों के क्षेत्रों मे, प्रभावशाली व्यक्तियों की एक कमेटी बनाई जावे और उसकी नियमावली भी बना ली जावे।

एकलविहारी या दूषित-साधुओं को समझाने का कार्य भी श्रावक समिति को करना होगा।

क्षेत्रों का सगठन करने में श्रावक-समिति की सहायता की जरूरत होगी। इस व्यवस्था की रचना के समय नही पधारे हुये साधुओं और खास सघों की सम्मति प्राप्त करने में भी श्रावक-समिति की आवश्यकता होगी।

साधु-साध्वियों के फोटो पुस्तक मे छपते हों या किसी उपाश्रय मे रक्खे हों, तो उन्हें नष्ट करवाने तथा समाधि-स्थानों की रचना, पाट पर रुपया रखना या पाट को प्रणाम करना आदि जड़पूजा रोकने का कार्य भी श्रावक-समिति को करना होगा।

श्रावक-समिति का प्रस्ताव

मुनिराजों द्वारा रची हुई व्यवस्था और बताई हुई लिस्ट के अनुसार कार्य करने के लिए सम्प्रदायवार श्रावकों की एक समिति मुकर्रर करना तय किया जाता है।

इस समिति के प्रधान, सेठ दामोदरदास जगजीवनभाई चुने जाते हैं। इस समिति में, सम्प्रदायवार गृहस्थों के नाम प्राप्त करके, उनमें से सभ्य चुनना निश्चित किया जाता है। इस तरह सम्प्रदायवार सभ्यों के नाम प्राप्त करने के लिए, पत्र-व्यवहार आदि प्रबन्ध करने और प्रमुख श्री की सूचना के अनुसार या उनकी सलाह लेकर कार्य करने को, एक वैतनिक मनुष्य रख लेना निश्चित किया जाता है, और इसके लिए रु० १०००) एक हजार का चन्दा करना तय किया जाता है। जब तक पूरी नई समिति का चुनाव न हो जाय, तब तक श्री दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी और श्री भाईचन्दजीभाई अनूपचन्द मेहता को, प्रमुख श्री की सहायता का कार्य करने के लिए नियुक्त किया जाता है और इन तीनों महानुभावों की कमेटी को सम्पूर्ण सत्ता दी जाती है।

श्री राजकोट
ता० ७-३-१६३२ ई०

दामोदर जगजीवन
प्रमुख—श्रावक समिति

पाली मे फाल्गुन शु० ३, ४, ५ ता० १०, ११, १२ मार्च सन् १६३२ से प्रारम्भ हुआ जिसमें ६ सम्प्रदायों के ३२ मुनिवरों की उपस्थिति थी।

श्री मारवाड़-प्रान्तीय स्थानकवासी-जैन साधु-सम्मेलन की पहली बैठक, पाली में स० १६८८ वीर सं० २४५८ की शुभ मिति फाल्गुन शुक्ला ३ गुरुवार से प्रारम्भ हुई। जिसमें निम्न प्रकार से उपस्थित थीं।

(१) पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री दयालचन्दजी महाराज ठाणे ४।
(२) पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री पन्नालालजी म० ठा० ३।
(३) पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री फतेहचन्दजी महाराज ठाणे ४।
(४) पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री धीरजमलजी महाराज ठाणे ६।
(५) पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री हजारीमलजी महाराज ठाणे ११।
(६) पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज ठाणे ४।

उपरोक्त मुनिराजों ने सम्मिलित होकर शास्त्र-परम्परा, देश, काल एवं समयानुकूल निम्न-प्रस्ताव सर्वानुमति से पास किये हैं।

(१) प्रस्तावों का पालन करवाने और सम्प्रदायों की सुव्यवस्था रखने के लिये, एक सयोजक-समिति मुकर्रर की जाय, जिसका चुनाव इस प्रकार से किया जावे—

जिस सम्प्रदाय मे १ से १० मुनि हों, उस स० के २ प्रतिनिधि
„ „ ११ से २० „ „ ४ „
„ „ २१ से ३० „ „ ६ „

इस तरह, १० मुनिराजों में से २ प्रतिनिधि लिए जांय। तदनुसार, पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के ४ प्रतिनिधि, पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि, पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि और पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय का १ प्रतिनिधि। इस तरह, इन प्रतिनिधियों की समिति मुकर्रर की जाती है।

प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रतिनिधियों में से, एक-एक मन्त्री चुना जायगा।

प्रत्येक-सम्प्रदाय के प्रवर्तक भी उसी सम्प्रदाय के मुनियों के बहुमत से चुने जावेंगे।

इस तरह, इस वक्त के लिए निम्नानुसार चुनाव किया जाता है :—

सम्प्रदाय	*प्रवर्त्तक*	*मन्त्री*
(१) पूज्य श्री अमरसिंहजी म०	प० मुनि श्री दयालचन्द्रजी म०	प० मुनि श्री ताराचन्द्रजी म०
(२) पूज्य श्री नानकरामजी म०	प० मुनि श्री पन्नालालजी म०	प० मुनि श्री पन्नालालजी म०
(३) पूज्य श्री स्वामीदासजी म०	प० मुनि श्री फतेहचन्दजी म०	प० मुनि श्री छगनलालजी म०
(४) पूज्य श्री रघुनाथजी म०	प० मुनि श्री धीरजमलजी म०	प० मुनि श्री मिश्रीलालजी म०
(५) पूज्य श्री जयमलजी म०	प० मुनि श्री हजारीमलजी म०	पं० मुनि श्री चौथमलजी म०
(६) पूज्य श्री चौथमलजी म०	प० मुनि श्री शार्दूलसिंहजी म०	पं० मुनि श्री शार्दूलसिंहजी म०

(१) अध्यक्ष और मन्त्रियों का चुनाव समिति तथा सम्प्रदाय वाले करेंगे। प्रतिनिधि, अध्यक्ष और मन्त्री, ३-३ वर्ष के लिए चुने जावेंगे। इस अवधि के बाद उन्हीं को रखना या बदलना, यह बात समिति एवं सम्प्रदाय के मुनियों के अधीन है।

(२) इस संस्था का नाम 'मरुधर साधु-समिति' होगा।

(३) समिति की बैठकें, ३-३ वर्षों में करना निश्चित किया जाता है।

बैठक का स्थान और तिथि आदि ४ मास पहले से, अध्यक्ष तथा मन्त्री मिलकर नियत करें और और आमन्त्रणादि का कार्य शुरू करें। इसके लिए, फाल्गुण मास श्रेष्ठ होगा।

(४) समिति एकत्रित करने योग्य, यदि कोई खास-कार्य होगा तो चातुर्मास के अतिरिक्त चाहे जिस समय कर सकते हैं। किन्तु प्रतिनिधियों को २ मास पूर्व आमन्त्रण देना होगा।

(५) समिति का कार्य, उपरोक्त-नियमानुकूल सुचारु-रूप से चलाने और इन नियमों का प्रचार करने के लिये, निम्नोक्त मुनिवरों के जिम्मे किया जाता है। पत्र-व्यवहार, इन्हीं मुनियों की सम्मति से होगा :—

(१) प० मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज, (२) प० मुनि श्री पन्नालालजी महाराज, (३) पं० मुनि श्री मिश्रीलालजी महाराज, (४) प० मुनि श्री छगनलालजी महाराज, (५) प० मुनि श्री चौथमलजी महाराज, (६) पं० मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज।

(६) आर्याजी के साथ, कारण विशेष के अतिरिक्त, आहार-पानी का संभोग (लेन देन) बन्द किया जाता है।

(७) व्याख्यान के समय के अतिरिक्त यदि आर्याजी, मुनिराजों के स्थान पर ज्ञानार्थ आवें, तो कम से कम १ स्त्री और १ पुरुष (गृहस्थ) का वहां उपस्थित होना आवश्यक है। तथा खुले स्थान में ही बैठ सकती हैं। यदि कार्यवश आना पड़े, तो खड़ी खड़ी पूछकर वापस लौट जांय।

(८) मुनिराजों को, आर्याजी के स्थान (निवास) पर न तो जाना ही चाहिये, न वहां बैठना ही चाहिए। यदि, संथारा और पुस्तक प्रतिलेखन के कारण जाना पड़े, तो बिना श्रावक या श्राविका की उपस्थिति के, वहां नहीं बैठ सकेंगे।

(९) मुनिराजों के स्थान पर, बहिनों को व्याख्यान के समय के अतिरिक्त, पुरुषों की उपस्थिति के बिना न जाना और न बैठना ही चाहिए।

(१०) साधुजी २ ठाणे से और साध्वीजी ३ ठाणे से कम, आज्ञा के बिना नहीं विचर सकतीं।

(११) दीक्षा, योग्य-व्यक्ति देखकर तथा शास्त्रानुकूल एव श्रीसघ की सम्मति से दी जावेगी।

(१२) साधु-समाचारी, (शास्त्रानुसार दस प्रकार की) नियमित रूप से की जावे।

(१३) पाक्षिक-पत्रिका के अतिरिक्त, तपोत्सव, क्षमापना पत्रिकादि न छपवाई जावें, लेखादि की बात अलग है।

(१४) मन्त्र, यन्त्र, तन्त्रादि अष्टांग निमित्त प्ररूपणा करना, मुनिधर्म से विरुद्ध है। अतः इसका त्याग करें।

(१५) अष्टमी और चतुर्दशी को प्रत्येक-मुनि उपवास, आयबिल, एक ठाना, पांचविगय त्याग आदि तप करें। बाल, वृद्ध और विद्यार्थी की बात अलग है। यदि कारणवश उपरोक्त तप न किए जाय, तो मास में दो उपवास करें। अथवा सूत्र की ५०० गाथा की सज्झाय करें।

(१६) अप्रतीतिकारी-गृहस्थ के घर पर किसी भी कार्य से मुनिराज न पधारें।

(१७) साधुजी, अपना फोटो न खिचवावें।

(१८) दीक्षा में अपव्यय तथा अप्रमाणित खर्च को रोकें।

(१९) प्रतिदिन, कम से कम ५०० गाथा का स्वाध्याय करें अथवा कम से कम नमोत्थुणं की ५ माला फेरें। व्याख्यान के अलावा, कम से कम २ घण्टे तक जिनवाणी का मनन करेंगे। विहार और अस्वस्थ होने की बात अलग है।

(२०) वस्त्र—बहुमूल्य, रंगीन, रेशमी, चमकीले, फैन्सी और बारीक न लेंगे न पहनेंगे। कारणवश दो चातुर्मास हो जावेंगे, तो भी व्याख्यान एक ही होगा।

(२१) उपरोक्त संगठित सम्प्रदायों के साथ, ११ सभोगों (आहार के अतिरिक्त) की छूट दी जाती है।

(२२) आर्याजी के विषय में, कमेटी प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा मन्त्री को ज्ञान क्रिया के सम्बन्ध मे नियम बनाने की आज्ञा देती है। जो आर्याजी, उपरोक्त प्रवर्त्तक तथा मन्त्रीजी द्वारा बनाये हुए नियमों का भग करेंगी उन्हें व्यवहार से बाहर किया जावेगा। इसकी सूचना छ हों सम्प्रदायों को दे दी जावेगी और वे ऐसी आर्याजी से कोई व्यवहार न रक्खेंगे।

(२३) जो मुनि, अपनी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा कमेटी द्वारा बनाये हुए नियमों का भग करेंगे, उनको प्रवर्त्तक तथा मन्त्री सम्भोग (१२ व्यवहारों) से अलग करके, छःहों सम्प्रदायों के प्रवर्त्तकों को सूचना दे देंगे, ताकि उनसे कोई सम्बन्ध न रक्खें।

(२४) प्रत्येक क्षेत्र में, उक्त छः सम्प्रदायों मे से एक चौमासा होगा। कदाचित् किसी कारणवश दो चातुर्मास हो जावेंगे, तो व्याख्यान एक ही होगा।

(२५) कोई भी मुनि, छः सम्प्रदायों के क्षेत्र में विचरें, तो उस क्षेत्र के अधिष्ठाता-मुनि की सम्प्रदाय की समाचारी के विरुद्ध प्ररूपणा न करेंगे और गुरु आम्नाय भी अपनी नहीं करावेंगे।

(२६) पक्खी और सवत्सरी, छःहो सम्प्रदाय एक करेंगे। इस सम्बन्ध में, जो विशेष बात् बृहत्-सम्मेलन में तय होगी, वह सर्व सम्मति से स्वीकार की जावेगी।

(२७) इन छः सम्प्रदायों के सम्भोगी मुनियों में से यदि कोई मुनि, किसी कारणवश किसी दूसरी सम्प्रदाय मे रहना चाहेंगे, तो वे अपने प्रवर्त्तक तथा मन्त्री की आज्ञा लेकर एव रखने वालों के नाम का आज्ञा-पत्र प्राप्त करके वहां रह सकते हैं। इस अवस्था में, रास्ते मे, आदमी के साथ अकेले जा सकते हैं।

(२८) कोई प्रवर्त्तक-मुनि, अपनी सम्प्रदाय के किसी मुनि से, छःहों सम्प्रदाय के प्रवर्त्तकों की आज्ञा प्राप्त किए बिना, सम्भोग नहीं तोड सकते।

(२६) इन छ. सम्प्रदायों के मुनियों मे, जो मुनि यहां हाजिर नहीं है, उन्हे उस सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा मन्त्री, अपनी सम्प्रदाय में ले सकेंगे तथा छहो सम्प्रदाय के प्रवर्त्तकों को इसकी सूचना दे देंगे।

(३० जो मकान गृहस्थों ने, अपने धर्म-ध्यान के लिए बनाया है, उसका फिर चाहे जो नाम रक्खा गया हो—उसमें मुनि ठहर सकते हैं। किन्तु साधुओं के निमित्त बनाये हुए मकान मे ठहरने का निषेध है।

राजकोट साधु-सम्मेलन में, शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज आदि मुनिराजों तथा विद्वान श्रावकों ने, महासम्मेलन की नींव के रूप मे तथा हम लोगों के लिए मार्गदर्शक जो कार्यवाही की है, उस पर यह साधु-सम्मेलन, अपनी ओर से सन्तोषपूर्वक हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता है।

मरुधर मुनियों का द्वितीय सम्मेलन स० १९८४ माघ शु० ३, ४, ५ ता० १४, १५, १६ जनवरी १९३२ ब्यावर मे हुआ। ५ सम्प्रदाय के मुनि ठा० २८ तथा आत्मार्थी मुनि श्री मोहन ऋषिजी म० (आमन्त्रित) उपस्थित थे। बृहत्साधु-सम्मेलन अजमेर में पधारने वाले दूरस्थ प्रान्तों के मुनिवरों के स्वागत और सेवा के लिए मुनि समितियां बनाई। प्रतिनिधि चुने और ३६ प्रस्ताव पास किये।

श्री पंजाब-प्रांतिक साधु-सम्मेलन, होशियारपुर

विक्रमाब्द १९८८ चैत्र कृ० ६ रविवार मे होशियारपुर में प्रारम्भ हुआ। गणीजी श्री उदयचन्दजी म० सा० सम्मेलन के सभापति और उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० सा० मत्री चुने गये। युवाचार्य काशीरामजी म० सा० आदि १८ मुनिवर मुख्य २ पधारे थे। जो सकारण नहीं पधार सके थे, उनका सन्देश और प्रतिनिधित्व मिला था। उपाध्यायजी म० का वक्तव्य प्राकृत (मागधी) मे था जो बडा रोचक, मार्गदर्शक और सरल परन्तु ओजस्वी था। इस सम्मेलन में, निम्न लिखित-प्रस्ताव, सर्वानुमति से स्वीकृत हुए:—

"श्री सुधर्मागच्छाचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज, श्रीसंघ के परम हितैषी तथा दीर्घदर्शी हैं। आप ही की अत्यन्त कृपा और विचारशक्ति के द्वारा साधु-सम्मेलन का जन्म हुआ है। आप ही की कृपा से, ऑल इण्डिया श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स ने जागृत होकर बृहत् मुनि सम्मेलन की नींव डाली है। जिसके कारण सभी प्रान्तों मे जागृति फैल गई है, जैसा कि जैन प्रकाश से प्रकट है। पजाब का श्री सघ कुछ अर्से से बिखरा हुआ था, जो आप ही की कृपा से पुनः प्रेम सूत्र मे बध गया है। जो पारस्परिक तर्क-वितर्क के लिए कटिबद्ध था, वही आज सहानुभूति पूर्वक जैन धर्म के प्रचार कार्य मे लगा दिखाई दे रहा है। आप ही की कृपा से, काठियावाड, मारवाड़, गुजरात, कच्छ और दक्षिण प्रान्त में जो कई गच्छ बिखरे हुए थे, वे भी प्रेम-सूत्र में बध गए हैं। इस लिए उपरोक्त महाचार्य के गुणों का अनुभव करते हुए, उनका सच्चे हार्दिक भावों से धन्यवाद करना चाहिए।

यह प्रस्ताव, पं० मुनि श्री रामस्वरूपजी महाराज ने साधु-सम्मेलन के सन्मुख प्रस्तुत किया, जो सर्वानुमति से, जयध्वनिपूर्वक स्वीकृत हुआ।

उपाध्यायजी महाराज और प्रवर्तिनी आर्याजी श्री पार्वतीजी महाराज की ओर से निम्न प्रस्ताव उपस्थित किये गये :—

(१) ऑल-इण्डिया कॉन्फ्रन्स की ओर से प्रकाशित पत्रीपत्र का प्रतिरूप पत्रीपत्र प्रकाशित करना चाहिये। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(२) पूज्य मुनि श्री अमरसिंहजी महाराज के बनाये हुए बत्तीस नियमों के अनुसार गच्छ को चलना चाहिये।

सर्वसम्मति से निश्चित, हुआ कि पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के बनाये हुए, पंजाबी साधु-संघ की मर्यादा के जो बत्तीस नियम हैं, वर्तमान मे यह मुनि-सम्मेलन उन्हीं को उचित समझता है। अजमेर में होने वाले अखिल-भारतीय साधु-सम्मेलन के पश्चात् आवश्यकता होने पर पंजाबी साधु-संघ एकत्रित होकर फिर विचार कर सकेगा।

(३) पक्षपात के वश होकर वर्द्धमान, वीरसन्देश आदि पत्रों और विज्ञापनों द्वारा, चतुर्विध संघ के सम्बन्ध मे जो गलत लेख प्रकाशित होते रहे हैं, उनके लिए तिरस्कार-सूचक प्रस्ताव पास होना चाहिये।

इस प्रस्ताव का गणी मुनि श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने बड़े ही मार्मिक शब्दों मे अनुमोदन किया। जिसका वहां उपस्थित कई मुनिराजों ने समर्थन किया।

अन्त में यह प्रस्ताव निम्न स्वरूप मे पास हुआ, कि—'यह मुनि-मण्डल (साधु-सम्मेलन कुछ वर्ष पूर्व जो विज्ञापनबाजी और जैन आफताब, वर्द्धमान तथा वीर-सन्देश के लेखों के द्वारा, दोनों पक्ष के अर्थात् पत्रीपक्ष और परम्परापक्ष के मुनिराजों एवं आर्याओं या चतुर्विध संघ पर राग-द्वेष आदि के वशीभूत होकर, असत्य और व्यर्थ लेख लिखे तथा छापे गये हैं, उन्हें शुद्धान्त'करण से अत्यन्त शोकप्रद, निन्दनीय, संघ की क्षति करने वाले और धर्म के लिये हानिकारक मानता हुआ तिरस्कार की दृष्टि से देखता और निकृष्ट कृत्य समझ कर अमान्य मानता है।'

(४) पहले के निन्दात्मक पत्र फाड़ दिए जावें। भविष्य में जिस साधु या आर्या की आचार विषयक कोई बात सुनी जावे, तो उससे कहे बिना किसी गृहस्थ से न कहनी चाहिये। यदि वे न मानें तो उनके साथ यथोचित बर्ताव करना चाहिये। यदि कोई, उस व्यक्ति से कहे बिना ही कोई बात लोगों से कह दे, तो उसे भी यथोचित शिक्षा देनी चाहिये। इस नियम की रचना हो जाने के पश्चात् यदि किसी मुनि या आर्या के पास, किसी के निन्दात्मक-पत्र हों, तो उन्हें फाड़ डालें। भविष्य मे न तो अपने पास कोई इस प्रकार के पत्र रक्खें और न ऐसा पत्र लिखें किंवा लिखने के लिये किसी को उत्तेजना ही दें। यदि कोई गृहस्थ आदि, किसी साधु या साध्वी के विषय में कोई बात कहे, तो उस मुनि या आर्या से पूछे बिना, उस बात पर विश्वास न किया जाय और न जनता के सामने वह अप्रकट बात रक्खी ही जाय। यदि, कोई मुनि या आर्या, उपरोक्त नियम का पालन न करे, तो उन्हें यथोचित-शिक्षा दी जानी चाहिये। इस नियम की रचना के पश्चात् भी यदि मुनि या आर्याएं इस प्रकार के पत्रों को रक्खेंगी तो अपमानित और श्रीसंघ की चोर समझी जायंगी। यह प्रस्ताव, सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(५) साधु या आर्याएं, किसी भाई या बहिन को, अपने दर्शनों का नियम न करवावें।

सर्व-सम्मति से यह तय हुआ कि प्रेरणा करके अपना पक्षीय बनाने के लिये, ऐसा नियम न करवाया जावे।

(६) सब आचार्यों पर मुख्याचार्य होने चाहिए।

सर्व-सम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(७) शकित प्रश्नों का यथोचित समाधान होना चाहिये, अर्थात् शास्त्रोद्धार होना चाहिये।

सर्व-सम्मति से पास हुआ, कि प्रतियों मे जो लिखित अशुद्धियां हों, उन्हें प्राचीन प्रतियों के आधार पर शुद्ध करने का कार्य, अखिल भारतवर्षीय साधु-सम्मेलन पर छोड़ दिया जाय जो अजमेर में होने वाला है।

[श्री उपाध्यायजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) श्री प्रवर्तिनीजी की आज्ञा के विना जो आर्याए हैं, वे श्री प्रवर्तिनीजी की आज्ञा में की जावें। यदि वे यों न मानें तो गणी, आचार्य और उपाध्याय उन्हें समझाकर आज्ञा मे करें और फिर प्रवर्तिनीजी से कहा जावे, कि वे उन्हें भलीभाति आज्ञा मे रक्खें। निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव वर्तमान आचार्य से सम्बन्ध रखता है।

(२) सब आचार्यों के एकत्रित हो जाने पर, फिर गणी, आचार्य और उपाध्याय, प्रवर्तिनीजी से मिल कर चार गणावच्छेदिकाए नियत करें, जिससे सब आचारों की भलीभांति रक्षा की जा सके। यह प्रस्ताव भी वर्तमान आचार्य से सम्बन्ध रखता है।

(३) जो साधु या आर्याएं आचार्य श्री की आज्ञा मे हों उनके साथ साधु व आर्याएं वन्दना आदि क्रियाओं का यथाविधि पालन करें। स्वेच्छापूर्वक यानी विना आचार्य महाराज की आज्ञा वन्दनादि व्यवहार न छोड़ें, जिससे सघ मे एकता तथा प्रेम की वृद्धि और आज्ञा का पालन होता रहे।

[युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) दीक्षा से पूर्व, वैरागी को अर्थसहित प्रतिक्रमण सिखलाना चाहिये। यदि उसका कोई बुजुर्ग या मित्र भी साथ ही दीक्षित होना चाहता है, तब उसका प्रतिक्रमण मूलमात्र सम्पूर्ण होना चाहिये।

(२) निश्चित्-कोर्स समाप्त किए बिना, आम जनता मे उपदेश न देना चाहिए।

पास हुआ कि एक कमेटी बनाई जाय, जो कोर्स नियत करे। यह प्रस्ताव, बृहत्सम्मेलन मे भी रखा जावे।

(३) प्रत्येक गच्छ मे आचार्य होने चाहियें, और सब आचार्यों पर एक मुख्याचार्य होना चाहिये, उनके मातहत, मुनियों की एक कौन्सिल होनी चाहिए।

सर्वसम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(४) सब गच्छों का मुख्य नाम, श्री सुधर्मागच्छ होना चाहिये। उपनाम जो-जो हों वही रहें। (सर्व-सम्मति से स्वीकार किया गया।)

(५) किसी का साधु, यदि क्लेश करके आ गया हो, तो उसे समझा कर फिर वहीं भेज देना चाहिए, अपने पास न रखना चाहिये। (यह भी सर्वसम्मति से मजूर किया गया।)

(६) मुनियों को, आर्याओं के मकान में जाना और बैठना नहीं। यदि, कारणवश जाना पड़े; तो बिना श्रावक और श्राविका की मौजूदगी के वहां न ठहरें। इसी प्रकार से आर्याओं के विषय मे भी समझें। (सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव भी स्वीकार हुआ।)

(७) प्रत्येक प्रान्त मे, एक स्थविर साधुशाला होनी चाहिये। सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(८) एक सम्प्रदाय से निकले हुए साधु को दूसरा कोई साधु दीक्षित न करे। (यह प्रस्ताव भी सर्व सम्मति से पास हुआ।)

(९) साधु व आर्याएं, फोटो न खिचवावें।

सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव इस रूप में पास हुआ, कि उदीरणा करके अपनी मान-प्रतिष्ठा के लिए फोटो न खिचवावें। यदि. वेष प्रचारार्थ किसी का फोटो हो, तो बात दूसरी है। लेकिन, श्रावकों व सज्जनों को चाहिए, कि उसकी पूजा न करें। क्योंकि, वह केवल लिबास की यादगार के तौर है। (आखरी निर्णय के लिए वृहत्-सम्मेलन में रक्खा जाय।)

(१०) भरडे पकरण, गृहस्थ के देकर अन्य नगर न पहुँचाये जावें। (सर्व सम्मति से यह भी स्वीकृत हुआ)

(११) सब गच्छों की श्रद्धा-प्ररूपणा एक होनी चाहिये। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव वृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।)

(१२) जहां तक हो सके, स्वदेशी वस्त्र ही लेने चाहियें। (सर्वसम्मति से पास. वृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय)

[मुनि श्री खुशरदयालजी के शिष्य मुनि श्री दुर्गादासजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) क्या श्री भगवान महावीर के सिद्धान्तों का सन्देश, प्रत्येक मनुष्य तक पहुँचाना आवश्यक है? (सर्व सम्मति से निश्चित हुआ. कि पहुँचाना जरूरी है।)

(२) अगर जरूरी है तो वह सन्देश कैसे पहुँचाया जा सकता है? (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि तहरीर व तकरीर द्वारा।)

(३) प्रत्येक श्रावक-श्राविका के लिए रात्रि-भोजन का त्याग निहायत जरूरी है। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि सभी साधु तथा आर्याओं को चाहिये, कि इस विषय पर उपदेश करते रहें।)

(४) जिन साधु का अपने शहर में चातुर्मास करवाना हो, उस गच्छ की स्वीकृति के बिना न करवाया जावे। (सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि वृहत्साधु-सम्मेलन में यह प्रस्ताव रक्खा जाय।)

(५) पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज का वार्षिक-दिवस, आषाढ़ कृष्णा २ को मनाना चाहिये। (सर्व सम्मति से स्वीकृत।)

(६) तीन वर्ष में. प्रत्येक प्रांत का साधु-सम्मेलन होना चाहिये और दस वर्ष के पश्चात् वृहत्साधु-सम्मेलन होना चाहिये। (सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि वृहत्साधु-सम्मेलन में यह प्रस्ताव रक्खा जाय।)

(७) जो वर्तमान आचार्य हों, उनका वार्षिक पाटमहोत्सव होना चाहिये। (सर्व-सम्मति से स्वीकृत।)

(८) मुनि पाठशाला, पंजाब में शीघ्र स्थापित होनी चाहिये। (सर्वसम्मति से पास हुआ, कि शीघ्र स्थापित होनी चाहिये।)

[मुनि श्री नरपतरायजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) अन्य प्रांतों के साधु यदि किसी प्रांत में आवें, तो जिस शहर में मुनि-महाराज विराजमान हों, उनकी परीक्षा और स्थानीय-मुनियों की स्वीकृति के बिना उनका व्याख्यान न होना चाहिए। (निश्चित हुआ, कि यह प्रस्ताव महा-सम्मेलन में रक्खा जाय।

(२) जो मुनि गच्छ से बाहर हों या शिथिलाचारी हों, उनका कोई गृहस्थ आदर-सत्कार न करे और न चातुर्मास, तथा व्याख्यान ही करवावें। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि यह भी महासाधु-सम्मेलन में रक्खा जाय।)

(३) पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय का जो कोई साधु अलग घूमता हो और मुनियों के समझाने से न समझता हो, तथा जिसके कारण संघ एवं धर्म की हानि होती हो, उसका इन्तजाम श्रावक वर्ग को शीघ्रातिशीघ्र करना चाहिये। (सर्व सम्मति से पास)

[मुनि श्री सोभचन्द्रजी महाराज का प्रस्ताव]

(१) दीक्षा किस आयु वाले को दी जावे ? (निश्चित हुआ, कि यह भी महा-सम्मेलन में रक्खा जाय।)

[मुनि श्री रामस्वरूपजी महाराज के प्रस्ताव]

(१) आल इण्डिया मुनि-सम्मेलन के लिए चुनाव होना चाहिये। (सर्व-सम्मति से स्वीकृत।)

(२) समस्त गच्छों के आचार्यों की श्रद्धा-प्ररूपणा अवश्य एक ही होनी चाहिये, जिसमें जनता को धर्म के भिन्न २ रूप न मालूम हो। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(३) वर्तमान-सूत्रों के आधार पर एक ऐसा ग्रन्थ तैयार होना चाहिये, जिससे अजैन भी सुगमतापूर्वक लाभ उठा सकें। सर्व-सम्मति से पास हुआ, बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(४) व्याख्यानदाताओं के लिए, एक ऐसी पुस्तक तैयार होनी चाहिये, जिसके आधार पर व्याख्यानदाता एक ही श्रेणी का उपदेश दे सकें। (सर्व-सम्मति से पास हुआ, कि बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।)

(५) प्रत्येक मुनि को, कम-से-कम आधा घण्टा प्रतिदिन ध्यान करना चाहिये। (यह भी सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ।)

(६) पांच-सात ऐसे मोटे २ नियम या विषय चुन लेने चाहियें, जो श्री जैन-धर्म में खास महत्त्व रखते हो। जैसे कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ब्रह्मचर्य आदि जिनके द्वारा धर्म का प्रचार सामान्य मुनि भी कर सकें साथ ही, उन्हें खास खास और विषयों की भी शिक्षा दी जावे। (सर्व सम्मति से यह पास हुआ, कि मुनि श्री उपाध्यायजी के बनाये हुए ६ ७ भागों को, मुनियों को अच्छी तरह पढ़ लेना चाहिये।)

(७) जैन धर्म, केवल जातिगत धर्म न होना चाहिये। (यह निश्चित हुआ, कि घृणा हमारे पास नहीं है। क्योंकि यह मोहनीय कर्म प्रकृति है। लेकिन नफरत को छोड़, समयानुकूल विवेक से वर्तना चाहिए। यह प्रस्ताव भी बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय)।

[श्री गणीजी महाराज का प्रस्ताव]

(१) भविष्य में, यदि संयम की वृद्धि करने वाले आचार-व्यवहार की भी कोई नई व्यवस्था रची जावे, तो बड़े साधु-सतियों की सर्वानुमति के विना न रची जावे और न उसका व्यवहार ही किया जावे, जिससे संघ में किसी प्रकार का भेद पैदा न हो। (सर्वानुमति से स्वीकृत)

[प्रवर्तक मुनि श्री विनयचन्द्रजी महाराज का प्रस्ताव]

(१) जो श्रावक लोग वन्दना करते हैं, उन्हें प्रत्युत्तर में एक ऐसा शब्द कहना चाहिये, जो सर्वदेशीय और धर्म ध्यान के प्रति द्योतक हो। इसलिए, मेरे विचार से, वन्दना करने वाले के प्रति धर्म-वृद्धि कहना चाहिये। (सर्व-सम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ, कि श्रावक लोगों की वन्दना के प्रत्युत्तर में दया पालो या धर्म-वृद्धि, ये दो शब्द कहे जायं। (यह प्रस्ताव बृहत्-सम्मेलन में रक्खा जाय।)

(२) मुनियों के नामों के साथ प्रत्येक मुनि के नाम से पूर्व 'मुनि' शब्द होना चाहिये। (सर्व सम्मति से पास हुआ, कि मुनियों के नाम से पूर्व मुनि शब्द लगाया जाय, जैसे कि—प्रवर्तक मुनि श्री विनयचन्द्रजी आदि।)

[मुनि श्री नेकचन्द्रजी महाराज का प्रस्ताव]

(१) सब मुनियों को, अपने गुरु और आचार्य आदि पदधारियों की आज्ञानुसार वृद्ध रोगी और निराधारों की सेवा करनी चाहिये। (सर्वानुमति से मन्जूर हुआ।)

गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज का प्रस्तावः—

(१) यदि बृहत् साधु-सम्मेलन में संवत्सरी आदि का प्रस्ताव सर्व सम्मति से न हो सके, तो क्या किया जाय? (निश्चित हुआ कि यदि सर्व सम्मति से न हो सके, तो बहु सम्मति को स्वीकार किया जाय।)

अन्त में, सर्व-मुनि-मण्डल की ओर से, पंजाब प्रान्त की बिरादरियों को निम्नलिखित सन्देश दिया गया :—

"जिस प्रकार हमारी सब तरह से एकता हो गई है, पत्री-पत्र आदि की धर्म तिथियां एक हो गई हैं, उसी प्रकार से आप लोगों को भी उचित है कि पारस्परिक वैमनस्य-भाव को छोड़ कर, धर्म क्रियाओं में एकता धारण करें, जिससे धर्म और प्रेम की वृद्धि हो।

धन्यवाद!

मैं, आलइण्डिया श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन-कॉन्फरन्स के (आचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के पास) भेजे हुए डेप्युटेशन की योग्यता और दीर्घदर्शिता की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता, जिसने हमारे गच्छ से एकता स्थापित करवा दी और इस महान् कार्य को प्रारम्भ करके, प्रत्येक प्रान्त में जागृति पैदा करवा दी।

इसके अतिरिक्त, श्री आचार्य महाराज का जितना गुणानुवाद किया जाय कम है, क्योंकि आप श्री ने ही डेप्युटेशन की प्रार्थना पर टीप के अनुसार गच्छ को चलने की आज्ञा देकर शान्ति की स्थापना करवा दी।

साथ ही गणावच्छेदक मुनि श्री लालचन्द्रजी महाराज, गणावच्छेदक तथा स्थविरपद विभूषित स्वर्गस्थ मुनि श्री गणपतिरायजी महाराज, स्थविरपद विभूषित स्वर्गवासी श्री जवाहिरलालजी महाराज, स्थविरपद विभूषित मुनि श्री छोटेलालजी महाराज तथा प्रवर्तिनीजी पार्वतीजी आदि समस्त गच्छ के मुनियों तथा आर्याओं को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने श्री आचार्य महाराज से, डेप्युटेशन की प्रार्थना को स्वीकृत करते हुए, आज्ञा मंगवानी शुरू (प्रारम्भ) कर दी। जिससे आज पूज्य श्री मुनि अमरसिंहजी महाराज का गच्छ एक रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। राजकोट तथा पाली मुनि-मण्डल को धन्यवाद देना अत्यन्त आवश्यक समझता हूँ, कि जिन्होंने अजमेर साधु-सम्मेलन को सरल तथा सार्थक बनाने में प्रान्तीय-सम्मेलन करके पूरा-पूरा सहयोग दिया है।

अन्त में यहां उपस्थित प्रवर्तक मुनि श्री विनयचन्द्रजी, उपाध्याय मुनि श्री आत्मारामजी, मुनि श्री नेकचन्द्रजी, मुनि श्री खुशालचन्द्रजी, युवाचार्य मुनि श्री काशीरामजी, पं० मुनि श्री नरपतरायजी, पं० मुनि श्री रामस्वरूपजी आदि मुनियों का और गणावच्छेदक मुनि श्री छोटेलालजी, प्रवर्तक मुनि श्री बनवारीलालजी (जिन्होंने अपना एक सम्मति-पत्र उपाध्यायजी को देकर इस कार्य की पूर्ति की) साथ ही प्रवर्तिनी आर्या श्री पार्वतीजी (जिन्होंने अपना एक सम्मति पत्र उपाध्यायजी के हाथ मुनि-मण्डल होशियारपुर में भेजा) तथा आचार्य महाराज (जिन्होंने अपनी ओर से युवराज मुनि श्री काशीरामजी को यहां भेजा) एवं गणावच्छेदक श्री लालचन्द्जी महाराज (जिन्होंने

अपनी ओर से मुनि श्री नेकचन्दजी तथा प० मुनि श्री रामस्वरूपजी को भेजा) गणावच्छेदक मुनि श्री जयरामदासजी तथा प्रवर्तक मुनि श्री शालिग्रामजी (जिन्होंने उपाध्यायजी को होशियारपुर मुनि-सम्मेलन में पधारने की आज्ञा दी) आदि को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि यह सब उन्हीं महानुभावों की कृपा का फल है, जो आज होशियारपुर मुनि-सम्मेलन, आनन्दपूर्वक अपने कार्य को सफल कर सका है। (ह० गणि उदयचन्दजी—अध्यक्ष)

साम्प्रदायिक-सम्मेलन

स० १९८८ वैशाख कृष्णा ६ बुधवार से लीम्बडी (मोटा) सम्प्रदाय का साधु-सम्मेलन हुआ। मुनिवर ठा० २२ पधारे थे।

गुर्जर श्रावक-समिति की बैठक भी यहां लीम्बडी में ही ता० २५, २६, २७ मई सन् १९३२, वैसाख कृ० ६, ७, ८ बुध-गुरु-शुक्रवार को हुई।

स० १९८९ ज्येष्ठ शु० ५ गुरुवार से इन्दौर में ऋषि-सम्प्रदाय का सम्मेलन हुआ और बिखरी हुई सम्प्रदाय ने ८० वर्ष बाद आगमोद्धारक, बा० ब्र० अमोलख ऋषिजी म० सा० को आचार्य पद दिया। मुनिराज ठा० १४ पधारे थे। शेष के सन्देश और प्रतिनिधित्व प्राप्त थे। कार्यवाही के साथ १०५ प्रस्ताव पास किये।

ता० २६-२-३३ से पूज्य श्री मुन्नालालजी म० सा० की सम्प्रदाय का सम्मेलन भीलवाड़ा में हुआ। मुनि ठा० ३६ सम्मिलित हुए थे। पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म० सा० ठा० ६ भी इस अवसर पर पधारे थे। तीन दिन की कार्यवाही मे प्रगतिशील ११ प्रस्ताव पास किये गये।

दरियापुरी-सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों का सम्मेलन ता० ५, ६ दिसम्बर सन् १९३२, स० १९८९ मिगसर शु० ८, ९ सोम-मगलवार को कलोल मे हुआ। मु० ठा० १५ और महासतियाँ ठा० ११ की तथा श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में ३५ प्रस्ताव हुये।

ऋषि-सम्प्रदायी सन्त सम्मेलन प्रतापगढ़ (मालवा) मे स० १९८९ पोष कृ० से हुआ। महासतीजी ठा० तथा मार्गदर्शन के लिये पूज्य श्री आदि ठा० १६ भी उपस्थित थे। कुल १५ प्रस्ताव पास किये।

जमनापार के पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की सम्प्रदाय के मुनिवरों ने महेन्द्रगढ मे सम्मिलित होकर पूज्य श्री मोतीरामजी म० सा० को आचार्यपद दिया।

कच्छ आठ कोटी मोटीपक्ष का सम्मेलन मांडवी मे स० १९८९ पौष शु० १५ मगलवार को किया। ३८ प्रस्ताव पास करके वैमनस्य मिटाकर सगठित हुए।

श्रावकों की साधु-सम्मेलन मे उत्साहवर्धक कार्यवाही :—

(१) प्रान्तीय और साम्प्रदायिक साधु-सम्मेलनों को प्रेरणा और मार्गदर्शन दिया।

(२) जो २ साधु-सम्मेलन हुये, उनकी सुदृढ़ता के लिये श्रावक-समितियों का भी निर्माण कराया।

(३) प्रान्त २ मे उत्साह जगाने के लिये तथा साधु-सम्मेलन समिति के श्रावकों को सतत् जागृत और कर्तव्य परायण रखने के लिये भिन्न २ स्थान पर १४ बैठकें कीं।

(४) भारत व्यापी दौरा करने के लिये चार डेप्युटेशन बनाये जिनमें बड़े २ अग्रेसर श्रावकों ने लम्बे तक साथ दिया।

(५) सम्मेलन के समय अशांति के प्रसग को रोककर अनुकूल वातावरण फैलाने के लिये ६ सज्जनों और २ मंत्रियों की 'श्री साधु-सम्मेलन सरक्षक समिति' बनी। जिसने अजमेर साधु-सम्मेलन के दिनों में समय २ पर पांच बैठकें कीं और जाहिर निवेदनों द्वारा शांति का प्रयत्न किया।

उपरोक्त प्रत्येक प्रवृत्तियों में मंत्रीजी स्व० धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी की तथा सहमंत्री श्री धीरजलाल के० तुरखिया उपस्थित रहते थे और प्रेरणा देते थे। आवश्यकता पड़ने पर श्रीमान् सरदारमलजी सा० छाजेड़ ने भी सहमन्त्री पद का भार सभाला।

अजमेर सम्मेलन को सफल बनाने के लिये अजमेर के उत्साही युवक भाइयों ने तथा श्रीसघ ने काफी परिश्रम किया। देश २ के अग्रेसरों ने अजमेर मे एक २ मास पूर्व अपना निवास बना लिया। और तन, मन, धन का भोग दिया।

अ० भा० श्वे० स्था० साधु-सम्मेलन, अजमेर

जैन समाज के ही नहीं, अपितु आर्यावर्त के इतिहास में अजर-अमर पुरी अजमेर का साधु-सम्मेलन एक चिरस्मरणीय और उज्ज्वल प्रसग बना रहेगा। श्रमण भगवान महावीर के निर्वाण के बाद सबसे प्रथम पटना में, बाद में लगभग ३०० वर्ष के मथुरा में और वीर-सवत् ६८० में काठियावाड़ की राजधानी वल्लभीनगरी मे श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के नेतृत्व में जैन साधुओं का बृहत् साधु-सम्मेलन होने का और जैन सूत्र-सिद्धान्त लिपि-बद्ध करने का ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध होता है।

वल्लभी के बाद आज लगभग १५०० वर्ष बाद समस्त आर्यावर्त के स्थानकवासी जैन-समाज के सभी गच्छ, सम्प्रदाय, उप-सम्प्रदाय आदि के पूज्य और पडित मुनिराज एकत्रित हुए जिन्होंने जैन-समाज के उत्थान के लिए और ज्ञान, दर्शन, चारित्र की श्रीवृद्धि के लिए, विचार-विनिमय करके एक विधान बनाने का शुभनिश्चय प्रकट कर अजमेर के इस सम्मेलन का ऐतिहासिक रूप प्रदान कर दिया। इस सम्मेलन की शुरूआत ता० ५-४-३३ से अजमेर मे हुई, जिसमे २२५ मुनिराजों ने भाग लिया। सम्मेलन ता० १६-४-३३ तक चला।

सम्मेलन में पधारने के लिए हमारे इन त्यागी मुनिराजों ने सैकड़ों मीलों का प्रवास किया था और नाना परिषहों को सहन करते हुए वे अजमेर पधारे थे। यहां हम विस्तार-भय से आने वाले सभी मुनिराजों का नाम न देकर केवल उनकी सख्या और प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम ही प्रकट कर रहे हैं।

१ पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय (दरियापुरी)

इस सम्प्रदाय में मुनि २० और आर्याजी ५६ = कुल सख्या ७६ साधु-सन्त थे, जिनमें से ७ सन्त अजमेर पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराज ४ थे जिनके नाम इस प्रकार हैं :—

१. पं० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म०, २. प० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म०, ३. प० मुनि श्री सुन्दरजी म०, ४. प० मुनि श्री आपचन्द्रजी म०।

ये सन्त वीरगाम से लगभग ३२५ मील का विहार कर अजमेर पधारे थे।

२ खंभात-सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय में मुनि ८ आर्याजी १० = कुल संख्या १८ साधु साध्वी थे। जिनमे से ५ मुनिराज सम्मेलन में आये थे। प्रतिनिधि मुनियों के नाम इस प्रकार हैं :—

१ पूज्य श्री छगनलालजी म०, २ पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० ।

ये सन्त अहमदाबाद से लगभग ३०० मील का विहार कर पधारे थे।

३ लींबड़ी (छोटी) सम्प्रदाय

मुनि २६ आर्याजी ६६=कुल संख्या ६५। सम्मेलन में ११ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम इस प्रकार हैं:—

१ तपस्वी मुनि श्री शामजी म०, २. शता० पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म०, ३. कविवर्य पं० मुनि श्री नानचन्द्रजी म०, ४. पं० मुनि श्री पूनमचन्दजी म० ।

ये सन्त लींबडी से लगभग ४२५ मील का विहार कर पधारे थे।

४ लींबड़ी (नानी) सम्प्रदाय

मुनि ७ आर्याजी १६=कुल संख्या २६ । सम्मेलन में २ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराज ये थे—प० मुनि श्री मणिलालजी म० ।

ये सन्त लींबडी से लगभग ४२५ मील का विहार करके पधारे थे ।

५ गौंडल-सम्प्रदाय

मुनि २०, आर्याजी ६६=कुल संख्या ८६ । सम्मेलन में २ मुनिराज पधारे थे जिनमें से प्रतिनिधि ये थे:—
१. प० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म० ।

आप आबू तक ही पधार सके। पांव की तकलीफ से आगे आपका विहार न हो सका।

६ बोटाद-संप्रदाय

मुनि १०, आर्याजी नहीं =कुल संख्या १० । सम्मेलन में ३ मुनिराज पधारे थे। जिनमें से प्रतिनिधि ये थे :—प० मुनि श्री माणकचन्दजी म० ।

ये सन्त पालियाद से लगभग ४६० मील का विहार कर पधारे थे।

७ सायला-संप्रदाय

मुनि ४ आर्याजी नहीं = कुल संख्या ४। इस सम्प्रदाय के साधु सम्मेलन में नहीं पधारे थे। परन्तु अपना प्रतिनिधित्व बोटाद-सम्प्रदाय के प० मुनि श्री शिवलालजी म० को दिया था।

८ आठ-कोटि (मोटी पक्ष) संप्रदाय

मुनि २२, आर्याजी ३६ = कुल संख्या ५८। सम्मेलन में ३ सन्त पधारे थे और तीनों ही प्रतिनिधि ये थे :—

१ युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी म०, २ प मुनि श्री चतुरलालजी म०, ३. मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० ।

ये सब कांडाकरा (कच्छ) से लगभग ५५० मील का विहार कर पधारे थे।

९ पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ६५, आर्याजी ११०=कुल संख्या १७५ । सम्मेलन में ४१ सन्त पधारे थे प्रतिनिधि ये थे :—

१. पूज्य श्री जवाहरलालजी म० ।

आपके साथ चार सलाहकार मुनिराज भी पधारे थे। आप जोधपुर से १५० मील का विहार कर पधारे थे।

१० पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ४४, आर्याजी ३१ = कुल संख्या ७५। सम्मेलन में २७ मुनिराज पधारे थे। जिनमें से प्रतिनिधि मुनिराज इस प्रकार थे :—

१. पूज्य श्री मन्नालालजी म०, २. प्र० व० प० मुनि श्री चौथमलजी म०, ३ प० मुनि श्री शेषमलजी म०।

पूज्य श्री मन्नालालजी म० मन्दसौर से लगभग १६० मील का विहार कर डोली में पधारे थे। प्र० व० चौथमलजी म० मनमाड से ६०० मील का विहार कर पधारे थे।

(११) पूज्य श्री नानक रामजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ५, आर्याजी १० = कुल संख्या १५। सम्मेलन में ४ मुनिराज पधारे थे, जिनमें से २ प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—

१. प्रवर्त्तक मुनि श्री पन्नालालजी म०, २ पं० मुनि श्री हगामीलालजी म०।

विहार किशनगढ़ से १६ मील।

१२ पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ५, आर्याजी १२ = कुल संख्या १७। सम्मेलन में ५ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम ये हैं :—

१. प्रवर्तक मुनि श्री फतहलालजी महाराज, २. पं० मुनि श्री छगनलालजी म०। विहार पीह (मेरवाड़) से १५ मील।

१३ पूज्य श्री रतनचंद्रजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ६, आर्याजी ३८ = कुल संख्या ४७। सम्मेलन में ८ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम इस प्रकार हैं :—

१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, २. पं० मुनि श्री भोजराजजी म०, ३ पं० मुनि श्री चौथमलजी म०। विहार रतलाम से २५० मील।

१४ पूज्य श्री ज्ञानचंद्रजी महाराज की संप्रदाय

मुनि १३, आर्याजी १०५ = कुल संख्या ११८। सम्मेलन में १० मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनियों के नाम इस प्रकार हैं :—

१ प० मुनि श्री पूरणमलजी म०, २. प० मुनि श्री इन्द्रमलजी म०, ३ पं० मुनि श्री मोतीलालजी म० ४. प० मुनि श्री सिरेमलजी म०, ५ प० मुनि श्री समरथमलजी म०।

१५ पूज्य श्री मारवाडी चौथमलजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ३, आर्याजी १५ = कुल संख्या १८। प्रतिनिधि मुनिराज इस प्रकार हैं :—

१. प० मुनि श्री चांदमलजी म० (पू० श्री जयमलजी म० की सम्प्रदाय के), २. प० मुनि श्री रूपचन्दजी म०। विहार सोजत रोड से ७५ मील।

१६ पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ६, आर्याजी ८१ = कुल सख्या ६० । सम्मेलन मे ७ मुनिराज पधारे थे, जिनमे से प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम इस प्रकार हैं :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री दयालचन्द्रजी म०, (२) प० मुनि श्री ताराचन्दजी म०, (३) प० मुनि श्री हेमराजजी म०, (४) प० मुनि श्री नारायणदासजी महाराज। विहार समदड़ी से १४० मील।

१७ पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ४, आर्याजी १५ = कुल सख्या १६। सम्मेलन मे ४ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराज निम्न थे :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री धीरजलालजी म०, (२) मत्री मुनि श्री मिश्रीमलजी म०।

१८ पूज्य श्री जयमलजी महाराज की संप्रदाय

मुनि १३, आर्याजी ६० = कुल सख्या १०३। सम्मेलन मे ११ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनिराजों के नाम इस प्रकार हैं :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री हजारीमलजी म०, (२) प० मुनि श्री गणेशमलजी म०, (३) मत्री मुनि श्री चौथमल जी म०, (४) प० मुनि श्री वक्तावरमलजी म०, (५) पं० मुनि श्री चांदमलजी म०। विहार ब्यावर से ३२ मील।

१६ पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ८, आर्याजी ३५ = कुल सख्या ४३। सम्मेलन मे ४ मुनिराज पधारे थे। जिनमे से प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—

(१) प० मुनि श्री जोधराजजी म०, (२) प० मुनि श्री विरदीचदजी म०। विहार देवगढ़ से १०० मील।

२० पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ५, आर्याजी ११=कुल सख्या १६। सम्मेलन मे ५ मुनिराज पधारे थे। प्रतिनिधि मुनियों के नाम इस प्रकार हैं :—

(१) प० मुनि श्री भूरालालजी म०, (२) पं० मुनि श्री छोगालालजी म०। विहार पहुना (मेवाड़) से ६० मील।

२१ पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज की संप्रदाय

मुनि २४, आर्याजी ८१ =कुल सख्या १०५। सम्मेलन मे १६ सन्त पधारे थे। प्रतिनिधि मुनियों की नामावली इस प्रकार है :—

(१) पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म०, (२) तप० मुनि श्री देवजी ऋषिजी म०, (३) पं० मुनि श्री आनन्द-ऋषिजी म०, (४) आत्मार्थी मुनि श्री मोहन ऋषिजी म०, (५) प० मुनि श्री विनय ऋषिजी म०। विहार भोपाल, से ४१० मील।

२२ पूज्य श्री धर्मदासजी म० की संप्रदाय

मुनि १५, आर्याजी ७४ = कुल सख्या ८६। सम्मेलन में ६ मुनिराज पधारे थे। जिनमें प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—

(१) प्रवर्तक मुनि श्री ताराचन्दजी म०, (२) मुनि श्री किशनलालजी म०, (३) पं० मुनि श्री सौभाग्यमल जी म०, (४) प० मुनि श्री सूरजमलजी म० । विहार उज्जैन से २६६ मील ।

२३ श्री रामरतनजी महाराज की सम्प्रदाय

मुनि ३ आर्याजी २ = कुल सख्या ५ । सम्मेलन मे २ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनि ये थे :—
प० मुनि श्री धनसुखजी म० । विहार शाहपुरा से लगभग ६० मील ।

२४ पूज्य श्री दौलतरामजी म० (कोटा) की संप्रदाय

मुनि १३, आर्याजी २६ = कुल संख्या ३६ । सम्मेलन मे ७ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराज निम्न थे :—

(१) पं० मुनि श्री रामकुमारजी म०, (२) प० मुनि श्री गिरदीचन्दजी म०, (३) तपस्वी मुनि श्री देवीलालजी म० ।

विहार सवाई माधोपुर से १२५ मील । तपस्वी मुनि श्री देवीलालजी म० घोटी से ५८८ मील का विहार विहार कर अजमेर पधारे थे ।

२५ पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ७३, आर्याजी ६० = कुल १३३ । सम्मेलन मे २५ सन्त पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराजों की नामावली इस प्रकार है :—

(१) युवाचार्य मुनि श्री काशीरामजी म०, (२) गणि० मुनि श्री उदयचन्दजी म०, (३) उपाध्याय मुनि श्री आत्मारामजी म०, (४) पं० मुनि श्री मदनलालजी म०, (५) प० मुनि श्री रामजीलालजी म० ।

विहार रामपुरा (पजाब) से ४८० मील ।

२६ पूज्य श्री नाथूरामजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ७, आर्याजी १० = कुल सख्या १७ । सम्मेलन में २ सन्त पधारे थे और दोनों ही निम्न प्रतिनिधि थे :—

(१) प० मुनि श्री फूलचन्दजी म०, (२) पं० मुनि श्री कुन्दनमलजी म० । विहार मलेर कोटला से ४७५ मील ।

२७ पूज्य श्री मोतीलालजी महाराज की संप्रदाय

मुनि ७, आर्याजी नहीं = कुल सख्या ७ । सम्मेलन मे ४ मुनिराज पधारे थे । प्रतिनिधि मुनिराज ये थे :—(१) मुनि श्री पृथ्वीचन्दजी म० ।

अजमेर साधु-सम्मेलन में सकारण न पधार सकने वाले मुनिराज

१ गौंडल-सम्प्रदाय

मुनि २०, आर्याजी ६६ = कुल संख्या ८६ ।
प्रतिनिधि मुनि आबू तक आकर पैर की बीमारी से आगे न बढ़ सके ।

२ गौंडल-संघाणी-सम्प्रदाय

आर्याजी २५, मुनि नहीं । सम्प्रदाय में मुनि न होने से पधार न सके ।

३ बरवाला-संप्रदाय

मुनि ४, आर्याजी २० = कुल संख्या २४। सभी वृद्ध मुनि होने के कारण पधार न सके।

४ कच्छ आठ-कोटि (छोटी-नानी) पक्ष

मुनि १४, आर्याजी २५ = कुल संख्या ३ । शारीरिक कारण से न पधार सकेंगे। ऐसा पत्र आया।

इस सम्मेलन के समय समस्त भारतवर्ष में विचरण करने वाले स्थानकवासी जैन-साधुओं की संख्या ४६३ और आर्याजी की संख्या ११३२, कुल १५९५ साधु-साध्वियों की संख्या थी। एकल विहारी और संप्रदाय से बाहर सन्तों की संख्या अलग समझनी चाहिये।

इन मुनिराजों में से अजमेर-सम्मेलन के समय २३८ मुनिराजों की ओर ४० साध्वियों की उपस्थिति थी। प्रतिनिधि मुनिराज ७६ थे।

सम्मेलन लाखन कोठरी ममैयों के नोहरे में भीतरी चौक के वट-वृक्ष के नीचे हुआ था।

इस सम्मेलन के समय समस्त हिंद के कोने २ से दर्शनार्थियों का जन-समूह उमड पड़ा था। लगभग ५० हजार भाई-बहिन इस समय अजमेर में आये थे। इतने बड़े जन-समूह की व्यवस्था करना बड़ा कठिन काम था, फिर भी अजमेर संघ ने तथा सम्मेलन के संयोजकों ने जो व्यवस्था की थी वह अपूर्व ही थी।

अ० भा० स्था० जैन मुनि सम्मेलन का सं०-विवरण

प्रारम्भ ता ५-४-३३ समाप्ति ता. १९-४-३३

सम्मेलन में प्रतिनिधियों की बैठक

प्रस्तावना—अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी समाज में भिन्न २ बत्तीस ३२ सम्प्रदाय हैं। जिनमें कुल मुनियों की संख्या ४६३ और आर्याजी की संख्या ११३२ है। इनमें से २६ सम्प्रदायों के मुनिराज २४० की संख्या में उपस्थित हो सके थे। उनमें से निम्नोक्त ७६ मुनिराज अपनी २ सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व लेकर पधारे थे :—

(१) पूज्य श्री मन्नालालजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की स०), (२) पं० मुनि श्री खूबचन्दजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की स०), (३) प्र० व० पं० मुनि श्री चौथमलजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की सं०) (४) पं० मुनि श्री शेषमलजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की स०), (५) पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म० (ऋषि स०), (६) तप० मुनि श्री देवजी ऋषिजी म० (ऋषि स०), (७) प० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० (ऋषि स०) (८) प० मुनि श्री मोहन ऋषिजी म० (ऋषि स०), (९) प० मुनि श्री विनय ऋषिजी म० (ऋषि स०), (१०) प० मुनि श्री पूर्णमलजी म० (पू० श्री ज्ञानचन्दजी म० की स०), (११) प० मुनि श्री इन्द्रमलजी म० (पू० श्री ज्ञानचन्दजी म० की स०), (१२) प० मुनि श्री श्रेयमलजी म० (पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० की स०), पं० मुनि श्री समर्थमलजी म० (पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० की स०), (१४) प० मुनि श्री मोतीलालजी म० (पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म० की सं०), (१५) प० मुनि श्री ताराचन्दजी म० (पूज्य श्री माधव मुनिजी म० की सं०), (१६) प० मुनि श्री किशनलालजी म० (पूज्य माधव मुनिजी म० की स०), (१७) प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (पूज्य माधव मुनिजी म० की सं०), (१८) प० मुनि श्री सूरजमलजी म० (पूज्य माधव मुनिजी म० की स०), (१९) प० मुनि श्री धनसुखजी म० (पूज्य श्री रामरतनजी म० की स०) (२०) प० मुनि श्री छोगालालजी म० (पूज्य श्री शीतलदासजी म० की सं०), (२१) प० मुनि श्री भूरालालजी म० (पू० श्री शीतलदासजी म० की सं०), (२२) पूज्य श्री हस्तीमलजी म० (पूज्य श्री रतनचन्दजी की सं०), (२३) प० मुनि श्री भोजराजजी म० (पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की स०), (२४) प० मुनि श्री चौथमल.

म० (पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की सं०) (२५) पं० मुनि श्री पृथ्वीचन्द्रजी म० (पूज्य श्री मोतीलालजी, म० की सं०) (२६) गणी श्री उदयचन्दजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (२७) उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (२८) युवाचार्य श्री काशीरामजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (२९) पं० मुनि श्री मदनलालजी म० (पूज्य श्री सोहनलालजी म० की सं०), (३०) पं० मुनि श्री रामजीलालजी म० (पूज्य श्री मोहनलालजी म० की सं०) (३१) पूज्य श्री जवाहरलालजी म० (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की सं०), (३२-३५)—चार सलाहकार (पू० श्री हुक्मीचन्दजी म० की सं०), (३६) पं० मुनि श्री माणकचन्दजी म० (बोटाद-सम्प्रदाय), (३७) पं० मुनि श्री शिवलालजी म० (सायला सं०), (३८) शास्त्रज्ञ श्री मणिकलालजी म०, (लींबडी नानी सं०), (३९) पं० मुनि श्री पूनमचन्दजी म० (लींबडी नानी सं०), (४०) तपस्वी मुनि श्री शामजी स्वामी (लींबडी मोटी-सं०), (४१) शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (लींबडी मोटी सं०), (४२) कविवर्य पं० मुनि श्री नानचन्द्र जी म० (लींबडी मोटी-सं०), (४३) पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (अवधानी) (लींबडी मोटा-सं०), (४४) पूज्य श्री छगनलालजी म० (खंभात-सं०), (४५) पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (खंभात सं०), (४६) पं० मु० श्री पुरुषोत्तमजी म० (दरियापुरी सं०), (४७) पं० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म० (दरियापुरी सं०), (४८) पं० मुनि श्री सुन्दरलालजी म० (४९) पं० मुनि श्री आपचन्दजी म० (दरियापुरी सं०), (५०) युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी म० (आठ कोटी मोटी पक्ष), (५१) पं० मुनि श्री चतुरलालजी म० (आठ कोटी मोटी पक्ष), (५२) पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (आठ कोटी मोटी पक्ष), (५३) प्रवर्तक श्री दयालचन्द जी म० (पूज्य श्री अमरसिंहजी म० की सं०), (५४) पं० मुनि श्री ताराचन्दजी म० (पू० श्री अमरसिंहजी म० की सं०), (५५) पं० मुनि श्री हेमराजजी म० (पू० श्री अमरसिंहजी म० की सं०), (५६) पं० मुनि श्री नारायणदासजी महाराज (पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय) (५७) पं० मुनि श्री हजारीमलजी म० (पू० श्री जयमल्लजी म० की सं०), (५८) पं० मुनि श्री गणेशमलजी म० (पू० श्री जयमल्लजी म० की सं०), (५९) पं० मुनि श्री चौथमलजी म० (पूज्य श्री जयमल्लजी म० की सं०), (६०) पं मुनि श्री बख्तावरमलजी म० (पूज्य श्री जयमल्लजी म० की सं०), (६१) पं० मुनि श्री चेनमलजी म० (पू० श्री जयमल्लजी म० की सं०), (६२) पं० मुनि श्री धैर्यमलजी म० (पू० श्री रघुनाथजी म० की सं०), (६३) पं० मुनि श्री मिश्रीलालजी म० (पू० श्री रघुनाथजी म० की सं०), (६४) पं० मुनि श्री फतेहलालजी म० (पू० श्री स्वामीदासजी म० की सं०), (६५) पं० मुनि श्री छगनलालजी म० (पू० श्री स्वामीदासजी म० की सं०), (६६) पं० मुनि श्री पन्नालालजी म० (पू० श्री नानकरामजी महाराज की सं०) (६७) पं० मुनि श्री हगामीलालजी म० (पू० श्री नानकरामजी म० की सं०) (६८) पं० मुनि श्री चांदमलजी म० (पूज्य श्री चौथमलजी म० की सं०), (६९) पं० मुनि श्री रूपचन्दजी म० (पूज्य श्री चौथमलजी म० की सं०) (७०) पं० मुनि श्री फूलचन्दजी म० (पूज्य श्री नाथुरामजी म० की सं०), (७१) पं० मुनि श्री कुन्दनमलजी म० (पूज्य श्री नाथुरामजी म० की सं०), (७२) पं० मुनि श्री जोधराजजी म० (पूज्य श्री एकलिंगदास जी म० की सं०), (७३) पं० मुनि श्री वृद्धिचन्द्रजी म० (पूज्य श्री एकलिंगदासजी म० की सं०), (७४) पं० मुनि श्री रामकुमारजी म० (पूज्य श्री दौलतरामजी म० कोटा सं०), (७५) पं० मुनि श्री वृद्धिचन्दजी म० (पूज्य श्री दौलतरामजी म० कोटा सं०) (७६) पं० मुनि श्री देवीलालजी म० (पूज्य दौलतरामजी म० कोटा सं० ।

उपर्युक्त ७६ मुनिराजों की बैठक समान आसन पर गोलाकार रूप में हुई थी। मध्य में हिन्दी और गुजराती के लेखक मुनिराज विराजमान थे। वक्ता मुनिराज अपने अपने स्थान पर ही खड़े होकर अपने विचार प्रकट करते थे। इन प्रतिनिधि मुनिराजों की सभा में शान्तिरक्षा के लिए गणी श्री उदयचन्द्रजी म० तथा शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० को शांतिरक्षक चुना गया था। हिंदी लेखक श्री उपाध्यायजी आत्मारामजी म० और

गुजराती लेखक लघु शतावधानी श्री सौभाग्यचन्द्रजी म० नियुक्त किये गये थे। दोनों के सहायक के रूप में मुनि श्री मदनलालजी म० तथा विनय ऋषिजी महाराज चुने गये थे। कार्यवाही प्रारम्भ होने से पूर्व शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० का मगलाचरण होता था। सम्मेलन का कार्य-क्रम सरल बनाने के लिये निम्नोक्त २१ मुनिराजों की एक विषय निर्धारि ी समिति का सर्वानुमति से चुनाव किया गया था जो सभा मे पेश किए जाने वाले विचारणीय विषयों का निर्णय करती थी।

(१) गणी श्री उदयचन्दजी म०, (२) पू० श्री अमोलक ऋषिजी म०, (३) प० मुनि श्री छगनलालजी म०, (४) उपाध्याय श्री आत्मारामजी म०, (५) प० मुनि श्री मणिलालजी म०, (६) प० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म०, (७) प० मुनि श्री श्यामजी म०, (८) प० मुनिश्री हर्षचन्द्रजी म०, (९) शतावधानी प० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म०, (१०) प्र० व० प० मुनि श्री चौथमलजी म०, (११) कविवर्य श्री नानचन्द्रजी म०, (१२) युवाचार्य श्री काशीरामजी म०, (१३) प० मुनि श्री ताराचन्दजी म०, (१४) प० मुनि श्री पन्नालालजी म०, (१५) पं० मुनि श्री चौथमलजी म०, (१६) प० मुनि श्री पृथ्वीचन्दजी म०, (१७) प० मुनि श्री कुन्दनलालजी म०, (१८) प० मुनि श्री समरथमलजी म०, (२०) पं० मुनि श्री मोहन ऋषिजी म०, (२१) पूज्य श्री हस्तीमलजी म०।

इस समिति का कोरम ११ का रखा गया था। प्रतिदिन प्रतिक्रमण के बाद रात्रि मे इस समिति की बैठक होती थी।

मुनि-सम्मेलन की कार्यवाही

प्रस्ताव १—(प्रतिनिधियों का निर्णय)

विभिन्न सम्प्रदायों को समान समाचारी से एक सूत्र मे ग्रथित करने के लिये और सम्मेलन द्वारा की हुई कार्यवाही को अमल मे लाने के लिए-२१ मुनियों की संख्या वाली सम्प्रदाय मे से १, बाईस से इक्कावन मुनियों की सख्यावाली सम्प्रदायों में से २, बावन से ८१ मुनिसंख्या वाली सम्प्रदायों मे से तीन और इससे अधिक मुनि संख्यावाली सम्प्रदायों में से चार प्रतिनिधि चुने जाय। इस क्रम से निम्नोक्त मुनि-समिति कायम की जाती है :—

सम्प्रदाय	प्रतिनिधि सख्या	नाम
(१) पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की सम्प्रदाय	४	१. पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज
		२ ,, ,, मुन्नालालजी महाराज आदि २
(२) " सोहनलालजी म० की "	४	१ युवा० श्री काशीरामजी महाराज
		२. गणी श्री उदयचन्दजी "
		३. उपा० श्री आत्मारामजी "
		४. प० मुनि श्री मदनलालजी "
(३) पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म० की ,,	२	१. पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज
		२. प० मुनि श्री आनद ऋषिजी म०
(४) खभात-संम्प्रदाय	१	१ पूज्य श्री छगनलालजी महाराज
(५) पूज्य श्री रतनचन्दजी म० की ,,	१	१. " श्री हस्तीमलजी "
(६) दरियापुरी-सं०	१	१. पं० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी "
(७) लींबडी-सं० (मोटा)	२	१. शता० श्री रतनचन्द्रजी महाराज
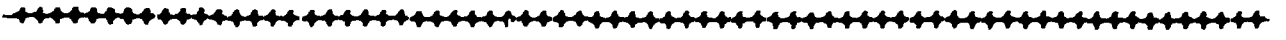
सम्प्रदाय	प्रतिनिधि संख्या	नाम
		२. कविवर्य श्री नानचन्द्रजी महाराज
(८) लींबडी (नानी) सं	१	१. पं० मुनि श्री मणिलालजी "
(९) कच्छ आठकोटी (मोटी पक्ष) सं०	२	१. युवा० श्री नागचन्द्रजी "
		२ प० मुनि श्री देवचन्दजी "
(१०) पूज्य श्री मोतीरामजी म० (जमनानगर) की सं०	१	१. पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्रजी "
(११) " जयमल्लजी महाराज की सम्प्रदाय	१	१ पं० मुनि श्री हजारीमलजी "
(१२) " रघुनाथजी "	१	१ " मिश्रीमलजी "
(१३) " चौथमलजी "	१	१ " शार्दूलसिंहजी "
(१४) " अमरसिंहजी "	१	१. " दयालचन्दजी "
(१५) " नानकरामजी "	१	१. " पन्नालालजी "
(१६) " स्वामीदासजी "	१	१. प० मुनि श्री फतेहचन्दजी "
(१७) " नाथूरामजी "	१	१. " फूलचन्दजी "
(१८) " धर्मदासजी "	३	१. पूज्य श्री ताराचन्दजी "
		२. प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी "
		३ " समर्थमलजी "
(१९) पूज्य श्री शीतलदासजी म० की सं०	१	१. " छोगलालजी "
(२०) " रामरतनजी म० "	१	१. " धनसुखजी "
(२१) " कोटा सं०	१	१ " रामकुमारजी "
(२२) " एकलिंगदासजी म० की सं०	१	१. " जोधराजजी "
(२३) " बोटाद सं०	१	१ " माणकचन्दजी "
(२४) " गोंडल सं०	१	१. " पुरुषोत्तमजी "
(२५) " सायला-सं०	१	१. " संघजी "
(२६) " बरवाला सं	१	१. " मोहनलालजी "

प्रस्ताव २—(अध्यक्ष व मन्त्री का चुनाव)

इन उपरोक्त ३८ मुनियों में से प्रांतानुसार निम्नोक्त पांच कार्यवाहक-मन्त्री और एक अध्यक्ष नियत किये जाते हैं :—

(१) गुजरात, काठियावाड़ और कच्छ के मन्त्री शता० पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० ।

(२) पजाब-प्रांत के मन्त्री—उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी म० ।

(३) दक्षिण-प्रात के मन्त्री—पं० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० ।

(४) मेवाड़, मालवा-प्रांत के मन्त्री—पू० श्री हस्तीमलजी म० ।

(५) मारवाड़ प्रांत के मन्त्री—प० मुनि श्री छगनलालजी म० ।

अध्यक्ष-पद पर पू० श्री सोहनलालजी म० नियुक्त किए गए ।

प्रस्ताव, ३—(प्रतिनिधि की योग्यता व कार्य)

(१) प्रत्येक सम्प्रदाय के समझदार-निष्पक्षपाती व न्याय दृष्टि वाले मुनि श्री को ही प्रतिनिधि चुनें

(२) साधु सम्मेलन मे प्रस्तावित प्रस्तावों का यथातथ्य पालन कराते हुए सम्प्रदाय में शांति का राज्य स्थापित करना और विशिष्ट कार्य हो तो मंत्री को सूचित करना प्रत्येक प्रतिनिधि का कर्तव्य है।

प्रस्ताव ४—(मन्त्री की योग्यता व कार्य)

(१) मन्त्री-प्रभावशाली-बुद्धिमान और कार्यदक्ष होने चाहिये।

(२) अपने प्रान्त की प्रत्येक सम्प्रदाय पर लक्ष्य रखते हुए प्रतिनिधियों को पूर्णरूप से मदद करना और कोई विशिष्ट कार्य हो तो पांचों मन्त्री मन्त्रणा करके निर्णय होवे वैसा कार्य करना मंत्री का कर्तव्य है।

प्रस्ताव ५—(अध्यक्ष की योग्यता व कार्य)

(१) अध्यक्ष-प्रभावशाली, प्रौढ़, अनुभवी-शास्त्रज्ञ देश-काल के जानकार और चारों तीर्थ पर वात्सल्य भाव रखने वाले होने चाहियें।

(२) समिति के प्रत्येक अंग का निरीक्षण करते रहना, परस्पर का संगठन कायम रखना और परस्पर प्रेम-वृद्धि का प्रयत्न करना।

(३) किसी भी सम्प्रदाय को समाचारी के नियम पालन के लिये अथवा प्रेमवृद्धि, शिक्षा इत्यादि कार्यों में सहायता की आवश्यकता हो तो उसका प्रबन्ध करना।

(४) सकल श्री संघ की उन्नति हो ऐसा कार्य मन्त्री द्वारा कराना और समाज में जागृति हो ऐसे उपाय करना अध्यक्ष का कर्तव्य है।

प्रस्ताव ६—(समिति का कार्य-क्षेत्र)

(१) इस साधु सम्मेलन में जो कार्यवाही हो उसके पालन करने पर अधिक लक्ष्य देना।

(२) उत्तरोत्तर सम्प्रदायों में परस्पर प्रेमवृद्धि, ऐक्य वृद्धि, व संगठन दृढ़ हो ऐसा प्रचार करना। भविष्य में इसका सम्मेलन ११ वर्ष मे भरने के लिये यथायोग्य प्रबन्ध करना।

(३) ज्ञान-प्रचारक मण्डल व दर्शन प्रचारक मंडल के हर एक प्रकार से सहायता करना और उनको सुदृढ़ बनाना।

(४) जैन-समाज के सामाजिक सुधार पर ध्यान रखते हुए जैनेतर समाज में जैनधर्म का प्रचार करना।

(५) इस समिति की बैठक प्रत्येक पांच वर्ष में भिन्न २ प्रांतों में करना जिसके लिए उपयुक्त स्थान तथा समय का निर्णय प्रतिनिधियों की सलाह लेकर अध्यक्ष कर सकते हैं।

नोट—कार्य विशेष प्रसंग उपस्थित होने पर इस अवधि के पूर्व भी प्रांतिक-सम्मेलन भरा जा सकता है।

(६) प्रांतीय सम्मेलन तथा बृहत्सम्मेलन का कोरम प्रतिनिधि संख्या के दो तृतीयांश भाग के अनुसार समझना। यदि कोई कारणवश न आ सके तो अन्य द्वारा अपना मत प्रदर्शित करना चाहिये। कार्यवाहक मन्त्री व अध्यक्ष की उपस्थिति तो कोरम में अनिवार्य है।

(७) समिति के प्रस्ताव यथाशक्य सर्वानुमति से या बहुमति से पास हो सकते हैं। यदि समान मत हों तो अध्यक्ष के दो मत लेकर बहुमत से प्रस्ताव पास किया जा सकता है।

(८) कोई भी सम्प्रदाय किसी भी अन्य सम्प्रदाय की निंदा या टीका टिप्पणी न करें।

(९) पांच वर्ष में प्रांतीय-सम्मेलन के पहले २ निकटवर्ती सम्प्रदायें मिल कर अपने गण की व्यवस्था करें बारह ही संभोग खुले करें।

प्रस्ताव ७—(दीक्षा-विषयक)

(१) दीक्षार्थी दीक्षा लेने से पूर्व अपने गुरु महाराज को ऐसा प्रतिज्ञापत्र लिख कर देवें कि 'मैं आपकी आज्ञा में ही संयम पालता हुआ विचरूंगा, आज्ञा बिना कोई काम करूंगा नहीं। मेरे पास जो शास्त्र, उपाधि इत्यादि हैं वे सब आपकी नेश्राय के हैं इसलिए जब तक सम्प्रदाय की और आपकी आज्ञा में रहूँगा तब तक उन पर मेरा अधिकार है।

(२) दीक्षा लेने वाले की आयु उत्सर्ग मार्ग में १६ वर्ष की निश्चित की जाती है। अपवाद मार्ग में तत्सम्प्रदाय के आचार्य श्री और जिन सम्प्रदाय में आचार्य न हों तो उसके कार्यवाहक पर छोड़ी जाती है।

(३) योग्य व्यक्ति को ही आचार्य अथवा कार्यवाहक श्रीसंघ की अनुमति से दीक्षा दे सकते हैं।

(४) अभ्यास-दीक्षार्थी को कम से कम साधु प्रतिक्रमण तो आना ही चाहिए।

(५) जाति—हम जिस जाति से आहार-पानी ले सकते हैं। ऐसे ही उच्च जातिवन्त को दीक्षा दे सकते हैं।

(६) भंडोपकरण—दीक्षा प्रसंग पर दीक्षार्थी के कल्पानुसार जितने वस्त्र-पात्र उपकरणादि लेने की आवश्यकता है उससे अधिक उसके निमित्त से लेना नहीं।

(७) दीक्षोत्सव—दीक्षा प्रसंग पर श्रावक वर्ग अधिक आडम्बर करे तथा दीक्षोत्सव एक दिन से अधिक करें उस निमित्त से अथवा तो तपोत्सव, लोचोत्सव, सम्वत्सरी क्षमापना—या मुनि दर्शन की आमन्त्रण-पत्रिका निकाले तो इन सब आडम्बरों को मुनिराज उपदेश द्वारा रोकें।

(८) पुनः दीक्षा—मुनि वेष में जिसने चौथे महाव्रत का भंग किया हो ऐसा सप्रमाण सिद्ध हो जाय तो उसका वेष लेकर सम्प्रदाय के बाहर कर सकते हैं। उसको अन्य सम्प्रदाय वाले दीक्षा न दें। कदाचित् उसका मन चारित्र मार्ग में पुनः स्थिर हो जाने का विश्वास हो जाय तो साम्प्रदायिक संघ की आज्ञा से उसी सम्प्रदाय में पुनः वह दीक्षा ग्रहण कर सकता है।

(९) अन्य सम्प्रदाय से कोई साधु या साध्वी आ जाय तो उसको समझा कर मूल सम्प्रदाय में भेज देवें—यदि सम्प्रदाय के अग्रेसर की आज्ञा प्राप्त हो जाय तो योग्यता देखकर अपना सम्प्रदाय की मर्यादानुसार उसको रख सकते हैं।

(१०) बिना किसी विशेष कारण के कोई साधु या साध्वी दीक्षा छोड़कर चला गया हो और फिर वह कहीं दीक्षा लेना चाहे तो उस सम्प्रदाय के आचार्य या कार्यवाहक की अनुमति लेकर पुनः दीक्षा दे सकते हैं। परन्तु अस्थिर दशा से दुबारा चारित्र छोड़ दे तो फिर उसको दीक्षा देना नहीं।

(११) किसी भी दीक्षार्थी को उसके संरक्षक या सम्बन्धियों की आज्ञा मिलने के पहले मुनिवेष पहनने की प्रेरणा करना नहीं, और उसको किसी प्रकार की सहायता भी करना नहीं। कदाचित् वह अपनी इच्छा से ही मुनिवेष धारण कर ले तो उसको कहीं भी अपने साथ रखना नहीं। आहार-पानी देना या दिलाना नहीं। जो कोई साधु या साध्वी इसके विरुद्ध आचरण करेगा तो उसको शिष्यहरण का प्रायश्चित आवेगा।

(१२) किसी भी अन्य सम्प्रदाय के दीक्षार्थी, शिष्य और शिष्या को अपनी सम्प्रदाय में लेने के लिये फरमाना नहीं।

(१३) अपने शिष्य का दोष जानकर उसके गुरु आहार-पानी अलग कर सकते हैं तथा बड़ा दोष हो तो आचार्य तथा स्थानीय सघ की सम्मति लेकर सम्प्रदाय से बाहर भी कर सकते हैं। परन्तु ज्ञान की कमी होने से, प्रकृति न मिलने से या अगोपांग अशक्त होने से अपने शिष्य को अलग नहीं कर सकते हैं। जो आचार्य, कार्यवाहक या गुरु इन कारणों से अपने शिष्य को अलग कर देगा तो उसको नये शिष्य या शिष्या करने का अधिकार नहीं रहेगा।

प्रस्ताव ८– (एकलविहारी के लिये)

एकल विहारी तथा स्वच्छंदाचारी मुनियों को यह सम्मेलन सूचना करता है कि वे एक वर्ष के अंदर अपनी सम्प्रदाय मे मिल जावें। अन्यथा ऐसे मुनिराजों के साथ केवल आहार-पानी और उतरने के लिये मकान के अतिरिक्त अन्य सत्कार श्री सघ न करे।

नोट—इस प्रश्न को जल्दी से निपटाने के लिये एकल विहारी तथा स्वच्छंदाचारी से निवेदन है कि वे अपनी अनुकूलता तथा प्रतिकूलता का निर्णय करके साधु-सम्मेलन समिति को ज्ञान करावें।

(२) एक से अधिक जो गुरु अथवा आचार्य की आज्ञा बिना स्वतंत्र विचरते हैं ऐसे मुनिराजों को एक वर्ष के अन्दर २ अपनी सम्पदाय में अथवा अन्य सम्प्रदाय मे मिल जाना चाहिये। ऐसा करने वाले साधु सम्मेलन की आज्ञा में गिने जायेंगें अन्यथा ऐसे मुनिराजों के साथ एकल विहारी का बर्ताव श्री संघ कर सकेगा।

(४) आचार्य तथा सम्प्रदाय के मुख्य मुनिराजों से नम्र निवेदन है कि वे प्रकृति न मिलने से या ज्ञान की न्यूनता से सम्प्रदाय से अलग रहे हुए मुनिराजों को अपने में मिलाने के लिये एक वर्ष तक यत्न करें और फिर भी नहीं मिल सकें तो अन्य सम्प्रदाय में जाने के लिये आज्ञा दे देवें।

(४) सम्प्रदाय के आचार्य तथा कार्यवाहक की आज्ञा बिना विचरने वाले साधु साध्वियों का व्याख्यान चतुर्विध श्री संघ नहीं सुने तथा उनका पक्ष भी नहीं करे। चारित्रवान को करने योग्य विधि-वदन या सत्कार नहीं करें, मकान व आहार-पानी की मनाई नहीं है।

प्रस्ताव ९—(चातुर्मास के संबध में)

(१) स्थानीय स्थानकवासी सकल श्री सघ की सम्मति से सघ जिस सम्प्रदाय को विनती करे वही सम्प्रदाय वहां चातुर्मास करें, अन्य नहीं तथा सकल श्री सघ एकत्रित होकर विनती न करें तो कोई भी सम्प्रदाय वहां चातुर्मास नहीं करें।

(२) स्थानीय एकल विहारी श्रीसघ की प्रार्थना से शेषकाल अथवा चातुर्मास में एक ग्राम या नगर मे एक ही व्याख्यान करें। यदि सकारण अन्य सम्प्रदाय के मुनिराज वहां विराजते हों तो भी पृथक व्याख्यान तो देवे ही नहीं।

(३) स्थानीय सकल श्री सघ की विनती से जहां पर साध्वीजी का चातुर्मास निश्चित हो वहां पर साधुजी चातुर्मास नहीं करें। परन्तु कारण वशात् मुनिराजों का विराजना हो तो मुनि श्री की आज्ञा बिना आर्याजी का व्याख्यान नहीं हो सकेगा।

(४) फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा के पहले किसी भी सम्प्रदाय को चातुर्मास की विनती स्वीकार नहीं करना चाहिए। श्रीसघ को भी विनती आचार्यश्री या कार्यवाहक को भेजनी चाहिये।

(५) क्षेत्र विभाग—एक सम्प्रदाय के चातुर्मासिक क्षेत्र की मर्यादा में अन्य सम्प्रदाय के मुनियों को रहना हो तो वे उस सम्प्रदाय के मुख्य मुनि की सम्मति से रहें और उस सम्प्रदाय की परम्परा के विरुद्ध प्ररूपणा नहीं करें।

प्रस्ताव १०—(चातुर्मासिक कल्प के संबंध में)

(१) चातुर्मास पूर्ण होने के बाद पुनः शेषकाल रहने की इच्छा हो तो दो माह के बाद रह सकते हैं और दो चातुर्मास अन्य क्षेत्र में करने के बाद उसी जगह तीसरा चातुर्मास कर सकते हैं।

(२) चातुर्मास करने के बाद दो माह के पश्चात् का समय शेषकाल गिना जाय। कदाचित् उससे कम दिन रह जायं तो फिर से आकर रह सकते हैं परन्तु शेषकल्प (एक मास में बाकी रहे हुए दिनों से अधिक रहना चाहें तो जितने दिन अधिक रहना हो उनसे दुगुने दिन अन्य क्षेत्र में रह आने के बाद ही शेष कल्प में बाकी रहे हुए दिनों से अधिक रह सकते हैं।

(३) जितने साधु साध्वीजी शेषकाल या चातुर्मास में साथ रहे हैं उन सभी के लिये कल्प संबंधी ऊपर का नियम समान है। परन्तु उनमें जो बडे तथा उनसे भी अधिक प्रव्रज्या वाले, दूसरे मुख्य साधुजी के साथ वे ऊपर के कल्प अनुसार रह सकेंगे।

(४) साधु या साध्वीजी को स्थिरवास रहने की आवश्यकता पडे, तब अपने आचार्य या कार्यवाहक मुनिराज की आज्ञानुसार जिस क्षेत्र में रहने का फरमावें उसमें रह सकते हैं।

नोट—आचार्य व कार्यवाहक को चाहिये कि वे उनके लिये भिन्न २ क्षेत्र रोकें नहीं।

(५) स्थिरवास में रहे हुए साधु साध्वीजी की सेवा में रहे हुए सन्तों या साध्वियों का भी प्रतिवर्ष परिवर्तन होता रहे तो अच्छा है।

(६) जहां श्री संघ में क्लेश चलता हो अथवा जहां जाने से संघ में अश्रेय होना संभव हो वहां चातुर्मास या शेष कल्प करना नहीं।

श्री ज्ञान-प्रचारक मण्डल की योजना

प्रस्ताव ११—(श्री ज्ञान प्रचारक मंडल की योजना)

पंजाब के लिये:—(१) पू० श्री सोहनलालजी म० (शास्त्रीय) (२) गणीजी श्री उदयचंदजी म० (आर्य समाज के सामने) (३) उपाध्यायजी आत्मारामजी म० (शास्त्रीय) (४) पं० मुनिश्री हेमचन्द्रजी म० (५) कविवर्य श्री अमरचन्द्रजी म० (६) पं० मुनि श्री फूलचन्दजी म० (संयोजनादि कार्यक्रम) (७) पं० मुनि श्री अमरचंदजी म० (काव्यादि)

मारवाड के लिये :—(१) पू० श्री अमोलकऋषिजी म० (२) पू० श्री जवाहरलालजी म० (३) पं० मुनि श्री पन्नालालजी म० (४) पू० श्री हस्तीमलजी म० (५) युवा० श्री गणेशीलालजी म० (६) पं० मुनि श्री आनंदऋषिजी म० (७) पं० मुनि श्री सूर्यमुनिजी म० (८) पं० मुनि श्री चौथमलजी म०

गुजरात काठियावाड के लिये:—(१) पं० मुनि श्री मोहनलालजी म० (प्रश्नोत्तर) (२) पं० मुनि श्री मणिलालजी म० (भूगोल खगोल) (३) पं० मुनि श्री मूलचंदजी म० (शास्त्रीय) (४) शता० पं० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० (निबंध, अध्यापन) (५) पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (निबंध, अध्यापन) (६) पं० मुनि श्री छोटेलालजी म० (लेखन) (७) पं० मुनि श्री हर्षचन्दजी म० (लेखन, अध्यापन)

कच्छ के लिये:—(१) प० मुनि श्री नागचदजी म० (२) पं० मुनि श्री देवचंदजी म०

प्रस्ताव १२—नये तैयार न हो वहां तक निम्नोक्त वक्ताओं में से दर्शन प्रचारक मडल नियत किया जाता है।

प्र० व० प० मुनि श्री चौथमलजी म० (मालवा) कविवर्य श्री नानचन्दजी म० (काठियावाड) पं० मुनि श्री पन्नालालजी म० (मारवाड) प० मुनि श्री अजीतमलजी म० (पजाब) युवाचार्य श्री काशीरामजी म० (पंजाब) प० मुनि श्री मदनलालजी म० (पजाब) प० मुनि श्री प्रेमचन्द्रजी म० (पजाब) प० मुनि श्री नरपतरायजी म० (पंजाब) पं० मुनि श्री शुक्लचन्द्रजी म० (पंजाब) प० मुनि श्री रामसरूपजी म० (पजाब) प० मुनि श्री मोहनऋषिजी म० (पजाब) प० मुनि श्री आणंदऋषिजी म० (पजाब) प० मुनि श्री कृष्णाचन्द्रजी म० (मालवा) प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (मालवा) प० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० (मारवाड) प० मुनि श्री छगनलालजी म० (मारवाड) प० मुनि श्री मिश्रीमालजी म० (मारवाड)

प्रस्ताव १३—मुनिराजों तथा साध्वियों को प्रकाशन कार्य के साथ बिल्कुल सबंध नहीं रखना चाहिये। क्योंकि यह कार्य कॉन्फरन्स की प्रकाशन समिति के आधीन है। साधु-साध्वियों को क्रय-विक्रय के साथ भी किसी प्रकार का सबध नहीं रखना चाहिये।

नोट—साहित्य परीक्षक साधु श्रावक समिति जिस पुस्तक को पास करे उसी का प्रकाशन हो सकेगा। लिखायेगी साहित्य पर समिति का अंकुश रहेगा।

प्रस्ताव १४—साधु व साध्वियों के लिये अभ्यास का प्रबध शाला रूप में होना चाहिये। इस योजना का अमल होने से पूर्व आर्याजी साध्वीजी या शिक्षित बहिन के पास से पढ़ें। यदि धर्मज्ञ पुरुष के पास अभ्यास करना पड़े तो दो बहिनों की साक्षी बिना अभ्यास नहीं करना।

प्रस्ताव १५—ज्ञान प्रचारक मडल की योजनानुसार सिद्धान्त-शाला आदि सस्था आरभ होने पर पृथक २ स्थानों पर पडितों का रखना बद कर देना।

प्रस्ताव १६—शास्त्रोद्धारक मडल, व्याख्यातृवर्ग तथा विद्याध्ययन करने के लिये प्रविष्ट हुए मुनिराज परस्पर बारह सभोग खुला करें ऐसा तय किया जाता है।

प्रस्ताव १७—प्रत्येक सम्प्रदाय के आचार्य तथा कार्यवाहकों से यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि वे अपनी २ सम्प्रदाय में आर्याजी का भी सुव्यवस्थित सगठन करें और उनकी ज्ञानवृद्धि हो ऐसे उपाय करें।

प्रस्ताव १८—(प्रतिक्रमण सबधी) (१) साधु श्रावक प्रतिक्रमण, विधि, पाठशुद्धि-अशुद्धि, दीक्षाविधि और प्रत्याख्यानविधि का निर्णय करने के लिये निम्नोक्त मुनियों की एक समिति नियुक्त की जाती है जो बहुमति से जो निर्णय करेगी वह सब को मान्य होगा—

(१) पूज्य श्री अमोलखऋषिजी म० (२) पूज्य श्री हस्तीमलजी म० (३) उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० (४) पूज्य श्री छगनलालजी म० (५) पूज्य श्री सौभाग्यमलजी म० (६) पूज्य श्री शामजी स्वामी

(२) साधु साध्वियों को मुनि-प्रतिक्रमण देवसी, रायसी, पक्खी, चौमासी और सम्वत्सरी का एक ही प्रतिक्रमण करना, दो नहीं। और कायोत्सर्ग देवसी रायसी ४ लोगस्स, पक्खी को ८ चौमासिक १२ और सम्वत्सरी को २० लोगस्सका करना। इसी तरह श्रावक गण को भी करने बाबत यह सम्मेलन सूचित करता है।

प्रस्ताव १९—(प्रायश्चित विषयक)

प्रायश्चित विधि का निर्णय करने के लिये यह सम्मेलन निम्नोक्त ३ मुनिराजों को नियत करता है और वे ६ मास के अन्दर जो निर्णय देंगे वह सब को मान्य होगा:—

(१) पूज्य श्री मुन्नालालजी म० (२) पूज्य श्री अमेलकऋषिजी म० (३) प० मुनि श्री मणीलालजी म०

प्रस्ताव २०—(आगमोद्धार विषयक)

आगम साहित्य का सशोधन करने के लिये और पाठकों को सरलता से सूत्रज्ञान हो ऐसे आगमों के संस्करण तैयार कराने के लिये निम्न लिखित मुनिराजों की एक आगमोद्धारक समिति कायम की जाती है।

(१) गणी श्री उदयचद्रजी म० (२) शता० प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० (३) प० मुनि श्री मणिलालजी म० (४) पूज्य श्री अमेलखऋषिजी म० (५) पूज्य श्री आत्मारामजी म० (६) युवा० श्री काशीरामजी म० (७) पं मुनि श्री अमरचंद्रजी म० (८) पूज्य श्री हस्तीमलजी म० (९) शता० पं० श्री सौभाग्यचन्द्रजी म० (१०) प० मुनि श्री मेहनलालजी म० (११)पं० मुनि श्री घासीलालजी म० (१२) प० मुनि श्री प्यारचदजी म० (१३) पूज्य श्री हेमचदजी म० (१४) पं० मुनि श्री सूरजमलजी म०

इस समिति के सदस्य मुनिराज चातुर्मास में यथा सभव प्रयत्न करेंगे और चातुर्मास के बाद एक स्थान पर सभी सदस्य एकत्रित होकर साथ रहने का स्थान निश्चित कर उपरोक्त आगमोद्धार का कार्य करेंगे।

प्रस्ताव २१—पक्खी-सवत्सरी विषयक

यह साधु सम्मेलन, पक्खी, चौमासी, सम्वत्सरी आदि तिथि-पर्व का निर्णय करने के लिए कॉन्फरन्स ऑफिस को सत्ता देता है कि ऑफिस निष्पक्षपात एव लौकिक तथा लोकोत्तर ज्योतिषशास्त्रज्ञ विद्वान मुनियों और श्रावकों का, लौंकागच्छीय विद्वान और अन्य विद्वानों की सलाह लेकर लौकिक व लोकोत्तर मार्ग का अविरोधी मध्यम श्रेणी का मार्ग अनुसरण करके पक्खी, चौमासी सवत्सरी आदि पर्वों का सर्वदा के लिए निर्णय करें। जिसके अनुसार हम सब चलें और उस निर्णय के विरुद्ध कोई पर्व नहीं करें।

नोट :—न० (१) यह निर्णय कॉन्फरन्स की छपी हुई पचवर्षीय टीप के पूरी होने से पहले ही हो जाना चाहिये।

नोट न (२) पञ्जाब में पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज साहब की सम्प्रदाय तथा गुजरात, काठियावाड़ और कच्छ की सम्प्रदाय वाले मुनि एवं पर्व और सभी तिथियां कॉन्फरन्स की टीप के अनुसार करें। पक्खी-चौमासी सम्वत्सरी तो सब सम्प्रदाय वाले एक ही करेंगे।

प्रस्ताव २२—(सचित्ताचित्त विषयक)

सचित्त.चित्त निर्णय के लिये:-(१) शतावधानी प० मुनि श्री रतनचन्द्रजी म० (२) उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० और (३) सलाहकार पू० श्री जवाहरलालजी म०, इन तीन मुनियों की समिति नियत की गई थी। उनका निर्णय इस प्रकार रहा:—

(१) केले के विषय में बृहत्कल्प सूत्र में 'तालपलब' शब्द है, उसमें ताल शब्द से ताड-फल लिया जाता है और पलब शब्द से भाष्यकार ने तो उपयोगी फल मात्र लिया है। परन्तु टीकाकारने कदली फल स्पष्ट रूप से लिखा है। ताल शब्द से तो कदली फल नहीं लिया जा सकता, परन्तु पलब शब्द से कदली फल लिया जा सकता है।

एक अनुभवी माली कदली फल के लिये लिखता है कि 'हजारों केले के वृक्षों में एक आध ही बीजवाला केला मिलता है, जिसमें बैंगन के समान बीचमें का गुच्छा होता है और सूखने के बाद वे ऊग सकते हैं। ऐसे बीजवाले केले बहुत ही मोटे होते हैं।

इस अनुभवी के शब्दों से सामान्य केले की जाति तो उचित ही माननी चाहिये। कोई विलक्षण केला बीजवाला हो तो वह सचित्त है, किन्तु सामान्य केले तो अचित्त ही मानने में आते हैं। किसी केले में काली झांई दिखाई दे तो उसका निर्णय माली के पास से कर लेना चाहिये।

(२) धान्य सचित्त है या अचित्त ? इसका निर्णय करने के लिये पं० मुनि श्री कुन्दनलालजी म० ने निम्नोक्त प्रस्ताव रखा—

(अ) तीन प्रकार की योनियां श्री पन्नवणाजी के नव में पद मे जीव 'सचित्त, अचित्त और मिश्र, बताई हैं। इन तीनों में जीव पैदा हो सकता है या नहीं ?

(ब) धान्यादि में जो २४ प्रकार का अनाज बताया गया है, जिसका आयुष्य तीन से सात वर्ष का सूत्र में बताया है, इस अवधि के बाद उसको सचित्त समझना या अचित्त ?

(क) पांच स्थावर मे एक जीव रहता है या नहीं, यदि एक ही जीव रहता हो तो उसकी आहार विधि क्या है ?

नोट—इन प्रश्नों का बहुमत से जो निर्णय होगा वह मुझे मान्य होगा। यह प्रस्ताव सभा में पास होने के बाद इसका निर्णय करने के लिये निम्नोक्त १० मुनिराजों की समिति बनाई गई थी—

(१) पू० श्री अमोलकऋषिजी म० (२) पू० श्री छगनलालजी म० (३) पू० श्री हस्तीमलजी म० (४) युवा० श्री काशीरामजी म० (५) युवा० श्री नागचंदजी म० (६) प० मुनि श्री मणीलालजी म० (७) पं० मुनि श्री शामजी स्वामी (८) प० मुनि श्री नानचंदजी म० (९) प० मुनि श्री समर्थमलजी म० (१०) सलाहकार पूज्य श्री जवाहरलालजी म०। इन मुनियों की समिति ने बहुमति से जो निर्णय दिया वह इस प्रकार है:—

(अ) सचित्त, अचित्त और मिश्र तीनों योनियों से जीव पैदा हो सकते हैं।

(ब) चौवीस-प्रकार के धान्य शास्त्रीय प्रमाण से ७ वर्ष की अवधि पूर्ण हुए पश्चात् अबीज हो सकते हैं तथा योनियों का नाश हो जाता है। इससे अबीज और अयोनी धान्य अचित्त होना संभव है।

शास्त्र में 'बीजाणि हरियाणीय परिवज्जतो चिट्ठेज्जा' इत्यादि पर बीजों का संसर्ग सूत्रकार ने निषेध किया है। अबीज का निषेध नही है और ठाणांग आदि मे सात वर्ष की अवधि बाद बीज को अबीज होना कहा है। इससे अबीज को अचित्त मानना यह आगम प्रमाण से सिद्ध है। परन्तु लौकिक व्यवहार के लिये संसर्ग नहीं करना और उसे टालना यही उचित्त है।

चार स्थावर से भिन्न वनस्पति का निरूपण शास्त्र मे मिलता है—जैसे ठाणांग सूत्र मे सात वर्ष तक बीज का सचित्त होना। अतएव प्रत्येक बीज में एक बीज का होना आगम प्रमाण से सिद्ध होता है। वनस्पति के आहारक विधान अनेक तरह है अतः निश्चय ज्ञानी गम्य है।

(३) सचित्ताचित-निर्णायक-समिति यह सूचित करती है कि अनेक फलों तथा वस्तुओं का सचित्ताचित निर्णय करना आवश्यक है। जैसे—

(१) ऋतु पक्व फल (बीज रहित) (२) केला (३) संतरा (४) पिस्ता (५) किशमिश (६) अंगूर (७) नारंगी (८) बादामगिरी (९) कालीमिर्च (१०) खरबूजा (११) सरदा (१२) इलायची (१३) सफेद मिर्च (१४) धूप (१५) द्राक्ष (१६) बडीहरड़ (१७) सेंधानमक (१८) सेव (१९) पीपल (२०) अनारदाना शक्कर के संयोग

से अचित्त होते हैं या नहीं ? (२१) बर्फ, जो मशीन से बनाया जाता है सचित्त है या अचित्त ? (२२) बैटरी की बिजली सचित्त है या अचित्त ?

उपरोक्त निर्णय किसी अनुभवी द्वारा कॉन्फरन्स-ऑफिस करवा ले, क्योंकि यह कार्य प्रयोग रूप में मुनियों से नहीं हो सकता है।

प्रस्ताव २५—(आक्षेप निराकरण के विषय में)

यू० पी० प्रांत से आई हुई दरख्वास्त पर विचार विनिमय करके यह सम्मेलन प्रकट करता है कि कॉन्फरन्स स्वयं अपनी तरफ से 'आक्षेप निवारिणी समिति' मुकर्रर करे जिसके द्वारा समाज पर होने वाले आक्षेपों का निराकरण किया जा सके। इस समिति को साहित्यादि संबंधी आवश्यकता प्रतीत हो तो मुनिमंडल से भी सहायता मिल सकेगी।

प्रस्ताव २६—(समाचारी के विषय में)

(१) शय्यातर की आज्ञा लेने के बाद वापिस संभलाने तक उसके घर का आहार-पानी त्याग करना।

(२) मकान मालिक को या पहले से ही मकान जिसके सुपुर्द हो, उसको, यदि पंचायती हो तो पंचों में से एक व्यक्ति को शय्यांतर गिनना।

(३) साधु-साध्वी बाहर गांव से दर्शनार्थ आये हुए गृहस्थियों से निर्दोष आहार ले सकते हैं। इसमें दिनों की मर्यादा की आवश्यकता नहीं है।

(४) अपने साथ विहार में चलने वाले गृहस्थ से आहार-पानी लेना नहीं, कोई गृहस्थ अकस्मात आजाय तो उसकी बात अलग है।

(५) साधु साध्वियों को रेशम, वायल, अरंडी और बारीक वस्त्र उपयोग में लेना नहीं, जहां तक मिल सके खादी अथवा स्वदेशी वस्त्रों का ही उपयोग करना।

(६) साधु साध्वी अपनी उपाधि गृहस्थ से उठवायें नहीं तथा उसकी नेश्राय में रखें नहीं।

(७) शास्त्रानुसार तेले के उपर तक धोवण काम में लेना इसके उपरांत तपश्चर्या में धोवण पीवें तो वह अवशन तप नहीं गिना जाय।

(८) साधु-साध्वी अपने दर्शन करने के लिये आने का व इसी प्रकार का अन्य उपदेश देकर गृहस्थों को नियम करावें नहीं।

(९) नई समकित देते समय हर एक (स्थानकवासी) पंच महाव्रतधारी को गुरु मानना, ऐसा बोध कराना।

(१०) मुनि महात्मा अपने उपदेश में प्रत्येक श्रावक को यही फरमावें कि 'पंचमहाव्रतधारी' इस सम्मेलन के नियमानुसार चलने वाले प्रत्येक साधु-साध्वी का सत्कार करना, किसी प्रकार का रागद्वेष युक्त साम्प्रदायिक भेदभाव रखना नहीं।

(११) जो मकान श्रावकों के धर्म-ध्यान निमित्त से बना हो, उसका नाम लोक व्यवहार में भले कुछ भी हो, ऐसे निर्दोष स्थान का निर्णय करके साधु-साध्वीजी वहां उतर सकते हैं। उतरने वाले और नहीं उतरने वाले परस्पर टीका टिप्पणी नहीं करें।

(१२) लोक व्यवहार में जिस सम्प्रदाय का आचार-व्यवहार शुद्ध है, उसके साथ प्रत्येक सम्प्रदायवाले परस्पर प्रेम सत्कारादि वात्सल्य भाव रखें तथा एक साथ ही व्याख्यान बांचे।

(१३) स्व साम्प्रदायिक या अन्य साम्प्रदायिक मुनि की लघुता बताने के भाव से उस सम्प्रदाय के आचार्य या कार्य वाहक को सूचित किये बिना अन्य साधु या गृहस्थ के समक्ष उसके दोष प्रकट करना नहीं।

(१४) स्थानकवासी साधु-सामाज में किसी सम्प्रदाय या किसी व्यक्ति के विरुद्ध किसी प्रकार का हैंडबिल या खबर छपाना नहीं।

(१५) गुम नाम वाले पत्रों व हैंडबिलों पर लक्ष्य देना नहीं।

(१६) कम से कम मुनि २ और साध्वीजी ३ की संख्या में विचरें। अधिक से अधिक आचार्य, ठाणापति, स्थविर रुग्ण और विद्यार्थी के अतिरिक्त पांच से अधिक विचरें नहीं और साथ में भी नहीं रहें। आचार्य देश काल को देख कर जहां तक हो सके कम से कम मुनि पास में रखे।

(१७) आचार्य अथवा कार्यवाहक-आचारांग व निशीथ सूत्र के तथा देश काल के जानकार प्रौढ साधु को ही संघाडे का मुखिया बनावें, वैयावच्चादि कारण तो सामान्यतया सब के लिये खुले है।

(१८) सभी मुनिराजों व आर्यिकाओं को सुखे-समाधे सब प्रान्तों में विचरना चाहिये। छोटे २ गांवों का भी वीरवाणी से सिंचन होता रहे ऐसा प्रबंध होना चाहिये।

(१९) प्रत्येक सम्प्रदाय के सर्व साधु-साध्वी दो या तीन वर्ष में एक बार अपने आचार्य श्री व कार्य-वाहक की उपस्थिति में सम्मिलित हों और अपनी सम्प्रदाय की भावी उन्नति की विचारणा करें। तथा साधु समाचारी के नियमों को दृढ़ करें। जो आज्ञा से दूर-देशावर में विचरते हों और न मिल सकें तो उनकी बात अलग है।

(२०) सभी सम्प्रदायों की श्रद्धा व प्ररूपणा एक ही रहनी चाहिये।

(२१) व्याख्यान समय के अतिरिक्त साधुजी के मकान में स्त्रियों को और साध्वीजी के मकान में पुरुषों को जाना या बैठना नहीं। यदि जाना या बैठना पड़े तो साधुजी के स्थान पर में समझदार पुरुष और साध्वीजी के स्थान पर समझदार स्त्री की सम्मति बिना बैठना नहीं।

(२२) साधुजी, साध्वीजी के मकान पर या साध्वीजी, साधुजी के मकान पर बिना कारण जावें या बैठे नहीं। यदि आवश्यकता हो, तो गृहस्थ पुरुष और स्त्री की साक्षी बिना बैठे नहीं।

(२३) गौचरी, पानी, औषधादि कारण बिना असमय में गृहस्थ के घर में एकाएक साधु या साध्वीजी जावें नहीं और अपने स्थान से बाहर जाना हो तो बड़ों की आज्ञा लेकर के ही जावें।

(२४) साधु साध्वियों को अपना फोटू खिंचवाना नहीं। किसी साधु साध्वी के पगले, छतरी, चबूतरा या पात्रपूजा होती हो तो स्पष्ट उपदेश देकर उस आरंभ को रोकना, स्थानक में या अपने पास साधु साध्वी फोटू रखे नहीं।

(२५) धातु की कोई भी चीज अपने पास या अपने नेश्राय में साधु-साध्वी रखें नहीं।

(२६) गृहस्थों को अपने हाथ से पत्र लिखना नहीं, प्रश्नोत्तर व चर्चा की बात अलग है।

(२७) टिकिट वाले कार्ड लिफाफे साधु-साध्वी अपने पास या अपनी नेश्राय में रखें नहीं।

(२८) हिंदी पेन पाढिहारी लेकर के भी साधु साध्वी अपने उपयोग में लावें नहीं।

(२९) चूर्ण आदि किसी भी प्रकार की औषधि साधु-साध्वी अपने पास या अपने नेश्राय में रखे नहीं।

(३०) प्रत्येक साधु साध्वी को चारों (काल) समय स्वाध्याय करना चाहिये। चारों समय का स्वाध्याय कम से कम १०० गाथा का तो होना ही चाहिये। जिसको शास्त्र का ज्ञान न हो वह भले ही नवकार मंत्र का जाप करें।

(३१) प्रतिदिन साधु-साध्वी को प्रातः काल प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थना में 'लोगस्स या नमोत्थुणं स्तुति में कहना चाहिए।

(३२) यह साधु-सम्मेलन प्रकट करता है कि अधिक से अधिक ११ वर्षों में प्रत्येक प्रांत के मुनिराजों का सम्मेलन हो और भिन्न २ प्रदेश में विचरती हुई साध्वियों का भी प्रांतिक सम्मेलन भरना।

(३३) सम्प्रदाय में यदि कोई नया परिवर्तन करना चाहें तो उसके आचार्य अथवा कार्यवाहक कर सकते हैं, परन्तु उनको मुख्य मुनियों की सलाह ले लेनी चाहिये और अन्य मुनिराज यदि कोई परिवर्तन करना चाहें तो आचार्य अथवा कार्यवाहक और मुख्य मुनिराजों की सम्मति बिना नहीं कर सकते हैं।

प्रस्ताव २७—(जयंती दिवस के विषय में)

इस साधु सम्मेलन जैसे अपूर्व अवसर की सर्वदा स्मृति बनाये रखने के लिये समाज स्थानकवासी जैनों को चैत्र शुक्ला १० का दिवस 'स्था० साधु-सम्मेलन जयंती के रूप में मनाते रहना चाहिये। उस दिन सम्मेलन निर्धारित नियमों का पालन करते रहने की घोषणा करके समाज को जागृत रखें। ऐसी इस सम्मेलन की शुभ भावना है। शेष प्रस्ताव धन्यवादात्मक थे।

सचित्ताचित्त निर्णय

अजमेर साधु-सम्मेलन के प्रस्ताव २२ के अनुसार सचित्ताचित्त विषय में जो निर्णय कॉन्फरन्स ने दिया वह इस प्रकार है। यह निर्णय कॉन्फरन्स निर्वाचित समिति द्वारा ता० १०-११-३३ को जयपुर में दिया था। समिति की मीटिंग में जो भाई उपस्थित हुए थे उनके नाम इस प्रकार हैं :—

(१) प्रमुख श्री हेमचंदभाई रामजीभाई मेहता (२) श्री दुर्लभजीभाई त्रिभुवन जौहरी (३) श्री केशरीमलजी चौरडिया (४) श्री सौभाग्यमलजी मेहता, जावरा (५) ला० श्री टेकचंदजी जंडियालागुरु (सलाहकार) (६) श्री हरजसरायजी जैन अमृतसर (७) श्री उमरशीभाई कानजी, देशलपुर।

प्रस्ताव २—सचित्त, अचित्त निर्णय के विषय में कितने ही निर्णय प्रख्यात माली और खेतीवाडी के निष्णातों के अभिप्राय मंगाने में आये थे। ये अभिप्राय तथा इस संबंध में श्री साधु-सम्मेलन में हुए ऊहापोह की हकीकत 'सब कमेटी' के समक्ष पढ़कर सुनाई गई थी। इस विषय में काफी विचार विमर्श होने के बाद यह सब कमेटी प्रस्ताव करती है कि:—

प्रस्ताव ३—(क) सचित्त, अचित्त का निर्णय करने का काम बहुत मुश्किल होने से विद्वानों Scientist के अभिप्राय प्राप्त करने का काम कॉन्फरन्स चालू रखेगी परन्तु अभी तक जो अभिप्राय मिला है उसे ध्यान में रखकर नीचे की पेटा कलम (ख) के अनुसार निर्णय किया जाता है। इसके बाद जो विद्वानों के परिवर्तन मिलेंगे उनके अनुसार वर्तमान निर्णयों में परिवर्तन या सुधार करने की आवश्यकता प्रतीत हुई तो 'सब कमेटी परिवर्तन या सुधार जाहिर करेगी।

(ख) निम्नोक्त वस्तुएं सचित्त या अचित्त हैं, यह बात भारत के समस्त स्थानकवासी चतुर्विध श्री संघ की जानकारी के लिये प्रसिद्ध की जाती है:—

१. ऋतु पक्वफल-(बीज सहित) यह किन फलों को लक्ष्य में लेकर लिखा गया है, यह जाने बिना अभिप्राय प्राप्त किया नहीं जा सकता।

२. केला—पकी हुई लाल छाल वाला हरी छाल वाला और सुनहरी केले का गर्भ अचित्त है। इसलिये छाल उतरा हुआ सूझता केला अचित्त मानना चाहिये। बीज वाले बड़े केले की विशेष जाति होती है उसमें सचित्त बीज होना संभव है।

३. संतरा-नारंगी—बिना बीज का ताजा रस और बिल्कुल निर्बीज फांकों को अचित्त मानना।

४. पिश्ता-बादाम—पिश्ता की पूरी गिरी और बादाम की पूरी गिरी सचित्त मालूम होती है। टूटी फूटी गिरी अचित्त है।

किशमिश—बिना डंठल की निर्बीज छोटी किशमिश अचित्त है।

अंगूर निर्बीज बनाना अशक्य है इसलिये सचित्त मानना चाहिये।

कालीमिर्च, लौंग, सफेद मिर्च, पीपल—बाजार में आने से पहिले उबाल ली जाती है अतः अचित्त है।

खरबूजा, सरदा—बिल्कुल बीज रहित और छाल रहित सूझता मिले तो अचित्त गिना जा सकता है।

तरबूज-इसका बिल्कुल निर्बीज होना अशक्य है अतः सचित्त गिनना।

इलायची-उबालने के बाद ही यह बेची जाती है, फिर भी कभी २ इसमें जीव पड़ जाते हैं अतः पूरी इलायची अकल्पनीय है।

बड़ी हरड—पूरी सचित्त है। सेंधा नमक—खाने का हो तो सचित्त और पकाया हुआ हो तो सचित्त।

सेव, नासपाती—पूरा हो तो सचित्त, बीज और छाल-रहित टुकडे अचित्त कहे जा सकते हैं।

अनार—इसके दाने शक्कर के साथ मिले हो तब भी सचित्त हैं।

बर्फ—सचित्त है। मशीन से बाहर निकली हुई आईसक्रीम अचित्त है।

बिजली—यह हिंसा का शस्त्र है इसलिये मुनि को कल्पनीय नहीं है।

(१) सब कमेटी ने अपने इस निर्णय में जिन चीजों को अचित्त जाहिर किया है, वे चीजें जो मुनिराज उपयोग में लें उनकी निंदा किसी दूसरे मुनिराजों को न करना चाहिये।

(२) जिन चीजों को सचित्त माना है उनका उपयोग किसी भी मुनिराज को कल्पनीय नहीं है।

प्रस्तावक—रा० सा० टेकचंद जी, अनु० दुर्लभजी भाई जौहरी, सौभागमलजी महेता

श्री अखिल भारतवर्षीय जैन वीर संघ

अजमेर साधु-सम्मेलन में संगठन की ओर ठोस कार्यवाही करने के लिये एक साधु-समिति की स्थापना की गई थी। उसकी बैठक ता०—१२-५-४० वैशाख शुक्ला ५ को घाटकोपर (बम्बई) में हुई थी। जिसमें वयोवृद्ध प्रवर्तक श्री ताराचंदजी म० शतावधानी श्री रतनचन्द्रजी म० तथा पंजाब केसरी पूज्य श्री काशीरामजी म० दीर्घ विहार कर उपस्थित हुए थे। घाटकोपर संघ ने सभी सम्प्रदायों के मुख्य २ मुनिवरों की सेवा में आमंत्रण भेजे थे। परन्तु दूरी की वजह से कोई मुनिराज पधार न सके थे, लेकिन अपनी सहानुभूति का सन्देश भिजवा दिया गया।

उपस्थित मुनिराजों ने दीर्घदृष्टि से विचार करते हुए समस्त स्थानकवासी जैन साधुओं को एक सूत्र में ग्रथित होने की आवश्यकता स्वीकार की और इसके लिये एक योजना भी तैयार की जब तक कि इन विभिन्न दलों को मिटा कर एक नहीं कर दिया जायगा और समचारी एक न बना दी जायगी तब तक संगठन

की ओर और संघ ऐक्य की ओर ठोस प्रगति नहीं हो सकेगी। तदनुसार उपस्थित मुनिराजों ने जैन वीर-संघ की एक योजना तैयार की थी, जो संगठन की दिशा में दूसरा महान प्रयत्न भी इस योजना का सर्वत्र स्वागत ही किया गया था। परन्तु समय परिपक्व न होने से उसका अमल न हो सका। परन्तु विचारों मे यह योजना घर कर गई फलत: कॉन्फरन्स की ज० क० ता०—२१—२२ दिसम्बर ४८ को ब्यावर गुरुकुल की तपोमय भूमि में संघ ऐक्य योजना का प्रस्ताव किया गया।

संघ-ऐक्य की तात्कालिक योजना

ता० २१-२२ दिसम्बर ४८ को ब्यावर में कॉन्फरन्स की जनरल मीटिंग गुरुकुल की तपोभूमि में हुई। इस जनरल कमेटी में सम्पूर्ण समाज के कई आगेवान व्यक्ति उपस्थित हुए थे। प्रमुख थे श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया। अजमेर और घाटकोपर की विचारधारा मन ही मन चल रही थी। सगठन की जो ज्योति इस दोनों स्थानों पर प्रज्वलित हो चुकी थी वह अखंडरूप में जल रही थी अतः इस जनरल कमेटी में उस विचारधारा ने काफी जोर पकड़ा और सघ-ऐक्य के बारे में जोश पूर्ण भाषण हुए। अन्त में वही सघ-ऐक्य को मूर्तरूप देने के लिये सघ-ऐक्य योजना भी तैयार की गई और उसकी स्वीकृति के लिये वहीं से मुनिराजों की सेवा में डेप्युटेशन भी रवाना हुआ।

संघ ऐक्य का स्वीकृति पत्र, जिस पर कि मुनिराजों की स्वीकृति ली गई, इस प्रकार था:—

साम्प्रदायिक मतभेद और महत्व के कारण स्था० जैन समाज छिन्न-भिन्न हो रहा है। साधु साधुओं में और श्रावक श्रावकों मे मतभेद बढ़े हैं और बढ़ते जा रहे हैं। समाज-कल्याण के लिये ऐसी परिस्थिति का अन्त लाकर ऐक्य और सगठन करना आवश्यक है। साधु और श्रावक दोनों के सहकार और शुभ भावना द्वारा ही यह सफल होगा अतः साधु-साध्वी और कॉन्फरन्स को मिल कर इस कार्य में लगना चाहिये।

इस कार्य के लिये तात्कालिक कुछ नियम ऐसे होने चाहिए कि जिससे ऐक्य का वातावरण उत्पन्न हो और साथ २ एक ऐसी योजना करनी चाहिए कि सगठन स्थायी और चिरजीवी बने।

उक्त उद्देश्य से निम्न बातें तुरन्त ही कार्य रूप में रखने का हमारा निर्णय है।

(१) एक गांव में एक चातुर्मास हो। (२) एक गांव में एक ही व्याख्यान हो। (३) सब साधु-श्रावक कॉन्फरन्स की टीप के अनुसार एक सम्वत्सरी करें। (४) सब साधु-साध्वी अजमेर साधु सम्मेलन के प्रस्ताव अनुसार एक प्रतिक्रमण करें। (५) किसी सम्प्रदाय के सबध में निन्दात्मक सम्मेलन न होना चाहिये। (६) साम्प्रदायिक मडल या समितियाँ मिटा दी जायं। (७) कोई साधु साध्वी अपनी सम्प्रदाय छोड़कर अन्य सम्प्रदाय में जाना चाहें तो इनके पूज्य-प्रवर्तक या गुरु की स्वीकृति बिना नहीं लिया जाय।

स्थायी योजना के रूप में एक समाचारी और एक ही आचार्य के नीचे एक श्रमण संघ और एक श्रावक-संघ बनाया जाय। एकता और सगठन का यही एक मात्र उपाय है।

उपरोक्त तात्कालिक बातें कार्य रूप में लाते कोई मतभेद हो तो श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया जो निर्णय देवें वह हमको मजूर होगा।

एक समाचारी एवं श्रमण संघ और एक श्रावक-संघ के सबध में अजमेर अधिवेशन (साधु-सम्मेलन) की समाचारी तथा मुनि-समिति की तरफ से घाटकोपर मे जो वीर सघ की योजना हुई थी, उसको लक्ष्य में रख

का कॉन्फरन्स ऑफिस एक समाचारी, एक श्रमण संघ और एक श्रावक-संघ की योजना तैयार करे तथा हमको अभिप्राय के लिये भेजें। इस सबंध में मिली हुई सूचनाओं पर पूरा विचार विनिमय द्वारा श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया जो अन्तिम योजना और बंधारण तैयार करेंगे वह हमको मंजूर होगा।

तात्कालिक कार्यक्रम में रखने योग्य बातों की प्रमुखता अधिक है। अतः इन्हें कार्यान्वित करने के लिये सब साधु और श्रावक प्रमाणिकता से पूर्ण सहकार देंगें ऐसी हमारी आशा और विनती है।

जो-जो सम्प्रदायें यह कार्यक्रम स्वीकार करें वे श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया निश्चित करें, तब कार्यान्वित करने को तैयार हैं।

इस योजना पर लगभग सभी सम्प्रदायों के मुनिराजों की स्वीकृति प्राप्त हुई। इसका अमल सन् ४६ की महावीर जयती (सं० २४७५ चैत्र शुक्ला १३) से शुरु हुआ। कॉन्फरन्स के मद्रास-अधिवेशन में संघ ऐक्य योजना सर्वानुमति से पास हुई। दो वर्ष में साधु-सम्मेलन और बीच २ मे प्रान्तीय-साधु सम्मेलन और साम्प्रदायिक संगठन करने के लिए 'साधु-सम्मेलन नियोजक समिति' की भी स्थापना की गई, जिसके मंत्री श्री धीरजलाल के० तुरखिया नियुक्त किये गये। राजस्थान की १७ सम्प्रदायों का सम्मेलन ब्यावर में हुआ, जिसमें ६ सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व था। कॉन्फरन्स द्वारा प्रकाशित वीर-संघ की योजना व समाचारी का इन्होंने संशोधन किया। ६ सम्प्रदायों मे पूज्य श्री आनन्दऋषिजी की सम्प्रदाय, पूज्य श्री सहस्रमलजी की सम्प्रदाय, पूज्य श्री धर्मदासजी म० का मालवा सं०, पूज्य श्री शीतलदासजी म० की सं० और कोटा सं० (स्थ० मुनि श्री रामकुमारजी आदि) में से ५ सम्प्रदायों ने अपनी सम्प्रदायों के नाम और पदवियों का मोह त्याग कर 'वीर वर्धमान श्रमण-संघ' स्थापित किया। पूज्य श्री आनन्दऋषिजी म० को अपना आचार्य चुना और बृहत् साधु सम्मेलन तक 'संघ-ऐक्य' का आदर्श खड़ा किया।

इसके बाद गुलाबपुरा मे ४ बड़े मुनिराजों का स्नेह सम्मेलन हुआ। लींबडी, गोंडल, खीचन आदि में भी साम्प्रदायिक-सम्मेलन होते रहे। पंजाब प्रान्तीय सम्मेलन लुधियाना में गुजरात प्रान्तीय सम्मेलन सुरेन्द्रनगर (सौराष्ट्र) में हुए। इसके बाद सं० २००६ में वैशाख शुक्ला ३ को सादड़ी (मारवाड़) मे बृहत् साधु-सम्मेलन हुआ और उसमें संघ-ऐक्य योजना को मूर्त स्वरूप देकर एक आचार्य की नियुक्ति की गई। सभी सन्तों ने अपनी २ सम्प्रदाय और पदवियों का मोह छोड़ कर एक ही समाचारी मे आबद्ध होना स्वीकार कर संघप्रियता का एक ऐतिहासिक आदर्श उपस्थित किया। इस बृहत्-साधु सम्मेलन की कार्यवाही आगे दी जा रही हैं।

श्री बृहत्साधु-सम्मेलन सादड़ी का संक्षिप्त-विवरण

प्रारंभ ता० २७—४—५२	समाप्ति ता० ७—५—५२
मिति वैशाख शुक्ला ३	मिति वैसाख शुक्ला १३

बृहत्साधुसम्मेलन सं० २००६ में वैशाख शुक्ला ३ (अक्षय तृतीया) को सादड़ी (मारवाड़) में आरम्भ हुआ। संगठन की भावना समाज में तीव्र रूप में व्याप्त हो चुकी थी अतः सर्वत्र सम्मेलन के प्रति जागृति पैदा हो रही थी। सम्मेलन के समय दर्शनार्थ जाने के लिए सभी भाई-बहिन अपने २ प्रोग्राम नियत कर रहे थे। और जो कार्यवश पहुँच न पा रहे थे वे मन ही मन खिन्न भी हो रहे थे। जब यह सम्मेलन भरने का तय हुआ, तब समय कम था, और मुनिराज सम्मेलन स्थान

से काफी दूर-दूर थे, लेकिन संघ-ऐक्य की जो प्रबल भावना उनके हृदय में लहरें मार रही थी, उसके समक्ष यह दूरी भी नगण्य थी। हमारे कष्टसहिष्णु मुनिवर अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना ही और भीषण गर्मी में भी उग्रतम विहार द्वारा अपने लक्ष्य-स्थान की ओर बढ़ते चले जा रहे थे। वे सब यथा समय पैदल यात्रा द्वारा अपने स्थान पर पधार गये थे। सम्मेल में पधारने वाले सन्त जहां भिन्न २ सम्प्रदायों के साथ मिलते थे तो परस्पर में बडी उदारता और सहृदयता प्रकट करते थे। संगठन की वह हवा ऐसी व्याप्त हो चली थी कि उसमें पूर्वका द्वेष-भाव उड़ गया था और सर्वत्र प्रेम का आनन्ददायक वातावरण फैल गया था। सम्मेलन में २२ सम्प्रदायों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे और सभी ने प्रेम पूर्वक सम्मेलन की कार्यवाही मे भाग लेकर उसे यशस्वी बनाया। इस सम्मेलन की कार्यवाही व्यवस्थित रूप से और शांति मे चलती थी, जिसे देखकर बम्बई धारा सभा के स्पीकर मान्यवर श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया ने कहा था कि सम्मेलन में, शांति विवेक और शिष्टता पूर्ण जो कार्य हो रहा है, वह धारा सभा से भी अच्छा हो रहा है। यह सम्मेलन ११ दिन तक चला था। लगभग ३५००० भाई बहिन दूर दूर गावों से दर्शनार्थ आये थे। सम्मेलन के व्यवस्थापकों की सुव्यवस्था से सभी लोगों को बड़ा आराम रहा और गर्मी की ऋतु में भी पानी आदि का बड़ा आराम रहा। क्षेत्र की दृष्टि से व्यवस्था के लिये जो-जो साधन जुटाये गये थे निस्सदेह वे उल्लेखनीय थे। सभी प्रतिनिधि मुनिराज लोंकाशाह जैन गुरुकुल के नवीन भव्य-भवन में ठहरे हुए थे और वहीं उसके विशाल हॉल मे उनकी मीटिंगें हुआ करती थीं। गुरुकुल-भवन के आस-पास लौंकाशाह नगर बसाया गया था, विशाल तम्बू लगाये गये थे जो दूर से बड़े आकर्षक लगते थे। सादड़ी का यह सम्मेलन निस्सदेह बड़ा सफल सम्मेलन था, जिसकी चर्चा उसके आस-पास तक कई दिनों तक चलती रही। आने-जाने वाले दर्शनार्थी जहां भी पहुंचते सामने वाला यही पूछ बैठता—क्या सादड़ी से आ रहे हो? श्वेतांबर, दिगम्बर और तेरापंथी अखबारों ने भी सम्मेलन की सफल कार्यवाही की भूरी २ प्रशंसा की।

इस सम्मेलन में सभी सम्प्रदायों का विलीनीकरण होकर एवं 'श्री व० स्था० जैन श्रमण-संघ, की स्थापना हुई और एक आचार्य के नेतृत्व में एक ही समाचारी का निर्माण हुआ। जिसकी संक्षिप्त कार्यवाही इस प्रकार है:—

सम्मेलन में पधारे हुए प्रतिनिधि मुनिराजः—

(१) पूज्य श्री आत्मारामजी म० की सम्प्रदाय। मुनि ८८ आर्या ८१ प्रतिनिधि ४-(१) उपाध्याय श्री प्रेमचंदजी म० (२) युवा० श्री शुक्लचंदजी म० (३) व्या० वा० श्री मदनलालजी म० (४) वक्ता प० मुनि श्री विमलचंदजी म०।

(२) पूज्य श्री गणेशीलालजी म० की सम्प्रदाय। मुनि ३४ तथा आज्ञानुसारिणी रंगूजी, मोताजी, खेताजी की आर्या ७१।

प्रतिनिधि ५—(१) पूज्य श्री गणेशीलालजी म० (२) पं० मुनि श्रीमलजी म० (३) पं० मुनि श्री नानालालजी म० (४) प० मुनि श्री सुमेरचंदजी म० (५) प० मुनि श्री आईदानजी म०।

(३) पूज्य श्री आनदऋषिजी म० की सम्प्रदाय। मुनि १६ तथा आर्या ८५।

प्रतिनिधि ५—(१) पूज्य श्री आनंदऋषिजी म० (२) प० मुनि श्री उत्तमऋषिजी म० (३) कवि श्री हरिऋषिजी म० (४) पं० मुनि श्री मोतीऋषिजी म० (५) प० मुनि श्री भानुऋषिजी म०।

[४] पूज्य श्री खूबचंदजी म० की सम्प्रदाय के मुनि ६५ तथा आर्या ३८।

प्रतिनिधि ५—[१] पं० मुनि श्री कस्तुरचंदजी म० [२] उपा० श्री प्यारचंदजी म० [३] पूज्य श्री शेषमलजी म० [४] प० मुनि श्री मनोहरलालजी म०।

[५] पूज्य श्री धर्मदासजी म० की सम्प्रदाय। मुनि २१ तथा आर्या ८६।

प्रतिनिधि ५—[१] प० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० (२) पं० मुनि श्री सूर्यमुनिजी म० (३) शता० पं० मुनि श्री केवल मुनिजी म० [४] प० मुनि श्री मथुरा मुनि जी म० [५] प० मुनि श्री सागर मुनि जी म०।

[६] पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि १३ तथा आर्या १०५।

प्रतिनिधि ४—[१] पण्डित मुनि श्री पूर्णमलजी महाराज (अनुपस्थित) (२) आत्मार्थी श्री इन्द्रमलजी म०, (३) पंडित मुनिश्री लालचन्दजी महाराज, (४) पण्डित मुनि श्री मोहनलालजी महाराज।

[७] पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि ६ तथा आर्या ३३।

प्रतिनिधि २—[१] पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, [२] पण्डित मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी महाराज।

[८] पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि ५ तथा आर्या ७।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री छोगालालजी महाराज।

[९] पूज्य श्री मोतीलालजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि १४ तथा आर्या ३०।

प्रतिनिधि २—[१] पण्डित मुनि श्री अम्बालालजी महाराज, (२) पण्डित मुनि कवि श्री शांतिलालजी म०,

[१०] पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय मुनि १३।

प्रतिनिधि १—उपा० कवि श्री अमरचन्दजी म०।

[११] पूज्य श्री जयमलजी म० की सम्प्रदाय के स्थ० पं० मुनि श्री हजारीमलजी म० के। मुनि ६ तथा आर्या २६।

प्रतिनिधि २—[१] श्री पण्डित मुनि श्री बृजलालजी म०, [२] पण्डित मुनि श्री मिश्रीलालजी म०।

[१२] पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज के मुनि ६ तथा आर्या ५१।

प्रतिनिधि ३—[१] प० मुनि श्री चांदमलजी म०, [२] पण्डित मुनि श्री लालचन्दजी महाराज, [३] उपा० श्री जीतमलजी महाराज।

[१३] पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री पन्नालालजी महाराज के मुनि ६ तथा आर्या ८।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री सोहनलालजी महाराज।

[१४] पूज्य श्री अमरचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि ७ तथा आर्या ६५।

प्रतिनिधि ३—[१] मंत्री मुनि श्री ताराचन्दजी म०, [२] स्थ० मुनि श्री नारायणदासजी महाराज, [३] पण्डित मुनि श्री पुष्कर मुनिजी महाराज।

[१५] पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय। मुनि २ तथा आर्या २६।

प्रतिनिधि २—(१) मंत्री मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज, (२) पण्डित मुनि श्री रूपचन्दजी म०।

(१६) पूज्य श्री चौथमलजी म० की सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री शार्दूलसिंहजी महाराज—मुनि ४ तथा आर्या ७।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री रूपचंदजी महाराज।

(१७) पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय—मुनि ७ तथा आर्या १६।

प्रतिनिधि २—(१) पण्डित मुनि श्री छगनलालजी महाराज (अनुपस्थित) (२) पण्डित मुनि श्री कन्हैयालालजी महाराज।

(१८) ज्ञातृपुत्र महावीर सघीय मुनि—३ तथा आर्या २।

प्रतिनिधि १—पण्डित मु० फूलचन्दजी म०।

(१९) पूज्य श्री रूपचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय—मुनि ३ तथा आर्या ४।

प्रतिनिधि १—पण्डित मुनि श्री सुशीलकुमारजी म०।

(२०) पण्डित मुनि श्री घासीलालजी महाराज के मुनि ११।

प्रतिनिधि १—पं० मुनि श्री समीरमलजी म०। (पहले पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज को प्रतिनिधित्व दिया गया।

(२१) पूज्य श्री जीवनरामजी महाराज की सम्प्रदाय—मुनि ३।

प्रतिनिधि १—कवि श्री अमरचन्दजी महाराज के शिष्य श्री विजय मुनिजी म०।

(२२) बरवाला-सम्प्रदाय (सौराष्ट्र) के—मुनि ३ तथा आर्या १८।

प्रतिनिधि, १—पण्डित मुनि श्री चम्पकलालजी महाराज। कुल उपस्थित सम्प्रदाय २२, मुनि ३४१, आर्याजी ७६८। प्रतिनिधि संख्या ५४। अनुपस्थित २।

प्रतिनिधित्व

(१) कोटा-सम्प्रदाय के प० मुनि श्री रामकुमारजी म० ने अपने मुनि व आर्याजी का प्रतिनिधित्व प० मुनि श्री प्यारचन्दजी म० को दिया।

(२) कोटा-सम्प्रदाय के प० मुनि श्री जीवराजजी म० तथा पं० मुनि श्री हीरामुनि जी म० ने सम्मेलन में होने वाले सभी प्रस्तावों की स्वीकृति भेजी है।

सम्मेलन की कार्यवाही ता० २७-४-५२ को मध्यान्ह के ३ बजे आरम्भ हुई। प्रस्ताव निम्न प्रकार थे:—

प्रस्ताव १—(शान्तिरक्षक का चुनाव)

विचार विमर्श के पश्चात् सर्व सम्मति से यह निर्णय किया जाता है, कि सभा का संचालन करने के लिए शान्तिरक्षक का पद पूज्य श्री गणेशीलालजी महाराज एव व्याख्यानवाचस्पति मदनलालजी म० को दिया जाता है।

प्रस्ताव २—(दर्शक मुनियों को आज्ञा तथा रिपोर्टरों की नियुक्ति)

विचार-विमर्श के बाद सर्वानुमति से निर्णय हुआ कि अप्रतिनिधि मुनि दर्शक के रूप मे रह सकते हैं उन्हें बोलने एवं परामर्श देने का अधिकार नही रहेगा और अपवाद रूप में श्री फिरोदियाजी (कॉन्फरन्स के प्रेसीडेण्ट) भी बैठ सकते हैं।

सर्वानुमति से पास किया जाता है कि, गुजराती की रिपोर्ट लेने के लिये श्री चम्पक मुनिजी म० को एवं हिन्दी रिपोर्ट लेने के लिये मुनि आईदानजी म० को रिपोर्टर के तौर पर रक्खा जावे।

प्रस्ताव ३—(विषय निर्धारिणी का चुनाव)

पूर्ण विचार विमर्श के पश्चात् विषय निर्धारणी कमेटी का सर्वानुमति से पास हो गया और इसके लिए १५ सदस्यों का चुनाव कर लिया गया।

[१] पू० श्री आनन्द ऋषिजी म०, [२] पूज्य श्री हस्तीमलजी म० [३] पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी म०, [४] उपा० श्री अमरचन्दजी म० [५] पं० मुनि श्री इन्द्रमलजी म०, [६] प० मुनि श्री श्रीमलजी म०, [७] उपा० श्री प्रेमचन्दजी म०, [८] प० मुनि श्री लालचन्दजी म०, [९] पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म०, [१०] मधुकर पं० मुनि श्री मिश्रीलालजी म०, [११] प० मुनि सुशील कुमारजी म०, [१२] मरुधर मन्त्री पं० मुनि मिश्रीमलजी म०, [१३] पं० मुनि श्री अम्बालालजी म०, [१४] व्या० वा० श्री मदनलालजी म० और [१५] प० मुनि श्री पुष्कर मुनिजी (ता० २७-४-५२ की रात्रि को पास)।

प्रस्ताव ४—(कार्य-प्रणाली)

जो प्रस्ताव पास होंगे, वे यथाशक्य सर्वानुमति से अथवा बहुमत से अर्थात् जो प्रस्ताव ऐसे प्रसंग पर पहुँच जाय कि उन्हें बहुमत से पास करना आवश्यक हो जाता है तो प्रस्ताव बहुमत से पास किये जा सकेंगे। बहुमत से तात्पर्य ३।४ अर्थात् ७५% से लिया जायगा।

प्रस्ताव ५—(मत-गणना)

बहुत विचार विमर्श के बाद सर्वानुमति से यह निर्णय किया गया कि-वोटिंग (मतगणना) प्रत्यक्ष में भी लिये जा सकते हैं।

प्रस्ताव ६—(एक आचार्य के नेतृत्व में)

बृहत्साधु-सम्मेलन सादड़ी के लिए निर्वाचित प्रतिनिधि मुनिराज यह निर्णय करते हैं कि अपनी २ सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक पदवियों का विलीनीकरण करके, "एक आचार्य के नेतृत्व में एक संघ" कायम करते हैं। (सर्वानुमति से ता० २८-४-५२ मध्याह्न को पास।)

प्रस्ताव ७-(संघ का नाम)

इस संघ का नाम 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' रहेगा। (सर्व सम्मति से पास ता० २९ प्रातःकाल)।

प्रस्ताव ८-(व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल)

शासन को सुविधा-पूर्वक प्रगति देने के लिये और सुव्यवस्था के लिए एक आचार्य के नीचे एक 'व्यवस्थापक मन्त्रि-मण्डल' बनाया जाय। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव ९—(मन्त्री-मण्डल की संख्या)

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल के १६ सदस्य होंगे। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव १०-(मन्त्री-मण्डल का कार्यकाल)

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल का कार्यकाल तीन साल तक रहेगा। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव ११—(संवत्सरी पर्व-निर्णय)

संवत्सरी पर्वाराधन के विषय से कतिपत सम्प्रदायों में मतभेद था, उन सभी सम्प्रदायों का एकीकरण करने के लिए दूसरे श्रावण तथा प्रथम भाद्रपद में सवत्सरी करने वाला जो बहुल पक्ष है, वह पक्ष सघ ऐक्य के हेतु "दो श्रावण हो तो भाद्रपद में और दो भाद्रपद हों तो दूसरे भाद्रपद में सवत्सरी करना" प्रेमपूर्वक स्वीकार करता है। (सर्व सम्मति से पास ता० ३० प्रातःकाल)।

प्रस्ताव १२—(पाक्षिक तिथि-निर्णय)

पाक्षिक तिथियों का निर्णय करने के लिये ८ साधुओं की कमेटी बनाई गई:—

(१) पूज्य श्री गणेशीलालजी म०, (२) पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म०, (३) पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, (४) युवाचार्य श्री शुक्लचन्दजी म०, (५) प० मुनि श्री कस्तूरचन्दजी म०, (६) उपाध्याय श्री अमरचन्दजी म०, (७) मरुधर मन्त्री श्री मिश्रीमलजी म०, (८) प० मुनि श्री सुशीलकुमारजी म०।

प्रस्ताव १३—(तिथि-निर्णय कबसे ?)

पाक्षिक तिथियों के सम्बन्ध में कमेटी का जो निर्णय हो वह आगामी वर्ष माना जाय और आगमी वर्ष पाक्षिक पत्र कमेटी के विचार से प्रकट हो। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव १४—(दीक्षा के सम्बन्ध में)

(अ) "श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ" के मनोनीत आचार्य और व्यवस्थापक मन्त्री, शास्त्र दृष्टि एवं लोकदृष्टि पर गभीर विचार करके दीक्षार्थी की वय, वैराग्य, शिक्षण आदि की योग्यता का यथोचित निर्णय करें। (सर्व सम्मति से पास ता० २-५-५२ प्रात)

(ब) श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ में जो दीक्षार्थी दीक्षा लेना चाहे वह आचार्य श्री या दीक्षा-मन्त्रीजी की आज्ञा से अपने अभीष्ट गुरुपद के योग्य, सुयोग्य मुनि को गुरु बना सकेगा। यह नियम आगामी सम्मेलन तक समझा जावे। आगामी सम्मेलन में इस पर विचार किया जावेगा। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ ५-५२ मध्यान्ह)

प्रस्ताव १५—(प्रतिक्रमण के सम्बन्ध में)

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के साधु साध्वियों को देवसी, रायसी, पक्ष, चौमासी, सवत्सरी का एक ही प्रतिक्रमण करना चाहिये और कायोत्सर्ग मे देवसी, रायसी को ४, पक्खी को ८ चौमासी को १२ और संवत्सरी को २० लोगस्स का ध्यान करना चाहिए (सर्व सम्मति से पास ता २-५-५२ मध्याह्न)

प्रस्ताव १६—(मुखवस्त्रिका का परिणाम)

मुखवस्त्रिका का परिणाम आत्मअंगुल से चौड़ाई में १६ और लम्बाई में २१ अंगुल का होना चाहिए। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव १७—(सचित्ताचित्त निर्णायक समिति)

सचित्ताचित्त निर्णायक कमेटी का सर्वानुमति से चुनाव हुआ:—

(१) पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म०, (२) पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, (३) उपाध्याय श्री अमरचन्दजी महाराज, (४) उपाध्याय श्री प्रेमचन्दजी महाराज, (५) प० मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज (६) प० मुनि श्री श्रीलाल

जी महाराज, (७) मरुधर-मन्त्री श्री मिश्रीमलजी महाराज, और (८) पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० । (ता० २-५-५२ रात्रि को पास)

इलायची, पिश्ता, केले, अंगूर आदि फलों की सचित्त-अचित्तता और, ध्वनिवर्धक-यंत्र के संचालन में काम आने वाली बिजली और बेटरी की सचित्ताचित्तता का निर्णय यह समिति करेगी।

प्रस्ताव १८-(आचार्य का चुनाव)

स० २००६ वैशाख शुक्ला ६ को श्री वर्द्धमान तथा स्था० जैन श्रमण-संघ के आचार्य श्री जैनधर्म दिवाकर साहित्यरत्न पूज्य श्री आत्मारामजी म० सा० नियत किए जाते हैं और उपाचार्य पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा० नियत किये जाते हैं। यह प्रस्ताव सहर्ष प्रेमपूर्वक सर्वसम्मति से पास किया जाता है। (ता० ३-५-५२ प्रातःकाल)

प्रस्ताव १६-(व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल का चुनाव)

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल के १६ मन्त्रियों का चुनाव निम्न प्रकार हुआ:—

प्रधान-मन्त्री (१)—प० मुनि श्री आनन्दऋषिजी म० । सहायक-मन्त्री-(२) प० श्री हस्तीमलजी म० एव (३) पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी म०, (४) मुनि श्री पन्नालालजी म०, (५) मरुधर केशरी श्री मिश्रीलालजी म०, (६) प० मुनि श्री शुक्लचन्द्रजी म०, (७) प० मुनि श्री किशनलालजी म०, (८) धर्मोपदेष्टा श्री फूलचन्दजी म० (९) पं० मुनि श्री प्रेमचन्दजी म०, (१०) पं० मुनि श्री पृथ्वीचन्द्रजी म०, (११) पं० मुनि श्री घासीलालजी म०, (१२) प० मुनि श्री पुष्कर मुनिजी म०, (१३) प० श्री मोतीलालजी म०, (मेवाड़ी), (१४) पं० मुनि श्री समर्थमलजी म०, (१५) मुनि श्री छगनमलजी म०, (मरुधर), (१६) प० मुनि श्री सहस्रमलजी महाराज। (सर्व सम्मति से पास ता० ३ प्रातः)

प्रस्ताव २०—(मन्त्री-मण्डल का कार्यविभाग)

मन्त्रीमण्डल का कार्य विभाग निम्नानुसार है:—

प्रायश्चित	—	० मत्री श्री आनन्दऋषिजी महाराज पं० मुनि हस्तीमलजी "
२. दीक्षा	—	" समर्थमलजी " " सहस्रमलजी "
३. सेवा	—	" शुक्लचन्दजी " " किशनलालजी "
४. चातुर्मास	—	" प्यारचन्दजी " " पन्नालालजी "
५. विहार	—	" मोतीलालजी " " मिश्रीमलजी, महाराज

६. आक्षेप निवारक	—	पं० मुनि श्री पृथ्वीचन्दजी महाराज		
		"	मिश्रीमलजी	"
७. साहित्य-शिक्षण	—	"	घासीलालजी	"
		"	हस्तीमलजी	"
		"	पुष्कर मुनिजी	"
८ प्रचार	—	"	प्रेमचन्द्रजी	"
		"	छगनलालजी	"
		"	फूलचन्दजी	"

नोट:—इस मन्त्री-मंडल का कार्य तीन वर्ष तक रहेगा। यदि मन्त्री मडल में कोई मतभेद होगया हो तो आचार्य श्री फैसला करेंगे। मन्त्री-मण्डल यथाशक्य प्रति वर्ष मिले, अगर न मिल सके तो तीसरे वर्ष अवश्य मिलना ही होगा। कोई मन्त्री कारणवश नहीं पधार सकें तो अपनी सर्व सत्ता, अधिकार देकर प्रतिनिधि बनाकर भेज देवें। यह मन्त्री-मण्डल अखिल भारतीय श्री वर्द्धमान श्रमण संघ के शासन का उत्तरदायित्व वहन करेगा। आक्षेप निवारक मन्त्री, श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ पर आये हुए आक्षेपों का निराकरण करेंगे। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ प्रात:)

प्रस्ताव २१—(आचार्य-पद प्रदान विधि)

आचार्य-पद चद्दर की रस्म वैशाख शक्ला १३ (स० २००६) बुधवार को दिन के ११॥ बजे अदा की जायगी।

उसके पूर्व सब मुनि 'प्रतिज्ञा पत्र' मय दस्खत के तैयार रखेंगे, जो आचार्य-पद पर विराजते ही आचार्य श्री के चरणों में भेंट कर देंगे। (सर्व सम्मति से पास, ता० ५ प्रातः काल)

प्रस्ताव २२—(सघप्रवेश का प्रतिज्ञा-पत्र)

मैं मेरी सम्प्रदायिक पदवियाँ विलीनीकरण करके 'श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ' में प्रविष्ट होता हूँ। संघ के बधारणानुसार आचार्य और मन्त्री मडल की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करूंगा।

मैंने अपने आचार्य, गुरुजन तथा बड़े मुनिराज (प्रवर्तिनी, गुराणी तथा बड़ी साध्वी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आज तक मे लगे हुए जानते अजानते सभी दोषों की आलोचना कर ली है और छेद पर्यायवाद करके आज मेरी दीक्षा पर्याय की है।

मेरे भविष्य काल के चारित्र के सबध मे श्रमण स घ के आचार्य श्री और म त्रियों एवं गुरुजनों को कोई शंका उत्पन्न होगी तो वह सिद्ध होने पर आचार्य श्री और प्रायश्चित मंत्री की आज्ञानुसार मैं उसका प्रायश्चित करूंगा।

श्रमण संघ के बँधारण और समाचारी का मैं यथायोग्य पालन करूंगा।

मिति , हस्ताक्षर.........(इस प्रतिज्ञा फॉर्म के अनुसार ही इस नये सघ में सबको प्रविष्ट होना चाहिए) (सर्व सम्मति से पास ता० ४ प्रातः काल)

प्रस्ताव २३—(चातुर्मास की विनंती)

चातुर्मास सबधी विनती पत्र माघ शुक्ला १५ तक आचार्य श्री के पास भेज देने चाहिए। चा

श्री उन पर विचार विनिमय करके फाल्गुन शुक्ला १५ तक चातुर्मास मन्त्री के पास भेज देंगे और चैत्र शुक्ला १३ तक चातुर्मास मन्त्री चातुर्मास की घोषणा कर देंगे। (सर्व सम्मति से पास, ता० ५ प्रातःकाल)

प्रस्ताव २४—(श्रमण संघ की समाचारी)

बस्ती (मकान) सबंध में—स्थानक संबंधी निर्णय—

(१) पहले के जितने भी अलग २ सम्प्रदायों के श्रावकों के धर्म ध्यान करने के जो पंचायती स्थान (मकान) हैं, उनका वर्तमान में जो भी नाम हैं, उन सबका और भविष्य में भी श्रावक संघ धर्मध्यान करने के लिए जो स्थान (मकान) बनावें, उन सबका नाम "श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन स्थानक" रखना चाहिए। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रातःकाल)

(२) पहले के सभी धर्म ध्यान करने के स्थान (मकान) जिन २ के अधिकार में हैं, वे अधिकारी एक वर्ष में वे स्थान (मकान) "श्री वर्द्धमान स्थानक वासी जैन श्रावक संघ" को सौंप देवे। भविष्य में भी जो स्थान (मकान) पचायती रूप से धर्मध्यान करने के लिये बने, वे भी इस श्रावक संघ की अधीनता में रहें। पहिले के जो २ स्थान (मकान) एक वर्ष में इस श्रावक संघ को नहीं सौंपे जायेंगे तथा भविष्य में जो स्थान (मकान) पंचायती रूप से धर्मध्यान के लिए बनेंगे, वे इस श्रावक संघ के अधीन नहीं होंगे तो उनमें भी उक्त श्रमण संघ के साधु-साध्वी नहीं ठहरेंगे। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रातःकाल)

(३) शय्यान्तर-रात्रि प्रतिक्रमण से लेकर फिर आज्ञा वापिस लौटाने तक शय्यान्तरत्व स्वीकार किया जाय। आज्ञा लौटाने के बाद अगर उसी गांव में रहे तो आठ प्रहर तक शय्यान्तर के घर को टालना और यदि उस गांव से विहार करने जैसी स्थिति हो तो शय्यान्तरत्व नहीं रह जाता। (सर्व सम्मति से पास ता० ३०-४ ५२ मध्याह्न)

(४) कोई पंचायती मकान क्लेशवाला हो तो तत्कालीन परिस्थिति का विचार कर उसमें उतरना नहीं। (सर्व सम्मति से पास)

(५) जिस मकान में श्रृङ्गारादिक फोटू, चित्र या दर्पणादि पर आवरण डाल दिया हो या उतार लिया हो, उस मकान में साधु-साध्वी ठहर सकते हैं। निर्दोष स्थान न मिलने पर उपर्युक्त स्थान में ठहराना पड़े तो एक रात्रि से ज्यादा न ठहरें। (सर्व सम्मति से पास)

(६) जिस गांव में स्थानापन्न (ठाणापति) साधु-साध्वी हो, उस गांव में यदि साधु-साध्वी विहार करते २ पधारें तो स्थापन्न साधु साध्वी के स्थान पर ही उतरें। स्थान संकोच के कारण यदि अन्य स्थान पर उतरना भी पड़े तो उनकी सेवा में बाधा न पड़े इसको दृष्टि में रखकर उनकी आज्ञा से उतर सकते हैं। (सर्व सम्मति से पास)

(७) गांव में विराजते समय अन्य वृद्ध, तपस्वी तथा रोगी साधु साध्वियों की खबर पूछ-ताछ और यथाशक्य सेवा करना (अन्योन्य के स्थानक पर जाते समय समझदार स्त्री या पुरुष को साथ में रखना) (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव २५—(वस्त्र पात्र सम्बन्धी)

(१) एक साधु या साध्वी चार पात्र से अधिक न रखें। यदि कारणवश एकाध पात्र अधिक रखना पड़े तो आचार्य श्री तथा तत्सम्बन्धी अधिकारी मन्त्रीजी की आज्ञा से रख सकते हैं।

(२) पात्रों को सफेदा, वेलतेल व वारनिश के सिवाय रंग चढाना नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रातःकाल)

(३) साधु ७२ हाथ और आर्याजी ६६ हाथ से अधिक वस्त्र रखें नहीं। रोगादि कारणवश अधिक रखना पड़े तो आचार्य श्री तथा तत्संबंधी मुनि की आज्ञा लेकर रखें।

(४) रंगीन या रंगीन किनारी वाले वस्त्र वापरना नहीं।

(५) अति बारीक वस्त्र जिसमें अंग दिखाई दें, ऐसे वस्त्र की चादर ओढ कर ठहरे हुए स्थान से बाहर गोचरी आदि के लिए जाना नहीं।

(६) वस्त्र पड़िहारा लेकर वापरना नहीं।

(७) धातु का पात्र कारणवश पड़िहारा लाये हों तो सूर्यास्त के पहले वापस दे देना। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मध्याह्न)

प्रस्ताव २६—(गोचरी विषयक)

(१) एषणा के ४२ दोष टालकर प्रासुक और ऐषनिक आहार-पाणी साधु-साध्वी अपनी आवश्यकतानुसार लेवे, परन्तु नित्य प्रति एक ही गृहस्थ क घर से बिना कारण आहार लेवे नहीं।

(२) चुलिया (चणिवारा) वाले किंवाड़, जमीन से घिसते हुए किंवाड तथा लम्बे अर्से से बन्द हों ऐसे किंवाड खुलवा कर कोई चीज लेना नहीं। गृहस्थ के बन्द किंवाड़ खोलकर प्रवेश करना नहीं (जाली आदि का आगार)

(३) पड़िहारी लाई हुई औषधि सूर्यास्त के पहले वापस दे देना। कारणवश पहुँचाया न जा सके या रखना जरूरी हो तो पास के किसी गृहस्थ के मकान में अथवा सेवा में (साथ में) रहने वाले भाई को दे देवें।

(४) गोचरी आदि ऐषणा के लिए गए हुए साधु साध्वी गृहस्थों के साथ वार्तालाप करने के लिए ठहरें नहीं और न बैठें ही। (सर्व सम्मति से पास ता० १० मध्याह्न)

(५) पारस्परिक क्लेश की क्षमायाचना करके आहार-पानी करना।

(६) दो गाउ (२ कोस) से ऊपर ले जाकर आहार-पानी करना नहीं तथा प्रथम प्रहर का चतुर्थ प्रहर में करना नहीं।

(७) गोठ,दया, नवकारसी, स्वामी वात्सल्य, संघ, विवाह, प्रीतिभोज, मृत्युभोज आदि जीमणवारों में गोचरी जाना नहीं। अनजान से उस तरफ गया हो तो बिना लिये वापस लौट जाय।

(८) (एक दिन पहले का अचित्त जल (धोवणादि) अथवा वर्ण-गंध-रस चलित आहार ग्रहण करना नहीं।

(९) प्रत्येक साधु की एक दिन में ३ धार विगय से अधिक नहीं लगाना और प्रणीत आहार प्रति दिन नहीं लिया जाय। (वृद्ध, ग्लान, तपस्वी, विद्यार्थी का आगार) (सर्व सम्मति से पास ता० १ मई)

(१०) साधु-साध्वी बाहर गाँव से दर्शनार्थ आये हुए गृहस्थियों से आहार ले सकते हैं। इसमें दिनों की मर्यादा की आवश्यकता नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० ५)

प्रस्ताव २७—(प्रकीर्णक)

(१) सुबह का व्याख्यान और दोपहर का शास्त्रादि वांचन या चौपाई जो करीबन दो घण्टे तक होता है, उस समय के उपरान्त साधुओं के मकान में साध्वियों को और स्त्रियों को नहीं बैठना चाहिए और साध्वियों के स्थान में पुरुषों को नहीं बैठना चाहिए यदि किसी खास कारण से बैठना ही पड़े तो साधुजी के मकान में

समझदार पुरुष की और साध्वीजी के मकान में समझदार स्त्री की साक्षी के बगैर नहीं बैठना चाहिए। मंगलिक श्रवण, प्रत्याख्यान तथा सथारे के समय का आगार। (सर्व सम्मति से पास ता० ३ मध्याह्न)

(२) अकेला मुनि, अकेली साध्वी या अकेली स्त्री के साथ बात करें नहीं। इसी तरह अकेली साध्वीजी अकेले साधु का अकेले पुरुष से बात-चीत नहीं करें। (एकान्त स्थान में स्त्री के पास खड़ा रहना या बैठना भी नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० २)

(३) नासिका (तमाखू) सूघने की नई आदत डालना नहीं। पहले की आदत छोडना। नहीं छूटे तो चौविहार के पच्चक्खाण के बाद सूघना नहीं।

(४) "श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ" से बाहर किये हुए साधु-साध्वी के साथ आहार पानी करना नहीं, वन्दना व्यवहार, व्याख्यान, स्वाध्य, पठन-पाठनादि सहयोगी व्यवहार भी करे नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० १ मध्याह्न)

(५) साधु-साध्वियों को रुपये के लेन-देन मे हस्तक्षेप करना नहीं। पुस्तक, शास्त्रादि खरीदने या छपाने के लिए किसी आदमी को रखकर लेन-देन कराना नहीं।

(६) साधु साध्वियों ने कोई गद्य-पद्य साहित्य तैयार किया हो, वह तत्सम्बन्धी मन्त्री अथवा प्रकाशन समिति के पास पहुचाना, योग्य साहित्य वहां से प्रकाशित होगा, परन्तु छापने-छपाने की प्रवृत्ति में साधु-साध्वी को भाग लेना नहीं।

(७) धातु की कोई चीज साधु-साध्वी अपनी नेश्राय में रक्खें नहीं।

(८) पोस्ट की टिकिट अथवा टिकिट वाले कार्ड कवर साधु-साध्वी रक्खे नहीं तथा गृहस्थ स्त्री-पुरुषों को अपने हाथ से पत्र लिखना नहीं।

(९) विना कारण साधु-साध्वी दर्शनादि के नाम से गृहस्थ के घर जावे नहीं।

(१०) साधु-साध्वी को छिद्रान्वेषी होना नहीं, पर निन्दा करना नहीं, कोई किसी से दोष हो गया हो तो आचार्य व तत्सम्बन्धी मन्त्री और सघाड़े के अग्रेसर के अलावा अन्य किसी के पास कहना नहीं।

(११) दोषों का प्रायश्चित्त हो जाने के बाद फिर कोई उसे प्रकट करें नहीं।

(१२) यत्र, मंत्र, तत्र, तावीज, जडी-बूटी, तेजी-मन्दी, फीचर आदि का प्रयोग बताना नहीं तथा ज्योतिष, औषधादि क्रिया का उपयोग गृहस्थ के लिए ससारविषयक करना नहीं।

(१३) साधु-साध्वी आपस मे व गृहस्थ को भी क्लेशवर्द्धक, कठोर एवं अपमानसूचक शब्द कहे नहीं। भूल से अपशब्द निकल जाय तो क्षमायाचना करें।

(१४) दिन मे बगैर कारण सोना नहीं। (वृद्ध, विहार, बीमार, तपस्वी का आगार) बगैर कारण सोना पड़े तो २५० गाथाओं का स्वाध्याय करें।

(१५) विना कारण तैल मर्दन करना नहीं, कराना नहीं और अजन आंजा नहीं।

(१६) जहां तक बन सके (यथाशक्य) सब वस्त्र पात्रो का दो वक्त प्रतिलेखन करना।

(१७) स्थविर, बीमार अथवा तपस्वी की सेवा में मन्त्री जिसे रहने की आज्ञा दें, वे साधु या साध्वी सहर्ष साथ रहकर सेवा करें। वैयावच्ची साधु-साध्वीजी का बने वहा तक प्रतिवर्ष स्थान परिवर्तन कर देना। (अपवाद रूप मे प्रवर्त्तकजी का निर्णय सब साधु-साध्वी मान्य रखेंगे)

(१८) सिर के बालों का वर्ष में दो बार लोच करना। (वृद्ध मुनि अथवा जिसके कम बाल बढ़ते हों, वे भले ही एक बार करें, परन्तु युवक साधु को तो दो बार करना ही चाहिए। संवत्सरी के दिन गाय के रोए जितने भी बड़े बाल किसी साधु-साध्वी के सिर पर नहीं रहने चाहिए।

(१९) तपस्या, दीक्षा-महोत्सव, संवत्सरी क्षमापना, दीपावली के आशीर्वाद आदि की पत्रिकाएं साधु-साध्वी अपने हाथ से गृहस्थ को लिखे नहीं, छपावे नहीं तथा दर्शनार्थ बुलावे भी नहीं।

(२०) फोटू खिंचवा नहीं, पाट, गादी, पगले आदि की जड़ मान्यता करना नहीं, कराना नहीं। समाधि, पगला और गुरु के चित्रों को धूप, दीप अथवा नमस्कार करने वाले को उपदेश देकर रोकना।

(२१) वस्त्र के, कंतान के, रबर के अथवा अन्य प्रकार के जूते अथवा मौजे पहनना नहीं।

(२२) गृहस्थ से हाथ, पांव या सिर दबवाना नहीं अथवा किसी प्रकार की सेवा कराना नहीं।

(२३) अविश्वासी घर अथवा दुकान पर किसी साधु-साध्वी को जाना नहीं। जिसके लिए रुपया आदि दिलाने का संकेत करना पड़े, ऐसे गृहस्थ पुरुष या स्त्री को साधु-साध्वीजी के पास रखे नहीं। (सर्व सम्मति से पास ता० २ मई प्रातःकाल)

(२४) गृहस्थ लोग अपने उत्सव के निमित्त जो सभा-मण्डप या मंच तैयार करें, उसका श्रमण-संघ व्याख्यान आदि के लिए उपयोग में ला सकते हैं। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ मध्याह्न)

(२५) जिस क्षेत्र में वयोवृद्ध सन्त व शारीरिक कारण से सन्त विराजित हों वहां पर विदुषी प्रभाविका सतिजी का आगमन हो गया हो और श्री संघ विदुषी सतिजी का व्याख्यान श्रवण करने के लिए उत्सुक हो तो वहां विराजित सन्तों की अनुमति से अवसर देखकर व्याख्यान दे सकते हैं। अवसर देखकर अन्य मुनि भी अनुमति देने की उदारता करें। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न)

प्रस्ताव २८—(सम्यक्त्व (समकित) देना)

सम्यक्त्व देते समय देव के रूप में वीतराग देव को देव तरीके स्वीकार कराना, पंच महाव्रत, पांच समिति, ३ गुप्ति का पालन करने वाले को गुरु तरीके स्वीकार कराना, 'अहिंसा परमो धर्म' को धर्म रूप में स्वीकार कराना, श्रमण संघ के आचार्य को धर्माचार्य के रूप में स्वीकार कराना। तीसरे पद में उनका नामोच्चार कराना। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ मध्याह्न)

प्रस्ताव २९—(श्रमण संघ में शामिल करना)

१ सादड़ी सम्मेलन में बृहत् गुजरात के सन्त (बरवाला के अतिरिक्त) नहीं पधारे हैं। स्थानकवासी जैन धर्म के एक प्रान्त के मुनियों का अलग रहना ठीक नहीं। यह सम्मेलन हृदय से चाहता है कि, गुजरात, कच्छ और सौराष्ट्र के मुनिवर इस श्रमण संघ में प्रविष्ट हो जावें। इसके लिए यह सम्मेलन यह चाहता है कि, चातुर्मास के बाद सं० २००९ के माघ मास तक गुर्जर प्रान्तीय सम्मेलन होकर वे सब श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ से संगठित हो जावें। कॉन्फरन्स और बृहत्-गुजरात के श्रावक इसके लिए पूर्ण प्रयत्न करें।

२. संघ से बाहर रहे हुए साधु साध्वियों को संघ में प्रवेश कराने का अधिकार दोनों आचार्य (आचार्य उपाचार्य) और प्रधान मन्त्री को दिया जाता है कि, वे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को देखकर उन्हें संघ में प्रविष्ट कर सकते हैं। उसे यह श्रमण-संघ स्वीकार कर सकेगा।

३. जिन-जिन सम्प्रदायों के मुनिवर इस संघ में प्रविष्ट हुए हैं, वे अपनी अपनी सम्प्रदाय के सन्त-सतियों को संघ के विधानानुसार संघ में प्रविष्ट कराने का यथाशीघ्र प्रयत्न करें। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न)

प्रस्ताव ३०—(पारस्परिक व्यवहार)

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ में प्रविष्ट होने वाले मुनियों के पारस्परिक ११ संभोग (व्यवहार) फरजियात होंगे (खुले रहेंगे) और बारहवां आहार पानी करने का मरजियात (ऐच्छिक) होगा। (सर्व सम्मति से पास ता० ४ रात्रि)

प्रस्ताव ३१—(श्रावक संघ को चेतावनी)

जो संघ सामूहिक रूप से इस श्रमण संघ के नियमों को बार-बार तोड़ेंगे, तो वहां चातुर्मास नहीं करना चाहिए। शेषकाल का आगार। (सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न)

प्रस्ताव ३२—(मंगल-कामना)

१. हम सब उपस्थित प्रतिनिधि मुनि हृदय से यह कामना करते हैं कि यह बृहत्साधु सम्मेलन सफल हो, साधु साध्वियों के लिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र में वृद्धिकारक हो, सर्वत्र प्रेमपूर्वक एकता का साम्राज्य स्थापित करने वाला बने ऐसी हम कामना करते हैं। आत्म साक्षी से हम सब अपने वचन पालन में सुदृढ़ रहें। (सर्व सम्मति से पास ता० ६-५-५२)। मंगल पाठ के साथ सम्मेलन की कार्यवाही शान्ति पूर्वक सफल हुई।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ का

विधान

उद्देश्य—वर्द्धमान स्था० जैन समाज में भिन्न २ सम्प्रदायों का अस्तित्व है। इन सम्प्रदायों में प्रचलित भिन्न २ परम्परा और समाचारी में एकता लाकर समस्त सम्प्रदायों का एकीकरण करना, परस्पर में प्रेम और ऐक्य की वृद्धि करना, संयम मार्ग में आई हुई विकृतियों को दूर करना और एक आचार्य के नेतृत्व मे एक और अविभाज्य 'श्रमण-संघ बनाना।

नाम—इस संघ का नाम 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ' रहेगा।

कार्यक्षेत्र—'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' का कार्य क्षेत्र इस प्रकार रहेगा:—

१—आत्म शुद्धि के लिये श्रद्धा, प्ररूपणा में एकता और चारित्र में शुद्धता एवं वृद्धि करना तथा शिथिलाचार एव स्वच्छन्दाचार रोकना।

२—समस्त साधु साध्वियों को सुशिक्षित तथा सुसंस्कृत बनाने के लिए व्यवस्था करना।

३—आगम-साहित्य का संशोधन व भाषान्तर करना तथा जैनधर्म के प्रचार के लिए रुचिवर्धक नया साहित्य निर्माण करना।

४—धार्मिक शिक्षण में वृद्धि हो ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करना।

५—जैन तत्त्वज्ञान का व्यापक प्रचार करना।

६—चतुर्विध श्री संघ में ऐक्य बढ़ाने के प्रयत्न करना।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ में प्रविष्ट होने की विधि

१—प्रत्येक सम्प्रदाय के साधु-साध्वीजी को अपनी अपनी साम्प्रदायिक पदवियों का विलीनीकरण करके (त्याग कर) उक्त संघ मे प्रविष्ट होने का प्रतिज्ञा-पत्र भरना पड़ेगा।

२—अपने गुरुजनों अथवा बड़े मुनिराज (साध्वीजी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आलोचना करके छेद पर्याय करके श्रमण संघ में प्रविष्ट होते समय पूर्व दीक्षा मानी जावेगी।

साधु-साध्वीजी को संघ में प्रवेश होते समय का प्रतिज्ञा-पत्र

मैं मेरी सम्प्रदाय, एवं साम्प्रदायिक पदवियों का 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' में प्रविष्ट होता हूँ। मैं संघ के बंधारण अनुसार आचार्य और मन्त्री मण्डल की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करूंगा।

मैंने अपने आचार्य, गुरुजन तथा बड़े मुनिराज (प्रवर्तिनी, गुराणी, बड़ी साध्वी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आज तक में लगे हुए जानते अजानते सभी दोषों की आलोचना कर ली है और छेद पर्याय बाद करते आज मेरी दीक्षा पर्याय.......................की है।

मंत्रियों, गुरुजनों तथा श्रमण संघ के आचार्य श्री को मेरे भविष्यकाल के चारित्र के सम्बन्ध में कोई शका उत्पन्न होगी तो उसका प्रायश्चित्त करूंगा।

श्रमण-संघ के बंधारण और समाचारी का मैं यथायोग्य पालन करूंगा।

ता०.................१६५६ हस्ताक्षर.....................

बंधारण

श्री 'वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ' का बधारण निम्न प्रकार का होगा:—

१-इस श्रमण सघ के 'एक आचार्य' रहेंगे। जिनकी नेश्राय में सघ के सब साधु-साध्वी रहेंगे।

२-आचार्य श्री अतिवृद्ध हों अथवा कार्य करने में अक्षम हों तो मन्त्री-मंडल 'उपाचार्य' नियुक्त करेगा और उपाचार्य श्री आचार्य श्री के सब अधिकार सम्हालेंगे।

३—आचार्यश्री की अनुपस्थिति में मन्त्री-मंडल आचार्य की नियुक्ति करेगा।

४—शासन की सुव्यवस्था के लिये तथा आचार्य श्री को मददरूप होने के लिये आचार्य श्री की इच्छा मूजब की संख्या का एक मन्त्री मण्डल होगा जो आचार्यश्री की आज्ञा के अनुसार कार्य करेगा। मन्त्री-मण्डल बनाते समय आचार्य श्री मुख्य २ मुनिराजों की सलाह लेंगे।

५-मंत्रियों के रिक्तस्थान की पूर्ति आचार्य श्री की सलाह अनुसार मंत्री-मंडल कर सकेगा।

६-मंत्री-मंडल की संख्या घटाने बढ़ाने और कार्य विभाग में आवश्यक फेरफार करने की सत्ता आचार्य श्री की होगी।

७-मंत्रीमंडल को आवश्यक विभाग सुपुर्द किए जायेंगे। मंत्री मंडल मे १ प्रधान मंत्री और प्रधान मंत्री की इच्छानुसार २ सहायक मंत्री होंगे।

८-प्रधान मंत्री, सहमंत्रियों के सहयोग से मंत्री-मंडल के कार्य की देखभाल करेंगे तथा समय २ पर आवश्यक समाचार आचार्य श्री को देते रहेंगे। आचार्य श्री की आज्ञा और सूचनाओं को मंत्रीमंडल कार्यान्वित करेगा।

९—मंत्रीगण एक से अधिक विभाग सम्भाल सकेंगे तथा सयुक्त विभाग की जवाबदारी ले सकेंगे।

१०—आचार्य श्री यावज्जीवन के लिये होंगे।

११—मंत्रीमंडल का कार्यकाल ३ वर्ष का रहेगा। तीन वर्ष के बाद आचार्य श्री मंत्रीमंडल चुनेंगे। उस समय मुख्य मुनिवरों की सलाह लेंगे।

पसंदगी

१-आचार्य श्री की पसन्दगी मंत्रीमंडल करेगा उनके रिक्तस्थान पर मंत्रीमंडल नई नियुक्ति कर सकेगा।

२-मंत्रीमंडल की सभा यथासमय प्रतिवर्ष अथवा तीन वर्ष में अवश्य होगी।

३-बृहत् साधु सम्मेलन प्रति ५ वर्ष में अथवा ७ वर्ष में तो अवश्य आचार्यश्रीजी, मंत्रीमंडल के परामर्श से करावेंगे।

कार्यप्रणाली—यथा संभव सभाओं का कार्य सर्वानुमति से होगा। बहुमत का प्रसंग आवे तो ३।४ बहुमत से अर्थात् ७५% से होगा।

आचार्य श्री का कर्तव्य और अधिकार

१—साधु साध्वियों के चातुर्मास के लिये श्री संघों से जो विनति पत्र आवेंगे उस पर अपनी सूचनाएं देंगे और प्रधान मंत्री के द्वारा चातुर्मास मंत्री को योग्य करने के लिए भिजवायेंगे।

२—मंत्रीमंडल और प्रधान मंत्री के कार्य की देखभाल करेंगे, और योग्य आज्ञा व सूचनाएं प्रधान मंत्री को भेजेंगे।

३-शेष काल और चातुर्मास में साधु साध्वियों का लाभ अधिक क्षेत्रों को मिले, धर्म का अत्यधिक प्रचार हो, ऐसी व्यवस्था प्रधान मंत्री द्वारा करायेंगे।

४-साधु साध्वियों के ज्ञान, दर्शन, चारित्र की वृद्धि के हेतु श्रद्धा, प्ररूपणा की एकता हेतु और चतुर्विध श्री संघ का उत्थान एवं कल्याण हेतु यथायोग्य कार्यवाही करते रहेंगे।

५—श्रमण संघ के सब साधु साध्वी पर आचार्य श्री का अधिकार होगा तथा दीक्षार्थियों की योग्यता देखकर दीक्षा की आज्ञा देंगे।

६—श्रमण संघ से बाहिर के साधु-साध्वियों को तथा संघ में मिलने की इच्छा रखने वाले अन्य साधु-साध्वियों को यथाविधि मिलाने का अधिकार आचार्य श्री को होगा।

७—प्रधान मंत्री और मंत्री-मंडल के कार्य को सुचारु रूप से चलाने और शासन की सुव्यवस्था के लिए आज्ञा व सूचनाएं दे सकेंगे।

उपाचार्य श्री के अधिकार एवं कर्त्तव्य

१—आचार्य श्री जितनी २ सत्ता और अधिकार देंगे तदनुसार अधिकारपूर्ण उत्तरदायित्वपूर्ण शासन सम्हालेंगे।

मन्त्री मण्डल के कर्तव्य एवं अधिकार

१-योग्यतानुसार सुपुर्द किये हुए विभागों का कार्य सम्भालना और उन्नति बनाने के लिए साधु-साध्वियों को आज्ञा और सूचना देते रहना आवश्यक है।

२-परस्पर मंत्रियों से सहकारपूर्ण कार्य करना।

३-आचार्य श्री और प्रधान मंत्री की आज्ञा एव सूचनाओं का पालन करना करवाना।

४-अपनी कार्यवाही और गति विधि से प्रधान-मंत्री तथा आचार्य श्री को सुपरिचित रखना।

प्रधान मंत्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१-आचार्य श्री या उपाचार्य श्री की आज्ञा और सूचनाओं का पालन करना और मंत्रियों से करवाना।

२-मंत्रीमंडल के कार्य पर देखभाल रखना, उचित आज्ञा सूचनाएं एवं परामर्श मंत्रियों को देते रहना।

३-सहमंत्रियों से परामर्श लेते रहना।

४-मंत्रीमंडल के कार्य से सुपरिचित रहना और मंडल की गतिविधि से आचार्य श्री जी को तथा उपाचार्यश्रीजी को सुपरिचित रखाना।

सहमंत्री का अधिकार और कर्त्तव्य

१-प्रधान मंत्री को हर कार्य में सहयोग देंगे।

२-अपने विभाग को उत्तरदायित्वपूर्ण सभालना।

मंत्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१—मंत्रियों के सुपुर्द अपने २ विभाग को सुचारु रूप से चलाना।

२—साधु-साध्वियो के साथ प्रेमपूर्ण रीति से आज्ञा पलवाना।

३—अपने सहकारी मंत्रियों के साथ स्नेहपूर्वक कार्य-संचालन करने में सहयोगी बनना।

४—अपने कार्य की गतिविधि से प्रधान मंत्रीजी को सुपरिचित रखना।

५—आचार्यश्रीजी और प्रधान मंत्रीजी की आज्ञा और सूचनाओं का यथायोग्य पालन करना, कराना। विधान में योग्य संशोधन करने की सत्ता आचार्य श्री को रहेगी। इसमें आचार्य श्री मंत्रीमंडल की सलाह लें।

प्रायश्चित्त और पृथक्करण

उत्तरगुण सम्बन्धी छोटे अपराधों का प्रायश्चित साधु-साध्वियों के साथ में विचरने वाले बडे साधु-साध्वी दे सकेंगे। उसकी सूचना प्रायश्चित्त मंत्री को दी जायगी।

बड़े (महाव्रत भग) के अपराधों का प्रायश्चित मंत्री द्वारा होगा। जिसकी सूचना प्रधानमंत्री और आचार्यश्री को देना होगा। चतुर्थव्रतभंग के प्रत्यक्ष अपराध का प्रायश्चित प्रधानमंत्री और आचार्य श्री की सलाह से होगा।

किसी मंत्री का अपराध हो तो प्रधान मंत्री द्वारा आचार्य श्री की सम्मति से प्रायश्चित्त होगा।

प्रधान मंत्री का अपराध हो तो आचार्य श्री द्वारा प्रायश्चित्त होगा।

आचार्य श्री को प्रायश्चित्त स्थान उपस्थित पर प्रधानमंत्री और सहमंत्रियों द्वारा प्रायश्चित्त होगा।

प्रायश्चित्त का निश्चय होने तक अपने साथ के साधु-साध्वी का आहार या वन्दना सम्बन्ध विच्छेद किया जा सकेगा। उसकी सूचना प्रायश्चित मंत्री को दी जानी चाहिये।

आचार्यश्री और प्रधान मंत्री की आज्ञा विना किसी साधु साध्वी को कोई पृथक नहीं कर सकेगा। (सर्वानुमति से पास ता० ६-५-५२)

नोट—प्र० न० १६ में प्रस्तावित १६ मंत्रियों में से प० मुनि श्री घासीलालजी म०, पं० मुनि श्री समर्थमलजी म० और पं० मुनि श्री छगनलालजी म० को स्वीकृति न मिलने से मंत्री मंडल १३ मुनिवरों का रहा।

सम्मेलन की पूर्णाहुति के बाद वै० शु० १५ सं० २००६ को चतुर्विध सघ के अभूत पूर्व आनन्द और उत्साह पूर्वक जैन धर्म दिवाकर, आगमवारिधि पूज्य श्री आत्मारामजी म० सा० को आचार्य पद और परम प्रतापी उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० सा० को उपाचार्य पद प्रदान करने का महोत्सव किया गया। आचार्य श्री की चादर पंजाब के मंत्री पं० मुनि श्री शुक्लचन्द्रजी महाराज को सुपुर्द की गई।

संगठित श्रमण-सघ के अलौकिक आनंद के साथ सम्मिलित साधु-साध्वी चातुर्मास के लिये अपने अपने निर्धारित स्थान के प्रति विहार कर गये।

कॉन्फ्रन्स ने भी स्थान स्थान पर श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघों का निर्माण करने तथा असम्मिलित साधु-साध्वियों को श्रमण-संघ में सम्मिलित करने के भरसक प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये।

सादड़ी सम्मेलन में ११ दिनों में मुनिवरों ने यथाशक्य आदर्श कार्यवाही की। फिर भी कुछ बातें विचारणीय रह गई थीं। इस पर निर्णय करने और नव-निर्मित श्रमण-सघ को सुदृढ़ बनाने की भावना से चातुर्मास के बाद ही मंत्री मुनिवरों का और विधि निर्णय तथा सचित्ताचित्त निर्णय समिति के मुनिवरों का सम्मेलन करने का निर्णय किया गया।

सोजत के श्री संघ ने अपने आंगन में यह सम्मेलन होने में अपना सद्भाग्य बनाया। अतः सोजत संघ का आमंत्रण स्वीकार किया गया।

सादड़ी सम्मेलन में नहीं पधारे हुए पं० मुनि श्री समर्थमलजी महाराज ने कतिपय खुलासे चाहे थे अतः उन्हें रूबरू में बुलाये। कुछ दिन सोजत रोड़ प्रेमपूर्वक वार्तालाप होता रहा और सोजत में मन्त्री मुनि सम्मेलन में शामिल होने का कहा गया।

सं० २००९ माघ शु० २ की प्रारंभ तिथि निश्चित हुई। मुनिराज यथा समय पधार गये और निम्न प्रकार कार्यवाही हुई:—

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रमण-संघ के

मंत्री मुनिवरों की तथा निर्णायक-समितियों की बैठक

[स्थान—सोजत (मारवाड़) सं० २००९ माघ शुक्ला २ ता० १७-१-५३ से ता० ३०-१-५३ तक]

निम्न मंत्री मुनिवरों की उपस्थिति थी:—

(१) प्रधान मंत्री पण्डित रत्न श्री आनन्दऋषिजी महाराज (२) सहमंत्री-पण्डित मुनिश्री प्यारचंदजी म० (३) सहमंत्री-पं० मुनिश्री हस्तीमलजी म० (४) मंत्री मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज (५) मंत्री मुनि श्री शुक्लचंद्रजी म० (६) मंत्री मुनि श्री प्रेमचंद्रजी महाराज (७) मंत्री मुनि श्री पुष्करमुनिजी म० (८) मंत्री मुनि श्री सहसमलजी म० (९) मंत्री मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० के प्रतिनिधि मुनि श्री लालचंदजी महाराज (११) मंत्री मुनि श्री किशनलालजी म० सा० के प्रतिनिधि मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज (११) मंत्री मुनि श्री पृथ्वीचंद्रजी म० सा० के प्रतिनिधि मुनि श्री सरेमलजी महाराज (१२) पण्डित मुनि श्री समरथमलजी महाराज (आमंत्रित) (१३) पण्डित मुनि श्री मदनलालजी महाराज (आमन्त्रित) (१४) कवि मुनि श्री अमरचंद्रजी महाराज (आमन्त्रित)।

मंत्री मुनि श्री मोतीलालजी महाराज सा०, प० फूलचंदजी म० सा० और प० छगनलालजी म० सा० के पत्र आये थे।

सचित्ताचित्त निर्णायक समिति ६ तथा तिथि निर्णय समिति ८ सभी मुनिसदस्य उपस्थित थे। उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० सा० की अध्यक्षता और व्या० वा० प० मुनि श्री मदनलालजी म० सा० की शान्ति रक्षकता में मंत्री मंडल तथा दोनों निर्णायक समितियों का कार्य संयुक्त रूप से चला। समय-प्रातः काल ९ से १०॥ और दुपहर में १ से ३ तक कार्य चलता था। कभी २ घण्टाभर अधिक बैठक चलती थी। कुल ३३ प्रस्ताव पास हुए जिसमें से प्रकाशन योग्य २५ प्रस्ताव निम्न प्रकार प्रकाशित किये जाते हैं।

प्रस्ताव १—(पास हुए प्रकाशनीय प्रस्ताव)

(अ) जो प्रस्ताव पास होंगे वे शास्त्र को मुख्य रूप से लक्ष्य में रखकर सर्वानुमति से या बहुमति से अर्थात् जो प्रस्ताव ऐसे प्रसंग पर पहुंच जांय कि उसे बहुमत से पास करना आवश्यक हो जाता है तो वह बहुमत से पास किये जा सकते हैं। बहुमत से तात्पर्य ३/४ अर्थात् ७५ प्रतिशत से लिया जायगा। (सर्वानुमति से पास)। (पण्डित मुनि समर्थमलजी महाराज का समर्थन भी प्राप्त हुआ।)

(ब) भिन्न २ आचार्य भी शास्त्र में चले हैं परन्तु श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रमणसंघ में एक आचार्य रहे इस हद तक मेरा उससे विरोध नहीं है। शास्त्रानुसार एक आचार्य भी हो सकता है।

(इस प्रस्ताव पर भी पण्डित समर्थमलजी म० का समर्थन प्राप्त हुआ)।

प्रस्ताव २—सादड़ी सम्मेलन के प्रस्ताव नं० ८, ९, १०, १८, १९, २० जो मन्त्री मण्डल के हैं, उन पर उक्त टिप्पणी के साथ पण्डित समर्थमलजी म० का समर्थन प्राप्त हुआ। शास्त्रीय पदवियों की तरफ श्रमण-संघ की उपेक्षा बुद्धि नहीं है। भविष्य में उन पर विचार किया जायेगा और वर्तमान में भी चालू है।

प्रस्ताव ३–साधु-साध्वी बाहर गांव से दर्शनार्थ आये हुए गृहस्थियों से तीन दिन पहले आहार (भोजन) पानी नहीं ले सकते हैं। ग्रामानुग्राम विहार करते समय साथ में रहने वाले या सामने आने वाले गृहस्थों का आहार पानी नहीं लेवें। (सर्वानुमति से पास)।

प्रस्ताव ४–(मन्त्री मंडल का कार्यक्रम इस प्रकार है)

प्रान्तवार प्रत्येक मन्त्रियों को दीक्षा, प्रायश्चित और साहित्य शिक्षण को छोड़कर अवशेष पांचों कार्य जैसे चातुर्मास, विहार, सेवा, आक्षेप निवारण और प्रचार कार्य सर्व सत्ता के रूप में सौंपे जाते हैं और मंत्रियों का संबंध श्री प्रधानमंत्रीजी म० से रहेगा और प्रधानमंत्रीजी मं० आचार्य व उपाचार्य श्रीजीकी आज्ञा प्राप्त करेंगे। दीक्षा तथा प्रायश्चित का कार्य स्वतन्त्र रूप से प्रधानमंत्री के जिम्मे रहेगा। साहित्य शिक्षण संबधी कार्य मुनिजी श्री सुशील कुमारजी को सौंपा जाता है वे चाहें तो अन्य साथी मुनिवरों का सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। वे प्रधानमंत्रीजी को दिखावें और उनके द्वारा प्रामाणित हुए विना प्रकाशित न हों।

प्रान्तों का नाम	मंत्री मुनिवरों के नाम			
१. अलवर, भरतपुर, यू० पी०	पं० मत्री श्री	पृथ्वीचंदजी	महाराज
२ पंजाब, जंगलदेश	" " "	शुक्लचंदजी	"
३ दिल्ली, बांगड़, खादर, हरियाणा	" " "	प्रेमचंदजी	"
४ बीकानेर, स्थली प्रान्त	" " "	सहस्रमलजी	"
५ मारवाड़, गौड़वाड़	" " "	मिश्रीमलजी	"
	स०मंत्री पं०	हस्तीमलजी	"
६ अजमेर, मेरवाड़ा, किशनगढ, जयपुर, टोंक, माधोपुर आदि	पं० मंत्री श्री	पन्नालालजी	"
७ मध्यप्रदेश, (सी० पी) महाराष्ट्र	" " "	किशनलालजी	"
८ मध्यभारत, बंबई, ग्वालियर, कोटा आदि	स० मंत्री श्री	प्यारचंदजी	"
९ कर्नाटक, मद्रास, आन्ध्र, मैसूर	पं० मत्री श्री	फूलचंदजी	"
१० मेवाड़, पंचमहल	" " "	मोतीलालजी	"
		पुष्करमुनिजी	"
११ गुजरात, काठियावाड, कच्छ		केन्द्रीय	

नोट—उपरोक्त मंत्रियों को पांचों कार्य आगामी मन्त्री-मण्डल की बैठक तक सर्वसत्ता के रूप में सौंपा जाता है। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ५–(पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए निम्न साधु एवं श्रावकों की एक कमेटी बनाई गई)

कविवर्य श्री अमरचंदजी महाराज, सह मन्त्री श्री हस्तीमलजी महाराज, पण्डित श्रीमलजी महाराज, पण्डित सुशीलकुमारजी महाराज। गृहस्थों में से—पण्डित शोभाचन्द्रजी भारिल्ल, डॉ इन्द्र एम० ए०, पण्डित पूर्णचन्दजी दक, श्री धीरजभाई और पण्डित बद्रीनारायणजी शुक्ल। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ६–(जैन सिद्धान्त की जानकारी के बाद कोई संस्कृत आदि की उच्च परीक्षा देना चाहे तो मुनि धर्म की मर्यादा में दी जा सकेगी। किन्तु आचार्य, उपाचार्य, प्रधान मन्त्रीजी की अनुमति अवश्य प्राप्त करनी होगी। आचार्य आदि योग्यतानुसार जिस परीक्षा के लिये अनुमति दें—उसी परीक्षा में वह बैठ सकेगा। सिद्धान्त की जानकारी का परीक्षण प्रधान मन्त्रीजी करेंगे। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ७–(श्रमणसंघ में जो मंत्री मुनि सम्मिलित नहीं हुए उनके लिए निम्न प्रस्ताव पास हुआ)

अनुपस्थित मंत्रियों मे श्रमणसघ में जो अभी तक प्रविष्ट नहीं हुए हैं और उल्टा विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं, यदि वे अपना विरोध पहले वापिस लेकर चातुर्मास के पहले श्रमण सघ के विधानानुसार श्रमण सघ में प्रविष्ट होना चाहे तो वे प्रविष्ट हो सकते हैं अन्यथा वे और उनके सहयोगी साधु साध्वी श्रमण सघ से अलग समझे जावेंगे।

प्रस्ताव ८–(ब) जो मत्री पद की स्वीकृति के साथ श्रमण सघ मे प्रविष्ट होने की स्वीकृति नहीं दे रहे हैं परन्तु विरुद्ध प्रचार भी कर रहे हैं, वे चातुर्मास के पहले श्रमण सघ के विधानानुसार श्रमण सघ में प्रविष्ट होने की स्वीकृति दे दें अन्यथा वे और उसके सहयोगी साधु साध्वी श्रमण सघ से अलग समझे जावेंगे।

प्रस्ताव ९–तिथि पत्र निकालने के लिए ५ मुनियों की समिति तैयार की गई—प० मत्री मुनि श्री पन्नालालजी महाराज, प० मुनि श्री किस्तूरचंदजी महाराज, पण्डित समर्थमलजी महाराजमरुधर केसरी मत्री मुनि श्री मिश्रीलजी महाराज और सह मन्त्री श्री हस्तीमलजी महाराज।

तिथि पत्रिका के निर्माण के सम्बन्ध मे सब अधिकार उक्त मुनिराजों की समिति को सौंपे जाते हैं। यह पत्र हो सके जहां तक आश्विन शु० पूर्णिमा के पहले-पहले तैयार हो जाना चाहिये। यह तिथि पत्र श्री वर्द्ध० स्था० जैन चतुर्विध श्री सघ को मान्य होगा। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव १०—तिथि पर्व निश्चय एवं सचित्ताचित्त निश्चय का निर्णय अगले मत्रीमंडल पर रखा जाता है। जब तक दोनों पक्ष वाले अपना-अपना मत निबन्ध के रूप मे श्री प्रधानमंत्रीजी के पास भेजें। जब तक उक्त निर्णय न हो तब तक ध्वनि विस्तारक यत्र मे न बोला जाय, उसी प्रकार केला भी न लिया जाय। तिथि पर्व के सम्बन्ध मे तब तक तिथि निर्णायक समिति अपना काम करे। (सर्वानुमति से पास)

प्रस्ताव ११—सादडी सम्मेलन मे जिन जिन सम्प्रदायों के प्रतिनिधि जितने साधु साध्वियों की तरफ से आये थे और विलीनीकरण करके श्री वर्द्धमान जैन श्रमण सघ मे सम्मिलित हुए हैं उन सब साधु साध्वियों को इस श्रमण संघ मे सम्मिलित समझे जावें। जिन्होंने प्रतिज्ञा पत्र नहीं भरे हैं उनसे प्रतिज्ञा पत्र भरवाने का प्रयत्न किया जावे।

प्रस्ताव १२–सादडी साधु सम्मेलन के पश्चात् हमारे धर्म के निम्न सितारे देवलोकवासी हो गये हैं उनके वियोग से यह मत्री मंडल हार्दिक दुःख प्रदर्शित करता है। उनकी आत्म शान्ति चाहता है और उनके सत परिवार तथा साध्वी परिवार के साथ संवेदना प्रकट करता है—"श्री बोथलालजी महाराज, ब्यावर, २ श्री शान्तिलालजी महाराज, बीकानेर ३ श्री प० चौथमलजी महाराज, जोधपुर ४ श्री धनराज जी महाराज, जोधपुर ५ श्री मगनमलजी महाराज सम्मेलन के पूर्व। महासतियाजी—१ पतासांजी बगडी, २ केशरकवरजी नयाशहर, ३ चान्दाजी लुधियाना, ४ गुलाबकवरजी पाली सडक, ५ हेमकवरजी धासिया, ६ गुलावकवरजी पीपाड, ७ फूलकवरजी पूना, ८ सुन्दरकवरजी मन्दसोर, ९ पानकवरजी जोधपुर, १० खामाजी भोपालगढ़ आदि स्वर्गस्थ मुनिराज एव महासतियाजी म०। (सर्वानुमति से पास)

प्र० १३ मे नवदीक्षितों के लिए शुभकामना प्रकट की गई। प्र० १४ में परीक्षा फल के लिए कविवर्य श्री अमरचन्दजी म० की नियुक्ति। प्र० १५ में दीक्षार्थियों को प्रधान मत्री की आज्ञा प्राप्ति के लिए। प्र० १५ व्या० वा० प० श्री मदनलालजी म० को सुचारुरूप से मत्री मडल की व्यवस्था करने पर धन्यवाद दिया गया प्र० १७ गुमनाम पत्र के द्वारा कोई आक्षेप करेगा तो उस पर ध्यान न देने के विषय में। प्र० १८ व्या० वा० मदनलालजी म० तथा कविवर्य श्री अमरचन्दजी म० का आभार माना गया। प्र० १९ मे दोनों समितियों के सदस्य मुनियों को दिया गया। प्र० २० दर्शक मुनियों को धन्यवाद दिया गया। प्र० २१ मे रिपोर्टर प० मुनि श्री नेमीचंदजी म० तथा पं० मुनि श्री आईदानजी म० को धन्यवाद दिया गया। मगल कामना के साथ म० म० की कार्यवाही पूर्ण की गई।

परिच्छेद—६

श्री स्थानकवासी जैनधर्म के उन्नायक मुनिराज

१—पंजाब के पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज

पूज्य श्री लवजी ऋषि जी महाराज के १०वे पट्टधर आचार्यरूप मे पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज प्रसिद्ध हुए। आपकी जन्मभूमि अमृतसर थी। आपकी दीक्षा वि० स० १८६८ मे हुई थी। अपने प्रचण्ड प्रभाव से पंजाब में आपने धर्म-प्रचार किया और वि० स० १९१३ मे अमृतसर मे ही आपका स्वर्गवास हुआ। पंजाब सम्प्रदाय आपको ही अपना आद्य-आचार्य मानती है। पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के मुनि रामबक्षजी आदि कितने ही मुख्य शिष्य थे जिनमे चार प्रधान थे —

पूज्य काशीराम जी महाराज, पूज्य मोतीलाल जी महाराज, पूज्य मयाराम जी महाराज और पूज्य लालचन्द जी महाराज।

पूज्य मयाराम जी महाराज और लालचन्द जी महाराज ये दोनों मुनिराज उस समय के बड़े ही प्रभावशाली सन्त थे। मारवाड से लेकर अम्बाला तक पू० मयाराम जी महाराज के अपूर्व तेज का प्रसरित था।

श्री लालचन्द जी महाराज का अधिक वर्चस्व पश्चिमी पजाब पर था। स्यालकोट मे अन्तिम स्थिरवास करने के कारण आपका प्रचार वहीं के आसपास के क्षेत्रों मे अधिक हुआ। आपके मुख्य चार शिष्य थे जिनमे तीसरे श्री गोकुलचन्द जी महाराज थे। गोकुलचन्द जी महाराज के शिष्य जगदीश मुनि और जगदीश मुनि के शिष्य विमल मुनि इस समय विचर रहे हैं। आप प्रभावशाली वक्ता और धर्म प्रचारक हैं। आपको जैन समाज की ओर से 'जैन भूषण' की उपाधि प्रदान की गई है। पंजाब, दिल्ली और काश्मीर-जम्मू के प्रदेशों मे घूम-घूम करके जैन एव जैनेतरों मे अहिंसा धर्म का ध्वज फहरा रहे हैं। आप के व्याख्यानों मे दस-दस हजार की जनमेदिनी उमड़ पड़ती है। काश्मीर के प्रधान मंत्री बक्षी गुलाम मुहम्मद भी आपका व्याख्यान श्रवण करने के लिए पधारते हैं।

लालचन्द जी महाराज के प्रथम शिष्य लक्ष्मीचन्द जी महाराज थे, जिनके शिष्य रामस्वरूप जी महाराज हुए। आपके जीवन मे एक विलक्षण घटना घटित हुई। दीक्षा के दो वर्ष बाद लक्ष्मीचन्द जी मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मे सम्मिलित हो गये और रामस्वरूप जी को भी अपनी ओर खींचने का प्रयत्न किया। किन्तु रामस्वरूप जी तो शुद्ध और सत्य धर्म मे दृढ़तारूप से आस्थावान् थे, अत अपनी श्रद्धा से विचलित नहीं हुए। गुरु के चले जाने पर भी शिष्य ने अपनी शान नहीं छोडी। अन्त मे आपने नाभा में स्थिरवास किया। आपके अनेक शिष्य हुए जिनमे कविवर अमर मुनि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपका असामयिक अवसान हुआ जिससे देश तथा समाज ने एक अमूल्य रत्न गुमा दिया। आप समाज की एक दिव्य विभूति थे और संत-परम्परा की एक सुदृढ़ कड़ी के समान थे। आप अहिंसा के प्रचारक, शान्ति के प्रकाशक, आत्मा के उजालक और हृदय के धनी थे। आपने लगभग सात लाख लोगों को मांस-मदिरा का

त्याग कराया था। खन्ना जैसे नगर को जैन-धर्म के रंग मे रग देने का श्रेय इसी शातमना महात्मा का ही काम था। यदि कुछ और समय तक यह महात्मा जीवित रह पाता तो समाज और अधिक सुख की छाया मे विश्रांति लेता।

मयाराम जी महाराज के बड़े-बडे तपस्वी शिष्य हुए—उनमे श्री वृद्धिचन्द्र जी महाराज और उपाध्याय मुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज विशेष प्रसिद्ध हैं।

२—पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज

पूज्य श्री सोहनलालजी महाराजने वि० स० १९३३ में पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज सा० से दीक्षा ग्रहण की। शास्त्रों का गहरा अध्ययन कर अत्यन्त कुशलतापूर्वक आपने आचार्यपद पाया। आप जैन आगमों के विशेषज्ञ थे, ज्योतिष शास्त्रों के विद्वान् थे और बड़े क्रियापात्र आचार्य हुए। आप की सगठन-शक्ति असाधारण थी। हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी मे आप के नाम से श्री पार्श्वनाथ विद्यालय की स्थापना की गई है, जिसमे जैन धर्म के उच्च स्तर का शिक्षण दिया जाता है। संस्था की तरफ से "श्रमण" नाम का मासिक पत्र निकाला जाता है।

३—गणिवर्य श्री उदयचन्दजी महाराज

गणिवर्य श्री उदयचन्दजी महाराज का जन्म ब्राह्मण कुल मे हुआ था। संस्कारों के अनुसार उच्च शिक्षण प्राप्त कर और जैन-श्रमण वनकर आगमोंका गम्भीर अध्ययन और मनन किया। मूर्तिपूजा के सम्बन्ध मे शास्त्रो के आधार पर अनेक प्रसिद्ध आचार्यों से चर्चा कर अपने सैद्धान्तिक पक्ष को सुदृढ़ वनाया। अजमेर सम्मेलन मे आप शान्ति-रक्षक के रूप में नियुक्त किये गए थे। पजाब के समस्त समाज ने गणिवर्य के रूप मे आपको स्वीकृत किया था। जैन एव जैनेतरों पर आपका अद्भुत प्रभाव था। इस प्रकार ८५ वर्ष की पकी हुई अवस्था मे पण्डित-मरणपूर्वक दिल्ली मे कालधर्म को प्राप्त हुए।

४—पूज्य श्री काशीरामजी महाराज

पूज्य श्री काशीरामजी म० सा० का जन्म पसरूर (स्यालकोट) में स० १९६० मे हुआ था। अठारह वर्ष की अवस्था मे पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज के चरणों मे आपने दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के केवल नौ वर्ष पश्चात् ही आपके लिए भावी आचार्य होने की घोषणा कर दी गई थी। इस पर से यह जाना जा सकता है कि आपकी आचारशीलता तथा स्वाध्याय-परायणता कितनी तीव्र थी। आपकी आवाज खूब बुलन्द थी। अनेक गुणसम्पन्न होते हुए भी आप अत्यन्त विनम्र थे। आपने पंजाब, यू० पी०, राजस्थान, गुजरात और दक्षिण आदि सर्व प्रदेशों मे विचरण किया। अत्यन्त भव्य समारोह के साथ होशियारपुर मे आपको आचार्य-पद दिया गया। वीर-सघ की योजना मे शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्र जी महाराज सा को आपने खूब सहयोग दिया।

५—पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज

पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज ने स० १९२७ मे मुनि श्री गणपतराय जी म० सा० से दीक्षा ग्रहण की। आपने सस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओ का गहरा ज्ञान सम्पादन करके जैनागमों की हिन्दी टीका

लिखी है। "जैनागम तत्वार्थ समन्वय" आपकी मौलिक रचना है, जिसमें सुप्रसिद्ध तत्त्वार्थसूत्र की मूल आगमों के साथ संलग्न तुलना आपने की है। अति उच्च कोटि के विद्वान् होते हुए भी आप अत्यन्त सरल और सरस प्रकृति के स्वामी हैं। आप पंजाब सम्प्रदाय के वर्षों तक उपाध्याय पद पर रहे। पूज्य काशीराम जी म० सा० के पाट पर आचार्य पद पर रहे।

आप 'जैनागम रत्न' और 'जैन दिवाकर' की उपाधि से विभूषित हैं। आपका प्रत्येक क्षण स्वाध्याय और ज्ञानचर्चा में लगता है। इस समय लुधियाना में स्थिरवास कर रहे हैं। आपके अनेक गुणों से आकर्षित तथा प्रभावित होकर सादड़ी सम्मेलन ने वर्धमान श्रमण संघ का आचार्य-पद प्रदान किया। आप के अनेक शिष्यों में स्व० पं० मुनि खजानचन्दजी महाराज प्रथम शिष्य थे। पंजाब के स्थानकवासी समाज को शिक्षण और स्थानक की उपयोगिता की ओर आकर्षित करने वाले वे सर्वप्रथम महामना सन्त थे। आपके शिष्य तपस्वी लालचन्द जी महाराज कि जिनकी कठोर तपस्या और संघ-सेवा कभी भी भुलाई नहीं जा सकती।

आचार्यश्री के दूसरे शिष्य प० हेमचन्द जी महाराज, फूलचन्द जी महाराज, ज्ञानमुनि जी महाराज, मनोहर मुनिजी महाराज आदि शास्त्र-पारंगत, विद्या-विदग्ध मुनिवर संतसमाज तथा जैन समाज के आशाकेन्द्र हैं।

६—पं० रत्न श्री प्रेमचन्द्रजी महाराज

स्थानकवासी जैन समाज में मुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज "पंजाब केशरी" के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपका भरा हुआ और पूरे कद का शरीर और आप की सिंह-गर्जना असत्य और हिंसा के बादलों को छिन्न-भिन्न कर देती है। जड पूजा के आप प्रखर विरोधी हैं। जहाँ-जहाँ आप विचरण करते हैं वहाँ-वहाँ एक शूरवीर सैनिक के समान महावीर के धर्म का प्रचार करते हैं।

७—व्या० वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज

दूसरी तरफ श्री नाथूराम जी महाराज के शिष्य पं० मुनि श्री मदनलाल जी महाराज जो प्रसिद्ध वक्ता शास्त्र के मर्मज्ञ और सादड़ी-सम्मेलन में शांति-रक्षक के रूप में रहे थे "व्याख्यान वाचस्पति" के नाम से समाज में सुपरिचित हैं। आपकी आती हुई परम्परा के परिवार में मुनि श्री रामकिशन जी महाराज और मुनिश्री सुदर्शन जी महाराज हैं। दोनों ही संस्कृत, प्राकृत और अंग्रेजी के अच्छे विद्वान हैं और संयम तथा आत्मकल्याण की तरफ आप दोनों का विशेष लक्ष्य है। श्री रामकिशन जी महाराज से तो समाज बहुत बड़ी आशा रखता है। यह सब देन तो व्याख्यान-वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज सा० की है। आपका तप, साधना, संयम, ज्ञानार्जन और सतत जागृति का लक्ष्य सर्वथा प्रशंसनीय है।

८—पं० रत्न शुक्लचन्दजी महाराज

पं० रत्न शुक्लचन्द जी महाराज ब्राह्मणकुलोत्पन्न विद्वान मुनिराज हैं। पूज्य श्री काशीराम जी महाराज के श्रीचरणों में दीक्षा ग्रहण करके आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। आप सुकवि और शान्तिप्रिय प्रवचनकार हैं। पहले आप पंजाब सम्प्रदाय के युवाचार्य थे और अब वर्धमान श्रमण संघ के मन्त्री हैं। आपकी शिष्य परम्परा में महेन्द्र मुनि, राजेन्द्र मुनि और गणि श्री उदयचन्द जी महाराज की शिष्य-परम्परा में रघुवरदयाल जी महाराज, उनके शिष्य अभयमुनि जी आदि सन्तों के हृदय में जिन शासन की निष्काम सेवा की भावना भरी है।

गेदराम जी महाराज की शिष्य परम्परा मे कस्तूरचद जी महाराज तथा उनके शिष्य अमृत मुनि जी आज के जैन कवियों मे अग्रगण्य है। आप सिद्धहस्त वक्ता तथा लेखक है। समस्त समाज को आप से बडी-बडी आशाएँ है।

ऋषि सम्प्रदाय के मुनिवर्य

१—पूज्य श्री सोमजी ऋषिजी महाराज

आप अहमदावाद कालुपुर के निवासी थे। बचपन मे ही आपके धर्म के और वैराग्य के चिह्न दृष्टिगोचर होने लग गए थे। लोकागच्छ के यतियों से कुछ शास्त्रों का ज्ञान आपने दीक्षा से पूर्व ही प्राप्त कर लिया था। पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म० सा० का व्याख्यान श्रवणकर आपका वैराग्य और भी अधिक प्रबल हो गया और ससार से रुचि हटाकर २३ वर्ष की अवस्था मे अहमदावाद श्री संघ की सम्मति से संवत् १७१० मे दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म० सा० की सेवा मे रहते हुए आपके अपनी कुशाग्र बुद्धि से शीघ्र ही शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर लिया। अपने गुरुदेव को आने वाले और विरोधियों द्वारा दिये जाने वाले अनेक उपसर्गों मे प्राणों को सकट मे डालकर भी गुरुदेव के साथ रहे थे। यतियों के द्वारा पूज्य श्री लवजी ऋषि जी महाराज के लिये बड़ी तेजी से षड्यन्त्र रचा जा रहा था। यहाँ तक कि उस षड्यन्त्र द्वारा पूज्य श्री की वे लोग जीवन-लीला समाप्त करने पर तुल गये। फलस्वरूप अपने घातक षड्यन्त्र मे यति लोग सफल हुए और बुरहानपुर मे पूज्य श्री को विषमिश्रित लड्डू बहर दिये। लड्डुओं का आहार कर लेने पर विष अपना प्रभाव दिखाने लगा। शिष्य सोमजी ने अपने गुरुदेव को आकस्मिक एव अप्रत्याशित षड्यन्त्र का शिकार होते अपनी आँखों देखा किन्तु यह सब उपसर्ग उन्होंने हृदय को वज्र बनाकर सहन कर लिया। ऐसे असाधारण संकटों मे अपनी भावनाओं को समतामय रखकर शाँत रहना यह असाधारण मानवीय गुण है।

आपने गुजरात की तरफ विहार कर दिया और ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए, धर्म का प्रचार करने लगे। उन दिनों पूज्य श्री धर्मसिंह जी महाराज का अहमदावाद मे पधारने के समाचार आपने सुने। कुछ शास्त्रीय बोलों के सम्बन्ध मे आपका उनसे मतभेद था अत आप लम्बा और उग्र विहार कर पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० सा० से मिलने के लिए अहमदावाद पधारे। दोनों मुनिवर एक ही साथ ठहरे। शास्त्रीय बोलो के सम्बन्ध मे भी आपकी पूज्य श्री धर्मसिंह जी म० सा० से चर्चा हुई किन्तु इस चर्चा से आपको तुष्टि नहीं हुई। आयुष्य के सम्बन्ध मे और प्रत्याख्यान आठ कोटि से या छ कोटि के सम्बन्ध मे चर्चा हुई थी। आपने तथा आपके समीपस्थ शिष्यों ने पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० को बहुत समझाया किन्तु वे नहीं समझे और उन्होंने अपनी ग्रहण की हुई मान्यता का परित्याग नहीं किया।

आपके सयम, आपकी विद्वत्ता तथा आपके प्रतिभासम्पन्न गुणों से प्रभावित होकर कई लोंकागच्छीय यतियों ने आपसे दीक्षा ग्रहण की। अपने नाम के पीछे लगने वाले 'ऋषि' शब्द को आपने सार्थक कर दिया और यही कारण है कि आपने अस्खलित रूप से जीवनपर्यन्त बेले-बेले की तपस्या की। कठिन से कठिनतर और घोर से घोरतर शीत-गर्मी के परीषह सहन करते हुए २७ वर्ष तक सयमाराधन का समाधियुक्त पंडितमरण से कालधर्म प्राप्त किया। अपनी अंतिम अवस्था मे आप अपने पीछे २४ शिष्यों का समुदाय छोड़कर स्वर्ग सिधारे। धन्य है इस ऋषि को।

२—पूज्य श्री कान जी ऋषिजी महाराज

आपकी जन्मभूमि सूरत-बन्दर थी। बचपन में आपके हृदय मे वैराग्य के अंकुर जम चुके थे। दीक्षा लेने की परम अभिलाषा होते हुए भी काल न पकने के कारण आप दीक्षा नहीं ले सके। किन्तु कनहान का चातुर्मास पूर्ण कर जब पूज्य श्री सोमजी ऋषिजी महाराज सूरत पधारे तब आपने भगवती दीक्षा ग्रहण कर ली। अपने गुरुदेव पूज्य सोमजी ऋषिजी म० सा० की सेवा मे रहकर आपने शास्त्रीय ज्ञान प्रारम्भ किया और अपनी कुशाग्रबुद्धि से आप शीघ्र ही शास्त्र के परम ज्ञाता बन गये। परम्परा से सुना जाता है कि आपको लगभग ४०,००० श्लोक कण्ठस्थ थे। ऐसे थे आप असाधारण मेधावी।

आपने मालव-क्षेत्र मे विचरण कर धर्म का सर्वत्र प्रचार किया और विजय-वैजयन्ती फहराई। आपकी सेवा में श्री माणकचन्दजी ने 'एकल पात्री' मान्यता को छोडकर शुद्ध और प्ररूपित सयम स्वीकार किया। पूज्य श्री सोमजी ऋपि म० सा० के बाद आपको पूज्य पदवी से अलकृत किया गया। आप ही के नाम से ऋपि सम्प्रदाय की परम्परा प्रसिद्धि मे आई। ऋपि सम्प्रदाय का गौरव और उसकी प्रतिष्ठा खूब बढाई।

ऐसे त्यागी-विरागी सन्तों से ही जन-मानस पवित्र और भक्ति की ओर अभिमुख होते हैं। आपका ज्ञान, तपश्चर्या की उत्कृष्टता, ज्ञान की गरिमा और संयम-सम्पन्नता चिरस्मरणीय ही नहीं किन्तु अविस्मरणीय है।

पूर्ण समाधियुक्त पडितमरण से आपका स्वर्गवास हुआ। भले ही आप न रहे किन्तु आपकी परम्परा ही आपका गौरव है और यह गौरव कभी मिटने का नहीं क्योंकि महापुरुषों का व्यक्तित्व नाना-नाना रूपों मे व्यक्ति-व्यक्ति मे झलकता है और उसका अमृत जीवन बनकर छलकता है।

३—पूज्य श्री ताराऋपिजी महाराज

आपने पूज्य श्री कहान जी ऋपि जी महाराज सा० की सेवा मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप प्रकृति के सरल, गम्भीर और शान्त प्रकृति के थे। अनेक प्रान्तों मे विचरण कर धर्म-जागृति करते हुए अनेक मुमुक्षु जीवों का उद्धार किया। आप समाजोत्थान और संगठन के अत्यन्त प्रेमी थे।

अपनी धीरता और सहनशीलता के उदात्त गुणों से आपका व्यक्तित्व निखर जाता था। आपके व्याख्यान और आपकी चर्चाये लोगों को प्रभावित और आह्लादित करती थी। अपने जीवन मे एक विजयी योद्धा के समान आप जहाँ भी पधारे-सर्वत्र धर्म की उद्घोषणा की।

महापुरुषों के जीवन-चक्र को कालचक्र भी नहीं बदल सकता। उनका जीवन-चक्र नित्य निरंतर अपनी अबाध गति से चलता रहता है। महाकाल भी अपनी विकरालता को छोड़कर इन महापुरुषों के सामने सुकाल बन जाता है। भयकरता सुन्दरता मे परिवर्तित हो जाती है।

पूज्य श्री तारा ऋपि जी म० सा० का जीवन प्रेरणा का, कर्मण्यता का, आदर्श सयम का और आदर्श साधुता का रहा है। ऐसे त्यागी साधुओं को हम जितना भी साधुवाद दें, थोडा है किन्तु भक्ति के सिवाय हम क्या और कैसा अर्घ्य इनके चरणों मे अर्पण कर सकते है?

४—कविकुल-भूषण पूज्यपाद तिलोकऋपिजी महाराज

आपका जन्म संवत् १६०४ मे रतलाम नगर मे हुआ था। ऋपि सम्प्रदाय के पूज्य श्री एवंता

ऋषि जी म० सा० से सवत् १६१४ मे आपने अपने भाई, अपनी माता तथा अपनी बहन इन चारों के साथ दीक्षा ग्रहण की। धार्मिकता और विरक्ति अनुरक्ति और भक्ति केवल आपमे ही नहीं आपके समूचे परिवार मे थे। घर के चार लोगों का एक साथ संयम के मार्ग पर निकल जाना—क्या यह इस युग की चमत्कारिक घटना नहीं है ! गुरु की सेवा मे रहकर आठ वर्ष में आपने शास्त्रों का गहन ज्ञान प्राप्त कर लिया। अपने गुरुदेव के स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् आपने दक्षिण की तरफ विहार किया और उस तरफ धर्म का प्रदीप प्रकटाया। मालवा, मेवाड, मारवाड आदि विस्तीर्ण क्षेत्रों को पावन करते हुए सवत् १६४० मे आप स्वर्ग सिधारे।

अपनी अद्भुत कवित्व-शक्ति और प्रखर पांडित्य के कारण आपकी यश सुरभि सर्वत्र प्रसरित हो गई। आप द्वारा रचित विविध साहित्य को लेकर समस्त समाज चिरकाल तक आपका ऋणी रहेगा। ऐसा कहा जाता है कि आपने अपने जीवन मे ७०,००० कवित्त और कविताएँ रचकर साहित्य का भण्डार सुसमृद्ध किया। आप द्वारा रचित साहित्य जो अप्रकाशित है, श्रमण सघ के प्रधान मन्त्री पं० मुनि श्री आनन्द ऋषि जी म० सा० के पास सुरक्षित है।

हाथ से लिखने मे आप इतने कुशल थे कि एक ही सूत्र के पन्ने मे सम्पूर्ण दशवैकालिक सूत्र और डेढ इंच जितने स्थान मे सम्पूर्ण अनुपूर्वी लिखकर दर्शकों को विस्मय-विमुग्ध करते थे। आपको १७ शास्त्र कण्ठस्थ थे। आप ऐसे उत्कृष्ट ध्यानी थे कि कायोत्सर्ग मे ही उत्तराध्ययन सूत्र का स्वाध्याय कर लेते थे। सरस्वती के इस महान् उपासक और भगवान् महावीर के सिद्धान्तों के इस महान् आराधक का केवल ३६ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया।

नाशवान भौतिक शरीर नष्ट हो सकता है किन्तु यश शरीर नष्ट नहीं होता। युग-युगों तक महापुरुषों के जीवन-पुष्पों की सुयश-सुरभि इस विश्व-उद्यान मे विकीर्ण होती रहती है।

स्व० पूज्य श्री तिलोक ऋषि जी महाराज सा० का साहित्य, विस्मय-विमुग्ध कर देने वाला सयम और अपने जीवन-सिद्धान्तों का गम्भीर निदर्शन युग-युग तक न मिटने वाली कहानी है। सुनी हुई होकर भी नवीन और नवीन होकर भी प्रेरक।

५—पंडित मुनि श्री रत्नऋषिजी महाराज

आपका जन्म अहमदनगर के समीप मानकदौड़ी मे हुआ था। सवत् १६३६ मे कविवर्य पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० अपने पिता के साथ आपने १२ वर्ष की अवस्था मे दीक्षा ग्रहण की। अपने गुरुदेव की छत्र-छाया आप पर केवल चार वर्ष तक ही रही। तत्पश्चात् सम्प्रदाय के अन्य विद्वान मुनिवरों द्वारा आपने शास्त्रीय-ज्ञान सम्पादित किया।

शिक्षा-प्रचार की तरफ आपका लक्ष्य सदा बना रहता था। पाथर्डी मे आप ही के सदुपदेश से "श्री तिलोक जैन पाठशाला" की स्थापना हुई थी। आप ही से प्रतिबोध पाकर श्री नवलमल जी खिंवरामजी पारख ने २०,००० की एक मुश्त रकम निकाली जिसके द्वारा बड़े-बड़े मुनिराजों का शिक्षण-कार्य सरल बन सका।

आप श्री के पॉच शिष्य हुए जिनमे श्री वर्द्धमान श्रमणसघ के प्रधान मत्री पंडित रत्न मुनि श्री आनन्द ऋषिजी म० सा० भी हैं। स्थानकवासी समाज को सुयोग्य शिष्य देकर आपने समाज पर महान्

उपकार किया है। प० मुनि श्री रत्न ऋपिजी महाराज समाज के अनुपम रत्न थे और उनके सुयोग्य शिष्य आनन्द ऋपिजी म० नेतृत्व, सफल सचालन और सयम के सौरभ से दिग-दिगन्त मे आनन्द की धारा वहा रहे हैं। अपने शिष्य के रूप मे गुरु का गौरव गरिमा और महिमाशाली वना रहेगा। यह निर्विवाद और असदिग्ध है।

६—ज्योतिर्विंद् पं० मुनि श्री दौलतऋपिजी महाराज

आपका जन्म सवत् १९२० मे जावरा मालवा मे हुआ था। शास्त्रवेत्ता पूज्य लालजी ऋपिजी महाराज के पास भोपाल मे संवन् १९४९ मे उत्कृष्ट भाव से दीक्षा ग्रहण की। आपने गुरु की सेवा मे रह-कर शास्त्र का अगाध ज्ञान प्राप्त किया। 'श्री चन्द्र प्रज्ञप्ति' और 'सूर्य प्रज्ञप्ति' सूत्र तथा अन्य ज्योतिप शास्त्र एवं ग्रन्थों का आपको अपरिमित ज्ञान था। ज्योतिप शास्त्र के आप प्रकाड पंडित थे। आपका प्रवचन सुन-कर जनता मंत्र-मुग्ध हो जाती थी। उदयपुर के तत्कालीन महाराणा साहव ने आपके ज्योतिप-चमत्कार देखकर आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

जोधपुर के आवास मे सिंहपोल मे सर्वप्रथम ठहरने का श्रेय आपको ही था। पंजावकेशरी पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के साथ कई माह तक पत्र-व्यवहार द्वारा शास्त्रार्थ चलता रहा। आपकी विद्वत्ता और ज्ञान-गाम्भीर्य को देखकर पूज्य श्री वहुत ही प्रमुदित हुए और पजाव पधारने के लिये विनती की। वृद्धावस्था के कारण आप पजाव नहीं पधार सके।

वर्तमान मे आत्मार्थी मोहन ऋपिजी महाराज और विनय ऋपि जी महाराज आप ही के सुयोग्य शिष्य हैं, जिनके द्वारा अनेक शिक्षण-सस्थाऐं सस्थापित कराई जाकर जैन-समाज शिक्षा के क्षेत्र मे अग्रसर होने का गौरव प्राप्त करने मे समर्थ वन सका है।

७—कविवर्य पं० मुनि श्री अमीऋपिजी महाराज

मालव प्रान्त के दलोट नामक ग्राम मे संवत् १९३० मे आपका जन्म हुआ था। केवल १३ वर्ष की अवस्था मे पं० रत्न श्री सुखा ऋपि जी महाराज के पास सवत् १९४३ मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। अपनी प्रवल वुद्धि और धारणाशक्ति के आधार पर अल्पकाल मे ही शास्त्रों का गहन ज्ञान आपने प्राप्त कर लिया था। प्रचलित मत-मतान्तरों के आप विज्ञाता और इतिहास के विपय मे अनुसन्धानकर्त्ता थे। शास्त्रीय चर्चाओं मे आपको वहुत ही आनन्द मिलता था। वागड़ प्रान्त मे विरोधी लोगों से आप शास्त्रार्थ करने पधारे तव आहार-पानी का सयोग न मिलने के कारण आठ दिन तक छाछ के आधार पर रहना पड़ा। कवित्व-शक्ति का विकास आप मे अद्भुत था। आप द्वारा की जाने वाली समस्यापूर्तियॉ तलस्पर्शी होती थीं। कवित्व-शक्ति के साथ-साथ आपकी स्मरण-शक्ति भी आश्चर्यजनक थी। आपको १३ शास्त्र कंठस्थ थे। अपने हाथों से शास्त्र लिखने का आपको वड़ा ही शौक था।

संयम के ४५ वर्ष व्यतीत कर संवत् १९८८ मे शुजालपुर (मालवा) मे आपका ५८ वर्ष की अवस्था मे स्वर्गवास हुआ। प्रौढ़ साहित्यकार, उद्भट और आशुकवि, संयम मे प्रकृष्ट भावनाशील, धर्म और शासन के अभ्युत्थान के लिए सदा ही तत्पर, कविश्रेष्ठ अमी ऋपि जी महाराज की काव्यसुधा का पान कर समाज का मानस मुखरित होकर चिरकाल तक अपने को कृतकृत्य मानकर अपना जीवन धन्य करेगा।

आप द्वारा रचित और लिखित अप्रकाशित साहित्य प्रधान मंत्री पं० रत्न मुनि श्री आनन्द ऋषि जी महाराज के पास सुरक्षित है—जो यथासमय प्रकट होगा। किन्तु जो भी साहित्य लोगों की निगाहों मे आया है वह आपकी विकसित काव्य-स्फूर्ति को बतलाने मे समर्थ है। समाज का अहोभाग्य है कि उसे संयम-प्रेमी और काव्य-प्रेमी मुनि मिले जिन्होंने अपने संयम और काव्य से आध्यात्मिक जगत् का नेतृत्व कर लाखों लोगों को मगलकारी और कल्याणकारी मार्ग पर लगाया।

८—शास्त्रोद्धारक पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज

आप मेडता मारवाड़ के निवासी श्री केवलचन्द्र जी कांसटिया के सुपुत्र थे। सम्वत् १६३४ मे आपका जन्म हुआ। दस वर्ष की अवस्था मे सयम का मार्ग स्वीकार कर और पं० मुनि श्री रत्न ऋषि जी महाराज की सेवा मे रह कर अपने शास्त्रीय ज्ञान उपार्जन किया। आपने गुजरात, खंभात-दक्षिण प्रान्त, बम्बई, कर्णाटक, पजाब और राजस्थान मे विचरण कर कई नवीन क्षेत्र खोलकर धर्म-जागृति का सचार किया। सम्वत् १६८६ मे इन्दौर मे ऋषि सम्प्रदाय के चतुर्विध श्रीसंघ की तरफ से आपको पूज्य पदवी प्रदान की गई।

हैदराबाद और कर्णाटक प्रान्त मे विचरण करते हुए आगमोद्धार का महान् कार्य आपने लगातार तीन वर्ष के अत्यन्त कठोर परिश्रम से किया। इस कार्य मे एकासन करते हुए दिन मे ७-७ घण्टों तक आपको लिखने का कार्य करना पड़ा था। श्रुतसेवा की यह महान् आराधना कर समाज पर आपने महान् उपकार किया है। स्व० दानवीर सेठ श्री सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद जी ने आगम-प्रचार के हेतु, पूज्य श्री द्वारा हिन्दी अनुवादित ३२ आगमों की पेटियाँ अमूल्य भेट दी गईं। इस महानतम कार्य के अतिरिक्त 'जैन तत्त्व प्रकाश' 'परमार्थ मार्ग दर्शक' 'मुक्ति सोपान' आदि महान् ग्रन्थों की रचना कर जैन एवं धार्मिक साहित्य की अभिवृद्धि की थी। कुल १०१ पुस्तकों का आपने सम्पादन किया है। स्था० जैन समाज में अपने ही साहित्य प्रकाशन का प्रारम्भ करवाया।

शिक्षा-प्रचार की तरफ आपका पूरा ध्यान था और यही कारण है आपके सदुपदेश से बम्बई मे श्रीरत्न चिन्तामणि पाठशाला और अमोल जैन पाठशाला, कडा आदि की स्थापना की।

सघ और समाज-संगठन के आप अनन्य प्रेमी थे और यही कारण है कि अजमेर के साधु सम्मेलन के समय आपने महत्वपूर्ण योग देकर सम्मेलन की कार्यवाही को सफल बनाने के लिए अग्रिम भाग लिया।

जैन समाज मे सर्वप्रथम आगमोद्धारक के रूप में आपकी सुयश-सुवास युग-युग तक समाज को और वर्द्धमान भगवान् महावीर के शासन को सुवासित और मुखरित करती रहेगी। स्व० पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महराज 'यथा नाम तथा गुण' थे। नाम के साथ आपका काम भी अमोलक था। आपके कार्य का हम क्या मोल करें। सर्वसाधारण मे शास्त्रीय ज्ञान सीखने की रुचि जागृत करने वाले कुशल प्रणेता आप ही थे। इस महान उपकारी की सेवाएँ देखते हुए आपको जितना भी याद किया जाय उतना ही थोड़ा है।

६—तपस्वीराज पूज्य श्री देवजी ऋषिजी महाराज

आपका जन्म सवत् १६२६ मे पुनड़ी (कच्छ) में हुआ था। अपनी सरलता सज्जनता, और विशाल पैमाने पर फैले हुए व्यापार के कारण आप अपने प्रान्त तथा बाहर सर्वत्र लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध

थे। सवत् १९४९ मे बाल ब्रह्मचारी प० मुनि श्री सुखा ऋषि जी और कविवर अमी ऋषि जी म० सा० के वम्वई चातुर्मास मे मुनिवरों के सदुपदेश से आपको वैराग्य प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप सूरत मे आपने भगवती दीक्षा अगीकार की। अपने गुरुदेव की अनन्य भक्ति-भाव से सेवा करते हुए आपने आगमों का ज्ञान सम्पादन किया।

आप अत्यन्त विनयवान, तपोनिष्ठ एव भद्रिक प्रकृति के थे। एक समय अपने गुरुदेवका स्वास्थ्य विगड़ने और विहार करनेमे असमर्थ होने के कारण अपने गुरुदेव को अपनी पीठ पर उठाकर २६ कोस दूर भोपाल पधारे। इसे कहते हैं उत्कृष्ट गुरुभक्ति जो आज भी मुनि समाज और मानव-समाज के लिए एक अनुपम उदाहरण वनकर हमारे जीवन को सफल वनाने मे समर्थ है।

मध्यप्रान्त के भुसावल शहर मे आपको पूज्य पदवी प्रदान की गई। अन्त मे शारीरिक अस्वस्थता के कारण नागपुर मे आप स्थिरवास विराजे। श्रीमान् सेठ सरदारमल जी सा० पुगलिया ने तन-मन-धन से आपकी सेवा का अच्छा लाभ उठाया था। सवत १९९९ मे पूर्ण समाधि के साथ समतायुक्त भाव से आप ने कालधर्म प्राप्त किया।

कठोर तप करते हुए भी आपके दैनिक कार्यक्रम मे किसी प्रकार का अन्तर नहीं आता था। कठोर-से कठोर तप मे भी व्याख्यान देना और प्रतिदिन एक घन्टा खडे रह कर ध्यान करना आदि सभी कार्य नियमित करते थे।

अपनी आदर्श सेवा-परायणता, गुरुभक्ति और तप-त्याग से आप कभी भी भूले नहीं जा सकते। फूल की सुगन्धि क्षणिक होती है किन्तु गुणों की सुगन्धि चिर-स्थायी और चिर-नवीन होती है। इस नाशवान पार्थिव शरीर से और क्या लाभ उठाया जा सकता है कि इसे हम संयम का और मुक्ति-मार्ग का साधन वना ले। पूज्य श्री देवजी ऋषि जी महाराज ने यही किया जो और लोग कम कर पाते हैं। कहने के लिये भले ही हम आपको स्वर्गवासी कह दे किन्तु वास्तविक वास तो आपका भक्तों के हृदय मे है। इसलिए कौन इन्हें स्वर्गवासी कह सकता है।

१०—प्रधान मन्त्री पं० रत्न मुनि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज

आपका जन्म चिचोडी सिराल (अहमदनगर) मे संवत् १९५५ मे हुआ था। उत्कृष्ट वैराग्य-रग मे रगकर प० मुनि श्री रत्नऋषि जी म० सा० की सेवा मे सवत् १९७० मे आपने दीक्षा ग्रहण की। अपने गुरुदेव की सेवा मे रहकर आपने जैनागमों का अभ्यास किया। थोडे ही दिनों मे आप अच्छे विद्वान् हो गये। आपने सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, मराठी और गुजराती भाषा पर अच्छा अधिकार प्राप्त किया है। आपकी आवाज पहाडी और गायन-कला युक्त होने से आपश्री के प्रवचन श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध वना देते है।

आपने ३५ वर्ष तक महाराष्ट्र और दक्षिण प्रान्त मे विचर कर धर्म-देशना और धर्म-जागृति की धूम मचा दी। प्रतापगढ, पूना मे महासतियों का सम्मेलन कर आपने सगठन की नींव डाली। सवत् १९९९ मे युवाचार्य पदवी से और सवत् १९९७ मे आपके पूज्य पदवी से अलकृत किया गया। किन्तु आपके हृदय मे तो सगठन के क्षेत्र को और अधिक विस्तीर्ण वनाना था। ब्यावर मे ९ सम्प्रदाय के सन्तों ने एकत्रित होकर सवत् २००६ मे आपको प्रधानाचार्य वनाया। सगठन का क्षेत्र और अधिक विशाल वना जिसके फल स्वरूप सवत् २००९ मे २२ सम्प्रदायों के सन्त एकत्रित हुए। सभी ने अपनी पूज्य पदवी का त्याग किया

और श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन-श्रमण संघ के एक और अखण्ड शासन मे एकत्रित हुए। इस महान् श्रमणसंघ का नेतृत्व और सचालन करने के लिए आपको प्रधान मन्त्री बनाया गया, जिसका आप बड़ी ही योग्यता-दक्षता के साथ निर्वाह कर रहे हैं।

शिक्षा-प्रचार की तरफ आपका लक्ष्य सविशेष रहा है। आपके सदुपदेश से अनेक संस्थाएँ स्थापित हुई जिनमे मारवाड़ मे राणावास, दक्षिण मे पाथर्डी की संस्थाएँ और महाराष्ट्र मे बोदवड़ की सस्था मुख्य है। आप ही के सत्प्रयत्नों और सदुपदेश से पाथर्डी का 'धार्मिक शिक्षण परीक्षा बोर्ड' समाज मे धार्मिक शिक्षा का प्रचार और प्रसार कर रहा है। यह धार्मिक परीक्षा-बोर्ड आपकी समाज को अपूर्व देन है।

सयमसुलभ मदुगुण, सरल, शान्त और उदात्त आपका हृदय, गुरु-गम्भीर आपका वक्तृत्व, नेतृत्व और सचालन की अद्भुत क्षमता, समय-सूचकता की दूरदर्शिता आदि असाधारण मानवीय गुण आपमे समुद्भूत हुए हैं।

अपने नाम के अनुरूप ही अपने कार्यों से आप समाज मे आनन्द की मन्दाकिनी प्रवाहित कर रहे है। यह मन्दाकिनी का प्रवाह जिस क्षेत्र को और जिस तट को स्पर्श कर लेता है, वह क्षेत्र और तट स्वनाम धन्य हो जाता है। महापुरुषो के पुण्य-प्रसाद की यही तो महिमा होती है। वे स्वयं तो महिमावान् होते हैं और औरों को भी महिमावान बना डालते हैं।

११—आत्मार्थी पं० मुनिश्री मोहन ऋषिजी महाराज

आप कलोल—गुजरात के निवासी हैं। आपका जन्म संवत् १९५२ मे हुआ था। सवत् १९७५ मे ज्योतिर्विद् प० मुनि श्री दौलत ऋषि जी म० की सेवा मे आप दीक्षित हुए। आपका सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी अग्रेजी का यथेष्ट शिक्षण हुआ है। आपने शिक्षण और साहित्य-प्रचार के लिये खूब प्रयत्न किया और कर रहे है। आपका प्रवचन बडा ही प्रभावशाली, ओजस्वी, गभीर और सारपूर्ण होता है। आपके सत्प्रेरणा और सदुपदेश से प्रेरित होकर १३ व्यक्तियों ने विभिन्न सम्प्रदायों मे दीक्षा ग्रहण की। गुजरात-काठियावाड, मालवा-मेवाड-मारवाड़, बम्बई और मध्यप्रान्त मे विचरण कर धर्मदेशना के द्वारा धर्म-जागृति फैलाई है। आपके सदुपदेश से श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर, जैन पाठशाला सेवाज, खीचन, वलून्दा, बगडी, पालनपुर मे आदि अनेक सस्थाएँ स्थापित होकर समाज को शिक्षा से नवचेतना देकर अनुप्राणित किया है। आपने कई ग्रन्थों की रचना की है जो आत्म-जागृति कार्यालय, ब्यावर द्वारा प्रकाशित हुए हैं।

अजमेर साधु सम्मेलन के समय आपने अग्रसर होकर भाग लिया। इस समय आप शारीरिक अस्वस्थता के कारण अहमदनगर मे विराज रहे हैं।

१२—पं० मुनिश्री कल्याणऋषिजी महाराज

आपका जन्म संवत् १९६६ मे वरखेडी ग्राम (अहमदनगर) मे हुआ। स्व० पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज सा० की सेवा मे आपने सवत् १९८१ मे दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री की सेवा मे रहकर आपने शास्त्रीय ज्ञान और सस्कृत-प्राकृत आदि विभिन्न भाषाओं का अच्छा अभ्यास कर लिया। आप व्याख्यानी सत है। आपके सदुपदेश से स्वर्गीय पूज्य श्री के स्मरणार्थ धूलिया मे "श्रीअमोल जैन ज्ञानालय" की स्थापना हुई है। इस सस्था के द्वारा पूज्य श्री द्वारा रचित साहित्य के पुनरुद्धार का कार्य व्यवस्थित

चल रहा है। संस्था के स्थायी कोष से प्रकाशन का कार्य व्यवस्थित होता है। वर्तमान मे खानदेश-नामिक जिले में विचर कर आप जैनधर्म व साहित्य का प्रचार कर रहे हैं। आप स्वय भी पंडित, साहित्यकार और व्याख्याता हैं।

स्व० कविवर, पू० मुनि श्री अमीऋषिजी महाराज द्वारा रचित प्रकाशित और अप्रकाशित साहित्य जो विभिन्न संत-सतियों के पास अभी भी सुरक्षित है—

१—स्थानक-निर्णय
२—मुख-वस्त्रिका निर्णय
३—मुख-वस्त्रिका चर्चा
४—श्री महावीर प्रभु के २६ भव
५—श्री प्रद्युम्न चरित्र
६—श्री पार्श्वनाथ चरित्र
७—श्री सीता चरित्र
८—सम्यक्त्व महिमा
९—सम्यक्त्व निर्णय
१०—श्री भावनासार
११—श्री प्रश्नोत्तर माला
१२—समाज स्थिति दिग्दर्शन
१३—कषाय कुटुम्ब छह ढालिया
१४—श्री जिन सुन्दरी चरित्र
१५—श्रीमती सीता चरित्र
१६—श्री अभयकुमारजी की नवरंगी लावणी
१७—श्री भारत-बाहुबली चौढालिया
१८—श्री अयन्तामुनि कुमार छह ढालिया
१९—श्री विविध बावनी
२०—शिक्षा-बावनी
२१—सुबोध-शतक
२२—मुनिराजों की ८४ उपमाएँ
२३—अंबड़ सन्यासी चौढालिया
२४—सत्यघोष चरित्र
२५—श्री कीर्तिध्वजराज चौढालिया
२६—श्री अरण्यक चरित्र
२७—श्री मेघराजा का चरित्र
२८—श्री धारदेव चरित्र

कविकुल भूषण स्व० प० मुनि श्री तिलोक ऋषिजी महाराज सा० द्वारा रचित अप्रकाशित साहित्य जो प्रधानमंत्री पं० मुनि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज सा० के पास सुरक्षित है —

१—श्री श्रेणिक चरित्र ढाल
२—श्री चन्द्र केवली चरित्र
३—श्री समरादित्य केवली चरित्र
४—श्री सीता चरित्र
५—श्री हंस केशव चरित्र
६—श्री धर्मबुद्धि पापबुद्धि चरित्र
७—अर्जुनमाली चरित्र
८—श्री धन्नाशालिभद्र चरित्र
९—श्री भृगु-पुरोहित चरित्र
१०—श्री हरिवंश काव्य
११—पंचवादी काव्य
१२—श्री तिलोक बावनी प्रथम
१३—श्री तिलोक बावनी द्वितीय
१४—श्री तिलोक बावनी तृतीय
१५—श्री गजसुकुमार चरित्र
१६—श्री अमरकुमार चरित्र
१७—श्री महावीर स्वामी चरित्र (वीररस मे)
१८—श्री नन्दन मणिहार चरित्र
१९—श्री सुदर्शन सेठ चरित्र
२०—श्री नन्दीसेन मुनि चरित्र
२१—श्री चन्दनबाला सति चरित्र
२२—श्री धर्मजय चरित्र
२३—श्री पांच सुमति तीन गुप्ति का अष्ट ढालिया
२४—श्री महावीर स्वामी चरित्र

पूज्य श्री हरजी ऋषिजी महाराज सा० की सम्प्रदाय

[सं० १७८५ में क्रियोद्धार]

साधुमार्गी परम्परा मे आचार-भेद की तारतम्यता पर अनेक आचार्यों की सम्प्रदाये बनीं। श्रद्धा और प्रतिपादन मे किसी प्रकार का अन्तर न होते हुए भी स्पर्शना मे न्यूनाधिकता के कारण विभाजन हुए। इसी कारण से भिन्न-भिन्न आचार्यों के भिन्न-भिन्न समूह शुद्ध आचार पालन करने वाले व्यक्ति की सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुए।

पवित्र व्यवहार की प्रतिस्पर्धा और मगल-भावना की दृढ़ता के आधार पर चली हुई भिन्नताओं ने श्रमणों के आचार-विचार में प्रगति लाई किन्तु काल-दोष के कारण अनुयायियों में अहभाव और विपमता के बीजारोपण होने से उसमे से साम्प्रदायिक कट्टरता का आविर्भाव हुआ। इसके परिणाम-स्वरूप एक-दूसरे को नीचा दिखाने की मनोवृत्ति के कारण पारस्परिक व्यवहार विकृत होते गये और यही कारण है कि सम्प्रदायवाद का पारस्परिक विरोध का तूफान सब तरफ उठा हुआ है। यदि ऐसा नहीं होता तो ये सम्प्रदायें धर्म को सुरक्षित रखने के लिये एक प्रधान आश्रय रूप थीं।

जिस प्रकार जलाशय के बिना जल की प्राप्ति नहीं हो सकती उसी प्रकार सम्प्रदाय के बिना धर्म के व्यवहार जीवन मे उतरे हुए नहीं देखे जा सकते। पॉचवे सुधारक मुनिराज श्री हरजी ऋषिजी की परम्परा मे कोटा सम्प्रदाय सुप्रसिद्ध था। इस सम्प्रदाय में २६ पडित रत्न थे और और एक साध्वी। कुल मिलाकर यह २७ साधु-साध्वी का परिवार था।

१—पूज्य श्री हुकमीचन्दजी महाराज

पूज्य श्री हुकमीचन्द जी महाराज इन विद्वान् मुनियों मे से एक आचारनिष्ठ विद्वान मुनि थे। आपका जन्म शेखावटी के टोडा नामक ग्राम मे हुआ था। आपने सवत् १८०६ मे कोटा सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान् मुनि श्री लालचन्द्रजी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। आपमे इस प्रकार की भावना जाग्रत हुई कि शास्त्रानुकूल प्रवृत्ति मे हमे विशेष प्रगति करनी चाहिये। इस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए गुरु की आज्ञा लेकर आप कुछ साधुओं के साथ अलग रूप से विचरने लगे।

आप निरतर तपश्चर्या करते थे। लगभग २१ वर्ष तक आपने छठ-छठ के पारणे किये थे। घोर-से-घोर शीतकाल मे भी आपने एक चादर का सेवन किया। सब प्रकार की मिठाई और तली हुई चीजों का आपने त्याग कर दिया था। केवल १३ द्रव्य की ही आपने छूट रखी थी, शेष सब प्रकार के स्वादिष्ट आहार का आपने त्याग कर दिया था। प्रतिदिन दो हजार नमोत्थुणं द्वारा प्रभु को वन्दना करते थे। सूत्रों की प्रतिलिपियाँ बना-बनाकर श्रमण-मुनिराजों को दान करते रहते थे। ज्ञान-ध्यान के अतिरिक्त अन्य प्रवृत्तियों मे आप तनिक भी रस नहीं लेते थे। आपके हाथ की लिखी हुई लगभग १६ सूत्रों की प्रतियाँ आज भी मुनिराजों के पास विद्यमान हैं। सवत् १६१८ मे मध्यभारत के जावद ग्राम मे पंडित मरणपूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

इतने महान् क्रियापात्र, तपस्वी और विद्वान् साधु होते हुए भी आपके मन मे आचार्य-पद की

लेशमात्र भी लालसा न थी। इस कारण से ही साधुमार्गी परम्परा मे शुद्ध आचार पालने वाली एक सम्प्रदाय आपके नाम से चल पड़ी।

२—पूज्य श्री शिवलालजी महाराज

पूज्य श्री हुकमीचन्द जी महाराज के स्वर्गवास के पश्चात् आपके स्थान पर पूज्य श्री शिवलाल जी महाराज आचार्य पद पर आसीन हुए। अपने तेईस वर्ष तक निरतर एकांतर उपवास किया। शास्त्र-स्वाध्याय ही एकमात्र आपका व्यसन था। धर्म के मर्म का परमार्थ प्रतिपादन करने मे तत्कालीन सन्त-समाज मे आपका प्रमुख स्थान था। वयोवृद्ध होने के कारण आप केवल मालवा, मेवाड़ और मारवाड़ के क्षेत्रों मे ही विहार कर सके फिर भी आपकी सम्प्रदाय मे साधु-समुदाय का खूब विकास हुआ। सोलह वर्ष तक आचार्य-पद पर रहकर धर्म-प्रवर्तन कर सं० १८६३ मे आपने स्वर्ग विहार किया। जावद के समीप धामणिया (मालवा) मे आपका जन्म हुआ था।

३—पूज्य श्री उदय सागरजी महाराज

मारवाड़ के मुख्य नगर जोधपुर मे पूज्य श्री उदयसागरजी महाराज का जन्म हुआ था। बाल्यावस्था मे विवाह होते हुए भी आपके हृदय मे पूर्वजन्म-सचित तीव्र वैराग्य जाग्रत हुआ। माता-पिता की आज्ञा नहीं मिलने के कारण आप स्वय ही सयमी जीवन व्यतीत करने लगे। वि० स० १८६७ मे आपने भागवती दीक्षा अंगीकार की। अत्यल्प समय मे आपने सभी शास्त्रों का स्वाध्याय कर लिया। आपकी प्रवचन-प्रतिभा अतिशय प्रभावशाली थी। आपका वचनातिशय और वक्तृत्व कला का श्रवण श्रोताओं के हृदयों को पुलकित कर देता था। जो कोई साधु-साध्वी, श्रावक या श्राविका आपका एक बार ही प्रवचन श्रवण कर लेता था, वह उसी बात को दूसरों को सुनाने क लिए तैयार हो जाता था। आपने पंजाब की तरफ भी विहार किया था और अनेक जैन-अजैनों को पवित्र उपदेशामृत पान कराकर सद्धर्म मे स्थित किया था। श्रोतागण आपकी वाणी को मत्र-मुग्ध होकर सुनते थे। आप जाति-सम्पन्न, कुल-सम्पन्न, रूप-सम्पन्न, शरीर-सम्पन्न वचन-सम्पन्न और वाचना-सम्पन्न प्रभावशाली आचार्य थे। पैर मे असातावेदनीय कर्म के उदय से व्याधि होने के कारण अंतिम १७ वर्ष आपको रतलाम मे विताने पड़े। आपके आचार्यत्व-काल मे साधु और श्रावक-संघ की अप्रतिम वृद्धि हुई। अन्त मे मुनि श्री चौथमलजी महाराज को आचार्य-पद पर स्थापित कर सं० १९५४ मे रतलाम मे आपका स्वर्गवास हुआ।

४—पूज्य श्री चौथमल जी महाराज

पूज्य श्री चौथमल जी महाराज का जन्म पाली (मारवाड) मे हुआ था। आप शिथिलाचार के कट्टर विरोधी थे। आपका प्रभाव खूब पड़ता था। पूज्य उदयसागर जी महाराज भी अपने शिष्यों को सावधान रखने के लिये कहते थे कि 'देखो चौथमल जी की दृष्टि तुम नहीं जानते। तुम्हारे आचार मे जरा सी भी ढील हुई तो वे तुम्हारी खबर लेंगे।" एक समय पूज्य श्री चौथमल जी महाराज लकड़ी के सहारे खड़े रहकर प्रतिक्रमण कर रहे थे। यह देखकर सुप्रसिद्ध श्रावक श्री अमरचन्दजी पीतलिया ने आपको विनम्र निवेदन किया कि "महाराज! आपका शरीर वेदनाग्रस्त है अत कारणवशात् बैठकर ही आप

प्रतिक्रमण कीजिये।" तब दृढ निश्चय और अडिगतापूर्वक आपने उत्तर दिया कि "श्रावक जी! यदि आज मैं बैठकर प्रभु की इस पवित्र आज्ञा का पालन करूँगा तो भविष्य में मेरे साधु और श्रावक सोते-सोते प्रतिक्रमण करेंगे।"

आचार-विचार मे रज-कण मात्र भी प्रमाद मनुष्य की आत्मा को और उसके साथियों को डुबा देता है। उपरोक्त एक छोटे उदाहरण से पूज्य श्री की आचारनिष्ठा का परिचय मिलता है। तीन वर्ष तक नवकार मन्त्र के तीसरे पद-आचार्य-पद का निर्वाह कर नेत्रशक्ति की क्षीणता के कारण स० १९५७ में आप देवलोकवासी हुए।

५—प्रतापी पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज

पूज्य श्रीलाल जी महाराज का जन्म राजस्थान के टोंक ग्राम मे हुआ था। बचपन में ही आप में परम वैराग्य के सस्कार प्रस्फुटित हो गये थे किन्तु पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण आपको विवाह-बधन मे बधना पडा। किन्तु विवाह के बाद थोडे ही समय मे नव परिणीता सुन्दर स्त्री का परित्याग करके आपने दीक्षा ग्रहण की। अनेक प्रकार के बाह्याभ्यतर लक्षणों से पूज्य श्री उदयसागर जी महाराज के श्रीमुख से सहसा वचन निकल पडे कि "इस मुनि के द्वारा संघ की असाधारण वृद्धि होगी।" वस्तुत ऐसा ही बना। आचार्य पद पर आते ही दूज के चाद की तरह सम्प्रदाय की कीर्ति दिन-प्रतिदिन बढने लगी। आपकी गभीरता और आचार-विचार की दृढ़ता के कारण श्री संघ मे आपका प्रभावशाली अनुशासन था। श्रीसघ के आचार्य होते हुए भी सब कार्य आप अपने हाथों से ही करते थे। आपका हृदय स्फटिक के समान निर्मल था। इस कारण भविष्य में बनने वाली घटनाओं की प्रतीति आपको पहले से ही हो जाती थी। इकावन वर्ष की अवस्था मे जयतारण नगर मे आप स्वर्गवास को प्राप्त हुए।

६—जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज

पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज का जन्म थांदला शहर में हुआ था। अल्पावस्था मे ही माता-पिता के स्वर्गवासी हो जाने के कारण मामा के यहाँ आपका पालन-पोषण हुआ। सोलह वर्ष की कुमार अवस्था में आपने दीक्षा ग्रहण की। आप बाल ब्रह्मचारी थे। थोडे ही समय में शास्त्रों का अध्ययन करके जैन के शास्त्रों के हार्द को आपने समझ लिया। परमत का पर्याप्त ज्ञान भी आपने किया था। तुलनात्मक दृष्टि से समभावपूर्वक शास्त्रों की इस प्रकार तर्कपूर्ण व्याख्या करते थे कि अध्यात्मतत्त्व का सहज ही साक्षात्कार हो जाता था। आपकी साहित्य सेवा अनुपम है। पूज्य श्रीलाल जी के बाद आप इस सम्प्रदाय के आचार्य हुए। सूत्रकृताग की हिन्दी टीका लिखकर आपने अन्य मतों की आलोचना की है। लोकमान्य तिलक, महात्मा गाधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, पडित मदनमोहन मालवीय और कवि श्री नानालाल जी जैसे राष्ट्र के सम्माननीय व्यक्तियों ने आपके प्रवचनों का लाभ उठाया था। जिस प्रकार राजकीय क्षेत्र मे पडित जवाहरलाल नेहरू लोकप्रिय हैं उसी प्रकार पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज भी धार्मिक क्षेत्र मे लोकप्रिय थे। वे राजनीतिक जगत के जवाहर हैं तो ये धार्मिक जगत् के जवाहर थे। आपके प्रवचनों से केवल नेता और विद्वान् ही आकर्षित न होते थे वरन सामान्य और ग्राम्य जनता भी आपके प्रवचनों की ओर खूब आकर्षित होती थी।

मारवाड़ के थली प्रदेशस्थित तेरापंथ सम्प्रदाय और उसके अनुयायियों के बीच में अनेक परिषह सहन कर वहाँ पधारे और अपनी पवित्र वाणी का स्रोत बहाया। भ्रम बढ़ाने वाले तेरापंथी का 'भ्रम विध्वंसन' का उत्तर आगमानुसार—"सद्धर्म मंडन" के द्वारा दिया। अनुकम्पा का उच्छेद करने वाली अनुकम्पा ढालों का उत्तर इसी प्रकार की मारवाड़ी भाषा-लोकभाषा में ढालें रचकर दिया और इस प्रकार अज्ञानी ग्राम्य जनता को भगवान् महावीर के दयादान विषयक यथार्थ सिद्धांतों का दिग्दर्शन कराया। आप ही के अनुशासन और शिक्षण का प्रभाव है कि मादड़ी सम्मेलन मे पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज को उपाचार्य का पद प्रदान किया गया। आपके शिष्यों मे मुनि श्री घासीलाल जी तथा मिरेमल जी महाराज आदि विद्वान् साधु विराजमान हैं। लगभग २३ वर्ष तक आचार्यपद को वहन कर सं० २००० में आप स्वर्ग सिधारे।

७—सिद्धान्त-सागर पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज

मालवा-प्रदेश सन्निकट अतीत-काल मे जैन मुनियों की दृष्टि से अत्यन्त उर्वर प्रदेश कहा जा सकता है। इस प्रदेश ने साधुमार्गीय सम्प्रदाय को अनेक ऐसे उत्कृष्ट, विद्वान, प्रभावक और सयमपरायण मुनिरत्न दिये हैं, जिन्होंने अपने आदर्श चरित से मुनियों के इतिहास को जाज्वल्यमान बनाया है। पूज्य श्री मन्नालाल जी महाराज को जन्म देने का सौभाग्य भी इसी प्रदेश को प्राप्त हुआ। आपकी जन्म-भूमि रतलाम थी। आप श्री अमरचन्द जी नागौरी के पुत्र तथा माता नन्दी बाई के आत्मज थे। वि० स० १९२५ में आपका जन्म हुआ और तेरह वर्ष की अल्प आयु में ही आप संसार से विरक्त हो गए। पूज्य श्रीउदयसागर जी महाराज की सेवा मे रहे हुए सरलस्वभावी मुनि श्रीरत्नचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य थे। करीब २५ गुरुभ्राताओं और गणवरों के समान ग्यारह शिष्यरत्नों से आप ऐसे शोभायमान होते, जैसे ताराओं में चन्द्रमा!

सं० १९७३ मे आप आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित हुए। विशेषता तो यह थी कि आप जम्मू (काश्मीर) मे विराजमान थे और पूज्य पदवी का प्रदान ब्यावर मे हुआ।

पूज्य श्री बत्तीस आगमों के तलस्पर्शी ज्ञाता थे। कोई भी विषय पूछिए किस आगम मे, किस अध्ययन और किस उद्देशक मे है· पूज्य श्री चटपट बतला देते थे। वास्तव मे आपका आगमज्ञान असाधारण था। इसी कारण आप 'शास्त्रों के समुद्र' के महत्त्वपूर्ण उपनाम से विख्यात हो गए थे।

सन्तों में जो विशिष्ट गुण होने चाहिएँ, सभी आप में विद्यमान थे। शिशु के समान सरलता और स्वच्छता, युवकोचित उत्साह और संयम-विषयक पराक्रम वृद्धों के अनुरूप क्षमा, सन्तोष और गम्भीरता आपमे आदि से अन्त तक रही। हृदय नवनीत के सदृश कोमल! चौथे आरे के सन्तों के चरित की झाँकी आप मे मिलती थी।

आपने मालवा, मेवाड़, मारवाड़, और पंजाब आदि प्रान्तों मे विचरण करके जनता को पुनीत पथ का प्रदर्शन किया। आप प्राय· अपने प्रवचनों मे शास्त्रीय-चर्चा ही करते थे। उपदेश की भाषा इतनी सरल होती थी कि आबालवृद्ध सभी सरलता से समझ लेते थे। करीब ५२ वर्ष संयम का पालन करके सं० १९९० मे, ब्यावर मे आपका स्वर्ग-विहार हो गया।

८—वादी-मानमर्दक मुनि श्री नन्दलालजी महाराज

पारिवारिक वातावरण का व्यक्ति के जीवन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है और माता-पिता का कार्यकलाप किस प्रकार अज्ञात रूप मे बालक के जीवन-निर्माण का कारण होता है, यह बात मुनि श्री नन्दलाल जी महाराज की जीवनी पर दृष्टिपात करते ही स्पष्ट रूप मे समझ मे आ जाती है।

मुनि श्री नन्दलाल जी महाराज का मातृपक्ष और पितृपक्ष धर्म के पक्के रंग में रँगा था। अतएव शास्त्रीय भाषा मे आपको 'जाइसपन्ने' और 'कुलसंपन्ने' कहना सर्वथा उचित है।

आपकी जन्मभूमि कजाडी (मध्यभारत-भूतपूर्व होल्कर स्टेट) थी। भाद्रपद शुक्ला ६ वि० स० १६१२ मे, अर्थात् अब से ठीक एक शताब्दी पूर्व आप इस धरा-धाम पर अवतीर्ण हुए। आपकी उम्र दो वर्ष की थी, तभी आप के पिता श्रीरत्नचन्द्र जी ने और मामा श्रीदेवीलाल जी ने स० १६१४ मे दीक्षा ग्रहण कर ली। तदनन्तर वि० स० १६२० मे आपके दोनों ज्येष्ठ बन्धुओं-श्री जवाहरलाल जी, श्री हीरालाल जी-ने, आपकी परम धर्मिष्ठा माता राजकुँवरबाई ने तथा आपने भागवती दीक्षा अगीकार करके विश्व के समक्ष एक अनूठा आदर्श उपस्थित किया। कैसा स्पृहणीय और स्फूर्त्तिप्रद रहा होगा वह दृश्य।

आगे चलकर तीनों भाइयो की इस मुनित्रयी ने स्थानकवासी सम्प्रदाय की तथा भगवान् महावीर के शासन की महान् सेवा एव प्रभावना की।

यद्यपि इस त्रिपुटी मे नन्दलाल जी महाराज सबसे छोटे थे, मगर प्रभाव मे वह सबसे बड़े-चढ़े थे। उन्होंने निरन्तर उद्योग करके आगमों सम्बन्धी प्रखर पाण्डित्य प्राप्त किया था। वे सहज प्रतिभा के प्रकृष्ट पुज थे। वाद-विवाद और चर्चा-वार्त्ता मे अपना सानी नहीं रखते थे। अनेकों बार उन्हें अन्य सम्प्रदायी जैन साधुओं एवं जैनेतर विद्वानों से शास्त्रार्थ करने का प्रसग आया और हर बार वे गौरव के साथ विजयी हुए। वास्तव मे वे जन्मत विजेता थे। अपनी बालक्रीडाओं मे भी उन्हें कभी पराजय का मुख नहीं देखना पडा। आपका प्रधान विहार-क्षेत्र यद्यपि मालवा, मेवाड़ और मारवाड़ रहा, मगर आपके सयुक्त प्रान्त, देहली प्रान्त एव पजाब में भी विचरण किया था। वहाँ भी आपने अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का सिक्का जमाया। आप अपने समय मे '*वादी-मानमर्दक*' के विरुद् के धारक थे। निरहकार, दयालु और गुणज्ञ थे। दीर्घकाल तक ज्ञान और चारित्र की आराधना करके आप अन्त मे रतलाम में स्थिरवास करते हुए स्वर्गगामी हुए।

९—विद्या-वाचस्पति मुनि श्री देवीलालजी महाराज

टोंक रियासत के केरी नामक छोटे से ग्राम में जन्म लेकर भी जिसने अपने तेजोमय जीवन की स्वर्णिम रश्मियाँ भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक प्रसरित कीं, जिसने अपना बहुमूल्य जीवन स्व-पर के उद्धार मे लगाया, जिसने अकिंचनता, अनगारत्ता और भिक्षुकता अगीकार करके भी अपनी महनीय आध्यात्मिक सम्पत्ति से राजाओं-महाराजाओ को भी प्रभावित करके अपने पावन पाद-पद्मों मे प्रणत किया, वह तपोधन, ज्ञानधन मुनि श्री देवीलाल जी म० आज भी हमारी श्रद्धा-भक्ति के पात्र हैं।

मुनि श्री देवीलालजी के पिता बोरदिया-वशी श्री माणकचन्दजी थे और माता श्रीमती शृगार बाई थीं। तीनों पति, पत्नी और पुत्र ने साथ-साथ दीक्षा ली। दीक्षा के समय आपकी उम्र केवल ग्यारह वर्ष की थी। दीक्षित होनेके पश्चात् श्री माणकचन्द जी म० तपस्या-प्रधानी बने और उन्होंने घोर तपस्वी

की पदवी प्राप्त की। देवीलाल जी म० ने अपने उठते हुए जीवन को ज्ञानाभ्यास मे लगा दिया। थोड़े ही दिनों मे आप व्याकरण के तथा शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित बन गये। आप सन्तो मे 'विद्या-वाचस्पति' कहलाते थे।

आपकी वक्तृत्वशक्ति अत्यन्त चमत्कारपूर्ण थी। विद्वत्ता प्रत्येक वाक्य मे झलकती थी। हजारों के जनसमूह मे आपका व्याख्यान होता था तो आप सिंह के समान दहाड़ते थे। राजा-महाराजा, राज्याधिकारी आदि आपकी कल्याणी वाणी सुनने के लिये उत्कण्ठित रहते थे। स्वर मे मधुरता थी। जिस विषय को छेड़ते, उस पर बड़ी ही सुन्दर, सार-गर्भित, सांगोपाग और प्रभावजनक विवेचन करते थे।

आपने अपने प्रभाव से अनेक स्थानों के पारस्परिक वैमनस्य-धड़ेबाजी को मिटाकर एकता स्थापित की। झगड़े मिटाये। हजारों को मास-मदिरा का त्यागी बनाया। पशुबलि बन्द की। तत्त्वचर्चा करके आर्य-समाज के श्री प्रभुदयाल सरीखे नेता को कट्टर जैनी बनाया।

आप अपने सम्प्रदाय के एक प्रमुख स्तम्भ रहे। सम्प्रदाय को सुचारु रूप से संचालित करने और उसमे ज्ञान-क्रिया का विकास करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे। भू० पू० आचार्य पं० र० मुनि श्री-शेपमल जी म०, जो तेरापंथी सम्प्रदाय मे दीक्षित हुए थे आपसे वाद-विवाद करके अन्त मे आपके शिष्य बन गये। करीब ५१ वर्ष संयम पालकर आप कोटा मे स्वर्गवासी हुए।

१०—विरलाविभूति पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज

पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज का जन्मस्थान निम्बाहेड़ा (टोंक) है। विक्रम संवत् १६३० में आपका जन्म हुआ। उठते हुए यौवन में आपने विषयों को विष के समान समझकर सं० १६५२ मे आपने साधु-दीक्षा अंगीकार कर ली। पिता का नाम टेकचन्द जी, माता श्रीमती गेंदीबाई और पतिव्रता पत्नी का नाम साकरबाई था।

आपका घराना धन-जन से सम्पन्न था। प्रभूत वैभव था। स्नेहशील परिवार था। पत्नी पति-परायणा, आज्ञाकारिणी, सुन्दरी और सुसंस्कारवती थी। परन्तु इनमे से कोई भी वस्तु आपको गार्हस्थ्य की ओर आकर्पित न कर सकी। आप अत्यन्त साहसी और दृढ़निश्चयी महापुरुष थे। गौतम बुद्ध की भाँति आप पत्नी, परिवार और सम्पत्ति को त्यागने का निश्चय कर चुके तो लाख समझाने और अनुनय-विनय करने पर भी न डिगे। मुनि त्रिपुटी के एक रत्न श्री नन्दलाल जी म० से नीमच मे आपने दीक्षा ली।

बचपन मे ही आपको उच्च श्रेणी की शिक्षा हुई थी। दीक्षित होने पर आपने संस्कृत, प्राकृत और आगमों का गहन अध्ययन किया। आगमों के पारदर्शी वेत्ता बने। आप अध्ययनशील सन्त थे। दर्शनार्थियों से बात-चीत करते तो भी शास्त्रीय बात ही करते। संयम मे एकनिष्ठा, प्रीति एव एकाग्रता रखने वाले आप इस युग के आदर्श सन्त थे। अत्यन्त सौजन्य की मूर्त्ति, सरलता की प्रतिमा और भद्रता के भण्डार। सौम्य मुखमण्डल पर अपूर्व वीतरागता एव अनुपम प्रशम भाव सदैव लहराता रहता था।

आपकी विद्वत्ता, शान्ति, एव संयमपरायणता आदि विशिष्ट गुण देखकर पूज्य श्री मन्नालाल जी म० के पट्टपर चतुर्विध संघ ने आपको संवत् १६६० मे आचार्य पद पर आरूढ़ किया।

पूज्य श्री राजस्थानी भाषा के उच्च कोटि के कवि थे। आपकी कविताओं का एक संग्रह सन्मति-ज्ञानपीठ, आगरा से 'खूब कवितावली' नाम से प्रकाशित हुआ है। आपकी यह रचना अत्यन्त सरस,

मधुर, प्रसाद गुणयुक्त है। वैराग्य और अध्यात्म का अन्त करण मे झरना बहाने वाली है।

निस्सन्देह पूज्य श्री मेघ के समान अपने मधुर व्याख्यानों से अमृत बरसाने वाले, सूर्य के समान-भव्य-जन रूपी कमलों को विकसित करने वाले, श्रद्धालुजनों रूपी कुमुदों को चन्द्रमा के समान आह्लाद-जनक थे। इस काल मे ऐसी विभूतियाँ विरल ही दृष्टिगोचर होती है।

दीर्घकाल तक सयम की आराधना करके अन्त मे आप ब्यावर मे दिवगत हुए।

११—जैनदिवाकर श्री चौथमलजी महाराज

जन्म-जन्मान्तर मे संचित प्रकृष्ट पुण्य लेकर अवतरित होने वाले महापुरुषो मे प्रसिद्ध व्याख्याता जैनदिवाकर मुनि श्री चौथमल जी महाराज का शुभ नाम प्रथम अकित होने योग्य है। अपने आपने जीवन-काल मे संघ और धर्म की सेवा एव प्रभावना के लिए जो महान स्तुत्य कार्य किये, वे जैन इतिहास मे स्वर्ण-वर्णों में लिखने योग्य है। हमारे यहाँ अनेक बड़े-बड़े विद्वान, वैराग्यवान, वक्ता और प्रभावक सन्त हुए हैं, परन्तु जैनदिवाकर जी महाराज ने जो प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा प्राप्त की, वह असाधारण है। राजा-महाराजा, अमीर-गरीब, जैन-जैनेतर सभी वर्ग आपके भक्त थे। उत्तर भारत और विशेषत मेवाड़, मालवा तथा मारवाड के प्राय सभी राजा-रईस आपके प्रभावशाली उपदेशों से प्रभावित थे। मेवाड़ के महाराणा आपके परम भक्त रहे। पालनपुर के नवाब, देवास नरेश आदि पर आपकी गहरी छाप पड़ी। अपने इस प्रभाव से जैनदिवाकर जी महाराज ने इन रईसो से अनेक धार्मिक कार्य करवाये।

जैनदिवाकर जी महाराज अपने समय के महान विशिष्ट वक्ता थे। आपकी वाणी में सुधा-रस छलकता था। आप श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर देते थे। राज महलो से लेकर झोंपड़ियों तक आपकी जादू-भरी वाणी गूँजी। अद्भुत शैली और सरल से सरल भाषा मे आपके प्रवचन होते थे। आपके उपदेशों ने सहस्रों नर-नारियों को तार दिया।

जैनदिवाकर जी महाराज अद्वितीय प्रभावशाली वक्ता होने के साथ उच्चकोटि के साहित्य-निर्माता भी थे। गद्य-पद्यमे आपने अनेक ग्रंथों का निर्माण किया, जिनमे निर्ग्रन्थप्रवचन, भगवान महावीर की जीवनी, 'पद्यमय जैन रामायण', मुक्तिपथ, आदि प्रसिद्ध हैं। आप द्वारा निर्मित पद्यों का 'जैनसुबोध गुटका' नाम से एक सग्रह भी प्रकाशित हो चुका है।

सयोग की बात देखिए कि रविवार (कार्तिक शु० १३, सं० १९३४) को आपका जन्म हुआ, रविवार (फाल्गुन शु० ५ स० १९५२) को आपने दीक्षा अंगीकार की और रविवार (मार्गशीर्ष शु० ९ स० २००७) को ही आपका स्वर्गवास हुआ। सचमुच रवि के समान तेजस्वी जीवन आपको मिला। रवि के सदृश ही आपने ज्ञानालोक की स्वर्णिम किरणें लोक मे विकीर्ण की और अज्ञानान्धकार का विनाश किया।

आपके पिता श्री गगाराम जी तथा माता श्री केसर बाई ऐसे सपूत को जन्म देकर धन्य हो गए। नीमच (मालवा) पावन हो गया।

चित्तौड मे आपके नाम से श्री चतुर्थ जैन वृद्धाश्रम नामक एक संस्था चल रही है। कोटा में, आपकी स्मृति मे अनेक सार्वजनिक सस्थाओं का सूत्रपात हो रहा है।

दिवाकर जी महाराज जैनसघ के संगठन के प्रबल समर्थक थे। अन्तिम जीवन मे आपने सगठन के लिए सराहनीय प्रयास किये। दिगम्बर मुनि श्री सूर्यसागर जी, श्वे० मूर्तिपूजक मुनिश्री आनन्दसागर जी और आपके अनेकों जगह सम्मिलित व्याख्यान हुए। यह त्रिपुटी सम्मिलित विहार करके जैन-समाज मे

एकता का शंखनाद करने की योजना बना रही थी, पर काल को यह सहन न हुआ। दिवाकर जी महाराज का स्वर्गारोहण हो गया। फिर भी आप स्थानकवासी सम्प्रदाय के श्रमण-संघ की जड जमा ही गये।

निस्सन्देह जैनदिवाकर जी महाराज अपने युग के असाधारण प्रतिभाशाली-महान् सन्त है। जगत आपके उपकारों को जल्दी भूल नहीं सकता।

१२—उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज

पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज सा० का जन्म स० १६४७ मे मेवाड के मुख्य नगर उदयपुर मे हुआ था। अत्यन्त उत्कृष्ट भाव से केवल १६ वर्ष की अवस्था मे आपने प्रव्रज्या अगीकार की। अपने गुरुदेव पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज सा० की सेवा मे रह कर आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। अपने गुरु के अत्यन्त योग्य और प्रियशिष्य के रूप में आप रहे। आपको मराठी, हिन्दी और गुजराती भाषा का अच्छा ज्ञान है।

अजमेर साधु-सम्मेलन के समय आप पूज्य श्री हुकमीचन्द जी म० सा० की सम्प्रदाय के युवाचार्य के रूप मे घोषित किये गए। सवत २००० मे भीनासर मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० सा० के कालधर्म पाने के पश्चात् आप इस सम्प्रदाय के आचार्य बनाये गए। आचार्य के रूप मे आपने बडी ही योग्यता, दक्षता एव सफलता के साथ सम्प्रदाय का सगठन एव सचालन किया।

आपकी वैयावच्च (सेवापरायणता), आपकी गम्भीरता और आपकी सौम्यता स्पृहणीय एवं अनुकरणीय है। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की अंतिम समय मे जिस तत्परता, भक्ति एव आत्म-विभोर होकर सेवा की वह समस्त मुनिवृन्द के लिये एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

आपकी व्याख्यान-शैली बडी ही मधुर, आकर्षक एव श्रोताओं के अन्तस्तल को स्पर्श करने वाली है। मत्र-मुग्ध होकर और आत्म-विस्मृत होकर श्रोता लोग आपका व्याख्यान श्रवण कर एक अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव करने लगते है। गुरु-गम्भीर मेघ-गर्जना के समान आपके वचन कर्णगोचर होते ही श्रोताओं के मन-मयूर थिरक-थिरक कर नाचने लगते है।

आपने भी अपने गुरु के समान थली प्रदेश मे प्रसरित तेरापथियों की तरफ से अनेक परिषहों को धैर्यपूर्वक सहन करके भी उनके दया-दान विरोधी मिथ्या-मान्यता का दृढता-पूर्वक प्रतिकार करके भगवान् महावीर के दया-दान विषयक सिद्धान्तों का सर्व-साधारण लोगों को दिग्दर्शन कराया।

आपके विनय और गाभीर्य आदि गुणों से प्रभावित एव आकर्षित होकर सादड़ी सम्मेलन के समय बाईस सम्प्रदायों ने मिलाकर 'उपाचार्य' पद प्रदान किया। जिसकी जवाबदारी सफलतापूर्वक निर्वाह करते हुए चतुर्विध श्री संघ की सेवा कर रहे हैं।

भव्य और प्रभावशाली व्यक्तित्व, साधुता के गुणों से सम्पन्न, नेतृत्व और वक्तृत्व की अपूर्व क्षमता, सरलता एव गम्भीरता की सजीव मूर्ति उपाचार्य श्री समाज की एक विरल विभूति है और ऐसी ही विभूतियों से संघ और शासन उन्नत एव मंगलकारी हो सकता है।

१३—पं० मुनिश्री सहस्रमलजी महाराज

प० मुनि श्री सहस्रमल जी महाराज का जन्म वि० सं० १६५२ मे मेवाड़ के बरार ग्राम मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री हीरालाल जी था। आपने पहले तेरापंथ धर्म की दीक्षा अंगीकार की थी

और उस मे लगभग सात वर्ष तक रहे। किंतु तेरापथ के दया-दान विरोधी सिद्धान्त और आचार-विचार जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों से विरोधी मालूम पड़ने पर तेरापथ का त्याग कर सवत १६७४ मे प्रभावशाली वक्ता प० मुनि श्री देवीलाल जी महाराज से शुद्ध जैन धर्म की दीक्षा अंगीकार की। आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया है। पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज की पाट पर आप आचार्य पद पर विराजमान हुए थे।

आप अत्यन्त शान्त और समयसूचक श्रमण हैं। साधुमार्गी समाज मे आपके आचार-विचार अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके हैं। एकता के अडिग उपासक होने के कारण एकता की वेदी पर अपनी-आचार्य पदवी समर्पित करने मे सर्व प्रथम श्रेय आप ही को प्राप्त हुआ है। श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ के आप मत्री हैं।

१४—साहित्यप्रेमी मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज

प० मुनि श्री प्यारचन्द जी महाराज ने अपने सद्गुरु जैन दिवाकर चौथमल जी महाराज के चरणों मे एकनिष्ठापूर्वक सेवा समर्पित की। जैनदिवाकर जी महाराज के प्रवचनों का सम्पादन आपकी विलक्षण प्रतिभा का प्रभाव है। आप साहित्यप्रेमी और सरल प्रवक्ता हैं। सादडी साधु-सम्मेलन मे आप सहमत्री के रूप मे नियुक्त किये गए हैं।

कोटा-सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री दौलतरामजी महाराज

पूज्य श्री हरजी ऋषि के छठे पाट पर पूज्य श्री दौलतराम जी महाराज विराजमान हुए। आप स्वमत तथा परमत के परम विद्वान् थे। सस्कृत, प्राकृत भाषाओं के आप प्रकाड पडित थे। आपकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर लींवड़ी मोटी सम्प्रदाय के संस्थापक पूज्य श्री अजरामर जी स्वामी ने आपको मालवे से पधारने के लिये आमंत्रित किया था और आपके सान्निध्य मे रहकर उन्होंने शास्त्रों का गभीर अध्ययन किया था।

२—तपस्वी मुनि श्री गणेशीलालजी महाराज

आपकी सम्प्रदाय मे अनेक तपस्वी मुनिराज हुए हैं। पूज्य श्री हरजी ऋषि जी महाराज के बारहवे पाट पर पूज्य श्री प्रेमराज जी महाराज विराजमान हुए। आपके सुशिष्य तपस्वी मुनि श्री गणेशीलाल जी महाराज हैं। आपका जन्म मारवाड मे बिलाडा मे हुआ है। आप निरंतर एकांतर तप करते हैं। दक्षिण-प्रान्त मे आपका व्यापक प्रभाव है। आपके सान्निध्य मे जाने वाले को मुँहपत्ति धारण करना अनिवार्य है। मुँहपत्ति नहीं बाँधने वाले को न तो आप व्याख्यान मे बैठने देते और न उससे किसी प्रकार की बातचीत ही करते। आप खादी प्रचार के खास हिमायती हैं। खादी नहीं पहनने वाले के साथ बात करना भी आप पसन्द नहीं करते।

आपकी नेश्राय मे तपश्चर्या अधिक प्रमाण मे होती है। आप जहाँ-जहाँ विचरते हैं वहाँ जन-मेदिनी मेले के समान उमड पडती है। वयोवृद्ध होते हुए भी आप उग्र विहारी है। आपके शिष्य भी विद्वान् और तपस्वी हैं। किन्तु आपकी कठोर क्रिया और एकलचिता के कारण कोई भी मुनिराज आपकी सेवा मे इस समय नहीं है। आप एकल विहारी के रूप में ही विचरते हैं।

की खेतशीजी महाराज से चली हुई कोटा-सम्प्रदाय के अतर्गत एक शिष्य-परम्परा मे पूज्य की अनोपचन्द जी महाराज, पूज्य श्री हरखचन्द जी महाराज आदि प्रसिद्ध मुनिराज हो गये हैं।

स्थविर मुनिकी रामकुमारजी म० सा०, प० मुनिश्री जीवराजजी म०, पं० मुनिश्री हीरालालजी म० तपस्वी मुनिकी मिश्रीलालजी म० आदि सन्त इसी भूतपूर्व सम्प्रदाय के है जो श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमणसंघ मे सम्मिलित है और क्रमश हाडौती, डूंगरप्रान्त और मद्रास जैसे प्रान्तों मे विचर कर जैन धर्म का प्रचार कर रहे है।

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज मालवा के मुनिराज

१—पूज्य श्री रामचन्दजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के दूसरे पाट पर पूज्य श्री रामचन्द जी महाराज आचार्य के रूप मे विराजमान हुए। आपा धारा नगरी के गोस्वामी गुरु थे। सस्कृत, वेद और वेदान्त के आप पारगत विद्वान् थे।

हाथी के हौदे पर चढे हुए और नगर का निरीक्षण करते हुए पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज का धर्मोपदेश आपके कानों में पडा। इससे आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ। आप की अन्तरात्मा मे एक अद्भुत चैतन्य-शक्ति प्रकट हुई जिसके कारण गोस्वामी का विलासिता का जीवन अन्त करके पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के सत्सग से चारित्र-धर्म अगीकार किया।

एक समय विहार करते हुए आप उज्जैन पधारे। वहाँ पेशवा सरकार की विदुषी मातेश्वरी ने कुछ ऐसे श्लोक पूछे कि जिनका अर्थ समझने मे अनेक विद्वानों की कठिनाई हुई। पूज्य श्री रामचन्द जी महाराज ने उन श्लोकों का समाधानकारक उत्तर दिया। इससे महारानी का हृदय आपकी तरफ आकर्षित हुआ और पूज्य श्री को हृदयार्पण करना चाहा। किन्तु आचार्य श्री ने जैन साधुओं के यथार्थ स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हुए कहा कि "हम जैन साधु तो कचन और कामिनी के त्यागी हैं। यदि आप सचमुच ही प्रसन्न हुई हैं और परोपकार की इच्छा रखती हों तो पेशवा सरकार के कैदखाने मे हजारों कैदी सड रहे हैं उन्हें मुक्त करा दो।" पेशवा सरकार ने आपकी आज्ञा शिरोधार्य की और समस्त बन्दियों को बन्दीखाने से मुक्त किया। इससे जैनधर्म की प्रचण्ड प्रभावना हुई। अपराधियों ने फिर से अपराध न करने की प्रतिज्ञा की।

आप के फैलते हुए यश-सौरभ से अनेक ईर्ष्यालुओं के दिल जलने लगे। ऐसे दिलजले लोगों ने ग्वालियर की सिंधिया सरकार को प्रार्थना की कि आचार्य रामचन्द जी अपनी गुरु गोस्वामी मठाधीश को धोखा देकर जैन साधु हो गए हैं और अब वे सनातनधर्म की निन्दा करते हैं—शकर और गगा का अपमान करते हैं। यह सुन कर सिंधिया सरकार अत्यन्त क्रुद्ध हुए। सरकार ने आप से प्रश्न किया कि

"क्या आप महादेव को नहीं मानते?" पूज्य श्री रामचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि 'हे राजन्! जिसने राग-द्वेष क्रोध-मान-माया-लोभ का संहार किया है उसे हम 'महादेव' कहते हैं। हम अपना समस्त जीवन ऐसे महादेव की आराधना में ही व्यतीत करते हैं। गंगा जी का सन्मान हम माता से भी अधिक करते हैं। अपमान तो वे करते हैं जो उसमें मल-मूत्र का विसर्जन करते हैं और हाथ-पाँव धोकर अपना मैल उसी में मिलाते हैं और उसे अपवित्र बनाते हैं।

इस प्रकार का युक्ति-युक्त उत्तर सुन कर श्री सिन्धिया सरकार अत्यन्त प्रसन्न हुए। विद्वेषी लोग अन्दर-ही-अन्दर जल कर खाक हो गए। इस प्रकार आपने अपनी प्रतिभाशाली बुद्धि-वैभव से एक सन्माननीय आचार्यरूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की।

२—पूज्य श्री माधव मुनिजी महाराज

"सो साधु एक साधु" की उक्ति से प्रसिद्ध कविराज श्री माधव मुनि एक अति प्रभावशाली आचार्य हुए हैं। वाद-विवाद में आप लोक-विश्रुत थे। कोई भी प्रतिपक्षी अपना वितण्डावाद छोड़ नत-मस्तक हुए बिना नहीं जाता था। प्रवचन-कला में भी आप निष्णात थे। आप की कविताएँ अत्यन्त भावनामय और विद्वत्तापूर्ण होती थीं।

३—पूज्य श्री ताराचन्दजी महाराज

पूज्य श्री ताराचन्द जी महाराज ने वि० सं० १९४६ में दीक्षा अंगीकार की। आप बड़े ही स्वाध्याय-प्रेमी और सरल प्रकृति के साधु थे। आत्मिक शक्ति आपमें ऐसी महान थी कि ७६ वर्ष की अवस्था में भी आप उग्र विहार करते थे। मैसूर और हैदराबाद की तरफ विचरकर आपने खूब उपकार किया।

४—पं० मुनि श्री किशनलालजी महाराज

पं० मुनि श्री किशनलाल जी महाराज पूज्य श्री ताराचन्द्र जी के शिष्य हैं। आपका शास्त्रीय ज्ञान सुविशाल है। कविता के आप रसिक हैं। वस्तु तत्त्व को सरल और सुबोध बनाकर समझाने में आप प्रवीण हैं। आपकी प्रवचनशैली बड़ी ही मधुर है। जन्म से आप ब्राह्मण हैं किन्तु जैनधर्म के संस्कार आपमें सहज ही सुरायमान हुए हैं। आप श्रमण-संघ के मन्त्री हैं।

५—प्र. वक्ता श्री पं० मुनिश्री सौभाग्यमलजी महाराज

पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज ने पं० मुनि श्री किशनलालजी महाराज सा० के पास दीक्षा ग्रहण की। शास्त्रों का अत्यन्त गहन अभ्यास आपने किया है। वक्तृत्व कला में आप निपुण हैं और संगठन के हिमायती हैं। अनेक शिक्षण संस्थाओं का आप के द्वारा सूत्र संचालन होता है। आप के द्वारा साहित्य की खूब सेवा हुई है। विपक्षी विद्वानों के साथ सात्त्विक युद्ध करके आपने विजय सम्पादन किया है। 'आचारांग' का प्र० श्रु० स्कंध का आपने सुन्दर ढंग से सम्पादन किया है। आप के व्याख्यानों के संग्रह भी प्रकट होते हैं।

६—शतावधानी पं० केवल मुनिजी महाराज

पं० मुनि श्री केवलचन्द जी महाराज प्र० वक्ता सौभाग्यमल जी महाराज के शिष्य थे। संस्कृत-प्राकृत आदि भाषाओं का आपने खूब अभ्यास किया था। सम्वत् २०११ में रेल के स्लीपर पार करते हुए चक्कर आ जाने पर वहीं गिर पड़े-उसी समय रेल आजाने के कारण रेल-दुर्घटना के शिकार हो गए। यह घटना उज्जैन की है। स्था० जैन समाज ने एक विद्वान्-रत्न गुमा दिया।

पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी महाराज के मुनिराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज की सम्प्रदाय के अनेक विभाग हुए और उसमें से अलग-अलग सम्प्रदाये फूट निकलीं। उनके ९९वें शिष्यों में से धन्नाजी अत्यन्त प्रभावशाली शिष्य थे। आपसे भूधर जी स्वामी दीक्षित हुए। भूधर जी के चार शिष्यों में से कुशाला जी प्रभावशाली हुए। आप से मुनि श्री रामचन्द्र जी ने दीक्षा ग्रहण की। रामचन्द्र जी महाराज के मुनि श्री चिमनीराम जी शिष्य हुए। आपसे मुनि श्री नरोत्तम जी महाराज ने पच महाव्रत धारण किये। मुनि श्री नरोत्तम जी महाराज के आठ शिष्य हुए। उनमे से मुनि श्री गगाराम जी महाराज के शिष्य तपस्वी मुनि श्री जीवन जी महाराज हुए और जीवन जी महाराज के मुनि श्री ज्ञानचन्द्र जी महाराज हुए।

उपरोक्त परम्परा मे मुनि श्री गोविदराम जी महाराज, मुनि श्री मदनलाल जी महाराज, चुन्नीलाल जी महाराज, खीमचन्द महाराज जी आदि अनेक सन्त हुए।

वर्तमान मे पडित मुनि श्री पूर्णमल जी महाराज, आत्मार्थी मुनि श्री इन्द्रमल जी महाराज, तपस्वी मुनि श्री श्रेयमल जी महाराज सा तथा पं० मुनि श्री समर्थमल जी महाराज सा० इस सम्प्रदाय मे क्रियाशील संत हैं। पं० मुनि श्री समर्थमल जी महाराज ने शास्त्रों का गहरा अभ्यास किया है। आप एक प्रख्यात परम्परावादी मुनिराज हैं।

पूज्य श्री रत्नचन्द् जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के ९९ वें शिष्यों मे से श्री धन्ना जी महाराज अग्रगण्य विद्वान् थे। आपका परिवार दिन-प्रतिदिन बढता गया। आचार्य कुशल जी, पूज्य धन्नाजी महाराज के शिष्य पूज्य भूदर जी महाराज के पास दीक्षित हुए। उनके शिष्य गुमानचन्द जी महाराज हुए जो अत्यधिक प्रभावशाली आचार्य थे। आपके बारह शिष्य खूब विद्वान थे। इन सब मे पूज्य की रत्नचन्द्र जी महाराज अग्रगण्य थे, जिनके नाम से इस सम्प्रदाय का नाम हुआ।

१—पूज्य श्री रत्नचंद्रजी महाराज

राजस्थान के कुडगाँव मे आपका जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम की लालचन्द जी और माता का नाम हीरादेवी था। आप नागौर के श्री गगाराम जी के यहाँ दत्तक के रूप मे गये थे। वि० स०

१८४८ मे पूज्य श्री गुमानचन्द जी महाराज के पास उत्कृष्ट वैराग्यभाव से दीक्षा ग्रहण की। आपने आगमों का गम्भीर रूप से अध्ययन, मनन और चिन्तन किया था। तत्कालीन संत-मुनिराजों मे आपकी खूब प्रतिष्ठा थी। स्थविर मुनिराज श्री दुर्गादास जी महाराज की प्रबल इच्छा के कारण समस्त श्री संघ ने मिलकर आपको आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित किया। आपने हजारो जैनेतरों को जैनधर्म की दीक्षा प्रदान की। संवत् १८८७ मे आपका स्वर्गविहार हुआ।

२—पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज

पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज के चौथे पाट पर पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज विराजमान हुए। आपका जन्म वि० स० १६१४ मे जोधपुर मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री भगवानदास जी और माता का नाम श्री पार्वती देवी था। आपने पूज्य श्री कजोडीमल जी महाराज सा० से १३ वर्ष की बाल्यावस्था मे सयम ग्रहण किया। आपकी नम्रता, गंभीरता, गुरुसेवा, सहिष्णुता और मिलनसार प्रकृति से प्रभावित होकर स० १६७२ मे श्री संघ ने मिलकर आपको आचार्य-पद दिया। अनेक भव्य प्राणियों का उद्धार करते हुए स० १६८३ में आप समाधि-मरण पूर्वक काल-धर्म को प्राप्त हुए।

३—सहमंत्री पं० रत्न श्री हस्तीमलजी महाराज

प० रत्न हस्तीमल जी महाराज का जन्म स० १६६७ में हुआ। केवल १० वर्ष की अवस्था मे ही पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज से आपने दीक्षा ग्रहण की। आप संस्कृत-प्राकृत आदि भाषाओ के गहन अभ्यासी हैं। अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से आपने शास्त्रों का अध्ययन किया है। छोटी सी उम्र मे आपकी गभीरता और चरित्रशीलता आदि गुणों से आकर्षित होकर स० १६८७ मे केवल २० वर्ष की अवस्था में ही आपको आचार्य-पद से अलकृत किया। सादडी सम्मेलन में आपका महत्त्वपूर्ण भाग था। आपकी प्रवचन-शैली अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। 'नदी सूत्र' के प्रति आपकी अगाध भक्ति है। आपने इस सूत्र का विस्तारपूर्वक हिन्दी अनुवाद भी किया है। आगम प्रकाशन कार्य के सशोधन में आपने बडा योगदान दिया है। आप प्रभावशाली वक्ता, साहित्यकार और चारित्रशील आध्यात्मिक मुनि है। सादडी सम्मेलन मे आप साहित्य मंत्री एव सहमत्री चुने गये हैं। आपके ज्ञान और चारित्र से स्थानकवासी जैन समाज को बहुत बडी आशाएँ हैं। सत्य ही आप एक ऐसे सत हैं जिस पर स्थानकवासी जैन समाज को गौरव हो सकता है। सतत स्वाध्याय और अध्ययनशीलता मे आप रत रहते हैं।

पूज्य श्री जयमल जी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री जयमलजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के दूसरे शिष्य धन्ना जी महाराज हुए। इनके शिष्य भूदर जी महाराज के पास मे पूज्य श्री जयमल जी महाराज ने दीक्षा ग्रहण की। आप लाबिया के निवासी थे। आपके पिता का नाम श्री मोहनदासजी समदडिया थे और आपकी माता का नाम महिमा देवी था। विवाह

के छ मास पश्चात् व्यापार के लिए आपका मेड़ता आना हुआ। वहाँ पर आपने आचार्य श्री भूदर जी महाराज का व्याख्यान श्रवण किया। इससे आपको वैराग्य हो गया और सयम ग्रहण करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। यह समाचार मिलते ही आपके माता-पिता अपनी वहू को लेकर मेडता पधारे। इन लोगों ने आपको खूब समझाया किन्तु जिसकी आसक्ति नष्ट हो गई हो वह त्याग-मार्ग मे शिथिलता किस प्रकार वतला सकता है? सवत् १७८७ मे आपने पच महाव्रत धारण किये। इस समय आपकी अवस्था बाईस वर्ष की थी। आपकी कुलवती भार्या लक्ष्मीवाई ने भी पति के पथ का अनुसरण किया और साथ-ही-साथ दीक्षा ग्रहण की। आपने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। राजस्थानी सरल भाषा मे वैराग्य भाव के उत्कृष्ट पद्य और गीत आपने लिखे हैं, जिन्हें आज भी लोग याद कर और बोल कर अपनी धार्मिक भावना को बलवती बनाते हैं। 'मोटी साधु वदना' जिसका पाठ स्वाध्याय के रूप मे हो रहा है—यह आपकी ही महामूल्यवान् रचना है। लगभग सोलह वर्ष तक आपने एकान्तर उपवास किया और पचास वर्ष तक सोये नहीं। यहाँ तक कि दिन मे भी कभी ऊँघे नहीं। आपने अतिम स्थविर जीवन नागौर मे बिताया। स्वर्ग-वास के एक माह पहले चार आहार का परित्याग कर सलेखना व्रत ग्रहण किया। सवत् १८५३ की वैशाख सुद १४ की पुण्य-तिथि को आपने नश्वर देह का त्याग कर स्वर्ग-गमन किया। आपके त्याग और वैराग्यमय आचरण की अमिट छाप समस्त स्थानकवासी समाज मे अखण्ड रूप से सुरक्षित है।

आपकी सम्प्रदाय मे पूज्य श्री जोरावरमल जी महाराज दस वर्ष की अवस्था मे दीक्षित हुए और सवत् १९८६ मे आपका स्वर्गवास हुआ। आप महान् विद्वान् और कुरीतियों के विरोधी थे। पंडित चौथमल जी बडे विद्वान् एवं क्रियापात्र हुए। जोधपुर मे संवत् २००८ मे लम्बे दिन के सथारापूर्वक 'पडितमरण' हुआ। वर्तमान मे इस सम्प्रदाय मे स्थविर मुनि श्री हजारीमल जी महाराज, वक्ता वख्तावर-मल जी महाराज, पडित मुनि श्री मिश्रीमल जी महाराज, पडित चान्दमल जी महाराज, पडित जीतमल जी महाराज, प० लालचन्द जी महाराज आदि मारवाड़ मे विचरते हैं।

पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज

पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज का जन्म वीरमगाँव मे भावसार जाति मे हुआ था। आपने पूज्य श्री मलूकचन्द जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की थी। राजस्थान मे आप एक उत्कृष्ट चरित्रवान् आचार्य हुए हैं। आप मे धर्म-प्रचार की प्रवल प्रतिभा थी। तेरापथ सम्प्रदाय के आद्य-प्रवर्तक भीषण जी आपके ही शिष्य थे।

वर्तमान मे इस सम्प्रदाय मे प० मुनिश्री मिश्रीलालजी महाराज "कड़क मिश्री" के नाम से प्रसिद्ध है।

२—मुनि श्री श्रीमिलालजी महाराज

मुनि श्री मिश्रीलालजी महाराज उत्साही और क्रियापात्र मुनिराज है। आप 'मरुधर केशरी' के नाम से सुप्रसिद्ध हैं। आपने श्रीमान् लोंकाशाह के जीवन पर "धर्मवीर लोंकाशाह" नाम की एक सुन्दर पुस्तक लिखी है। सादड़ी के साधु-सम्मेलन मे आपने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। सोजत, सोरीयारी,

सादडी आदि कई स्थान के छात्रालय और विद्यालय आपके उपदेशों का फल है। आप विद्वान, व्याख्याता, चर्चावादी, लेखक और कवि भी हैं। प्रेरणा-शक्ति अच्छी है। श्रमण-सघ के आप मत्री भी है। उग्रविहारी और सयमप्रेमी हैं।

पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज की परम्परा में पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज से आठवे पाट पर पूज्य श्री चौथमल जी महाराज आचार्य-पद से सुशोभित हुए। आप पूज्य श्री भैरूलाल जी महाराज के शिष्य और विद्वान् वक्ता थे। इस सम्प्रदाय मे स्थविर मुनि श्री शार्दूलसिंह जी महाराज हैं। आपके शिष्य पं० रूपचन्द जी महाराज सस्कृत प्राकृत भाषाओ के अच्छे पंडित हैं। वक्ता और लेखक भी हैं।

१—मरुधर आचार्य श्री अमरसिंहजी महाराज

जैन सस्कृति मे आचार्य का विशेष महत्व रहा है, तीर्थंकरों के अभाव मे आचार्य ही चतुर्विध सघ का नेतृत्व करता है, "दीवसमा आयरिया" आचार्य को दीपक की उपमा दी है।

श्रद्धेय पूज्य श्री अमरसिंह जी म० ऐसे ही एक महान् आचार्य थे, जिन्होंने भारत की राजधानी दिल्ली मे जन्म लिया और वहीं शिक्षा-दीक्षा पाई।

पूज्य श्री लालचन्द्रजी म० की वाग्धारा को श्रवण कर सम्वत् १७४१ मे, भरी जवानी मे, स्त्री का परित्याग कर, भोग-विलास को, धन-वैभव और ऐश्वर्य को ठोकर मार दीक्षा अगीकार की। सं० १७६१ मे आप आचार्य बने, सैकडों श्रमण और श्रमणियों के नेतृत्व की वागडोर सभाली। सम्वत् १७७७ मे दिल्ली मे वर्षावास व्यतीत किया, वहादुर शाह बादशाह उपदेश से प्रभावित हुआ।

जोधपुर के दीवान खिंवसिंहजी भण्डारी के प्रेमभरे आग्रह को टाल न सके तथा अलवर, जयपुर, अजमेर होते हुए मरुधर के प्राङ्गण मे प्रवेश किया।

सोजत मे जिन्द को प्रतिबोध देकर मस्जिद का जैनस्थानक वनाया, जो कि आज भी काया-कल्प कर उस अतीत का स्मरण करा रहा है।

जब पूज्य श्री पाली मे पधारे तो वहाँ जोधपुर, वीकानेर, मेडता और नागौर के प्रतिष्ठित और विद्वान् चार श्रीपूज्यों ने मिलकर शास्त्रार्थ का चेलेंज दिया तो पूज्य श्री ने सहर्ष स्वीकार कर उन्हें शास्त्रार्थ मे पराजित कर अपने गम्भीर-पाण्डित्य का परिचय दिया।

मरुधर-धरा की राजधानी-जोधपुर मे जब पूज्य श्री पधारे तो दीवान ने अत्यन्त सत्कार के साथ राज तलेटी महल में बिराजने के लिये प्रार्थना की, तो पूज्यश्री वहीं डट गये, राजकार्यवशात् दीवानजी बाहर चले गये, तत्पश्चात् यतियों ने मिलकर जोधपुर नरेश अजीतसिंहजी से प्रार्थना की कि दीवानजी के गुरु, आपको नमस्कार नहीं करते। नरेश ने सहज मस्ती मे कहा—परिव्राटों के चरण-कमलों मे हमारे शिर झुकते है, उन्हें झुकने की आवश्यकता ही क्या है ?

हम इस अनुचित कार्य को देख नहीं सकते, आज्ञा होने पर द्वितीय अनुकूल स्थान वतला दिया जाय, हकारात्मक उत्तर को प्राप्त कर पूज्य श्री को आसोप ठाकुर साहब की हवेली मे ठहरा दिया गया,

जहाँ कि मानव जाने मे भय का अनुभव करता था, आचार्य श्री को अनेक उपसर्ग देने के बाद देव पराजित हुआ, भौतिकता पर आध्यात्मिकता की विजय हुई, स्थानकवासी जैन धर्म के प्रचार का बीज वपन हुआ, आज मरुधरा की शुष्क भूमि मे स्थानकवासी जैन समाज का बगीचा लहलहा रहा है। उसका सर्व प्रथम श्रेय पूज्य श्री को है। उस महान् आचार्य के चरणों मे शतश सहस्रश वन्दन। आपके बाद पूज्य श्री तुलसीदासजी म० और पूज्य श्री सुजानमलजी महाराज क्रमश हुए।

२—'विश्व-विभूति' श्री जीतमलजी महाराज

भारतीय संस्कृति के मननशील मनीषी आचार्य श्री जीतमल जी म० जिनका जन्म संवत् १८२६ मे रामपुरा में हुआ, पिता देवसेन जी और माता का नाम सुभद्रा था। अध्यात्मवाद के उत्प्रेरक आचार्य श्री सुजानमल जी के उपदेश से प्रभावित होकर स० १८३४ मे माता के साथ सयम के कठिन मार्ग पर अपने मुस्तैदी कदम बढ़ाये। आचार्य श्री के चरणों मे बैठकर न्याय, व्याकरण, उर्दू-फारसी, गुजराती, मागधी और अपभ्रंश साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया।

आप दोनों हाथों और दोनों पैरों से एक साथ लिखते थे, चारों कलमे एक साथ एक-दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयत्न करती थीं। १३ लाख श्लोकों की प्रतिलिपियाँ करना इसका ज्वलत उदाहरण है। जैन-जैनेतर के भेद-भाव के बिना, किसी भी उपयोगी ग्रन्थ को देखते तो उसकी प्रतिलिपि कर देते थे, यही कारण है कि आपने ३२ बत्त,-बत्तीस आगमों की-ज्योतिष, वैद्यक, सामुद्रिक-गणित, नीति, ऐतिहासिक, सुभाषित, शिक्षाप्रद औपदेशिक आदि विषयों के ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ कीं।

चित्रकला के प्रति आपका स्वाभाविक आकर्षण था। जैन श्रमण होने के नाते धार्मिक, औपदेशिक, कथा-प्रसङ्गों को लेकर तथा जैन भौगोलिक नक्शे और कल्पना के आधार पर ऐसे चित्र चित्रित किये हैं जिन्हें देख मन-मयूर नाच उठता है। उनके जीवनका एक प्रसङ्ग है कि स० १८७१ मे जोधपुर के परम मेधावी सम्राट् मानसिंहजी के यह प्रश्न पूछने पर कि "जल की बूँद मे असख्य जीव किस प्रकार रह सकते हैं ?" उत्तर मे आचार्य श्री ने एक चने की दाल जितने स्वल्प स्थान मे एक सौ आठ हस्ति अङ्कित किये जिन्हें सम्राट् ने सूक्ष्मदर्शक शीशा की सहायता से देखा। प्रसन्नता प्रकट करते हुए जैन-मुनियों के प्रशंसा रूप निम्न कवित्त रचा—

काहू की न आश राखे, काहू से न दीन भाखे,
करत प्रणाम ताको, राजा राण जेवड़ा।
सीधी सी आरोगे रोटी, बैठा बात करे मोटी,
ओढ़ने को देखो जांके, धोला सा पछेवड़ा॥
खमा खमा करे लोक, कदियन राखे शोक,
बाजे न मृदंग चग, जग माहिं जे वड़ा।
कहे राजा मानसिंह, दिल में विचार देखो,
दु.खी तो सकल जन, सुखी जैन सेवडा॥

आप उस समय के प्रसिद्ध कवि थे, आपने राजस्थानी भाषा मे सर्वजनोपयोगी अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया। उदाहरणार्थ दो-चार ग्रन्थों का उदाहरण ही पर्याप्त होगा। 'चन्द्रकला' नामक ग्रन्थ जो चार खण्डों मे विभक्त है, एक सौ ग्यारह ढ़ाल मे है। और सूरप्रिय सप्त ढ़ाल मे है।

आपने दया-दान के सम्बन्ध मे भी श्री० श्वे० तेरापथी आचार्य जीतमलजी से पाली और रोइट मे शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया था।

७८ वर्ष तक सयम-साधना करने के बाद, १ महीने का सथारा कर सम्वत् १९१२ मे ज्येष्ठ शुक्ला दशमी के दिन जोधपुर मे उस विश्व-विभूति का स्वर्गवास हुआ।

जीवन-व्यापिनी सयम-साधना की परीक्षा मे पूर्ण रूप से सफल हुए। अन्धेरी सड़ी गली गलियों मे ठोकरें खाते हुए व्यक्ति के लिए उनका दिव्य-जीवन प्रकाशपुञ्ज के समान है, वह मूक स्वर मे समय मात्र का भी प्रमाद मत करो का वज्र आघोष कर रहा है।

आपका स्वर्गवास स० १८९२ मे हुआ। आप के बाद प्रभावशाली पूज्य श्री ज्ञानमल जी म० और पूज्य श्री पूनमचन्द जी म० पाट पर आये।

३—पूज्य श्री आत्मार्थी श्री जेठमलजी महाराज

पूज्य श्री पूनमचन्द जी महाराज के बाद आप के शिष्य श्री जेठमल जी महाराज आचार्य हुए। आपका जन्म सादड़ी, मेवाड मे सवत् १९१४ में हुआ था। आप के पिता का नाम हाथी जी और माता का नाम लिछमा जी था। सवत् १९३१ मे आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आप महान् तपस्वी, आत्मार्थी तथा ऊँचे ध्यानी थे। 'सिद्ध मुनि' के रूप मे उस समय आपकी सर्वत्र प्रतिष्ठा थी। सम्वत १९७४ मे इस तेजस्वी दीपक का विलोप हो गया।

४—तपोमूर्ति श्री जसराजजी महाराज

जीवन को ऊपर उठाने के लिए निवृत्ति और प्रवृत्ति रूप दो पखों की आवश्यकता है। जैसे एक पंख टूट जाने पर पक्षी अनन्त आकाश मे संचरण-विचरण नहीं कर सकता, वह ऊँची उड़ान नहीं भर सकता वैसे ही साधक भी। एकान्त निवृत्ति अकर्मण्यता की प्रतीक है, तो एकान्त प्रवृत्ति भी चित्त की चपलता की प्रतीक है। एतदर्थ ही आर्यावर्त के महामानव की हृदय-तन्त्री झकृत हुई थी—

"एगओ विरई कुज्जा, एगओ य पवत्तण।
असजमे नियत्ति च सजये य पवत्तण ॥" उत्तरा० ३१-२.

एक से निवृत्त होकर दूसरे मे प्रवृत्ति कर, हिंसा, असत्त संकल्प, दुराचरण से निवृत्त होकर अहिंसा सयम में प्रवृत्ति कर। अशुभ से निवृत्त होकर शुभ मे प्रवृत्ति करना ही सम्यक् चारित्र है। सन्त-जीवन की यही एक महान विशेषता है कि वे अशुभ से निवृत्त होकर शुभ मे प्रवृत्ति करते हैं।

श्रद्धेय मुनि श्री जसराज जी म० ऐसे ही सन्त थे। उन्होंने इठलाती हुई तरुणाई मे परिणीता सुन्दरी का परित्याग कर त्याग और वैराग्य से, रामपहचानजी म० के चरण-कमलों मे जैन-दीक्षा धारण की, और उन्हीं के चरणों मे बैठ कर जैन आगमों का गहन अध्ययन किया।

अतीत के उन महान् श्रमणों के तपोमय जीवन को पढते ही आपका तपस्या के प्रति जो स्वाभाविक अनुराग था, वह प्रस्फुटित हो गया और आपने तपस्या के कटकाकीर्ण महामार्ग की ओर अपने मुस्तैदी कदम बढ़ाये।

सवा सोलह वर्ष तक संयम-साधना और आत्म-आराधना करते हुए जो आपने तपस्या की उसका

वर्णन आपके एक शिष्य ने भक्ति-भाव से उत्प्रेरित होकर पद्य में अङ्कित किया है। जिसे पढ़ते ही रोमांच के साथ ही तपोमूर्त्ति धन्ना अनगार का स्मरण हो आता है।

वे नीरस और अल्पतम आहार करते थे, सरस आहार का उन्होंने त्याग कर दिया था। विशेष आश्चर्य तो यह है कि उन्होंने सवा सोलह वर्ष में केवल ५ वर्ष ही आहार ग्रहण किया था। उन्होंने अट्ठाई तक जो तप किया था उसका निम्न वर्णन है :—

६२	६०	५२	५१	४५	४२	४१	३०	२४	२१	२०	१६	१५	१२	१०	६	८
१	२	१	१	५	२	१	१७	४	२	२	१	६	२	८	१५	१५

आपका सं० १६५० में ७१ दिन के दीर्घ संथारे के बाद जोधपुर में स्वर्गवास हुआ। धन्य है उस तपोमूर्त्ति को। [आप पूज्य श्री अमरसिंहजी म० के प्रशिष्य थे।]

५—पूज्य श्री ताराचन्दजी महाराज

पूज्य श्री जेठमल जी महाराज के बाद आपके पाट पर पूज्य श्री नैनमल जी महाराज तथा पूज्य श्री दयालुचन्द जी महाराज हुए और आपके पाट पर पूज्य श्री ताराचन्द जी महाराज विराजमान हैं।

पूज्य श्री ताराचन्द जी महाराज का जन्म मेवाड़ के बंबोरा ग्राम में हुआ था। आपका पूर्व नाम हजारीमल जी था किन्तु दीक्षा लेने के बाद आपका नाम ताराचन्द जी रखा गया। आप अत्यन्त वृद्ध हैं फिर भी धर्मपालन का उत्साह रंचमात्र भी नहीं घटा है। अपितु धार्मिक दृढ़ता उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

६—पं० मुनि श्री पुष्कर जी महाराज

पं० मुनि श्री पुष्कर मुनि जी ब्राह्मण जाति के शृंगार हैं। संवत् १६८१ में आपका दीक्षा-संस्कार सम्पन्न हुआ। संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का आपने मननीय अध्ययन किया है। 'सूरि-काव्य' और 'आचार्य सम्राट्' आपकी उल्लेखनीय रचनायें हैं। आप अतिकुशल वक्ता भी हैं। आप श्रमण-संघ के साहित्य मंत्री हैं।

इस सम्प्रदाय में महासतियों का अभ्यास भी प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। प्रवर्त्तिनी महासति मोहनकुंवर जी की सुशिष्या महासति श्री पुष्पवती जी और कुसुमवती जी ने उच्च शिक्षण प्राप्त किया है। महासति जी श्री शीलकुंवर जी भी संस्कृत-प्राकृत आदि भाषाओं की परम विदुषी हैं।

पूज्य श्री नानकराम जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराम जी महाराज के शिष्य पूज्य लालचन्द जी, उनके बाद पूज्य श्री दीपचन्दजी महाराज और उनके बाद पूज्य श्री नानकराम जी महाराज हुए।

आपकी विद्वत्ता और आचारपरायणता उल्लेखनीय थी। इस सम्प्रदाय मे आपका विशिष्ट स्थान था।

१—प्रवर्तक पं० मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज

आपके बाद अनुक्रम से मुनि श्री वीरभान जी, लक्ष्मणदास जी, मगनमल जी, गजमल जी और धूलमल जी महाराज हुए। वर्तमान मे इस समय प० मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज है। आप एक प्रतिभाशाली सत हैं। आप की व्याख्यान-शैली प्रभावोत्पादक हे। ज्योतिष-शास्त्र के आप विज्ञाता हैं। आपने अनेक अशिक्षित क्षेत्रों मे विचरण कर स्वाध्याय का प्रचार किया है। आप विद्याप्रेमी और सुधारक विचारों के स्थविर सन्त हैं। सगठन के बडे प्रेमी हैं।

राजस्थान के प्रख्यात मुनिराजों मे से आप भी एक प्रख्यात मुनिराज हैं। आप अजमेर-जयपुर प्रान्त के प्रधान मन्त्री और तिथिनिर्णायक मुनि समाज के मुख्य मुनि हैं।

इस सम्प्रदाय की दूसरी शाखा मे अनुक्रम से मुनि श्री सुखलालजी, हरखचन्दजी, दयालचन्दजी, लक्ष्मीचन्द्रजी हुए और प० मुनि श्री हगामीलालजी महाराज हैं।

पूज्य श्री स्वामीदास जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराज जी महाराज के शिष्य लालचन्द जी के पाट पर श्री दीपचन्द जी महाराज और आपके बाद पूज्य श्री स्वामीदास जी महाराज आचार्य पद पर विभूपित हुए।

आपके बाद अनुक्रम से पूज्य मुनि श्री उग्रसेन जी, घासीराम जी, कनीराम जी, ऋषिनाथ जी और रगलाल जो पाट पर आये। आपके बाद वर्तमान मे स्वामी श्री फत्तेहचन्द जी महाराज, स्वामी छगनलाल जी महाराज और स्वामी श्री कन्हैयालाल जी महाराज आदि विद्वान् साधु-मुनिराज हैं। प० मुनि श्री छगनलाल जी अच्छे क्रियापात्र और प्रभाविक मुनि है। अजमेर सम्मेलन मे आपको 'मरुधर मन्त्री' नियुक्त किया था। मुनि श्री कन्हैयालाल जी महाराज ने सस्कृत और प्राकृत-भाषाओं का गूढ़ ज्ञान सम्पादन किया है। मूल सूत्ताणि जैसे आगम आपने सम्पादित किया है। कॉन्फरेस के आगम सम्पादन-कार्य में प्रतियों का सशोधन-कार्य आपने बडी दिलचस्पी से किया। अभी भी आप आगमों मे से विविध चुनाव करते ही रहते हैं।

पूज्य श्री शीतलदास जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री शीतलदास जी महाराज ने स० १७६३ मे पूज्य श्री लालचन्द जी महाराज के पास आगरा मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप रेणी ग्राम निवासी अग्रवालवंशीय महेशजी के सुपुत्र थे। आपका जन्म सं० १७४७ में हुआ था। आपकी लेखन-शैली अत्यधिक प्रसिद्ध थी। तत्कालीन मुनियों मे साहित्य-शिक्षण-क्षेत्र में आप अजोड थे। जोधपुर, बीकानेर, सांभर, आगरा और दिल्ली आदि अनेक नगरों में विचरण कर आपने धर्म प्रचार की धूम मचा दी। आपने कुल मिलाकर ७४ वर्ष संयम का पालन किया।

वि० स० १८३६ पोस सुदी १२ को चारों आहार का प्रत्याख्यान करके संलेखना व्रत धारण कर राजपुर नामक ग्राम में आप समाधि-मरण को प्राप्त हुए।

पूज्य श्री शीतलादास जी महाराज के पाट पर अनुक्रम से पूज्य श्री देवीचन्द जी, हीराचन्द जी लक्ष्मीचन्द जी, भैंरूदास जी, उदेचन्द जी, पन्नालाल जी, नेमीचन्द जी और वेणीचन्द जी महाराज हुए।

१—तपस्वी श्री वेणीचन्दजी महाराज

तपस्वी श्री वेणीचन्द जी महाराज का जन्म स० १६६८ में हुआ था। 'पटणा' निवासी श्री चन्द्रभान जी आपके पिता और कुँवराबाई आपकी माता थी। वैराग्य की भावना आपके हृदय मे तरगित हुई जिसके परिणामस्वरूप आषाढ सुदी ५ स० १६२० को पूज्य श्री पन्नालाल जी के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। आपकी तपस्या निरतर चलती रहती थी। अनेक प्रकार के कठिन अभिग्रह आप धारण करते रहते थे। एक अभिग्रह तो इतना कठिन था कि जिसके फलित न होने के कारण आपको पच्चीस वर्ष चार मास और पन्द्रह दिन तक केवल छाछ पर ही रहना पडा। सवत् १६६५ को एक दिन का सन्थारा कर शाहपुरे मे आप कालधर्म को प्राप्त हुए। आपके सम्बन्ध मे ऐसी किम्वदन्ती है कि आपका चोलापट्टा अग्नि से नहीं सुलगा।

आप अत्यन्त निर्भय थे। कठिन साहसी आदमी भी विचलित हो जाय, ऐसे स्थानों मे आप विहार करते थे। भय किस चिडिया का नाम है–तपस्वी महाराज जानते तक न थे। भय आपके शब्दकोष मे भी नहीं था।

२—तपस्वी श्री कजौड़ीमलजी महाराज

तपस्वी कजौडीमल जी महाराज का जन्म माघ सुदी १५ स० १६३६ को वेगु शहर मे हुआ था। आपके पिता का नाम घासीराम जी और माता का शृगारबाई था। आप बाल ब्रह्मचारी थे। अपने सयमी जीवन मे आपने अनेक प्रकार का कठिन तपाराधन किया।

मुनि श्री छोगालालजी महाराज

मुनि श्री छोगालाल जी महाराज नौ वर्ष के बाल्यवय मे स० १६५८ को दीक्षा ग्रहण की और शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया। आप प्रभावशाली प्रवचनकार थे।

जीव-हिंसा के विरोध मे आपने प्रवल आन्दोलन उठाया और अनेक राजा-महाराजाओं को प्रतिबोध देकर उन्हें हिंसा के दुष्कर्म से छुडाया। इस समुदाय मे अनेक महासतियाँ विदुषी और प्रभावशाली हुई।

पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की परम्परा

१—पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के ग्यारहवें पाट पर पूज्य श्री एकलिंगदास जी महाराज आचार्य-पद पर विराजमान हुए। आप मेवाड़ में परम त्यागी और तपस्वी मुनिराज थे। आपके पिता का नाम

शिवलाल जी था जो सगेसरा के निवासी थे। सवत् १६१७ मे आपका जन्म हुआ। तीस वर्ष की युवावस्था मे पूज्य श्री नरसीदास महाराज से आकोला मे आपने दीक्षा ग्रहण की और सवत् १६६७ मे उटाला ग्राम मे आपका स्वर्गवास हुआ। आपके ६ अग्रगण्य विद्वान् शिष्य थे जिनमें श्री मोतीलाल जी महाराज अग्रगण्य हैं।

२—पूज्य श्री मोतीलालजी महाराज

पूज्य श्री मोतीलाल जी महाराज सं० १६६२ मे आचार्य-पद पर आरूढ़ हुए। आपका जन्म सं० १६६० मे उंटाला मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री धूलचन्दजी था। केवल सतरह वर्ष की अवस्था मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप सरल स्वभावी और सुन्दर वक्ता हैं। सादडी साधु सम्मेलन मे आपने भी आचार्य पद त्याग कर श्रमण सघ के सगठन मे योगदान दिया वहाँ पर आप मंत्री नियुक्त हुए हैं। आपके गुरुभाई श्रीमागीलाल जी महाराज का जन्म' राजा जी का करेड़ा में हुआ था। ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आप निष्ठाशाली चारित्रवान मुनिराज हैं।

पूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज के मुनिराज

१—पूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज

पूज्य श्री मनोहरदास जी महाराज का जन्म ओसवाल जाति में नागौर नगर मे हुआ था। आप सर्वप्रथम लोंकागच्छ के यति श्री सगदारजी के पास मे दीक्षित हुए थे। तत्पश्चात् क्रियोद्धारक पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के प्रधान शिष्य बने। आप प्रतिभाशाली विद्वान् और तपस्वी मुनिराज थे। आपकी प्रवचन-पद्धति अत्यन्त प्रभावोत्पादक होने के कारण सैंकडों भव्य प्राणियों का आपने उद्धार किया। आपका शिष्य-परिवार 'यमुना-पार के सन्त' कहलाता है। आपके शिष्य भागचन्द जी महाराज ने भी सयुक्त प्रान्त के अनेक क्षेत्र पवित्र किये हैं। परिषहों को सहन करके जैनधर्म की आगमानुसारी चारित्र-शीलता को दृढ किया।

पूज्य श्री खेमचन्दजी महाराज

पूज्य श्री खेमचन्द जी महाराज एक अमर शहीद मुनिराज माने जाते हैं। विधर्मियों की कट्टरता का शिकार वनकर आपने अपने प्राणों की किंचित् भी परवाह न कर हँसते हुए अपने प्राणों को अर्पण कर दिया।

पूज्य श्री रत्नचन्द जी महाराज

पूज्य श्री रत्नचन्द जी महाराज वि० स० १८६२ मे नवकार मन्त्र के पाँचवें पद पर प्रतिष्ठित हुए। शास्त्रों के आप प्रकाण्ड पडित थे। मुनिराजों ने आपको 'गुरुदेव' की उपाधि प्रदान की थी। जैन और जैनेतर सव कोई आपको इसी नाम से पुकारते थे। अनेक शास्त्रार्थों मे आप विजयी हुए थे।

आपके नाम से संयुक्त प्रान्त मे अनेक शिक्षण-सस्थाओं का संचालन होता है, जहाँ से समाजोपयोगी कार्य सम्पन्न होते हैं। आप एक अच्छे कवि और सिद्धहस्त लेखक थे। 'गुरु स्थान चर्चा' आपकी विलक्षण लेखन-शैली का उत्तम नमूना है। मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध आचार्य श्री विजयानन्द सूरि जी जब स्थानकवासी सम्प्रदाय मे आत्माराम जी महाराज के नाम से कहलाते थे तब उन्होंने आप ही के चरणों मे बैठ कर शास्त्राभ्यास किया था। आपने स० १६४१ मे पूज्य मगलसेन जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की और सं० १६८८ मे श्री सघ ने आपको आचार्यपद दिया। आपको आगमों का गहरा ज्ञान था। आपके करकमलों द्वारा अनेक आगमग्रन्थ सुवाच्य अक्षरों मे लिपिबद्ध हुए थे। सं० १६६२ मे आपका स्वर्गवास हुआ।

पूज्य श्री मोतीलाल जी महाराज

अजमेर के बृहत्साधु सम्मेलन से पूर्व सब स्था० जैन सम्प्रदायों का सगठन करने के प्रयत्न के समय महेन्द्रगढ़ में आपको आचार्यपद प्रदान किया गया। आप बडे विद्वान् थे। शान्त-सौम्य प्रकृति के स्थविर तपस्वीर मन्त थे। प० पृथ्वीचंद्र जी महाराज आप ही के शिष्य हैं।

पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज

पूज्य श्री पृथ्वीचंद्र जी महाराज ने सं० १६५६ मे पूज्य श्री मोतीराम जी महाराज के पास मे पंच महाव्रत धारण किये। आपका स्वभाव अत्यन्त शात और सरल है। वि० स० १६८३ मे नारनौल मे आपको आचार्य-पद दिया गया। आपकी क्रियाशीलता और विद्वत्ता की संयुक्त प्रान्त के सतों मे अच्छी प्रतिष्ठा है। आपने सादडी साधु सम्मेलन मे श्रमण सगठन के लिए आचार्य-पद का त्याग किया और सम्मेलन द्वारा आप मत्री निर्वाचित हुए हैं।

कविवर पं० मुनि श्री अमरचन्द जी महाराज

कविवर मुनि श्री अमरचन्द जी महाराज पूज्य श्री पृथ्वीचन्द जी महाराज के विद्वान शिष्य हैं। आगमों और शास्त्रों का आपने गहन अध्ययन किया है। आपकी प्रवचन शैली युग के अनुरूप सरल और साहित्यिक है। आपने गद्य-पद्य ग्रन्थों की रचना करके साहित्य के क्षेत्र मे काफी प्रकाश फैलाया है। आगरा के "सन्मति ज्ञानपीठ"प्रकाशन सस्था ने आपके साहित्य को कलात्मक रीति से प्रकाशित किया है। आपके विचार उदार और असाम्प्रदायिक हैं। आपकी विचारधारा समाज और राष्ट्र के लिये अभिनन्दनीय हैं। सादडी सम्मेलन मे आप एक अग्रगण्य मुनिराज के रूप मे उपस्थित थे। इस समय स्थानकवासी जैन समाज के मुनिराजों मे आपका गौरवपूर्ण स्थान है।

पूज्य श्री जीवराज जी महाराज का सम्प्रदाय

१—आचार्य धनजी स्वामी

प्रात स्मरणीय पूज्य श्री जीवराज जी महाराज का जीवन वृत्तान्त हम पिछले अध्यायों मे पढ़ चुके हैं इनके स्थान पर श्री धनजी स्वामी को आचार्य पद दिया गया।

वीकानेर की महारानी ने महाराज सा० को अपने राज्य मे पधारने के लिये विनति की साधु-उचित भापा मे आपने फरमाया " क्षेत्र फरसने का अवसर होगा तो उधर विचरने के भाव है।"

कई मास के पश्चात् आप अपने दस शिष्य के परिवार सहित वीकानेर पधारे। नगर-प्रवेश के समय आपके विरोधियों ने आपका मार्ग रोका। किन्तु मुनि श्री शान्ति और क्षमता की मूर्ति थे। आपने श्मशान भूमि मे रही हुई स्मारक छत्री (स्तूप) मे किसी से आज्ञा लेकर निवास किया और एकान्त मे ध्यान मग्न हो गये। आपके अन्य शिष्य भी शास्त्राभ्यास मे तल्लीन हो गये। चन्द्र विहार उपवास करते-करते आठ दिन वीत गये किन्तु आपकी और आपके शिष्यों की दृढता मे कोई अन्तर नहीं आया। आप सब दृढ परिणामी थे। एक-एक करके नौ दिन वीत गये। महारानी की एक दासी उस तरफ से निकली। उसने मुनिराज को देखा,वदना की और महल मे जाकर महारानी को यह सव हाल कह सुनाया। महारानी ने अत्यन्त सम्मान और समारोहपूर्वक अपने गुरुदेव को नगर मे प्रवेश कराया और अपने अपराधों की क्षमायाचना की। इस प्रकार महारानी ने मुनि श्री के उपदेशामृत का प्रजा को पान कराया। मुनि श्री के पधारने से अनेक लोगो को सम्यक् दर्शन की प्राप्ति हुई और असख्य प्राणियों को अभयदान दिया।

२—आचार्य विष्णु और आचार्य मनजी स्वामी

आचार्य धनजी स्वामी के पाट पर आचार्य विष्णु और आचार्य मनजी स्वामी क्रमश आये। आप दोनों के समय मे शासन की सुन्दर प्रभावना हुई। दोनों आचार्य अपने-अपने समय मे धर्म-प्रचार के केन्द्र-विन्दु माने जाते थे। तत्कालीन साधुमार्गी समाज मे आप दोनों की आचारनिष्ठा के प्रति अत्यधिक प्रतिष्ठा थी।

३—आचार्य नाथुराम जी स्वामी

आचार्य श्री नाथूराम जी महाराज सा० का जन्म जयपुर राज्य के खडेलवाल दिगम्बर जैन-परिवार मे हुआ था। आपकी ऐसी मान्यता थी कि सच्चा दिगम्बरत्व तो कपाय-रूपी वस्त्रों को उतारने से ही होता है और शुक्ल-ध्यान मे रमण करने से ही सच्चा श्वेताम्बरत्व प्राप्त होता है। यदि ऐसा नहीं है तो नामों का कोई महत्त्व नहीं। हमको तो आगमों की आराधना करनी चाहिए। यही कारण है कि आपकी शिष्य-मडली अत्यधिक स्वाध्याय-परायण थी। आपके वीस शिष्यो ने वत्तीसो शास्त्रों को कठस्थ कर लिया था। इतना ही नहीं किन्तु एकान्त ध्यान और कायोत्सर्ग की तपश्चर्या में रत रहने वाले अनेक साधु आपके शिष्य-समुदाय में थे।

स्वमत तथा परमत के आप प्रकाण्ड पडित थे। आपके साथ वाद-विवाद करने वाले पण्डित को अन्त मे जैन-धर्म स्वीकार करना ही पड़ता था। आचार्य कृष्ण जैसे विद्वान् ने आपके द्वारा ही दीक्षा ग्रहण की थी, जो पजाब मे रामचन्द्र के नाम से विख्यात थे। आपके समय से ही इस समुदाय मे दो विभाग हो गये। जिसका वर्णन आगे किया जायगा।

४—आचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र जी महाराज

आचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र जी महाराज ने आगमों का तलस्पर्शी अभ्यास किया और इनका मंथन कर राजस्थानी मे अनेक पद्य-गीतों की रचना की। आपके गीत सामान्य जनता की जवान पर गूंजने लगे।

५—आचार्य श्री छत्रमल जी म०

आचार्य श्री छत्रमल जी महाराज दर्शनशास्त्र के महान विज्ञाता थे। आपने स्याद्वाद और नय-प्रमाणों के रहस्य सरल पद्यों मे रचे और सामान्य बुद्धिवालों को भी अनेकान्त सिद्धान्त का बोध कराया।

६—आचार्य श्री राजाराम जी म०

आचार्य श्री राजाराम जी महाराज वाद-विवाद करने वाले विद्वानों के हृदयाधकार को दूर करने मे समर्थ सिद्ध थे। मिथ्यादर्शन के आप कट्टर दुश्मन थे। आपके अनुशासन मे आत्मनिष्ठा दृढ़वती हुई।

७—आचार्य श्री उत्तमचन्द जी म०

आचार्य श्री उत्तमचन्द्र जी महाराज महान तपस्वी थे। आपके गुरुभ्राता श्री राजचन्द्र पट्-शास्त्रों के पारगत थे। आप दोनों ने मिलकर शासन की अत्यधिक प्रभावना की। श्री रत्नचन्द्रजी महाराज भी आपके बड़े गुरु भाई थे।

८—आचार्य श्री भग्गुमल जी महाराज

आचार्य श्री भग्गुमल जी महाराज का जन्म चन्द्रजी का गुड़ा नामक ग्राम मे हुआ था। आप पल्लीवाल थे। छोटी-सी वय मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आपकी माता और बहन ने भी दीक्षा ग्रहण की थी। आचार्य महाराज अग्रेजी, फारसी और अरबी भाषा के भी विद्वान थे। आपके अक्षर इतने सुन्दर थे कि वांचन मे प्रमाद करने वाले साधु को इस ओर बार-बार आकर्षित करते। गणित, ज्योतिष और योगशास्त्र आदि अनेक विषयों के बहुश्रुत विद्वान् होने के कारण अलवर-नरेश महाराजा मंगलसिंह जी ने आपको 'राज्य पडित' की उपाधि से विभूषित किया था।

एक समय श्राद्ध के विषय मे विवाद हुआ। पडितों ने कहा, "जिस प्रकार मनीऑर्डर से भेजे जाने वाले रुपये यथास्थान पहुँच जाते है उसी प्रकार श्राद्ध का अन्न भी पितरों को मिल जाता है।"

तब आचार्यश्री ने भरी सभा मे प्रश्न किया कि " जिस प्रकार आपके पास मनीऑर्डर की रसीद आती है, उसी प्रकार पितरों के यहाँ से आई हुई क्या आपके पास कोई रसीद है?"

इस उत्तर से महाराज मंगलसिंह अत्यन्त प्रसन्न हुए। महाराजा ने मुनि श्री को वन्दना की और आपके चरणों मे कुछ भेंट चढ़ाई। किन्तु जैन साधु तो अपरिग्रही होते है—उनके इस प्रकार की भेंट किस काम की? उन्होंने इसे अस्वीकार की और राजा को अनुरोध किया कि इस प्रकार के राज-दरबार मे जैन-मुनि को नहीं बुलाना चाहिये।

आपकी काव्य-शैली प्रासाद गुण सयुक्त थी। 'शान्तिप्रकाश' जैसे गूढ़ ग्रन्थों का निर्माण आपकी उत्कृष्ट विद्वता का ज्वलन्त उदाहरण है।

९—तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज

तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज आचार्य श्री भग्गुलाल जी महाराज के शिष्य थे। आप महा-तपस्वी महात्मा थे। सवत् १९५९ के जेठ सुद ३ को आपकी समाधि-मरण की तिथि मानी जाती है।

आपके जीवनकाल मे अनेक चामत्कारिक घटनाएँ देखी गई थीं। ऐसा कहा जाता है कि आपकी दृष्टिमात्र से रोगों का नाश हो जाता था।

१०—श्री रामलाल जी महाराज

श्री रामलाल जी महाराज का जन्म सवत् १८७० व्यावर मे हुआ था। वीस वर्ष की युवावस्था मे आपने मुनि श्री उत्तमचन्द जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की थी। आप अत्यन्त उग्र विहारी थे। अपने जीवन मे नौ वार आपने मारवाड का विहार किया। भारत के अनेक प्रान्तो को आपने अपने उपदेशामृत का पान कराया। स० १९५० मे जीवन के १० दिन और एक प्रहर जव शेप रहा था—तव सम्पूर्ण आहार का त्याग करके समाधि-मरण से स्वर्गगामी हुए।

११—मुनि श्री फकीरचन्द जी महाराज

मुनि श्री फकीरचन्द जी महाराज का जन्म स० १९१६ की जेठ सुदी १५ की रात्रि को साढे वारह वजे सूरत मे हुआ था। सर्वाङ्गसुन्दर कन्या के साथ आपका पाणिग्रहण हुआ किन्तु स० १९४६ मे ३० वर्ष की भर-जवानी मे श्री रामलाल जी महाराज से आपने आर्हती दीक्षा ग्रहण की और शीघ्र ही शास्त्रों का का स्वाध्याय और लेखन-कार्य प्रारम्भ किया। आप अति उग्र विहारी थे। सन् १९३६ मे आपने वगाल, कलकत्ता तक पहुँचकर झरिया मे चातुर्मास किया।

स्वर्ग-गमन से तीन दिन पूर्व आपने सथारा ग्रहण किया और जेठ सुदी १५ स० १९९६ को पाटोदी नगर मे कालधर्म को प्राप्त हुए।

१२—पं० मुनिश्री फूलचन्दजी महाराज

प० मुनि श्री फूलचन्द जी महाराज का जन्म वीकानेर राज्यान्तर्गत 'भाडलासोभा' नामक ग्राम मे चैत सुदी १० सवत् १९५२ को हुआ था। आप राठौड वशीय क्षत्रिय ठाकुर विपिनसिंह के सुपुत्र है। सवन् १९६८ मे श्री फकीरचन्द जी महाराज के चरणों मे दीक्षा ग्रहण की।

श्री पुप्फ भिक्खु के नाम से प्रसिद्ध आपने कराची आदि क्षेत्रों मे विचरण कर अनेक मासाहारियों को पाप से निवृत्त करने का महान् कार्य किया।

पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज की सम्प्रदाय

१—पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज

पूज्य श्री लालचन्द जी महाराज के शिष्य पूज्य श्री गगाराम जी हुए और आपके पश्चात् पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज हुए। आप अत्यधिक प्रभाविक महात्मा थे। समस्त पजाव पर आपका वर्चस्व था। श्री आत्माराम जी महाराज जो पीछे से मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मे सम्मिलित हुए और आचार्य विजयानन्द सूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए—आप ही के शिष्य थे। पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज का त्याग और

सयम अद्भुत था। आत्म साक्षात्कार के लिए आप जीवन की साधना करते थे। आपने गिरा, फ़िरोजपुर, भटिंडा और बीकानेर तक प्रवल विहार किया।

२—पूज्य श्री श्रीचन्द जी महाराज

पूज्य श्री जीवनराम जी महाराज के पश्चात् पूज्य श्री श्रीचन्द जी महाराज हुए। आपने उत्कृष्ट वैराग्य के साथ दीक्षा ग्रहण की। आप ज्योतिप के समर्थ और शास्त्र पारगामी विद्वान् थे।

३—परम तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज

पूज्य श्री श्रीचन्द जी महाराज के वाद आपके पाट पर अनुक्रम से पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज और श्री माणिकचन्द जी महाराज हुए। पूज्य श्री माणकचन्दजी महाराज के वाद वर्तमान मे पूज्य श्री पन्नालालजी महाराज आते हैं। आप तप की साकार ज्वलन्त मूर्ति और सयम की विरल विभूति हैं। श्री चन्दन मुनि जी आप ही के शिष्य हैं।

४—कवि श्री चन्दन मुनि जी महाराज

श्री चन्दन मुनि जी कवि, लेखक, कथाकार, सयमी और मृदुभाषी हैं। आपने लगभग २५-३० पुस्तकें लिखी हैं जो सव पद्य मे हैं। आपकी कविताओं मे भाव-भापा ओज, प्रासाद और लाक्षणिक अभिव्यंजना तथा भावोद्रेक गुण अन्वित हैं। आज की नवीन पीढ़ी के लिए आप एक आशास्पद सत हैं।

पूज्य श्री रायचन्द्र जी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराज जी महाराज के चौथे पाट पर श्री नाथूराम जी महाराज आचार्य-पद पर आये। आपके वाद आपकी सम्प्रदाय दो विभागों मे विभाजित हो गई। पूज्य श्री रामचन्द्र जी महाराज नाथूराम जी महाराज के प्रख्यात शिष्य थे। स० १८४२ के आसोज सुद १० विजयादशमी को पूज्य श्री रतिराम जी महाराज ने आप के पास दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री रायचन्द्र जी महाराज समर्थ योगी थे।

१—कवि श्री नन्दलाल जी महाराज

पूज्य श्री रतिराम जी महाराज के शिष्य कविराज श्री नन्दलाल जी महाराज साधुमार्गी समाज मे एक वहुश्रुत विद्वान् थे। आपका जन्म काश्मीरी ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। दीक्षा लेने के थोडे समय के वाद आप शास्त्रों के पारगामी विद्वान् हो गये। आपने 'लब्धिप्रकाश', गौतम पृच्छा' रामायण' 'अगडवस' आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इसके सिवाय 'ज्ञानप्रकाश', 'रुक्मिणी रास', आदि अनेक ग्रन्थों का भी आपके द्वारा निर्माण हुआ। आपकी कविताएँ सगीतमय, भावपूर्ण और हृदयस्पर्शी होती थीं। संवत् १९०७ मे होशियारपुर मे आपका स्वर्गवास हुआ। पूज्य श्रीनन्दलाल जी महाराज के तीन शिष्य हुए। मुनि श्री किशनचन्द्र जी महाराज ज्योतिष-शास्त्र के पण्डित थे, रूपचन्द जी महाराज वचनसिद्ध तपस्वी मुनिराज थे और मुनिश्री किशनचन्दजी महाराज की परम्परा मे अनुक्रम से मुनिश्री विहारीलालजी,

महेशचन्द्र जी, वृषभान जी तथा मुनि श्री सादीराम जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

तीसरे मुनि श्री जौकीराम जी महाराज के पास जगराव-निवासी अग्रवालवंशीय मुनि श्री चैतराम जी दीक्षित हुए। आप के शिष्य मुनि श्री घासीलाल जी महाराज ने इन तीन भव्यात्माओं को महाव्रतधारी बनाया—मुनि श्री जीवनराम जी महाराज मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज और मुनि श्री कुन्दनलाल जी महाराज।

२—पूज्य श्री रूपचन्द जी महाराज

पूज्य श्री रूपचन्द जी महाराज बालब्रह्मचारी, वचनसिद्ध, अलौकिक तपस्वी और महाप्रभावक सन्त थे। मोह से विरक्त रहने के लिये आपने किसी को भी अपना शिष्य न बनाया। आपका जन्म सम्वत् १८६८ मे लुधियाना मे हुआ था। जीवन पर्यन्त रोटी, पानी इसके अलावा एक और कोई वस्तु इन तीन के अतिरिक्त किसी द्रव्य का आपने सेवन नहीं किया।

घी, दूध आदि सभी पौष्टिक पदार्थों के उपयोग पर अकुश धर दिया था। दिन मे एक बार आहार करना और उसमे भी केवल दो रोटी ग्रहण करना। छब्बीस वर्ष की तरुण अवस्था मे आपने ससार का त्याग कर स० १८६४ मे फागण सुद ११ को दीक्षा ग्रहण की।

आपके चमत्कार की अनेक घटनाएँ पजाब मे प्रचलित हैं। इस ग्रन्थ का लेखक भी आपकी आत्मज्योति, त्याग ज्योति और ज्ञान ज्योति से प्रभावित है।

आपका यह नियम था कि जो सवारी करके आता था, उसे आप दर्शन नहीं देते थे। दिन भर मे केवल दो बार ही पानी पीते थे। सतलुज नदी के उस पार न जाने की आपको प्रतिज्ञा थी। जेठवदे ११ सवत् १६३७ को इस तेजस्वी सूर्य का अस्त होना पाया गया।

३—मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज

मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज का जन्म सं० १६१६ मे देहरादून मे हुआ था। माह सुद ११ स० १६३६ शनिवार को मुनि श्री घासीलाल जी म० से भटीन्डा मे दीक्षा ग्रहण की। शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। ज्योतिष शास्त्र के आप बडे विद्वान थे। तपस्वी और वचनसिद्ध पुरुष थे। साम्प्रदायिक प्रतिष्ठा आपके समय अत्यधिक विकसित हुई। स० २००८ मे अहमदाबाद के भेडी के उपाश्रम में आपका समाधि-मरण हुआ।

मुनि श्री छोटालाल जी महाराज

पजाब-रोहतक जिले के बुलन्दपुर गॉव के पडित तेजराम जी की सहधर्मिणी केसरदेवी की कूख से सवत् १६६० मे मुनि श्री छोटेलाल जी का जन्म हुआ। सिरपुर (मेरठ) इनका निवासस्थान था। सोलह वर्ष की स्वल्प अवस्था में पण्डित मुनि श्री गोविन्दराम जी महाराज के पास में आपने दीक्षा धारण की। सोलह वर्ष की क्रीडाप्रिय अवस्था में असार ससार के मोह को त्याग कर ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य की साधना का कठोर सयमपूर्ण मार्ग अपनाने का सद्भाग्य किसी विरले को ही मिलता है।

ब्रह्मचर्य और सयम की साधना, ज्ञानप्राप्ति और तपश्चर्या की उत्कट अभिलाषा ने आपमें एक अभिनव बल और शक्ति का सचार किया। यह बल शारीरिक नहीं किन्तु आध्यात्मिक था। ज्यों-ज्यों यह

वल वढ़ता गया-त्यों-त्यों माया का जाल छिन्न होता गया। तपश्चर्या दिन-प्रतिदिन वढती गई। तप की माधना के कारण आपका शरीर काचन वर्ण को प्राप्त हो गया। ज्ञान, तप और शरीर का तेज दर्शनार्थियों पर अनेक प्रभाव डालता है। आपने शास्त्रों का समुचित अध्ययन, मनन-चिन्तन किया है। श्रमण-धर्म मे आप मदा कर्त्तव्यपरायण रहते हैं। आपका स्वभाव स्पष्टवादिता के साथ-साथ कोमल और सरल है। श्री सुशील मुनि जी, श्री सौभाग्य मुनि जी और श्री शान्तिप्रिय जी इस प्रकार आपके तीन शिष्य हैं।

पं० मुनि श्री सुशीलकुमार जी महाराज

आपने ब्राह्मण जाति मे जन्म लिया था। वचपन से ही वैराग्य भाव होने से मुनि श्री छोटेलाल जी म० सा० के पास दीक्षित हुए। सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी आदि का अच्छा अभ्यास करके 'आचार्य' 'भास्कर' आदि अनेक उपाधियाँ प्राप्त कीं। श्रमण सघ के आप होनहार परमोत्साही युवक सन्त है। अहिंसा सघ के तथा सर्वधर्म सम्मेलन के आप प्रणेता है। अहिसा के अग्रदूत है। पजाव, वम्वई और राजस्थान मे विचर रहे हैं।

गुजरात के मुनिराज

१—पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय

(दरियापुरी सम्प्रदाय)

पूज्य श्री धर्मसिंह जी महाराज के पाट पर उनके शिष्य श्री सोमजी ऋषि हुए। इनके वाद अनुक्रम से मेघजी ऋषि, द्वारकादास जी, मोरारजी, नाथाजी, जयचन्दजी तथा मोरार जी ऋषि हुए।

मोरारजी ऋषि के शिष्य सुन्दरजी के तीन शिष्य हुए—नाथा ऋषि, जीवन ऋषि और प्रागजी ऋषि। ये तीनों सत प्रभाविक थे। सुन्दरजी ऋषि मोरारजी ऋषि के जीवन-काल मे ही गुजर जाने के कारण आपके पाट पर नाथाजी ऋषि आये। नाथाजी ऋषि के चार शिष्य थे—शकरजी, नानकचन्दजी, भगवान जी।

नाथाजी ऋषि के पाट पर उनके गुरु-भाई जीवन ऋषिजी आये और इनके पाट पर प्रागजी ऋषि आये।

२—श्री प्रागजी ऋषि

आप वीरमगॉव के भावसार रणछोडदास के पुत्र थे। श्री सुन्दरजी महाराज के उपदेश से प्रतिवोध पाकर इन्होंने वारह व्रत अगीकार कर लिये। अनेक वर्षों तक श्रावक के व्रत पालने के पश्चात् दीक्षा ग्रहण करने के लिये आप तैयार हो गये, किन्तु माता-पिता ने आपको आज्ञा नहीं दी। इस कारण आपने भिक्षाचरी करना आरम्भ किया। दो मास तक इस प्रकार करने पर माता-पिता ने आप को आज्ञा दे दी और सं० १८३० मे वीरमगॉव मे धूम-धाम के साथ दीक्षा ग्रहण की। आप सूत्र सिद्धान्तों के अभ्यासी और प्रतापी साधु थे।

आपके पन्द्रह शिष्य थे। अहमदाबाद के समीपवर्ती विसलपुर के श्रावकों द्वारा विनति करने के कारण आप विसलपुर पधारे। आपने प्रातीज, बीजापुर, ईडर, खरोलु आदि क्षेत्र खोलकर वहाँ धर्म का प्रचार किया। पैरों मे दर्द होने के कारण पिछले पच्चीस वर्ष तक विसलपुर मे स्थिरवास किया।

आप के समय मे अहमदाबाद मे साधु-मार्गी संत बहुत कम पधारते थे क्योंकि वहाँ चैत्य-वासियों का जोर अधिक होने के कारण उनकी तरफ से उपद्रव खड़े किये जाते थे। इस स्थिति को सुधारने के लिए प्रागजी ऋषि अहमदाबाद पधारे और श्री गुलाबचन्द हीराचन्द के मकान मे उतरे।

आपके उपदेश से अहमदाबाद मे शाह गिरधर शकर, पानाचन्द झवेरचन्द, रामचन्द्र झवेर-चन्द, खीमचन्द झवेरचन्द आदि श्रावको को शुद्ध साधु-मार्गी जैन-धर्म की श्रद्धा प्राप्त हुई। आपके इस प्रकार के धर्म-प्रचार को देखकर मदिर-मार्गी श्रावकों को साधुमार्गियों से ईर्ष्या होने लगी और पारस्परिक झगडे प्रारभ हो गये। अन्त मे ये झगडे कोर्ट तक पहुँचे। साधुमार्गियो की तरफ से पूज्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज के शिष्य श्री जेठमल जी आदि साधु तथा विपक्षियों की तरफ से वीर विजय आदि मुनि और शास्त्री कोर्ट मे पहुँचे। अत इस झगड़े का निपटारा साधु-मार्गियो के पक्ष मे हुआ। इस घटना को स्मृतिरूप बनाये रखने के लिये श्री जेठमल जी महाराज ने 'समकित' नाम का शास्त्रीय चर्चा-ग्रन्थ लिखा।

इसके विरोध मे श्री उत्तम विजय जी ने "ढु ढक मत खण्डन रास' नामका १७ पंक्तियों का एक रास लिखा जिसमे साधुमार्गियों को पेट भरकर गालियाँ दीं। इस रास मे लिखा है कि—

"जेठा ऋषि आया रे! कागज वाच कर।
देखो पुस्तक लाया रे! गाडी एक लाद कर॥"

विरोधी पथ के लोग जब इस प्रकार लिखते हैं, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि उस जमाने मे जब मुद्रण-कला का इतना विकास नहीं हुआ था फिर भी इतने सारे ग्रन्थों को अदालत मे प्रस्तुत करने वाले मुनि श्री जेठमलजी का वाचन कितना विशाल होगा। वस्तुत आप शास्त्रों के गहन अभ्यासी और कुशल विद्वान् थे। सं० १८६० मे मुनि श्री प्रागजी ऋषि जी महाराज विसलपुर मे कालधर्म को प्राप्त हुए। प्रागजी ऋषि के बाद श्री शंकर ऋषि जी, श्री खुशाल जी, श्री हर्षसिंह जी और श्री मोरारजी ऋषि हुए।

श्री झवेर ऋषि जी महाराज

श्री मोरार जी ऋषि के बाद आपके पाट पर श्री झवेर ऋषि जी महाराज हुए। आप वीरम-गाँव के दशाश्रीमाली वणिक कल्याण भाई के पुत्र थे। आपने सवत् १६५ मे अपने भाई के साथ श्री प्राग ऋषि के साथ दीक्षा ग्रहण की। पूज्य पदवी प्राप्त करने के पश्चात् आपने यावत् जीवन छठ-छठ के पारण किये। संवत् १६२३ में इस महान् तपस्वी ने स्वर्ग विहार किया।

४—श्री पुंजा जी स्वामी

श्री झवेर ऋषि जी महाराज के पाट पर श्री पुंजा जी स्वामी विराजमान हुए। आप कडी के भावसार थे। आपने शास्त्रों का सांगोपाग अध्ययन किया था। उदारचेता आप इतने थे कि अन्य सम्प्र-दायानुयायी मुनियों को भी आप पढाते थे। संवत् १६१५ को आपने वढ़वाण शहर मे कालधर्म प्राप्त

किया। आपके बाद आपके पाट पर छोटे भगवान जी महाराज हुए जिनका देहावसान सं० १९१९ मे हुआ। आपके बाद १९वे पाट पर पूज्य श्री मलूकचन्द जी महाराज आये। आपने अपने चार कुटुम्बी-जनों के साथ दीक्षा ग्रहण की। सवत् १९२९ मे आपका देहावसान हो गया।

५—पूज्य श्री हीराचन्दजी महाराज

श्री मलूकचन्द जी महाराज के पाट पर पूज्य श्री हीराचन्द जी स्वामी आसीन हुए। आप अहमदाबाद के समीपवर्ती पालड़ी ग्राम के आजना कणबी थे। आपके पिता जी का नाम हीमाजी था। आपने केवल तेरह वर्ष की अवस्था मे श्री झवेर ऋषि के पास से स० १९११ मे दीक्षित हुए। आप बड़े विद्वान् थे। आपके तेरह शिष्य थे। सं० १९३९ मे विसलपुर ग्राम मे आपने कालधर्म प्राप्त किया।

६—श्री रघुनाथजी महाराज

पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज वीरमगॉव के भावसार डायाभाई के पुत्र थे। आपका जन्म सं० १९०४ मे हुआ था। स० १९२० मे पूज्य श्री मलूकचन्द जी महाराज से कलोल मे दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री हीराचन्द जी म० सा० के कालधर्म पाने के पश्चात् आपको आचार्य-पद दिया गया। आप युगद्रष्टा थे। समय को बदलते देखकर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुरूप धार्मिक उन्नति के लिए विधान तैयार करने के लिए सं० १९६५ मे साधु-सम्मेलन भरा कर और अनेक सुधार करके सं० १९७२ में काल-धर्म को प्राप्त हुए।

आपके बाद आपके पाट पर पूज्य श्री हाथी जी महाराज पधारे।

७—पूज्य श्री हाथीजी महाराज

पूज्य श्री हाथी जी महाराज चरोतर के पाटीदार थे। आप शास्त्र के अभ्यासी, लेखक तथा कवि थे। आप प्रकृति से भद्रिक, शान्त और सरल स्वभावी महात्मा थे। आपके समय मे ही महासति जी श्री दिवालीबाई तथा महासति जी श्री रुक्मिणीबाई ने छींपा पोल के उपाश्रय मे सथारा किया था। पूज्य श्री हाथी जी महाराज ने अहमदाबाद के सरसपुर स्थान पर कालधर्म प्राप्त किया। आपके बाद श्री उत्तम-चन्द जी महाराज पूज्य पदवी पर आये। आप आजीवन ब्रह्मचारी थे।

८—पूज्य श्री ईश्वरलालजी महाराज

पूज्य श्री उत्तमचन्द जी महाराज के बाद पूज्य श्री ईश्वरलाल जी महाराज को पूज्य पदवी दी गई। आप चरोतर के पाटीदार हैं। शास्त्रों के गहन अभ्यासी और तार्किक बुद्धि वाले हैं। इस समय ८८ वर्ष की अवस्था मे भी आपकी तेजस्वी बुद्धि और अपराजित तर्क सुने जा सकते हैं। अत्यन्त वृद्धावस्था और गले के दर्द के कारण अहमदाबाद के शाहपुर के उपाश्रय मे आप अनेक वर्षों से स्थिरवास कर रहे हैं।

९—श्री हर्षचन्द्रजी महाराज

इस सम्प्रदाय में मुनि श्री हर्षचन्द्र जी महाराज एक समर्थ विद्वान् हो गये हैं। संवत १९३८ में वढ़वाण के समीपवर्ती राजपुर ग्राम में आपका जन्म हुआ था। चौदह वर्ष की बाल्यावस्था में सं० १९५२ में पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज के पास आपकी दीक्षा हुई थी। आप संस्कृत, प्राकृत, अर्धमागधी, अगरेजी, उर्दू, फारसी तथा हिन्दी भाषा के विज्ञाता थे। कवि होने के साथ-साथ आप सफल लेखक भी थे। आपने १३ पुस्तकें और अनेक कविताएँ लिखीं। आपकी अंतिम पुस्तक "सम्यक् साहित्य" प्रत्येक स्थानकवासी के लिए मननीय पुस्तक है। अजमेर के साधु-सम्मेलन में आप उपस्थित हुए थे और साधु-समाचारी निश्चित करने में आपने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। सं० २००८ में वीरमगाँव में आपने काल-धर्म प्राप्त किया।

१०—मुनि श्री भाईचन्दजी महाराज

मुनि श्री भाईचन्द जी महाराज इस सम्प्रदाय में एक उज्ज्वल सितारे हैं। यद्यपि आप ७५ वर्ष की अवस्था में पहुँच गये हैं किन्तु आप लगते हैं ४५ वर्ष के ही। आपका शरीर अत्यन्त सौष्ठववान् और कान्तिमान् है। आपमें विद्वत्ता है, साधुता है और वक्तृत्व शक्ति है। आपमें यह विशिष्टता है कि आज तक किसी ने आपको क्रोध करते नहीं देखा। सरल होते हुए बुद्धिमान, वृद्ध होते हुए भी युवक और निर-हंकारी होते हुए भी प्रतिभाशाली ऐसे आप अत्यन्त भाग्यशाली मुनिराज हैं कि जिनके लिए प्रथम दर्शन में ही दर्शक के हृदय में सम्मान पैदा हो जाता है।

आपके नवीन शिष्य श्री शान्तिलाल जी महाराज शास्त्रों के अभ्यासी हैं। आपकी व्याख्यान-शैली रोचक और मधुर है। इसके अलावा इस सम्प्रदाय में महासति श्री वसुमतिबाई, ताराबाई आदि विदुषी महासतियाँ हैं। महासति श्री उजमबाई और दिवालीबाई की विद्वत्ता सर्वविदित है।

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज की सम्प्रदायानुयायी
विशिष्ट मुनियों का संक्षिप्त परिचय

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के ९९वें शिष्यों में से बाईस विद्वान् मुनिराजों ने बाईस सम्प्रदायों का निर्माण किया। उनमें से २१ तो राजस्थान, पंजाब आदि प्रान्तों में फैले। उनके प्रथम शिष्य मूलचन्द जी महाराज हुए। आपके सात शिष्य बहुत ही प्रभावशाली विद्वान् हुए। इनमें से प्रत्येक ने अपना अलग-अलग सगठन बनाया जिसमें से विशाल सघ स्थापित करने वाले श्री अजरामर जी स्वामी थे।

१—पूज्य श्री अजरामरजी महाराज

पूज्य श्री अजरामर जी स्वामी ने कानजी स्वामी से दीक्षा ग्रहण की। आप जामनगर के पास मे पडाणा ग्राम मे स० १८०९ में जन्मे थे। केवल दस वर्ष की अवस्था में ही अपनी माता के साथ आपने दीक्षा ग्रहण की। पूज्य गुलाबचन्द जी यति के पास १० वर्ष तक सूरत मे रहकर आपने संस्कृत, प्राकृत

भाषा और आगमों का अभ्यास किया। आपकी स्मरण-शक्ति बड़ी ही तीव्र थी। पूज्य श्री दौलतराम जी म. सा. के भी पास रहकर आपने शास्त्रों का परमार्थ जाना। सत्ताईस वर्ष की अवस्था में प्रकांड पंडित के रूप में आपकी कीर्ति सर्वत्र व्याप्त हो गई। वि० सं० १८४५ में आचार्य-पद पर विराजमान होकर चारित्र्य की निर्भयता के प्रभाव से आपने समस्त विघ्न-बाधाओं का निवारण कर शिथिल तथा विपरीत विचार-धाराओं का सामना किया। आपके प्रचार का प्रभाव स्थायी था। उस समय सेठ नानजी डुंगरशी को ज्ञान द्वारा आपने खूब सहायता की जिससे धर्म-प्रचार में पूरी सफलता मिली।

आपके बाद अनुक्रम से देवराज जी स्वामी, भाणजी स्वामी, करमशी स्वामी और अविचल जी स्वामी हुए। श्री अविचल जी स्वामी के दो शिष्य हुए--हरचन्द जी स्वामी और हीमचन्द जी स्वामी। इन दोनों का परिवार अलग-अलग रूप से फैला।

१—लींबड़ी मोटी सम्प्रदाय

हरचन्द जी स्वामी के बाद देवजी स्वामी, गोविन्द जी स्वामी, कानजी स्वामी, नत्थु जी स्वामी, दीपचन्दजी स्वामी और लाधा जी स्वामी हुए।

१—पूज्य श्री लाधाजी स्वामी

पूज्य श्री लाधा जी स्वामी कच्छ-गुंदाला ग्राम के निवासी श्री मालसीभाई के सुपुत्र थे। आपने सं० १९०३ में वांकानेर में दीक्षा ग्रहण की और सं० १९६३ में आपको आचार्य-पद पर बिठाया गया। तत्कालीन विद्वान संतों में आप प्रख्यात विद्वान संत थे। जैन-शास्त्रों का अध्ययन करके "प्रकरण संग्रह" नामक ग्रन्थ की आपने रचना की। यह ग्रन्थ सर्वत्र उपयोगी सिद्ध हुआ है। प्रसिद्ध ज्योतिष शास्त्रवेत्ता श्री सदानन्दी छोटेलाल जी महाराज आप ही के शिष्य हैं। श्री लाधाजी स्वामी के पश्चात् मेघराज जी स्वामी और इनके बाद पूज्य देवचन्द जी स्वामी हुए।

२—पूज्य देवचन्दजी स्वामी

पूज्य देवचन्द जी स्वामी का जन्म वि० सं० १९०२ में कच्छ के समाड़िया ग्राम में हुआ था। ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आपके पिता श्री रंग जी स्वामी ने भी आप ही के साथ पंच महाव्रत धारण किये। आपने निष्पक्ष भाव से शास्त्रों का बहुमुखी स्वाध्याय किया। अनेकान्त का मर्म समभाव के रूप में हृदयंगम किया। कविवर नानचन्द जी महाराज आप ही के शिष्य हैं। वि० स० १९७७ में आप स्वर्गवासी हुए।

३—पूज्य श्री गुलाबचन्दजी महाराज

पूज्य श्री देवचन्द जी स्वामी के पश्चात् श्री लवजी स्वामी और उनके बाद पूज्य श्री गुलाबचन्द जी महाराज हुए। आपने अपने भाई वीरजी स्वामी के साथ कच्छ के अंजार नगर में दीक्षा ग्रहण की।

थी। वि० सं० १६२१ में मोरारा ग्राम में आपका जन्म हुआ था। स० १६८८ मे आप आचार्य-पद पर विभूषित किये गए। प० रत्न शतावधानी रत्नचन्द जी महाराज आप ही के शिष्य थे। आपने मूल सूत्रों का गम्भीर अध्ययन किया था और सस्कृत-प्राकृत भाषाओं के आप धुरन्धर विद्वान् थे।

४—पूज्य नागजी स्वामी

पूज्य नागजी स्वामी मे प्रवल व्यवस्था-शक्ति थी। विद्वत्ता, गाम्भीर्य और आचार-विचार की दृढता आप मे प्रचुरमात्रा मे विद्यमान थी। आचार्य-पद पर नहीं होते हुए भी सम्प्रदाय का समस्त संचालन आपके ही द्वारा होता था। लींवडी ही मे आपने नौ वर्ष की अवस्था मे दीक्षा ग्रहण की और यहीं पर ही आपने कालधर्म को प्राप्त किया। आपके स्वर्गवास के पश्चात् एक यूरोपियन महिला तथा लींवड़ी के ठाकुर सा० की जो शोकजनक अवस्था हुई उस पर से आपकी भावनाशीलता और धर्मानुराग का परिचय प्राप्त होता है। आपने अनेक जैनेतरों को जैन वनाया और रजवाड़ों को अपने धर्मोपदेश से प्रभावित कर जैन-धर्मप्रेमी वनाया।

५—शतावधानी पं० रत्नचंदजी महाराज

शतावधानी प० रत्नचन्द्र जी महाराज ने अपनी पत्नी के अवसान के वाद दूसरी कन्या के साथ किये गए सम्बन्ध को छोड़कर दीक्षा ग्रहण की। सं० १६३६ मे भोरारा (कच्छ) मे आपका जन्म हुआ था। आप स्वभाव से अत्यन्त शान्त और हृदय से स्फटिक के समान निर्मल थे। अपने गुरुदेव श्री गुलाबचन्द जी महाराज की नेश्राय मे रहकर गहन अध्ययन किया। सस्कृत भाषा मे अस्खलित रूप से धाराप्रवाही प्रवचन करते थे। अनेक गद्य-पद्यात्मक काव्य आपके द्वारा रचे गये हैं। अर्धमागधी कोष तैयार कर आपने आगमों के अध्ययन का मार्ग सरल और सुगम वना दिया है। साहित्य-सशोधन करने वाले विद्वानों के लिए आप द्वारा निर्मित यह कार्य अत्यधिक सहायकरूप है।

'जैन सिद्धान्त कौमुदी' नाम का सुवोध प्राकृत व्याकरण भी आपने तैयार किया है। 'कर्त्तव्य-कौमुदी' और 'भावना शतक' 'सृष्टिवाद और ईश्वर' जैसे ग्रन्थों की भी आपने रचना की है। न्यायशास्त्र के भी आप प्रखर पंडित थे। अवधान-शक्ति के प्रयोग के कारण आप शतावधानी कहलाये। समाज सुधार और सगठन के कार्य में आपको खूब रस था। अजमेर के साधु-सम्मेलन मे शान्ति-स्थापकों मे आपका अग्रगण्य स्थान था। जयपुर मे आपको 'भारत रत्न' की उपाधि प्रदान की गई थी। साधु-मुनिराजों के सगठन के लिए आप सदा प्रयत्नशील रहते थे। घाटकोपर मे आपने "वीर सघ" की योजना का निर्माण किया था।

वि० स० १६६० मे आपको शारीरिक व्याधि उत्पन्न हुई। उसकी शल्य-चिकित्सा की गई किन्तु आयुष्य पूर्ण हो जाने के कारण आपका घाटकोपर मे स्वर्गवास हो गया।

आचार्य-पद पर नहीं होते हुए भी आप एक सम्माननीय सन्त गिने जाते थे। आपकी प्रवचन-शैली अत्यन्त सुवोध और लोकप्रिय थी। आपके देहावसान से समाज ने एक धुरन्धर विद्वान् और महान् सगठन-प्रिय भारत-रत्न गुमाया है। आपके स्मारक-रूप मे घाटकोपर में कन्या हाई स्कूल, सुरेन्द्रनगर में ज्ञान-मन्दिर, और वनारस मे लायब्रेरी बनाकर श्रावकों ने आपके प्रति भक्ति-भाव प्रकट किया है।

६—कविवर्य श्री नानचंदजी महाराज

कविवर्य श्री नानचन्द जी महाराज का जन्म वि० सं० १९३४ में सौराष्ट्र के सायला ग्राम में हुआ था। वैवाहिक सम्बन्ध का परित्याग करके आपने दीक्षा ग्रहण की। आप प्रसिद्ध संगीतज्ञ और भावनाशील विद्वान् कवि हैं। आपके सदुपदेश से अनेक शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना हुई है। पुस्तकालय की स्थापना करने की प्रेरणा देने वाले ज्ञान-प्रचारक के रूप में आप प्रसिद्ध हैं। अजमेर साधु-सम्मेलन के सूत्रधारों में आपका अग्रगण्य स्थान था। आपकी विचारधारा अत्यन्त निष्पक्ष और स्वतन्त्र है। 'मानवता का मीठा जगत्' आपकी लोकप्रिय कृति है। सौराष्ट्र में दया-दान विरोधी प्रवृत्तियों को अटकाने में आपको पर्याप्त सफलता मिली है। संतबाल जी जैसे प्रिय शिष्य को शिष्य के रूप में रद्द करने की सार्वजनिक घोषणा करने में आपने आनाकानी नहीं की। यह आपकी सिद्धान्तप्रियता का स्पष्ट उदाहरण है। आप सौराष्ट्र वीर श्रमण संघ के मुख्य प्रवर्तक मुनि हैं।

७—श्री मुनि श्री छोटेलालजी महाराज

मुनि श्री छोटालाल जी महाराज पूज्य श्री लाधा जी स्वामी के प्रधान शिष्य हैं। अपने गुरुदेव के नाम से आपने लींबड़ी में एक पुस्तकालय स्थापित कराया है। लेखक और ज्योतिष-वेत्ता के रूप में आप प्रसिद्ध हैं। आपने 'विद्यासागर' के नाम से एक धार्मिक उपन्यास भी लिखा है। आप द्वारा अनुवादित राजप्रश्नीय सूत्र का गुजराती अनुवाद बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है।

८—श्री जेठमलजी स्वामी

स्वामी श्री जेठमल जी महाराज क्षत्रिय कुलोत्पन्न संत हैं। सं० १९७८ में पूज्य लवजी स्वामी के पास से आपने दीक्षा ग्रहण की। आपने कुव्यसनों के विरुद्ध आन्दोलन चलाया था। अंग्रेजी का अभ्यास थोड़ा होते हुए भी अंग्रेजी में अस्खलित धारावाहिक प्रवचनों के द्वारा अनेक प्रोफेसरों को प्रतिबोधित कर संस्कार प्रदान किये हैं। गाँव-गाँव विचरण करके महावीर जयन्ती की सार्वजनिक छुट्टी के लिये प्रचार करते हैं, मद्य-मांस का त्याग कराते हैं और जैनेतर लोगों में भी आध्यात्मिक भावना और अहिंसा का प्रखर प्रचार करते हैं।

लींबड़ी छोटी (संघवी) सम्प्रदाय

वि० सं० १९१५ में लींबड़ी सम्प्रदाय के दो विभाग हुए। मोटी (बड़ी) सम्प्रदाय के विशिष्ट मुनिवरों का परिचय पहले दिया जा चुका है।

पूज्य श्री हीमचन्द जी महाराज

पूज्य श्री हीमचन्द जी महाराज के समय से लींबड़ी (छोटी) संघवी सम्प्रदाय प्रारम्भ हुई। पूज्य श्री देवराज जी स्वामी के शिष्य मुनि श्री अविचलदास जी के पास से पूज्य श्री हीमचन्द जी महाराज

ने दीक्षा प्राप्त की। आप वढवाण के अन्तर्गत टीम्बा निवासी वीसा श्रीमाली जाति मे जन्मे थे। वि० स० १८७५ मे आपने दीक्षा प्राप्त की थी। स० १९११ मे धोलेरा मे आपने चातुर्मास किया था-तभी से लींबडी सम्प्रदाय दो विभागों मे विभाजित हो गई। स० १९२९ मे आप का स्वर्गवास हुआ। आपके पाट पर पूज्य श्री गोपाल जी स्वामी आचार्य हुए।

पूज्य गोपालजी स्वामी

वि० स० १८८५ मे ब्रह्मक्षत्रीय वश मे जेतपुर मे आप का जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मूलचन्द जी था। मात्र दस वर्ष की अवस्था मे ही आपने दीक्षा ग्रहण कर सूत्रों का गहन अध्ययन प्रारम्भ किया। आगमों के अध्ययन मे आप विलक्षण प्रतिभाशाली थे। दूर-दूर के साधु-साध्वी शास्त्राभ्यास के लिए आपके पास आते थे। वि० स० १९४० मे आप का स्वर्गवास हुआ। लींबडी की छोटी सम्प्रदाय श्री गोपाल जी स्वामी' की सम्प्रदाय के नाम से भी प्रसिद्ध है।

पूज्य मोहनलालजी महाराज

पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज का जन्म धोलेरा मे हुआ। आप के पिताजी का नाम श्री गागजी कोठारी था। अपनी वहिन मूलीवाई के साथ सं० १९३८ मे दीक्षा ग्रहण की। आपकी लेखन-शैली सरल और प्रबल शक्तिवान् थी। आप द्वारा लिखित "प्रश्नोत्तर मोहनमाला" एक सुप्रसिद्ध चर्चा ग्रन्थ है।

पूज्य श्री मणिलालजी महाराज

पूज्य श्री मणिलाल जी महाराज ने वि० स० १९४७ में धोलेरा में दीक्षा ग्रहण की थी। आप शास्त्रो के गहन अभ्यासी थे। ज्योतिष विद्या मे भी आप निष्णात थे। "प्रभु महावीर पट्टावली" नामका ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखकर आपने समाज की उल्लेखनीय सेवा की है। "मेरी विशुद्ध भावना" और शास्त्रीय विषयों पर प्रश्नोत्तर के रूप मे भी आपने पुस्तके लिखी हैं। अजमेर के साधु-सम्मेलन मे आप एक अग्रगण्य शान्तिरक्षक थे।

ज्ञान के साथ क्रिया का होना—यह विरल पुरुषों मे ही देखा गया है। पूज्य श्री मणीलाल जी महाराज मे इन दोनो का समन्वय था। अन्तिम दिनों मे तो आप केवल दूध, छाछ, पापड, गांठियॉ, रोटी, भाखरी और पानी इतने ही द्रव्यों मे से कुछ का उपयोग करते थे। इन मे भी प्रतिदिन केवल तीन द्रव्यों का ही उपयोग करते थे और वह भी सीमित मर्यादा मे। इस प्रकार इस ज्ञानवान् और क्रियावान् महापुरुष का स०१९८९ मे स्वर्गवास हुआ।

आप के शिष्य मुनि श्री केशवलाल जी और तपस्वी श्री उत्तमचन्द्र जी महाराज इस सम्प्रदाय मे मुख्य है।

पूज्य मुनि श्री केशवलालजी महाराज

पूज्य श्री केशवलाल जी महाराज कच्छ-देशलपुर कंठी वाली के निवासी है। आप जेतसी

करमचन्द के सुपुत्र हैं। सं० १६८६ मे कच्छ आठ-कोटि छोटी पक्ष के पूज्य श्री शामजी स्वामी के पास में देशलपुर में दीक्षा ग्रहण की। सं० १६८४ में आप इस सम्प्रदाय से अलग होकर पूज्य श्री मणीलाल जी के महाराज पास आगये। आपने शास्त्रों का खूब अध्ययन किया है। आपके द्वारा धर्म का प्रचार प्रचुर मात्रा में किया जा रहा है। आप श्री सौराष्ट्र वीर श्रमण संघ के प्रवर्त्तक मुनि हैं।

गोंडल सम्प्रदाय

पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी

पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी गोंडल सम्प्रदाय के आद्य संत हैं। पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के शिष्य पं० प्रचाण जी महाराज के पास से आपने दीक्षा अंगीकार की। आपका जन्म सौराष्ट्र के मेंदरड़ा नामक गाँव में हुआ था। आपके पिता का नाम कमलशी भाई था। आपने पच्चीस वर्ष की अवस्था में दीक्षा ग्रहण की और सं० १८४५ में आचार्य-पद पर आरूढ़ हुए। शास्त्र-स्वाध्याय में निरंतर जागृत रहते थे—यहाँ तक कि कभी-कभी निद्रा का भी परित्याग कर देते थे। सुप्रसिद्ध राज्यमान्य सेठ सौभाग्यचन्द जी आप ही के शिष्य थे। सं० १८७७ मे गोंडल में आप का स्वर्गवास हुआ। आपकी चारित्र-शीलता और सम्प्रदाय-परायणता आगमानुसारी बुद्धिमूलक थी।

तपस्वी श्री गणेशजी स्वामी

तपस्वी श्री गणेशजी स्वामी का जन्म राजकोट के पास खेरड़ी नामक ग्राम में हुआ था। आप एकान्तर उपवास करते थे। अभिग्रहपूर्वक तपश्चर्या भी आप अनेक बार करते थे। वि० सं० १८६६ मे ६० दिन के सन्थारे में आप का स्वर्गवास हुआ।

पूज्य श्री बड़े नेणशी स्वामी का परिवार

पूज्य खोड़ाजी स्वामी

बड़े नेणशी स्वामी के ६ शिष्यों के परिवार में पूज्य खोड़ा जी स्वामी अत्यधिक प्रभावशाली सन्त थे। पूज्य मूलजी स्वामी के शिष्य पूज्य धोलाजी स्वामी के पास में १६०८ में आपने दीक्षा ग्रहण की। आप का शास्त्रीय ज्ञान विशाल था और प्रवचन की शैली आकर्षक थी। आप प्रमादगुण-सम्पन्न सुकवि और गायक थे। 'श्री खोड़ाजी काव्यमाला' के नाम से आपके स्तवन और स्वाध्याय गीतों का संग्रह प्रकाशित हो चुका है। गुजराती साहित्य मे भक्त कवि अखा का जैसा स्थान है वैसा ही गुजराती जैन साहित्य में पूज्य खोड़ा जी का स्थान है। स्व० वाड़ीलाल मोतीलाल शाह ने 'जैन कवि अखा' के नाम से आपको विरद दिया है।

पूज्य जसाजी महाराज

पूज्य जसाजी महाराज राजस्थान मे जन्मे थे फिर भी गुजरात तथा सौराष्ट्र मे प्रसिद्ध सन्त के रूप मे आप प्रसिद्ध हुए। आप शास्त्र के पारगत और क्रियावान् थे। वि० सं० १६०७ में आपने दीक्षा ग्रहण की और ६० वर्ष तक संयम पाल कर स्वर्ग सिधारे। पूज्य जसा जी के गुरुभाई हीराचन्द जी स्वामी के शिष्य पूज्य देवजी स्वामी हुए। आपके पास मे पूज्य कविवर्य आम्बा जी स्वामी दीक्षित हुए। आपने "महावीर के बाद के महापुरुष" नाम की पुस्तक लिखने मे बहुत परिश्रम उठाया था। पूज्य आम्बा जी स्वामी के शिष्य भीमजी स्वामी हुए। आपसे छोटे नेणशी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की। आपके शिष्य पूज्य देवजी स्वामी हुए। आपके शिष्यों मे पूज्य जयचन्दजी स्वामी विद्वान् थे और पूज्य माणकचन्द जी स्वामी तपस्वी। ये दोनों सगे भाई थे

पूज्य श्री जयचन्दजी स्वामी

आप का जन्म स० १६०६ मे हुआ था। आप जेतपुर के निवासी दशाश्रीमाली प्रेमजी भाई के सुपुत्र थे। आपने २२ वर्ष की अवस्था मे मेंदरडा ग्राम में दीक्षा ग्रहण की और वि० स० १६८७ में आप का स्वर्गवास हुआ।

आप के प्रवचन अत्यन्त लोकप्रिय थे। प्रकृति से गम्भीर, विनीत और प्रशान्त होने के कारण श्री सघ पर आपका प्रभाव था। आपने एक साथ ३५ उपवास किये थे। आप सतत तपश्चर्या मे निरत रहे थे। अत आपका तेज दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता था। अनेक शिक्षण संस्थाओं के जन्मदाता मुनि श्री प्राणलाल जी महाराज जैसे समाजसेवी मुनिराज आप ही के सुशिष्य है। आप के शिष्यों में मुनि श्री जयन्तिलाल जी आज मुनिराजों मे प्रकाड विद्वान् गिने जाते हैं। आपने काशी में रहकर न्याय-दर्शन का गहन अध्ययन किया है। आपके पिताजी ने भी दीक्षा ली है। आपकी दो बहिनें भी दीक्षित हैं। इस सम्प्रदाय की अन्य महासतियाँ भी अत्यन्त विदुषी हैं।

६—तपस्वी मुनि श्री माणकचन्दजी महाराज

तपस्वी मुनि की माणकचन्द जी महाराज वय मे जयचन्द जी महाराज से बडे थे किन्तु दीक्षा मे छोटे थे। आपका आगम ज्ञान सुविशाल था। ज्यों-ज्यों स्वमत तथा परमत का आप अभ्यास करते जाते थे त्यों-त्यों आपकी जिज्ञासा बढती जाती थी। आप अत्यन्त नम्र और उत्कट तपस्वी थे। आपने अनेक शिक्षण-सस्थाओं का सचालन किया है। योगासनों मे भी आप प्रवीण थे। सौराष्ट्र के मुनियों मे आप अग्रगण्य माने जाते थे।

७—पूज्य पुरुषोत्तमजी महाराज

पूज्य पुरुषोत्तम जी महाराज का जन्म वलदाणा नामक ग्राम में हुआ था। आप कणबी कुटुम्ब के थे। पूज्य जादव जी महाराज से आपने मागरोल मे दीक्षा ग्रहण की थी। इस समय आप गोंडल सम्प्रदाय मे वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध और तपोवृद्ध आचार्य हैं। आपकी क्रिया-परायणता भी आदर्श है। श्री सौराष्ट्रवीर श्रमण-सघ के आप प्रवर्तक हैं।

सायला सम्प्रदाय

पूज्य नागजी स्वामी का परिवार

वि० सं० १८७२ में पूज्य बाल जी स्वामी के शिष्य पूज्य नाग जी स्वामी ने इस सम्प्रदाय की स्थापना की है। आप छठ-छठ के पारणा करते थे और पारणे में आयम्बिल करते थे। आपने अनेक अभिग्रह भी धारण किये थे। चर्चावादी पूज्य भीम जी स्वामी और शास्त्रों के अभ्यासी श्री मूल जी स्वामी आप ही के शिष्य थे। ज्योतिष-शास्त्रज्ञ पूज्य मेघराज जी महाराज और लोकप्रिय प्रवचनकार पूज्य संघ जी महाराज भी आप ही के परिवार में हुए हैं। तपस्वी मगनलाल जी महाराज, कान जी मुनि आदि लगभग चार मुनि इस समय इस सम्प्रदाय में हैं।

बोटाद-सम्प्रदाय

१—पूज्य जसराज जी महाराज

पूज्य धर्मदास जी महाराज के पाचवें पाट पर पूज्य जसराज जी महाराज आचार्य हुए। आपने वि० सं० १८८७ में पूज्य वशराम जी महाराज के पास में १३ वर्ष की अवस्था में मोरबी में दीक्षा ग्रहण की। आपकी तेजस्विता समाज में विख्यात है। आगमों के गम्भीर ज्ञानी होने के कारण तत्कालीन मुनि-जगत् में आपका अत्यधिक सुयश था। धांगध्रा से आप बोटाद में स्थिरवास करने के लिए पधारे। तब से इस सम्प्रदाय का नाम बोटाद सम्प्रदाय पड़ा। वि० संवत् १६२६ में आपका स्वर्गवास हुआ।

२—पूज्य अमरशी जी महाराज

पूज्य अमरशी जी महाराज क्षत्रियवंशी थे और वि० सं० १६८६ में आपका जन्म हुआ था। छोटी उम्र में ही माता-पिता का अवसान होने से 'लाठी' के दरबार श्री लाखा जी द्वारा आपका पालन-पोषण हुआ था। संवत् १६०१ में पूज्य जसराज जी महाराज के पास में उत्कृष्ट भाव से दीक्षा ग्रहण की। संस्कृत-प्राकृत-ज्योतिष आदि विषयों का आपने विशिष्ट ज्ञान प्राप्त किया। वर्तमान आचार्य माणकचन्द जी महाराज आप ही के शिष्य हैं।

३—पूज्य हीराचन्द जी महाराज

पूज्य हीराचन्द जी महाराज का जन्म खेड़ा (मारवाड) में हुआ था। वि० सं० १६२४ में जामनगर में जसराज जी स्वामी के शिष्य श्री रणछोड़दास जी महाराज के पास में आपने दीक्षा ली। आपकी व्याख्यान-शैली बड़ी ही रोचक थी। आप क्रियाशील और स्वाध्याय-प्रेमी थे। सं० १६७४ में वढ़वाण शहर में आपका स्वर्गवास हुआ।

४—पूज्य मूलचन्द जी स्वामी

पूज्य मूलचन्द जी स्वामी का जन्म नागनेश ग्राम में वि० सं० १६३० में हुआ था। आपकी स्मरण-शक्ति अत्यधिक तीव्र थी। वि० सं० १६४८ में पूज्य हीराचन्द जी महाराज से आपने दीक्षा ग्रहण

की अत्यन्त भक्तिभाव पूर्वक सूत्र-सिद्धान्तों का अभ्यास किया। चर्चा मे विना आगम प्रमाण के बोलना आपको कतई पसन्द नहीं था।

५—पूज्य माणक चन्द जी महाराज

पूज्य माणकचन्द जी महाराज का जन्म बोटाद के पास मे तुरखा ग्राम मे हुआ था। वि० स० १९४३ मे पूज्य अमरशी महाराज के पास मे आपने दीक्षा ग्रहण की। संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का आपने गहरा अध्ययन किया। अपने चरित्र बल से आपने बहुत सारे परिषह सहन किये। बोटाद सम्प्रदाय मे आप अत्यन्त प्रतिष्ठावान् सत थे। आपके सुशिष्य न्यालचन्द जी शुद्धचित्त वाले शान्त मुनिराज थे। मृत्यु को आप पहले ही से देख चुके थे। जिस दिन आपने ऐसा कहा कि "आज शरीर छोडना है" उसी दिन ही आप स्वर्गवासी हुए।

६—पूज्य शिवलाल जी महाराज

पूज्य शिवलाल जी महाराज भावसार जाति मे उत्पन्न हुए थे। वैवाहिक सम्बन्ध छोड़ कर सं० १९७४ मे आपने पूज्य माणकचन्द जी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। 'पच परमेष्ठी का प्रभाव" नामक एक पुस्तक तथा कुछ अन्य पुस्तकें भी आप ने लिखी हैं। आप की प्रवचन शैली चित्ताकर्षक एव हृदयग्राही है। बोटाद के मुनिवरों मे आप अत्यन्त क्रियापात्र मुनिराज हैं। आप भी श्री सौराष्ट्र वीर श्रमणस के प्रवर्तक हैं।

कच्छ आठ कोटि पक्ष

कच्छ में स्थानकवासी धर्म का प्रारम्भ

लगभग वि० स० १६०८ मे एकल पात्रिया श्रावक हुए। जामनगर मे इन लोगों का जोर विशेष-रूप से था। जामनगर और कच्छ माडिवी के श्रावकों मे पारस्परिक सुन्दर सम्बन्ध था। व्यावसायिक कार्यों के लिये भी ये एक-दूसरे के यहाँ आया जाया करते थे। इस कारण एकल पात्रियासाधु भी कच्छ मे आये। ये कच्छ के बडे ग्रामों मे चौमासे करते और छोटे-मोटे ग्रामों मे भी दूसरे समय में घूम-घूम कर धर्म का प्रचार करते थे। ये श्रावकों को आठ कोटि के त्याग से सामायिक-पौषध कराते थे।

सवत् १७७२ मे पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के शिष्य मूलचन्द जी स्वामी और उनके शिष्य इन्द्र जी स्वामी ठा० ३ो प्रथम वार कच्छ में पधारे।

१—पूज्य श्री सोमचन्द जी महाराज

पूज्य श्री इन्द्र जी महाराज ने धर्मसिंह जी मुनि के टब्बों तथा शास्त्रों का अच्छी तरह से अभ्यास किया था अत आठ कोटि के उपदेश की प्ररूपणा की। आपके पास मे सं० १८८६ मे पूज्य श्री सोमचन्द

जी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की पूज्य श्री सोमचन्द जी म० सा० के पास में कच्छ के महाराव श्री लखपत जी के कामदार श्री थोमण जी पारख तथा वलदीया ग्राम के निवासी कृष्ण जी तथा उनकी माता मृगा वाई ने सं० १८१६ मे भुज मे दीक्षा ग्रहण की। सं० १८३१ में देवकरण जी ने दीक्षा ग्रहण की। सं०१८४२ मे पूज्य डाया जी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की। आपके समय से श्री कृष्ण जी स्वामी का संघाडा—आठ कोटि के नाम से प्रसिद्धि मे आया।

२—पूज्य कृष्ण जी महाराज

संवत् १८४४ मे लींवड़ी सम्प्रदाय के पूज्य अजरामर जी स्वामी कच्छ मे पधारे। उस समय कच्छी सम्प्रदाय के पूज्य श्री कृष्ण जी महाराज ने आपके सामने २१ वोल उपस्थित किये—

१—मकान के मेडे (भवन का वनाया हुआ छोटा सा ऊपरी हिस्सा) पर उतरना नहीं।

२—गृहस्थ की स्त्री को पढ़ाना नहीं।

३—गृहस्थ के घर पर कपड़ों की गठडी रखनी नहीं।

४—गोचरी लेते समय गोचरी वहरान वाले के द्वारा त्रस-स्थावर जीवों का यदि घात हो जाय तो गोचरी लेना नहीं।

५—संसारी खुले मुँह वोले तो उससे वोलना नहीं।

६—नारियल के गोले लेना नहीं।

७—दाडिम के दाने लेना नहीं।

८—वादाम की कुली लेना नहीं।

९—पवडी के पूरे गोले लेना नहीं।

१०—गन्ने की गडेरी (टुकडे) लेना नहीं।

११—पक्के खरवूजे का रायता जो वीज सहित हो—लेना नहीं।

१२—प्याज, लहसुन या मूला का धु गारा हुआ कच्चा शाक लेना नहीं।

१३—खरीद कर कोई पुस्तक दे तो लेना नहीं।

१४—खरीद कर कोई लड़का दे तो दीक्षा देना नहीं।

१५—प्याज और गाजर का शाक वहरना नहीं।

१६—माले पर से कोई वस्तु लाकर के दे तो वहरना नहीं।

१७—भोंयरे मे से निकाल कर कोई वस्तु दे तो वहरना नहीं।

१८—न दिख सके ऐसे घोर अन्धेरे मे से कोई वस्तु लाकर दे तो लेना नहीं।

१९—वहराई जाने वाली भोजन-सामग्री पर यदि चींटी चढ़ी हुई हो तो लेना नहीं।

२०—मिष्टान्न आदि कालातिक्रम के वाद लेना नहीं।

२१—मण्डी पाहुडिए, वलि पाहुड़िए, संकीए, सहस्सागारे के दोष युक्त आहार लेना नहीं।

ऊपरोक्त २१ वोल पूज्य अजरामर जी स्वामी को मंजूर न होने के कारण आहार-पानी का व्यवहार इनसे वन्द हुआ। यहाँ से ही छ कोटि और आठ कोटि इस प्रकार दो पक्ष हुए।

स० १८५५ मे लींवडी से अजरामर जी स्वामी के शिष्य देवराज जी महाराज कच्छ मे आये।

आपने स० १८५६ मे कच्छ माण्डवी मे चातुर्मास किया। उस समय प्रथम श्रावण वद पक्ष में एक संख्या को शा० हसराज सामीदास की पत्नी राम बाई को छ: कोटि से सामयिक कराई। इसके बाद सं० १८५७ मे मुन्द्रा मे तथा स० १८५८ मे अन्जार मे चातुर्मास किया। इस प्रकार छ कोटि की श्रद्धा यहाँ प्रारम्भ हुई।

पूज्य डाया जी स्वामी के दो शिष्य हुए। स० १८४५ मे जसराज जी स्वामी तथा १८४६ मे देव जी स्वामी ने दीक्षा ग्रहण की। ये दोनों शिष्य अपने-अपने अलग ही शिष्य बनाते थे। इस प्रकार क्रियाओं में भी धीरे-धीरे भिन्नता होने लगी। सं० १८७२ में जसराज जी महाराज ने ३२ बोल निश्चित किए जो इस प्रकार हैं —

१—विना कारण के पात्र लेकर गाँव में जाना नहीं।

२—विना कारण गृहस्थ के यहाँ रुकना नहीं।

३—बेचे जाते हुए सूत्र नहीं लेना और पैसा दिलाकर सूत्र नहीं लिखाना।

४—खरीद कर कोई कपडा दे तो लेना नहीं।

५—वरसी तप के पारणे के समय किसी के यहाँ जाना पडे तब यदि कपड़ा वहराया जाय तो लेना नहीं।

६—मिठाई, गुड, या शक्कर आदि खरीद-कर कोई दे तो-नहीं लेना।

७—किंवाड़, टांड या पेटी बनवाना नहीं।

८—कन्दमूल का शाक या अचार वहरना नहीं।

९—संसारी को पूँजनी, मुँहपत्ति या डोरा देना नहीं।

१०—संसारी का—आश्रव का कोई काम करना नहीं।

११—आहार करते हुए माण्डलिया रखना तथा पात्रे चिकने हों तो आटे से साफ करना—धोना और उस धोवन को पी जाना।

१२ अतेवासी का आहार रखना नहीं।

१३—पत्र लिखना या लिखाना नहीं।

१४—द्राक्ष, किसमिस, नारियल के गोले और बादाम की गुली नहीं लेना।

१५—पुट्ठे के लिये मशरु (रेशमी वस्त्र) या छींट नहीं लेना।

१६—बाग-बगीचे आदि देखने के लिये जाना नहीं।

१७—प्रतिक्रमण करते हुए बीच में बातें नहीं करना।

१८—प्रतिलेखन करते हुए बीच मे बातें नहीं करना।

१९—रात्रि के समय मे स्त्रियों का उपाश्रय मे आना नहीं।

२०—अचित्त पानी मे सचित्त पानी की शंका हो तो लेना नहीं।

२१—चौमासे की आलोचना छ मास में करना।

२२—पूर्ण-रूप से स्वस्थ होने पर स्थानक मे थडिल बैठना नहीं।

२३—मर्यादित पात्रों या मिट्टी के बर्तनों से अधिक रखना नहीं।

२४—यन्त्र, मन्त्र अथवा औषधि रखना नहीं।

२५—छोटे ग्रामों मे पूछे विना आहार—पानी लेना नहीं।
२६—संसारी की जगह मे जहाँ स्त्रियाँ हों—वहाँ रात्रि मे रहना नहीं।
२७—संसारी खुले मुँह बोले तो उनसे बोलना नहीं।
२८—छत पर खड़े हो कर रात्रि मे वार्ते करना नहीं।
२६—संसारी घर से बार-बार नहीं जाँचना।
३०—दर्शनार्थियों के यहाँ से आहार-पानी लेना नहीं।
३१—श्राविकाओं की बारह व्रत ग्रहण करने की पुस्तिका पाट पर बैठ कर (सब के सामने) पढ़ना नहीं।
३२—चातुर्मास तथा शेखा काल पूरा होने पर शक्ति होते हुए निष्कारण रुकना नहीं।

इन बत्तीस बोलों के साथ श्री देवजी स्वामी सम्मत नहीं हुए। इस कारण कच्छ-आठ-कोटि में दो पक्ष हो गये। श्री देव जी स्वामी का संघाडा "आठ कोटि नानी पक्ष" के नाम से और श्री जसराज जी स्वामी का संघाड़ा "आठ कोटि नानी पक्ष" के नामों से प्रसिद्ध हुआ।

आठ कोटि मोटी पक्ष

१—पूज्य करमशी जी महाराज

पूज्य कृष्ण जी महाराज के दसवें पाट पर पूज्य करमशी जी महाराज हुए। आपका जन्म सं० १८८६ मे कच्छ वांकी में सेठ हंसराज जी के यहाँ हुआ था। पूज्य पानाचन्द जी महाराज के पास सं० १६०४ मे गुजरात के सिधपुर ग्राम मे आपकी दीक्षा हुई थी। स० १६५६ मे आप आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित हुए। आप कर्त्तव्यपरायण और उग्र विहारी मुनिराज थे। ज्ञान-चर्चा के प्रति आपकी अत्यधिक रुचि थी। शान्ति और सहिष्णुता आपके विशिष्ट गुण थे। वि० सं० १६६६ मे आपका स्वर्गवास हुआ। आपके बाद पूज्य श्री वृजपाल जी, पूज्य कान जी स्वामी और पूज्य कृष्ण जी स्वामी आचार्य हुए।

२—पूज्य श्री नागजी स्वामी

आप कच्छ-भोजाय के निवासी श्री लालजी जेवत के पुत्र थे। सं० १६४७ मे केवल ११ वर्ष की अवस्था मे पूज्य करमशी जी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। स० १६८५ मे आपको आचार्य-पद दिया गया। आप उत्तम विद्वान् और सरस कवि थे। गुजराती भाषा मे आपने अनेक रास बनाये हैं।

३—पूज्य श्री देवचन्द जी महाराज

पूज्य श्री देवचन्द जी महाराज इस सम्प्रदाय मे उपाध्याय थे। वि० सं० १६४० मे आपका जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम सेठ साकरचन्द भाई था। वि० स० १६५७ मे आपने दीक्षा ग्रहण की। न्याय, व्याकरण और साहित्य के आप प्रखर विद्वान् थे। 'ठाणांग-सूत्र' पर भाषान्तर भी आपने लिखा है। न्याय के पारिभाषिक शब्दों को सरल रीति से समझाने वाला आपने एक ग्रन्थ लिखा है। सवत् २००० मे पोरबन्दर मे आपका स्वर्गवास हुआ।

४—पं० मुनि रत्नचन्द जी महाराज

सवत् १९७५ मे पूज्य नागजी स्वामी के पास मे प० मुनि श्री रत्नचन्द जी महाराज ने दीक्षा ग्रहण की। आपके पिता का नाम कानजी भाई था। प० रत्नचन्द जी म० कच्छी के रूप मे आप प्रख्यात है। आपने सस्कृत, प्राकृत का गहन अध्ययन किया है। तीन चरित्र-ग्रन्थों की रचना आपके द्वारा सस्कृत भाषा मे हुई है।

कच्छ आठ कोटि नानी पक्ष

पूज्य डाया जी महाराज के दो शिष्यों ने अलग-अलग सघाड़े चलाये थे। उनमे से पूज्य देव जी स्वामी के 'आठ कोटि नानी पक्ष' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पूज्य जसराज जी स्वामी के पश्चात् पूज्य वरसा जी स्वामी और पूज्य नथु जी स्वामी पाट पर आये।

१—पूज्य हंसराज जी स्वामी

आपने सवत् १९०३ मे पूज्य नथु जी स्वामी के पास दीक्षा ग्रहण की। आपने कच्छ मे से विहार करके रेगिस्तान पार करके गोंडल जाकर श्री पुजा जी स्वामी के पास मे शास्त्राभ्यास किया। स० १९१६ मे आप फिर से कच्छ लौटे और शुद्ध वीतराग धर्म की प्ररूपणा की। आपने अनेक उपसर्गों और परिषद् समभाव से सहन किये थे। स० १९३५ मे कच्छ के वडाला ग्राम मे आपने कालधर्म प्राप्त किया।

२—पूज्य श्री व्रजपालजी स्वामी

पूज्य श्री हसराज जी स्वामी के पाट पर पूज्य श्री व्रिजपाल जी स्वामी हुए। आपने बाल-ब्रह्मचारी के रूप मे स० १९११ में दीक्षा ग्रहण की और स० १९३५ मे आपको पूज्य पदवी प्रदान की गई। आप महान् वैराग्यवान् थे। सवत् १९५७ मे आपका स्वर्गवास हुआ।

३—पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी

पूज्य श्री व्रजपाल जी स्वामी के पाट पर आपके गुरुभाई डुगरशी स्वामी आये। आप भी बाल ब्रह्मचारी थे और अत्यधिक वैराग्यवान् थे। आपने स० १९३२ में कच्छ वडाला ग्राम मे दीक्षा ग्रहण की। आपका स० १९६९ मे स्वर्गवास हुआ।

४—पूज्य श्री शामजी स्वामी

पूज्य श्री डुंगरशी स्वामी के पाट पर पूज्य श्री शाम जी स्वामी आचार्य पदारूढ हुए। आपने ६७ वर्ष तक सयम पाल कर स० २०१० मे कच्छ-साडाऊ मे कालधर्म प्राप्त किया।

५—पूज्य श्री लालजी स्वामी

पूज्य श्री शामजी स्वामी के पाट पर पूज्य श्री लाल जी स्वामी आचार्य-पद पर आये। आपने

सं० १९७२ मे दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान मे इस सम्प्रदाय मे १९ साधु-मुनिराज और २९ महासतियॉ हैं। इन सब पर पूज्य श्री लाल जी स्वामी का शासन है। इस सम्प्रदाय का एक ऐसा नियम है कि गुरु की उपस्थिति में कोई भी मुनि अपने अलग शिष्य नहीं बना सकते। इस कारण सम्प्रदाय में नवीन शाखाऍ फूटने की सभावना कम रहती है। और साम्प्रदायिक-एकता दृष्टिगोचर होती है।

खम्भात-सम्प्रदाय

पूज्य श्री तिलोक ऋषि जी महाराज के सुशिष्य मगल ऋषि जी महाराज गुजरात मे विचारे। खम्भात मे आपके अनेक शिष्य हुए—इस कारण इस सम्प्रदाय का नाम 'खम्भात सम्प्रदाय' पड़ा।

श्री मंगल ऋषि जी महाराज के बाद अनुक्रम से पूज्य श्री रणछोड़ जी महाराज, पूज्य श्री नाथा जी, वेचरदास जी और बड़े माणकचन्द जी महाराज पाट पर आये। इनके बाद पूज्य श्री हरखचन्द जी महाराज के समय मे यह सम्प्रदाय सुदृढ़ हुई। आपके बाद पूज्य श्री भाण जी ऋषि जी महाराज पाट पर आये।

१—पूज्य श्री गिरधरलाल जी महाराज

पूज्य श्री भाण जी ऋषि जी महाराज के बाद पूज्य श्री गिरधरलाल जी महाराज आपके पाट पर आये। आप संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं के विज्ञाता और समर्थ विद्वान् थे। आप एक महान् कवि भी थे। आपकी कविता अत्यन्त सौष्ठवयुक्त और पिंगलबद्ध थी। आपने बम्बई मे भी चातुर्मास किया था। अन्य दर्शन शास्त्रों के भी आप विज्ञाता थे। योग और ज्योतिष-शास्त्र के भी आप प्रखर अभ्यासी थे। आपमे गहरा ज्ञान और अगाध बुद्धि थी। मस्तक मे अकस्मात् चोट लग जाने के कारण आपने कालधर्म प्राप्त किया।

२—पूज्य श्री छगनलालजी महाराज

पूज्य श्री गिरधरलाल जी महाराज के बाद पूज्य श्री छगनलाल जी महाराज आचार्य हुए। आपने २२ वर्ष की अवस्था मे सं० १९४५ मे दीक्षा ग्रहण की। आप निर्भय वक्ता, शुद्ध हृदयवान, सत पुरुष थे। आपकी पहाडी आवाज थी—बुलन्द और जोशीली। तत्कालीन धर्मप्रचारक आचार्यों मे आपकी अत्यन्त प्रतिष्ठा थी। अजमेर साधु-सम्मेलन मे आप पधारे थे।

३—पूज्य श्री गुलाबचन्दजी महाराज

पूज्य श्री गुलाबचन्द जी महाराज अत्यन्त सरल हृदय के थे। आप उग्र तपस्वी थे। अपने शरीर के प्रति रंचमात्र भी आपमे ममत्व भाव नहीं था। आपको सारण गॉठ की पीड़ा थी, जिसका ऑपरेशन कराने के लिए श्रावक अनेक बार आपसे विनती करते थे किन्तु शरीर के प्रति निर्ममत्व के कारण आप अस्वीकार करते थे। संवत् २०११ मे इस सम्प्रदाय के इन अन्तिम आचार्य और तपस्वी मुनिराज का अहमदाबाद मे स्वर्गवास हुआ। इस सम्प्रदाय मे अब केवल दो मुनि है, शेष सभी साध्वियॉ हैं।

इस सम्प्रदाय की साध्वियों मे महासति जी श्री शारदावाई अत्यन्त विदुषी है जो अहमदाबाद के समीपवर्ती साणन्द ग्राम की हैं। बहुत छोटी उम्र मे दीक्षा अगीकार करके आपने गहरा अध्ययन किया है। अपनी आकर्षक और सुन्दर व्याख्यान-शैली से आप धर्मप्रचार मे लगी हुई हैं।

हमारा साध्वी सघ

जैन धर्म की व्यवस्था का भार चतुर्विध संघ पर है। श्रमण भगवान् महावीर ने चतुर्विध संघ के चार स्थम्भों को—साधु-साध्वी, और श्रावक-श्राविकाओं—को समानाधिकार दिये हैं।

साधु समाज का इतिहास ही केवल जैन धर्म का इतिहास नहीं है किन्तु चतुर्विध सघों का सम्मिलित इतिहास ही जैन समाज का सम्पूर्ण इतिहास हो सकता है। किन्तु समाज की रूढ़ प्रणालिकानुसार आज तक साध्वी समाज की अपेक्षा साधु समाज का ही नामोल्लेख विशेष मिलता है। इसका कारण पुरुष प्रधानता की भावना होना जाना जा सकता है।

चाहे जो कुछ हो-धर्म और वलिदान का जहाँ सम्वन्ध है वहाँ तक जैनधर्म के सत्य उत्सर्ग का ज्वलन्त और साकार रूप साध्वी समाज है। दु ख के जितने पहाड और विपत्तियों के वादल साध्वी-वर्ग पर टूटे हैं, आँधियों और तूफानों का जितना सामना साध्वी समाज को करना पड़ा है, उतना साधु-वर्ग को नहीं। साध्वी समाज द्वारा दिए गये महामूल्यवान वलिदानों की अमर कहानी केवल जैन साध्वी समाज के लिए ही नहीं किन्तु समस्त ससार के लिए दिव्य ज्योति के समान है। भगवान महावीर के कष्ट और चन्दन वाला के संकटों को कौन भूल सकता है?

जैन धर्म ने स्त्री जाति को तीर्थंकर पद मे भी समावेश किया है—यह उसकी एक अप्रतिम विशेषता है। फिर भी यह सत्य है कि साध्वी समाज की परम्परा का अखण्डित इतिहास नहीं मिलता। जो-कुछ भी इतिहास मिलता है वह विखरे हुए रत्न-कणों के समान है।

महासती जी श्री पार्वती जी महाराज

महासती श्री पार्वती जी (पंजाब) का नाम वर्तमान मे सुप्रसिद्ध है। आप का जन्म आगरा जिले मे सवत् १९१६ मे हुआ था। सवत् १९२४ मे केवल आठ वर्ष की अवस्था मे आपने दीक्षा ग्रहण की थी। सवत १९२८ मे आप पजाव के श्री अमरसिंह जी महाराज की सम्प्रदाय में सम्मिलित हुई आप वड़ी क्रिया पात्र थीं। पजाव के साध्वी संघ पर तो आप का प्रभुत्त्व था ही, परन्तु श्रमण सघ भी आपकी आवाज का आदर करता था। आपने अनेक प्रान्तों मे विचरण कर के धर्मध्वजा फहराई थी। आपका प्रचण्ड देह और व्याख्यान 'छटा वडी प्रभावोत्पादक थी, आप अत्यन्त विदुषी साध्वी थीं। आपने सस्कृत-प्राकृत आदि भापाओं का वडा ही सरस ज्ञान प्राप्त किया था। आपने 'ज्ञान दीपिका', 'सम्यक्त्व सूर्योदय', सम्यक् चन्द्रोदय 'आदि महान ग्रन्थों की रचना की है। आप के ग्रन्थों मे अद्भुत' तर्क और सचोट दलीले भरी हुई हैं। आपके विरोधी आपकी दलीलों का बुद्धिपूर्वक उत्तर देने में असमर्थ होने के कारण क्षुद्रता पर उतर जाते। सवत् १९६७ मे जालन्धर मे आप का स्वर्गवास हुआ।

महासती श्री उज्ज्वलकुमारीजी

आपका जन्म वरवाला (सौराष्ट्र) मे हुआ है। माँ-वेटी ने श्री विदुषी महासती श्री राजकुवँर के

पास दीक्षा ली थी। आधुनिक समयानुसार प्रखर प्रवचनकर्ता के रूप मे महासति जी श्री उज्ज्वल कुमारी जी का नाम जैन और अजैन समाज मे सर्वत्र प्रसिद्ध है महात्मा गांधी और अन्य राष्ट्रीय नेताओं ने भी आप का सान्निध्य प्राप्त किया है। आप संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, हिन्दी व मराठी भाषा के अतिरिक्त इंग्लिश भाषा पर भी अधिकार रखती है। आपके कई व्याख्यान प्रकाशित हो गये है।

महासती जी श्री सुमति कुंवरजी

स्थानक वासी जैन-धर्म के जानकार महासति जी श्री सुमति कु वर जी को भली भाति जानते है। श्रमण सघ के समान श्रमणी सघ की आवश्यकता पर आप समाज का ध्यान आकर्षित कर रहे है। आप उग्र विहारिणी, परम विदुषी और मधुर व्याख्यात्री है। अपनी दीक्षा—गुरु रम्भा कुँवर जी महासती जी के साथ दक्षिण, मध्यभारत, राजस्थान, थली प्रदेश और पजाव मे विचर कर आप वहुत ही धर्म प्रचार कर रही है।

महासती जी श्री वसुमती वाई

दरियापुरी सम्प्रदाय की महासति जी श्री वसुमति वाई के व्याख्यान वडे ही तर्कपूर्ण युक्तियों से परिपूर्ण और जोरदार भाषा से भरे हुए होते हैं। आपका जन्म पालनपुर मे हुआ और छोटी उम्र मे दीक्षा लेकर गहन ज्ञान सम्पादन किया।

प्रवर्तिनी जी श्री देवकुँवर वाई

कच्छ आठ कोटि छोटी पक्ष मे वर्तमान मे प्रवर्तिनी पद पर महासति जी श्री देवकुँवर वाई विराजमान हैं। कच्छ के वड़ाला ग्राम मे स०१६७५ मे आपकी दीक्षा हुई थी। प्रवर्तिनी जी श्री पांची वाई के कालधर्म के पश्चात् सं० १६६६ मे उनके पाट पर आप विराजमान हुई।

महासती जी श्री लीलावती वाई

लींवड़ी सघ की सम्प्रदाय मे सुप्रसिद्ध महासती जी श्री वा० ब्र० लीलावती वाई क्रियाशील और प्रभावक व्याख्यात्री हैं।

इनके सिवाय अनेक महासतियाँ अनेक सम्प्रदायों में है। उनमे से अनेक विद्वान् और अभ्यासी हैं। आवश्यक सामग्री मिलने के अभाव मे और अधिक महासतियों का सविस्तर वर्णन नहीं दिया जा सका।

महासति श्री रंगुजी (राजस्थान), महासति श्री टीवुजी (मालवा), नन्द कुँवर जी (मारवाड़) श्री रतन कुँवर जी (मालवा), और श्री सारसकुँवर जी (खभात), आदि महासतियों ने समस्त भारत मे जैनधर्म का प्रचार और प्रसार करने मे अग्रणी भाग लिया है।

महासती जी श्री राजीमति जी, चन्दा जी, मोहन देवी जी, श्री पन्ना देवी जी, श्री मथुरा देवी जी आदि महासतियों ने भगवान महावीर स्वामी का संदेश पजाव मे पहुँचाया। इनके इस महान कार्य को कौन भूल सकता है। गुजरात मे श्री तारावाई, श्री शारदा वाई आदि सौराष्ट्र मे श्री प्रभावती वाई, श्री

लीलावती जी आदि महासतियों ने आर्हत् धर्म का प्रचार किया है।

महासती वर्ग का प्रचार, उत्सर्ग, त्याग, तपश्चर्या और सयम साधुवर्ग से किसी भी प्रकार से कम नहीं है।

महासती वर्ग का भावी उज्ज्वल प्रतिभासित हो रहा है। साध्वी समाज यदि शिक्षण की तरफ विशेष लक्ष्य दे तो साध्वियाँ जैनधर्म का महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पादन कर सकेंगी और संघ की उन्नति मे दायित्वपूर्ण अपना सहयोग प्रदान कर सकेंगी।

पूज्य श्री लवजी ऋषिजी की परंपरा की महासतियाँ

क्रियोद्धारक परम पुरुष पूज्य श्री लव जी ऋषि जी म० के तृतीय पाट पर पूज्य श्री कहान जी ऋषि जी म० के पाट पर विराजित पूज्य श्री तारा ऋषि जी म० ने सवत् १८१० में पचेवर ग्राम में ४ सम्प्रदाय का संगठन किया। उस समय सती शिरोमणि श्री राधाजी म० उपस्थित थे। महासतीजी ने संगठन कार्य मे विशेष सहयोग दिया था। उनकी अनेक शिष्याओं मे श्री किसन जी म० आपकी शिष्या श्री जोता जी म० इनके शिष्य परिवार मे श्री मोता जी म० मुख्य थीं। आपकी अनेक शिष्याओं मे दीपकवत् प्रकाश करने वाली शिष्या श्री कुशल कुँवर जी म० पदवीधर थीं, उन्हीं की सेवा २७ शिष्या हुइ थीं। उनमे से शान्त मूर्ति श्री दया जी, सरदारा जी तथा महासती जी श्री लिछमा जी म० का परिवार वृद्धिगत हुआ। महासती जी दया कुँवर जी महाराज की भी अनेक शिष्याएँ हुईं, उनमे श्री गुमाना जी म०, श्री झमकु जी म०, श्री गंगा जी म०, श्री हीरा जी म० आदि शिष्या और परिवार आगे वढ़ता गया। श्री गुमानकुँवर जी से तपस्विनी श्री सिरेकुँवर जी और उनकी शिष्या पंडिता प्र० श्री रतन कुँवर जी म० जो कि वर्तमान मे अनेक क्षेत्रों में विचर कर जैनधर्म के गौरव को बढा रही हैं। उनकी शिष्याओं में प्रखर व्याख्यानी पडिता वल्लभ कुँवर जी म० भी जैन धर्म का खूब प्रचार कर रही है। श्री हीरा जी म० के परिवार में श्री भूरा जी म० शान्त मूर्ति श्री राम कुँवर जी म०, तपस्विनी श्री नन्दू जी म० आदि हुईं। उनमे अनेक सतियाँ विदुषी हुई। श्री भूरा जी म० की शिष्या पडिता प्रवर्तिनी जी श्री राज कुँवर जी म० प्रखरव्याख्यानी, मधुर स्वर, अनेक शास्त्र कण्ठस्थ, संस्कृत, उर्दू, फारसी, अरबी, हिन्दी, मराठी गुजराती भाषा से विशेष अवगत थे। आप के द्वारा मुंबापुरी पधारने का अवसर सर्वप्रथम हुआ। जिससे अन्य सतियाँ बम्बई क्षेत्र मे पधारती हैं। आपको अनेक शिष्याओं मे पडिता सुव्याख्यानी श्री उज्ज्वल कुँवर जी म० वर्तमान मे जैन समाज मे उज्ज्वल कीर्ति को बढ़ा रही हैं। आपने सस्कृत प्राकृत का उच्च शिक्षण लिया है साथ-साथ अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, गुजराती आदि भाषाओं के ऊपर अच्छा अधिकार है। तपस्विनी श्री नन्दूजी म० शान्त और उग्र तपस्विनी थीं। आप की शिष्याओं मे मधुरव्याख्यानी पडिता प्र० श्री मायर कुँवर जी म० जो कि वर्तमान मे मद्रास, बैंगलोर आदि प्रान्तों मे विचर कर धर्म का तथा शिक्षण का प्रचार कर रही है। आपके सदुपदेश से अनेक पारमार्थिक संस्थाएँ निर्माण हुई है। शान्त मूर्ति श्री राम कुँवर जी म० आप की २३ शिष्याएँ हुईं, उनके प्रमुख्य श्री सुन्दर जी म० प्रधान थीं। प० प्रवर्तिनी जी श्री शान्ति कुँवर जी म० प्रखर व्याख्यानी विदुषी सती थी। इन्होंने दक्षिण प्रान्त खान देश आदि प्रान्तों मे विचरकर जैनधर्म की अच्छी जागृति की है। उन्हीं के परिवार में शान्त सरल विदुषी और प्रखर व्याख्यानी सती जी श्री सुमति कुँवर जी म० अनेक प्रान्तों मे उग्र विहार करके भव्य

जीवों को अपने वचनामृत का पान करा रही हैं। आपके वचनों में ऐसी आकर्षण शक्ति है कि जैनों के अतिरिक्त अन्य समाज भी आपके वचनामृतका पिपासु रहता है। स्थली के प्रान्त रतन गढ में जो तेरह पंथी समाज का गढ़ है, ऐसे क्षेत्रों में आपने अन्य भाई अग्रवाल, ब्राह्मण आदि समाज की विनती से थली प्रदेश क्षेत्रों में चातुर्मास किया। अनेक परषहों को सहन कर स्था-जैनधर्म का गौरव बढ़ाया है। आपके सदुपदेश से बम्बई चातुर्मास में आयम्बिल खाता ६०,१५४ हजार का स्थायी फंड हो कर वर्तमान में सुव्यवस्थित चल रहा है। अनेक स्थानों पर कन्याओं के लिए धार्मिक कन्या पाठशाला स्थापित हुई हैं।

श्री महाभाग्यवान श्री लछमा जी म० प्रभावशालिनी सती जी थीं। आपके उपदेशामृत से सद्बोध पाकर अनेक भव्य आत्माओं ने जीवन सफल बनाया। उनमें मुख्य श्री सोना जी म०. श्री हमीरा जी. श्री लाडु जी, तपस्विनी ख्वमा जी आदि महासतियाँ जी हुई। श्री सोना जी म० की सुशिष्या तपस्विनी श्री कासा जी म० हुई। इन सतियों के परिवार में अनेक सतियाँ हुई हैं। प्रवर्तिनी श्री कस्तूरा जी म०, प्र० श्री हगामकुँवर जी म० और श्री जड़ावकुँवर जी म०। इन महासतियों ने मालवा, बागड़. बरार, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों में विचरकर शुद्ध जैन धर्म की खूब प्रभावना की है। वर्तमान में प्र० श्री हगाम कुँवर जी म० और उनका शिष्या-परिवार श्री सुन्दर कुँवर जी म० आदि मालवा प्रान्त में विचर रही हैं।

श्री जड़ावकुँवर जी म० का परिवार व्याख्यानी श्री अमृतकुँवर जी म० तथा श्री वरजु जी म० आदि सतियाँ हुई। उनकी शिष्या का परिवार वर्तमान में अहमदनगर. पूना तथा बरार, मेवाड़ मालवा प्रान्तों में विचर रहा है।

पं० महासती जी श्री सिरेकुँवर जी म० अपने वचनों द्वारा धर्मप्रचार कर रही हैं। महासती श्री इन्द्रकुँवर जी और श्री दौलतकुँवर जी म० की शिष्या श्री गुमान कुँवर जी तथा श्री हुलासकुँवर म० ठा० २ महासती जी श्री सिरेकुँवर जी म० की सेवा में विचर रही हैं। श्री हमीरा जी म० की शिष्या श्री प्रवर्तिनी जी रंभा जी महाराज आदि हुई हैं। उनमें प्रवर्तिनी जी म० बहुत भद्र परिणामी सरल प्रकृति की थीं। कई वर्ष तक स्थविरवास पूना में विराजती थीं। अन्तिम ४५ दिनों का संथारा ग्रहण कर आप पूना में ही स्वर्गवासी हुई। आपकी करीब २२ शिष्याएँ हुई। उनमें शान्त और सरल मूर्ति श्री पान-कुँवर जी म०, पंडिता मुख्याख्यानी श्री चन्द्रकुँवर जी म०, सेवाभावी श्री राजकुँवर जी म०. श्री सूरज-कुँवर जी म०; श्री आनन्दकुँवर जी म० आदि अच्छी विदुषी सतियाँ हुई।

पंडिता श्री चन्द्रकुँवर जी म० की सुशिष्या पं० प्रवर्तिनी जी श्री इन्द्रकुँवर जी म० जो कि वर्त-मान में पूना व अहमदनगर जिले में विचर के धर्म जागृति कर रही हैं। मुख्याख्यानी श्री आनन्दकुँवर जी म० मद्रास बैंगलोर प्रान्त में विचर कर धर्म की प्रभावना कर रही हैं आपकी सेवा में ५ शिष्या हुई हैं। उनमें पंडिता श्री मज्जनकुँवर जी म० ने पाथर्डी में श्री अमोल जैन सिद्धान्तशाला में शिक्षण लेकर अच्छी योग्यता प्राप्त कर अनेक प्रान्तों में विचर कर जैन-धर्म का प्रचार कर रही हैं।

इस प्रकार ऋषि सम्प्रदायी महासतियों ने अनेक देश-देशान्तर में विचर के और धर्म की सेवा करके गौरव बढ़ाया है।

स्था० जैन समाज के उन्नायक श्रावक

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रन्स के अध्यक्ष

श्री केवलचन्द त्रिभुवनदास,
अहमदाबाद
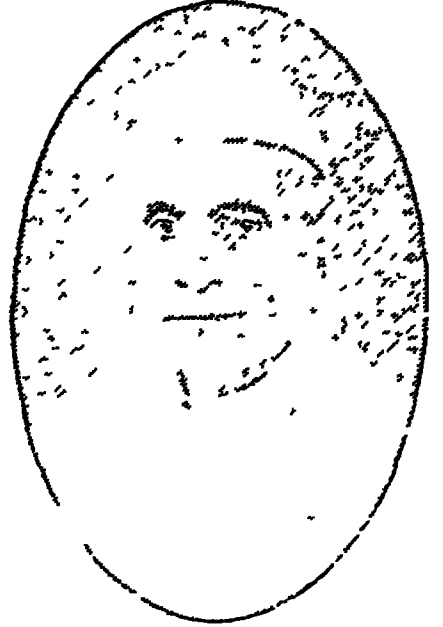
श्री मेघजी भाई थोभण, बम्बई

श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमद नगर

श्री वीरचन्दभाई मेघजी भाई थोभण, बम्बई
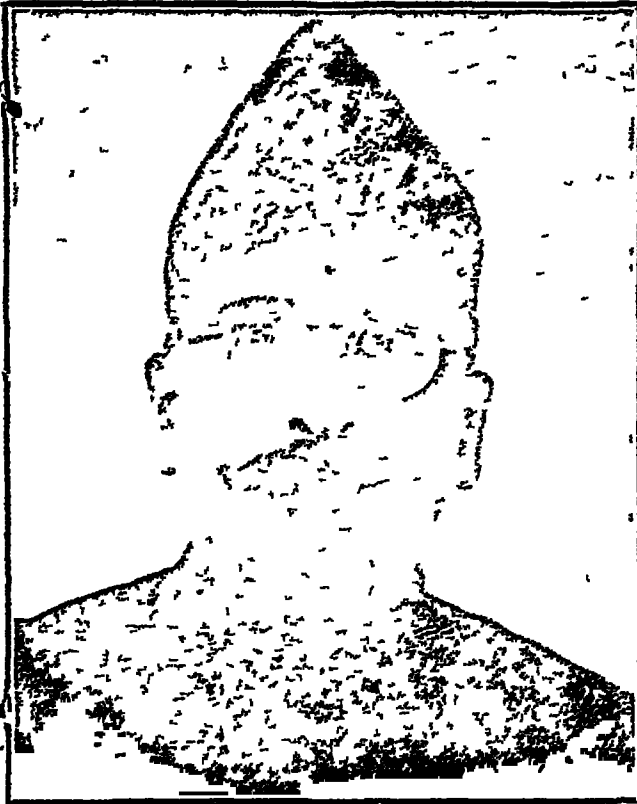
श्री विनयचन्द भाई जौहरी, जयपुर

श्री बालमुकुन्द जी मूथा, सतारा

श्री भैरोदान जी सेठिया, बीकानेर
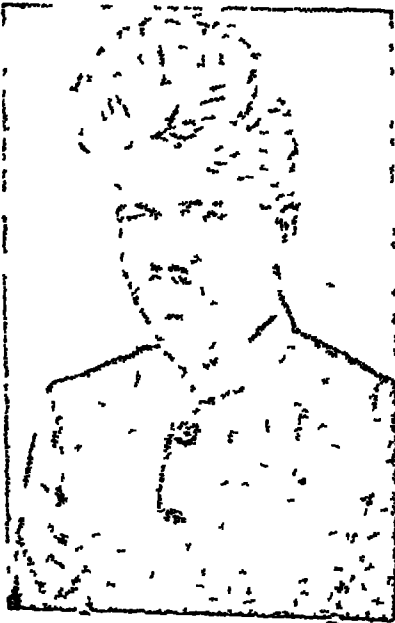
श्री चम्पालाल जी बाठिया, भीनासर

श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह
अहमदाबाद

श्री हेमचन्द रामजी भाई मेहता, भावनगर

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रन्स के स्वागताध्यक्ष
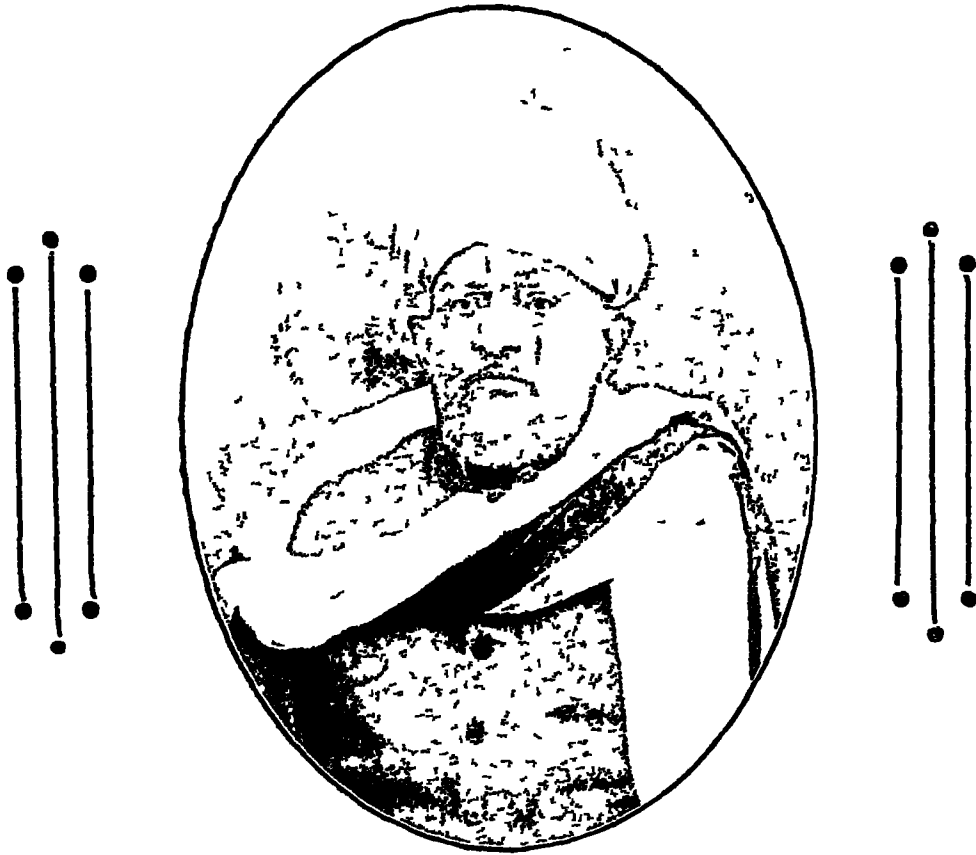
श्री अम्बावीदासभाई डोसानी मोरवी

लाल ज्वालाप्रसादजी जौहरी

लाला राजवहादुर सुखदेवसाय जी जौहरी

सेठ अमरचन्द जी पितलिया

श्री अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स के स्वागताध्यक्ष

सेठ धनजी भाई देवशी भाई

श्री दानमल जी वलदोटा सादडी, मारवाड

जयचंदलाल जी रामपुरिया, बीकानेर
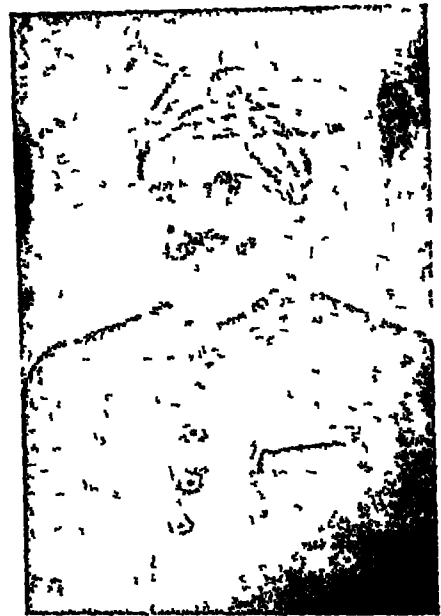
श्री मोहनमल जी चोरडिया, मद्रास

परिच्छेद—७

स्था० जैन समाज के उन्नायक श्रावक

कॉन्फरन्स छठवें अधिवेशन के अध्यक्ष

मलकापुर अधिवेशन के प्रमुख

श्री मेघजी भाई थोभण, जे० पी०

आपका जन्म स० १६१६ भाद्रपद कृष्णा १३ को भुज में हुआ। आप जाति से वीसा ओसवाल थे। १५ वर्ष की उम्र में ही आप व्यापारार्थ बम्बई आये और स० १६३५ में आपने वहाँ मैसर्स मिल कम्पनी के साथ भागीदार बन कर रुई की दलाली का काम आरम्भ किया। यह कम्पनी यूरोपियन कम्पनी थी। आपकी कार्यकुशलता से यूरोपियन लोग बडे प्रसन्न हुए। स० १६३५ से १६८१ तक आपका यह व्यवसाय खूब जोर-शोर से चलता रहा। लाखो रुपए आपने कमाये।

बचपन से ही आपका धर्म-प्रेम अनुपम था। साम्प्रदायिक ममत्व आपको पसन्द न था। बम्बई में जबसे स्था० साधुओ का पदार्पण होने लगा तब से ही आप धार्मिक कार्यों में विशेष रस लेने लगे। आप लगभग १५ वर्ष तक दामोदाम जी लक्ष्मीचन्द जैन धर्म स्थानक, चीचपोकली के प्रमुख रहे। बम्बई शहर में स्थानक का अभाव आपको खटका करता था। उसकी कमी को दूर करने के लिए आपने स्वय १० हजार रु० दिये और यो ढाई लाख रुपयो का चन्दा कर एक बगला चाँदावाडी में खरीदा।

आपकी दानप्रियता प्रशसनीय थी। पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० का चातुर्मास जब घाटकोपर में हुआ तो वहाँ सार्वजनिक जीवदया फड स्थापित किया गया था, उसमें आपने २१०० रु० प्रदान किये थे।

मैसूर स्टेट में प्रतिवर्ष शारदा देवी के यहाँ करीब ७ हजार जानवरो की बलि हुआ करती थी, जिसको आपने सदैव के लिए बन्द कराया। इस उपलक्ष्य में मैसूर राज्य ने आपके नाम से एक अस्पताल बनाया जिसमें ७५०० रु० आपने और ७५०० रु० सेठ शान्तिदास आसकरण ने—जो आपके मामा के बेटे भाई होते हैं, दिये।

माडवी-कच्छ में जब अकाल था तब आपने सस्ते भाव से अनाज दिया। रुपया दिया, वस्त्र दिये। इन सब दान के अलावा आपने विभिन्न कार्यों के लिए दो लाख, पैंसठ हजार रुपये का दान दिया। इन सब दान की ऐसी सुव्यवस्था कर रखी है कि उनसे गवर्नमेंट प्रोमेसरी नोट, म्युनिस्पैलिटी लोन आदि ले रखी हैं, जिनके व्याज से सम्बन्धित प्रवृत्तियाँ आज भी चल रही हैं।

आपने अपने नाम से एक स्वजाति जैन सहायक फड स्थापित किया है जिसमें १,४३,५०० रु० दिये। इसका प्रतिवर्ष ६३०० रु० व्याज आता है।

२६००० रु० में श्री मेघजी थोभण जैन सस्कृत पाठशाला, कच्छपाडा में स्थापित की, जिसमें मुनिराजो को व वैरागियों को शिक्षा दी जाती है। इसके साथ एक लायब्रेरी भी है।

१५००० जीवदया में, १८००० गायो को घास डालने के लिए, १४००० कुत्तो को रोटी डालने के लिए, १४००० पक्षियो को चुगा डालने के लिए, ३५०० कीडियो को आटा डालने के लिए, २२०० सदाव्रत देने के लिए, इस तरह २,६५,००० रु० प्रदान किये। जिसका व्याज १११२५ रु० आता है जो प्रतिवर्ष व्यय कर दिया जाता है।

कान्फरन्स के छठवें अधिवेशन मलकापुर के आपअध्यक्ष चुने गए। यहाँ से कान्फ्रन्स में जागृति आ गई। आफिस बम्बई मे लाया गया। श्री सूरजमल लल्लूभाई जौहरी तथा सेठ वेलजीभाई लखमसी को मन्त्री बनाया।

आपने बम्बई के भव्य सघ की अध्यक्षता को आजीवन बडी कुशलता के साथ सँभाला था। आपका स्वर्गवास बम्बई में हुआ। आपके सुपुत्र श्री वीरचन्द भाई ने भी सघ का और कनफरन्स का कार्यभार निभाया।

कान्फ्रन्स के सातवें अधिवेशन के प्रमुख

दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया, बीकानेर

श्री सेठियाजी का जन्म सवत् १९२३ आश्विन शुक्ला अष्टमी को बीकानेर स्टेट के 'कस्तुरिया' नामक गाँव में हुआ था। आपके पिताजी का नाम धर्मचन्द्रजी था। आप चार भाई थे जिनमें से दो बडे—श्री प्रतापमलजी और अगरचन्दजी तथा एक श्री हजारीमलजी आपसे छोटे थे। अभी इनमें से आप ही मौजूद हैं।

श्री सेठिया जी ने शिक्षा सामान्य ही प्राप्त की। लेकिन आपने अनुभव से ज्ञान बहुत प्राप्त किया। आपको हिन्दी, अगरेजी, गुजराती और मारवाडी भाषाओ का अच्छा ज्ञान है। व्यवसाय का क्षेत्र प्रारम्भ में बम्बई और फिर स्वतत्र रूप से कलकत्ता रहा। जहाँ आपने अपना रग का कारोबार किया जिसमें आपने काफी प्रतिष्ठा तथा लक्ष्मी का भी उपार्जन किया। इससे पूर्व आप बम्बई में ५०० रु० सालाना पर काम करते थे, जहाँ आपने ६ वर्ष तक कार्य किया।

कलकत्ता में आपने 'दी सेठिया कलर एड केमीकल वर्क्स लिमिटेड' की स्थपना की एव उसको बडी योग्यता से चलाया। इस कारखाने में आपके बडे भाई श्री अगरचन्दजी भी बाद में भागीदार बन गये थे। इस कारखाने की आपने भारत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध नगरो—कानपुर, दिल्ली, अमृतसर, अहमदाबाद, बम्बई, मद्रास, कराची आदि स्थोनों में शाखाएँ खोलीं। जापान के प्रसिद्ध नगर ओसाका में भी आपकी शाखा थी।

स० १९७२ में आप भयकर बीमारी से ग्रस्त हो गये। कई उपचार किये, पर आराम न हुआ। अन्त में हौमियोपैथिक दवा से आपको आराम हुआ। तब से आपने अपना कारोबार समेटना शुरू किया और धार्मिक जीवन में अपना अधिक समय व्यतीत करने लगे। तभी से होमियोपैथिक दवाइयो के प्रति आपकी श्रद्धा जमी और उन्हीं दवाइयो का उपयोग करने कराने लगे। आज भी आप सैकडो व्यक्तियो को मुफ्त में यह दवा देते हैं।

स० १९७० में आपने सर्वप्रथम बीकानेर में एक स्कूल खोला। यहीं से आपका धार्मिक-जीवन आरम्भ होता है। स० १९७८ में आपके बडे भाई अगरचन्दजी बीमार हुए। उन्होंने आपको कलकत्ता से बुलाया और स्कूल के कार्य में वे भी सहयोगी बने। कन्या पाठशाला और लायब्रेरी को वृहदाकार देने का भी तय किया। स० १९७८ चैत्र कृष्ण ११ को श्री अगरचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। चार मास बाद आपके पुत्र उदयचन्द जो कलकत्ता में बीमार थे उनका भी स्वर्गवास होगया। अगरचन्दजी के कोई सन्तान न होने से आपने अपने बडे लडके श्री जेठमलजी को गोद दे दिया। श्री जेठमलजी बडे विनीत और मिलनसार प्रकृति के सज्जन हैं। सेठिया जैन पारमार्थिक सस्थाओ का कार्य अभी आप ही सँभाल रहे हैं। श्री सेठिया जी के चार लडके हैं—पानमलजी, लहरचन्दजी, जुगराजजी और ज्ञानमलजी। स० १९७८ में आपने चारो पुत्रो को सम्पत्ति का विभाजन कर अलग-अलग व्यवसाय में लगा दिया। सेठिया जैन पारमार्थिक सस्थाओ के लिये जो ध्रौव्य सम्पत्ति आपने तथा आपके बडे भाई श्री अगरचन्दजी ने व श्री जेठमलजी ने निकाली है, वह ४०५००० चार लाख पांच हजार रु० हैं। लायब्रेरी में जो पुस्तकें व शास्त्र आदि है वे इस सम्पत्ति से अतिरिक्त हैं।

श्री सेठियाजी का जीवन कर्मनिष्ठ जीवन रहा है वे आज भी ९० वर्ष की उम्र में नियमित कार्य करते हैं

और शास्त्र श्रवण करते रहते हैं। आप म्युनिसिपल कमिश्नर, म्युनिसिपेलिटी के वाइस प्रेसिडेन्ट, आनरेरी मजिस्ट्रेट आदि कोई सरकारी पदों पर कार्य करते रहते हैं। आप स्था०-जैन कोन्फ्रेन्स के ७ वें अधिवेशन के जो कि बम्बई में हुआ था, सभापति निर्वाचित हुए थे। बीकानेर में वुलन प्रेस भी आपने सचालित किया। इससे बीकानेर राज्य में ऊन या व्यवसाय की बहुत उन्नति हुई।

श्री सेठिया जी का मृदुल, मजुल स्वभाव, उनकी शात गम्भीर मुद्रा, उनका उदार व्यवहार आकर्षण की ऐसी वस्तुएँ हैं जो सामने वाले को प्रभावित कर लेती हैं। आप अभी निवृत्ति-जीवन व्यतीत कर रहे हैं और अपना समय शास्त्र-स्वाध्याय में ही लगा रहे हैं। स्था० जैन समाज पर सेठिया जी के अनेकविध उपकार हैं, उन सबका वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता। बीकानेर सघ के धर्मध्यान और सन्त सतियो के ठहरने के लिये आपने अपनी एक विशाल कोटडी भी दी हुई है जिसकी व्यवस्था व खर्च पारमार्थ ट्रस्ट द्वारा ही होता है। जिसकी रजिस्ट्री भी कराई हुई है।

पारमार्थिक सस्थाओं और स्थानक का परिचय सस्थाओ के परिचय में दिया गया है, जिससे पाठकगण विशेष रूप से जान सकेंगे।

कॉन्फरन्स के आठवें अधिवेशन के प्रमुख

श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह (अहमदाबाद)

श्री वाडीलालभाई का जन्म स० अहमदाबाद में हुआ था। आपके पिता श्री मोतीलाल भाई को साहित्य का बहुत शौक था। वे 'जैन-समाचार' नामक एक मासिक पत्र भी निकालते थे। श्री वाडीलाल भाई ने इस पत्र द्वारा बीस वर्ष की वय में ही अपने विचार जनता के सामने रखना आरम्भ कर दिया था। प्रारम्भ में उन्होने जैन-कथाओ को अपने ढग से लिखना शुरू किया था जो इतनी रसप्रद होती थी कि पाठक उनके पढने के लिये उत्सुक रहा करते थे। उनकी भाषा-शैली हृदयस्पर्शी और चित्ताकर्षक थी।

आपके पिता के अवसान के बाद आपने उनकी साहित्य प्रवृत्तियाँ सँभाल ली और उन्हें पूर्ण योग्यता से सचालित करते रहे।

आपकी पहली पुस्तक 'मधु मक्षिका' बीस वर्ष की उम्र में लिखी गई थी। इसके बाद 'हितशिक्षा' राजर्षि नमीराज', ससार में सुख कहाँ है' ? 'कबीर के पद', सम्यक्त्व नो दरवाजो', 'श्री दशवैकालिक सूत्र रहस्य' महावीर कहेता हता', 'पर्युपासना', 'मृत्यु के मुख में', 'जैन दीक्षा','मस्तविलास','पोलिटिकल गीता' ग्रन्थ प्रकाशित हुए थे जिनमें कई पुस्तको की तो २५ हजार प्रतियाँ तक बिकी थीं। जैन हितेच्छु, नामक मासिक पत्र आप लगातार ३० वर्ष तक निकालते रहे थे। यह पत्र प्राय सारा आप स्वय लिखते थे। इसमें ऐतिहासिक सामग्री के साथ-साथ जैन तत्त्वज्ञान का प्रधान निरूपण हुआ करता था। इस पत्र के अन्तिम दस वर्षों में इसके ५ हजार ग्राहक बन गये थे जिनमें हिन्दू, मुसलमान, पारसी आदि कौम के भी ग्राहक थे।

आप सिद्धहस्त निडर लेखक तथा वक्ता थे। एक लेख पर आपको सी० बी० गलियारा का एक हजार का इनाम भी प्राप्त हुआ था। आपका सारा साहित्य गुजराती भाषा में लिखा हुआ है। गुजराती भाषा के वे एक अजोड साहित्यकार थे।

'जैन समाचार' पत्र को मासिक के बजाय साप्ताहिक शुरू करके आपने समाज में नूतन रक्त-सचार किया। जैन समाचार में प्रकाशित समाचार पर आप पर विरोधी-पक्ष की तरफ से केस किया गया था, जिसमें आपको दो मास

की सादी कैद भी हुई थी। लेकिन आपने इस केस के लिये कोई वकील या बैरिस्टर नहीं किया था। जब आपको वकील करने के लिये कहा गया तो आपने उत्तर दिया कि किसी की सहायता से जीतना तो हारने से भी खराब है। जो मदद देना चाहे वे असहायो को और गायो को दें।

इन्होंने अपने पत्रो के लिए कभी किसी से मदद न ली। अपने व्यय से ही आप अपनी सब प्रवृत्तियाँ चलाते रहे।

आप कोन्फ्रेन्स के बीकानेर अधिवेशन के प्रमुख निर्वाचित हुए थे और कोन्फ्रेन्स के इतिहास में भी क्रांति की शुरुआत की थी। स्था० जैन समाज में जैन ट्रेनिंग कालेज की स्थापना में आपका भी महत्वपूर्ण भाग रहा था। साम्प्रदायिक भेद-भाव दूर करने के लिये भी आपने सक्रिय प्रयत्न किये। तीनो सम्प्रदायो के छात्र एक ही बोर्डिंग में रह कर उच्चाभ्यास कर सकें इसके लिये उन्होंने बम्बई और अहमदाबाद में एक सयुक्त जैन छात्रालय की स्थापना की थी। बम्बई का सयुक्त विद्यार्थीगृह आज भी प्रिन्सेसस्ट्रीट पीरभाई बिल्डिंग में और शीव में निजी भवन में चल रहा है। श्री वाडीभाई को समाज से काफी लोहा लेना पडा था। सामाजिक व धार्मिक रीति-रिवाजो पर भी उन्होंने कलम चलाई थी जिससे समाज के हर क्षेत्र में तूफान-सा खडा हो गया था। इतना विलक्षण और तत्वज्ञ होते हुए भी समाज ने उन्हे कुछ समय ठीक रूप से नहीं पहचाना। उन्हें जो सम्मान मिलना चाहिये था, वह उन्हे न मिल सका। वे आजीवन अपने विचारो पर दृढ बने रहे और अपना मिशन पूरा करते रहे। ता० २१-११-३१ को आपका स्वर्गवास हो गया। आपका सम्पूर्ण साहित्य समाज के सामने प्रकाशित रूप में आ सका होता तो उससे समाज को बहुत लाभ पहुँचता।

कॉन्फरन्स के नवम अधिवेशन अजमेर के प्रमुख

श्री हेमचन्दभाई रामजीभाई मेहता (भावनगर)

दुनिया में प्राय यह देखा जाता है कि जो व्यक्ति आगे जाकर बडा आदमी बनता है, प्रतिभाशाली व्यक्ति होता है, वह बचपन में अपने-आप ही अपनी प्रगति करता है। प्रतिकूल परिस्थिति में भी उसे अपने अनुकूल वातावरण बनाने में रस आता है। इतना वह धैर्यशाली और विश्वासी होता है।

अपनी समाज में जो व्यक्ति अपने आत्म-बल से आगे बढे है उनमें से एक हेमचन्द भाई भी हैं। श्री हेमचन्द भाई का जन्म काठियावाड में मोरबी में हुआ। आपके पिता श्री रामजी भाई मध्यस्थ स्थिति के गृहस्थ थे। आर्थिक स्थिति साधारण होने पर भी उन्होंने अपने पुत्र को उच्च शिक्षा प्रदान कराई। उस समय और आज भी कई लोग यह कहते हैं कि अग्रेजी पढे-लिखे व्यक्ति धर्म-कर्म में विश्वास नहीं रखते है। उनकी यह बात श्री हेमचन्द भाई के जीवन से असत्य सिद्ध होती है। आप काठियावाड के ख्यातिप्राप्त इन्जीनियरो में से एक हैं।

आप श्री दुर्लभजी भाई त्रिभुवन जौहरी के बाल-साथी हैं। दोनों ने स्था० समाज में अपनी सेवा देकर अपना नाम सदा के लिए अमर कर दिया।

आप भावनगर स्टेट की रेल्वे के इन्जीनियर और मैनेजर रह चुके हैं। आपकी कार्य-कुशलता की प्रशसा सर पटणी, वायसराय, कच्छ के राव, भोपाल के नवाब और मोरबी के ठाकुर साहब ने भी की है। आप जब इजीनियर के पद पर थे तब आप लोकप्रिय और राजमान्य व्यक्तियो में से थे।

प्रारम्भ में आपने १५० रु० मासिक पर ग्वालियर में सर्विस की थी, पर धीरे-धीरे उन्नति करते हुए आप भावनगर स्टेट के प्रमुख इन्जीनियर पद पर आरूढ हुए और १५०० रु० मासिक वेतन पाने लगे।

अजमेर साधु सम्मेलन के अवसर पर हुए कान्फ्रेंस के ऐतिहासिक अधिवेशन के आप अध्यक्ष मनोनीत हुए।

कान्फ्रेंस के प्रमुखपद पर रहकर आपने कई सामाजिक व धार्मिक प्रश्नो का दीर्घदृष्टिपूर्ण समाधान किया। जगह-जगह भ्रमण भी किया और अपनी सेवाएँ समाज को समर्पित कीं। कान्फ्रेंस के इतिहास में आपका नाम श्रमशील प्रमुखो में रहेगा, जिन्होने समाज के लिए काफी श्रम उठाया। अभी आप सर्विस से मुक्त हैं और बम्बई में अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

१०वें अधिवेशन घाटकोपर के प्रमुख

श्री वीरचन्दभाई मेघजीभाई थोभण

श्री वीरचन्द भाई का जन्म कच्छ में हुआ था। आप सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ मेघजी भाई के सुपुत्र थे। आपका प्रारम्भिक शिक्षण भी कच्छ में ही हुआ। बम्बई आकर आप छोटी उम्र में ही व्यापार-क्षेत्र में कूद पडे और अपने पिताश्री का सारा धन्धा सँभालने लगे। आपने अपनी कुशलता से व्यापार में अच्छा नाम कमाया।

आप गुप्त दान देना अधिक पसन्द करते थे। कई छात्रो को आप छात्रवृत्ति दिया करते थे। आपके पास से कोई भी निराश होकर नहीं जाता था। आपने बम्बई सघ को एक मुश्त ५१ हजार रुपये का दान दिया जिससे बम्बई सघ ने अपने कादावाडी स्थानक का नाम सेठ मेघजी थोभण जैन धर्म स्थानक, रखकर आपका सम्मान किया।

माटची पाजरापोल को आपने २५ हजार का उदार दान दिया।

आपकी धमपत्नी श्री लक्ष्मीबेन और सुपुत्र श्री मणिभाई भी सामाजिक प्रवृत्तियों में अच्छा रस लेते हैं।

आप कान्फ्रेंस के घाटकोपर अधिवेशन के प्रमुख हुए और बडी कुशलता से अधिवेशन को सफल बनाया। १ वर्ष के बाद आपने प्रमुखपद छोड दिया जिससे ऑफिस-प्रमुख के रूप में श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया को चुनना पडा। आपके बडे पुत्र श्री मणिलाल भाई हैं जो आपका कारोबार और सेवा-क्षेत्र को सँभाल रहे हैं जो कान्फ्रेंस के आज भी ट्रस्टी हैं।

कॉन्फरन्स के ११वें अधिवेशन के प्रमुख

श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर

श्री फिरोदिया का जन्म अहमदनगर में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री शोभाचन्दजी था। आप सन् १९०७ में पूना की फर्ग्युसन कालिज से ग्रेजुएट हुए थे। कालेज के दिनो से ही आप लोकमान्य तिलक के अनुयायी थे और कट्टर राष्ट्रवादी थे। आगे चलकर आपने एल-एल० बी० परीक्षा पास की और वहीं अपने शहर में वकालत आरम्भ कर दी। अपने इस धन्धे में भी उन्होने प्रामाणिकता से काम किया और काफी यश तथा धन कमाया। आप काग्रेस के मूक सेवक हैं। अहमदनगर जिले में आपका सम्मान प्रथम पक्ति के राष्ट्र-सेवक के रूप में है। सन् १९३६ में आप अपने प्रान्त की तरफ से एम० एल० ए० बनाये गए थे। इतना ही नहीं आप बम्बई धारा-सभा के स्पीकर भी निर्वाचित किये गए। इस पद पर आपने कई वर्षों तक जिस योग्यता से कार्य किया उसकी प्रशसा हरएक पार्टी के नेताओ ने की है। स्पीकर का कार्य बहुत टेढ़ा होता है, लेकिन आपने उसे बडी योग्यता से सँभाला। अहमदनगर की सुप्रसिद्ध आयुर्वेद रसशाला, लि० के आप प्रमुख हैं। अहमदनगर की म्युनिस्पैलिटी के वर्षों तक आप प्रमुख रहे हैं। कान्फ्रेंस के आप वर्षों तक प्रमुख रहे हैं। मद्रास के ग्यारहवें अधिवेशन के प्रमुख भी आप ही निर्वाचित किये गए थे। यह अधिवेशन कान्फ्रेंस का अद्भुत अधिवेशन था जिसमें कई एक जटिल प्रश्नो उपस्थित हुए थे, जिनका निराकरण

करना आप जैसे सुयोग्य प्रमुख का ही काम था। यही कारण था कि यह अधिवेशन पिछले सभी अधिवेशनों से महत्व-पूर्ण रहा।

आपने अपनी ६३ वर्ष की जन्म-गाँठ पर ६३ हजार रु० का दान देकर एक ट्रस्ट कायम किया है।

आपके प्रमुख पद पर रहते हुए कान्फ्रेंस ने भी कई उल्लेखनीय कार्य किये। सघ-एक्य योजना की शुरुआत और उसे सफलता के साथ आपने ही पूरी की।

कॉन्फरन्स के १२वें अधिवेशन के प्रमुख

सेठ चम्पालालजी बाठिया, भीनासर

सेठ श्री चम्पालाल जी बाठिया के नाम से समाज परिचित है। आप भीनासर (बीकानेर) के निवासी हैं। आपके पिताजी का नाम श्री हमीरमल जी बाठिया था। प्रकृति से विनोदशील, सुस्पष्टवक्ता, मिलनसार, निरभिमानी और उदार हैं। आपका उत्साह भी अपूर्व है। जिस किसी कार्य में जुटते हैं अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ जुट पडते हैं। समाज-सेवा का उत्साह भी प्रशसनीय है। रूढियो की गुलामी आपने कभी पसन्द नहीं की और जब भी अवसर आया सदैव उन्हें ठुकराया।

शिक्षा के प्रति आपका गाढ अनुराग है। आप जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला, जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ और जैन गुरुकुल, ब्यावर के वार्षिक उत्सवो की अध्यक्षता कर चुके हैं। भीनासर में स्थापित श्री जवाहर विद्यापीठ के मन्त्री तथा सचालक आप ही हैं। भीनासर में आपने अपने पिताजी के नाम पर श्री हमीरमल बालिका विद्यालय की स्थापना की जिसे आप अपने व्यय से चला रहे हैं। इसके सिवाय समाज की अन्य सस्थाओ को भी आपकी तरफ से समय-समय पर सहयोग मिलता रहता है।

व्यापारिक दृष्टिकोण भी आपका उल्लेखनीय है। जिस व्यापार से देश की कमी दूर कर उसको लाभ पहुँचाया जा सके वही व्यापार आप करना ठीक समझते हैं। कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई और बीकानेर में आपके बडे-बडे फार्म चल रहे हैं।

श्री बाठिया जी का साहित्य-प्रेम भी प्रशसनीय है। विद्वानो का आदर-सम्मान भी आप बहुत करते हैं। आपने स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० के व्याख्यान 'जवाहर किरणावली' के रूप में कई भाग में प्रकाशित किये हैं। स्था० जैन समाज में यह साहित्य अनूठा है।

आप बीकानेर की लेजिस्लेटिव असेम्बली के एम० एल० ए० भी रह चुके हैं। एसेम्बली के मेम्बर रहते हुए आपने बाल दीक्षा प्रतिबन्ध बिल उपस्थित किया था, जिसके कारण रूढिवादियो में खलबली मच गई थी।

उदारता आपको अपने पिताजी से विरासत में मिली थी। आपके पिताजी ने लाखो रु० का गुप्त और प्रकट दान दिया था। आपने भी अपने जीवन में अनेक बार बडी-बडी रकमें दान की हैं और करते रहते हैं। एक प्रसग पर आपने एक मुश्त ७५ हजार रु० का दान दिया।

आप कान्फ्रेंस के बारहवें अधिवेशन के जो कि सादडी (मारवाड) में हुआ था, प्रमुख निर्वाचित किये गए थे। तब से आप कान्फ्रेंस के प्रमुखपद पर कार्य कर रहे है। आपकी धर्मपत्नी श्री ताराबेन भी स्त्री-सुधार की प्रवृत्तियो में बडे उत्साह से भाग लेती रहती हैं।

१३वें अधिवेशन, भीनासर के अध्यक्ष

श्री विनयचन्द्रभाई दुर्लभजी भाई जौहरी, जयपुर

धर्मवीर स्व० दुर्लभजी भाई के पांच पुत्रो में से—श्री विनयचन्द्र भाई, श्री गिरधरलाल भाई, श्री ईश्वरलाल भाई, श्री शान्तिलालभाई और श्री खेलशकर भाई—आप सबसे बडे पुत्र है। आपका जन्म सन् १९०० में हुआ। मैट्रिक तक शिक्षा ग्रहण कर आपने व्यावसायिक कार्य सँभाल लिया। आप प्रतिदिन १२ घण्टे तक काम करने वाले और बारीकी से जाँच करने वाले है। आप अब तक १०-१२ बार व्यापारिक कार्यों को लेकर अमेरिका और योरुप घूमकर आये है। आपने अपने हाथो से लाखो रुपये कमाये तथा खर्च किये है और समय-समय पर हजारो का दान किया है। आज इस समय भी आपकी कार्यशक्ति और प्रतिभा अद्भुत है।

स्व० धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई ने व्यवसाय तथा इतर समस्त कार्यो का दायित्व आपको देकर स्थानकवासी जैन समाज को अपना जीवन सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। सन् १९४२ से श्री विनयचन्द्रभाई तथा श्री खेलशकर भाई ने 'आर० वी० दुर्लभजी' के नाम से जवाहरात का व्यापार विकसित किया। अपनी व्यवस्था, कार्य-कुशलता, सच्चाई, प्रामाणिकता और कार्य-शक्ति से आज जयपुर में अपना सर्वप्रथम स्थान बना लिया है।

अपने पिताश्री के स्वर्गवास के पश्चात् सार्वजनिक जीवन का भार भी आपको वहन करना पडा। श्री जैन गुरुकुल शिक्षण सघ, ब्यावर के प्रमुख और ट्रस्टी बने, कान्फ्रेंस की प्राय प्रत्येक जनरल कमेटी और अधिवेशनो में आप उपस्थित रहे और प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में काम किया। जयपुर के श्री सुबोध जैन हाईस्कूल को आपने कालिज बनवाया। जयपुर के रोटरी क्लब और चेम्बर ऑफ कामर्स के आप अध्यक्ष हैं।

इसके साथ ही जयपुर की गुजराती समाज के प्रमुख बनने के पश्चात् गुजराती स्कूल के लिए ५,००० गज जमीन की व्यवस्था कराई तथा भारत के गृहमन्त्र सरदार वल्लभभाई पटेल के हाथो से शिलान्यास कराकर उसके लिए मकान बनवा दिया तथा हजारो का फड भी एकत्रित कर दिया।

आप व्यापारिक जगत् में प्रतिष्ठित व्यापारी और सामाजिक क्षेत्र में प्रमुखतम कार्यकर्ता है। राजकीय क्षेत्र में आपकी सर्वत्र पहुँच है। धर्म के प्रेमी, उदार दानी और सन्त-मुनियो के भक्त श्री विनयचन्द्रभाई सत्यत स्थानकवासी समाज के गौरव हैं। आपकी सादगी, सरलता, परोपकारी उदारवृत्ति और गुप्त सहायता आपके अप्रतिम गुण हैं। आपके एक पुत्र तथा दो कन्यायें हैं।

श्री अखिल भारतीय श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के भवन की प्रगतिशील योजना का मगल-मुहूर्त श्री विनयचन्द्र भाई और श्री खेलाशकरभाई ने ५१,०००) भर कर किया। यह है आपका उदार दिल और समाज की प्रगति के लिए ज्वलत दृष्टात।

समाज के बालको को आप ऊँची शिक्षा में जाते हुए देखना चाहते हैं। यही कारण है कि समाज के कॉलेज का शिक्षण लेने वाले छात्रो को कान्फ्रेंस के मार्फत आप अपनी तरफ से प्रतिवर्ष ३,०००) की छात्रवृत्तियाँ देते हैं। श्री नरेन्द्र बालमदिर की जयपुर में स्थापना कर बच्चो के लिए शिक्षण की व्यवस्था की है।

लक्ष्मी-सम्पन्न होकर भी आप विचार-सम्पन्न हैं और यही कारण है कि आप द्वारा अर्जित लक्ष्मी का समाजहित में अधिकाधिक उपयोग हो रहा है। शासनदेव आपके जीवन को और आप के परिवार को और अधिक सुसमृद्ध बनावे ताकि आपकी समृद्धि से समाज एव देश और और अधिक समृद्ध और लाभान्वित हो।

कॉन्फरन्स अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

कॉन्फरन्स के दूसरे अधिवेशन, रतलाम के स्वागताध्यक्ष

श्री अमरचन्दजी सा० पितलिया, रतलाम

आपका जन्म स० १६०० में हुआ। आपके पिताजी का नाम सेठ वरदीचन्दजी था जो 'लाल वाले' के नाम से प्रसिद्ध थे। तत्कालीन प्रचलित शिक्षा प्राप्त करके आपने व्यवसाय का कार्य सँभाल लिया। विचक्षणतापूर्वक व्यवसाय करते हुए आपने सम्पत्ति के साथ-साथ प्रतिष्ठा भी अर्जित की। जाति-समाज में तथा सुदूर तक आपका बडा सम्मान था। रतलाम-नरेश ने प्रसन्न होकर आपको सेठ की पदवी दी एव दरबार में बैठक प्रदान की थी। इसके अतिरिक्त दरबार की तरफ से हाथी-घोडे तथा पालकी प्रदान कर आपके प्रति राज्य की तरफ से सम्मान प्रकट किया। ऐसा सम्मान रियासतो में बहुत कम व्यक्तियो को मिलता है। आपका धार्मिक ज्ञान बहुत विशाल था। बाहर गाँव से धार्मिक-सैद्धान्तिक प्रश्न आपके पास आया करते थे। इनके उत्तर प्रश्नकर्ताओ को इस खूबी से मिलते कि वे सतुष्ट ही नहीं किन्तु आपकी इस अलौकिक प्रतिभा से आश्चर्य-चकित हो जाते थे। आपकी उत्पादिका बुद्धि बडी ही तीव्र थी। सुप्रसिद्ध आचार्यों की सेवा करते एव उनसे ज्ञान-चर्चा करने में आपको बडा ही आनन्द मिलता था।

आपने रतलाम में धार्मिक पाठशाला एव दयापौषध सभा की स्थापना की—जो अब तक चल रही है। आप जब मोरवी कान्फ्रेस में पधारे तब राजकोट के प्रसिद्ध राय बहादुर सा० आपके अनुभवो को देखकर दग रह गये और आपको 'गुरुजी' के रूप में सम्बोधित करने लगे। आपकी मालवा-मेवाड के सुप्रसिद्ध श्रावको में गणना होती थी। जीवन के पिछले भाग में मकान-दुकान का काम अपने पुत्र के हाथो में देकर अपना अमूल्य समय धर्मध्यान तथा ज्ञान-चर्चा में लगाते और अपने कुटम्बियो को हित-शिक्षा देते थे। स० १६७१ में आपका स्वर्गवास हुआ, किन्तु आज भी आपकी कीर्ति लोगो के हृदयो पर अकित है।

श्री वरदभाणजी सा० पितलिया, रतलाम

आपका जन्म स० १६३७ में हुआ। आप श्रीमान् सेठ अमरचन्दजी सा० के सुपुत्र थे। आप बड़े ही कार्य-कुशल सेवाभावी एव परिश्रमी थे। आपने कई सस्थाओं के अध्यक्ष एव मत्री रहकर उनका सुयोग्यतापूर्वक सफल सचालन किया। आप ही के भगीरथ प्रयत्नों के फलस्वरूप कान्फ्रेस का द्वितीय अधिवेशन रतलाम में हुआ और यशस्वी बना। यो आप मितव्ययी थे किन्तु स० १६६३ एव १६७१ का पूज्य श्री श्रीलालजी म० सा० का चातुर्मास, पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की युवाचार्य पदवी और स० १६७६ एव १६६२ के चातुर्मास में आपने दिल खोलकर खर्च किया। राज्य में भी आपकी बहुत अधिक प्रतिष्ठा थी। रतलाम नरेश आपको समय समय पर बुलाते और कई बातों में आपसे सलाह लिया करते थे।

यो आपका घराना सदा से ही लब्धप्रतिष्ठ रहा है। आपने अपने समयोचित एव सुयोजित कार्यों से अपनी परम्परा को और अधिक उज्ज्वल बनाया। आपका धार्मिक ज्ञान एव क्रिया की रुचि अत्यन्त प्रशसनीय थी। जैन ट्रेनिग कालेज के आनद् मत्री और जैन हितेच्छु श्रावक मडल के आप अध्यक्ष थे। धार्मिक भावनाओ तथा धार्मिक प्रवृत्तियो के आप चस्त आराधक थे। ससार के आवश्यक कार्यों को छोडकर समय-समय पर धार्मिक क्रियाएँ आप बराबर करते रहते थे। आपको १०० थोकडे और कई बोलो का ज्ञान कठस्थ था। जैन सिद्धान्तो के चिन्तन, मनन तथा वाचन में आप लगे रहते थे।

पिछली आयु में अनेक प्रकार की आपत्ति-विपत्ति आने पर भी आपने अपनी धीरता की वृत्ति का त्याग नहीं किया। झूठ से आपको घृणा थी। इस प्रकार इस धर्म-परायण, व्यवसाय-कुशल, सुश्रावक एवं आराधक का स० १६६६ में स्वर्गवास हुआ।

पाँचवें अधिवेशन, सिकन्द्राबाद के स्वागताध्यक्ष

राजा बहादुर सुखदेव सहायजी, जौंहरी हैदराबाद का परिचय

पटियाला राज्य में महेन्द्रगढ नामक एक नगर है। जहाँ सेठ नेतराम जी जैन अग्रवाल नामक सद्गृहस्थ रहते थे। आप स्थानकवासी पूज्य श्री मनोहरदासजी म० की सम्प्रदाय के अग्रगण्य सुश्रावक थे। सवत् १८८८ पौषकृष्णा ६ को आपके एक पुत्ररत्न हुआ, जिसका नाम रामनारायणजी रखा गया। रामनारायणजी योग्य वय में व्यापारार्थ हैदराबाद (दक्षिण) गये और वहाँ अपनी चतुरता से लाखो रुपयो का उपार्जन किया। हैदराबाद के धनीमानी व्यापारियो में आप अग्रगण्य माने जाते थे। आपको निजाम सरकार ने अपना मुख्य जौहरी नियुक्त किया। आपके कोई सन्तान न थी अत आपने सुखदेवसहायजी को दत्तक ग्रहण किया। श्री सुखदेवसहायजी का जन्म संवत् १६२० पौषकृष्णा १५ को हुआ था। आप भी अपने पिता की तरह बडे उदार हृदय वाले थे। निजाम सरकार के यहां आपने पिताजी से भी अधिक आदर प्राप्त किया। स० १६७० में निजाम सरकार ने आपको राजा बहादुर की उपाधि से समलंकृत किया। आप बडे ही दयालु एव शान्त प्रकृति के सज्जन थे। कितने ही भाइयों की दयनीय दशा को देखकर आपने हजारों रुपयो का ऋण माफ कर दिया था।

इन्हीं दानवीर सेठ सुखदेवसहायजी के घर श्रावण कृष्णा १ सवत् १६५० को एक पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ जिसका नाम ज्वालाप्रसादजी रखा। जब आपको लेकर सेठ सुखदेवसहायजी निजाम सरकार के दरबार में गये तो नवाब साहिब ने प्रसन्न होकर जेब-खर्च के लिये १०० रु० मासिक राज्य कोष से देने का फरमान जारी किया था।

स० १६६३ में ऋषि-सम्प्रदाय के तपस्वी मुनि श्री केवल ऋषिजी तथा अमोलक ऋषिजी म० यहाँ (हैदराबाद) पधारे। सेठ सुखदेवसहायजी ने मुनि श्री की सेवा में अच्छी दिलचस्पी ली। आपने कई पुस्तकें अपनी तरफ से प्रकाशित कराई और अमूल्य वितरण कीं। इस समय हैदराबाद में तीन दीक्षाएँ हुई, जिसका सारा व्यय भी आपने ही उठाया।

सवत् १६७० में आपने ही स्था० जैन कान्फ्रेंस का पाँचवा अधिवेशन सिकन्दराबाद में कराया था, जिसका समस्त खर्च सेठ सुखदेवसहायजी ने दिया। उस समय आपने ७ हजार रुपये जीवदयाफंड में प्रदान किये थे। साथ ही धार्मिक साहित्य प्रकाशन के लिये ५००० की लागत का एक प्रेस भी कान्फ्रेंस को दिया था, जो सुखदेवसहाय जैन प्रिंटिंग प्रेस के नाम से अजमेर में और बाद में इन्दौर भी चलता रहा था।

पूज्य अमोलक ऋषिजी म० की प्रेरणा से आपने शास्त्रोद्धार का भी महान् कार्य किया। लेकिन आप अपने जीवन में इस कार्य को पूर्ण हुआ नहीं देख सके। सवत् १६७४ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके बाद सारा भार ज्वालाप्रसादजी पर आ पडा, जिसे आपने बखूबी निभाया। अपने स्व० पिताजी का प्रारम्भ किया हुआ शास्त्रोद्धार का कार्य चालू रखा और पूज्य अमोलक ऋषिजी द्वारा हिन्दी अनुवाद किये हुए आचाराग आदि ३२ सूत्र 'लाला जैन शास्त्र-भंडार' के नाम से स्थान-स्थान पर अमूल्य वितरण किये, फलस्वरूप आज गाँव-गाँव में शास्त्रभंडार है। शास्त्रोद्धार के कार्य में ४२००० रु० व्यय हुए थे।

सेठ ज्वालाप्रसादजी भी अपने पिताश्री की तरह बडे उदार-हृदयी सज्जन थे। कितने ही असहाय गरीब मनुष्यों का आपकी तरफ से पालन-पोषण होता था।

जिनेन्द्र गुरुकुल पचकूला के विशाल भवन की नींव सवत् १९८५ माघ शुक्ला १३ के दिन आपही के कर-कमलो से डाली गई। उस समय आपने गुरुकुल के स्थायी फड में १,१०० रुपये प्रदान किये थे। बाद में ७ हजार रुपयो की लागत से अपने पूज्य पिताजी के स्मृति में 'साहित्य भवन और सामाजिक भवन' का दो मजिला भव्य भवन बनाकर गुरुकुल को भेंट किया था। इसके बाद गुरुकुल को ६०० रु० की जमीन और खरीद कर दी और वहाँ अध्यापको के लिए मकान बनवाने के लिये २,५०० रु० का दान दिया था। गुरुकुल का यह स्थान आपको इतना अधिक पसद आया कि आपने यहाँ ११०० रु० में जमीन खरीदकर अपने लिये एक कोठी बनवाई। आपकी इन आदर्श सेवाओ से प्रसन्न होकर जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला के चतुर्थ वार्षिकोत्सव पर उपस्थित जैन समाज ने आपको 'जैन समाज भूषण' की उपाधि से विभूषित किया था।

स० १९८८ में फाल्गुन कृष्णा ५ को महेन्द्रगढ में पूज्य श्री मनोहरदासजी म० की सम्प्रदाय के शान्तस्वभावी वयो० मुनि श्री मोतीलालजी म० को श्रीसघ की ओर से आचार्य पदवी दी गई थी। इस महोत्सव का सारा खर्च आपने ही उठाया था।

स० १९८९ ज्येष्ठ सुदी १२ को इन्दौर में ऋषि सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध शास्त्रोद्धारक प० मुनि श्री अमोलक ऋषिजी म० को श्री सघ की तरफ से जो पूज्य पदवी दी गई थी उसमें भी आपका उल्लेखनीय भाग रहा। ऋषि श्रावक समिति की स्थापना के समय आप उसके सरक्षक और प्रमुख निर्वाचित हुए। इसी समय जैन गुरुकुल, ब्यावर के निजी भवन के लिये अपील की जाने पर आपने गुरुकुल को २५०१ रु० की सहायता प्रदान की। आप कान्फ्रेंस के नववें अधिवेशन के जो कि अजमेर में साधु सम्मेलन के साथ सम्पन्न हुआ था, स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए थे।

आप उदारता के पूरे धनी थे। आपकी तरफ से तीन लाख रुपये से अधिक का दान हुआ। आप अगर धन-राशि के स्वामी होते हुए भी अतीव नम्र, विनयी एव शान्त प्रकृति के है। आपके दो पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। बडे पुत्र का नाम माणिकचन्द और छोटे का नाम महावीरप्रसाद है। आप भी अपने पिता की तरह ही धर्म प्रेमी और उदार स्वभाव वाले हैं।

आपका व्यवसाय हैदराबाद (दक्षिण) में बैंकर्स का और कलकत्ता (लिलुआ में आर० बी० एस० जैन रब्बर मिल्स के नाम से चल रहा है।) आपका स्वर्गवास दिल्ली में हुआ। आपकी धर्म पत्नी जी बहुत धर्मनिष्ठा और उदार हैं। आपके बडे पुत्र माणिकचन्दजी का स्वर्गवास हो गया है और वर्तमान में राजा महावीर प्रसादजी कलकत्ता में रहकर सब कारोबार सँभाल रहे हैं।

श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स के ९वें अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

सेठ ज्वालाप्रसादजी जौहरी

आप राजा बहादुर दानवीर सेठ सुखदेवसहाय जी के सुपुत्र थे। आपका जन्म श्रावण कृष्ण १ स० १९५० में हुआ था। आपके पिताजी ने शास्त्रोद्धार का कार्य प्रारम्भ किया था, लेकिन दुर्भाग्य से वे अपने सामने उसे पूरा हुआ न देख सके। उस कार्य को आपने पूरा किया। बत्तीस सूत्रों को पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० कृत हिन्दी अनुवाद सहित छपाकर आपने स्थान-स्थान पर अमूल्य वितरण किया। इस शास्त्रोद्धार के कार्यों में आपने ४२००० रु० खर्च किये।

आपका हृदय बडा कोमल और उदार था। दीन-असहायो का दुख आप देख नहीं सकते थे। प्रतिवर्ष सर्दी में आप गरीबो को कम्बल बाँटा करते थे। आपकी जन्मभूमि महेन्द्रगढ में आपने दानशाला (सदाव्रत) भी खोल रखी थी।

जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला आपके सहयोग से ही फूला-फला। आपने इनके लिये जमीन दी और मकान भी बनवा दिये। बाद में भी समय-समय पर सहयोग देते रहे। सामाजिक सेवाओं के उपलक्ष में आपको समाज ने 'समाज भूषण' की पदवी प्रदान की थी।

कान्फ्रेंस के अजमेर अधिवेशन के आप स्वागताध्यक्ष थे। आपने अपने जीवन में लगभग ४ लाख रुपयों का दान किया।

आपने आर० बी० एन० रबर मिल की भी स्थापना की जिसमें रबर का सामान, टायर आदि बनते हैं और इस मिल में लगभग ८०० आदमी काम करते हैं। अन्तिम समय में आपने १० हजार का दान दिया था। सन् ३६ में आपका स्वर्गवास महेन्द्रगढ़ में ही हुआ।

बीकानेर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

श्री मिलापचन्दजी बैद, झाँसी

आपका जन्म सं० १८५३ के वैशाख मास में हुआ। आप झाँसी के प्रतिष्ठित सेठ श्रीमान् गुलाबचन्दजी बैद मेहता के इकलौते पुत्र हैं। लगभग ६० वर्षों से आप झाँसी में रह रहे हैं। इससे पूर्व आपके पूर्वज बीकानेर में रहते थे। बीकानेर राज्य-शासन से आप के बैद परिवार का घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। बीकानेर की ओसवाल समाज में बैद परिवार को जो राजकीय मान-सम्मान प्राप्त हुआ है। वह दूसरों को नहीं मिला। आपके वंशज—सालमसिंहजी, अमरोजी, ठाकुरसिंहजी, मूलचन्दजी, अमीचन्दजी, हरिसिंहजी, रूपचन्दसिंहजी और छोगमल जी विशेष उल्लेखनीय हैं, इनमें से कई तो बीकानेर राज्य के दीवान रहे हैं और बीकानेर राज्य की उन्नति में उनका विशेष हाथ रहा है।

आपके पिता श्री गुलाबचन्दजी बैद बीकानेर से झाँसी में गोद आये थे। तब से आप वहीं बस गये हैं।

आप झाँसी के प्रथम श्रेणी के जमींदारों में से हैं। युद्ध के समय में आपने सरकार की बड़ी मदद की थी। आप झाँसी के म्युनिस्पिल कमिश्नर भी रहे। आनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मानित पद पर भी रहे।

स्था० जैन कांफ्रेंस के आठवें अधिवेशन के जो कि बीकानेर में हुआ था उसके आप स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए थे।

घाटकोपर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

सेठ वनजीभाई देवजी, घाटकोपर

श्री वनजी भाई का जन्म सन् १८८६ में कच्छ-मुंद्रा में हुआ। आप बीसा ओसवाल थे। आपकी शिक्षा बम्बई में हुई थी और वहीं आपने हाईस्कूल तक अभ्यास किया। सन् १९०६ में आप रंगून गये और वहाँ चावल का व्यापार किया। इसमें आपने अपनी योग्यता से अच्छी सफलता प्राप्त की।

रंगून से आप वापिस बम्बई आये और अनाज रुई, शेयर, सोना, चाँदी आदि बाजारों में बड़े पैमाने पर व्यापार आरम्भ किया। कुछ ही अर्से में आप बम्बई में 'कच्छ शाह सौदागर' के रूप में प्रसिद्ध हो गये। सींगदाणा (मूंगफली) बाजार के तो आप 'राजा' कहे जाते थे। व्यापारी-मंडल के आप प्रमुख थे। शक्ति सिल्क मिल तथा ऐम्ब्रेला कॉटरोल लिमिटेड के आप डायरेक्टर थे। स्था० जैन संघ के आप प्रमुख तथा ट्रस्टी थे।

श्री वनजी भाई सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी बड़ी उदारता से भाग लेते थे। घाटकोपर राष्ट्रीयशाला को इन्होंने ५१,००० रुपये प्रदान किये थे। स्थानक जैन पौषधशाला के लिए १५ हजार की कीमत की जमीन,

श्रावकाश्रम के लिए १६ हजार रु० नकद तथा ४ हजार रु० की जमीन दान में दी थी। कान्फ्रेंस के घाटकोपर अधिवेशन के आप स्वागत-प्रमुख थे। पूना वोर्डिंग फंड में आपने ५ हजार रु० प्रदान किये थे। कई छात्रो को आप छात्रवृत्तियाँ भी देते रहते थे।

आप स्वभाव से बडे शान्त और मिलनसार थे। रहन-सहन सादा था। तारीख १७-२-४४ को ५८ वर्ष की उम्र में आप अपने पीछे एक धर्मपत्नी ६ पुत्र व दो लडकियाँ छोडकर स्वर्गवासी हुए।

कॉन्फरन्स अधिवेशन, मद्रास के स्वागताध्यक्ष

सेठ मोहनमलजी चौरडिया, मद्रास

श्रीमान् सेठ मोहनमलजी चौरडिया का जन्म नोखा (मारवाड) में स० १९५९ भाद्रपद वदी ८ को हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री सिरेमल जी चौरडिया था। आप श्री सोहनमलजी चौरडिया, मद्रास, के गोद गये श्री अगरचन्द मानमल मद्रास की प्रसिद्ध फर्म है जिसके आप मालिक हैं। आपके दादा श्री अगरचन्द जी सवत् १८४७ में पैदल चलकर मारवाड से मद्रास आये थे। आपसे पूर्व तीन पीढी में इस फर्म का मालिक दत्तक पुत्र ही हुआ। आपके आने पर इस फर्म की उन्नति भी हुई और प्रतिष्ठा में भी वृद्धि हुई। आपके ५ पुत्र और २ पुत्रियाँ अभी वर्तमान हैं। आपका स्वभाव बडा सरल है। मृदुता, सज्जनता और मिलनसारिता आपके मुख्य गुण हैं। एक सम्पन्न परिवार में रहते हुए भी आप बडे सीधे-सादे और सरल व्यक्तित्व वाले हैं। आपने अपने हाथो से लाखो रुपये कमाये और लाखो का दान दिया है। सन् १९४० में जब मारवाड में दुष्काल था, तब आपने अपनी तरफ से २० हजार रुपये खर्च कर लोगो, को विना मौत मरने से बचाया था और उन्हें खाने को अनाज दिया था। आपकी इस दानवृत्ति से खुश होकर उस समय महाराजा जोधपुर ने आपको पालकी और सरपाव भेंट स्वरूप प्रदान किये थे। आपकी तरफ से विक्रम स० १९८८ से कुचेरा में दानशाला चल रही है। सामाजिक कुरीतियो को दूर करने के आप बडे हिमायती रहे हैं। आपने सेठ श्री मोहनमल जी का मौसर न कर २० हजार रुपये का दान दिया और कुचेरा में एक डिस्पेंसरी की स्थापना की।

सन् १९४४ में आपने अगरचन्द मानमल बैंक की शुरुआत की, जो आज मद्रास में एक प्रतिष्ठित बैंक मानी जाती है। आपने स्थानीय बोर्डिंग स्कूल, हाईस्कूल, कालेज आदि सामाजिक प्रवृत्तियो में लगभग ५ लाख रुपये का दान दिया है। सन् १९४७ में आपने अगरचन्द मानमल चैरिटी ट्रस्ट के नाम से ५० हजार का एक ट्रस्ट भी किया है।

मद्रास सघ के आप सघपति हैं। सतो की सेवा आप तहदिल से करते हैं। धर्म के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा है। कान्फ्रेंस के ११वें अधिवेशन के आप स्वागत-प्रमुख बने थे। मद्रास प्रान्त में आपके सात-आठ गाँव जमीदारी के हैं। मद्रास ओसवाल समाज में 'बडी दुकान' के नाम से आपकी फर्म प्रसिद्ध है। कई धार्मिक तथा सामाजिक सस्थाओं के आप सहायदाता हैं।

श्री दानमलजी वलदोटा, सादडी

आप सादडी (मारवाड) के निवासी और पूना के प्रसिद्ध व्यवसायी हैं। सादडी अधिवेशन के आपही स्वागताध्यक्ष थे। आपके दोनो भाई—श्रीफूटरमलजी वलदोटा और श्री हस्तीमलजी वलदोटा व्यवसाय में सम्मिलित रूप से पूना की तीनो दुकानें सभाल रहे हैं। आप तीनो भाइयो की तरफ से साधु-सम्मेलन और अधिवेशन के लिये १५, १११) का आदर्श दान दिया गया था। इसके अतिरिक्त आपके बडे भाई श्रीमान् नथमलजी राजमलजी वलदोटा ने श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल सादडी को ३१ हजार रुपये प्रदान किये थे।

श्री दानमलजी सा० और आपका बनदोठा-परिवार समाज के लिये एक आदर्श परिवार है जो कमाना भी जानता है और लक्ष्मी का वास्तविक उपयोग करना भी जानता है। समाज अपने इस उत्साही परिवार के प्रति हर्ष एवं गौरव प्रकट करता है।

श्री जयचन्दलालजी रामपुरिया, स्वागताध्यक्ष

बीकानेर के प्रसिद्ध रामपुरिया परिवार के श्रीमान् सेठ जयचन्दलालजी रामपुरिया राष्ट्र उत्थान के कार्य में सक्रिय रुचि रखने वाले नवयुवक हैं। अपने बहुविस्तृत कल-कारखानों और वाणिज्य-व्यवसाय का कार्यभार सम्भालते हुए भी आप जनहितकारी विभिन्न कार्यों में समय और धन लगाते हैं। हाल ही में आपने अपने पिता और पितामह की पावन स्मृति में बड़ी धनराशि निकालकर आधुनिक प्रणाली का शिक्षालय गंगाशहर—बीकानेर में चालू किया है।

औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्र में श्री जयचन्दलालजी कलकत्ता के सुप्रसिद्ध फर्म हजारीमल हीरालाल के साझेदार हैं। इसके अतिरिक्त आप रामपुरिया काटन मिल लि०, बीकानेर जिप्सम्स लि०, रामपुरिया ब्रादर्स लि०, रामपुरिया प्रोपर्टीज लि० आदि के सक्रिय डायरेक्टर हैं।

स्व० धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई का जीवन-परिचय

सौराष्ट्र प्रान्तान्तर्गत (मोरवी) में आपका शुभ जन्म १९३३ की चैत्र वदी त्रयोदशी (गुजराती) को श्रीमान् त्रिभुवनदास भाई झवेरी के सुप्रतिष्ठित कुटुम्ब में धर्मपरायण श्रीमती मानकी बाई की कुक्षि से हुआ। अमूल्य रत्नों के परीक्षक धर्मनिष्ठ माता-पिता ने दुर्लभरत्न 'दुर्लभ' को प्राप्त कर जीवन को धन्य माना।

धर्म प्रभावक परिवार के धार्मिक संस्कार बाल्यावस्था में ही आपके जीवन में झलकने लगे थे। धार्मिक-शिक्षण के साथ-साथ गुजराती तथा अंग्रेजी का शिक्षाक्रम बराबर चलता रहा। ८ वर्ष की लघुवय से ही आप में अतिथि सत्कार, असहायों के प्रति सहानुभूति गुरुभक्ति, धर्मश्रद्धा तथा सहपाठियों के प्रति स्नेहभाव एवं विनोद-प्रियता आदि-आदि सद्गुणों का विकास होने लगा। आप में वक्तृत्व-शक्ति लेखन कला, नयी बात सुनने, सीखने तथा उन पर मनन करने की हार्दिक वृत्ति जागृत हो चुकी थी।

उस समय की प्रचलित रूढ़ि के अनुसार आपका भी अल्पायु में ही श्रीमती मंतोकबाई के साथ शुभ लग्न कर दिया गया। विवाह के पश्चात् अध्ययन-क्रम छूट गया। अब आपको अपने खानदानी व्यवसाय में लगा दिया गया। अपनी तीव्र बुद्धि तथा प्रतिभा से सन् १९११ में जयपुर में 'मोरानी अमोलख' के नाम से फर्म की स्थापना की और अपनी विचक्षणता एवं दीर्घदर्शिता के फलस्वरूप अर्थलाभ की अभिवृद्धि के साथ प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि भी प्राप्त कर ली। सद्निष्ठा और प्रामाणिकता ही आपके व्यापारिक जीवन का लक्ष्य रहा। लघुभ्राता श्री मगनलाल भाई के कलकत्ता में प्लेग की बीमारी से अवसान हो जाने से आपके हृदय पर बड़ा आघात पहुँचा और इससे सुपुत्र धर्म भावना जागृत हो उठी। कौटुम्बिक बन्धनों से शीघ्र छुटकारा पाने के लिये आपने अपने लघु भ्राता श्री छगनलाल भाई से पृथक् होकर सम्वत् १९७८ में जयपुर में 'दुर्लभजी त्रिभुवन झवेरी' नाम से नई फर्म की स्थापना कर ली। किन्तु आ. स्नेह पूर्ण रूप से कायम रहा। ज्यों-ज्यों व्यापार का विस्तार बढ़ता गया त्यों-त्यों लक्ष्मी भी आपके चरणों की चेरी बनती गई।

आपके पाँच सुपुत्र हुए जिनके क्रमशः विनयचन्द भाई, गिरधरलाल भाई, ईश्वरलाल भाई, शान्तिलाल भाई तथा खेमशंकर भाई नाम हैं। पाँचों ही भाई अपने व्यापार-कुशल पिता के समान ही जवाहिरात परीक्षण में निष्णात हैं। विदेशों के साथ संबन्ध स्थापित करने के लिये श्री विनयचन्द भाई शान्तिलाल भाई तथा खेमशंकर भाई को रंगून

तथा पेरिस आदि देशो में भेजा। आपने ५० वर्ष की आयु में लगभग सपूर्ण व्यापार सुपुत्रो को सौंपकर निवृत्तिमय जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया। अब आपने अपने जीवन का लक्ष्य धर्म तथा समाज की तन, मन एव धन से सेवा करने का बना लिया।

सर्वप्रथम समाज में नव-चेतना का सचार करने के हेतु आपने कान्फ्रेंस की आवश्यकता तथा उपयोगिता से अवगत कराने के लिये गुजरात, काठियावाड, कच्छ, मारवाड, मेवाड, मलावा, यू० पी०, पजाव, खानदेश तथा दक्षिण प्रान्तो का सहयोगियो के साथ प्रवास करके स्था० जैनों को जागृत किया। सेठ श्री अवाबीदास भाई को अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के प्रथम अधिवेशन सम्बन्धी खर्च के लिये तैयार करके स० १९६१ में रा० सा० सेठ चाँदमलजी अजमेर की अध्यक्षता में मोरवी-अधिवेशन सफलतापूर्वक सपन्न करवाया। तदनन्तर आपने उसी लगन तथा उत्साह से समाजोन्नति की प्रत्येक प्रवृत्ति में सक्रिय सहयोग दिया। बाद में रतलाम, अजमेर, जालन्धर, सिकन्दराबाद, मल्कापुर, बम्बई और बीकानेर कान्फ्रेंस-अधिवेशनो की सफलता का श्रेय भी आप श्री को मिला। नवम अधिवेशन तथा बृहत्साधु-सम्मेलन अजमेर, भी आपके ही भगीरथ प्रयत्नो का सुफल था। आपने भारत के कोने-कोने में प्रवास करके समाज में धर्मक्रांति फैला दी और अजमेर-साधु सम्मेलन को सफल बनाकर सगठन का बीजारोपण कर दिया।

आपने व्यापारिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति के साथ-साथ विद्या-प्रचार क्षेत्र में भी अपने जीवन का अमूल्य समय दिया। सन् १९११ में रतलाम में कॉन्फ्रेंस की तरफ से अन्यान्य विषयो का शिक्षण देने के साथ-साथ छात्रो को धर्मनिष्ठ, समाज सेवक और जैन धर्म के प्रखर प्रचारक युवक तैयार करने के लिये जैन ट्रेनिंग कॉलेज की स्थापना की। आपका इस कॉलेज के प्रति अनन्य प्रेम था। किन्तु कुछ समय बाद यह सस्था बन्द हो गई। मल्कापुर में अधिवेशन में कॉलेज की पुन आवश्यकता महसूस हुई और बीकानेर में पुन ट्रेनिंग कालेज सेठ श्री अगरचन्द जी भैरोदान जी सेठिया की सरक्षणता में खोला गया जिसने पूर्ण विकास किया। बाद में आपने सतत प्रयत्न द्वारा इसे जयपुर लाकर सक्रिय रस लिया और श्री धीरजलाल भाई के० तुरखिया के हाथ में इसकी बागडोर सौंपी। इस कॉलेज ने नेतृत्व में पूर्ण विकास किया और समाज को अनमोल रत्न प्रदान किये। कुछ वर्षों के पश्चात् तब व्यावर में आप के सफल प्रयत्नों से जैन गुरुकुल की स्थापना हुई तो कॉलेज भी इसी के अन्तर्गत मिला दिया गया। आपका इस गुरुकुल के प्रति अनन्य प्रेम था। समय-समय पर पधारकर सार-सँभाल करते रहते थे। इस गुरुकुल की भी स्था० समाज में काफी ख्याति फैली। श्रीमान् धीरजलाल भाई के० तुरखिया ने इसका सफल सचालन किया। आप श्री ने प्रत्येक सामाजिक प्रवृत्ति में इन्हे अपना सगी-साथी निर्वाचित कर लिया था। आपने गुरुकुल में तन, मन, धन से सहायता दी।

इन सबके अतिरिक्त श्री दुर्लभजी भाई ने सिद्धान्तशाला काशी, विद्यापीठ बनारस में जैन चेयर, श्री हसराज जिनागम फण्ड, आदि-आदि ज्ञान खातो में मुक्त हस्त से हजारो की उदारता दर्शायी और उसी उदारता की परम्परा आपके सुपुत्रों में भी बराबर चली आ रही है।

आप समाज के सामने एक ग्रन्थकार के रूप में भी आए। आप के द्वारा लिखित पूज्य श्री श्रीलालजी म० का जीवन-चरित्र, श्री बृहत्साधु सम्मेलन का इतिहास, 'सुभद्रा' 'मधु बिन्दु' तथा 'आडत के अनुभव' आदि-आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस प्रकार शात, दात, धीर गम्भीर, राष्ट्र धर्म तथा समाज के सच्चे सेवक ने स्था० समाज में सघ-ऐक्य की भावना भरकर जागरण सहित ता ३०-३-३९ तदनुसार चैत्र शुक्ला दशमी (साधु-सम्मेलन जयन्ती दिवस) के दिन ही पण्डित मरण प्राप्त किया और अपने सुयश की सुवास प्रसरित कर जैनाकाश के दिग्-दिगन्त में फैला गए।

कॉन्फरन्सके जनरल सेक्रेटरी

राय बहादुर सेठ छगनमलजी रीयांवाले, अजमेर.

रायबहादुर सेठ छगनमलजी का जन्म संवत् १९४३ में भाद्रपद मास में हुआ था। आपने छोटी उम्र में ही बड़ा यश प्राप्त कर लिया था २२ वर्ष की उम्र में आपने अपनी तरफ से अजमेर में कॉन्फ्रेन्स का तीसरा अधिवेशन कराया था और उसके प्रधान मंत्री पद का भार ग्रहण किया था। आपने लगभग १० वर्ष तक मंत्री पद पर रहते हुए कान्फ्रेन्स की सेवा की थी।

धर्म के प्रति आपका प्रेम उल्लेखनीय था। आपके पिता श्री सेठ चाँदमल जी की तरह आपको भी जीवदया की तरफ बड़ी अभिरुचि थी। गरीबों को अन्न और वस्त्र आपकी ओर से मिला करता था।

पच्चीस वर्ष की उम्र में आप म्युनिसिपल कमिश्नर और आनरेरी मजिस्ट्रेट हो गये थे। गवर्नमेंट ट्रेजरर रह कर आपने जो सेवा बजाई थी उसके उपलक्ष में आपको राय बहादुर का खिताब प्रदान किया गया था।

आपकी समाज-सेवा की लगन बड़ी प्रशंसनीय थी। हर एक कार्य में आप बड़े उत्साह से भाग लेते थे। हुन्नरोद्योग शाला का भी आपने कई वर्षों तक सञ्चालन किया था।

दुर्भाग्य से आप बहुत कम उम्र में ही स्वर्गवासी हो गये, अन्यथा आपसे समाज की सुन्दर सेवा होने की संभावना थी। ता० २६ मार्च सन् १९१७ (सं० १९७३) को आपका टाईफाईड से स्वर्गवास हो गया।

आपके सात बच्चे हुए थे, पर दुर्भाग्य से वे सब जीवित न रहे और एक के बाद एक गुजरते रहे।

कॉन्फ्रेन्स ऑफिस के स्थायित्व में आपका मुख्य हाथ रहा था। आपके स्वर्गवास के बाद आपके लघुभ्राता श्री मगनमलजी सा० ने कॉन्फ्रेन्स का मंत्रीपद जीवन भर (८ वर्ष) सँभाला।

श्रीमान् सेठ मगनमलजी रीयांवाले, अजमेर.

स्थानकवासी धर्म को मानने वाले समस्त घरानों में रीयांवाले सेठ का घराना सब तरह से समृद्ध और उन्नत माना जाता रहा है। यह घराना बहुत समय से असीम धन-वैभव और दानप्रियता से केवल मारवाड़ में ही नहीं, परन्तु सारे भारतवर्ष में प्रसिद्धि प्राप्त है।

एक बार मारवाड़ के महाराजा मानसिंहजी से किसी अंग्रेज ने पूछा था कि 'तुम्हारे राज्य में कुल कितने घर हैं ? तब उन्होंने कहा कि केवल ढाई घर। एक तो रीयां के सेठों का है, दूसरा बिलाड़े के दीवान का और आधे में सारे मारवाड़ है।' कहते हैं एक बार जोधपुर नरेश को रुपये की आवश्यकता हुई। रियासत का खजाना खाली हो गया था अतः महाराजा रीयां के सेठ के पास गये और अपना अभिप्राय बतलाया। उस समय सेठ ने अपने भंडार से इतने छकड़े रुपये से भर दिये कि जोधपुर से रीयां तक उनकी एक कतार-सी बँध गई।

इस अपरिमित धनराशि को देखकर तत्कालीन नरेश ने उनको परम्परागत 'सेठ' की पदवी से सम्मानित किया। इस धनकुबेर घराने में रेखाजी, सेठ जीवनदासजी, सेठ हमीरमलजी, सेठ रामदासजी, सेठ हमीरमलजी, और उनके पीछे राय सेठ चाँदमलजी हुए। इसी प्रसिद्ध धन कुबेर घराने में संवत् १९४९ में सेठ मगनमलजी का भी जन्म हुआ। आप राय सेठ चाँदमलजी के तीसरे सुपुत्र थे। राय सेठ चाँदमलजी की सरकार में और समाज में बड़ी भारी

प्रतिष्ठा थी। वे बडे ही परोपकारी और धर्मात्मा सज्जन थे।

सेठ मगनमलजी भी अपने पिता की तरह ही उदार और धर्मात्मा थे। इतने अधिक धनाढ्य होने पर भी आपका जीवन बडा सादा और धार्मिक था। आपको 'नवकार मन्त्र' में गहरी श्रद्धा थी। घटो तक आप इस महामन्त्र का जाप करते रहते थे। भक्तामर और कल्याण मन्दिर आपके प्रिय स्तोत्र थे। सदाचार आपके जीवन की मुख्य विशेषता थी। इतने बडे धनी व्यक्ति में यह गुण कदाचित् ही दृष्टिगोचर होता है।

आपका स्वभाव बडा मधुर था। आप सदैव हसमुख रहते थे। वाणी की मधुरता से ही आप बडे-बडे काम बना लेते थे। अजमेर के हिन्दू-मुसलमानो के झगडो को कई बार अपने शब्द-चातुर्य से ही मिटा दिया था।

समाज-सेवा की लगन आपकी उल्लेखनीय थी। लगभग ८ वर्ष तक आप कार्फ्रेंस के जनरल सेक्रेटरी के पद पर रहे। दुर्भाग्य से आप अधिक लम्बा आयुष्य न भोग सके, लेकिन अपने ३६ वर्षों के जीवन में ही आपने ऐसे-ऐसे कार्य कर दिखलाये कि आप सबके प्रिय हो गये थे। लाखो रुपयो का आपने सत्कार्यो में दान किया। अहिंसा के प्रचार में ही आप दान किया करते थे। यह आपके जीवन की विशेष खूबी थी।

बुन्देलखड में कई स्थानो पर हिसा होती थी, जिसे आपने स्वय परिश्रम कर बन्द कराया। अहिंसा का प्रचार करने के लिये आप एक 'अहिंसा प्रचारक' नामक साप्ताहिक पत्र भी निकालते थे। पुष्कर और बगलौर में गौशाला स्थापित कराई, जिसका तमाम खर्च आप स्वय देते थे। मैसूर स्टेट में गोवध बन्द कराने में आपने मुख्य भाग लिया। मिर्जापुर में कुत्तो को गगाजी में डुबो-डुबोकर मारा जाता था, उनकी रक्षा के लिये वहाँ आपने कुत्ताशाला स्थापित की। इस तरह आपने अहिंसा के प्रचार में खूब प्रयत्न किया था।

सामाजिक जीवन भी आपका आदर्श था। आप कई छात्रो को स्कॉलरशिप दिया करते थे। विधवाओं की हालत देखकर आपको बहुत दुख होता था। कई विधवा बहनो को आप मासिक सहायता देते रहते थे।

तारीख ७-११-१९२५ को आपका स्वर्गवास हुआ। यह शोक समाचार जहाँ भी पहुँचा सभी ने हार्दिक शोक प्रकट किया।

यद्यपि सेठ जी का नश्वर देह विद्यमान नहीं है, पर उनके सत्कार्य अब भी विद्यमान हैं और वे जब तक रहेंगे तब तक आपकी उदार कीर्ति इस ससार में कायम रहेगी।

कॉन्फरन्स ऑफिस, बम्बई के जनरल सेक्रेटरी

शेठ अमृतलाल रायचन्द जवेरी, बम्बई

श्री अमृतलालभाई जवेरी का जन्म सन् १८७९ में पालनपुर में हुआ था। आपने प्रारम्भ में २० रु० मासिक की नौकरी की, पर बाद में आपको नौकरी करना ठीक न प्रतीत हुआ और आप २० वर्ष की उम्र में बम्बई आ गये।

बम्बई आकर आप जवाहरात की दलाली करने लगे। इस व्यवसाय में आप सफल होते गये और एक दिन इस श्रेणी तक पहुँचे कि आप बम्बई के जवेरी बाजार में प्रसिद्ध हो गये।

आप का जीवन धार्मिक सस्कारो से ओत प्रोत था। समाज की सेवा करने की भावना आप की पुरातन थी। घाटकोपर जीव दयाखाता के सचालन में आपका प्रमुख भाग था। आप इस सस्था के उप प्रमुख थे। पूना बोर्डिंग के लिये आपने १० हजार रु० का उदार दान दिया था। हितेच्छु श्रावक मडल, रतलाम और बम्बई के श्री रत्न चिन्तामणि मित्र मडल के आप जन्म से ही पोषक थे। स्था०

जैन कांफ्रेंस के आप वर्षों तक ट्रस्टी तथा रेसिडेन्ट जनरल सेक्रेटरी रहे हैं।

इस तरह आप कई संस्थाओं को पूर्ण सहयोग देते रहते थे। आप के कोई सन्तान न थी। अपने भाइयो के पुत्र-पुत्रियों को ही आपने अपनी सन्तान समझी और उनका पालन-पोषण किया। आप की धर्मपत्नी श्री केशरबेन से भी समाज सुपरिचित है। समय-समय पर आप भी सामाजिक कार्य में सक्रिय भाग लेती रहती है। आप श्री अमृतलाल भाई का स्वर्गवास ता० १३-१२-४१ को हृदय गति बन्द हो जाने से पालनपुर में हुआ था। पालनपुर का'तालेबाग' श्रीमती केशरबहिन ने शिक्षण प्रचारार्थ दान कर दिया।

समाज भूषण श्री नथमल जी चौरड़िया नीमच

श्री चौरडिया जी का जन्म संवत् १९३२ भाद्रकृष्णा ८ (जन्माष्टमी) को हुआ था। आप के अग्रज डीडवाने से १२५ वर्ष पूर्व नीमच-छावनी में आकर बस गये थे। आप के पिता जी का देहावसान आपकी छोटी उम्र में ही हो गया था। आप बचपन से ही परिश्रमी, अध्यवसायी एव कुशाग्र बुद्धि थे।

आप ने व्यापार में अच्छी प्रगति की। व्यापार के लिए आप ने बम्बई का क्षेत्र पसन्द किया और वहाँ मेसर्स माधोसिंह मिश्रीलाल के नाम से व्यापार करना आरम्भ किया। आप की व्यापार कुशलता को देखकर मेवाड के करोडपति सेठ मेघजी गिरधरलाल ने आप को अपना भागीदार बना लिया और ऊँचे पैमाने पर व्यापार करना शुरु किया। फलत. लाखो रुपया आपने पैदा किये।

बम्बई में आप ने मारवाडी चेम्बर ऑफ कामर्स की स्थापना की और वर्षों तक उसके अवैतनिक मंत्री तरीके आपने कार्य किया। व्यापारिक विषयो पर आप की सम्मति महत्वपूर्ण समझी जाती थी।

आप शिक्षा के पूरे हिमायती थे आप की ओर से असहाय विद्यार्थियो को समय-समय पर छात्रवृत्तियाँ प्राप्त होती रहती थी।

स्त्री-शिक्षा के आप बड़े पक्षपाती थे। राजपूताने में एक जैन कन्या गुरुकुल की स्थापना के लिये आपने ७५ हजार रु० का उदार दान दिया था। इस गुरुकुल का उद्घाटन ता० २०-४-३९ को होने वाला था, परन्तु आपकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी। आपका देहावसान ता २९-३-३९ को ही हो गया। गुरुकुल की गुरुआत न हो सकी। परन्तु उन रुपयों का ट्रस्ट बना हुआ है और प्रतिवर्ष उसमें से कुछ रुपया छात्रवृत्ति के रूप में छात्राओ को दिया जाता है।

आप समाज सेवा के लिये हर समय तैयार रहते थे। कोन्फरन्स की स्थापना से लगाकर अन्त समय तक आप उसके स्वयसेवक दल के मन्त्री पद को आप सुशोभित करते रहे और प्रत्येक अधिवेशन में भाग लेते रहे। आपके इन सेवा भाव को लक्ष्य मे रख कर अजमेर के नवें अधिवेशन के समय आपको 'समाज भूषण' की पदवी से विभूषित किया गया।
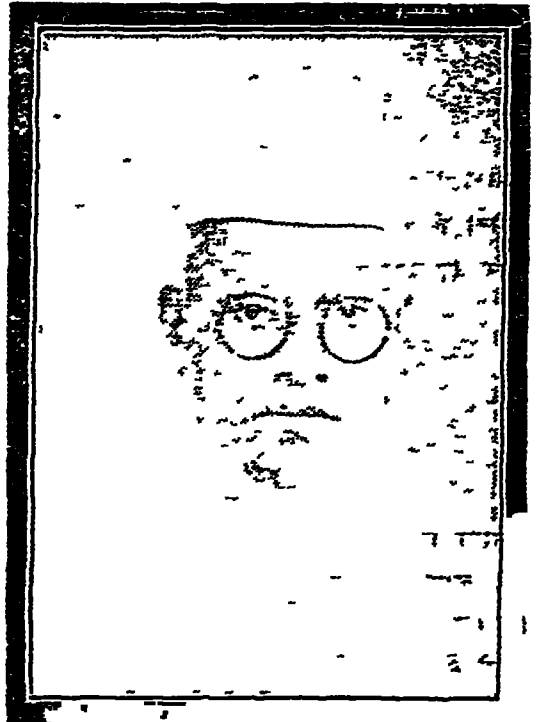
सामाजिक सुधार के आप कट्टर हिमायती थे। परदा प्रथा को आप ठीक नहीं समझते थे। आप की पुत्री तथा ज्येष्ठ पुत्र वधू ने पर्दा-प्रथा का त्याग कर दिया था। फिजूल खर्ची और मृतक भोज के भी आप विरोधी थे।

आपकी राष्ट्रीय सेवायें भी उल्लेखनीय थीं। राजपूताना मालवा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के आप प्रधान रहे। सत्याग्रह आन्दोलन में आप एक वर्ष तक सरकार के मेहमान भी रहे। हरिजन-स्थान के लिये आपकी ओर से

एक हरिजन पाठशाला भी चलती थी। जो आज सरकार द्वारा सचालित होती है।

जैन समाज का सुप्रसिद्ध जैन गुरुकुल छोटी-सादडी के आप ट्रस्टी तथा मन्त्री रहे। इस तरह आप की सेवायें बहुमुखी थी। सन् '३६ में टाईफाईड से आपका स्वर्गवास हो गया।

श्री सेठ अचलसिहजी जैन, आगरा M P

उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध काग्रेस नेता सेठ अचलसिहजी ऐसे देश भक्तो में से है, जिन्होने अपनी मातृभूमि की सेवा करना अपने जीवन का एक विशेष अग बना लिया है। आपका जन्म वैशाख सुदी ६ स० १९५२ में आगरा में हुआ। आप प्रसिद्ध बैंकर और जमींदार श्री सेठ पीतममलजी के सुपुत्र है। आपकी माता भी अत्यन्त धर्म परायण नारी थी। बचपन में ही माता-पिता के स्वर्गवासी हो जाने के कारण आपके सौतेले भ्राता श्री सेठ जसवन्तरायजी द्वारा बडे लाड-प्यार से आपका पालन-पोषण हुआ। बलवन्त राजपूत कालेज आगरा में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आपने कृषि विद्यालय, इलाहाबाद में अध्ययन के लिये प्रवेश किया किन्तु आपका ध्यान किताबों में न लग कर देश-सेवा की ओर आकर्षित हुआ। आपने सन् १९१८ मे अध्ययन छोडकर निर्णयात्मक रूप से अपने को राजनैतिक और सामाजिक कार्यों में लगा दिया।

अब आप व्यावसायिक क्षेत्र में रहते हुए राजनैतिक क्षेत्र में आये। रोलेट एक्ट के विरुद्ध सारे देश में क्रान्ति फली हुई थी। आप भी उस क्रान्ति में सम्मलित हुए। सन् १९१८ से १९३० तक आगरा ट्रेड एसोसिएशन के आप मत्री और फिर १९३१ से १९३८ तक इसी सस्था के अध्यक्ष रहे। सन् १९२१ १९३० तक आप आगरा नगर काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और १९३३ से १९५६ तक लगातार जिला काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस कमेटी की तरफ से प्रारम्भ किये गये। आन्दोलनो में आपने प्रमुखता से भाग लिया, जिसके फल स्वरूप आपको अनेक बार जेल कष्ट का सामना करना पडा। "भारत छोडो" आन्दोलन में आपको सत्ताईस माह की जेल-यात्रा करनी पडी।

सेठ सा० का विधान सभा में भी प्रशसनीय जीवन रहा है। आप सन् १९२३ में उत्तर-प्रदेश विधान सभा के सदस्य हुए। सन् १९५३ में आगरा में किये गये काग्रेस के अधिवेशन में आप स्वागताध्यक्ष थे। सन् १९५२ में लोक-सभा में आगरा पश्चिम-क्षेत्र से सदस्य चुने गये। अपने विरोधी उम्मीदवार श्री एस० के० पालीवाल को जो यू० पी० सरकार के भूतपूर्व मन्त्री रह चुके हैं, ५६,००० वोटो से पराजित किया।

आपने सन् १९३६ में १,००,०००) रु० का अचल ट्रस्ट का निर्माण किया। इस ट्रस्ट से एक विशाल भवन बनाया गया जिसमें एक पुस्तकालय और वाचनालय चालू किया गया। आपने एक दूसरा ट्रस्ट २,५०,०००) रुपये की लागत का अपनी स्व० पत्नी श्रीमती भगवतीदेवी जैन के नाम से बनाया। आपन इन दोनो ट्रस्टो के नाम लगभग ५ लाख रुपये की सम्पति दान करदी है। राजनैतिक जीवन के साथ-साथ आप धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रो में भी पूर्णरूप से दिलचस्पी लेते रहे हैं। समाज सुधारक के रूप में आगरा के विभिन्न समाजो में मुख्यत ओसवाल और वैश्य समाज में शादियां, दहेज आदि कार्यों में फिजूल खर्ची बन्द कराई। सन् १९२१ में आपने जैन सगठन सभा का निर्माण किया जिसके द्वारा महावीर भगवान की जयन्ती सम्मिलितरूप से मनाई जाती है। सन् १९५२ में आपने दिल्ली में अखिल भारतीय महावीर जयन्ती कमेटी की स्थापना की जिसके द्वारा महावीर जयन्ती के दिन छुट्टी कराने का प्रयास जारी है। आप द्वारा आयोजित गत महावीर जयन्ती समारोह में प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू,

उपराष्ट्र पति राधाकृष्ण, गृहमन्त्री गोविन्दवल्लभ पत, अन्य मन्त्रियों तथा लोक सभा के सदस्यों ने भाग लिया। सात अप्रैल को राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद भी पधारे थे। दोनो उत्सवों का वर्णन रेडियो द्वारा प्रसारित किया गया था।

इस प्रकार सेठ सा० का जीवन क्या राष्ट्रीय क्षेत्रो में और क्या सामाजिक क्षेत्रो में वरदान रूप सिद्ध हुआ है। आपकी सुयश-सुवास सर्वा गीण क्षेत्र में प्रसर रही है। निस्सन्देह सेठ सा० समाज के गौरव हैं।

डॉ० दौलतसिहजी सा० कोठारी M Sc, Ph D, दिल्ली

आप उदयपुर—राजस्थान निवासी श्री सेठ फतहलालजी सा० कोठारी के सुपुत्र हैं। आपका जन्म स० १६६३ में हुआ था। आपका प्राथमिक शिक्षण उदयपुर और इन्दौर में हुआ। यहाँ का शिक्षण पूर्ण कर आप इलाहाबाद की यूनिवर्सिटी में प्रविष्ठ हुए। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वर्गीय मेघनाथजी शाहा के आप विद्यार्थी रहे हैं और आप हो के अध्यापन में आपने M Sc किया। तत्पश्चात् सरकारी छात्रवृत्ति प्राप्त करके केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में प्रसिद्धतम वैज्ञानिको के सरक्षण में रिसर्च किया। भारत में लौटने के पश्चात् आपने अनेक यूनिवर्सिटियो में प्रोफेसर, रीडर वनकर बडी ही योग्यता और दक्षता से कार्य किया।

इस समय आप भारत सरकार के रक्षा विभाग में बडी ही योग्यता से कार्य कर रहे हैं। आपकी योग्यता और कार्यकुशलता को अनगिनती वैज्ञानिको ने मुक्त-कण्ठ से सराहना की है।

श्री कोठारी जी साहव ने भौतिक विज्ञान पर आश्चर्यकारक अनुसन्धान करके और कई निबन्ध लिखकर ससार के भौतिक शास्त्र के वैज्ञानिकों को चकित कर डाला है। सन् १६४८ की आयोजित अखिल भारतीय वैज्ञानिक कांग्रेस के आप स्वागताध्यक्ष के सम्माननीय पद पर थे। सन् १६५४ में स्वर्गीय मेघनाथ शाहा के साथ भारत सरकार के प्रतिनिधि वनकर वैज्ञानिको की कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिए आप रूस पधारे थे। १ फरवरी सन् '५६ में भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कॉमनवेल्थ डिफेंस साइस कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिए कनाडा की राजधानी ओटावा पधारे।

आप भारत सरकार के प्रमुख और प्रतिष्ठित वैज्ञानिक हैं। सन् १६५३ में दिल्ली यूनिवर्सिटी के दीक्षान्त समारोह के विशाल कक्ष में पजाव-मन्त्री प० मुनिश्री शुक्लचन्द्रजी म० सा० का प्रवचन कराकर जैनतरो को जैनधर्म की जानकारी दिलाई।

इतने ऊँचे पद पर आसीन होकर भी आपका धर्म और समाज के उत्थान की भावना प्रशसनीय और आदर्श है। इस समय आप अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के उपाध्यक्ष हैं।

श्री कोठारीजी सा० जैसे वैज्ञानिक को पाकर समस्त स्थानकवासी समाज गौरवान्वित है। जिन सपूतो से देश और समाज का मानवर्धन हो—ऐसे सपूतो के लिए किसे गौरव नहीं होगा ?

आपके तीन भाई हैं—श्री मदनसिंहजी राजस्थान सरकार के सेक्रेटरी हैं। श्री दुलेसिंहजी महाराणा कालेज में प्रोफेसर हैं और श्री प्रतापसिंहजी पेपर मिल, शिरपुर (हैदराबाद) के मैनेजर हैं।

इस प्रकार यह कोठारी परिवार भारत की शान है। अपनी बुद्धिमत्ता से इस परिवार ने अपने प्रान्त को, अपने समाज को तथा देश को गौरवान्वित किया है। ऐसे भाग्यशाली परिवार के प्रति किसे हर्षयुक्त ईर्ष्या नहीं होगी ?

स्वर्गीय श्री किशनलाल जी सा० काकरिया, कलकत्ता
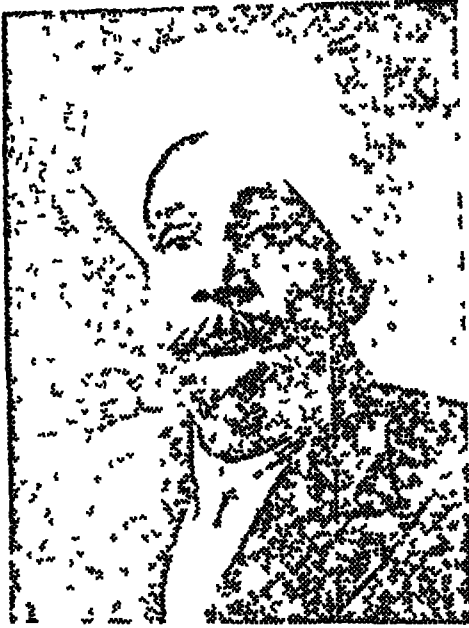
आपका जन्म नागौर परगने के अन्तर्गत "गोगलाव" नामक ग्राम के एक प्रतिष्ठित स्थानकवासी जैन-घराने में स० १६५१ में हुआ था। आप के पिताजी का नाम श्री हजारीमल जी काकरिया था। श्री हजारीमल जी सा० बडे ही सहृदयी और परोपकारी व्यक्ति थे। आपकी माता भी अत्यन्त धार्मिक और उदार प्रकृति की महिला थी। माता-पिता के उज्ज्वल चरित्र की स्पष्ट छाप आप पर भी पडी। आप अपने काकाजी श्री मुल्तानमल जी काकरिया की गोद चले गये। व्यापार करने के विचार से आप कलकत्ता पधारे और श्री छत्तूमल जी मुल्तानमल प्रतिष्ठित फर्मों में गिना जाने लगा। पूर्वी पाकिस्तान के पाट-व्यापारी आपको कुशल व्यापारी के रूप में सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

कलकत्ता स्थित कितनी ही धार्मिक और परोपकारिणी सस्थाओ को बिना भेद-भाव के आप मुक्त हस्त सहायता प्रदान करते थे। आप धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे। सामयिक और उपवास आपके जीवन के अभिन्न अग थे।

सामाजिक कार्यों में भी आप की बडी दिलचस्पी थी। कलकत्ता स्थित श्री श्वे० स्था० जैन सभा के आप कई वर्षों तक सभापति रहे। सभा द्वारा सचालित विद्यालय को हाईस्कूल के रूप में देखना चाहते थे और इसके लिये आजन्म प्रयत्नशील रहे।

व्यापारिक कामो से आप पूर्वी पाकिस्तान बरावर आया-जाया करते थे किन्तु २० जुलाई सन् १६५२ को गायबाधा से नारायण गज जाते समय चलती ट्रेन में आततायियो द्वारा आप की निर्मम हत्या कर दी गई।

इस प्रकार समाज का एक आशावान दीपक ५८ वर्ष की अवस्था में ही अकस्मात् बुझ गया।

आपकी विधवा धर्म-पत्नी भी बडी ही उदार तथा धर्म-परायण हैं। आप के ज्येष्ठ पुत्र श्री पारस मल जी और भतीजे श्री दीपचन्द जी काकरिया भी बडे ही होनहार, धर्म प्रेमी एव समाज सेवी है। सामाजिक प्रवृत्तियो मे भाग लेकर समाज में नव चेतना लाने का आप की तरफ से प्रयास होता रहता हे।

श्री सेठ आनन्दराजजी सुराणा, M L A

आप दिल्ली राज्य की प्रथम विधान सभा के निर्वाचित प्रसिद्ध काग्रेसी कार्यकर्ता श्री सुराणाजी एक सफल व्यापारी हैं। आप इडो योरोपा ट्रेडिंग कम्पनी के मेनेजिंग डायरेक्टर हैं।

आप जोधपुर के निवासी है। आपका जन्म सवत् १६४८ को हुआ था। प्रारभ से ही आप राष्ट्रीय दृष्टिकोण के एव सगठन-प्रेमी है। जोधपुर राज्य की सामन्तशाही के खिलाफ आपने सघर्ष में भाग लिया। वर्षों तक आप इस सघर्ष में जूझते रहे। देशी रियासतो में राष्ट्रप्रेमियो पर कैसा दमन और अत्याचार उस समय किया जाता था यह सर्वविदित है। राज्य सरकार को उलटने के लिये षड्यन्त्र करने के अभियोग में आपको पाँच साल की सख्त कैद की सजा हुई और आपको तथा आपके साथी श्री जयनारायण व्यास और श्री भँवरलालजी अग्रवाल को नागौर के किले में नजरबन्द रखा।

सन् १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने श्रीमती अरुणा आसफअली, श्री जुगलकिशोर खन्ना तथा डा० केसकर को अपने यहाँ आश्रय दिया और राष्ट्रीय कांग्रेस का संघर्ष चालू रखा। सरकार को आप पर शक होने लगा अतः आपको भी ९ साल तक भूमिगत होकर रहना पड़ा।
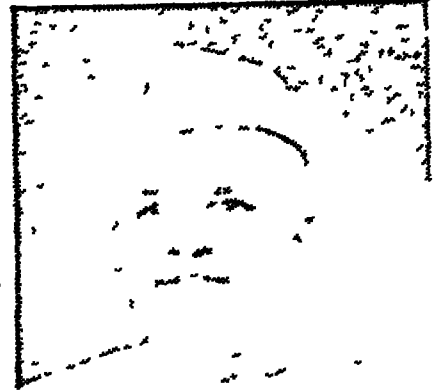
स्टेट पीपल्स कांग्रेस का दफ्तर भी दिल्ली में आपके पास रहा है। इसी कांग्रेस के द्वारा देशी रियासतों में आजादी की लड़ाई चलाई जाती थी। पं० जवाहरलाल नेहरू जी अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण किसी के यहाँ नहीं आने-जाते किन्तु आपके यहाँ श्री पंडितजी ने तीन घंटे व्यतीत किये। सच ही सुराणा जी एक भाग्यशाली व्यक्ति हैं।

हिन्दुस्तान पाकिस्तान के बँटवारे के समय शरणार्थियों की पुनर्वास समस्या सुलझाने में आपने अद्भुत कार्यक्षमता तथा दानशूरता का परिचय दिया। कांग्रेस द्वारा सहायता फंड में से लगभग ५०,००० रु० आपके ही हाथों से शरणार्थियों को बाँटा गया। आपने अपनी तरफ से भी लगभग १५,००० रु० की सिलाई की मशीनें और ला दीं शरणार्थियों को वितरण कर उनकी उजड़ी हुई दुनिया को फिर से बसाने में आपका बड़ा हाथ रहा है। धार्मिक, सामाजिक, और राजनीतिक संस्थाओं को आपकी तरफ से अबतक १,५०,००० का दान हो चुका है।

आप इस समय अ० भा० श्वे० स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के प्रधान मंत्री हैं। समाज सेवा की आप में उत्कट भावना है। किसी को दीन-दुखी देखकर आपका हृदय द्रवित हो जाता है। आपके द्वार पर आया हुआ किसी भी प्रकार का प्रार्थी खाली हाथ नहीं लौटता।

निर्भीकता, तेजस्विता और स्पष्टवादिता एवं उदारता के कारण आपने जिस कार्य में हाथ डाला उसमें सफलता प्राप्त की। जोधपुर में १२ रु० में आपने नौकरी की थी। किन्तु मनुष्य को पुरुषार्थ और महत्वाकांक्षा क्या नहीं बना देती यह हम श्री सुराणा जी के जीवन से सीख सकते हैं। इस वृद्धावस्था में भी आपका समाज-प्रेम, नित्य क्रिया कर्म, और आतिथ्य सत्कार प्रशंसनीय ही नहीं किन्तु अनुकरणीय है।

श्री लाला उत्तमचन्द जी जैन, दिल्ली

आप के पूर्वज मेरठ जिले के तिस्सुत ग्राम के रहने वाले थे। आपके दादा श्री ला० नत्थूमल जी सा० अत्यन्त ही धर्म परायण तथा दानवीर थे। आप ने कई स्थानों पर स्थानक-भवन, धर्मशालाएं बनाकर अपनी सम्पत्ति को जन-कल्याण के लिये लगाई। श्री उत्तमचन्द जी के पिता जी श्री रामनाथजी ने दिल्ली में आकर अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया और वहाँ के एक प्रसिद्ध व्यवसायी बन गये। आपके सुपुत्र श्री उत्तमचन्द जी जैन का व्यवस्थित शिक्षण हुआ, जिसके फलस्वरूप बी० ए० पास कर लेने पर आपने सम्मान सहित 'लॉ' की उपाधि प्राप्त की। कुछ समय तक वकालत करने के पश्चात् आपने व्यावसायिक क्षेत्र में पदार्पण किया। व्यापार में व्यस्त रहते हुए भी आप सामाजिक, शैक्षणिक तथा इतर संस्थाओं में सक्रिय भाग लेते हैं। इस

समय आप नया बाजार, दिल्ली के सरपच हैं। बाजार की कठिन और जटिल समस्याओं को आप बडी ही बुद्धिमत्ता तथा न्यायपरायणता से हल करते हैं। आप ने दिल्ली की श्री महावीर जैन हायस्कूल का डांवाडोल स्थिति में जिस कुशलता मे सचालन किया वह अत्यन्त सराहनीय है। आपके प्रयत्नो से यह सस्था प्रतिदिन प्रगति कर रही है। गरीब बालक बालिकाओं को शिक्षण देने और दिलाने की आपकी सदा प्रेरणा रही है।

आप अखिल भारतीय स्था० जैन कान्फ्रेंस के मानद् मन्त्री है तथा दिल्ली की कई अन्य धार्मिक सस्थाओ के पदाधिकारी हैं। आप ने अपने ग्राम निरपुरा में एक धर्मशाला और एक स्थानक का निर्माण कराया है।

श्री लाला गिरधारी लाल जी जैन M A, P V E S class 1, दिल्ली

आप जिन्द निवासी लाला नैन सुखराय जी जैन के सुपुत्र हैं, जो आज दिल्ली स्टेट और पेप्सु राज्य के शिक्षा-विभाग में उच्चाधिकारी के सम्माननीय पद पर हैं। आप धुरन्धर शिक्षण-शास्त्री है। जिन्द स्टेट के आप M L A रह चुके हैं और इस सरकार की तरफ से आपको "सरदार गामी" की पदवी भी प्राप्त कर चुके है। सरकारी विभागों में काम करते हुए सम्मान और सुयश प्राप्त कर अपने को समाज सेवा में भी लगाया है।
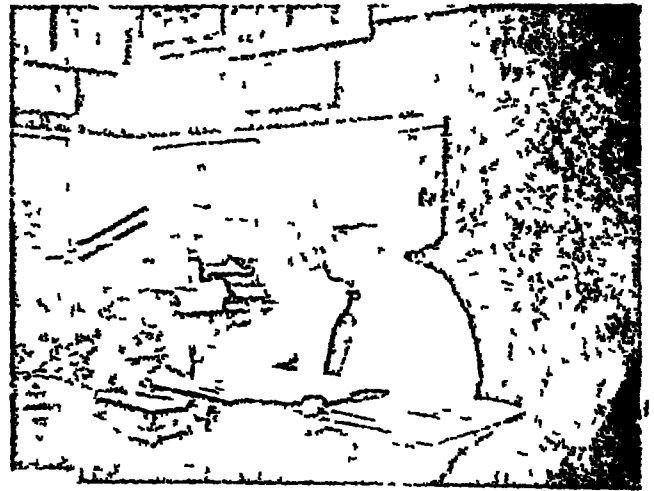
स्वर्गीय शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज के दिल्ली, पचकूला, आगरा और पटियाला आदि नगरो में धूम-धाम से अवधान कराकर जैनधर्म, जैन समाज और जैन मुनिराजो का गौरव बढाया है।

इतने उच्च शिक्षण-शास्त्री होते हुए भी धर्म पर आप पूर्णरूप से दृढ श्रद्धावान हैं। अनेक मुनिराजो के सान्निध्य में आकर धार्मिक सिद्धान्तो की आप ने अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली है। इस समय दिल्ली के वर्द्धमान स्था जैन समाज के आप अध्यक्ष हैं।

हमें विश्वास है कि आप की बहुमूल्य सेवाओ से समाज और अधिक लाभान्वित हो कर गौरवान्वित होगा। सुलझे सुए विचार, गम्भीर चिन्तन, समाज-प्रेम, धर्म पर अनन्य श्रद्धा और आकर्षक भव्य आप के इन गुणो के प्रति प्रेम एव सद्भावना प्रकट होती है।

बाबू अजितप्रसाद जी जैन M.A L-L B, दिल्ली

आप बडौत जिला मेरठ निवासी लाला मामचन्दराय जैन के सुपुत्र है। आपके परिवार ने स्थानकवासी जैन समाज की बहुत सेवा की है। आपके परिवार के प्रयत्नो से ही बडौत में जैन पाठशाला, जैन धर्मशाला व जैन स्थानक भवन का निर्माण हुआ।

आप अपनी समाज के सेवाभावी कार्यकर्ता है। आप इस समय अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस के मन्त्री हैं और उत्तरीय रेलवे में 'अकाउट ऑफिसर' हैं। आपकी समाज-सेवा की भावना और धर्मप्रियता सराहनीय है।

श्री धीरजभाई केशवलालभाई तुरखिया

स्था० जैन जगत् के कोने-कोने में चतुर्विध श्री सघ का शायद ही ऐसा सभ्य होगा जिसने 'धीरजभाई' यह कर्ण-प्रिय मधुर शब्द न सुना हो।

धीरजभाई के नाम की इतनी प्रसिद्धि केवल उनके कार्यकलापो से है। व्यक्तिगत रूप से जैन समाज इनसे कम परिचित है। क्योकि इन्होने अपने-आपको कार्यसिद्धि के यश का भागी बनाने का कभी मौका नहीं दिया। निस्वार्थ समाज-सेवा ही उनके जीवन का परम लक्ष्य रहा।

सादगी एव सयम की साक्षात् मूर्ति श्री धीरजभाई की वेष-भूषा है इकलगी छोटी धोती पर सफेद खादी का कुर्ता और टोपी, पैरो में जूते या चप्पल। सीधे-सादे, धीर-गम्भीर मुद्रा, नाटा कद, कार्य-भार की चिन्ता-रेखाओ से अकित ललाट, हँसमुख, मिष्टभाषी और कार्य में व्यस्त रहने वाले है श्री धीरजभाई।

आज से ३५ वर्ष पूर्व आप बम्बई शहर के एक नागरिक थे। समाज में अन्धकार व्याप्त था और सामाजिक कार्यकर्ताओ का नितान्त अभाव था। उस समय 'जैन जागृति' द्वारा आपने जैन समाज में प्राण-वायु फूकने का अकथ परिश्रम किया और 'श्री चिन्तामरिण मित्र मण्डल' के सचालक का पद स्वीकार कर जैन नवयुवको में जैनत्व के सस्कार सिंचन का उत्तरदायित्व अपने कन्धो पर उठाया।

इसी समय बम्बई के रेशम बाजार के व्यापारी मित्रो ने जापान की ओर व्यवसाय के लिए जाने का उन्हें आग्रह किया और दूसरी ओर श्री स्व० सूरजमल लल्लूभाई झवेरी एव स्व० श्री दुर्लभजी भाई झवेरी ने जैन ट्रेनिंग कॉलिज की बागडोर सँभालने का अत्याग्रह किया। किन्तु आर्थिक प्रलोभन की अग्नि-परीक्षा में खरे उतरे और शासन-सेवा के लिए निष्काम और अनासक्त भाव से आपने अपने व्यवसाय को भी त्याग दिया। आपकी २५ वर्षीय सेवाओ का रौप्य महोत्सव मनाने का सद्भाग्य समाज को ब्यावर गुरुकुल के १७वें वार्षिकोत्सव के शुभ प्रसगपर प्राप्त हुआ।

जैन ट्रेनिंग कॉलेज का आपने जिस योग्यता से सचालन किया उसका ज्वलन्त उदाहरण है। वहाँ से निकले हुए उत्साही नवयुवक, जो आज वर्तमान में विभिन्न सस्थाओ में व समाज में जागृति का कार्य कर अपना नाम रोशन कर रहे है।

श्री जैन ट्रेनिंग कॉलेज की सफलता देखकर कतिपय विद्या-प्रेमी मुनिराजो एव सद्गृहस्थों की अन्तरात्मा से प्रेरणा हुई कि जैन गुरुकुल सरीखी सस्था सस्थापित हो। सद्विचार कार्यरूप में परिणत हुए और उसके सुयोग्य सचालक के रूप में आपश्री को कार्यभार सौंपा गया। समाज के सच्चे सेवक ने जैन ट्रेनिंग कालेज का कार्यभार सिर पर होने के बावजूद भी गुरुकुल का उत्तरदायित्व सहर्ष स्वीकार किया और थोडे ही समयान्तर में आपने अपनी अनवरत तपश्चर्या, अथक उद्योग एव अतिशय सहनशीलता के परिणाम स्वरूप गुरुकुल के लिए निभाव फड, स्थायी फड, निजी मकान तथा सभी साधन-सामग्रियाँ जुटा लीं।

आपकी दीर्घकालीन तपस्या तथा कर्तव्य-पालनता केवल एक ही उदाहरण से प्रगट हो जाती है कि जब एक बार आपके पिताश्री की अस्वस्थता का बुलाने का तार आया और आपने प्रत्युत्तर में यही जवाब दिया कि 'मेरे पर सस्था के बालको की सेवा का और उन पर मातृ-पितृ-वात्सल्य का भार है अत मैं उक्त फर्ज को छोडकर आने में असमर्थ हूँ।' ऐसे उदाहरण समाज में कम ही देखने को मिलते हैं।

जैन गुरुकुल ब्यावर का यथोचित ढग से सचालन करते हुए आपके द्वारा मारवाड की अनेक छोटी-बडी शिक्षण-सस्थाओं को सत्प्रेरणा एव सक्रिय सहयोग मिलता रहा।

श्री वृहत् जैन थोक सग्रह तथा तत्त्वार्थ-सूत्र का आपने सम्पादन किया है।

सन् १९३२ में अजमेर वृहत् साधू सम्मेलन व उसकी भूमिका के समान अनेक प्रान्तीय सम्मेलनो में आपकी सेवाएँ अपना एक विशिष्ट स्थान रखती हैं। कान्फ्रेंस के पञ्चम अधिवेशन से लेकर आज तक के अधिवेशनो एवं उसकी जनरल कमेटी की प्रत्येक बैठको में आपकी उपस्थिति अनिवार्य रही है और कान्फ्रेंस की अनेक विध-प्रवृत्तियो को आप श्री ने साकार रूप प्रदान किया।

मारवाड को अपनी साकार सेवा का केन्द्र बना देने पर भी काठियावाड, पजाब एव खानदेश की शिक्षा एव धर्मज्ञान प्रचार और साधु-सगठन के प्रत्येक आन्दोलन से आप कभी भी अलिप्त नहीं रहे। आपने सामाजिक एव धार्मिक सेवाएँ करते हुए अपने ऊपर टीकाओ एव निन्दाओ की बौछारें बडे ही धैर्यभाव से सहन कीं। सेवा करते ही जाना किन्तु कर्तव्य नहीं छोडना ही आपका चरम लक्ष्य रहा।

वर्तमान में आपने सघ ऐक्य योजना के मन्त्री पद को सँभालकर उसे मूर्तस्वरूप दिया। धार्मिक शिक्षण समिति का मन्त्री पद सँभालकर कार्य को वेग दिया। आप इस समय कान्फ्रन्स ऑफिस के मान्य मन्त्री तथा 'जैन-प्रकाश' के ऑ० सम्पादक भी हैं।

इस प्रकार आपकी अथक और सतत् निःस्वार्थ सेवा तथा कर्तव्यनिष्ठता के लिए स्था० समाज सदैव आभारी है और भविष्य में भी आपकी सेवाओ के लिए बडी-बडी आशाएँ रखता है।

मध्य भारत के प्रमुख कार्यकर्ता

स्व० श्री सेठ कन्हैयालालजी सा० भण्डारी, इन्दौर

आप मूल निवासी रामपुरा के थे। आपने वहाँ की समाज के लाभार्थ एव अपने पिता श्री की अमर यादगार में
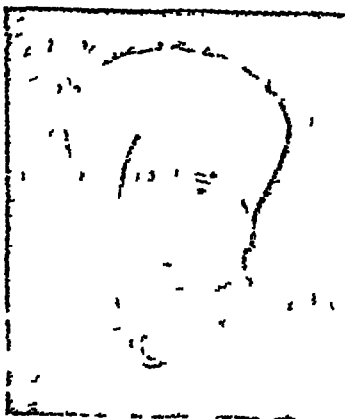
"श्री नन्दलालजी भण्डारी छात्रावास" एव यहाँ के चिकित्सालय में एक भवन नेत्र-चिकित्सा के लिए भी बनवाया है। आप रामपुरा पाठशाला के ट्रस्टी व आदि अध्यक्ष थे। श्री चतुर्थ वृद्धाश्रम, चित्तौड के भी आप अध्यक्ष थे। आप भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति एव मिल्स-मालिक थे। देशी औषधियो के विशेषज्ञ एव जैन-समाज के सच्चे रत्न थे। आज उनके स्थान पर उन्हीं के लघुभ्राता श्री सुगनमलजी सा० भण्डारी समस्त कार्यों की पूर्ति तथा गौरव को बडी योग्यतापूर्वक बढा रहे हैं। समाज को भविष्य में आप से भी बडी-बडी आशाएँ हैं।

श्री सरदारमलजी भण्डारी, इन्दौर

आप इन्दौर के सुप्रसिद्ध 'सरदार प्रिंटिंग प्रेस' के मालिक हैं। आपको स्थानकवासी धर्म का गहरा अध्ययन है और यह कहा जाता है कि इस रूप से कार्य करने वालो में आपकी तुलना का अन्य व्यक्ति नहीं है। आप कई वर्षो से स्थानीय स्थानकवासी समाज की धार्मिक प्रवृत्तियो में मुख्य रूप से सक्रिय भाग लेते रहे हैं।

श्री मन्नालालजी ठाकुरिया, इन्दौर

आपका जन्म स० १९६१ भाद्रपद शुक्ला ६ को इन्दौर में हुआ था। बचपन से ही आपको सिनेमा देखने का बहुत शौक था अतः आगे चलकर यही आपका व्यवसाय भी हो गया। इन्दौर के सिनेमा व्यवसायियों में आप अग्रणी हैं। इन्दौर तथा नागपुर आदि में आपके कई सिनेमा हैं। सन् १९८१ में आपने फिल्म-व्यवसाय में भी प्रवेश किया। इस व्यवसाय में आपकी लाखों की सम्पत्ति लगी हुई है। इन्दौर-नरेश

की आप पर असीम कृपा रही है। वर्षों तक आप आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे हैं। आपने लाखों रुपये उपार्जन किये और शुभ काम में व्यय किये। विद्या-दान की ओर आपका विशेष लक्ष्य रहता है। सन् १९८३ में आपने ओसवाल समाज के उत्थान के लिए स्वअर्जित कमाई में से १,०१,१११ रु० दान कर उसका ट्रस्ट रजिस्टर्ड करवाया। इसके ब्याज में से प्रतिवर्ष समाज के गरीब तथा होनहार विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति विधवाओं को सहायता दी जाती है। आप इन्दौर की प्रसिद्ध फर्म देवीचन्द पन्नालाल के मालिक सेठ सरदारमलजी के द्वितीय पुत्र हैं। आप अपना कारोबार धन्नालाल मन्नालाल के नाम से करते हैं।

आप जैन रत्न विद्यालय, गोपालगढ और जैन गुरुकुल ब्यावर के अध्यक्ष भी बन चुके हैं।

श्री भँवरलालजी सा० चाकड़ इन्दौर

आप श्रीमान् जी रामपुरा निवासी हैं। वर्तमान में आप श्री 'नन्दलालजी भण्डारी मिल्स', इन्दौर के कोषाध्यक्ष पद पर हैं। जैन समाज की मूक सेवा कर रहे हैं। आप श्रद्धेय साधुवर्ग व गरीब स्वधर्मियों की सेवा श्रद्धापूर्वक करते हैं। इन्दौर में सचालित आयंबिल खाता व धार्मिक-क्षेत्र में आप अगेवान हैं। रामपुरा पाठशाला के मुख्य सहायक एवं मृदु प्रकृति के सुश्रावक हैं। आपका धर्म-प्रेम और उदारता भी प्रशसनीय है।

श्री बक्तावरमलजी साड, इन्दौर

आप श्री का जन्म ग्राम घोलेरिया (पाली) मारवाड में सवत् १९६७ के वैसाख शुक्ला तृतीया को हुआ था। आपके पिता श्री का नाम जेठमलजी है। आपके तीन सुपुत्र जिनके क्रमश श्री घेवरचन्दजी, श्री माणकचन्दजी और श्री धर्मचन्दजी नाम हैं।

आपका व्यवसाय उन्नति के शिखर पर है। आपकी वर्तमान में दो फर्म्स कपडे की श्री जेठमल बक्तावरमल और बक्तावरमल घेवरचन्द के नाम से चल रही हैं। दोनो फर्मों पर प्रतिवर्ष लाखों का व्यापार होता है। आप स्था० समाज में प्रमुख व्यक्ति हैं, धार्मिक एव सामाजिक कार्यों में अदम्य उत्साह रखते हैं। वर्तमान में आप सेवा-सदन आयंबिल खाते के प्रेसिडेण्ट हैं। आप संस्थाओं को उदारतापूर्वक दान देते रहते हैं। जलगाँव गुरुकुल का सचालन भी आपकी उदारता का उदाहरण है। आप पूर्ण सादगीमय जीवन व्यतीत करते हैं। धार्मिक-कार्यों में अग्रेसर होने से स्थानकवासी समाज आपकी सराहना करती है। स्थानीय सार्वजनिक गोशाला के भी आप कई वर्ष मन्त्री रह चुके हैं। आपके तीनों पुत्र भी धार्मिक व्यक्ति हैं। व्यापार-कार्य में दक्ष होने से फर्म्स का बडा ही सुन्दर सचालन करते हैं।

भारत के सुविख्यात लोकप्रिय चिकित्सक डॉ० श्री नन्दलालजी बोर्डिया

उदयपुर निवासी श्रीमान् लक्ष्मीलालजी बोडिया के द्वितीय सुपुत्र श्री नन्दलालजी बोडिया का शुभ जन्म ११ जनवरी, सन् १९१० को हुआ था।

'महाराणा कॉलेज' उदयपुर से आपने मैट्रिक की परीक्षा सन् १९२६ में उत्तीर्ण की। पिता श्री के इन्दौर बस जाने के कारण 'मेडिकल कॉलेज' इन्दौर से सन् १९३० में एल०, सी० पी० एस० की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९३६ में एम० बी० बी० एस० तथा १९४१ में एम० डी० की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

इस प्रकार एक कुशाग्र-कुशल-चिकित्सक की विविध

योग्यताओं से विभूषित होकर आपने होलकर राज्य में शासकीय सेवाएँ स्वीकार कीं। पदोन्नत होते हुए वे आज कई वर्षो से क्षय-चिकित्सा विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य कर रहे हैं। देश में बढे हुए इस रोग को नष्ट करने में आप सिद्धहस्त हो चुके है। फुपफुस की रोग युक्त अस्थि के स्थान पर कृत्रिम अस्थि आरोपित करने में भी आप विलक्षणत दक्ष है। सन् १६४७ में आपने अमेरिका की यात्रा की और वहाँ से आप एफ० सी० सी० पी० की उपाधि प्राप्त कर भारत लौटे।

आर्त एव पीडितजन के साथ आपकी सहानुभूति एव निस्वार्थ करुणा ने आपको सभी का प्रिय बना दिया है। आप न्युट्रेशन रिसर्च इस्टीट्यूट के 'फेलो' भी रह चुके हैं। विश्व-स्वास्थ्य सघ ने आपको जिनेवा में सात मास तक विश्व-स्वास्थ्य की समस्याओ के सम्बन्ध में परामर्शदाता के पद पर प्रतिष्ठित रखा। आप 'भारतीय टी० बी० असोसिएशन' के सदस्य तथा 'क्षयपीडित सहायक सघ' के प्रधानमन्त्री है।

चिकित्सा-विज्ञान में और अधिक निपुणता सम्पादित कर आप अभी-अभी ही अपनी दूसरी अमेरिका-यात्रा सम्पन्न कर स्वदेश लौटे हैं।

'आध्यात्मिक विकास-सघ' का भी सयोजन स्वय डॉ० सा० ने मुनि श्री सुशीलकुमारजी शास्त्री की सत् प्रेरणा से किया था। वास्तव मे डॉ० सा० स्था० समाज के गौरवान्वित श्रावक हैं।

स्व श्री छोटेलाल जी पोखरना, इन्दौर (म भा)

आप का शुभ जन्म रामपुरा (म भारत) में हुआ था। आपने इन्दौर आकर मैट्रिक से आगे अध्ययन करना प्रारम्भ किया। आपका विद्वान् सन्त महात्माओं से अच्छा परिचय था। सामाजिक व धार्मिक कार्य करने की जिज्ञासा होने से कठिन से-कठिन कार्य हाथ मे ले लेते और सफलता

भी आप की चेरी बन जाती थी। आप के इन कार्यों को सफल बनाने में स्व० रा० ब० सेठ कन्हैयालाल जी भण्डारी तथा उनके लघुभ्राता सेठ सुगनमल जी भण्डारी का शुभाशीर्वाद रहता था।

आप एक उत्साही एव कर्मठ कार्यकर्ता थे। किन्तु असाध्य रोग से पीडित रहने के कारण आप का अल्पायु में ही देहावसान हो गया।

श्री सागरमल जी चेलावत, इन्दौर

आप अ० भा० स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की मध्य-भारत, मेवाड प्रान्तीय शाखा की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। आप जोधपुर से निकलने वाले साप्ताहिक 'तरुण-जैन' के सम्पादक मण्डल में भी है। इन्दौर नगर के स्थानकवासी समाज की प्रत्येक सामाजिक व धार्मिक कार्य में मुख्य रूप से सदैव सक्रिय भाग लेनेवाले एक क्रान्तिकारी नवयुवक हैं। आप निम्नलिखित सस्थाओ के मुख्य सक्रिय सहयोगी भी हैं—

१ —आध्यात्मिक विकास सघ, इन्दौर।

२—श्री महावीर जैन सिद्धान्तशाला-सयोजक।

३ —महिला कला-मन्दिर इन्दौर।

श्री मानकमल नाहर "विद्यार्थी" पत्रकार, इन्दौर

आप स्थानकवासी जैन-जगत् के तरुण कार्यकर्ता, लेखक तथा पत्रकार हैं। आप श्रीमान् मिश्रीलाल जी नाहर के होनहार सुपुत्र है, जो अत्यन्त मेधावी तथा कुशाग्र बुद्धि होने के कारण सदैव अपनी कक्षा में सर्वप्रथम आते रहे जिसके फलस्वरूप आपको मेरिट स्कॉलर शिप' आपको प्राप्त हुई। अनेक सामाजिक सस्थाओ

के विशेषकर युवक सघों के आप मन्त्री-पद पर स

मध्य भारत के प्रमुख कार्यकर्ता

श्री चम्पालालजी, धार
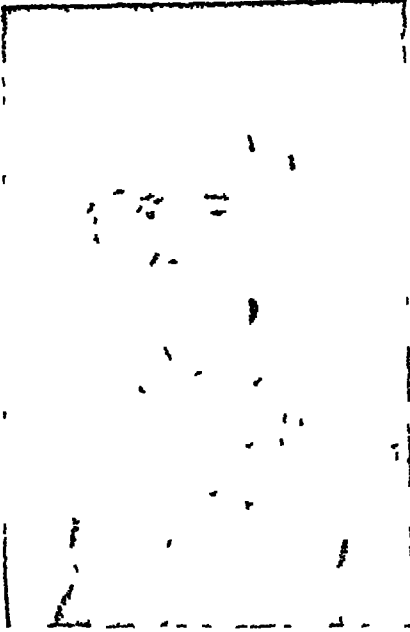
श्री केशरीलालजी जैन M A LL B, धार
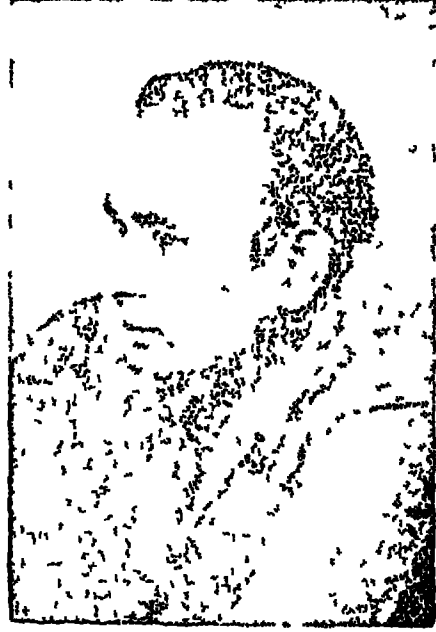
श्री मिमरथमलजी मालवी, रतलाम
स्वागताध्यक्ष—मेवाड प्रान्तीय श्रावक सम्मेलन, रतलाम
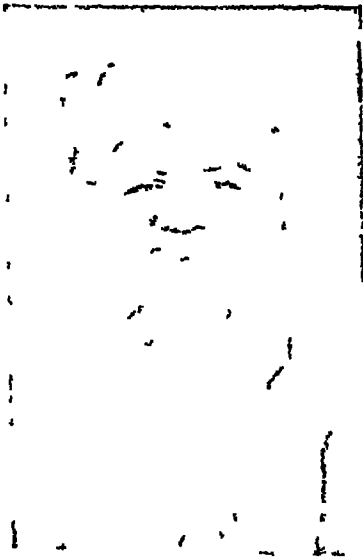
वोहतलालजी भडारी
मत्री—श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ रामपुरा
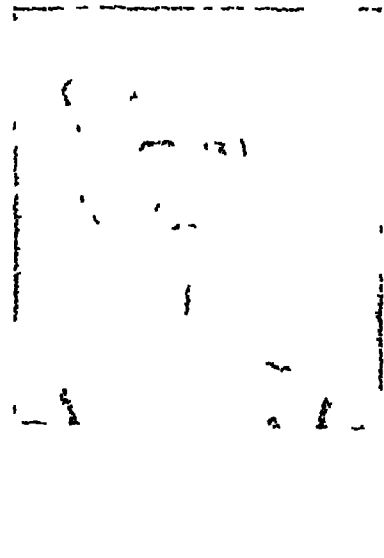
सेठ वर्धमानजी पितलिया, रतलाम

श्रीमान् पितलिया जी का जन्म १९३७ में हुआ था। आपके पिता श्री अमरचन्दजी का जीवन वडा आदर्श-जीवन था। उनके वे सब गुण आपके जीवन में भी आ गये थे। आप बहुत छोटी अवस्था से ही समाज के परिचय में आ गये थे। कान्फ्रेंस के प्रथम मोरवी अधिवेशन के समय आपने युवक-नेता के रूप में अग्रगण्य भाग लिया था। धर्मवीर दुर्लभजी भाई को शुरुआत मे ही समाज-सेवा के प्रत्येक कार्य में आपका सहयोग रहता था। कान्फ्रेंस के द्वितीय अधिवेशन रतलाम के बाद तो वे कान्फ्रेंस के इतने प्रगाढ सम्पर्क में रहे कि वर्षों तक कान्फ्रेंस की तमाम प्रवृत्तियो का सचालन आपके द्वारा ही होता रहा था। रतलाम में ट्रेनिंग कालेज की स्थापना और वर्षो तक उसको अपनी देख-रेख में चलाना यह उनका एक महत्वपूर्ण कार्य था। जब तक कान्फ्रेंस ओफिस रतलाम में रही तब तक वे उसके जनरल सेक्रेटरी थे। आप श्रीमान् होते हुए भी समाज-सेवा के लिये हर समय तत्पर रहते थे। कान्फ्रेंस ओफिस का दपतर रतलाम से जब सतारा चला गया, तब रतलाम में पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की सम्प्रदाय के हितेच्छु श्रावक मंडल की स्थापना की गई थी। इस मंडल के आप प्रमुख थे। मडल की स्थापना से लेकर अन्तिम समय तक आपने मडल की तथा उसके द्वारा सम्प्रदाय, समाज और धर्म की अपूर्व सेवा की थी। सामाजिक व धार्मिक उलझनो को सुलझाने में आप वडे प्रवीण थे। श्री दुर्लभजी भाई को जब भी किसी प्रश्न का हल न मिलता तो वे झट आपके पास आ जाते थे और दोनो मिलकर उसका हल खोज लेते थे।

स्व० पूज्य श्री श्रीलाल जी म० तथा पूज्य श्री जवाहरलालजी० म० के प्रति आपकी अचल भक्ति थी। आप पू० जवाहरलालजी म० की सम्प्रदाय के अग्रगण्य श्रावक ही न थे मुख्य सचालक भी थे। आप अपने वचन के वडे पावन्द तथा समय को समझने वाले थे।

स० १९९८ द्वितीय जेष्ठ वदी १३ को शाम को आप प्रतिक्रमण कर रहे थे कि अचानक छाती में दर्द होना शुरू हुआ और प्रतिक्रमण पूरा होते-होते ही आप अपने इस नश्वर शरीर को छोडकर स्वर्गवासी हो गये।

श्री इन्दरमलजी मा० कावडिया, रतलाम

यद्यपि आप भौतिक शरीर से इस समय विद्यमान नहीं हैं। किन्तु आपका यश शरीर कायम है। स० १९५६ में आपकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया। उस समय आपकी आयु लगभग बत्तीस वर्ष की थी। आर्थिक स्थिति भी आपकी अच्छी थी। लोगो ने फिर से विवाह करने के लिये आप पर दवाव डाला किन्तु फिर से विवाह न करने की बात पर आप दृढ बने रहे और शीलव्रत धारण कर लिया। आपकी सर्राफे की दुकान थी, वह भी धीरे-धीरे समेट ली और धर्मध्यान तथा जनाराधना में ही अपना जीवन-यापन करने लगे। आपने कई संतो को ज्ञान का वोध दिया और कितने ही लोगो की भगवती दीक्षा में सहायक बनकर अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग करते थे। कितने ही गरीब स्वधर्मी भाइयो का भरण-पोषण कर स्वधर्मी वात्सल्य का प्रगाढ परिचय देते थे। आपकी सन्तान में केवल एक ही कन्या थी। पाठशाला में प्रतिदिन पधार कर बालक-बालिकाओ को नैतिक एव धार्मिकशिक्षा देते और सस्कार डालते थे। आपसे सस्कार पाये हुए अभी भी अनेक नागरिक हैं जिन का जीवन नैतिक एव धार्मिक दृष्टि से वडा ही सुन्दर है।

स० १९७६ में सथारा-सलेखनायुक्त पडित मरण पाकर आप स्वर्गवासी हुए।

छोगमलजी उम्मेदमलजी छाजेड, रतलाम

ये दोनो भाई रतलाम के निवासी थे। दोनो में प्रेम ऐसा था कि आप लोग इन्हे कृष्ण और बलभद्र के नाम से कहा करते थे। शरीर के वर्ण से भी एक श्याम और दूसरे गौर वर्ण थे। दोनो भाइयो के कई वर्षों से चारो खद के त्याग थे। एक साल में १५१ छकाया करते थे और ५१ द्रव्यके उपरान्त यावत् जीवन के त्याग थे।

छोटे भाई छोगमलजी का सन् १९७३ में स्वर्गवास हुआ। बडे भाई उम्मेदमलजी का स० १९७९ में कार्तिक सुदी ९ को स्वर्गवास हुआ। आपने अन्त समय में पूज्य माधव मुनिजी से सथारा ग्रहण किया था।

श्री नाथूलालजी सा० सेठिया, रतलाम

आप एक होनहार और उत्तम व्यक्ति है। आपका जन्म स० १९६१ में हुआ था। आपके पिताजी श्री हीरालालजी सा० भी सज्जन पुरुष एव उत्साही थे तथा आपकी धर्म-भावना अत्यन्त प्रशसनीय थी। आप प्रतिवर्ष अपने परिवार को लेकर मुनि-महात्माओ के दर्शनार्थ पधारते थे। अपने पिताजी के धार्मिक सस्कार पुत्र में भी उतरना स्वाभाविक है।
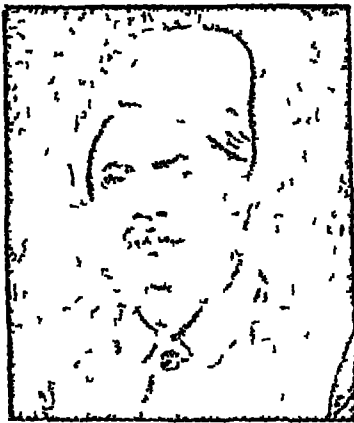
अपनी अल्पवय में ही आपने व्यवसाय सँभाला और उसे बढाना प्रारम्भ कर दिया। सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में आपने बहुत अधिक लोकप्रियता प्राप्त की है। आप बडे ही मिलनसार, हँसमुख एव प्रतिभासम्पन्न है। आपने स्थानीय सघ के कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग दिया और दे रहे है। आपकी धार्मिक भावना भी बहुत अच्छी है। प्रतिदिन सामायिक व्रत में आप दृढ है। सन्त-मुनिराजो की सेवा-भक्ति में आप सदा अग्रसर रहते है। आप रतलाम श्री सघ के अध्यक्ष है। इस कार्य का बडी योग्यतापूर्वक आप सचालन कर रहे है।

श्री बालचन्दजी सा० श्रीश्रीमाल, रतलाम

आप रतलाम के निवासी, धर्म-प्रेमी, नित्यनियम में चुस्त, शास्त्रो के चिन्तन-मनन तथा पठन-पाठन में उत्सुक दृढ श्रद्धावान् श्रावक हैं। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० के आप अनन्य भक्त हैं। वर्षों तक श्री हितेच्छु श्रावक मण्डल का काम बडी योग्यता एव दक्षता के साथ सँभाला था। मण्डल के तथा धार्मिक परीक्षा बोर्ड के आप मानद् मन्त्री रहे। इसी मण्डल से आप द्वारा प्रकाशित सम्पादित एव लिखित साहित्य अपना अग्रिम स्थान रखता है। सवत् १९९५ में कॉन्फ्रेन्स ऑफिस में दो वर्ष तक रहकर अपनी सेवाएँ आपने अर्पित की थीं। अजमेर सम्मेलन के समय Treasurer के रूप में काम सँभाला था। कॉन्फ्रेन्स के तत्कालीन सभापति श्री हेमचन्दभाई के हाथो से कॉन्फ्रेन्स की तरफ से आपको स्वर्ण-पदक प्रदान किया था। मण्डल ने आपको सन्मान-थैली दी थी वह आपने मण्डल को भेंट कर दी।

आप इस समय ६७ वर्ष के है। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा सराहनीय है। आदर्श श्रावक हैं।

श्री धूलचन्दजी भडारी, रतलाम

श्री भडारी का जन्म सन् १८७५ में हुआ था। आप एक निर्धन कुटुम्ब में उत्पन्न हुए थे, परन्तु अपने पुरुषार्थ से आपने सवालाख रुपये की सम्पत्ति पैदा की थी। आपने अपने जीवन में ८५,००० हजार रुपये से अधिक का दान किया। श्री धर्मदास जैन मित्र मडल के तो आप सर्वेसर्वा थे। मडल की स्थापना तथा प्रगति में आपका प्रमुख हाथ था। उसकी हरएक प्रवृत्ति में आप सक्रिय भाग लेते थे।

धार्मिक लगन आपकी प्रशसनीय थी। आपकी तर्कशक्ति भी उल्लेखनीय थी। थोकडो तथा सूत्रो का आपको अच्छा ज्ञान था। अन्त में आप ता० ३१-३-१९४० को ६५ वर्ष की उम्र में स्वर्गवासी हुए।

श्री मोतीलालजी सा० श्री श्रीमाल, रतलाम

आपका जन्म स० १९४६ में हुआ था। आपके पिता श्री रिखबदासजी श्रीश्रीमाल बहुत ही धर्मात्मा और ज्ञानी थे। यद्यपि आपका व्यावहारिक शिक्षण नगण्य ही हुआ तथापि आप प्रकृति के सौम्य, शान्त और कोमल हैं। धर्म पर आपकी प्रगाढ श्रद्धा है। बाल्यावस्था में ही आपने जमींकन्द का त्याग कर दिया। रतलाम में जैन ट्रेनिंग कॉलेज जब प्रारम्भ हुआ तब आपके भ्राता श्री बालचन्दजी सा० ने आपको इस कॉलेज में प्रविष्ट करा दिया। एकाग्रता से शिक्षण प्राप्त कर आपने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो त्रैवार्षिक महोत्सव में श्री रतलाम नरेश के कर-कमलो से स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। उक्त कॉलेज में कुछ समय तक सुपरिन्टेण्डेण्ट का भी कुशलता से काम किया। शिक्षा में अभिरुचि होने के कारण आपने अभ्यास जारी रखा और क्रमश बढ़ते हुए बी० ए० पास कर लिया। कई वर्षों तक श्री धार्मिक परीक्षा बोर्ड, रतलाम के मन्त्रीपद पर आपने कार्य करके समाज में धार्मिक शिक्षण के महान् कार्य में हाथ बँटाया।

श्री सेठ हीरालालजी सा० नादेचा, खाचरौद

आप श्रीमान् सेठ स्वरूपचन्दजी सा० के पौत्र तथा श्री प्रतापचन्दजी सा० के सुपुत्र हैं। आपका मूल निवास धार जिले में मुलथान गाँव है परन्तु आपकी अल्पायु में ही दादाजी एव पिताजी का स्वर्गवास होने से खाचरौद स्थित अपनी दुकान को सँभालने के लिए आपकी माताजी आपको लेकर खाचरौद आई और तभी से आप यहाँ रहने लगे। आपकी शिक्षा आदि की देखरेख श्री इन्दरमलजी सा० कोठारी

के संरक्षण में हुई। आपकी बुद्धि बडी तीक्ष्ण थी अत स्वल्प समय में ही शिक्षा ग्रहण कर अपना फैला हुआ कारोबार सँभाल लिया। आप बडे ही मिलनसार, बुद्धिमान् तथा हँसमुख सज्जन हैं। श्री जैन हितेच्छु श्रावक मण्डल के आप अध्यक्ष के रूप में कई वर्ष तक सेवा देते रहे। इसके अतिरिक्त कॉन्फ्रेन्स की मध्यभारत शाखा के आप वर्तमान में अध्यक्ष हैं।

समाज में शिक्षा-प्रचार के कार्य में आप बडी दिलचस्पी के साथ भाग लेते हैं और शिक्षा सस्थाओ तथा छात्रों को समय-समय पर प्रोत्साहन देते रहते हैं। खाचरौद में चलने वाले श्री जैन हितेच्छु मण्डल विद्यालय को उसके प्रारम्भ से लेकर अब तक प्रतिमाह २००) आप देते रहे। अब जब कि यह विद्यालय बन्द हो गया है उसको दी जाने वाली रकम में से प्रतिवर्ष लगभग १०००) निर्धन छात्रो को देकर ज्ञानदान में सक्रिय हाथ बँटाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के सुख-दुख के प्रसगो पर उपस्थित होकर उसके सुख-दुख में हाथ बँटाते हैं।

इस प्रकार क्या सामाजिक और क्या सार्वजनिक क्षेत्रो में आपकी लोकप्रियता "दिन-दूनी रात चौगुनी" बढ रही है।

श्री चाँदमलजी सा० पितलिया, जावरा

आप श्रीमान् सेठ अमरचन्द जी सा० के लघुभ्राता सेठ बच्छराज जी के सुपुत्र थे। स० १९४३ में आप का जन्म हुआ था। आप के पिता जी का अल्प आयु में ही देहावसान हो जाने के कारण आपकी शिक्षा आदि का प्रबन्ध सेठ अमरचन्द जी सा० को ही करना पडा। आप बडे ही उत्साही-सेवाभावी सज्जन थे। कॉफ्रेंस का दूसरा अधिवेशन रतलाम में हुआ था तब आप ने बडी सफलता के के साथ खजांची का काम किया। इसके अतिरिक्त कॉफ्रेंस की मालव प्रान्तीय शाखा के कई वर्ष तक सेक्रेटरी के रूप में समाज के लिए अपनी सेवाएँ समर्पित कीं। जावरा सघ के आप अग्रगण्य नेता थे तथा प्रत्येक शुभ कार्य में आपका सहयोग रहता था। प्रत्येक व्यक्ति के प्रति आपका व्यवहार सराहनीय रहता था। स० १९९५ में स्वर्गीय पूज्य श्री श्रीलालजी म० सा० चातुर्मास कराकर जावरा सघ को यशस्वी बनाया था। इस प्रकार सामाजिक तथा धार्मिक

क्षेत्रों को अपने सुकृत्यो से प्रभावित करते हुए मालवा की इस महान् विभूति का स० १९८३ में स्वर्गवास हो गया।

फूल नहीं रहा किन्तु उसकी सुवास अब तक विद्यमान है।

श्री सुजानमलजी मेहता, जावरा

आप जवरा के निवासी श्रीमान् सौभागमल जी सा० मेहता के सुपुत्र है। आप को हिन्दी, उर्दू, अग्रेजी और गुजराती का अच्छा ज्ञान है। आप कपडे के व्यापारी एव कमीशन एजेन्ट हैं।

श्री सुजानमलजी मेहता
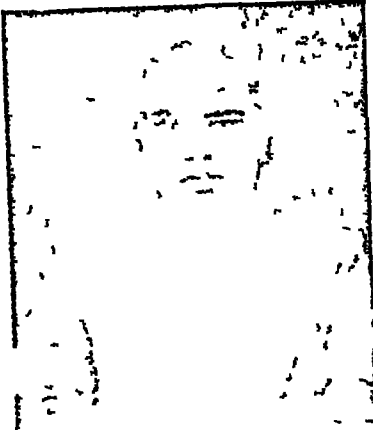
सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियों और गति-विधियो के आप प्रमुख आधार है। आप वर्तमान में श्री वर्द्धमान जैन युवक मण्डल के अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस एव सघ ऐक्य सचालक समिति की मध्यभारत एव मेवाड प्रान्तीय शाखा के मानद् मन्त्री व स्थानीय श्रावक सघ के मन्त्री है। नगरपालिका के आप सम्मानित निर्वाचित सदस्य हैं। इनके अतिरिक्त अनेक सामाजिक, धार्मिक तथा स्थानीय सस्थाओ और समितियो के अध्यक्ष, मन्त्री तथा सदस्य हैं।

इनके अतिरिक्त, जावरा क्लॉथ मर्चेंट्स असोसिएशन के मन्त्री, नगर काग्रेस के कोषाध्यक्ष व अन्य कई सस्थाओ के पदाधिकारी व प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं।

श्री सौभाग्यमलजी मेहता

आपने कई बार कॉफ्रेंस द्वारा आयोजित डेपुटेशनो में सम्मिलित हो कर समाज-सेवा में पूर्णरूप से तन-मन-धन से सक्रिय सहयोग दिया है और दे रहे हैं।
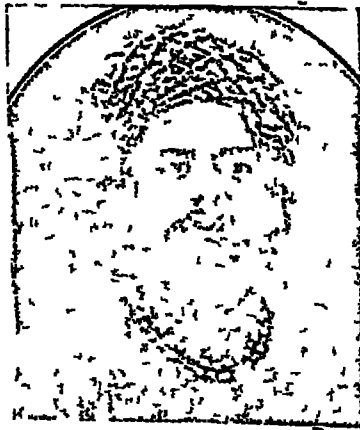
पिछले तीन वर्षो से कान्फ्रेन्स की प्रान्तीय शाखा के मानद् मन्त्री के रूप में अथक परिश्रम किया है। अभी-अभी मध्यभारत एव मेवाडप्रान्तीय श्रावक सम्मेलन आयोजित कर आगामी भीनासर के अधिवेशन की पृष्ठभूमिका तैयार कर महान् कार्य किया है।

समाज को आप से बडी-बडी आशायें हैं, जिसका पूर्वाभास हमें अभी से होने लगा है।

श्री चम्पालाल जी सा० कोचेटा, जावरा

आज के इस दूषित वातावरण में धर्मानुराग और सच्ची समता का जीवन देखना हो तो श्री चम्पालाल जी सा० को देख ले। निर्धन परिवार में जन्म लेकर आपने आशातीत सफलता के साथ व्यापार में प्रगति की। अर्थ-सचय ही आपके जीवन का उद्देश्य नहीं है। अब तो आपने जीवन का समस्त भाग धर्माराधन में लगा दिया है। आप प्रतिदिन पाँच सामायिक और प्रतिक्रमण करते हैं। गर्म पानी का सेवन करते है और एक ही समय भोजन करते है। भोजन-पदार्थों में भी जीवन के लिए अनिवार्य वस्तुओ के अतिरिक्त सभी वस्तुओ का त्याग कर दिया हे। इस प्रकार आपका जीवन पूर्णरूप से सयत-नियमित एव मर्यादित है। आप अनेक सस्थाओ के सरक्षक एव समाज के अग्रगण्य व्यक्ति हैं। श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावकसघ, जावरा के आप मनोनीत अध्यक्ष हैं।

आप के सुयोग्य पुत्रो में श्री सौभाग्यमल जी कोचेटा, श्री राजमलजी कोचेटा B A L-LB एव श्री हस्तीमल जी कोचेटा तीनो ही सामाजिक कार्यों में प्रमुखता से भाग लेते हैं। श्री सौभाग्यमल जी सा० तो समाज के सुयोग्य लेखक और वक्ता हैं।

श्री नन्नूमलजी, देवास

उत्साही एव मिलनसार सामाजिक कार्यकर्ता हैं। सदैव धार्मिक कार्यों में हर प्रकार से सहयोग देते हैं।

श्री विजयकुमारजी जैन, देवास

अठारह वर्षीय प्रतिभाशाली यह छात्र सदैव धार्मिक तथा सामाजिय प्रवृत्तियो में उत्साह के साथ सहयोग देते हैं। साहित्यिक तथा उत्कृष्ट चित्रकार हैं।

श्री केशरीमल जी, शिवसिंह जी, रतनलाल जी, रणबहादुरसिंह जी, राजमल जी, चैनसिंह जी आदि सज्जन भी सदैव उत्साह के साथ धार्मिक प्रवृत्तियो मे सहयोग देते हैं।

श्री पारसचन्दजी सा० मुथा, उज्जैन

आपका जन्म सन् १६२१ में हुआ। आप प्रसिद्ध समाज-सेवी तथा श्रीमन्त छोटमल जी मुथा के सुपुत्र हैं। अपने पिता के समान ही धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में आपका भी प्रमुख हाथ रहता है। आप एक कमठ नवयुवक कार्यकर्ता हैं किन्तु कभी भी आगे आने का प्रयत्न नहीं करते। अवन्तिका में आयोजित अखिल भारतीय सर्व धर्म-सम्मेलन की सफलता में आपका योगदान महत्त्वपूर्ण रहा। समाज को और अधिक सेवाएँ आपसे प्राप्त होने की आशा है।

श्रीमान् सेठ छोटेमलजी सा० मुथा, उज्जैन

आपका जन्म सवत् १६४५ फागुन सुदी २ को हुआ था। बाल्यावस्था से ही अध्ययन की ओर आपकी अत्यन्त रुचि थी। चौदह वर्ष की अवस्था में ही इंग्लिश सीखने के लिए एक पुस्तिका आपने प्रकाशित कराई थी, जिसका प्रचार उन दिनो में अत्यधिक हुआ था। किशोरावस्था में ही आपके पिता एव बड़े भाइयो का स्वर्गवास हो गया था। उस समय आपकी उम्र केवल १५ वर्ष की थी। आपने अपनी कुशाग्रबुद्धि से व्यापार कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। कान्फ्रेन्स के मोरवी और रतलाम के अधिवेशनो में आपका काफी सहयोग रहा था। धर्मध्यान की ओर आपका विशेष लक्ष था। गत चार वर्षो में अस्वस्थ रहते हुए भी मुनिराजो की बड़ी भक्ति-भाव से सेवा करते थे। आपका स्वर्गवास सवत् २०१२ असौज वदी ६ को हुआ।

श्री मानमलजी मुथा, रतलाम

आप सेठ श्री उदयचन्द जी मुथा के सुपुत्र हैं। समाज एव धर्म के प्रति आप अत्यन्त कर्त्तव्यनिष्ठ हैं। सर्व धर्म सम्मेलन, उज्जैन में आपका सहयोग उल्लेखनीय रहा है।

श्री लक्ष्मीचन्दजी सा० राका, शुजालपुर (म० भा०)

आप स्थानकवासी समाज के अग्रणी श्रावक हैं। आपका समाज के दानवीरो में प्रमुख नाम है। आपने अपना निजी भवन कन्या पाठशाला को दे दिया है जिसकी लागत करीब २० हजार रु० है। आपका खानदान बड़ा ही यशस्वी है। लेन-देन का व्यापार होता है। आप सुप्रसिद्ध व्यापारियों में से हैं।

श्री केसरीमलजी मगनमलजी राका, शुजालपुर, म० भा०

आप स्थानकवासी समाज में प्रमुख कार्यकर्ता हैं। आपके सुपुत्र का नाम श्री बसन्तीलालजी है। आप भी अपने पिता श्री की तरह ही सुयोग्य एव विद्वान् हैं। मडी में आपके क्लोथ मर्चेन्ट और आढत का कार्य अच्छा चल रहा है। प्रतिवर्ष हजारो का व्यापार होता है। आप एक उच्चकोटि के दानी भी हैं। आपके घर से कोई खाली हाथ नहीं जाता। आपका पूर्ण सादगीमय जीवन है। समाज की सेवा में आप तन, मन, और धन से हाथ बँटाते हैं और अपना अहोभाग्य समझते हैं। समाज को आप जैसे कर्मठ दानियो से भविष्य में पूर्ण आशाएँ है।

श्री किशनलालजी सा० चौधरी, पोरवाल

आपका शुभ जन्म स० १६५५ की कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को शुजालपुर में हुआ था। आपके पिता जी श्री का शुभ नाम गिरनारसिंह जी हैं। आप स्था० समाज के प्रमुख व्यक्तियो में से हैं। आपके चार सुपुत्र हैं जिनके क्रमश: नाम श्री मोतीलालजी, श्री हुक्मीचन्दजी, श्री राजेन्द्र-कुमारजी, और श्री शान्तिकुमारजी हैं। चारों ही सुपुत्र धर्म-शील एव उत्साही कार्यकर्ता हैं। आपके पूर्वज स्व० श्री मनसुखलालजी ने एक मकान बनवाकर स्थानक के लिए स्थानीय श्री सघ को भेंट कर दिया था जिसकी लागत आज अनुमानत ८०००) रु० समझी जाती है। अब वह श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ के अधिकार में है। आपके पूर्वजो से ही सस्थाओ को उदारतापूर्वक दान देने की प्रणाली चली आ रही है। आपने जनता की सेवा खूब तन-मन से की। जिसके उपलक्ष्य में आपको ग्वालियर सरकार की ओर से एक पौशाक और सनद सर्टिफिकेट दिया गया। आपकी सादगी एव उदारता लोकप्रिय हैं। आप मधुरभाषी भी हैं। समाज के हर कार्य में दक्ष हैं। वर्तमान में आप कोषाध्यक्ष हैं।

श्री मनसुखलालजी भँवरलालजी पोरवाल गुजराती

आपका शुभ जन्म १६७३ में शुजालपुर ग्राम नलखेडा में हुआ था। आपके पिता श्री का नाम श्री पदमसिंहजी था। आप स्थानीय स्थानकवासी समाज में प्रमुख व्यक्ति हैं। आपने एक पुत्र गोद लिया जिनका शुभ नाम सतोषी-लालजी है। श्री सन्तोषीलालजी के भी दो पुत्र हैं जिनके क्रमश शान्तिलालजी व पोखरमलजी नाम हैं। आपने अभी-अभी सामाजिक कार्यों में धर्मशाला के लिए एक मुश्त ३५०००) रु० देने की भावना अभिव्यक्त की है। आप धनीमानी एवं धार्मिक विचारो के सद्गृहस्थ हैं। प्रत्येक धर्मकार्य में दिलचस्पी से काम करते हैं। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। प्रकृति से आप भद्रिक, सन्तोषी, सज्जन और मिलनसार हैं। हर एक सस्था को खुले दिल से दान देते हैं।

स्वर्गीया श्री सुन्दरबाई, शुजालपुर
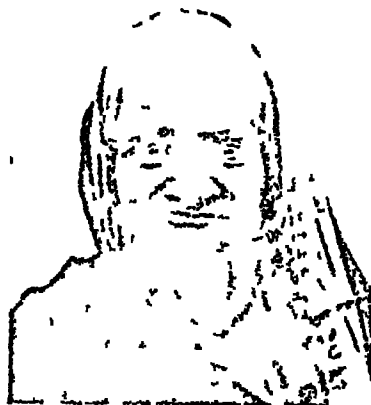
आपका जन्म स० १६२६ में सीतामऊ गाम में हुआ था। आप का विवाह शुजालपुर निवासी श्री ओंकार-लालजी चौधरी के साथ हुआ था। आप में सेवा व त्याग की उच्च कोटि की भावना थी। आपने अपने जीवन में अमीरी और गरीबी के दिन भी देखे थे। गरीबी भी ऐसी कि २-३ पैसो का १५ सेर अनाज पीसती, कपडो की सिलाई करतीं और इस प्रकार ३-४ आने आजीविका के लिए उपार्जन करती। विपत्ति के इन कठिन दिनो में भी आप घबराई नहीं। आपका पूरा जीवन एक सघर्ष का जीवन है, दृढ चट्टान के समान आपने अपने जीवन-काल में कठोर-से-कठोर आघात सहे थे।

आप प्रतिदिन निराश्रितो एव दीन-दुखियो को भोजन कराये बिना आप भोजन नहीं करती थीं। रसनेन्द्रिय को वश में करने के लिए दूध में शक्कर के बदले नमक-मिर्च डालकर ग्रहण करती थीं।

आप में दयालुता की भावना कैसी थी—यह इस उदाहरण से जाना जा सकता है। एक बार आप तागे में बैठकर कहीं जा रही थीं। रास्ते में तागे वाले ने घोडे को

आत्मविश्वास आप में ऐसा गजब का था कि एक बार आपने अपने एक भयकर गाठ का उपचार भाप द्वारा कर लिया, जिसके लिए डाक्टर शल्य-चिकित्सा अनिवार्य बतलाते थे। भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने के लिए आपने श्री ब्रिजलालजी बियाणी को अपनी इच्छा प्रकट की थी किन्तु आपकी अवस्था को देखकर श्री बियाणीजी ने मना कर दिया।

अपने अन्तिम समय में आपने औषधी ग्रहण नहीं की अपितु सथारा कर अपना प्राणोत्सर्ग किया। आजके देहावसान पर आपके सुपुत्रो ने हजारो रुपये सुकृत कार्य के लिये निकाले।

निस्सन्देह आप एक आदर्श नारी थीं, जिसके जीवन के कण-कण से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन, शाजापुर

आप श्रीमान् गेंदमल जी पोरवाड के पुत्र तथा श्री वर्धमानजी सराफ के पौत्र हैं। आपने अल्पआयु में ही M com LL B तथा साहित्यरत्न की उपाधियाँ प्राप्त कर ली हैं। आप श्रम-विधान तथा रशियन भाषा के भी विशेषज्ञ हैं। इस समय आप मध्य भारत के वित्तमत्री माननीय श्री सौभाग्यमलजी जैन के पूर्व-अभिभाषण-कार्यालय, शाजापुर को सुचारुरूप से चला रहे हैं। इसके साथ ही आय-कर विक्रय-कर तथा श्रम-विधान सम्बन्धी गुत्थियो को सरलता से सुलझा रहे हैं। इतने सुरक्षित होते हुए भी आप अपने धर्म के पूर्ण आस्थावान तथा विशेषज्ञ हैं।

श्री राजमलजी, पोरवाल पीपल (म० भा)

आप श्री सेठ पदमसिंहजी, के सुपुत्र हैं। आप स्थानकवासी समाज में अग्रगण्य श्रावको में से है। आपकी मातेश्वरी आनन्दबाई का जीवन धर्मध्यान, तप-जप व दानादि में ही व्यतीत हुआ है। आपके सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द्र जी भी आप ही की तरह धर्मप्रेमी हैं। आप बडे ही योग्य तथा विद्वान् हैं। आप समाज सेवा में अच्छा रस लेते हैं और म्युनिसिपेलिटी-न्याय पचायत में और समाज में मत्री पद सँभाले हुए हैं। आपका जीवन सादगी व सयम में व्यतीत होता है। आप लोकप्रिय सेवक हैं। आप क्लोथ-मर्चेंट हैं और लेन-देन का भी व्यापार करते हैं।

श्री आष्टा निवासी श्री फूलचन्दजी सा० बनवट

आप स्थानकवासी समाज के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। आप समाज में बडे गौरवशाली, सुदृढ धर्मी, समाज भूषण एव अदम्य उत्साही व्यक्ति हैं। आपके स्व० पिता श्री का नाम श्री प्रतापमलजी बनवट था। शहर में आपकी काफी ख्याति फैली हुई है। राज्यकीय कार्यों में आज भी और पहले भी प्रभावशाली स्थान रहा है। आपने चन्दनमल जी कोचर-फलौदी (मारवाड) निवासी, स्नानक जैन गुरुकुल ब्यावर को दत्तक पुत्र के रूप में लिया है। आप भी पूर्ण प्रभावशाली नवयुवक हैं।

श्री चन्दनमलजी बनवट, आष्टा (भोपाल)

आपका जन्म स्थान खींचन फलौदी (मारवाड) है। आपका शैक्षणिक स्थल श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर करीब सात वर्ष रहा है। बाल्यावस्था से ही आपकी प्रतिभा गुरुकुल परिवार में चमकने लगी थी। आकी वक्तृत्वशक्ति, कवित्व शक्ति, लेखनकला, सगीत कला और मिलनसारिता आदि-आदि चेतनाएँ गुरुकुल समाज में चारचाँद लगाये हुई थीं। कौन जानता था कि कोई साधारण स्थिति से बढकर एक ऐश्वर्य-सम्पन्न घर का मालिक बन जायेगा। किन्तु "पूत के लक्षण पालने में ही नजर आने लगते हैं।" अत यही कहावत आपको भली प्रकार चरितार्थ करती है।

किस्मत ने जोर मारा। पुण्य का तकाजा था अत आष्टा निवासी श्री सेठ फूलचन्दजी सा० बनवट ब्यावर आकर और सब प्रकार तसल्ली करके आष्टा ले आए। गोद सम्बन्धी सारी रस्में अदा की गई। वहाँ भी जाकर आपने अपनी सुवास बिखेरनी शुरू कर दी। जिस सेवक के अन्त करण में जाति, समाज और देश सेवा की लग्न लहरें मारती रहती हैं वह कभी और कहीं भी शान्त होकर नहीं बैठ सकता। यहाँ के कारोबार को योग्यता पूर्वक सभालते हुए आपने देश के कार्यों में भी हाथ बँटाना प्रारम्भ कर दिया और अल्पकाल में ही आप प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ की गणना में आगये। आज आप भोपाल तथा मध्यभारत की कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य हैं। जिला भोपाल कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य तथा उपसभापति भी रह चुके हैं। भोपाल विधान सभा के आप सदस्य हैं और आष्टा तहसील

से भारी बहुमत और सबसे अधिक वोट्स प्राप्त करने वाले सदस्य हैं। विधान सभा के चीफ विप (मुख्य सचेतक) हैं। आप भोपाल मध्यभारत राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के उपाध्यक्ष हैं। आपके यहां कृषि, लेन-देन थोकफरोश आदि हजारो का व्यापार चल रहा है। सामाजिक क्षेत्र में और धार्मिक क्षेत्र में भी आप अग्रणी हैं। तन,मन, एव धन से पूर्ण सहयोग देते हैं। सब कुछ होते हुए भी आपका जीवन सादगीमय है।

श्री प्यारचन्दजी सा० राका, सैलाना

आपका जन्मस्थान जावरा (मालवा) है किन्तु सैलाना वाले सेठ ओकारलालजी के यहाँ आप गोद आए हैं। आपका धर्म-प्रेम अनुकरणीय है। स्थानकवासी जैन-सघ, सैलाने के आप अग्रगण्य हैं। प्रत्येक धार्मिक-कार्य में आप अग्रभाग लेते रहते हैं। अजमेर मुनि-सम्मेलन में आपने स्थानीय और आसपास के १५० से भी अधिक भाई-वहनो को एक ओर का रेलवे आदि का खर्चा देकर ले गए थे। अनेक धर्म-सस्थाओ को आपकी ओर से सहायता मिली है और मिलती रहती है। आपकी ओर से धार्मिक साहित्य भी भेंट स्वरूप प्रकाशित होता रहता है।

'श्रमणोपासक जैन पुस्तकालय' आप ही की उदारता का फल है। पुस्तकालय वाला भवन आपके स्व० पूज्य पिता श्री द्वारा धर्मध्यानार्थ सघ को दिया हुआ है।

सैलाना में बाहर से आने वाले धर्म-बन्धुओ का आतिथ्य कम-से-कम एक बार तो आपके यहां होता ही है। यह सब होते हुए भी आप में निरभिमानता तथा विनयशीलता इतनी है कि जो अन्यत्र बहुत कम मिलेगी।

श्री रतनलालजी सा० डोसी, सैलाना (मध्य भारत)

आप समाज के प्रसिद्ध तत्त्वज्ञ चर्चावादी, साहित्य-प्रणेता एव निष्ठावान चिन्तन-मननशील सेवाभावी दृढ-आस्थावान कार्यकर्ता हैं। धार्मिक-क्षेत्र में—विशेषतया सन्त-मुनिराजो में—आई हुई अथवा आती हुई शिथिलताओ के प्रति आपका मानस अत्यन्त क्षुब्ध है। आप कट्टर सिद्धान्तो के अनुसार चलने वाले सिद्धान्तवादी हैं, जिसमें काल-मर्यादा का हस्तक्षेप भी अवाच्छनीय है। नवीन-सुधारो के नाम पर जो विकार धार्मिक-क्षेत्र में अकुरित हो रहे हैं—उनके उन्मूलन के लिए आपकी लोह-लेखनी सदैव तैयार रहती है।

आप 'सम्यक् दर्शन' पत्र का सचालन तथा सम्पादन कर रहे हैं। कहना न होगा कि इस पत्र ने समाज में अपना अनेरा स्थान बना लिया है। आपकी मान्यता है कि निर्ग्रन्थ धर्म में और इसके सिद्धान्तो में हम छद्मस्थ किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं कर सकते। समाज के धार्मिक-क्षेत्रो में पनपने वाली शिथिलताओ के लिए आप 'लाल-बत्ती' हैं।

प्रसिद्ध चर्चावादी होने के नाते चर्चा में आपको बहुत आनन्द आता है। लोकाशाहमत समर्थन जैनागम विरुद्ध मूर्ति-पूजा, सोनगढी सिद्धान्त पर एक दृष्टि आप द्वारा लिखित ऐसे ग्रन्थ हैं जो किसी खास चर्चा से सम्बन्धित हैं। आप द्वारा लिखित तथा सम्पादित धार्मिक साहित्य अनेक प्रकाशन-सस्थाओ द्वारा प्रकाशित हुआ है।

श्री डोसीजी समाज तथा धार्मिक जगत् के एक सुदृढ

स्तम्भ हैं—बल्कि प्रकाशस्तम्भ हैं। शास्त्रीय चर्चाओं की आपको विशेष आनन्द आता है। आपने अपना जीवन धार्मिक विचारों के स्थिर करने एवं प्रसार करने में लगा दिया है। पूर्ण रूप से आस्थावान समाज के धार्मिक-क्षेत्र में यह ज्योतिर्मय नक्षत्र अपनी ज्योति-किरणों से धार्मिक-क्षेत्र को आलोकित करे—यही शासन देव से प्रार्थना है।

श्रीयुत मोतीलालजी माडोत, सैलाना

आप श्री सैलाना-निवासी हैं। समाज में आप एक आदर्श श्रावक की गणना में हैं। आपकी अवस्था वर्तमान में ५१ वर्ष की है। आपने कई वर्षों से ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया है। नित्य प्रति कम-से-कम तीन विगय का तो त्याग करते ही हैं। आप अन्य तपस्या के साथ-साथ हमेशा एकासन करते हैं। अष्टमी चतुर्दशी को प्राय पौषध करते हैं और रात्रि-शयन स्थानक में ही होता है। रात्रि में दो बजे बाद धर्म जागरण में व्यस्त हो जाते हैं। आप परम वैराग्यावस्था का अनुभव कर रहे हैं। आपके पिता श्री भी मौजूद हैं। आपकी श्रीमतीजी ने एक पुत्र तथा चार पुत्रियों को जन्म दिया है। इस प्रकार धर्म-साधना में रत एवं त्यागमय जीवन से सैलाना का स्था० समाज गौरवान्वित है। सरकारी नौकरी को छोड़कर आपने अपना भविष्य परमोज्ज्वल बनाने का बीड़ा उठाया है।

स्व० आदर्श श्रावक श्री केशरीचन्द जी सुराना, रामपुरा

आप उन आदर्श श्रावकों में से थे जो साधु न होते हुए साधुओं के समान कहे जा सकते हैं। आपका जन्म सं० १९२० में रामपुरा में हुआ था। आप के पिता श्री का नाम जवरचन्दजी था जो उस समय अनाज के प्रसिद्ध व्यापारी थे। श्री केशरीचन्द जी सा० जब बारह वर्ष के थे तब उन्हें तोल करने के लिये जुवार के कोठे पर भेजा गया। जुवार पुरानी थी अत उसमें जानवर पड गये थे और तोल करते समय जानवरों का मरना स्वाभाविक था। बिजली की तरह दया की भावना आपके हृदय में प्रवाहित हुई और कोठे से हटकर सीधे स्थानक में जाकर बैठ गये। इस प्रकार माता-पिता भाई-बहन आदि १०० कुटुम्बी जनों को छोड़कर विरक्त हो गये। स्थानक में आने के बाद श्रावकजी ने खुले मुँह बोलना, कच्चा पानी पीना, हरी वनस्पति खाना आदि कई त्याग कर दिये। दिन में कभी सोते नहीं थे और दीवार के सहारे बैठते न थे। आहार रात्रि के ६ घण्टे के अतिरिक्त आपका सब समय धर्मध्यान में लगता था। बत्तीसो शास्त्रों का कई बार आपने पारायण कर लिया था। वर्षभर में सब मिलाकर पांच माह भोजन करते थे।

आप बड़े ही साहसी थे। जिस स्थानक में आपने अपना जीवन बिताया वह इतना विशाल था कि उसमें दो-तीन साधु अथवा दो-तीन श्रावकों के रहने में रात के समय डर लग सकता है। कई माह तक आप अकेले उस स्थान में रात के समय रहे थे। आप के इस अपूर्व साहस को देखकर जनता आश्चर्य-चकित रह जाती थी। इस प्रकार त्यागमय धर्ममय और सयममय जीवन यापन करते हुए इस आदर्श श्रावक का सं० १९९० में कुछ दिनों की बीमारी के कारण देहावसान हुआ किन्तु अपनी बीमारी के दिनों में आपने कभी भी कसूर अथवा टीस न भरी। यह थी आप की अपूर्व सहनशीलता।

आप सदैव मुँह पर मुँहपत्ती रखते थे। न कभी वाहन पर बैठे और न कभी जूते पहने। आप को ३०० थोकडे कण्ठस्थ याद थे।

आपके जीवन की विशेष महत्त्व की बात एक यह भी है कि साधु-साध्वी जी रामपुरा में चातुर्मास प्राय इसलिए करते थे कि यहाँ पर वे श्रावकजी से शास्त्र-सम्बन्धी अपनी शंकाओं का निराकरण करा सकें।

धर्मध्यान की पृच्छा के अतिरिक्त आप किसी से कुछ भी बोलते तक न थे। सत्य ही ऐसे आदर्श और विरक्त श्रावक ही जिनशासन के गौरव को बढाने वाले होते हैं।

श्री राजमलजी कडावत, रामपुरा

आप सच्चे श्रावक तथा गरीबों के प्रति दया एवं प्रेम के घर थे। आपने एक मुश्त ५१,०००) का दान देकर "श्री वर्द्धमान जैन हितकारी ट्रस्ट" की स्थापना की जिसके वर्तमान सभापति इन्दौर वाले श्री सुगनमलजी सा० भण्डारी हैं। नाम की तथा यश की आपको तनिक भी लालसा

नहीं थी और यही कारण है ट्रस्ट में न तो आपने अपना नाम रखा और न उसके सदस्य ही रहे।

श्री विट्ठलजी केदारजी चौधरी, रामपुरा

आपका जन्म सं० १६४४ में हुआ था। छोटी उम्र में ही आप व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त कर अपने पिताजी के कार्य में मदद करने लगे। धार्मिक प्रवृत्ति तथा आचार-विचार की तरफ आपका झुकाव बचपन से ही था। आपके सुपुत्र श्री लक्ष्मी-चन्द्रजी अपने पिता के समान ही धार्मिक एव सामाजिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। अपने यहाँ के स्वाध्याय-मण्डल-सयोजन का कार्य आप ही सँभाल रहे हैं। सवत् १६६७ में स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज तथा श्री देवीलालजी महाराज के पास से आपने श्रावक के १२ व्रत धारण किये और तभी से नियमित रूप से पाँच सामायिक का व्रत निभाते चले आ रहे हैं। सवत् १६८६ में स्व० पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज सा० के चातुर्मास में दर्शनार्थी बन्धुओ के स्वागत-सत्कार का अपूर्व लाभ आपने ही लिया था। स्थानीय पाठशाला की स्थापना में १५,०००) का दान देकर उसके लिए ट्रस्ट बना दिया। सत्य ही सेठ सा० का जीवन और व्यवहार आदर्श एवं अनुकरणीय रहा है।

श्री नन्दलालजी भण्डारी छात्रावास, रामपुरा

यह छात्रालय स्वर्गीय सेठ नन्दलालजी भण्डारी की स्मृति में श्री सेठ कन्हैयालालजी सुगनलालजी भण्डारी ने अपनी जन्मभूमि में शिक्षा का प्रचार करने के लिए सन् १६३३ मे चालू कर रखा है। इसका सारा खर्च आप ही उठा रहे हैं। इस समय इस छात्रालय से २० विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं। इसके अतिरिक्त श्री भण्डारीजी सा० ने यहाँ के अस्पताल में Eye Operation Room बनाकर जनता की सेवा की है।

श्री केशरीमलजी सुराणा, रामपुरा

यहाँ के आप प्रसिद्ध श्रावक थे। आप अनेक शास्त्रो और थोकडो के जानकार थे। कई सन्तो को एव कई श्रावको को शास्त्रो की वाचना देने वाले थे और संसार से उदासीन वृत्ति वाले थे। आपने अन्तिम समय में स्थानक में ही रहने लगे थे।

श्री भवरलालजी धाकड़, रामपुरा

आप चतुर्विध सघ की निष्काम भाव से मूक सेवा करने वाले सरल व उदार व्यक्ति हैं। भण्डारी मिल, इन्दौर के कोषाध्यक्ष हैं। आप प्रत्येक सामाजिक प्रवृत्तियो में उत्साह-पूर्वक भाग लेते हैं।

श्री रूपचन्दजी सा० धाकड, रामपुरा

आप जैन सिद्धान्त के ज्ञाता व धार्मिक, सामाजिक कार्यों में आगे रहने वाले व्यक्ति है। आपको रामपुरा में 'महात्माजी' के नाम से पुकारते हैं। साधु-मुनिराजो की अत्यन्त भाव-भक्तिपूर्वक आप सेवा करते है।

श्री पन्नालालजी तेजमलजी मारू रामपुरा

आप यहाँ के प्रसिद्ध श्रावक हो गए हैं। गायन-कला में आप अत्यन्त निपुण थे। समय-समय पर गायनो से समाज का गौरव बढाते थे।

श्री रिखबचन्दजी अगरिया, रामपुरा

यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ताओ में से आप उदार व दान-शील वाले व्यक्ति हैं। यहाँ की कन्या पाठशाला को आपने दो वर्ष तक सारा खर्चा दिया। अभी उज्जैन में सर्व धर्म-सम्मेलन के अवसर पर ५०१) प्रदान किये थे।

श्री बापूलालजी भण्डारी, रामपुरा

आप यहाँ के प्रसिद्ध श्रावक हैं। कई वर्षो से लगातार प्रति रविवार को उपवास करते आ रहे हैं। ट्रस्ट बनाकर एक अच्छी रकम निकालने की आपने हार्दिक अभिलाषा प्रकट की हैं।

श्री छगनलालजी नाहटा, रामपुरा

आप यहाँ के नगर सेठ थे। गरीबों के प्रति आप अत्यन्त दयालु और भावुक थे। आपके सुपुत्र श्री मानसिंहजी समाज-सेवा में भाग लेने वाले और नगरपालिका के अध्यक्ष हैं। आपके एक Cotton factory चल रही है। आप मन्दसौर जिले के कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता और राष्ट्रीय विचारो के गाधीवाद के अनन्य भक्त हैं।

श्री रतनलालजी सुराना, रामपुरा

आप स्थानीय श्रावक सघ के अध्यक्ष हैं। आपके पिता श्री चादमलजी सा० अपने समय के अग्रगण्य श्रावक थे। साधु-सन्तो के भक्त और सामाजिक ट्रस्टों के ट्रस्टी हैं।

श्री रामलालजी पोखरणा, M L A रामपुरा

आप यद्यपि क्रियाकाण्ड को नहीं मानते किन्तु शुद्ध जैनत्व के प्रेमी हैं। गाधीवाद को समझकर अपने जीवन में उसे क्रियान्वित कर रहे हैं। मध्यभारत विधान सभा के आप माननीय सदस्य हैं। मन्दसौर जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधानमन्त्री और स्थानीय नगरपालिका के आप सदस्य भी हैं। प्रत्येक राष्ट्रीय और सामाजिक प्रवृत्तियो में आपका सहयोग बना रहता हैं।

श्री तेजमलजी सा० धाकड़, रामपुरा

धाकड-परिवार के आप अग्रगण्य श्रावक हैं। स्थानीय पाठशाला और छात्रालय के आप मन्त्री हैं। साधु-मुनिराजो को दवा-औषधि से प्राय लाभ पहुँचाते रहते हैं। आपके परिवार की धार्मिक भावना सराहनीय हैं।

सेठ मोतीलाल जी पन्नालाल जी पोरवाड़

आप श्री पन्नालाल जी के सुपुत्र थे। सन् १९०० से १९२१ तक आपसे ही धार की ऐतिहासिक जीवदया का कार्य सुचारु रूप से होता रहा। आपके घर मे कई सत-सतियो का दीक्षोत्सव समारोह हुआ। आपका स्वर्गवास सन् १९२१ में हुआ।

सेठ चम्पालाल जी पूनमचन्द जी पोरवाड़

आप श्री पूनमचन्द जी के सुपुत्र थे। आप संवत् १९४८ से १९८३ तक समाज के कार्यों में प्रमुख भाग लेते रहे। आपका जीवन धर्ममय था। तीनो काल स्थानक में आकर स्वाध्याय-ध्यान आदि करना आपके जीवन का दैनिक क्रम था। दया (छ काय) पालने व पलाने में आपकी विशेष रुचि थी। भजन व दृष्टान्त के लिये आप प्रसिद्ध थे। आपका स्वर्गवास सवत् १९८३ में हुआ।

सेठ वल्लभदास जी जगन्नाथ जी जैन

आपका जन्म नीमा जाति में सेठ जगन्नाथ के यहाँ हुआ था। आप जैन धर्म के पक्के उपासक थे तथा जीव-दया के बड़े प्रेमी थे। आप घर पर कुत्ते-बिल्ली आदि पशु वैरभाव को भूलकर एक साथ रहते थे। चातुर्मास की विनति करने में आपका प्रमुख भाग रहता था। प्रतिवर्ष १५०-२०० रु काया पलाते थे।

सेठ मोतीलाल जी मनावरी

समाज के आप प्रमुख कार्यकर्ता थे। अतिथि-सत्कार के लिए आप सुविख्यात थे। आपका स्वर्गवास स० १९९० को हुआ।

सेठ चम्पालालजी रतीचन्दजी बजाज

आप जीव-दया में अत्यन्त रुचि रखते थे। अपग-घायल एव बीमार पशुओ की सेवा विना किसी घृणा भावना के करते थे। आपका स्वर्गवास सवत् १९९६ में हुआ।

सेठ भेरूलालजी बूलचन्दजी पोरवाड

आप समाज के प्रमुख कार्यकर्ता थे। समाज के प्रत्येक कार्य में आप आगे रहते थे। चातुर्मास कराने व अतिथि-सत्कार में प्रमुख भाग लेते थे। आप बड़े सरल-हृदय व नम्र स्वभाव वाले थे। आपका स्वर्गवास स० २००० के लगभग हुआ।

सेठ कपूरचन्द जी (उस्ताद)

आप सेठ मथुरालाल जी पोरवाड के सुपुत्र थे। समाज में आपका अच्छा व्यक्तित्त्व था। आप बड़े ही तार्किक और हाजिर-जवाबी होने के कारण प्रसिद्ध थे। आपका स्वर्गवास स० २००६ में हुआ।

सेठ भेरूलाल जी लुहार

आप जाति के लुहार होते हुए भी जैन धर्म के सच्चे उपासक थे। स्थानक में जाकर धर्म-क्रिया करते थे। शक्कर खाने का आपने जीवन-पर्यन्त त्याग किया था। साधु-सतो की सेवा मन लगाकर करते थे। आज भी अनेक सत-सतियाँ आपकी सेवाओ की याद करती हैं।

श्री चाँदमल जी जैन B A L-L B
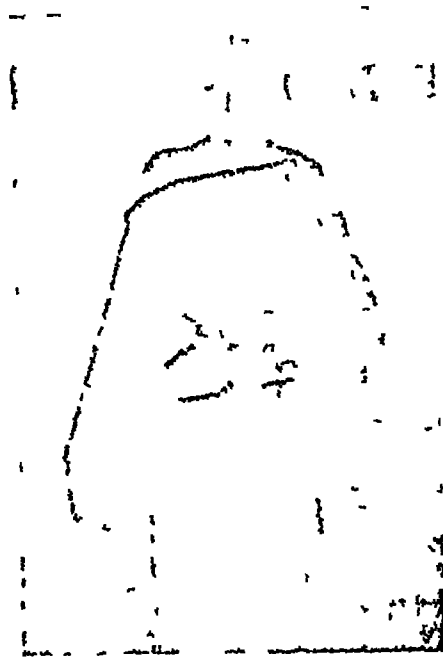
आप श्री मदनलालजी जैन के सुपुत्र थे। बचपन में ही माताजी का देहावसान हो जाने के कारण आपका पालन-पोषण शिक्षण आपके मामा श्री बोदरलालजी चम्पालालजी के यहाँ हुआ। आपने छोटी-सी उम्र में B A L L B पास कर और प्रेक्टिस करने ४-५ वर्ष में ही प्रसिद्ध वकीलो की श्रेणी में गिने जाने लगे। धार्मिक ज्ञान का भी आपको अच्छा अध्ययन था। धर्म के प्रति आपकी दृढ श्रद्धा थी। अपनी भाषण-शैली द्वारा राजनैतिक-क्षेत्र में भी आप अति लोकप्रिय बन गए थे। सन् १९५४ में अचानक आपका स्वर्गवास हो गया जिससे समाज को बहुत क्षति हुई।

भक्त श्री चम्पालालजी जैन

आप धार जैन-समाज के शिरोमणि व जैन-सिद्धान्त के अच्छे ज्ञाता हैं। आपने स्था० समाज के बड़े-बड़े आचार्यों एव विद्वान् सन्त-सतियो की सेवा करके सिद्धान्त की रहस्य-कुजियो की धारणाएँ प्राप्त की हैं। सन्त सतियो की सेवा अत्यन्त लगन व रुचि से करते हैं। आप अच्छे गीतकार तथा गायक हैं। आपका जीवन सांसारिक झझटो से परे

होकर त्यागमय है और जीवन का अधिकाश भाग धर्मध्यान में ही व्यतीत होता है।

श्री माणकलालजी वकील B Sc L-L B
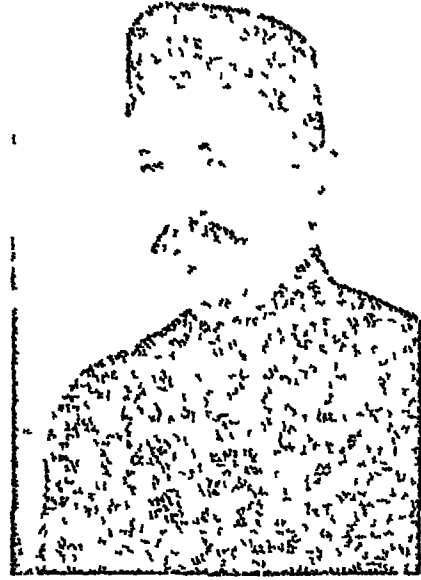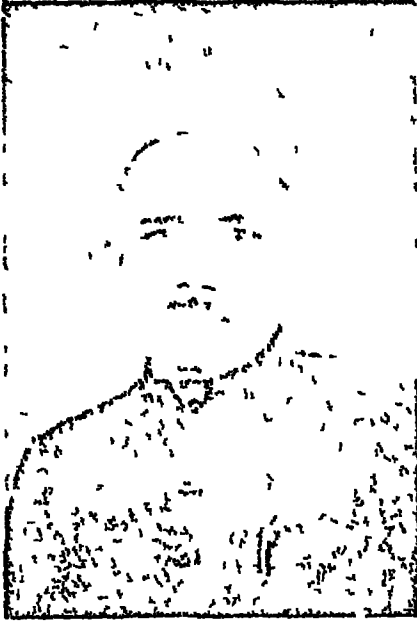
आप धार स्थानकवासी समाज में गत १० वर्षों से प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं तथा वर्तमान में सघ के अध्यक्ष हैं। बडे-बडे सन्तो एव विद्वानो से धार्मिक सिद्धान्तो का अध्ययन किया। प्रथम श्रेणी के एडवोकेट होते हुए भी धर्म में इतने दृढ हैं कि प्रतिदिन सामायिक आदि धार्मिक क्रियाएँ करते हैं। आप बडे ही स्पष्ट वक्ता हैं। राजनैतिक-क्षेत्र में भी आप अत्यन्त लोकप्रिय हैं। समाज के प्रमुख पत्र और समाज-सुधार के महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

श्री रतनलालजी वाटे

आप समाज के कार्यों में विशेष दिलचस्पी लेते हैं। दान तथा अतिथि-सेवा करने में सदा अग्रसर रहते हैं। आपके घर से कई दीक्षाएँ बडे ही समारोह के साथ हुई।

श्री कन्हैयालालजी वकील

समाज के आप प्रमुख कार्यकर्ता हैं। धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक-क्षेत्रो में वडी ही दिलचस्पी से भाग लेते हैं। आजकल आप मनावर में रहकर वकालत करते हैं।

श्री वाबूलालजी जैन

सामाजिक सेवाओ में आप बचपन से ही भाग लेते आ रहे हैं। आप स्थानीय महावीर मित्र-मण्डल के मन्त्री सन् १९३४ से सन् १९५३ तक रह चुके है। अभी वर्तमान में सन् १९५४ से स्थानीय सघ के मन्त्री हैं। स्थानीय महावीर जैन पाठशाला को उन्नत बनाने में आपका प्रमुख भाग रहा है। सामाजिक तथा व्यापारिक सस्थाओ में अनेकविध-कार्य करते हुए भी धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न करने में कभी नहीं चूकते।

श्री चाँदरलालजी जैन

आप करीब ४० वर्षों से भी अधिक समय से धार में कुत्तों को रोटी डालने के कार्य मे लगे हुए हैं। सम्पत्तिवान् गृहस्थ होते हुए भी कुत्तो के लिये घर-घर आटा माँगने जाने मे सकोच नहीं करते। अपनी ९२ वर्ष की अवस्था में कन्धे पर झोली लिये हुए और गली-गली घूमते हुए कुत्तों को रोटी डालते हैं।

श्री सागरमलजी जैन

आपका जीवन धार्मिक प्रवृत्तियो से ओतप्रोत है। आप दृढ श्रद्धावान् है तथा सदैव धर्म-प्रचार में योग देते है। सामाजिक कार्यो में विशेष रुचि से भाग लेते है। आप महावीर जैन पाठशाला के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री कस्तूरचन्दजी जैन
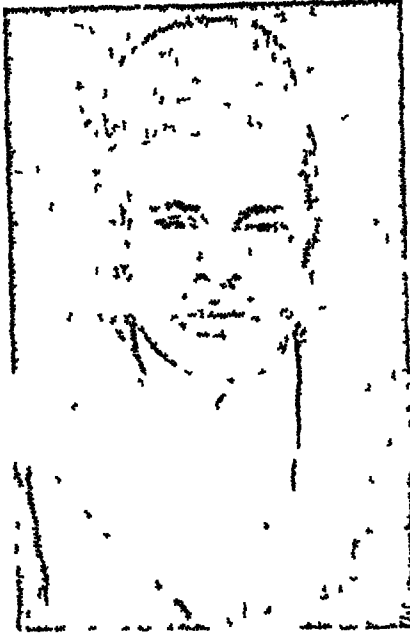
आप जीवदया के पक्के भक्त हैं। देवी देवताओं के आगे बलिदान होने वाले प्राणियों की रक्षा करने के लिये प्राणो की भी परवाह नहीं करते। आप निर्भीक, निडर, व उत्साही कार्यकर्ता हैं।

श्री प्रतापसिंहजी

आप उत्साही कार्यकर्ता हैं और समाज के कार्यों में सदा अग्रणी रहते हैं। नित्य-नियमानुसार धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न करते हैं। आप महावीर जैन पाठशाला के ट्रस्ट मडल के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री मिश्रीलालजी जैन

आप एक उत्साही व सेवाभावी कार्यकर्ता हैं। महावीर जैन पाठशाला के प्रारम्भ काल से लेकर आजतक सस्था की सेवा अथक परिश्रम व जी-जान से कर रहे हैं। आप अपना अधिकाश समय सस्था तथा समाज की सेवा के
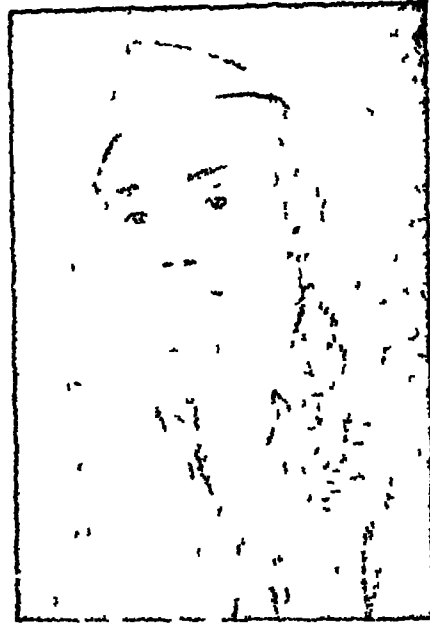
मिश्रीलालजी जैन

कार्य में लगाते है। आप दृढ श्रद्धावान् हैं। अनेक प्रमुख सन्त- मुनिराजो तथा विख्यात् श्रावको ने आपके सेवाकार्य की प्रशसा की है। आपके नि:स्वार्थ सेवाभाव तथा अथक परिश्रम से ही सस्था ने उन्नति की है।

इनके अतिरिक्त श्री मनसुखलालजी जैन, श्री छगन मलजी वकील, श्री मूलचन्दजी ओसवाल, श्री छगनमल जी बजाज तथा श्री जीतमलजी मास्टर आदि बडे ही उत्साही एव सेवाभावी कार्यकर्ता है। सामाजिक एव धार्मिक कार्यों में आप लोग उत्साहित होकर भाग लेते हैं।

श्री जोरावरमलजी प्यारेलालजी शाहजी, थादला

आप स्था० समाज के सम्माननीय एव प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। श्री जोरावरमलजी का शुभ जन्म मिति वैशाख वदी ३ स० १९४९ को हुआ था। आपके पिता श्री का शुभ नाम मोतीलालजी था। आपका खानदान प्रशसापात्र रहा। वर्तमान में आपके दो सुपुत्र हैं श्री श्रेयलालजी तथा श्री गेंदालालजी। आपके पूर्वजों ने एक मकान धर्म स्थानक के रूप में दे दिया है। वर्तमान में आपने अपनी

पत्नी केशरबाई की पुण्य स्मृति में एक भवन श्री औषध भवन के पीछे की जमीन में, धार्मिक शिक्षण के लिए ट्रस्ट बनाकर तैयार करने की प्रतिज्ञा की है। आप एक समय जीव-दया धर्म के लिए प्राणों तक की बाजी लगाने को तैयार हो गए किन्तु धर्म पर दृढ रहे। यही है आपकी धर्म-परायणता एवं दृढ़ता का आदर्श नमूना। आप सदैव प्रतिज्ञा में बंधे हुए जीवन में रहते हैं। आपका कपड़े तथा गल्ले और लेन-देन का व्यापार प्रतिवर्ष हजारों का होता है। प्राचीन राजाओं की ओर से प्रतिष्ठा-स्वरूप आपके मकान पर सोने के कलश लगे हुए हैं।

श्री रिखबचन्द्रजी घोड़ावत, थाडला

श्री रिखबचन्द्रजी घोडावत का शुभ जन्म मिगसर सुदी ९ सं० १९५७ में हुआ था। आपके पूज्य पिताश्री का नाम श्री दौलाजी है। श्री रिखबचन्द्रजी के चार पुत्र हैं। जिनके क्रमशः श्री रमेशचन्द्रजी, श्री चन्द्रकान्तिजी श्री कनकमलजी तथा श्री उम्मेशजी नाम हैं। श्री उम्मेशजी ने भगवती दीक्षा ग्रहण कर ली है। प्रारम्भ से ही आपका खानदान धार्मिक कार्यों में मुक्तहस्त से दान देता आया है।

श्री रमेचन्द्रजी भी अपने पिता श्री की तरह ही धर्म प्रेमी हैं। वर्तमान में आप राजनैतिक क्षेत्र में अग्रणी हैं। आप कपडे के थोक व्यापारी हैं और नक्द लेन-देन प्रतिवर्ष लाखों रुपयों का करते हैं। आप श्री भी दानवीर सज्जन हैं। प्रान्त में आप गौरवशाली व्यक्ति हैं।

श्री लहरमलजी गेंदमलजी भण्डारी कजर्डा

आप कंजर्डा के निवासी हैं। आप की अवस्था ४० वर्ष की है। आप व्यवसाय करते हुए भी समाज सुधार तथा धार्मिक प्रवृत्तियो में प्रमुख भाग लेते रहते हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं।

श्री सोहनलालजी पूनमचन्दजी तगवा, कंजर्डा

आपका भी निवास-स्थान कजर्डा है। आप व्यापार एव दलाली करते हैं। वर्तमान में आप जैन पाठशाला में अध्यापक का कार्य कर रहे हैं जिसे श्रावक मण्डल सचालन कर रहा है।

श्री चाँदमलजी नाथूलालजी भण्डारी, कंजर्डा

आप रामपुरा के निवासी हैं। उम्र आप की ३८ वर्ष की है। माध्यमिक पाठशाला कंजर्डा के प्रधान पाठक ४ वर्ष से हैं। आप इण्टरसीटी, विज्ञान रत्न तथा साहित्य रत्न (प्रथम खण्ड) उत्तीर्ण हैं।

श्री चाँदमल जी गब्बालाल जी पीपाड़ा, कजर्डा

आप कजार्डा निवासी हैं। आप की आयु २७ वर्ष की है, आप तरुण व्यापारी एव समाज के कार्यों में अत्यन्त अभिरुचि रखते हैं।

श्री रामचन्दजी नाथूलालजी भण्डारी

आप भी कजर्डा के रहने वाले ३७ वर्षीय कुशल व्यापारी हैं। हिसाब के कार्य में दक्ष हैं।

श्री झमकमलजी नन्नालालजी पटवा

आप कजर्डा निवासी हैं और शिल्पकला का कार्य करते हैं। आप की उम्र २८ वर्ष की है। व्यवस्था-कार्य में कुशल हैं।

श्री सुजानमलजी भेरूलालजी भण्डारी

आप एक कुशल नवयुवक व्यवसायी हैं। उम्र आप की ३० वर्ष की है। आप नि सकोच हो व्यवस्था कार्य में जुट जाते हैं।

श्री लक्ष्मीलालजी केशरीमलजी नलवाया

आप कजर्डा निवासी ४० वर्षीय कुशल व्यापारी हैं। सामाजिक कार्यों में आपका पूर्ण सहयोग रहता है।

श्री कन्हैयालालजी गेंदमलजी पटवा

आप ३३ वर्षीय कजर्डा निवासी एजेन्सी का कार्य करते हैं। स्थानीय प्रारम्भिक कांग्रेस के अध्यक्ष हैं।

श्री सुन्दरलालजी केसरीमलजी भण्डारी

आप की अवस्था ३२ वर्ष की है। आप वर्तमान में कपडे के व्यापारी हैं। इससे पूर्व आप सघ के मन्त्री थे।

श्री बन्नालालजी किशनलालजी भण्डारी

आप एक २५ वर्षीय उत्साही नवयुवक हैं। समाज हित के कामो में आप विशेष दिलचस्पी रखते हैं। आप व्यापार करते हैं।

राजस्थान के प्रमुख कार्यकर्ता

स्वर्गीय सेठ श्री चान्दमलजी सा० सुराणा, जोधपुर

जोधपुर राज्य में तथा राजघराने में प्रतिष्ठा सम्पन्न श्री चान्दमलजी सुराणा को जोधपुर में कौन नहीं जानता ? राज्य में रहने वाली जनता की भलाई के लिए आपने जीवन-भर अपने को संकट तथा कष्ट में डालकर भी

जनता की विचारधारा का प्रतिनिधित्व किया। आपका जन्म संवत १९७० की भादवा सुद १५ को और स्वर्गवास संवत १९९६ की आषाढ़ वद ५ को हुआ। वह समय था जब जोधपुर के सर प्रतापसिंहजी ने बन्दरों को मरवाने की आज्ञा निकाली। इसके खिलाफ राज्य भर में तीव्र आन्दोलन हुआ। इस आन्दोलन के सूत्रधार आप ही थे। आखिर यह राजाज्ञा रद्द की गई। सन् १९४६ में जोधपुर राज्य के अर्थमन्त्री श्यामबिहारीलाल ने राज्य में जोधपुरी तोल के बदले बंगाली तोल करना चाहा। राज्य की जनता इसे सहन न कर सकी। इस आन्दोलन को आपने अपने हाथों में लिया। इस आन्दोलन ने इतना जोर पकड़ा कि अर्थमन्त्री को चौबीस घण्टे के भीतर ही जोधपुर छोड़कर जाना पड़ा। इस प्रकार के कई आन्दोलनों का आपने नेतृत्व कर अपनी निर्भीकता का परिचय दिया। आप अपनी बात के पक्के थे। जिस बात को आप धार लेते—उसे पूरा करके छोड़ते थे—भले ही उसमें सैंकड़ो का खर्च हो या हजारों का। अपनी टेक के सन्मुख धन को आप तुच्छ समझते थे।

वह समय था जब पालनपुर, नसीराबाद, डीसा की फौजी छावनियों को मांस पहुँचाने के लिए मारवाड़ से मादी जानवरों की निकासी प्रारम्भ हो गई। आपको यह कब सहन होने वाला था। हजारों आदमियों को अपने साथ में लेकर तत्कालीन जोधपुर-नरेश के बंगले पर तीन दिन तक धरना दिया। इन हजारों आदमियों को खिलाने-पिलाने का इन्तज़ाम आपकी तरफ से था। आखिर दरबार को मादा जानवरों की निकासी की आज्ञा रद्द करनी पड़ी। जिस काम को आपका आशीर्वाद प्राप्त हो जाता—उसमें मानो जान आ जाती थी। इस प्रकार के आन्दोलनों में आपको कई माह तक राज्य से निर्वासित होकर रहना पड़ा था—किन्तु आपने कभी भी न्यायोचित मांग के सन्मुख झुकना मंजूर नहीं किया।

दिल-दिमाग की तेजस्विता, निर्भीकता और उग्रता के साथ साथ धार्मिकता और श्रद्धा भी आप में महान् थी और ऐसा होना इसलिए भी उचित था कि आप संसार पक्ष में पूज्य उदयसागरजी महाराज के भानजे थे। आपके घराने की धार्मिकता का क्या कहना ?—आपकी बहन सरदार कंवरजी ने दीक्षा धारण कर संयम और तप-त्याग का अपूर्व एवं आदर्श उदाहरण उपस्थित किया था। केवल ३७ वर्ष की अवस्था में ही आपने शीलव्रत और चौविहार के प्रत्याख्यान कर लिए थे। बीस साल तक एकान्तर भोजन किया था और जीवन की अन्तिम घड़ियों में समस्त जीवराशि को खमाकर संथारा कर पण्डित मरण को प्राप्त हुए थे।

दयालुता और पर दुख कातरता आप में इतनी थी कि गुप्तरूप से कितने ही धर्म-पुत्र बनाकर उनका पालन-पोषण करते थे। अपने कार्य-कलापों से राज्य

के इतिहास में आपका नाम सदैव स्वर्णाक्षरों से अंकित रहेगा।

आपकी लोकप्रियता का इस बात से पता चलता है कि हरिजन से लेकर उच्च कौम—३६ ही कौम के अनगिनती लोग आपकी अर्थी के साथ थे।

अपने पीछे अपने गुणों की पैतृक वसीयत अपने बड़े पुत्र श्री आनन्दराजजी सुराणा में छोड़ गए हैं जो अपने पिता के समान ही तेजस्वी, निर्भीक, स्पष्टवक्ता और उदार-दिल हैं। निर्धन और असहाय को देखकर आपका दिल भी पसीज उठता है। योग्य पिता के योग्य पुत्र पर आज समस्त समाज और राष्ट्र को गौरव हो सकता है।

श्री चन्द्रराजजी सुराणा श्री आनन्दराजजी सुराणा के लघु बन्धु हैं। आप भी समाजसेवी और धार्मिक वृत्ति वाले हैं।

श्री कानमलजी सा० नाहटा, जोधपुर

आपका जन्म जोधपुर में सं० १६६१ में हुआ था। आपके पिताजी का नाम जवानमलजी तथा माता का नाम सरदार कुँवरजी है। आपका खानदानी व्यवसाय राज्य में कारोबार और Banking का रहा है। आपके दादाजी श्री थानमलजी सा० जोधपुर राज्य के कस्टम ऑफिसर थे और प्रजा के सच्चे सलाहकार थे।

संवत् १६७४ से ७६ तक के भीषणतम अकाल के युग में आपके घर के १८ व्यक्तियों की मृत्यु हो जाने से आप और आपके भाई पूनमचन्दजी ही बचे। कई वर्ष तक आप नौकरी करते रहे। किन्तु काल का चक्र जैसे उल्टा चलता है तो कभी-न-कभी सुल्टा भी चलता है। सुख और दुख तथा दुख और सुख का अभिन्न जोड़ा है। भाग्य-चक्र ने पलटा खाया। अब तक जो कुछ भी प्रतिकूल था अब अनुकूल होने लगा। सन् १६३६ में आपने बम्बई में कानमल एण्ड सन्स के नाम से सिल्क का व्यवसाय प्रारम्भ किया। सन् १६४० में मुलुन्द में ज्योति सिल्क मिल्स प्रारम्भ की और इसके साथ ही जवाहरात का व्यवसाय भी प्रारम्भ किया। बम्बई में कालका देवी तथा ऑपेरा हाउस में तथा मसूरी आदि स्थानों में आपकी दुकानें थीं। अत्यन्त सुसंस्कारी और धर्मपरायणा सौ० विलम कुँवरी का ता० २१-३-५५ को संथारा और समाधिमरणपूर्वक स्वर्गवास हुआ।

आपके द्वारा निर्मित भव्य नाहटा भवन जोधपुर की एक शानदार और भव्य इमारत है।

व्यवसाय में आप खूब बढ़े किन्तु जीवन की वास्तविकता से भी आप अनभिज्ञ नहीं थे। बुरे दिन भी आपने देखे थे और अब अच्छे दिन भी। किन्तु धन-वैभव ने आपको अन्धा नहीं बनाया। आपकी रुचि धर्म-प्रेम की ओर क्रमशः बढ़ती गई। साधु-सम्मेलन सादड़ी से आपने धार्मिक कार्यों में रस लेना प्रारम्भ किया। स्व० पू० मुनि श्री चौथमलजी म० सा० के जोधपुर में संथारा-काल में आपने ब्रह्मचर्य धारण कर लिया। अब तो जोधपुर की धार्मिक प्रवृत्तियों के आप केन्द्र ही बन गए। श्रावक संघ के निर्माण और निर्वाचन के समय आप जोधपुर श्रावक संघ के उपप्रमुख निर्वाचित किये गए। सब का सारा कार्य आप ही करते हैं।

आपकी अभिरुचि स्वाध्याय की ओर बढ़ी और आपने भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र, पुच्छिसुणं, नमिपवज्जा आदि कण्ठस्थ कर लिए। कई थोकड़े भी आपको कण्ठस्थ हैं।

आप इस समय ओसवाल श्री संघ सभा के चीफ ट्रस्टी, स्था० जैन श्रावक संघ के चीफ ट्रस्टी तथा अध्यक्ष बीकानेर बैंक के लोकल बोर्ड के डायरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त व्यापारी और सरकारी क्षेत्र में आप अत्यन्त प्रतिष्ठावान हैं।

श्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फ्रेन्स की व्यवस्थापिका कमेटी के आप वर्षों से मेम्बर हैं। साधु-मुनिराजों की सेवा-भक्ति अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक करते हैं। संस्थाओं को समय समय पर आपकी तरफ से दान मिला करता है।

इस प्रकार श्री नाहटाजी जोधपुर के ही नहीं किन्तु समस्त राजस्थान के एक आशावान और प्राणवान व्यक्ति है जिनसे समाज और धर्म के विस्तीर्ण क्षेत्र मे और अधिक आगे बढ़कर तथा अधिक सेवाएँ प्रदान करने की स्वाभाविक रूप से सहज कामना की जा सकती है।

श्रीमान रिखबराजजी कर्णावट, एडवोकेट जोधपुर

श्री कर्णावट जी का शुभ जन्म भोपालगढ़ ग्राम जिला जोधपुर में सन १९१६ में हुआ। आपने स्थानीय श्री जैन रत्न विद्यालय में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर व्यापार व बीमा एजेन्सी का कार्य प्रारम्भ किया। साथ ही प्राइवेट अध्ययन जारी रखते हुए मिडिल व मेट्रिक की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। प्रारम्भिक जीवन से ही आप में सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक कार्यों में भाग लेने की अभिरुचि रही। आप वहाँ की कन्या पाठशाला, हरिजन स्कूल, श्री जैन रत्न विद्यालय तथा लोक परिषद् शाखा आदि के भी मानद् मन्त्री रहे। तदनन्तर सन १९३८ में जोधपुर में सरदार हाई स्कूल में अध्यापक नियुक्त हुए और अध्यापन करते हुए प्राइवेट में इन्टर, बी० ए० व नागपुर विश्व विद्यालय से एल० एल० बी० की डिग्री की हासिल की। बाद में आपने जोधपुर में वकालात करना प्रारम्भ किया। वकालत करते हुए सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक कार्यों में भी सक्रिय भाग लेते रहे। आप श्री महावीर जयन्ती प्रचारणी सभा के मन्त्री रहे और महावीर जयन्ती सार्वजनिक छुट्टी कराने में भी सक्रिय भाग लिया। स्थानीय महावीर कन्या पाठशाला के भी आप ऑनरेरी सुपरिटेन्डेन्ट रहे। राजस्थान प्रांतीय कांग्रेस के तथा सरकार द्वारा स्थापित किसान बोर्ड के भी सदस्य रहे। बार एसासियेशन के प्रथम मन्त्री और बाद में उपाध्यक्ष पद पर आसीन हुए। इस प्रकार कर्णावट जी का भोपालगढ़ व जोधपुर में सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक कार्यकर्ताओं में विशेष स्थान है।

वर्तमान में कर्णावटजी सरदार हाईस्कूल, सरदार लोअर प्राइमरी स्कूल, ओसवाल बोर्डिङ्ग हाऊस, ओसवाल स्कॉलरशिप कमिटि, स्था० जैन श्रावक संघ, तथा रा० प्रान्तीय स्था० श्रावक संघ के मानद् मन्त्री हैं। समाज के प्रत्येक शुभ काम में आप समय निकालकर कुछ न कुछ सहयोग देते ही रहते हैं। आशा है कि समाज को भविष्य में भी आप जैसे उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता का सहयोग प्रदान होता रहेगा।

श्री दौलतरूपचन्दजी भंडारी, जोधपुर

आप जोधपुर निवासी श्री सुगानचन्दजी भंडारी के सुपुत्र हैं। आपके पिताजी बड़े ही धर्मनिष्ठ और धर्मपरायण थे। श्री दौलतरूपचन्द जी राजस्थान के सुप्रसिद्ध भजनीक है। आपकी व्याख्यान-शैली और कवित्व ओज से श्रावकगण प्रभावित है। जन्म से ही संगीत के प्रति आपका अनुराग रहा है। जनमत पर आपकी बड़ी धाक है।

अनेक प्रकार से व्यावसायिक क्षेत्रों में कुशलतापूर्वक कार्य करने के पश्चात् आप इस समय ओरियंटल के एजेंट हैं। आप दो भाई हैं किशनरूपचन्दजी और राजरूपचन्दजी। दोनों सरकारी क्षेत्र में सम्मानित पद पर कार्य कर रहे हैं।

श्री विजयमलजी कुम्भट, जोधपुर

जोधपुर के सुप्रसिद्ध श्री चन्दनमल जी सा० कुम्भट के घराने में श्री गणेशमलजी सा० कुम्भट के आप सुपुत्र हैं। आपके पिताश्री राजकीय पद से रिटायर्ड हो जाने के बाद धार्मिक रंग में अनुरक्त श्रावक हैं। श्री विजयमल जी धर्मनिष्ठ श्रद्धालु श्रावक हैं। धर्मानुराग आपको बपौती के रूप में मिला है। स्थानीय सामाजिक क्षेत्र में आप कर्मठ और मिलनसार-मृदुभाषी कार्यकर्ता हैं, जो बोलते कम और करते अधिक हैं। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करने के लिये आप सदैव तैयार रहते हैं।

श्री अमोलकचन्दजी लोढा, बगडी

श्री लोढाजी उन सज्जनों में से थे जो बिना किसी मान की इच्छा के सहयोग प्रदान करते रहते हैं। श्री जैन गुरुकुल-ब्यावर तथा आत्म-जागृति कार्यालय की स्थापना में आपका प्रमुख हाथ था। बगडी का जैन मिडिल स्कूल भी आपके ही प्रयत्नों का फल है।

आप स्वभाव से सरल, व्यवहार कुशल, सेवा-भावी और धर्म-शील सज्जन थे। वे समय-समय पर राजनीतिक कार्यों में भी भाग लिया करते थे। दुर्भाग्य से ४० वर्ष की अल्प वय में ही उनका स्वर्गवास हो गया, अन्यथा उनके द्वारा कई समाजोपयोगी कार्य होने की आशा थी।

श्री मिलापचन्दजी कावड़िया, सादड़ी

आप सादडी (मारवाड) के उत्साही एवं कर्मठ समाजसेवी कार्यकर्ता हैं। लोकाशाह जैन गुरुकुल भवन निर्माण का प्रश्न जब अत्यन्त जटिल, पेचिदा और विवादास्पद बन गया था तब इस कार्य को आपने अपने हाथ में लिया और एक लम्बे अर्से तक कठोर परिश्रम कर भवन-निर्माण का कार्य सम्पन्न कराया। गुरुकुल का वर्तमान विशाल और सुन्दर भवन आपके परिश्रम और लगन की साकार मूर्ति है। इतना ही नहीं भवन-निर्माण कार्य में आपने अभी अपनी तरफ से २५००) भी प्रदान किये। यद्यपि आपकी स्थिति इतनी अधिक प्रदान करने की नहीं थी।
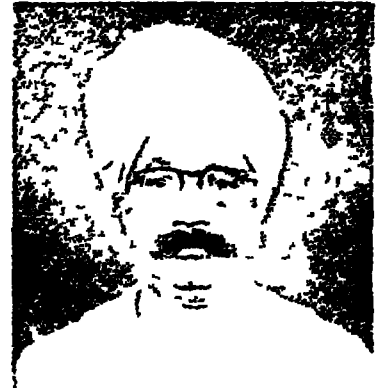
दीन दुखियो के प्रति आप अत्यन्त दयावान् एव कुरूढियो के आप एकदम विरोधी हैं। सादडी-सम्मेलन के समय आपकी सघ-सेवा और कार्य तत्परता, आदर्श और अनुकरणीय थी।

श्री अनोपचन्दजी अमीचन्दजी पुनमिया (माड) (सादडी मारवाड)

मारवाड के गोडवाड प्रान्त मे आपको कौन नहीं जानता ? आप अपने प्रान्त मे 'शेर' कहे जाते हैं। वस्तुत आपमे सिंहोचित गुण विद्यमान है। आपको देखकर अन्यमत के लोग एकदम शान्त एव तर्कहीन हो जाते है—ऐसा है आपका व्यक्तित्व। आपके ही अथक परिश्रम से इस प्रान्त मे श्री लोकाशाह के सिद्धान्तो का प्रचार करने के लिए आपकी जन्मभूमि 'सादडी' मे श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल को स्थापना हुई।

यद्यपि आपका शिक्षण प्राइमरी तक हुआ किन्तु अपनी कुशाग्र बुद्धि के बल से अदालतों में बड़े बड़े वकीलो से टक्कर लेते हैं। अपनी इस प्रखर बुद्धि से आपने अच्छी धनराशि एकत्रित की, जिसको आप समाज व देश की सेवा मे समय समय पर लगाते रहते है।

मरुधर केशरी प० मुनि श्री मिश्रीमलजी म० सा० के सदुपदेश से तथा बलदोटा बन्धुओं के सहयोग से आप द्वारा स्थापित श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी में आपकी ही प्रेरणा एव उत्कट उत्साह से स० २००६ के अक्षय तृतीया के दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधु-सम्मेलन व कॉन्फ्रेन्स का १२वाँ अधिवेशन हुआ। सम्मेलन की सफलता, साधु मुनिराजों की भक्ति तथा सम्मेलन मे सम्मिलित हुए हजारो की सख्या मे स्वधर्मी भाइयो की सेवा एव सुव्यवस्था का श्रेय आपको तथा बलदोटा बन्धुओं को है सादडी सम्मेलन के समय की सुव्यवस्था एव सञ्चालन प्रणाली की सराहना आज प्रत्येक स्थानकवासी जैन कर रहा है।

अभी आप वर्तमान में स्थानीय श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के मन्त्री, श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल के उपसभापति, श्री वर्द्धमान स्था० जैन महिला-मण्डल के सयोजक तथा अखिल भारतवर्षीय स्थानक जैन कॉन्फ्रेन्स की जनरल कमेटी के सदस्य हैं।

आपके सेवाभावी सस्कारों की छाप आपके समूचे परिवार पर भी पडी है। यही कारण है कि आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री हस्तीमलजी सा० पुनमिया जैन गुरुकुल, सादडी के मन्त्री पद पर लगातार ६ वर्षों से बड़े उत्साह एव परिश्रम के साथ कार्य करते हुए बड़ी योग्यता के साथ गुरुकुल का सचालन कर रहे हैं। आपके कनिष्ठ पुत्र श्री मोहनलालजी भी पाली परगने-की किसान मजदूर पार्टी के मन्त्री है और आज की राजनीतिक हलचलो में प्रमुख रूप से भाग ले रहे हैं।

सेठ सा० की ६४ वर्ष की उम्र है फिर भी नवयुवकों जैसे अदम्य उत्साह से काम करते हैं। आपके समान आपकी धर्मपत्नी भी सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों मे मुक्त हस्त व उदार हृदय से हाथ बँटाती है। निस्सन्देह सादडी के इस सेवाभावी परिवार से समाज को बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। हमारा काम ही हमारे नाम को अमर बनाता है और इस दृष्टि से सेठ सा० के जाति-धर्म-समाज-सेवा के कार्य कदापि नहीं भुलाए जा सकते।

श्री केवलचन्द जी सा० चोपड़ा, मोजत

श्री चोपड़ाजी मोजत शहर के चोपडा खानदान के एक उदार-दिल वाले युवक हैं। आपके पिता श्री गोपालमल जी चोपडा बम्बई में भागीदारी में व्यापार करते थे। अत आप भी प्रारम्भ से ही बम्बई में रहने लगे और अपने पिताश्री के स्थान पर आप स्वय भागीदार बन गये। इस समय आप बम्बई के गण्यमान व्यापारियों में से हैं। पिछले बीस वर्षों से आप खादी के प्रेमी रहे हैं। आपकी उदारता का परिचय तो इससे सहज ही मिल सकता है कि आपके पास जाने वाला कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता।
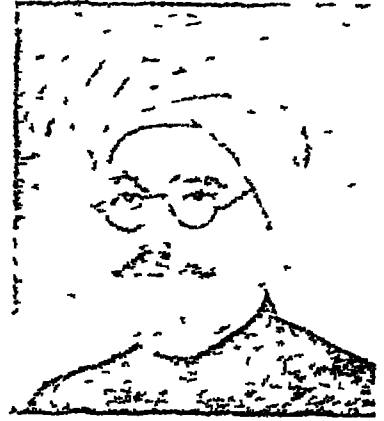
आप सोजत के "जैन गौतम गुरुकुल" के प्राण हैं। एक मुश्त २५,०००) रु० की धनराशि प्रदान कर सस्था की नींव डाली, जो आज भी उनके व्याज से सुचारुरुप से चल रही है। सोजत में गोशाला और जैन धर्मशाला बनवाने में हजारों रुपया दिया। सार्वजनिक कार्यों में आपका हाथ सदैव खुला रहता है। लोंकाशाह गुरुकुल को आपने ५०००) की सहायता प्रदान की। इसके अतिरिक्त सोजत में एक स्थानक भी बनवाया। आप आज भी गुप्तरूप से कई भाई-बहिनों को आर्थिक सहायता देते रहते हैं। कबूतरों पर आपका विशेष प्रेम है। प्रतिदिन ८-१० रुपयों का अनाज डलवाते रहते हैं। आप एक होनहार, समाज-सेवी और धर्म-प्रेमी व्यक्ति हैं, जिनमें सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी है।

श्री विजयलालजी गोलेछा खींचन

आप खींचन (मारवाड) के निवासी हैं। आपका हृदय बडा उदार और दया-भाव से परिपूर्ण है। मरुभूमि में जल का बड़ा कष्ट है। पानी की प्राप्ति के लिये मीलों दूर जाना पडता है। आपने इस असह्य कष्ट को मिटाने के लिये यहाँ स० १९८९ में अपने स्व० पिता जी के नाम पर एक विशाल तालाब खुदवाना आरम्भ किया, जो प्रतिवर्ष थोडा-थोडा खुदवाया जाता है और इससे यहाँ का कष्ट बहुत कम हो गया है।

दीन-अनाथों के प्रति आपकी बडी हमदर्दी रहती है। पहले यहाँ रुणीजा रामदेव जी का मेला भरा करता था, जिस मौके पर सैकडों अपाहिज व गरीब लोग आया करते थे। इन सब को आपकी ओर से भोजन कराया जाता था। बाद में रुणीजा तक रेल्वे लाईन हो जाने से यात्रियों का फलौदी उतरना बन्द हो गया फलत यह अन्न-दान भी बन्द कर दिया गया।

आपकी आयुर्वेद चिकित्सा के प्रति अत्यधिक रुचि है। आप अपने क्षेत्र में कुशल आयुर्वेद चिकित्सक माने जाते थे। दूर-दूर से आपके पास बीमार आते हैं, जिनकी सारी व्यवस्था खान-पान निवास आदि की आप अपनी तरफ से करते हैं और उनकी योग्य चिकित्सा कर आरोग्य प्रदान करके विदा करते रहे हैं। आपने कई असाध्य बीमारों को जीवन-दान दिया है।

शिक्षा-प्रचार में भी आपका बडा हाथ रहा है। आपकी तरफ से स्थानीय श्री महावीर जैन विद्यालय को आधा खर्चा दिया जाता है। ब्यावर जैन गुरुकुल के १२ वें उत्सव के आप सभापति भी बन थे। समाज की अन्य सस्थाओं को भी आप समय २ पर सहायता प्रदान करते रहते थे।

स्त्री-शिक्षा के प्रति भी आपका बडा लक्ष्य रहा। आपने अपने यहाँ जैन कन्या पाठशाला की स्थापना भी की थी, परन्तु तीन वर्ष बाद योग्य अध्यापिका के अभाव में वह बन्द कर देनी पडी।

आपकी उदारता गाँव या समाज तक ही सीमित नहीं है। आपने उम्मेद हॉस्पिटल, जोधपुर को टी० बी० वार्ड के लिये ५७०००) हजार का आदर्श दान भी दिया।

श्रीमान स्व० नौरतनमलजी भाडावत, जोधपुर

श्री लक्ष्मीमलजी सिंघवी, मिनर्वा भवन, जोधपुर
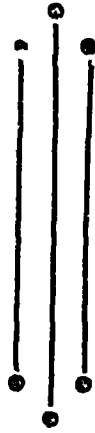
श्री केशरीमलजी चौरडिया, जयपुर
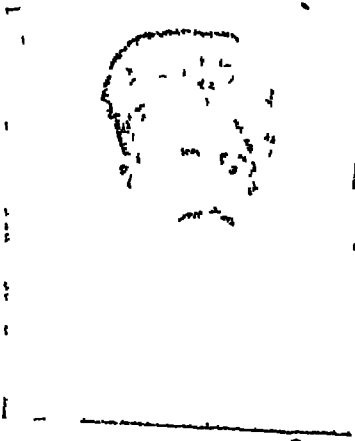
श्री मगनमलजी कोचेटा भॅवाल, (मारवाड)
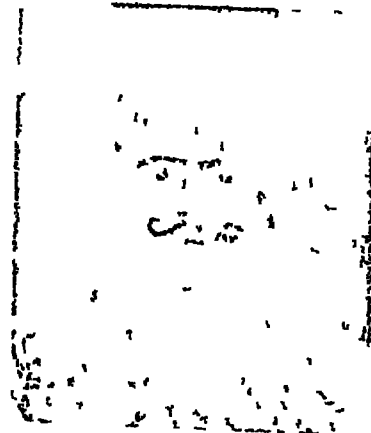
श्री मलजी सेठिया, बीकानेर

श्री बलवन्तसिंहजी कोठारी, उदयपुर

आपका जन्म सन् १८६२ में हुआ था। आप मेवाड़ राज्य के दीवान थे। आपका शिक्षण तो बहुत कम था, परन्तु अनुभवज्ञान विशाल था। महाराणा फतहसिंहजी के कार्यकाल में आपने १६ वर्ष तक प्रधान मन्त्री (दीवान) के पद पर रह कर राज्य की महान् सेवा की थी।

आप ओसवाल होते हुए भी आकृति की भव्यता म क्षत्रिय जैसे प्रतीत होते था। आपके पूर्वज क्षत्रिय थे। परन्तु पीछे जैन धर्म अंगीकार करने से आपकी गणना ओसवालों में हुई। आप कोठारी केशरीसिंहजी के गोद में गये थे।

आपकी कार्यदक्षता तथा बुद्धिमत्ता से महाराणा सा० बड़े प्रभावित थे। सन् १९०३ व १९१२ में जब देहली में दरबार हुआ था तब आपको महाराणा ने सरदारों के साथ वहाँ भेजा था।

आपकी धर्म में अटल श्रद्धा थी। घाटकोपर जीव दया खाता, बम्बई, शिक्षण संस्था, उदयपुर, हितेच्छु-श्रावक मंडल रतलाम आदि को आपने सहायता प्रदान की थी। जीव दया के प्रति आपकी बड़ी रुचि थी। मेवाड़ से पहले गौ का निकास होता था, वह आपके प्रयत्नों से बन्द करा दिया।

आपके पुत्र का नाम गिरधारीसिंहजी हैं आपने अपने जीवन में चार पीढ़ियाँ देखी हैं। ऐसा सद्भाग्य विरले व्यक्ति को ही प्राप्त होता है।

आपके पौत्ररत्न का जन्म होने पर आपने महाराणा सा०का भी अपने घर आतिथ्य किया था। महाराणा सा० ने कंठी सिरोपाव व पैरों में सोना प्रदान कर इन्हें सन्मानित किया था। पूज्य जवाहरलालजी म० के प्रति आपकी असीम भक्ति थी। आपका अवसान ७६ वर्ष की उम्र में ता० ५-१-३८ को हुआ।
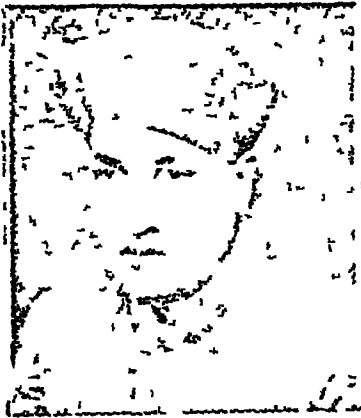
हिम्मतसिंहजी सरूपरिया, जयपुर

आर० ए० एम०, एम० ए०, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०
हिन्दी साहित्य रत्न, जैन सिद्धान्ताचार्य। प्रथम खंड।

आपका जन्म उदयपुर की पवित्र भूमि में हुआ। यह मेवाड़ देश के अनमोल रत्न श्रीदयालशाह के वंशज हैं। श्री दयालशाह हिन्दुआ सूर्य महाराणा श्री राजसिंह जी जिन्होंने हिन्दू धर्म व आर्य संस्कृति का रक्षण करने के लिए दिल्लीपति शाह औरंगजेब से लोहा लिया उनके मन्त्री व सेनानायक थे। इनकी धवल कीर्ति का स्मारक अभी श्री आदेश्वरनाथ का विशाल मन्दिर राजसमन्द की पाल पर स्थिति नवचौकियों के ऊपर पहाड़ी पर विद्यमान है।

आपने राजपूताना हाईस्कूल अजमेर से प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास कर फर्ग्युसन कॉलेज पूना से इन्टर साइन्स, विलसन कॉलेज बम्बई से बी० एससी०, (प्रकृतिशास्त्र व गणित) आगरा कॉलेज व इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से एम ए० (इतिहास) एल-एल० बी० प्रथम श्रेणी में पास किया। मेवाड़ के हाईकोर्ट में जुडीशियल शिक्षण लेकर दो-तीन मास महाराणा कॉलेज उदयपुर में हिस्ट्री के प्रोफेसर रहे। वहाँ से स्वस्थान नाथद्वारा में सिटी मजिस्ट्रेट व मुनसिफ के पद पर छः वर्ष तक काम कर फिर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, माल हाकिम व असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर चौदह वर्ष तक काम किया। आपकी निष्पक्ष न्याय प्रणाली, सुव्यवहार, सच्चरित्रता की समय-समय पर उच्चाधिकारियों ने प्रशंसा की है और जनता के हृदय पर आपकी गहरीछाप है। आपके अपने शासन काल में नाथद्वारा के समस्त गाँवों में देवी-देवताओं के नाम पर होने वाले बलिदान की व गाँवों की सीमा में

जीवहिंसा होने व मदिरा माँस लाने की सख्त रोक थी। कृषकगण पर चढ़ी हुई सहस्रों रुपयों की पुरानी बाकियात मेवाड़ सरकार से प्रेरणा कर छूट कराई।

स्वधर्मी बन्धु, दुःखी और रोगग्रस्त पीड़ितों की सहायता में आप विशेष भाग लेते हैं और जैन धर्म के ज्ञान प्रचार व कार्यप्रणाली में आपकी मुख्य लगन है। फलस्वरूप स्थानीय जैन सेवा समिति नाथद्वारा आप ही ने स्थापित करवाई है। स्वयं आप अपने स्वधर्मी बन्धुओं के साथ परीक्षा में बैठे और जैन सिद्धान्त शास्त्रीय परीक्षा रतलाम बोर्ड से पास कर स्वर्णपदक प्राप्त किया। आपके लगाए हुए पौधे अभी भी प्रफुल्लित हो रहे हैं और प्रत्येक दिन बालक-बालिकाएँ जैन धर्म का अभ्यास कर वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित होते हैं।

शरणार्थियों की आपने पूर्ण रूप से सेवा की। आप मेवाड़ सरकार की ओर से इस कार्य में निःशुल्क सेवा के लिए मन्त्री पद पर नियुक्त किये गए।

जागीर पुनर्ग्रहण के कारण नाथद्वारा के जुडीशियल व माली अधिकार लुप्त होने से स्थानीय सेवा से मुक्त होकर राजस्थान रेलवे में आप एकाउन्टेन्ट के पद पर रहे। वहाँ से कमिश्नरी उदयपुर डिवीजन में स्थानान्तर होकर सन् १९५० में वृहत् राजस्थान बनने पर आप आर० ए० एस० श्रेणी में लिये गए। रेन्ट कन्ट्रोलर एस० डी० ओ० फलासिया, एस० डी० ओ० कपासन, सुपरिन्टेन्डेन्ट कोर्ट ऑफ वार्ड्ज, सहायक कलेक्टर तथा फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट पाली के पदों पर सुशोभित होकर हाल में असिस्टेन्ट कमिश्नर देवस्थान विभाग राजस्थान उदयपुर के पद पर आरूढ़ है। स्वर्गीय महाराणा श्री भोपालसिंहजी साहब बहादुर ने आपको बैठक व पैर में सोना पहिनने की इजाजत बख्शी है।

सं० २००९ में उपाचार्य श्री के चातुर्मास के अवसर पर समस्त स्थानकवासी जैन समाज उदयपुर की तरफ से स्वागतकारिणी समिति के सभापति मनोनीत किये गए व श्रावक संघ के सर्वानुमत प्रथम सभापति चुने गए। इसी वर्ष ओसवाल (बडे साजन) समाज की नई कमेटी का चुनाव हुआ उसमें आप सर्वानुमति से मन्त्री पद पर चुने गए। इस कमेटी में आपने समाज के उत्थान व असहाय-सहायता आदि के लिए भरसक प्रयत्न किया और कमेटी की प्रगति में जो कार्य किया वह सराहनीय है।

अभी श्री जैन स्थानकवासी सेवा समिति उदयपुर ने जो आप ही की प्रेरणा से कायम की गई थी उसमें ज्ञान सम्पादन, प्रौढ़ शिक्षण, आयम्बिल शाला, स्वाध्यायशाला, दया, तपस्या, असहाय सहायता आदि में पूर्णरूप से सहयोग देकर प्रवृत्ति आगे बढ़ा रहे हैं।

हिन्दी साहित्यरत्न की परीक्षा पास कर सिद्धान्ताचार्य का प्रथम खंड पास किया है। आगे अभ्यास चालू है।

आप आठ भाषा हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, गुजराती, अर्द्धमागधी, व प्राकृत के उच्च ज्ञाता हैं।

जैन धर्म के विशेषज्ञ व प्रभावशाली भाषणदाता हैं। आप जैसे विद्वान् एवं चरित्रनिष्ठ पुरुष से समाज को गौरव है।

श्री अमरसिंहजी मेहता, उदयपुर
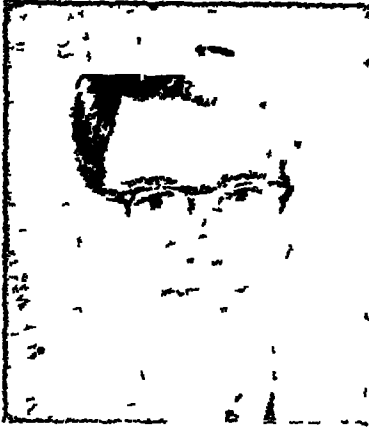
आपका शुभ जन्म उदयपुर (राजस्थान) में ता० ८ मई सन् १९३१ को हुआ था। आपका प्रसिद्ध खानदान 'चील मेहता' नाम से महाराणा हमीर से चला आ रहा है। आपके पूज्य पिताश्री का नाम श्री बलवन्तसिंह जी मेहता है, जो कि भारतीय संविधान परिषद के सदस्य, लोक सभा सदस्य, अन्तर्कालीन ससद के सदस्य एवं राजस्थान के उद्योग तथा वाणिज्य मन्त्री रह चुके हैं।

आपने राजपूताना विश्व विद्यालय से बी० कॉम० की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। देहली स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स से योजना कमीशन से सिफारिशन आर्थिक प्रशासन कोर्स उत्तीर्ण की है। अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन की 'विशारद' परीक्षा उत्तीर्ण की है। वर्तमान में एम० कॉम (फाइनल) का अध्ययन कर रहे हैं। महाराणा भूपाल कॉलेज में सन् १९५१ का प्रथम सम्मान्य ज्ञान पारितोषिक प्राप्त किया है।

श्री रतनलालजी मेहता उदयपुर

आप उदयपुर के निवासी श्री एकलिंगदास जी के सुपुत्र हैं। आप अत्यन्त सेवा-भावी, कर्मनिष्ठ एवं धार्मिक आस्था के व्यक्ति हैं। बचपन से ही धार्मिक संस्कारों से संस्कारित होने के कारण आपका जीवन अत्यन्त सरल है। सरकारी नौकरी छोड़कर इस वृद्धावस्था में भी आप तन-मन से समाज की सेवा कर रहे हैं। मेवाड के आदिवासियों को जीवन-धरातल से ऊँचा उठाने में आप सतत् प्रयत्नशील हैं। पैंतालीस वर्ष की अवस्था में ही आपने सपत्नीक ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया था। बडी योग्यता और दक्षतापूर्वक उदयपुर में जैन शिक्षण-संस्था, कन्या पाठशाला और ब्रह्मचर्याश्रम का सफल संचालन कर रहे हैं। इन संस्थाओं के लिए आपने भारत के भिन्न-भिन्न भागों में घूम-घूमकर लगभग सवा लाख रु० का चन्दा एकत्रित किया।

अब आप वर्द्धमान सेवाश्रम के द्वारा आदिवासियो के बीच शिक्षा तथा संस्कारों का प्रचार कर रहे हैं। अपनी ७९ वर्ष की आयु में भी पौषधोपवास आदि क्रियाएँ नियमित और व्यवस्थित रूप से करते आ रहे हैं।

धार्मिक थोकडे, शास्त्र आदि का आपको सुन्दर ज्ञान है। आपकी अद्भुत लगन और कार्यशक्ति को देखकर आपके प्रति सहज ही प्रेम एवं आदर प्रकट होना स्वाभाविक है।

श्री मनोहरलाल जी पोखरना, चित्तौडगढ
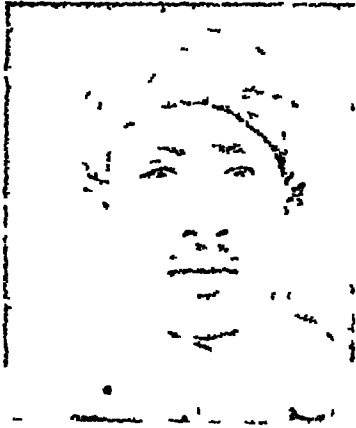
आप श्री मनोहरलाल जी पोखरना के सुपुत्र और चित्तौडगढ के निवासी हैं। चित्तौड नगर के ओसवाल समाज के आप एक उत्साही और समाज-सेवी कार्यकर्ता हैं। नगरपालिका चित्तौड के आप माननीय सदस्य हैं। नगर के धार्मिक एव सार्वजनिक कार्यक्रमो में आप अपना सक्रिय सहयोग देते रहते हैं। श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स के विगत दस वर्षों से आप सहायक सदस्य हैं। प्रत्येक धार्मिक कार्य को सम्पन्न कराने में आप विशेष रुचि रखते हैं। साधु-मुनिराजो की सेवा आपका परम लक्ष्य है। आपके गम्भीर स्वभाव और कार्य-तत्परता से जैन समाज आपसे अत्यन्त ही आशावान है।

o • •

श्री अर्जुनलाल जी डागो, भीलवाडा

आप श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक-सघ, भीलवाडा के अध्यक्ष हैं। आपने अपने पिताश्री की स्मृति में ५०,०००) रु० की लागत से "मोती-भवन" बनाया है, जिसमें स्थानीय मिडिल स्कूल, सघ की तरफ से सचालित किया जा रहा है।

• o •

सेठ बहादुरमलजी बांठिया, भीनासर

श्री बांठियाजी का जन्म स० १९४६ मिति आषाढ सुद ३ को हुआ था। आप कलकत्ता की सुप्रसिद्ध फर्म प्रेमराज हजारीमल के मालिक थे। छातो के आप बडे व्यापारियो में से थे।

आप बडा सयमी जीवन जीने वालो में से थे। ३९ वर्ष की उम्र में आपकी धर्मपत्नी का देहान्त हो जाने पर भी आपने दूसरी शादी नहीं की थी।

आपकी तरफ से दीक्षार्थियो को भण्डोपकरण, शास्त्रादि मुफ्त दिये जाते थे। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० के आप अनन्य भक्त थे। पूज्य श्री का जहाँ चातुर्मास होता था वहाँ प्राय आप जाते ही थे।

स० १९८४ में पूज्य श्री का चातुर्मास भीनासर में हुआ था। इस समय पूज्यश्री के व्याख्यानो से प्रेरित हो आपने श्री श्वे० साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था, बीकानेर को १९१११) रु० का दान दिया था। स्थानीय गौशाला तथा स्टेट मिडिल स्कूल की इमारतें भी आपकी तरफ से ही प्रदान की हुई हैं। आपकी तरफ से स्था० जैन श्वे० औषधालय भी भीनसर में चल रहा है। इस औषधालय को भवन-निर्माणार्थ आपने अपने कनिष्ठ पुत्र स्व० श्री बशीलालजी के नाम से ५००१) रु० प्रदान किया था। २८००१) रु० आपने अपने नाम से दिया और इस औषधालय को स्थायी रूप प्रदान कर दिया। जनवरी सन् १९४५ को ५६ वर्ष की उम्र में आपका देहावसान हुआ।

सेठ श्री गोविन्दरामजी भसाली, बीकानेर

आपका जन्म सवत् १९३५ में राणीसर नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिताजी का नाम सेठ श्री देवीचन्दजी था। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए आप आगे बढे और जीवन के हर पहलू में आपने सफलता प्राप्त की।

आठ वर्ष की अवस्था में ही आपको कलकत्ता आना पडा और एक फर्म में नौकरी की। आपने साहस करके स्वतन्त्र व्यवसाय में हाथ डाला और 'प्रतापमल गोविन्दराम' फर्म के नाम से दुकान स्थापित की। आपका इस समय दवाइयो का विशाल पैमाने पर व्यवसाय चल रहा है। बीकानेर में भी रग और पेटेन्ट दवाइयो की एक बडी दुकान है, जिसकी देख-रेख आपके सुपुत्र भीखमचन्दजी करते है।

आप बीकानेर के नामाकित प्रतिष्ठित सज्जनो में से हैं। आजकल आप व्यावसायिक कार्यों से निवृत्त होकर धर्म-ध्यान आदि में सलग्न है। आपकी ओर से चलने वाली "श्री गोविन्दराम भसाली पारमार्थिक सस्था" की तरफ से कलकत्ता में एक पचास हजार रुपये का भवन निकाला हुआ है जिसके व्याज की आमदनी से 'श्री गोविन्द पुस्तकालय' तथा 'श्री जीवन कन्या पाठशाला' का सचालन होता है। डूगरगढ़ में आपकी फर्म द्वारा धर्मशाला और उसके पास एक कुआ बनाया गया है।

आपके सुयोग्य पुत्र श्री भीकमचन्दजी सा० भी समाज-प्रेमी है। सन्त-मुनिराजो की सेवा-भक्ति में आप उदार-दिल से धनखर्च करते हैं।

श्री नथमलजी बाठिया परिवार, भीनासर निवासी का सक्षिप्त परिचय

श्री नथमलजी बाठिया का जन्म भीनासर में स० १९७२ के सावन सुदी ११ को हुआ था। आप तीन भाई है। सबसे बडे भाई श्री मगनमलजी तथा उनसे छोटे श्री गोरधनदासजी हैं। आपकी वर्तमान में तीन दुकानें चल रही हैं। प्रथम 'मेनरूप फतेचन्द' के नाम से कलकत्ता में, द्वितीय 'गोवर्धनदास बाठिया' के नाम से छापरमुख (आसाम) में और तीसरी बिराच (लिगरीमुख) में है। उक्त दुकानो पर जूट, चाय, किराना, मनिहारी आदि का व्यापार होता है। आपकी फर्म करीब ५० वर्ष से है। श्री मगनमलजी सा० कुशल व्यापारी हैं।
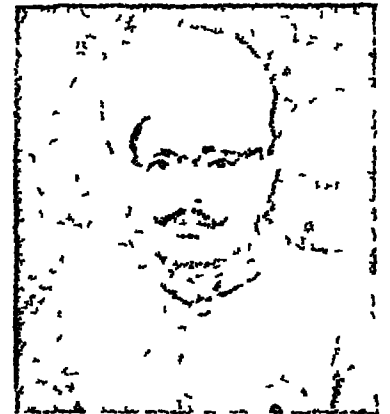
आपके पिताश्री धर्म-कार्य में सदैव तत्पर रहते थे और यथाशक्ति दान भी देते रहते थे। तदनुरूप आज तीनो भाई (पार्टनर) भी धर्म-कार्य तथा समाज-कार्य में पूर्ण उदारतापूर्वक सहयोग देते रहते हैं। आपने श्री मज्जैनाचार्य स्व० श्री जवाहरलालजी म० सा० की सेवा भी तन-मन और धन से खूब की।

श्री मागीलालजी सेठिया भीनासर निवासी का परिचय
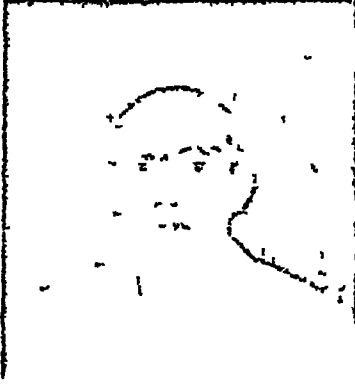
आपका शुभ जन्म भीनासर में सेठिया परिवार में हुआ था। आपके पूज्य पिताश्री का शुभ नाम हीरालालजी है। आप गत ५ साल से छापर मुल (आसाम) में पाट का व्यापार कर रहे हैं। आप भी धर्म-प्रेमी सज्जन है।

o • •

श्री चादमलजी, सचेती, अलवर

आप स्वर्गीय श्री चन्दनमलजी चौधरी के सुपुत्र हैं। कपडे के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। 'वृजलाल रामबक्स' नाम से आप फैंसी कपडे का व्यापार कर रहे हैं। सामाजिक कार्यों में आपका सहयोग प्रशसनीय है। आपके जीवन में एक विशेषता यह रही है कि आप जिस कार्य को हाथ में लेते हैं उसे नियमित रूप से पूरा करके छोडते हैं।

महाराजा अलवर के शासन काल में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। स्थानीय भव्य-भवन 'श्री महावीर भवन' के निर्माण में आपका सहयोग प्रशसनीय रहा है। सामाजिक एव धार्मिक कार्यों में आपका प्रमुख सहयोग रहता है। श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक सघ की कार्यकारिणी के आप माननीय सरक्षक सदस्य हैं।
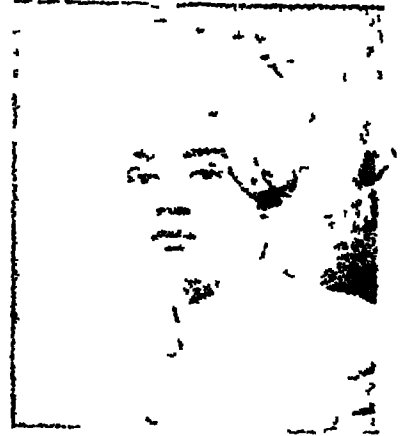
श्री चादमलजी पालावत, अलवर

आप स्व० श्री स्वरूपचन्दजी पालावत के सुपुत्र हैं। आपका जन्म फाल्गुन कृष्णा अष्टमी स० १९४८ में अलवर में हुआ था। बचपन से ही आपकी अभिरुचि अध्ययन एव तत्त्वचिन्तन में रही है। स० १९७० में आपने आदरणीय महासतीजी श्री पार्वती म० लिखित 'सम्यक्तव सूर्योदय', 'सत्यार्थ चन्द्रोदय' और 'ज्ञानदीपिका' आदि ग्रन्थो का अध्ययन स्वनामधन्य प० मुनि श्री माधव मुनिजी के चरणो में रहकर किया और फलस्वरूप अपने परम्परागत मूर्तिपूजा के विचारो को छोडकर आप चेतन गुण पूजा की ओर पूर्णरूप से प्रवृत्त हो गए।

सवत् १९७३ में वर्तमान सह मन्त्री प० रत्न श्री हस्तीमलजी म० के दादा-गुरु पूज्य श्री विनयचन्दजी म० ने आपकी प्रगल्भबुद्धि को देखकर आपको कर्मग्रन्थ सग्रहणी और क्षेत्र समासादि के स्वाध्याय करने को प्रेरित किया। तभी से कर्मवाद
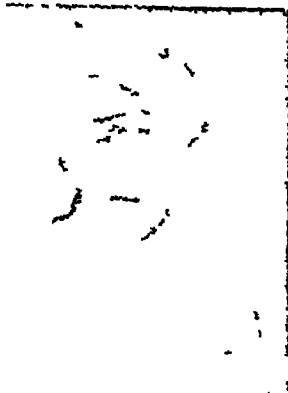
का आपका अध्ययन गहन से गहनतर होता रहा। कर्म सिद्धान्त के सूक्ष्म विवेचन की आपकी क्षमता की प्रशंसा वर्तमान आचार्य श्री एवं उपाचार्य श्री ने भी मुक्तकण्ठ से की है।

आप स्थानीय श्री व० स्था० श्रावक संघ के संरक्षक सदस्य हैं। स्थानीय श्री 'महावीर-भवन' में आपने भी श्री चांदमलजी पालावत के साथ-साथ प्रशंसनीय सहयोग दिया है। रात्रिकालीन स्वाध्याय मण्डल के संचालन का भार भी आप पर ही है। जिस प्रकार व्यापारिक-क्षेत्र में आपने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है उसी प्रकार धार्मिक तत्त्व-चर्चा में भी आपने अपनी बुद्धि की प्रखरता प्रमाणित की है।

श्री खुशहालचन्दजी संचेती, अलवर

आप स्व० श्री केशरीचन्दजी के सुपुत्र हैं। कपड़े के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। 'कस्तूरचन्द ज्ञानचन्द' और 'खुशालचन्द अजयकुमार' के नाम से आपकी दो व्यापारिक फर्में हैं जिन पर कपड़े का थोक व्यापार होता है। सुप्रसिद्ध बिन्नी क्लॉथ के आप डिस्ट्रीब्यूटर हैं।

धार्मिक तत्त्वचिन्तन में आप श्री चांदमलजी पालावत के निकट सहयोगी हैं और उनके साथ-साथ आप भी धर्म-ग्रन्थ का स्वाध्याय करते हैं। स्वनामधन्य चारित्र चूडामणि महातपस्वी श्री सुन्दरलालजी म० जब गृहस्थावस्था में थे तब उनकी ही सत्प्रेरणा से आपका झुकाव शास्त्रीय तत्त्व चिन्तन की ओर हो गया था। तभी से आप निरन्तर इस मार्ग पर आरूढ़ हैं।

आपका थोकड़ों का ज्ञान महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक कार्यों में आपकी प्रशंसनीय अभिरुचि है। आप श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक संघ के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री पद्मचन्दजी पालावत, अलवर

आप स्व० श्री किरणमलजी पालावत के सुपुत्र हैं। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने श्री राजर्षि कॉलेज से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आप व्यापारिक कार्यक्षेत्र में उतर पड़े। 'छोटेलाल पालावत' के नाम से आप कपड़ा, पगड़ी व सूत का थोक व्यापार करते हैं। अभी कुछ वर्ष पूर्व से आपने जयपुर में भी इसी नाम से कार्यारम्भ किया है।

जिस प्रकार आप व्यापारिक कार्यक्षेत्र में अग्रणी हैं, उसी प्रकार सामाजिक कार्यों में भी प्रमुख भाग लेते हैं। महाराजा अलवर के शासन काल में आप नगरपालिका के उपाध्यक्ष एवं राज्य की ओर से ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रह चुके हैं।

श्री जैन युवक संघ की कार्यवाहियों में आपने प्रमुख भाग लिया है। संघ के छठे अविस्मरणीय वार्षिक अधिवेशन में आपने शारीरिक व्यायाम के आश्चर्यजनक खेल दिखाकर जनता को विस्मयान्वित कर दिया था। लोहे के मोटे सरिए को गले एवं आँख के कोमल भागों पर रखकर मोड़ना एवं सीने पर मनों वजन से पत्थर रखवाकर तुड़वाना आदि कार्य आपके आसानी से कर दिखाए थे।

इस समय आप श्री वस्त्र-व्यापार समिति, पगड़ी असोसिएशन और श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक संघ के माननीय अध्यक्ष हैं। और दी यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक की अलवर शाखा के अध्यक्ष हैं।
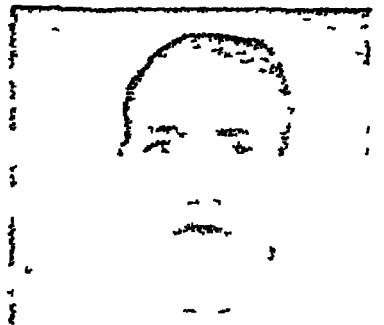
छुट्टनलालजी लोढा, अलवर
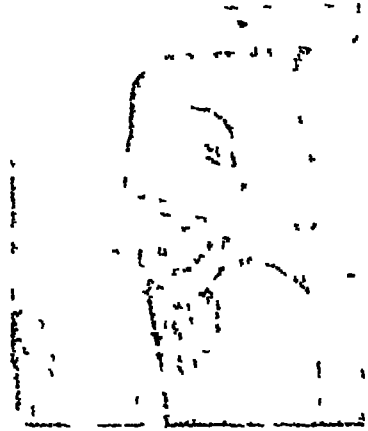
आप स्व० श्री दानमलजी लोढा के सुपुत्र है। आपका जन्म वि० स० १९६० की आश्विन शुक्ला ९ को हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद, परम्परागत सरकारी खजान्ची पद पर आपने कार्य किया। इस समय आप गवर्नमेन्ट कन्ट्राक्टर है।

व्यापारिक कार्य के साथ-साथ सामाजिक कार्यों मे भी अभिरुचि अच्छी है। प्रत्येक सामाजिक कार्य मे आप तन, मन, धन से जुट जाते है और पूर्ण कर डालते है। पजाब-सम्प्रदाय के यशस्वी स्व० पूज्य श्री रामबख्शजी म० का सासारिक सम्बन्ध आपके कुटुम्ब के साथ है।

आपकी सामाजिक प्रवृत्तियो को लक्ष्य मे रखते हुए आपको श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ का उपाध्यक्ष चुना गया है।

श्री रतनलालजी सचेती, अलवर

आप अलवर जिला स्थित ग्राम बहादुरपुर निवासी श्री बुधमलजी के सुपुत्र है। आपका शुभ जन्म मिती कार्तिक कृष्णा १३ सवत् १९७५ को हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आप व्यापारिक क्षेत्र मे काम करने लगे। अलवर मे 'रतनलाल ताराचन्द' के नाम से तथा इन्दौर मे 'उमरावसिह मुन्ना-लाल' और 'रतनलाल मगलचन्द' के नाम से तीन फर्मे कपडे का व्यापार कर रही है।

सामाजिक कार्यों मे आपकी विशेष रुचि रहती है। स्थानीय कांग्रेस के आप कर्मठ सदस्य है।

सवत् २००७ मे जब तेरह पथ सम्प्रदाय के आचार्य श्री तुलसी अपनी शिष्य-मण्डली सहित यहाँ पधारे तो आपकी धर्मपत्नी तेरह पथ विचारधारा से सम्बन्धित होने से वे आपके ही मकान पर सदल-बल पधारे। उस समय आपने साहसपूर्वक उन्हे अपने सिद्धान्तो की चुनौती दी। आचार्य श्री ने अपने स्थान पर मिलने की स्वीकृति दी। तब आप अपने समाज के अन्य उत्साही एव विद्वज्जनों को साथ लेकर वहाँ उपस्थित हुए। सौभाग्य से सरदार शहर के निवासी श्री मोतीलालजी बरडिया भी वहीं उपस्थित थे। अन्ततोगत्वा तुलसी गणी को निरुत्तर होकर यहाँ से विहार करना पडा।

पजाब से विहार कर जब पूज्य श्री खूबचन्दजी म० अलवर पधारे तब आपको म० श्री के परिचय में आने का सौभाग्य मिला और इन्दौर मे श्रद्धेय प० मुनि श्री सहस्रमलजी म० की पुनीत सेवा मे जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। तभी से निरन्तर आपकी धर्म एव दर्शन के प्रति रुचि प्रगति पथ पर है। आपकी सामाजिक एव धार्मिक चेतना तथा उत्साह को देखकर ही श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ ने आपको अपना मन्त्री चुना है।

श्री पदमचन्दजी सचेती, अलवर

आप स्व० श्री खैरातीमलजी सचेती के सुपुत्र हैं। आपने प्रारम्भिक शिक्षा यहाँ ग्रहण की और आगे अध्ययन कलकत्ता में किया। सन् १६४० में आपको अध्ययन छोडकर अलवर आना पडा। तभी से आपने व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किन्तु साहित्य से आपका सपर्क निरतर चलता रहा। स्थानीय 'श्री जैन युवक सघ' से सहयोग रहा। सघ के छठे वार्षिक अधिवेशन में वाद-विवाद प्रतियोगीताएँ जैन युवक सघ की ओर से आपने तथा अभयकुमार जी ने भाग लिया था। फलत सब सस्थाओं से विजय प्राप्त की और कप जीता।

सामाजिक कार्यों में आपकी सेवाएँ सर्वतोमुखी हैं। सामाजिक चेतना एव उन्नति के प्रत्येक कार्य में आपका सहयोग प्रशसनीय है। आपकी सेवाओ एव कार्यदक्षता को दृष्टिगत रखते हुए आपको श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ का सहमन्त्री चुना गया है।

श्री नानकचन्द जी पालावत, अलवर

आप स्व० श्री कुन्दनमल जी पालावत के सुपुत्र हैं। कपडा, पगडी व सूत के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। धार्मिक तत्त्व चिन्तन एव सामाजिक उन्नति के कार्यों में आपकी अत्यधिक अभिरुचि है। विद्यार्थियो की स्कूली शिक्षण की रुचि के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा की तरफ अभिरुचि पैदा कराने में भी आप सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

पजाब केशरी श्री मज्जैनाचार्य स्व० श्री काशीरामजी म० के सदुपदेश से 'श्री ओसवाल जैन कन्या पाठशाला' की स्थापना हुई और आप पाठशाला के जन्मकाल से ही उसकी उन्नति में सतत प्रयत्नशील रहे हैं। आज आपके प्रयत्नो से शैक्षणिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ धार्मिक शिक्षण और सिलाई, कढाई आदि का शिक्षण भी दिया जाता है।

आपके द्वारा बाल एव युवक वर्ग को धार्मिक सस्कारो से अपने जीवन को सुसस्कृत बनाने की प्रेरणा भी समय २ पर मिलती रहती है आप श्री वर्द्ध० स्था० श्रावक सघ की कार्यकारिणी समिति के माननीय सदस्य हैं।

श्री कुञ्जलालजी सा० तालेडा, अलवर

आप स्यालकोट निवासी स्व० फग्गूशाह जी के सुपुत्र हैं। स्यालकोट में आप प्रतिष्ठित व्यापारी थे। वहाँ आपका सर्राफे का मुख्य व्यापार था। भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय जो हृदयद्रावक काण्ड पाकिस्तान में हुआ और लाखों घरो को उजडकर खानाबदोश होकर भागना पडा उस समय आपको भी अपनी चल-अचल सम्पत्ति छोडकर भागना पडा। किन्तु इतनी मुसीबतो का सामना करने के बावजूद भी आप हताश और निराश नहीं हुए। और सकुटुम्ब अलवर पधार गए। यहाँ आपने 'स्यालकोटियो दी हट्टी' के नाम से कपडे का व्यापार आरम्भ कर दिया है। इसके अतिरिक्त दिल्ली में अपने अन्य सहयोगियों के साथ "दिल्ली एल्यूमोनियम कारपोरेशन के नाम से एल्यूमोल्यिम के बर्तनों की फैक्ट्री चालू की है।

भारत के मध्यप्रदेश स्थित कटनी नगर में स्यालकोट के उत्साही एव व्यापार-कुशल व्यक्तियो ने "दी नेशनल रवर वर्क्स" के नाम से फैक्टरी प्रारम्भ की है। अत्यल्प समय में ही इस फैक्टरी ने भारत के रवर-उद्योग में महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर लिया है। आप वर्तमान में इस कम्पनी के डायरेक्टर है।

सामाजिक उन्नति के कार्यों में आप सदैव अग्रणी रहते हैं। श्री वर्द्ध स्था० जैन श्रावक सघ की कार्यकारिणी के आप माननीय सदस्य है।

श्री अभयकुमारजी वोहरा, अलवर
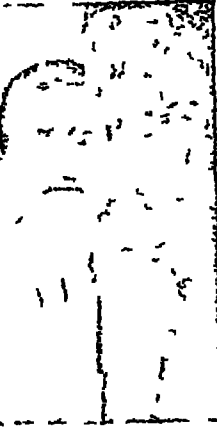
आप स्वनाम धन्य तपस्वी श्री नानकचन्दजी म० के सासारिक सुपुत्र है। आपकी अल्पायु में ही आपके पिता श्री ने भगवती दीक्षा अगीकार कर ली थी। अत आपको रा० सा० श्री जमुनालालजी रामलालजी कीमती इन्दौर वालो के सरक्षण में रखा गया। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला में सन् १९३४ तक विद्याध्ययन किया। धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ आपने हिन्दी में प्रभाकर की परीक्षा पास की है।

आपके काका सा० श्री प्यारेलालजी आपको यहाँ ले आए और अपना दत्तक पुत्र स्वीकार कर लिया। तभी से आप यहाँ व्यापार कर रहे हैं। सामाजिक कार्यों में आपका प्रशसनीय सहयोग रहता है। वर्तमान में आप स्थानीय श्री जैन युवक सघ के कोषाध्यक्ष एव श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक सघ की कार्यकारिणी समिति के माननीय सदस्य है।

श्री ताराचन्दजी पारिख, अलवर

आप दिल्ली निवासी स्व० श्री वालचन्दजी पारिख के सुपुत्र हैं। आपके पूज्य पिता श्री का स्वर्गवास ३२ वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। अत आपके नाना सा० श्री गणेशीलालजी पालावत आपकी माताजी को वच्चों सहित अवलर ले आए।

सन् १९३९ तक आपने विद्याध्ययन किया। इसी वीच सौभाग्यवश आपका स्थानीय जनाने शफाखाने की प्रिंसिपल मेडीकल ऑफीसर डा० एस० शिवाकामू से परिचय हो गया, जिनके आशीर्वाद से आपने शीघ्र ही अच्छी उन्नति की। इस समय आप गवर्नमेन्ट कन्ट्रेक्टर है और श्री सवाई महाराजा सा० अलवर के पैलेस कन्ट्रेक्टर का कार्य भी करते हैं।
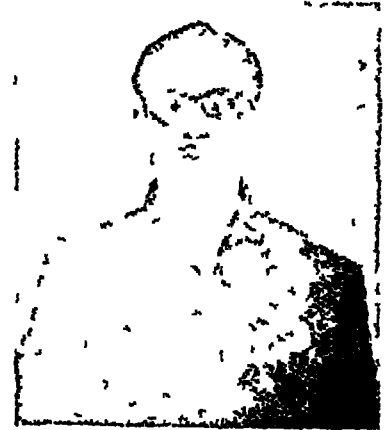
सामाजिक कार्यों में आप रुचिपूर्वक भाग लेते है। स्था० श्री जैन युवक सघ की समस्त कार्यवाहियो में आपका प्रशसनीय योग रहा है। सघ की ओर से चालू किये गए वाचनालय एव पुस्तकालय की उन्नति का मुख्य श्रेय आपको ही है। पुस्तकालयाध्यक्ष बनने के बाद आपने पुस्तको की सख्या द्विगुणित से भी अधिक पहुँचा दी है और पुस्तकालय को भी नवीन ढग से सुसज्जित कर दिया है। श्रद्धेय कविवर्य श्री अमरचन्दजी म० के परिचय में हिज हाइनेंस श्री सवाई अलवरेन्द्र देव को लाने में भी आपने महत्वपूर्ण भाग लिया था। वर्तमान में आप श्री वर्ध० स्था० श्रावक सघ की (का० स०) समिति के माननीय सदस्य हैं।

श्री अभयकुमारजी सचेती, अलवर

आप श्री खुशहालचन्दजी सचेती के सुपुत्र हैं। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने श्री राजर्षि कॉलेज से मेट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आपने व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया।

सामाजिक कार्यों में भी आप सदैव सहयोग देते आए हैं। स्थानीय श्री जैन युवक सघ की मानसिक एव शारीरिक उन्नति के लिए चालू की गई प्रवृत्तियो में आपने महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है। श्री ओसवाल जैन कन्या-पाठशाला के कार्यों में भी आप सोत्साह भाग लेते रहते हैं। आप एक अच्छे वक्ता तथा विचारक है

श्री मंगलचन्दजी सचेती, अलवर

आप स्व० श्री खैरातीमलजी सचेती के सुपुत्र हैं आप पगडी व सूत के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया। किन्तु सामाजिक कार्यक्रम भी साथ-साथ चलता रहा। श्री जैन युवक सघ के प्रादुर्भाव से ही आप उसकी कार्यवाही में प्रमुख भाग लेते रहे हैं। आपने 'मगलचन्द पन्नालाल' के नाम से फर्म स्थापित की। वर्तमान में सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि लेने के फलस्वरूप आपको श्री जैन युवक-सघ का अध्यक्ष चुना गया है।

स्व० श्री सुगनचन्दजी नाहर, अजमेर

आपका जन्म स० १९२९ के मार्गशीर्ष वदी १३ को अजमेर में हुआ था।

आपने इन्टर की शिक्षा प्राप्त करके रेलवे की नौकरी की और S T I A रहकर अपनी पूर्ण सेवाओ द्वारा सफलतापूर्वक अवधि समाप्त करके अवकास ग्रहण किया।

अप्पने समाज के कार्यों में भी पूरी दिलचस्पी ली, और कई सस्थाओं के स्तर को ऊँचा उठाया। आप श्री ओसवाल जैन हाई स्कूल के प्रेसिडेन्ट, श्री ओसवाल औषधालय के वाइस प्रेसिडेन्ट, श्री जैन लायब्रेरी के मन्त्री श्री नानक जैन छात्रालय गुलाबपुरा के प्रेसिडेन्ट एव श्री नानक सम्प्रदाय के प्रमुख श्रावक थे। आप साधु-सम्मेलन में स्वागत समिति के मन्त्री थे।

आप अपने विचारो के दृढ एव अनुभवी योग्य मार्ग प्रदर्शक थे। आपने समय-समय पर यहां के युवको को प्रेरणा देकर आगे बढाया। ८० वर्ष की अवस्था में भी आप व्याख्यान आदि में पैदल ही आने का अभ्यास रखते थे। आपने अपने जीवन में धार्मिक, सामाजिक एव आर्थिक सभी प्रकार की उन्नति की और अजमेर में नाहर परिवार के गौरव को बढाया। आप जैसे धर्म रत्न की पूर्ति होना मुश्किल है।

श्री सरदारमलजी लोढ़ा, अजमेर

आपका जन्म सं० १९७२ में सुप्रसिद्ध सेठ गाडमलजी लोढा के यहाँ हुआ।

अजमेर प्रान्त के प्रमुख लोढावश के श्रीमन्त सेठ सरदारमलजी लोढा वर्तमान में अजमेर श्रावक सघ के

सघपति है, आप जिस उत्साह एव विचारधारा से इस समय संघ का कार्यभार सँभाल रहे हैं, वह अत्यन्त सराहनीय हैं।

श्रीमन्त घराने में जन्म पाकर भी आप शान-शौकत एव अभिमान से परे है, नम्रता तो आप में कुदरती गुण है। आपने अजमेर में श्रावक सघ बनाने एव उसके बाद भी उलझी हुई गुत्थियो को सुलझाने में जिस चतुराई से काम लिया, वह भुलाया नहीं जा सकता।

आप पू० श्री नानकरामजी म० की सम्प्रदाय के अगुआ श्रावको में से थे, किन्तु सादडी-सम्मेलन के बाद आपने प्रेम और सगठन की भावनाओ को अपनाया तथा अजमेर में श्रावक सघ की स्थापना के लिए सबसे पहले कदम उठाया।

आप अपने पुराने साथियों एव गत सम्प्रदाय के मुनिवर्ग को भी सघ में सम्मिलित होने के लिए सदैव प्रेरणा देते रहे हैं। आशा है, अब शीघ्र ही आप इस कमी को भी पूर्ण करने में सफल होगे। समाज को आप से पूर्ण आशाएँ हैं।

श्री कल्याणमलजी वैद, अजमेर

आपका जन्म स० १९६३ श्रावण वदी ३ को अजमेर में श्री केशरीमलजी वैद के यहाँ हुआ।

जैन कॉन्फरन्स के हर वार्षिक अधिवेशन में आप अवश्य भाग लेते हैं। श्री वैदजी अजमेर साधु सम्मेलन के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे और समाज-सेवा के हर कार्य में अपना सहयोग देते रहे है।

आप स्पष्ट वक्ता एव निडर कार्यकर्त्ता है। आपका अजमेर समाज पर काफी प्रभाव है और आज भी मतदान के अवसर सबसे ज्यादा वोट आप ही को मिलते हैं।

श्री वैदजी यहाँ के प्रमुख कार्यकर्त्ता है। धार्मिक लगन, सन्त-सेवा एव साहित्य के पूरे प्रेमी हैं, आपके विचारो से युवको को काफी बल मिलता है।

आप कॉन्फरन्स के हर अधिवेशन पर जाकर अपने विचारो को स्पष्ट रूप से रखने में कभी नहीं हिचकते एव हर वर्ष अपने सुझाव और प्रस्ताव अवश्य देते रहे हैं।

आशा है, समाज-सेवा में आपका सक्रिय सहयोग इसी प्रकार निरन्तर बढता रहेगा।

श्री गणेशमलजी बोहरा, अजमेर

आपका जन्म अजमेर में सेठ भैरु लालजी बोहरा के यहाँ स० १९६२ भाद्रपद सुदी ४ को हुआ था आपका कारोबार श्री गणेशमल सरदारमल बोहरा के नाम से अजमेर में है।

१९८९ में कॉन्फ्रेन्स की दिल्ली जनरल सभा में होने वाले साधु-सम्मेलन के लिए अजमेर का आमन्त्रण लेकर कुछ नवयुवक गए थे तब श्री दुर्लभजी भाई का एक प्रश्न कि—"तुम सम्मेलन के खर्चे की पूर्ति कहाँ से करोगे," का यह उत्तर कि "जब तक मै और मेरे बच्चे जीवित हैं सम्मेलन की पूर्ति कर सकूँगा, करूँगा, इसके बाद का भार आप पर होगा" श्री गणेशमलजी बोहरा के इन शब्दो ने जनरल सभा को अजमेर सम्मेलन की स्वीकृति के लिए मजबूर कर दिया था, और आज इन्हीं के उक्त साहस ने अजमेर को अजर अमरपुरी का महान् गौरव दिया जो कि स्था० जैन इतिहास में सदैव चिर-स्मरणीय रहेगा।

श्री बोहराजी उन कर्मठ कार्यकर्त्ताओ में से हैं जो कि जैसा कहते हैं वही कर दिखाते हैं। आपने अभी सवत् २०१२ में अपनी २० वर्ष की पूरी लगन के फलस्वरूप स्थानकवासियो के लिए एक स्वतन्त्र धर्म स्थान के हेतु एक विशाल नोहरे की स्थापना कर दी और अब एक विशाल भवन के निर्माण में प्रयत्नशील हैं।

आप वर्तमान में, श्री श्वे० स्था० जैन सघ के सभापति एव श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ में स्वेच्छा से किसी पद पर नहीं रहते हुए भी, सब कुछ हैं।

आप केवल अजमेर ही नहीं, समस्त स्था० जैन समाज के उज्ज्वल सितारों में से है, एव बाहर की जनता पर भी आपका काफी प्रभाव है। श्री बोहरा जी अजमेर के प्राण और युवकों के हृदय-सम्राट् है।

शासनदेव आपको चिरायु, स्वास्थ्य एव बल दें कि जिससे आप समाज के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने में शीघ्र सफल हों, यही कामना !

श्री उमरावमल जी ढड्ढा, अजमेर

आपका जन्म सेठ कल्याणमलजी ढड्ढा के यहाँ ता० १५-१२-१० को बीकानेर में हुआ। आपने बी० ए०, एल-एल० बी० तक अध्ययन किया है।

प्रभुता पाकर उदार, वैभव पाकर सरल, अमीरी में रहकर भी अपने साथियों के साथ जी तोडकर कार्य करने वाले श्री सेठ उमरावमल जी ढड्ढा उन महान् रत्नो में से हैं जिन्होने समाज में फैले अन्धकार को चीर कर प्रकाश दिया, गिरे हुओ को उठाया और युवको को एक नया जोश और नई प्रेरणा दी।

श्री ढड्ढाजी सवत् २००३ से समाज के क्षेत्र में आए, स्था० जैन सघ के मन्त्रीत्व का भार सभाला और तब से अब अपनी सेवाएँ पूर्ण रूप से दे रहे हैं।

आप अब तक कई सस्थाओ के पदाधिकारी रहे है, वर्तमान में श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ के प्रधान मन्त्री, श्री ओसवाल जैन हाई स्कूल के प्रेसिडेन्ट, श्री श्वे० स्था० जैन के मन्त्री एव अजमेर के भावी भाग्य विधाता हैं।

समाज का यह चमकता हुआ चाँद युग-युग तक अपने निर्मल प्रकाश द्वारा फूट-कलह के अन्धकार को चीरता हुआ, निरन्तर आगे बढता रहे, आपकी धर्म निष्ठा एव उदारता सोने में सुहागा बनकर फैले, यही मगल भावना !

श्री जवरीलालजी चौधरी, अजमेर

आपका जन्म भिणाय (अजमेर) में स० १९५९ आषाढ वदी १२ को सेठ श्री किशनलालजी चौधरी के यहाँ हुआ।

भिणाय ग्राम से धनोपार्जन के लिए निकले हुए आज अजमेर के लखपति श्रीमत सेठ जेवरीलाल जी चौधरी उन कार्यकर्त्ताओ में से हैं जिनके कि हृदय में समाजोन्नति के लिए सदैव उथल-पुथल मची रहती है। २५ वर्ष से शुद्ध खादी के वस्त्रो में सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले ये अमीर, अपने गरीब भाइयो के लिए कई योजनाएँ सोचते हैं और उसके लिए प्रयत्न भी करते हैं।

आपका समाज के कार्यों में सदैव ही सक्रिय सहयोग रहा है, तन, मन, धन से आपने अपने साथियो का कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ दिया है।

सदैव हँसते हुए चहरे में, सेवा के लिए तत्पर कार्य करने में, जोश एव चेतना भरने में आप कुशल हैं, धार्मिक विचारो में सलग्न एव सन्तो की सेवा में सदैव आगे रहते है।

साधु सम्मेलन में आपका प्रमुख भाग रहा है, वर्तमान में आप श्री श्वे० स्था० जैन सघ के खजानची एवं व० स्था० जैन श्रावक सघ के अगुआ कार्यकर्ताओं में से है ! समाज को आपसे बहुत आशाएँ हैं।

श्रीमान् भेरौंलालजी सा० हींगड, अजमेर

आप समाज के छिपे हुए रत्नो में से हैं। समाज एव धर्म की निस्पृह भाव से सेवा करना ही आपके जीवन का लक्ष्य रहा है। आप श्री ओसवाल औषधालय के कई वर्षों से ऑ० सेक्रेट्री पद पर कुशलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। आप मिलनसार, प्रकृति के उदार हृदया हैं। समाज को आप से बडी २ आशाएँ हैं। आपके एक सुपुत्र तथा दो सुपुत्रियाँ हैं।

श्री मनोहरसिंहजी चण्डालिया, अजमेर

आपका जन्म स०१९६९ पोष सुदी १२ को सेठ मन्नालालजी के यहाँ हुआ। आपका कारोबार सर्राफी (सोना चादी) का है।

श्री मनोहरसिंहजी चण्डालिया का परिचय आपको इसीसे मिल सकेगा कि आप अजमेर श्रावक सघ की धार्मिक सेवा समिति के कनवीनर है। धार्मिक लगन तो आपमें इतनी है कि आज १२ वर्ष से अजमेर में आपने एक आयबिल प्रतिदिन करने की योजना बना रखी है जिसमें आपको हर समय अपना योग देकर उसकी पूर्ति करनी पडती है, सन्तो की सेवा सुश्रूषा के लिए आपका परिश्रम सराहनीय है।

आपका जीवन सादा एव १२ वर्ष से शुद्ध खादीमय है, विचारो के पक्के और आचार-पालक हैं।

वर्तमान में श्रावक सघ के खजानची एव धार्मिक समिति के सयोजक भी हैं। आप इस समय समाज के कार्यों में पूर्ण रूप से भाग लेकर अपने साथियो का साहस बढा रहे हैं, आशा है इसी प्रकार आपका सहयोग समाज के बाकी कार्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगा।

०

श्री सरदारमलजी छाजेड, शाहपुरा

आप शाहपुरा के निवासी हैं। कई वर्ष तक आप शाहपुरा में न्यायाधीश का कार्य करते रहे। राज्य में आप अत्यन्त प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। मरुधर श्रावक-सम्मेलन, बगडी के आप अध्यक्ष थे। अजमेर साधु-सम्मेलन के उपमन्त्री के रूप में आपने खूब काम किया था। स्व० श्री दुर्लभ जी भाई के बाद आप ही श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के कुलपति १०-१२ वर्ष तक रहे।

अनेक वर्षों तक कॉन्फरन्स को और समाज को आपकी तरफ से अलभ्य सेवाएँ मिलती रही हैं। आजकल आप एक प्रकार से 'रिटायर्ड लाइफ' ही व्यतीत कर रहे हैं।

०

राय बहादुर सेठ कुन्दनमलजी कोठारी, ब्यावर

आपका जन्म स० १९२७ में निमाज में हुआ था। ब्यावर में आपने व्यवसाय में अत्यधिक उन्नति की। आप का मुख्य व्यवसाय ऊन का था। इसमें आपने अच्छा पैसा कमाया। ब्यावर में आपने महा लक्ष्मी मिल्स की स्थापना की, जिसमें आप का आधा हिस्सा है। मिल में चर्बी का उपयोग होना आपको बडा खटकता रहता था। अत आपने मिकल ऑइल का आविष्कार करवाया और चर्बी की जगह इसी का उपयोग करवाने लगे। आपने ब्यावर के

अन्य मिल्स वालो से भी चर्बी के बजाय इस तेल को काम में लेने का आग्रह किया। फलत आज ब्यावर के सभी मिल वाले इसी तेल का उपयोग करते हैं।

जैसे आप व्यापारी समाज में अग्रगण्य थे वैसे ही आप राज्य में भी प्रतिष्ठित थे। सन् १९२० में आपको राय साहब और बाद में राय बहादुर का खिताब मिला था। आप ओनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे। आपनें अपने जीवन काल में लाखों रुपए का दान समाज को दिया और कई सस्थाओ की स्थापना की। आपका जीवन बडा सादा था। आप समाज में प्रचलित कुरुढियों के कट्टर विरोधी थे। आपने १,२२,८००) रुपये के व्याज को परमार्थ में लगाने का निश्चय किया था। आपके स्वर्गवास के समय आपके सुपुत्र श्री लालचदजी ने दो लाख रुपयो का आदर्श दान दिया।

आपका स्वर्गवास ब्यावर में हुआ। आपके सुपुत्र सेठ लालचदजी सब व्यवसाय को बडी योग्यता पूर्वक सम्हाल रहे हैं।

शीघ्र लिपि के आविष्कारक श्री एल० पी० जैन ब्यावर

विचारशील मस्तक और चौडी ललाट वाले सात भाषाओ में शार्ट हैंड के प्रसिद्ध आविष्कारक श्री एल० पी० जैन का पूरा नाम है श्री लाबूराम पूनमचन्द खिवसरा, जो ब्यावर में 'मास्टर साहब' के नाम से प्रसिद्ध हो चुके हैं। आपमें धर्म के प्रति अविचल श्रद्धा थी। अपना अधिकाश समय धार्मिक शिक्षा, शास्त्र-स्वाध्याय और चिन्तन-मनन में व्यतीत करते थे। पहली पत्नि के स्वर्गवास हो-जाने के पश्चात् २५ वर्ष की अवस्था में आपका दूसरा विवाह हुआ किन्तु ससार के प्रति उत्कृष्ट उदासीन्ता के कारण पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज से दोनो दम्पति ने ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया।

उस समय समाज में शिक्षा की अत्यधिक कमी थी और धार्मिक शिक्षण तो था ही नहीं। सन् १९२१ में आपने जैन पाठशाला की स्थापना की जो आगे जाकर "जैन वीराश्रम" कहलाया। बाहर से पैसा मागे बिना नि स्वार्थ और निस्पृह वृत्ति से सस्था का सफल सचालन किया। भाग्यवशात् आपने नई सकेत लिपि का आविष्कार भी किया है। सन् १९३१ में अपने प्रयत्न में आप सफल होगये। कुछ विद्यार्थियो को अपने इस लिपि का अध्ययन कराया और तैयार किया। आपके शॉर्टहैंड की यह विशेषता है कि वह किसी भी भाषा के लिए काम में ली जा सकती है। क्योंकि वह अक्षर पद्धति पर बनी है। आपके सिखाये हुए कई व्यक्ति आज भी राजस्थान अजमेर तथा मध्यभारत में रिपोर्टर का काम कर रहे हैं और ३००-४००) रु० तक का माहवारी वेतन पारहे हैं। इस कार्य के उपलक्ष्य में श्री मिश्रीलालजी पारसमलजी जैन बैंगलोर वालो की तरफ से ११०००) रुपये की थैली भेंट की गई थी।

आज आप नहीं है। किन्तु आपका नाम और काम अभी भी है। जीवन चुराया जासकता है किन्तु जीवन की सुगध नहीं चुराई जासकती।

श्री घेवरचन्दजी बांठिया "वीरपुत्र"

आपका शिक्षण श्रीमान् पूनमचन्दजी खिवसरा के पास श्री जैन वीराश्रम में हुआ। सस्कृत, प्राकृत और न्याय की सर्वोच्च परीक्षाएँ देकर आपने समाज में अपना अग्रिमस्थान बना लिया। श्री खिवसराजी द्वारा आविष्कृत सकेत लिपि का अभ्यास कर उसमें अच्छी Speed गति प्राप्त की। इस समय आप बीकानेर में श्री अगरचन्दजी भैंरोदानजी सेठिया के पास रहकर अनेक विद्वानो के साथ लेखन कार्य में सलग्न हैं। आपको शास्त्रो का बोध भी बहुत अच्छा है। बीकानेर पधारने वाले सत-सतियो के शिक्षण का काम आप ही करते हैं। आपका अधिकाश-समय साहित्य-लेखन साहित्य अवलोकन तथा अध्ययन-अध्यापन में ही व्यतीत होता है। इस समय आप सेठिया सस्था के साहित्य-निर्माण सशोधन-प्रकाशन विभाग में प्रमुखरूप से कार्य कर रहें हैं।

श्री शकरलालजी जैन M.A L L B साहित्यरत्न
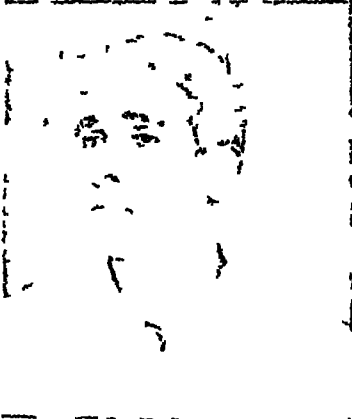
आप राजस्थान में बरार नामक ग्राम के हैं। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण आप कक्षा में सदा ही प्रथम रहा करते थे। आपका हृदय बडा ही भावुक तथा दीन-दुखियो के प्रति करुणार्द्र है। आपने "महावीर शिक्षण-सघ" 'शारदा मन्दिर' तथा जैन युवक-सघ आदि से सस्थाएँ स्थापित कीं। कई समाचार-पत्रो के आप सम्पादक रहे हैं। क्रान्तिकारी और समाजसुधार विचारधारा वाले आप एक मनीषी हैं जिन्हे अपने जीवन में विरोधी विचारो के विरुद्ध अनवरत सघर्ष करना पडा आप अपने निश्चय के बडे ही दृढ हैं। आपकी सामाजिक सेवाए बडी सराहनीय हैं।

आपने देवगढ मदारिया में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना की है। इस आश्रम की स्थापना में आपको अनेक कष्टो का सामना करना पडा यहा तक कि इस आश्रम की स्थापना के उद्देश्य की पूर्ति में आपने वर्षों तक, घी, दही, दूध शक्कर का त्याग कर दिया। बडी योग्यता से इस आश्रम का आप सफल सचालन कर रहे हैं।

श्री देवेन्द्रकुमार जी जैन सिद्धान्तशास्त्री, न्याय काव्य-विशारद H T.C H S S

आप वल्लभनगर (उदयपुर-राजस्थान) निवासी हैं। श्री गोदावत जैन गुरुकुल छोटी सादडी के आप स्नातक हैं। इसी गुरुकुल से आपने साहित्य रत्न और जैन सिद्धान्त शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस समय आप श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय पाथर्डी में अध्यापन का कार्य करा रहे हैं।

आप हिन्दी, सस्कृत एव जैन साहित्य के उच्चकोटि के विद्वान एव शिक्षण-शास्त्री हैं। आप कुशल अध्यापक वक्ता एव लेखक हैं। सामयिक सामाजिक पत्रों में समय-समय पर आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। आपके द्वारा "बाल पचरत्न" और 'महिलादर्शन' बालोपयोगी छोटे-छोटे प्रकाशन भी कराये गये हैं। आप एक विचारवान कर्मठ कार्यकर्ता हैं।
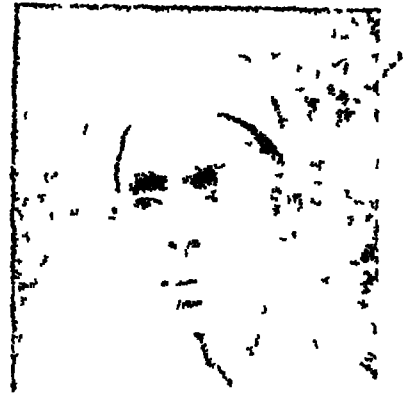
श्री मागीलालजी मेहता, बडी सादडी

श्री गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादडी के सुयोग्य स्नातक जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्थानकवासी जैन सस्थाओ में ही अपना जीवन बिताया। धार्मिक प्रवृत्तियो में आपकी बडी दिलचस्पी रहती है। आपका परिवार सुशिक्षित है जो समाज के लिए गौरव की बात है। आपके निम्न सुपुत्र और सुपुत्रियाँ हैं —

१ श्री शातिचन्द्रजी मेहता M A LL B सम्पादक 'ललकार'
२ श्री जैनेन्द्रकुमारजी मेहता (इजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर)
३ श्री दयावती देवी (बाल मनोविज्ञान व शिक्षण की डिप्लोमैटिस्ट)
४ श्री भगवती देवी (इन्टरमीडिएट)

यह सुशिक्षित घराना हम सब के लिए अनुकरणीय आदर्श है। साधारण घराना भी समय के अनुरूप चलने से कितना आगे बढ सकता है इसके लिए यह उत्कृष्ट उदाहरण है।

श्री शांतिचन्द्रजी मेहता बड़ी सादड़ी

आप प्रतिभा संपन्न कवि, सुलेखक, सम्पादक, वकील एवं होनहार कार्यकर्ता हैं। केवल २५ वर्ष की अल्पायु में ही आपने प्रथम श्रेणी में M A LL B उत्तीर्ण कर लिया। विभिन्न प्रकार की दस भाषाओं के आप जानकार प्रसिद्ध पत्रिका 'जिन वाणी' और 'ज्योति' का आप सम्पादन किया और अब जोधपुर तथा चित्तौडगढ—दोनों स्थानों से 'ललकार' साप्ताहिक निकाल रहे हैं।

आपका निजी कहानी संग्रह "चट्टान से टक्कर" प्रकाशित हो गया है। आपकी यह रचना साहित्यिक जगत में काफी समादृत हुई है। 'आयकर' नामक ८०० पृष्ठीय ग्रन्थ की भी आपने रचना की है जो अभी अप्रकाशित है।

इस प्रकार ये तरुण युवक सामाजिक राजनीतिक और साहित्यिक जगत में प्रगतिशील गति कर रहा है। समाज के होनहार कार्यकर्ताओं में से आप एक हैं।

श्री रत्नकुमारजी जैन 'रत्नेश' बड़ी सादड़ी

आप बडी सादडी के निवासी हैं। श्री मूलचन्दजी आपके पिता का नाम है। श्री गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादड़ी में अभ्यास कर श्री सेठिया जैन विद्यालय बीकानेर में उच्चाभ्यास किया। समाज के मुख्य-मुख्य सम्प्रदायों के आचार्यों के सान्निध्य में रहकर आपने लेखन-कार्य किया है। कितनी ही पुस्तकों के लेखक तथा सम्पादक है।

जैन प्रकाश का ६ वर्ष तक सम्पादन कर आप इस समय जैन बोर्डिंग, अमरावती में गृहपति (सुपरिन्टेन्डेन्ट) है। समाज में नवीन विचारधारा के आप अनुयायी हैं। श्री रत्नेशजी द्वारा समाज को भविष्य में और अधिक उपयोगी साहित्य प्राप्त होगा ऐसा हमें विश्वास है।

पंडित सूरजचन्द्रजी डांगी 'सत्यप्रेमी'

आप मेवाड़ में बडी सादडी के निवासी और श्री गोदावत जैन गुरुकुल छोटी सादडी के सुयोग्य स्नातक हैं। आप सर्व-धर्म-समन्वयवाद दृष्टिकोण के हैं। सभी धर्मों का आपने समन्वय की दृष्टि से तुलनात्मक गहरा अध्ययन किया है। बचपन से ही आपमें कविता के प्रति अभिरुचि जागृत हो गई थी—अभिरुचि बढती गई, जिसके फलस्वरूप आज आप समाज के श्रेष्ठ कवि, गायक साहित्य-प्रणेता हैं। आपने चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति, गज सुकुमाल खडे काव्य, मयन महाशास्त्र आदि अनेक काव्य ग्रन्थो की रचना की है। आपकी रचनाएँ अत्यन्त गम्भीर, महत्वपूर्ण और सरस होती हैं। श्री भारत जैन महामण्डल, बम्बई शाखा के आप व्यवस्थापक हैं। संयुक्त जैन महाविद्यालय, बम्बई के आप गृहपति है जहाँ छात्रों को आप धार्मिक शिक्षा प्रदान करते हैं।

श्री अम्बालालजी नागोरी बड़ी सादड़ी

आप बड़ी सादडी के निवासी श्री रतनलालजी नागोरी के सुपुत्र हैं। श्री जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी में कुछ वर्ष तक अध्ययन कर श्री जैन गुरुकुल ब्यावर में मैट्रिक तथा न्यायतीर्थ की परीक्षा दी। इस समय आप B A. होकर M A कर लेने की तैयारी में हैं। धार्मिक संस्कार जो आपको अपने शिक्षण के साथ मिले अब वे इनके विद्यार्थियों को मिल रहे हैं। श्री नागौरी जी आज्वल्यमान जोश लिये हुए अपने जीवन पथ पर बढते चले जा रहे हैं।

श्री 'उदय' जैन, कानोड

श्री उदयलालजी डूंगरवाल कानोड़निवासी श्री प्रतापमल जी डूंगरवाल के सुपुत्र हैं। अपने ही ग्राम में प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् जैन गुरुकुल, छोटी सादडी में आपका उच्च अभ्यास हुआ। जैन सिद्धान्तशास्त्री, हिन्दी विशारद और न्याय मध्यमा की उच्च परीक्षाएँ आपने पास की। अनेक सामाजिक कार्यों में भाग लेते हुए कई सस्थाओ में आपने काम किया और अपने ही ग्राम में सन् १६४० में जैन शिक्षण-सघ की स्थापना की जो मेवाड की एक शानदार सस्था है। आप बडे ही स्पष्टवक्ता और अपनी धुन के पक्के हैं। जैन शिक्षण सघ, कानोड आपकी ही शक्ति और प्रेरणा से अनुप्राणित हो रहा है।

● ● ●

साहित्यरत्न पं० महेशचन्द्रजी जैन, न्याय काव्य तीर्थ, कानोड

आप कानोड के निवासी श्री चौथमल जी के सुपुत्र और नन्दावत गोत्रीय हैं। श्री गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादडी में आपका उच्च अध्ययन सम्पन्न हुआ। श्री जैनेन्द्र गुरुकुल पचकूला में १०॥ वर्ष तक आपने अध्यापन कराया और वहाँ से 'जैनेन्द्र' नाम की मासिक पत्रिक भी निकाली। श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर में गृहपति पद पर काम किया। अब इस समय आप श्री जवाहर विद्यापीठ हाईस्कूल, कानोड में हिन्दी व धर्माध्यापक का काम कर रहे हैं।

आप स्वभाव के बडे ही शात, उदार तथा मनमौजी प्रकृति के हैं। आप समाज के नामाकित सफल अध्यापकों में से एक हैं।

श्री पुखराजजी ललवानी

आप यहाँ के श्रावक सघ के बहुत पुराने कर्मठ कार्यकर्ता है। यहाँ के सघ को सगठित करने व समाज में प्रेम, उत्साह व धार्मिक दृढ विचारों का सचार करने में आपका लम्बे समय से हाथ रहा है। नवयुवको को तन, मन, धन से यथा योग्य सहयोग व प्रोत्साहन देते रहते हैं। सामाजिक उत्थान में आपकी बहुत दिलचस्पी रहती है तथा समाज में आपका बहुत अधिक प्रभाव है। इस समय आपकी अवस्था ४६ वर्ष की है। आप इस नगर के प्रमुख प्रतिष्ठित व धनाढ्य पुरुष हैं। आप यहाँ के पेट्रोल व क्रूड ऑइल के मुख्य विक्रेता हैं। आपका लेन-देन भी बहुत पैमाने पर चलता है।

श्री मोहनलालजी भण्डारी

आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यवसायी, धनाढ्य, होशियार व उत्साही युवक हैं। आप इस मसय ३४ वर्ष के हैं। समाज को उन्नतिशील बनाने में आप सहयोग देते रहते हैं। सामाजिक तथा व्यापारिक क्षेत्र में आपका काफी प्रभाव है।

श्री मोहनलालजी कटारिया

आप यहाँ के श्रावक सघ के मन्त्री हैं। आप बहुत ही होनहार, उत्साही व समाज प्रेमी नवयुवक हैं। आपकी अवस्था ३१ वर्ष की है। मेट्रिक तक आपने शिक्षा प्राप्त की तथा नये विचारो के प्रगतिशील युवक हैं।

श्री विजयमोहनजी जैन

आप 'वीरदल मण्डल' के मन्त्री हैं। वर्षों से आप समाज सेवा में जुटे हुए हैं। यो आप मिडिल तक शिक्षा प्राप्त हैं किन्तु आपकी योग्यता काफी बढी-चढी है। लौंकाशाह पत्र का सपादन व सचालन काफी लम्बे अर्से तक कर चुके हैं। आपके हस्ताक्षर अति सुन्दर हैं। जनता द्वारा आपकी कविताएँ बहुत पसद की जाती हैं। वर्षों से आप अपना निजी प्रेस सफलता पूर्वक चला रहे हैं।

श्री नगराजजी गोठी

आप श्रावक सघ के भूतपूर्व अध्यक्ष रह चुके हैं। आप काफी प्रौढ होते हुए भी नये विचारो के विचारशील व धर्म प्रेमी सज्जन हैं। धार्मिक क्रियाओ तथा थोकडो में आपको बहुत दिलचस्पी है। आप यहाँ के प्रतिष्ठित कपडे के व्यापारी हैं। व्यापारिक तथा सामाजिक क्षेत्रो में आपका काफी प्रभाव है।

श्री गेहरालालजी पगारिया

आप यहाँ के नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष हैं सादगी व शान्तिमय विचार आपके प्रमुख गुण हैं। नई विचारधारा के आप पक्षपाती हैं। स्थानीय काग्रेस कमेटी के आप सक्रिय सदस्य हैं। नगर में आपका काफी मान व प्रतिष्ठा है।

श्री मोतीलालजी जैन, गुलाबपुरा (राजस्थान)

आप २८ वर्षीय नवयुवक गुलावपुरा निवासी हैं। आपके ६० वर्षीय पिता श्री भूरालालजी बुरड हैं। ननिहाल गुलावपुरा के प्रसिद्ध रुई कपास के व्यापारी कजोडीमलजी रतनलालजी मेडतवाल के यहाँ हैं।

आपने पजाव यूनिवर्सिटी से 'प्रभाकर' सा० रत्न, कलकत्ता से व्याकरण तीर्थ, सा० स० प्रयाग से राजनीति तथा वनारस यूनिवर्सिटी से मैंट्रिक की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

आप विभिन्न सस्थाओ की सेवा करते हुए वर्तमान में श्री वर्द्धमान जैन महिला विद्यालय, सिकन्दराबाद में तीन वर्ष से प्रधानाध्यापक का काय कर रहे हैं। वेतन सहित आपकी आय रु० २५०) मासिक है।

आपके तीन भाई तथा दो बहनें हैं। दोनो भाई तथा बहनें राजस्थान में विवाहित हैं। आर्थिक स्थिति सामान्य है। आप सुन्दर, सुडौल तथा स्वस्थ शरीर के उत्साही तथा क्रान्तिकारी विचारो के नवयुवक हैं।

श्री कन्हैयालालजी भटेवडा, जालिया (अजमेर)

आप सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रो में कार्य करने वाले अजमेर राज्य के एक प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० से आपने खादी धारण करने की प्रतिज्ञा ली थी जिसे आजतक दृढता के साथ निभाये हुए हैं। काप मसूदा क्षेत्र से काग्रेस के उम्मीदवार के रूप में चुनाव के लिए खडे हुए थे। अनेक सामाजिक

सस्थाओ को आप द्वारा सहायता प्राप्त हुई है। आपने आसपास के क्षेत्र में आप अत्यन्त लोकप्रिय, समाज सुधारक, शिक्षाप्रेमी एव प्रेरणा शील उद्यमी तथा लगनशील कार्यकर्त्ता है।

श्री नेमीचन्दजी जैन, राताकोट

आप श्री हरकचन्दजी के सुपुत्र है। सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियो में आपकी बडी दिलचस्पी रहती है। आप बडे ही उत्साही तथा श्रद्धावान है सन्त-मुनि-राजो की भक्ति में आप सदा तत्पर रहते है। समाज की उन्नति और धर्म-प्रचार की भावनाएँ आपकी निस्सन्देह स्तुत्य है। अपने सामाजिक और धार्मिक कार्यों के कारण आसपास के गाँवो में आपका नाम प्रसिद्ध है।

कुँ० श्री घेवरचन्दजी जैन, राताकोट

कु० श्री घेवरचन्दजी जैन के पिताश्री का शुभ नाम श्री मिलापचन्दजी जैन है। आप राताकोट विजय नगर निवासी हैं। आपका शुभ जन्म मिती मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी स० १९९० को हुआ था। आप धार्मिक कार्यों में पूर्ण रस लेते है। राताकोट स्वाध्याय सघ के आप पाँच साल से सदस्य हैं।

श्री शार्दूलसिहजी सा०, सरवाड

आप अत्यन्त धर्म-परायण, तपस्वी तथा नित्य नियम के पक्के हैं। आपका कथन है कि "धर्म के प्रताप से ही मेरी हालत सुधरी है, इससे पहले मेरी स्थिति शोचनीय थी।" शास्त्र-वाचन तथा शास्त्र-पठन का आपको शौक है। साधु-साध्वियो के अभाव में अपने गाँव में धार्मिक उपाश्रयो आदि के आप ही अवलम्बन हैं। दीन-दुखियों तथा अन्धे-अपाहिजो को साता उपजाने की ओर आपका विशेष लक्ष्य रहता है। प्रतिमाह एक उपवास और चौदस को १०-११वा पौषधव्रत धारण करने का आपका नियम है। सन् १८८० में पाँच साल तक आपने 'ज्ञान पचमी' तप किया। आपके तीन पुत्र हैं जिनका अपना स्वतन्त्र व्यापार है। ऐसी धर्मनिष्ठ आत्मा सत्य ही अभिनन्दनीय एव अनुकरणीय है। आप कान्फ्रेंस के आजीवन सदस्य हैं। कान्फ्रेंस की भवन निर्माण योजना में आपने १००१) देना स्वीकार किया।

श्री छगनलालजी सा० राका, कोटा

आप आडत के व्यापारी है। सन्त मुनिराजो की भक्ति एव स्वधर्मी वात्सल्य आपके विशेष गुण हैं। श्री जैन दिवाकरजी महाराज सा० के चातुर्मास में आपने ८०.०००) खर्च किये थे। आपके ३ सुपुत्र हैं जो बडे ही होनहार हैं।

श्री नाथूसिंहजी सा० वेदनुथा, कोटा

आपके परिवार में भूतपूर्व सेठ मोहनलालजी सा० बड़े ही दानवीर तथा उदार वृत्ति वाले थे। कोटा में आपने १५,०००) की लागत का स्थानक भवन निर्माण कराया था। समाज के कार्यों में आपकी बड़ी दिलचस्पी रहती है। आपका पूरा परिवार सामाजिक एवं धार्मिक भावना वाला है।

श्री ताराचन्दभाई वारा

आप सौराष्ट्र के शहर राजकोट के निवासी हैं। आपने सौराष्ट्र स्था० जैन धार्मिक शिक्षण संघ के मन्त्रीपद पर रहकर संस्था की दो वर्ष पर्यन्त सेवा की। आप सम्प्रदायवादित्व से परे हैं। आपका अधिक समय दान में व्यतीत हुआ है।

श्री सेठ हस्तीमलजी श्रीश्रीमाल जसोल

आपके उदार विचारों से प्रेरित होकर स्था० दि० समाज अपने पर्युषण के दस दिनों में आपको व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित करता है। वर्तमान में आपकी आयु ५० वर्ष से अधिक है फिर भी आप समाज सेवा के लिए सर्वत्र तैयार रहते हैं। आपके धार्मिक जीवन पर आपके पिताश्री त्रिभुवनदास भाई के धार्मिक जीवन की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। आप यहाँ के जैन समाज में अत्यन्त वयोवृद्ध बारह व्रतधारी श्रावक हैं।

आप जसोल के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। आपके पिता श्री नेतमलजी तेरापंथी थे। आपका सौचत वाले पं० मुनिश्री मिश्रीमलजी म० सा० के साथ सम्पर्क होने से आप प्रभावित हुए और सत्य मान्यता अंगीकार की। यहाँ स्थानकवासियों के ७ घर हैं और तेरापंथियों के १५०। फिर भी अपनी धर्म-भावना पर अत्यन्त दृढ़ श्रद्धावान हैं। अत्यन्त उदार वृत्ति होने के कारण विविध सामाजिक और धार्मिक कार्यों में आपकी तरफ से समय-समय पर दान हुआ करता है।

श्री मिश्रीमलजी समदड़ी वालों का परिचय

आपका निवास स्थान समदड़ी (मारवाड़) है। आप एक धार्मिक पुरुष हैं। समाज के प्रत्येक उन्नति के कार्य में सहयोग देते रहते हैं।
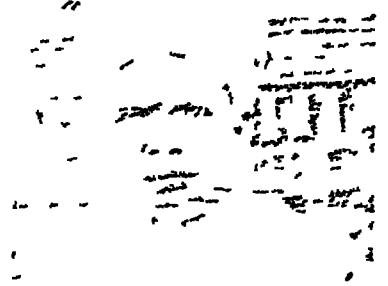
श्रीमान् मगराजजी नेलीड़ा, वानियावाड़ी

आप अभी-अभी अ० भा० स्था० कान्फ्रेंस के आजीवन सदस्य बने हैं। आप धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में पूर्ण सहयोग देते रहते हैं। धर्म भावना आपकी प्रशंसनीय है।
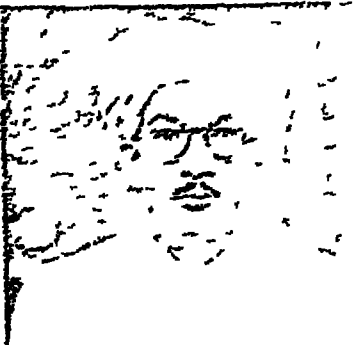
दक्षिण भारत के प्रमुख कार्यकर्ता

सेठ राजमलजी ललवाणी, जामनेर

सेठ राजमलजी ललवाणी का जन्म सन् १८९५ में जोधपुर स्टेट के 'ओव' गाँव में हुआ था। आपके पिता खानदेश के आमलनेर तालुके के छोटे से गाँव जामनेर में आकर वस गये थे। अत आपका वचपन भी इसी गाँव में व्यतीत हुआ था। घर की स्थिति सामान्य थी। अत परिस्थितिवश आपमें सहानुभूति, प्रेमभावना और सहनशीलता के गुणो का विकास हो चुका था। १२ वर्ष की उम्र में वे एक धनाढ्य सेठ लखीचन्दजी रामचन्दजी की विधवा पत्नी द्वारा गोद लिये गए। अर्थाभाव मिट गया, पर जो गुण उनके हृदय में घर कर चुके थे। वे बढते ही रहे।

१८ वर्ष की उम्र में ही वे सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में प्रविष्ट हो गये। गांधी जी के कट्टर अनुयायी रहे। काग्रेस के भी मैम्बर हैं। और वर्षो से शुद्ध खादी ही पहनते हैं। महाराष्ट्र और खानदेश के आप प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ में से एक हैं।

सामाजिक सेवा भी आपकी विशाल हे। कई धार्मिक तथा सामाजिक सस्थाओ, विद्यालयो के आप सस्थापक, सचालक व सहयोगी हैं। समय समय पर आप उदार भाव से दान भी देते रहे हैं। आपने अव तक लगभग दो लाख रुपयो का दान किया होगा। जलगाँव की सार्वजनिक हॉस्पिटल में आपने ११,०००) रु० प्रदान किये। सरकार को कई वार लडाई के समय में कर्ज दिया है। इसके उपलक्ष्य में सरकार ने जलगाँव के एनीकोक्स हॉल में आपकी प्रस्तर मूर्ति स्थापित की है।

खानदेश के आप एक कुशल व्यापारी के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। आप लक्ष्मीनारायण स्पिनिंग वीविंग मिल्स लिमि० चालीस गाँव के सस्थापक और डायरेक्टर हैं। जलगाँव की भागीरथी रामप्रसाद मिल्स के भी डायरेक्टर हैं।

आप सर्वधर्म समभाव के हिमायती और कट्टर समाज सुधारक हैं। जातिगत रूढियो के आप कट्टर विरोधी ह। समाज सेवा के लिये आप सदैव तत्पर रहते हैं। कॉन्फरन्स के आजीवन मैम्बर हैं।

आपके सहयोग से आज कई सस्थाएँ, विद्यालय, स्कूल तथा पाठशालाएँ चल रही हैं। आपकी प्रकृति मिलनसार व विनोद प्रधान हैं। आप देश समाज व जाति के कर्मवीर योद्धा हैं, जो आज भी अपनी सेवा प्रदान करते जा रहे हैं।

श्री सागरमलजी लूंकड, जलगॉव

श्री लू कडजी का जन्म सन् १८८२ में हुआ था। आप जलगाँव के लब्ध प्रतिष्ठित एव धर्मानुरागी सज्जन थे। आप व्यापार में बडे कुशल थे। आपकी कई स्थानो पर अपने फर्म की शाखाएँ चल रही हैं। आप में उदारता का गुण भी विशेष था। २० हजार की लागत का एक भव्य-भवन धार्मिक और सामाजिक कार्य लिये के अर्पण कर आपने जलगॉव की एक वडी भारी कमी की पूर्ति की। आयुर्वेद से आपको वडा प्रेम था। आयुर्वेद औषधालय की स्थापना के लिये आपने २५ हजार का उदार दान घोषित किया था। स्थानीय श्री ओसवाल जैन वोर्डिंग हाऊस के शुरू से लगभग १७ वर्ष तक मन्त्री रहे और उसको सफलता के साथ सचालित करते रहे। इन्दौर में भी आपने शान्ति जैन स्थापित की थी जहाँ आपकी ओर से छात्र-छात्राओं को धार्मिक शिक्षा दी जाती है। स्थानीय पाजरा पोल के पाठशाला विकास में भी आपका अनुपम भाग था। जलगाँव में भी आपकी 'सागरमल नथमल' के नाम से फर्म है, जो यहाँ की प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है। ता० २१-१-४३ को आपका ६१ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ।

की है। भुसावल- नगरपालिका के २१ वर्ष तक आप सभासद रहे हैं। राष्ट्रीय सामाजिक सस्थाओ में आपके अनुशासन एव दृढता की बडी भारी छाप रही है तथा इनके कार्यों में उलझे रहने के कारण घरेलू व्यवसाय में आपका बहुत कम समय लगता है। आपका प्रतिक्रमण सुनने लायक होता है। इस समय आप महाराष्ट्र श्रमण सघ के कार्याध्यक्ष हैं।

हमें विश्वास है कि आपके प्रेरणास्पद नेतृत्व से समाज और अधिक लाभान्वित होकर गौरवान्वित होगा।

श्री फकीरचन्दजी जैन श्रीश्रीमाल, भुसावल

खानदेश जिले के प्रतिष्ठित रूई के व्यापारी राजमलजी नन्दलालजी कम्पनी के भागीदार श्रीमान् सेठ नन्दलालजी Cosson King of Khandesh मेहता के सुपुत्र श्री फकीरचन्द जी जैन खानदेश के एक प्रसिद्ध एव लोकप्रिय सामाजिक एव राजनीतिक स्फूर्तिमान कार्यकर्ता हैं।

जैन समाज के चारो प्रमुख सम्प्रदायो में एकता प्रस्थापित करने वाली सस्था "श्री भारत जैन महा मण्डल" के आप लगातार चार वर्षों से मन्त्री है। महा मण्डल के दौरे में आपकी उपस्थिति रहती है। खानदेश ओसवाल शिक्षण सस्था" जहाँ से प्रतिवर्ष ११०००) रु० की छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं—इसके महामन्त्री हैं। स्थानीय अनेक राष्ट्रीय सस्थाओ के आप पदाधिकारी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त रोटरीक्लब, भुसावल के डायरेक्टर और तालुका तरुण कांग्रेस के सयोजक और श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, भुसावल के आप मन्त्री हैं। आपकी धर्मपत्नि सौ० पारसरानी का भी सामाजिक कार्यों में बडा सहयोग रहता है। महिला-जगत में आपका प्रभावशाली स्थान है। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री सतीशचन्द्रजी मेधावी एव होनहार छात्र हैं जिनमें अभी से काव्य की प्रतिभा फूट निकली है।

श्री सुगनचन्दजी चुन्नीलालजी लुनावत
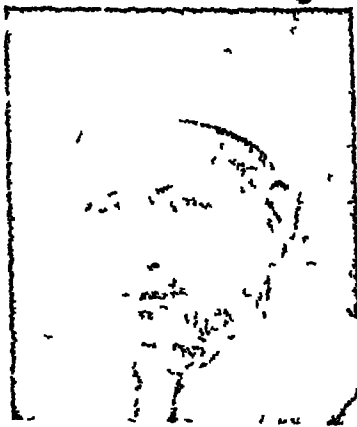
आप धामण गाँव के प्रसिद्ध व्यवसायी, कार्यकर्ता तथा समाज प्रेमी है। आपका जन्म अन्नज ग्राम में माघ सुदी ९ स० १९६६ में हुआ। स्वभाव के मिलनसार और गहरी सूझ-बूझ होने के कारण आपने प्रारम्भिक अवस्था से देश समाज तथा अपने आसपास के बावत चिन्तन करने के साथ तत्सबधी लोकोपयोगी कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। यही कारण है कि आपका वरार के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, व्यापारिक तथा विभिन्न क्षेत्रो में अक्षुण्ण प्रभाव रहा है। आप अनेक शिक्षण सस्थाओ के सचालक मन्त्री तथा सदस्य हैं। अनेक राजनीतिक सस्थाओं तथा सगठनो के कर्मठ कार्यकर्ता एव सदस्य हैं।

आपने अपने पूज्य दादाजी की स्मृति में नगदी एव जमीन मिलाकर ३०,०००) रु० की सहायता देकर मध्य प्रदेश ओसवाल शिक्षण सस्था नागपुर में स्थापित की, जिसे आज बीस वर्ष हो गये हैं। इस सस्था द्वारा प्रान्त के तथा बाहर के ओसवाल विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ मिलती हैं। जैन शिक्षण समिति अमरावती के आप सेक्रेटरी हैं। आपही के प्रयत्नो के फलस्वरूप लगभग १,००,०००) की लागत का बाहर के छात्रो के रहने के लिए छात्रालय का भवन अभी-अभी बनकर तैयार हुआ है।

कृषि एवं गोपालन में आपकी बड़ी दिलचस्पी है। स्थानीय गौ-रक्षण-संस्था के आप ट्रस्टी तथा गौ-सेवा संघ विदर्भ-शाखा के आप मन्त्री हैं। व्यवसायिक क्षेत्रों में भी आपने बुद्धि-कुशलता का विलक्षण परिचय दिया है। "दी बैंक ऑफ नागपुर" तथा "दी भारत पिक्चर्स लिमिटेड, आकोला" के आप डायरेक्टर हैं।

महावीर जयन्ती की सार्वजनिक छुट्टी प्रथमत मध्यप्रान्त में ही हुई। इस सर्वांग्य पुण्य-कार्य में आपका बहुत बड़ा सहयोग रहा है।

आपकी प्रथम पत्नी का देहान्त सन् १९३५ में हुआ था जिसकी स्मृति में स्थानीय अस्पताल में "अमर देवी" प्रसूतिकागृह नाम का मेटरनिटी वार्ड का निर्माण करा कर आपने दान वीरता एवं धार्मिकता का परिचय दिया है।

आप कॉन्फरन्स में निष्ठा रखने वाले कई वर्षों से जनरल कमेटी के सदस्य हैं। इस प्रकार आपका समस्त जीवन अनेक क्षेत्रों को अनुप्रमाणित करता हुआ आगे बढ़ रहा है। श्री पूनमचन्दजी जैसे सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्ताओं पर समाज को गौरव होना चाहिए। बरार प्रान्त तथा स्थानकवासी समाज को आपसे बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। समाज के ऐसे ही उज्ज्वल सितारे समाज को प्रकाशित करते हैं।

श्री भीकमचन्दजी सा० पारख नासिक

आप श्री रायचन्दजी के सुपुत्र हैं और मूल निवासी निवरी (मारवाड़) के हैं। नौ वर्ष की अवस्था में ही आपके पिताश्री का देहावसान हो जाने के कारण आपका अधिक शिक्षण नहीं हो सका। अपनी माताजी की देख-रेख में मराठी की ५वीं कक्षा तक आपका विधिवत् अध्ययन हो सका। आये हुए आकस्मिक संकट का आपने दृढ़तापूर्वक सामना किया। नासिक में आपने कपड़े का व्यवसाय प्रारम्भ किया और उसमें आपको आशातीत सफलता प्राप्त हुई। स्वर्गीय पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज सा० की आपको गुरुआम्नाय थी। आपके ही प्रयत्नों से सन् १९१५ में पूज्य श्री प्रेमराजजी म० सा० का नासिक क्षेत्र में चातुर्मास हुआ था। आप अत्यन्त धार्मिक मनोवृत्ति के, दृढ़ आस्थावान और भावुक श्रावक हैं। भक्तामर आदि स्तोत्र, प्रतिक्रमण, कई थोकड़े आपको कण्ठस्थ याद हैं। १९७७ से आपका कान्फ्रेन्स से घनिष्ठ सम्पर्क है और प्रत्येक अधिवेशन में आपकी उपस्थिति रहती है। श्रावक के बारह व्रतों का यथाशक्ति पालन करते हुए अनासक्त एवं निष्काम वैराग्यमय जीवन-यापन करते हैं। जैन धर्म के तत्त्वों के आप गहन अभ्यासी हैं। सामाजिक और सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में अग्रसर रहने के कारण आप अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

आप ही के प्रयत्नों से सन् १९३३ में नासिक में नासिक जिला ओसवाल सभा का सफल अधिवेशन हुआ। पूज्य महात्मा गांधी के और उनकी गांधीवादी विचारधारा के आप अनन्य भक्त एवं प्रेमी थे। महात्मा गांधी से आपका सम्पर्क बना रहता था। यथाशक्ति धार्मिक और सामाजिक कार्यों में आपकी तरफ से दान हुआ करता है। इस प्रकार श्री भीकमचन्दजी सा० योगनिष्ठ श्रावक हैं जो एक माह में ६ दिन का मौन रखते हैं, दिन में अमुक घण्टे तक ही बोलते हैं और प्रतिदिन स्वाध्याय, चिन्तन-मनन आपके जीवन का अविच्छिन्न अंग है।

समृद्ध परिवार, समृद्ध व्यापार और समृद्ध धार्मिक, सामाजिक और सार्वजनिक जीवन ने आपको निराकुल बना कर पूर्ण सुखी बना दिया है। आप आदर्श और अनुकरणीय श्रावक हैं, जिनके जीवन से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

श्री राजमलजी चौरड़िया, चालीसगॉव
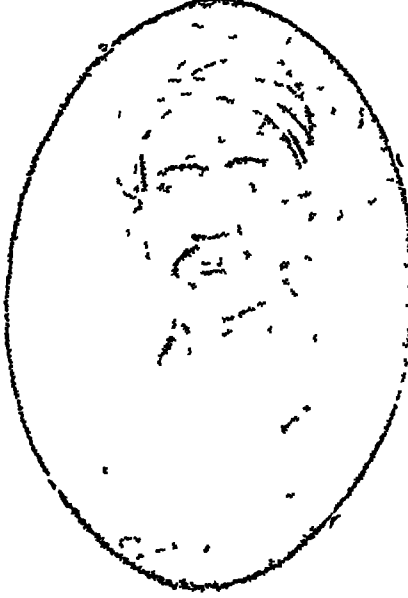
आपका जन्म स० १९६० पूर्व खानदेश में वाघली ग्राम में हुआ था। आपके पिताश्री का नाम रतनचन्दजी था। आप धार्मिक सस्कारो से, धार्मिक ज्ञान से सम्पन्न व्यवहार एव व्यापार कुशल चालीसगॉव के अग्रगण्य कार्यकर्ता हैं। अपनी शिक्षा को अपने तक सीमित न रखकर उसे "बहुजनहिताय" बनाने का आपने प्रयत्न किया है। यही कारण है कि सामाजिक, प्रादेशिक, धार्मिक, राजनीतिक एव शैक्षणिक कार्यों एव तत्सम्बन्धी क्षेत्रो में आपने सक्रिय सहयोग ही नहीं अपितु इन कार्य-क्षत्रो के आप एक अग से ही बन गए है। कान्फ्रेंस के आप सदा से मेम्बर, सन्त-मुनिराजो के अनन्य भक्त, अनेक शिक्षा-सस्थाओ के विभिन्न पदाधिकारी, कुशल एव प्रभावशाली व्याख्यानदाता तथा एक चैतन्य स्फूर्तिमय कर्मठ कार्यकर्ता है। आपके अगरचन्द्र और नरेन्द्रकुमार इस प्रकार दो पुत्र हैं।

हमें विश्वास है कि आपसे तथा आपके परिवार से समाज-धर्म की अधिकाधिक सेवा बन सकेगी।

श्री सेठ वछराजजी कन्हैयालालजी सुराणा बागलकोट-निवासी का परिचय

मारवाड में पीही निवासी सेठ श्री वछराजजी सुराणा ने स० १९७० में अपनी फर्म की स्थापना बागलकोट में की। धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में भी आपका कार्य सराहनीय रहा है। आप सात साल तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा ८ वर्ष तक म्यूनिसिपल कौंसलर रहे हैं।

आपके पुत्र श्री कन्हैयालालजी का शुभ जन्म स० १९७० में हुआ था। आप एक उत्साही नवयुवक हैं। आपने व्यवसाय-क्षेत्र में अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली है। १४ साल से आप म्युनिसिपल कौंसिलर हैं और सन् १९५१-५४ में नगरपालिका के नगराध्यक्ष थे। आपने अपनी स्वर्गीय माता 'तीजाबाई वछराज सुराणा' के नाम से सन् १९४३ में बागलकोट में 'मेटरनिटी होम' बनवाकर नगरपालिका के सुपुर्द कर दिया। इसके अतिरिक्त आपने स्व० पिताश्री की पुण्य स्मृति में एक मकान जैन स्थानक के लिए खरीदकर स्थानीय पचो को सुपुर्द कर दिया।

आपने काफी सस्थाओ, स्कूलो तथा कॉलेजो को दान दिया है। आप वर्तमान में व० स्था० श्रावक सघ के अध्यक्ष हैं। जैन समाज तथा व्यापारिक समाज में आपने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। आपकी एक फर्म बागलकोट में 'वछराज कन्हैयालाल' के नाम से रेशमी वस्त्र, रुई और कमीशन एजेंण्ट का कार्य कर रही है। इसी प्रकार बागलकोट और बीजापुर में 'कन्हैयालाल केशरीमल सुराणा' के नाम से अनाज व कमीशन का व्यापार होता है। आपकी दूकानो की अच्छी प्रतिष्ठा है।

"मुलतानचन्द लक्ष्मीचन्द धाडीवाल" और "लक्ष्मीचन्द धाडीवाल एण्ड कम्पनी" इस प्रकार आपकी दो प्रसिद्ध फर्में हैं।

स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० के आप अनन्य भक्तो में से हैं। आपने पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज सा० तथा वर्तमान उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज सा० का बगडी में चातुर्मास कराया था, जिसमें आपने ६०,०००) देकर इस चातुर्मास को अभूतपूर्व एवं अविस्मरणीय बनाया था। लगभग ३० वर्ष से बगडी में आप 'श्री महावीर मिडिल स्कूल' चला रहे हैं। इस स्कूल का भवन निर्माण भी आपने कराया था। अभी-अभी रायपुर में लगभग ५०,०००) पचास हजार की लागत से "श्री धाडीवाल ज्ञान-भवन" (स्थानक) निर्माण कराया है। स्थानीय "लेपरसी हॉस्पिटल" (कोढीखाना) का निर्माण आपही ने १५,००० देकर आरम्भ कराया था। घाटकोपर सार्वजनिक जीव-दया खाते में गौ-रक्षा के लिए आप समय-समय पर सैकडो रुपये दान करते आए हैं। आप रायपुर वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के अध्यक्ष हैं।

आपके सुपुत्र श्री महावीरचन्द्रजी सा० भी उत्साही तथा धर्मपरायण तरुण युवक हैं, जिनका सामाजिक गतिविधियो में प्रमुखतम भाग रहता है।

श्रीमान् सेठ लक्ष्मीचन्दजी सा० सचमुच ही समाज के गौरव हैं। धार्मिक कार्यो को सदा ही आपके द्वारा बल प्राप्त होता रहा है। प्रतिष्ठित व्यक्तियो से ही समाज प्रतिष्ठित होता है। इस दिशा में श्रीमान् लक्ष्मीचन्दजी सा० हमारे लिए एक अनुकरणीय आदर्श हैं।

दानवीर स्व० सेठ श्री सरदारमलजी पुगलिया, नागपुर

आपका जन्म सवत् १९४४ में हुआ था। सोलह वर्ष की अल्पावस्था में ही व्यावसायिक क्षेत्र में आपने पदार्पण किया और उत्तरोत्तर प्रगति की। धर्म के प्रति आपकी अथाह श्रद्धा थी। जिस प्रकार आप धन कमाना जानते थे, उसी प्रकार उसका सदुपयोग करना भी जानते थे। देश के विभिन्न भागो में चलने वाली विभिन्न सस्थाओ को आपकी तरफ से उदारतापूर्वक दान किया गया। दान देने की इस उदारता के कारण आपको "दानवीर" की उपाधि से सम्बोधित किया जाता था। स्थानीय श्री सघ के आप आधार स्तम्भ थे। आपकी प्रेरणा और उत्साह से यहाँ के स्थानक-भवन का निर्माण हुआ। आपकी ही भक्ति-भावना से सन्त-मुनिराजो के चातुर्मास हुआ करते थे।

आपका स्वर्गवास सवत् २००१ चैत्र वदी २ को हुआ। आपकी पुण्य स्मृति में नागपुर श्री संघ ने आपके शुभ नाम से श्री श्वेत० स्थानकवासी जैन-शाला की स्थापना की है। निस्सन्देह स्व० पुगलिया जी समाज के उज्ज्वल सितारे थे और सैकडो दीन-दुखियो के आश्रयदाता थे।

आपके बाद आपकी दानवीरता की उज्ज्वल कीर्ति को और धार्मिकता की सुरभि को आपकी विधवा पत्नी अक्षुण्ण बनाये हुए हैं यह और भी गौरव का विषय है।

● ● ●

स्व० श्री पोपटलाल विक्रमशी शाह, नागपुर

आपका जन्म सौराष्ट्र के सायला गाँव में हुआ था। बाल्यावस्था से ही व्यवसाय के लिए नागपुर आ गये थे। नागपुर श्री सघ की तरफ से होने वाली प्रत्येक प्रवृत्ति में आप अग्रगण्य रहा करते थे। आपका स्वर्गवास ता० ७-७-४६ को हुआ। उस समय आपकी पत्नी ने व्याख्यान का हॉल बनाने के लिए ११,००१) रु० श्री सघ को अर्पण कर आपके नाम को चिरस्थायी बना दिया

● ● ●
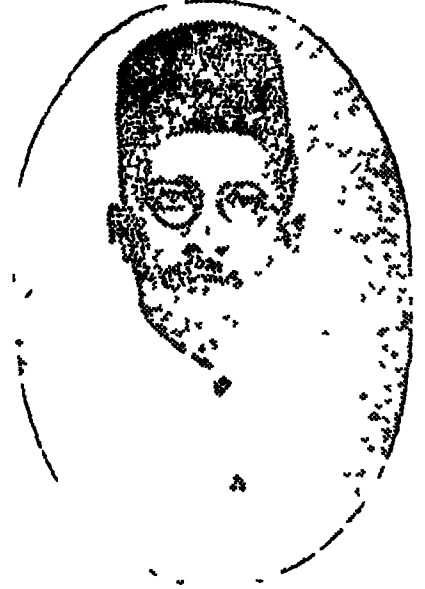
स्व० श्री जेठालालजी व्रजपाल कामदार, नागपुर

आपका जन्ज सन् १८६२ में कडोरणा गाँव में हुआ था। जेतपुर में अंग्रेजी माध्यमिक शिक्षण प्राप्त करके नागपुर में व्यवसाय के लिए आगमन हुआ। आपकी धर्म के प्रति वात्सल्य-भावना, समाज के प्रति प्रेम, अनुकरणीय एव आदर्श था। प्रत्येक आवश्यक कार्य में श्री सघ को आपकी नेक सलाह प्राप्त हुआ करती थी। तन मन धन से श्री सघ की सेवा करने में आप तत्पर रहते थे। सन् '५३ में कोल्हापुर में आपका स्वर्गवास हुआ।

श्री नागसी हीरजी शाह, नागपुर

आपका जन्म सवत् १९४६ में लाखापुर (कच्छ) में हुआ था। वहाँ पर प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करके सवत् १९६२ में नागपुर पधारे और सवत् १९७९ से सवत् १९८५ तक श्रीसघ के मन्त्रीपद पर रहे। आपकी सेवाएँ श्रीसघ को अभी तक प्राप्त हैं।

● ● ●

श्री मूलजी भाई नागरदास भायाणी, नागपुर

आपका जन्म स० १९५३ में सौराष्ट्र के लाठी नामक ग्राम में हुआ था। सवत् १९८० में आप नागपुर आये। आपकी ही प्रेरणा से दानवीर सेठ सरदारमलजी पुगलिया ने कई स्थानो पर दान दिया। आप सेठ साहब के प्राईवेट मन्त्री थे। इस समय आप श्रीसघ के उपाध्यक्ष हैं।

सेवाभावी कार्यकर्ता स्व० श्री मुलजी देवजी शाह

आपका जन्म साडात (कच्छ) गाँव में हुआ था। बाल्यावस्था में नागपुर आये। यहाँ शिक्षा प्राप्त की। आपकी तेजस्वी बुद्धि से व्यापार व्यवसाय में विशेष वृद्धि हुई। व्यापार में प्रवृत्त होते हुए भी, सामाजिक क्षेत्रो में भी आपको अग्र स्थान प्राप्त था। सन् १९३२ से नागपुर स्थानकवासी सघ के मन्त्रीपद पर थे और अन्तिम श्वास तक मन्त्रीपद पर रहे। आपके कार्य-काल में श्री सघ के दो भवनों का निर्माण हुआ। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक प्रवृत्तियों में वृद्धि हुई।

श्रीसघ के अतिरिक्त नागपुर की व्यापारिक सस्थाएँ, गुजराती स्कूल, गौरक्षण, इत्यादि सस्थाओ के अग्रगामी थे।

आपका स्वर्गवास दिनाक १६-४-१९५२ को नागपुर में हुआ। आपकी यादगार कायम रखने के लिए नागपुर श्रीसघ ने 'शाह मुलजी देवजी वाचनालय' की स्थापना की है।

o o •
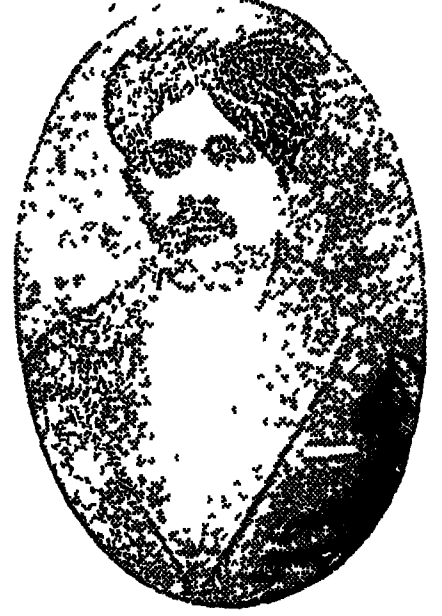
श्री भीखमचन्दजी फूसराजजी संखलेचा, नागपुर

आपका जन्म सवत् १९८० में 'अलाय' राजस्थान में हुआ था। आप स्व० सेठ श्री सरदारमलजी नवलचन्दजी पुगलिया की दुकान सँभाल रहे हैं। इस समय श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के ३-४ वर्ष से अध्यक्ष पद पर हैं।

o o •

श्री हसराज देवजी शाह, नागपुर

आप श्री मूलजीभाई देवजी के छोटे भाई है। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर व्यवसाय का कार्य करने लग गये। इस समय आप अपने बडे भाई स्व० श्री मूलजीभाई के स्थान पर व्यापारी सस्थाओ में और श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ के मन्त्री हैं। प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में आप श्री सघ की सेवा कर रहे हैं।

श्री सम्पतराजजी धाडीवाल, रायपुर

आपके कन्धो पर ही स्थानीय सघ का मन्त्रीत्व का भार है। निरन्तर चार वर्षों से आप इस पद पर विराजमान हैं। आपकी उदारता, सुशिक्षा, धर्मप्रियता एव श्रद्धा अनुपम और अनुकरणीय है। सघ और शासन की सेवा करने में आपको वडी प्रसन्नता होती है। अदम्य उत्साह से इन कार्यों के लिए आप रात-दिन एक करते पाये गए है।

देशभक्त त्यागमूर्ति श्री पूनमचन्दजी रांका, नागपुर

आपके पिताजी का नाम शम्भुरामजी था। अपने समय में नागपुर में आपकी बडी भारी फर्म थी। किन्तु उस समय महात्मा गाधी के असहयोग आन्दोलन ने इस व्यवसायी को गाधीवादी, देशभक्त और कर्मठ कार्यकर्ता बना दिया। नागपुर जिले के आन्दोलन के आप सूत्रधार हो गए—नेतृत्व की बागडोर आपके हाथो में आ गई। काग्रेस के आन्दोलनो में और उसके रचनात्मक कार्यक्रमों में आपने अपनी समस्त सम्पत्ति अर्पण कर दी और देश के लिए फकीर हो गए। अनेक वर्षों तक आपको जेल-यातना सहन करनी पडी।

सन् १९२३ में मलकापुर में श्री मेघजी भाई थोभण के सभापतित्व में अधिवेशन हुआ। उस समय आप नागपुर के ३ प्रतिनिधियो में से एक प्रतिनिधि होकर गए थे। आपको सब्जेक्ट कमेटी में लिया गया। आपने अधिवेशन में तीन प्रस्ताव इस विषय के रखे—(१) महात्मा गाधी के आन्दोलनो के प्रति सहानुभूति, (२) पोशाक में शुद्ध खादी अपनाई जाय, (३) धर्मस्थानो में छुआछूत का भेद मिटाया जाय। प्रथम के दोनो प्रस्ताव तो जैसे-तैसे स्वीकृत हो गए किन्तु तीसरा प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ। आपको लाचारी पर प्रेसिडेन्ट श्री मेघजी भाई भी बडे दुखी थे। उस समय स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० का चातुर्मास जलगाँव में था। कॉन्फ्रेंस का डेपुटेशन पूज्यश्री के दर्शनार्थ गया तब अधिवेशन में पारित प्रस्ताव भी बताए गए। पूज्यश्री ने आपके गिरे हुए प्रस्ताव के प्रति पूर्णरूप से नैतिक समर्थन प्रदान किया और फरमाया कि—"धर्म-स्थानो में मनुष्य-मात्र को धर्म-श्रवण करने का अधिकार है।" श्री मेघजी भाई ने तब आप से क्षमा याचना की।

आप इस समय काग्रेस के विधायक कार्यक्रमो में लगे रहते हैं आप सर्वोदयवादी है। और विशुद्ध रूप से राष्ट्रीय दृष्टिकोण के असाम्प्रदायिक विचारधाराओ के है, यद्यपि धार्मिक और सामाजिक-क्षेत्र आपका अब नहीं रहा किन्तु निश्चित ही श्री राकाजी समाज के लिए गौरव है कि समाज ने अपनी एक महान् विभूति राष्ट्र को अर्पण की।

श्री गेन्दमलजी देशलहरा, गुण्डरदेही (द्रुग) म० प्रदेश

आपका जन्म सवत् १९५९ के आषाढ शुक्ला नवमी को हुआ था। आपके पिताश्री का शुभ नाम श्री हसराजजी था। अध्ययन काल से ही आपके हृदय में राष्ट्रीय भावनाएँ जागृत थीं। अत व्यावसायिक जीवन के साथ-साथ राष्ट्रीय कार्यों में भी पूर्ण मनोयोग से हिस्सा लेने लगे। सन् १९३० के राष्ट्रीय आन्दोलन में आपको कठोर कारावास तथा ५०) रु० जुर्माने की यातनाएँ सहनी पडीं। आप लेखन, वक्तृत्व शक्ति एव रचनात्मक कार्यों में पूर्णशक्ति रखते हैं। ग्रामोद्योग-प्रचार, मादक पदार्थ निषेध व बलिदान प्रथा आदि बन्द करवाने में आप सर्वदा अग्रणी रहते हैं। अ० भा० श्वे० सम्मेलन के डेपूटेशन में सम्मिलित होकर आपने सी० पी०, बरार, खानदेश आदि स्थानों का दौरा किया। रामगढ काग्रेस की आपने पैदल यात्रा की। आप खादी भण्डार एव स्वदेशी वस्त्रो के व्यवसायी हैं। श्री देव-आनन्द शिक्षण-सघ राजनान्द गाँव के प्रचार कार्य में आपने सक्रिय भाग लिया। आपके सुपुत्र श्री पुखराजजी और सुपुत्रियाँ श्री मदनबाई, ताराबाई व इच्छाबाई हैं। समाज को आपसे बडी-बडी आशाएँ हैं।

श्री अगरचन्दजी सा० वेद, रायपुर

आप स्थानीय श्रीसघ के उपाध्यक्ष हैं। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में आपका उत्साह तथा दान गौरवपूर्ण एव प्रशसनीय है। आपकी ही प्रेरणा से यहाँ जैन स्कूल की स्थापना हुई। सामाजिक कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग औरो के लिए अनुकरणीय है।

श्री गणेशीलालजी चत्तर, सीवनी (म० प्रा०)

आपका जन्मस्थान मेवाड राज्यान्तर्गत ताल नामक एक छोटे से ग्राम का है। आप होशगाबाद मे स्वर्गीय सेठ नेमीचन्दजी के यहाँ दत्तक गए। सीवनी में स्थानकवासी जैन केवल आप ही हैं, पर आपकी धर्मप्रियता ने मन्दिरमार्गियों को भी इतना प्रभावित किया कि सीवनी के सभी मन्दिरमार्गी भाई स्थानकवासी के रूप में परिवर्तित हो गए आप कांग्रेस के अनन्य भक्त है। लगातार २२ वर्षों से शुद्ध खादी धारण करते चले आ रहे हैं। आपको चार गाँव की जमींदारी होते हुए भी जमींदारी के उन्मूलन सत्याग्रह में आपका प्रमुख हाथ था। धर्म-कार्यों में मुक्त हस्त से दान तथा जैन-सिद्धान्तों का कठोरतम पालन आपकी विशेषता है। आपकी सन्तान में एक पुत्र तथा पुत्रियाँ हैं। जिले का बच्चा-बच्चा आपके नाम से परिचित है।

श्री अगरचन्दजी गुलेच्छा, राजनादगाँव

आप एक उदारमना, शिक्षा-प्रेमी एव अनन्य धर्मश्रद्धालु व्यक्ति थे। दीन-दुखियो के प्रति आपका हृदय सदा ही सदय बना रहता था। समाजहित कार्यों के लिए आप सदैव मुक्तहस्त होकर दान करते थे। आप एक ऐसे लक्ष्मीपति थे, जिन्होंने साधारण व्यवसाय प्रारम्भ कर अपने पुण्य बल एव बुद्धिबल से समय का लाभ उठाया और एक प्रतिष्ठित तथा यशस्वी लक्ष्मीपति बन गए। धन कमाना आसान है किन्तु कमाये गए धन को समाज एव लोकोपकारी कार्यों में लगाना कहीं अधिक कठिन है। छत्तीसगढ इलाके में जहाँ जैन समाज की बहुत बडी सख्या है, किन्तु समाज की एक भी सस्था न थी। इस अभाव को दूर करने के लिए वह एक मुश्त २१,०००) दान कर राजनादगाँव में श्री देव आनन्द जैन शिक्षण सघ की स्थापना की। आपके बडे सुपुत्र श्री भवरीलालजी गुलेच्छा भी अपने पिता के समान ही धार्मिक और सामाजिक कार्यों में दिलचस्पी लेने वाले नवयुवक हैं। अपने पिता के समान आपसे भी समाज को बडी-आशाएँ है—जो सहज स्वाभाविक है।

स्व० सेठ श्री चन्दनमलजी मूथा, सतारा

श्री सेठ चन्दनमलजी मूथा का जन्म स० १९८६ आषाढ वदी ६ को हुआ। बचपन से ही आप अपने अग्रज भाई श्री बालमुकुन्दजी मूथा के साथ व्यापार में साथ रहे और काफी धन और कीर्ति सम्पादन की। आपने अपनी शाखा बम्बई और शोलापुर में भी स्थापित की। जिस तरह आपने धन उपार्जन किया उसी तरह आपने मुक्त हाथो से उसका सदुपयोग भी किया।

जैन समाज की धार्मिक या सामाजिक सस्था फिर भले ही वह हिन्दुस्तान के किसी भी भाग में हो, आपकी ओर से गुप्त मदद मिलती ही रहती थी। कॉन्फ्रेन्स के बम्बई अधिवेशन के समय आपने पूना बोर्डिंग को ११ हजार रु०, कॉन्फ्रेन्स को ५ हजार रु०, घाटकोपर जीवदया खाता को ३ हजार रु० और सस्कृत शिक्षण की सुविधा के लिए ५ हजार रु० की उदार भेंट आपकी दानप्रियता के थोडे से उदाहरण मात्र हैं।

आपको आयुर्वेदिक उपचार के प्रति बडा सन्मान था। आपने अपने जीवन में आयुर्वेदिक औषधि के सिवाय अन्य कोई दवा नहीं ली थी। आयुर्वेदिक पद्धति पर अनहद श्रद्धा तथा प्रेम से प्रेरित होकर आपने सतारा के आर्यांग्ल वैद्यक विद्यालय को बडी रकम प्रदान की थी। ७१ वर्ष की उम्र में जव आपकी वर्षगाठ मनाई गई थी तव आपने सतारा के मारवाडी समाज को उनके उत्कर्ष के लिए पाँच हजार रुपये प्रदान किये थे।

जीवन की अन्तिम घडियो में आपने ५० हजार रुपये धार्मिक कार्य के लिए अलग निकाले और १० हजार रुपये विभिन्न सस्थाओ को भेंटस्वरूप प्रदान किये।

अन्तिम समय में आपने सथारा भी कर लिया था। आपकी धार्मिक श्रद्धा, सत्यप्रियता और उदारवृत्ति प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय थी।

श्रीमान स्व० उत्तमचन्दजी मुथा, पाथर्डी

मुथाजी एक गम्भीर स्वभावी, मुत्सद्दी कार्यकर्त्ता के रूप में प्रख्यात थे। आपका जीवन वडा उज्ज्वल था। जैन-अजैन सभी जनसमुदाय आपको अपना नेता मानते थे। अहमदनगर जिले के कार्यकर्त्ताओ में आपका विशिष्ट स्थान था। पाथर्डी की सभी सस्थाओ को आपकी दीर्घदर्शिता एव निष्पक्ष वृत्तिका सदैव वहुमूल्य लाभ प्राप्त होता रहा। श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय की स्थापना के समय से ही आप ऑनरेरी सेक्रेटरी के पद पर अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक तन-मन-धन से जो सेवा करके एक आदर्श उपस्थित कर दिया वह कुछ ही-सस्था सचालको में पाया जाता है। पाथर्डी सस्थाओ के लिए श्रीमान् गुगले, और मुथाजी कृष्ण और अर्जुन के समान सहयोगी रहे। आपके सत्प्रयास से अन्य भी कई व्यावहारिक सस्थाएँ स्थापित होकर विकास को प्राप्त हुई। स्थानीय श्री तिलोक रत्न स्था० जैन धार्मिक परीक्षा-वोर्ड एव श्री वर्द्धमान स्था० जैन धर्म शिक्षण प्रचारक सभा के आप महा मन्त्री थे।

श्रीमान् रतनचन्दजी वॉठिया, पनवेल

आप सुप्रसिद्ध व्यवहारी एव कुशल-कार्यकर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं। वहुत-सी धार्मिक एव व्यावहारिक सस्थाओ के आप अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, चेयरमैन, डाइरेक्टर आदि महत्वपूर्ण पदों के सफल सचालक हैं। पाथर्डी परीक्षा-वोर्ड के वर्त्तमान अध्यक्षपद को आपही सुशोभित कर रहे हैं। आपका स्वभाव अतीव सरल एव हृदय उदार है। आपके आश्रय से कई सस्थाएँ चल रही हैं।
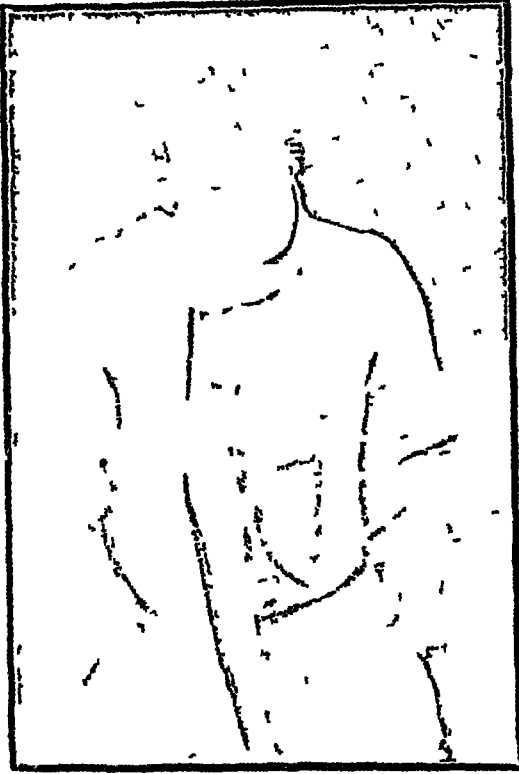
श्रीमान् स्व० सेठ श्री मोतीलालजी गुगले
पाथर्डी, (अहमदनगर)

आप पाथर्डी ओसवाल समाज के अग्रगण्य प्रामाणिक सद्-गृहस्थ थे। श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय छात्रालय, एवं ट्रस्ट मण्डल के अध्यक्ष पद को अलकृत करते हुए जीवन-पर्यन्त आपने सस्थाओ की बहुमूल्य सेवा की। विद्यालय को १५०००) पन्द्रह हजार रुपये का अनुदान आपने समय-समय पर दिया था। वर्त्तमान विद्यालय भवन के निर्माण में भी आधा हिस्सा आपका ही है। विशाल विद्यालय भवन निर्माण-कार्य प्रारम्भ करने के लिये २५०००) रु० का दान आपने अन्तिम समय में घोषित किया और तत्काल ही वह रकम ट्रस्टियो के सुपुर्द कर दी गई। परीक्षा बोर्ड, सिद्धान्तशाला आदि सस्थाओ को भी आपका सहयोग प्राप्त हुआ है। वाहरी सस्थाओ को भी आप यथाशक्ति सहायता दिया करते थे।

○ ○ ○ ○

श्रीमान् माणकचन्दजी मुथा, अहमदनगर
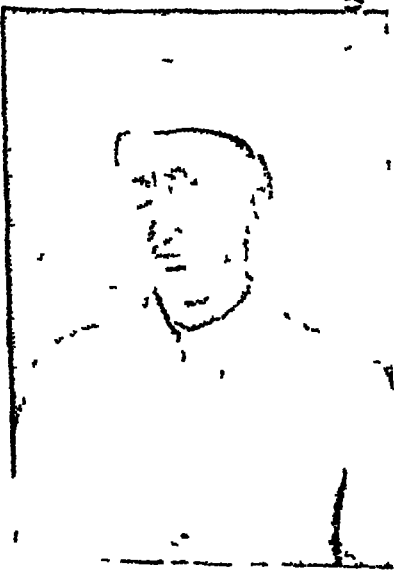
शास्त्र विशारद स्व० श्रीमान् किसनदास जी मुथा के आप ज्येष्ठ पुत्र हैं। अहमदनगर ओसवाल समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। अपने स्व० पिता की धार्मिक सेवावृत्ति को आपने भी हृदय से अपनाई है। पाथर्डी हाईस्कूल एव सिद्धान्तशाला के आप अध्यक्ष हैं। परीक्षा बोर्ड और वर्द्धमान सभा के उपाध्यक्ष तथा सस्थाओ के ट्रस्टी तथा अन्य सम्मानित सदस्य हैं। अहमदनगर की कई व्यावहारिक एव धार्मिक सस्थाओ के आप पदाधिकारी है। श्री जैन सिद्धान्तशाला, अहमदनगर व घोड नदी की स्थापना आपने ही की है।

श्रीयुत सुगनचन्दजी भण्डारी, इन्दौर
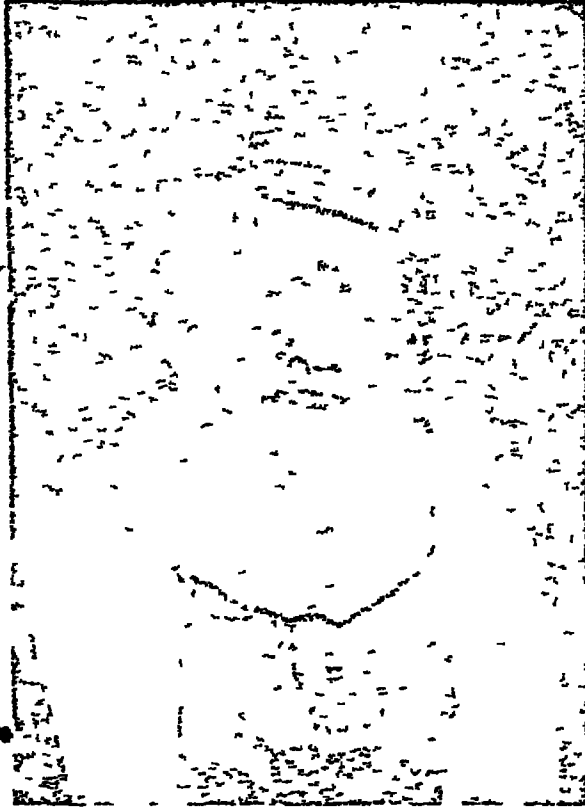
श्रीमान स्वर्गीय श्री नानचन्दजी भगवानदासजी दूगड़, घोड़नदी

आप सरल स्वभाव के उदार सद्गृहस्थ थे। पाथर्डी बोर्ड की स्थापना आपकी मुख्य कृति है और भी बहुत-सी धार्मिक एव व्यावहारिक सस्थाओ में आपने सहायता दी है। आपने घोडनदी क्षेत्र का मोह नहीं रखते हुए पाथर्डी में आकर बोर्ड को स्थापित करना आपकी निष्पक्षवृत्ति का द्योतक है। आपने जीवन पर्यन्त बोर्ड के अध्यक्ष पद का सचालन किया था। घोडनदी में भी आपने एक मकान धर्मध्यानार्थ सघ को प्रदान कर दिया है। संत सतियो की सेवा एव व्याख्यान-श्रवण आदि पवित्र कार्यों में आप विशेष लीन रहते थे।

• • • •

श्रीमान् चन्दनमलजी गांधी, पाथर्डी

देशभक्त श्रीयुत गांधीजी अहमदनगर जिले के एक निष्ठावान् कार्यकर्ता है। सामाजिक, व्यापारिक, धार्मिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रो में आपकी प्रतिभा विकसित हुई है। भारत माँ की निष्ठासपन्न सन्तान के रूप में जनता आपको पहचानती है, इसलिये आपको देशभक्त की पदवी है, आप सक्रिय गांधीवादी है। श्रीयुत उत्तमचन्दजी मुथा ने अपना उत्तरदायित्व आपको सौंपते हुए बहुत ही समाधान व्यक्त किया था। आपने भी मुथाजी को जो आश्वासन दिया था उसका हृदय से पालन करते हुए मुथाजी की अपूर्ण कृति को पूर्ण करने में अपने सर्वस्व की बाजी लगाकर विद्यालय की इस थोडे समय में जो उन्नति कर दिखाई है वह सर्वथा गौरवास्पद है। विद्यालय के मानद् महामन्त्री के महत्त्वपूर्ण पद का संचालन करते हुए परीक्षा बोर्ड आदि संस्थाओं की व्यवस्था में भी आप हाथ बँटाते रहते हैं।

श्रीमान चुन्नीलालजी गुगले, पाथर्डी

आप स्व० श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य मोतीलालजी गुगले, पाथर्डी के सुपुत्र हैं। अपने पिताश्री के पश्चात् श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय, छात्रालय, धार्मिक परीक्षा बोर्ड आदि जैन एव जैनेतर हिन्द वस्तिगृह आदि सस्थाओ को आप अच्छा सहयोग दे रहे हैं। सेल पर्चेज एव औद्योगिक सोसायटी के कई वर्ष तक आप चेयरमेन रह चुके हैं। आप लोकप्रिय गाधीवादी हैं। आपका स्वभाव मिलनसार है।

● ● ● ●

श्रीमान् मुवालालजी छाजेड-वालमटाकली

अपने पिताश्री के पश्चात् आप श्री तिलोकरत्न जैन ज्ञान प्रचारक मण्डल के ट्रस्टी होकर वर्तमान में श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय के मन्त्री पद पर काम कर रहे हैं। आप जैन समाज की उन्नति के लिए अहर्निश चिन्तित रहते हैं। अपने वकीली व्यवसाय के कारण समयाभाव रहते हुए भी यहाँ की जैन सस्थाओ को पर्याप्त मात्रा में सहयोग देते रहते हैं।

श्रीमान चुनीलालजी कोटेचा-नान्दूर, जिला बीड
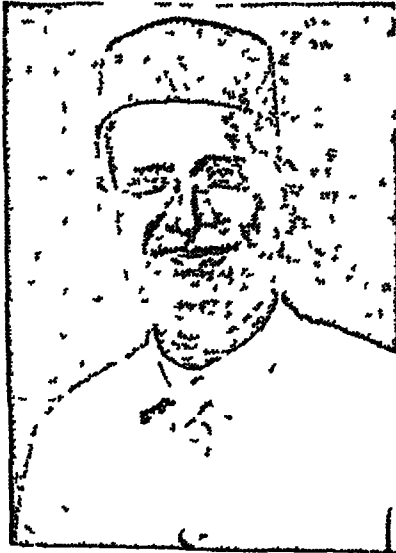
आप श्री तिलोकरत्न जैन विद्यालय के स्थापना-काल से ट्रस्ट मण्डल के सदस्य हैं। विद्यालय की आर्थिक स्थिति दृढ करने में आपका पूर्ण सहयोग रहा है। आपको शिक्षण विषयक सस्थाओ से काफी प्रेम है। एव उनके लिये अहर्निश तत्पर रहते हैं।

● ● ● ●

लाला अर्जुनसिहजी जैन जींद
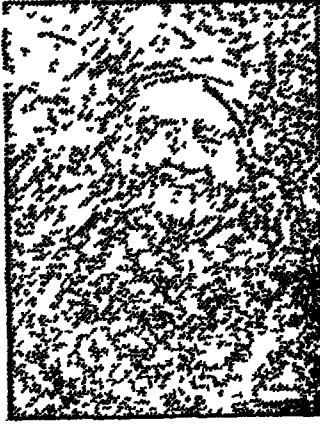
स्व० डी० ब० मोतीलालजी मूथा, सतारा

आप प्रारम्भ से ही कॉन्फरन्स के स्तम्भ रहे हैं। कॉन्फरन्स के जनरल सेक्रेटरी रहे हैं। आपने कॉन्फरन्स तथा स्था० जैन समाज की आजन्म सेवा की है।

स्व० श्री किशनदासजी मूथा, अहमदनगर

आप दक्षिण भारत में शास्त्रो के मर्मज्ञ थे। आप बडे ही धर्मनिष्ठ और साधु-साध्वियो के मार्गदर्शक थे।
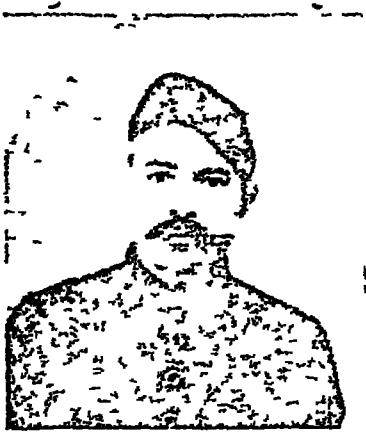
श्री जवाहरलालजी रामावत, हैदराबाद

आप राजा-बहादुर सुख० ज्वाला-प्रसादजी की हैदराबाद फर्म के संचालक हैं। बडे ही धर्मनिष्ठ और श्रद्धालु श्रावक हैं।

श्री पूनमचन्दजी गांधी, हैदराबाद

आप उदार दिल के प्रभावशाली श्रावक हैं। समाज और सामाजिक सस्थाओं के प्रति आप बडे उदार हैं।

स्व० श्री पन्नालालजी बब, भुसावल

आप धर्मप्रेमी, समाज के अग्रगण्य उदारदिल के श्रावक हैं। साधु-साध्वियो के प्रति अनन्य श्रद्धा है।

श्रीमान् नथमलजी रॉका, जामठी

जाम०ी निवासी —श्रीसम्पन्न नथमलजी राका अति सरल स्वभावी, उदार प्रकृति के सद्गृहस्थ हैं। स्थानीय जनता पर आपका अच्छा प्रभाव है। बोदवड में हाईस्कूल भवन का निर्माण आपके विद्या-प्रेम एव समाज-सेवा का प्रतीक है। श्री वर्द्धमान जैन धर्म शिक्षण प्रचारक सभा, प.थर्डी की स्थापना-काल से ही आप इसके अध्यक्ष हैं।
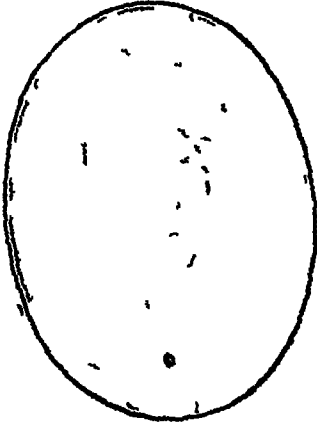
श्रीमान हीरालालजी किशनलालजी गांधी

आप एक कुशल व्यवसायी एव समाज-प्रेमी व्यक्ति है। आप पारमार्थिक सस्थाओ की स्थापना-काल से आज तक ऑनरेरी सेवा कर रहे हैं। धर्म के प्रति आपकी पर्याप्त अभिरुचि हैं। आपका स्वभाव सरल एव रहन-सहन सादा है। आप जैसे नि स्वार्थ एव तत्परता से काम करने वाले व्यक्ति समाज में विरले ही देखने को मिलेंगे।

श्री जवाहरलालजी मुणोत, अमरावती

आपका जन्मस्थान मारवाड में पीपाड का है किन्तु इस समय आपका व्यापार अमरावती-मध्यप्रदेश में फैला हुआ है। आपका शिक्षण हाईस्कूल तक हुआ है। बचपन से ही व्यापारिक उत्थान के साथ-साथ धार्मिक एव सामाजिक विकास के लिए आपका मानस मननशील रहा है। मारवाडी समाज की रूढिग्रस्त परम्पराओं से आप अविरत सघर्ष करते आ रहे हैं। सोभाग्य से आपकी धर्मपत्नी का भी सभी सामाजिक उत्थान-कार्यों में योगदान बना रहता है। आपने पर्दा आदि कुप्रथाओं को तिलाजली देकर समाज में एक नया अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है।

सामाजिक उत्थान के कार्यों में आपका सदा ही प्रमुखतम भाग रहा है। कॉन्फ्रेन्स के कई वर्षों से आप सतत कार्यकर्त्ता रहे हैं। इसके साथ-साथ राजस्थान में सम्प्रदायो के आपसी मनमुटाव को मिटाने व जैन समाज में प्रेम भाव व भाईचारे के लिए आपका प्रयत्न अथक व सफल रहा है। कॉन्फ्रेन्स की कार्यकारिणी के कई वर्षों से सदस्य व मानद् मन्त्री हैं। आप अपने ओजस्वी व प्रभावशाली भाषणो के कारण सारे समाज में अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

आप अमरावती के सुप्रसिद्ध जैन बोर्डिंग के संचालको में से एक हैं।

अपने आसपास व दूर-दूर तक की विविध धार्मिक-सामाजिक प्रवृत्तियो के प्रणेता व प्रेरक हैं। अपने जन्मस्थान 'पीपाड' शहर में अपनी माता के नाम पर एक अस्पताल बनवा रहे हैं जो आपकी तरफ से राजस्थान सरकार को भेंट किया जायगा।

व्यावसायिक क्षेत्र में भी आशातीत सफलता के साथ प्रगति की है। फिल्म-व्यापार जगत् के 'सी० पी० सी० आई' (मध्यक्षेत्र) सर्किट के अत्यन्त प्रमुख और 'दी कल्याण पिक्चर्स लि० (अमरावती व इन्दौर), के स्थापना काल से मैनेजिंग एजेन्टस् हैं। इस प्रकार सिनेमा-क्षेत्र के सगठनो के आदरप्राप्त सयोजक व निर्देशक रह कर अपनी व्यावसायिक प्रतिभा को और अधिक मुखरित कर रहे हैं।

समाज का यह ज्योतिर्मय नक्षत्र अपने दिव्य तेज से समाज को प्रकाशमान एव छबिमान कर रहा है। आशा और उमगो से भरे हुए इस तेजस्वी युवक से समाज को बडी-बडी आशाएँ होना स्वाभाविक ही है।

आपकी अध्यक्षता में जैन युवक-परिषद् स्थायित्व को प्राप्त कर युवक सगठित समाज को युगानुरूप प्रगतिशील बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

मद्रास के प्रमुख कार्यकर्ता

श्री ताराचन्दजी गेलडा, मद्रास
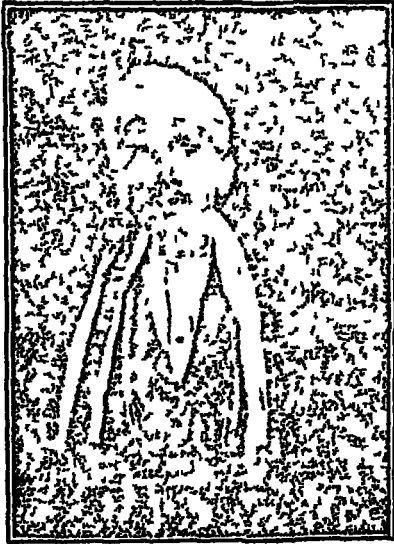
श्री गेलडाजी का जन्म स० १९४० में मद्रास में ही हुआ। आप मारवाड में कुचेरा के निवासी हैं। आपके पिताजी का नाम श्री पूनमचन्दजी था। आपके तीन छोटे भाई भी हैं, जिनमें से श्री इन्द्रचन्द्रजी गेलडा का अभी-अभी स्वर्गवास हो गया है। आपके दादा श्री अमरचन्दजी सर्व प्रथम १२५ वर्ष पूर्व पैदल चलकर यहाँ आये थे। प्रारम्भ में आपने नौकरी की और फिर धीरे-धीरे फरमकुण्डा (उपनगर) में रेजिमेंटल बैंकर्स का कामकाज शुरू किया। जिसमें आपने अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके पिताजी का स्वर्गवास हो जाने के बाद आप सब भाई अलग-अलग हो गए और आपने पूनमचन्द ताराचन्द के नाम से अपनी स्वतन्त्र फर्म खोली और लाखो की सम्पत्ति पैदा की। आपका विवाह डेह निवासी श्री हसराजजी खींवसरा, जो कि १२ व्रतधारी प्रसिद्ध श्रावक थे की सुपुत्री श्री रामसुखी बाई से हुआ। आपके तीन पुत्र हैं, जिन्हे आपने अपने स्वतन्त्र व्यवसाओ में लगा दिये हैं। श्री भागचन्दजी गेलडा आपके बडे पुत्र हैं जो समाज-सेवा के कार्यो में काफी उत्साह तथा लगन से भाग लेते हैं। श्री

नेमीचन्दजी और खुशालचन्दजी भी विनीत और धर्मकुशल हैं जो अपना व्यवसाय सफलता से चला रहे हैं। श्री ताराचन्दजी गेलडा उदार-हृदय के साहसी सज्जन हैं। जिस कार्य को वे हाथ में ले लेते हैं उसे पूरा करके ही चैन लेते हैं। कॉन्फ्रेन्स के ११वें अधिवेशन के आप स्वागतमन्त्री थे। यह अधिवेशन जिस ढग से मद्रास में सम्पन्न हुआ, वैसा पहले कोई अधिवेशन नहीं हुआ। इसका अधिकाश श्रेय आपको ही है। शुभ कार्यों में आप उदारतापूर्वक दान देते हैं। सर्वप्रथम आपने १० हजार रुपयो का एक ट्रस्ट कायम किया था जिसका ब्याज १३ वर्ष तक आप शुभ कार्य में लगाते रहे। जब मद्रास में जैन बोर्डिंग की नींव पडी तब आपने यह रुपया बोर्डिंग को दे दिया था। सैदापैठ में आपने अपनी तरफ से महावीर पौषधशाला भवन बनाकर समाज को भेंट किया। शिक्षा के प्रति आपकी अत्यधिक रुचि है। मद्रास में

चलने वाली जैन एज्युकेशनल सोसाइटी की स्थापना में आपका विशेष भाग रहा है। आज इस सोसाइटी के तत्वावधान में, बोर्डिंग, हाईस्कूल, कॉलेज तथा प्रायमरी स्कूल आदि चल रहे हैं। वर्षों तक आप इस सोसाइटी के मन्त्री रहे हैं। और इसका सचालन करते रहे हैं। गत १८ वर्ष से आप गृहभार से मुक्त हो त्यागी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आप सपत्नीक खादी के वस्त्र ही पहनते हैं। अब तो आपने रेल आदि की सवारी का भी त्याग कर दिया है। ११ वर्ष पूर्व आपने ताराचन्द गेलडा ट्रस्ट के नाम से १ लाख रु० का ट्रस्ट किया था जिसमें से २० हजार रु० आपने अपने पिताजी की पुण्य स्मृति में कुचेरा (मारवाड) में मिडिल स्कूल कराने के लिए जोधपुर गवर्नमेंट को दिये हैं। ट्रस्ट में से ५० हजार रु० का व्याज आप प्रति वर्ष कुचेरा बोर्डिंग को सहायतार्थ प्रदान कर रहे हैं। ३१ हजार रु० का व्याज अभी आप प्रायमरी स्कूल मद्रास को दे रहे है। ५ हजार रु० आपने महिला विद्यालय, मद्रास को प्रदान किये हैं।

आप स्पष्ट वक्ता तथा नेक दिल सज्जन हैं। स्वभाव से कठोर प्रतीत होने पर भी हृदय से बहुत उदार और योग्य व्यक्ति की कीमत करने वाले हैं। आप इस वृद्ध उम्र में भी समाज सुधार कार्यों में दिनरात सलग्न रहते हैं। सुपुत्र कुं० भागचन्दजी आदि पर परिवार का बोझ रखकर उत्तरावस्था में निवृत्त होकर आप आदर्श श्रावक जीवन बिता रहे है।

सेठ वृद्धिचन्दजी मरलेचा, मद्रास

आपका जन्म स० १९३७ में सोजत (मारवाड) के पास गुण्डागरी नामक ग्राम में हुआ था। आप अपने पिता श्री नवलमलजी मरलेचा के तृतीय पुत्र थे। जब आप १० वर्ष के थे तभी आपके पिता का स्वर्गवास हो गया था। जो-कुछ उनकी सम्पत्ति थी वह आपके बडे भाई ने व्यापार में समाप्त कर दी। १५ वर्ष की वय में आप मद्रास पहुँचे। मद्रास पहुँचकर आपने फरमकुण्डा में १॥) रु० मासिक पर नौकरी की। रसोई बनाने का काम भी किया। स० १९५६ में आपको एक पेढी ने ३००) रु० साल पर नियुक्त किया। उधर मारवाड में अकाल पड जाने से आपने अब तक की सचित पूंजी अपनी माँ के पास मारवाड भेज दी। स० १९५८ में आपके बडे भाई रूपचन्दजी भी अपना विवाह कर मद्रास आये। उस समय आपके पास ३९) रु० शेष रहे थे। दोनो ने मिलकर सैदापैठ में साहूकारी की दुकान की। लेकिन धन्धा ठीक न चलने से आपने रामपुरम में अपनी अलग दुकान कर ली। भाग्य से वहाँ आपको अच्छी आमदनी होने लगी अत आपके बडे भाई रूपचन्दजी भी वहीं आ गए। स० १९६५ में आपका विवाह हुआ। दस वर्षों तक आप दोनो भाई सम्मिलित व्यवसाय करते रहे, बाद में जब अलग अलग हुए तो आपके हिस्से में ८५ हजार रुपये नकद और ५ हजार का जेवर आया। इसके बाद आपने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय शुरू किया जिसमें आपने काफी द्रव्य उपार्जन किया। फलत आपकी गणना मद्रास के अग्रगण्य लक्षाधिपतियों में होने लगी।

मद्रास में जब छात्रालय शुरू करने का प्रश्न आया तो आपने इसके लिए सर्वप्रथम ५० हजार रुपये का दान दिया। आपकी धर्मपत्नी ने कोडम्बाकम् रेलवे स्टेशन के पास २८ ग्राउण्ड जमीन छात्रालय को दान में दी। इस प्रकार आप दोनों ही बडे उदार थे। समाज-सुधार की प्रवृत्तियो में आप समय-समय पर भाग लेते रहते थे। कई सस्थाओ को दान देकर वे अपने धन का सदुपयोग किया करते थे।

आपके सुपुत्र श्री लालचन्दजी मरलेचा भी आपकी तरह उदार हैं। मद्रास सघ में, शिक्षण सस्थाओ के तथा मारवाड की शिक्षण सस्थाओ में अच्छा सहयोग दे रहे हैं।

श्री सेठ छगनमलजी सा० मूथा, बैंगलोर

सेठ श्री छगनमलजी सा० समाज के एक रत्न हैं। आपकी सरलता, उदारता, धार्मिकता, शिक्षा तथा साहित्य-प्रेम एवं परोपकार-वृत्ति समाज के लक्ष्मी पुत्रों के लिए अनुकरणीय है।

आपका जन्मस्थान मरुभूमि मारवाड़ में मारवाड़ जंक्शन है। आपके पिताश्री का नाम श्री मन्दारमलजी था। श्री छगनमालजी सा० बलून्दा निवासी श्री सेठ शम्भूमलजी के यहाँ गोद चले गए, तब से आप अधिकतर बलून्दा तथा बंगलोर रहने लगे।

आपने लाखों रुपया अपने हाथों से कमाया और लाखों रुपया अपने हाथों से दान दिया। अनेक दीक्षाएँ तथा अनेक चातुर्मास आपने अपने पास से कराये और अपनी उत्कृष्ट मुनि-भक्ति तथा धर्म-प्रेम का परिचय दिया। दक्षिण प्रान्त में अहिंसा धर्म का प्रचार करने में और जीवों को हिंसा से बचाकर अभय दान देने में आपने अभूतपूर्व परिचय दिया है।

आपकी ओर से बंगलोर, खारची जैतारण, बलून्दा आदि स्थानों पर शिक्षण-संस्थाएँ चलती हैं, जिनमें सैकड़ों छात्र निःशुल्क शिक्षण प्राप्त करते हैं। स्थानकवासी सार्वजनिक शिक्षण-संस्थाओं में शायद ही कोई ऐसी संस्था होगी जिसमें आपकी सहायता नहीं पहुँची हो। आप अनेक जैन-संस्थाओं के जन्मदाता, सदस्य और ट्रस्टी हैं। शिक्षा के अतिरिक्त अन्य बातों में भी आप काफी खर्च करते हैं। आपकी उदारता सर्वतोमुखी है। आपके पास आया हुआ प्रत्येक मनुष्य प्रसन्न तथा सन्तुष्ट होकर ही लौटता है।

आपकी तरफ से खारची, बलून्दा तथा मेड़ता में तीन औषधालय भी चलते हैं। तीनों औषधालयों में लगभग ७-८ सौ रुपया मासिक का खर्च है। हजारों बीमार लाभ उठाते हैं। इस तरह प्रतिवर्ष लगभग ५० हजार रुपया शुभ कार्यों में खर्च कर देते हैं।

आप स्वभाव के सीधे-सादे, अत्यन्त मिलनसार तथा हँसमुख हैं। आये हुए व्यक्ति का हृदय से स्वागत करना तथा उन्हें आदर देना आपका स्वभाविक गुण है। छोटे से छोटे आदमी के साथ भी आप प्रेम से मिलते हैं, बातें करते हैं तथा दुःख दर्द की बातें सुनकर उचित सहयोग देते हैं।

बैंगलोर प्रान्त में सबसे बड़ी फर्म आपकी है फिर भी इतने सरल हैं कि लोग देखकर आश्चर्य करने लगते हैं। थोड़ा सा पैसा हो जाने पर आपे से बाहर हो जाने वाले व्यक्तियों के लिये सेठ छगनमलजी आदर्श हैं। आप अपने किये हुए का कभी प्रचार नहीं चाहते। अनेक खर्च तो आपके ऐसे होते हैं कि देने और लेने वाले के सिवाय किसी को मालूम तक नहीं होता।

निस्सन्देह सेठ सा० का जीवन लक्ष्मीपतियों के लिये एक दृष्टान्त स्वरूप है। धन संग्रह की वस्तु नहीं किन्तु लोक-कल्याण के लिये लगाने की चीज है, इसे सेठ सा० ने खूब समझा है केवल समझा ही नहीं अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया है। इस अर्थ में सेठ सा० सच्चे लक्ष्मी पति हैं।

समाज को आपसे बड़ी-बड़ी आशाएं हैं और ऐसा होना स्वाभाविक भी है।
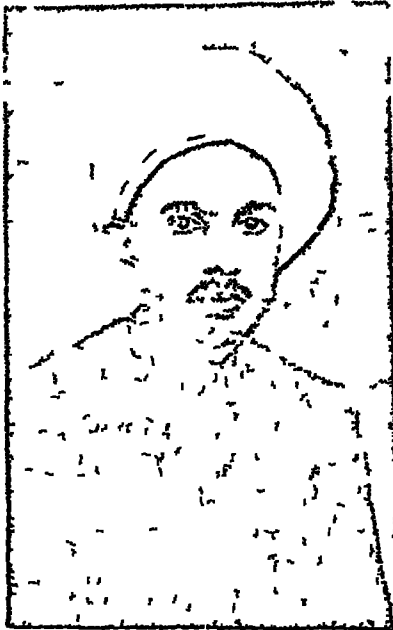
श्री मिश्रीमलजी कातरेला, बैंगलौर
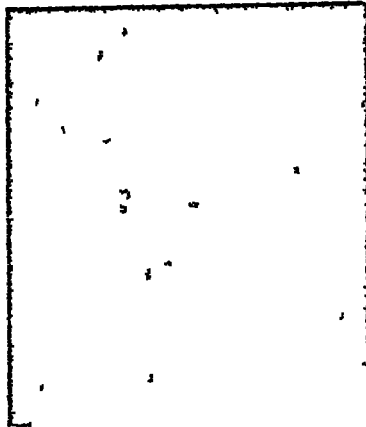
शाह माणिकचन्दजी जडावमलजी बोनाला, बागलकोट

श्री मेघराजजी मेहता, मद्रास

श्री जसवन्तमलजी इन्जीनियर, मद्रास

श्री चुन्नीलालजी जैन, बैंगलौर

स्व० श्री इन्द्रचन्द्रजी गेलड़ा, मद्रास

श्री वनेचन्दजी भटेवडा, वेल्लोर (मद्रास)

आप मारवाड में पीपलिया गाव के निवासी है। आपके पूर्वज करीब ६० वर्षों से वेल्लोर (मद्रास) में व्यापार के निमित्त आ गए थे। तभी से आप यहीं व्यापार कर रहे है। आपके यहाँ सोने-चादी का व्यापार होता है जिसमें आप कुशल हैं। सामाजिक कार्यों में भी आप सहयोग देते रहते हैं। स्थानीय प्रार्थना-भवन जो दो साल बाद बनकर तैयार हुआ है उसमें भी आपका परिश्रम मुख्य रहा है। यहाँ की गौरक्षा का कार्य आप २ साल से सुचारुरूपेण चला रहे है और गाँव वालो की मदद से गौशाला में एक ढालिया भी बनवा लिया है। आप एक धार्मिक प्रवृत्तिवाले सुश्रावक हैं। दक्षिण में विचरण करने वाले तपस्वी मुनि श्री गणेशीलालजी म० के दर्शन कर आपको तपस्या में अभिरुचि पैदा हो गई। वर्तमान में आपके ३ पुत्र और ३ पुत्रियाँ हैं।

श्री कँवरलालजी चौरडिया कुनूर (मद्रास)

आप वर्तमान में एस० एस० जैन सोसायटी के सभापति हैं। आप स्थानीय स्था० समाज के प्रतिष्ठित और प्रमुख श्रावक हैं। आप प्रकृति से अत्यन्त उदार एव मिलनसार हैं। प्रत्येक सामाजिक कार्य में यथोचित सहयोग देते हैं। आप व्यवसाय-कुशल और प्रामाणिक सज्जन हैं। इन्हीं गुणो के कारण आज आप हजारो की सम्पत्ति के मालिक हैं। यहाँ आपकी 'अलसीदास कँवरलाल' के नाम से फर्म है।

श्री रतनलालजी सा० चौरडिया' कुनूर (मद्रास)

आप स्थानकवासी समाज में सुप्रसिद्ध व्यक्ति हैं। स्थानीय एस० एस० जैन सोसायटी के आप मन्त्री है। समाजहित और सार्वजनिक हितार्थ आप प्रतिवर्ष लाखों रुपये खर्च करते रहते हैं। स्थानीय 'एनीमल वैल फेयर सोसायटी के आप प्रेसीडेंट है और सैकडो रुपए खर्च करते रहते हैं। समाज की विभिन्न सस्थाओ को भी समय-समय पर सैकडो रुपयों का उदारतापूर्ण दान करते रहते हैं। जैसी लक्ष्मी आप से प्रसन्न है वैसे ही दिल की उदारता भी है। दोनो में एक प्रकार से होड-सी मची रहती है।

आपका कुटुम्ब फलौदी-खींचन (मारवाड) के प्रसिद्ध धनिको में गिना जाता है। कुनूर में आपकी पी० रतनलाल एण्ड सन्स' के नाम से फर्म चल रही है। आप चाय के बडे अनुभवी व्यापारियों में से एक है। इतनी धन-सम्पत्ति के मालिक होने पर भी आपका सादगीमय जीवन प्रशसनीय है। आप अत्यन्त सरल भावुक तथा मिलनसार प्रकृति के हैं। आपके सुपुत्र श्री मनोहरलालजी तथा सम्पतलालजी भी अपने पिताश्री का आदर्श समक्ष रखते हुए बडे ही सेवाभावी, धर्मानुरागी और सरलहृदयी है। आप भी एक "जेम्स नीलगिरी टी कॉरपोरेशन" के नाम से अलग फर्म चला रहे हैं जिसकी एक ब्रॉंच कोइम्बटूर में भी है। समाज को आप जैसे उदार एव धर्मानुरागी व्यक्तियो की परमावश्यकता है जिससे समाज का भला हो सके।

श्री पूनमचन्दजी गाधी, पत्थरगट्टी (हैदराबाद)

आपका जन्म स० १८४२ में अलवर रियासत में बहरोड में हुआ था। आपके पिताजी श्री करोडीमलजी बडे ही धार्मिक, दानवीर एव श्रद्धालु थे। ये ही सस्कार इनके पुत्र पर पडे और यही कारण है कि श्री पूनमचन्दजी ने एक स्थानक, एक धर्मशाला और एक कुएँ का निर्माण कराया। हैदराबाद स्टेशन पर भी आपने एक धर्मशाला बनवाई

जिसमें एक अस्पताल भी चालू किया गया है जिससे रोगियो को नि शुल्क औषधि मिलती है और दो साल पहले इसी धर्मशाला की तीसरी मंजिल पर एक बडा स्थानक व लेक्चर-हॉल बनवाया है। अलवर में डॉ० मथुराप्रसाद के हाथो से आपने ४५० लोगो की नैत्र चिकित्सा कराई। आप ही के प्रयत्नो से हैदराबाद में जैन बोर्डिंग खोला गया है। श्री वर्धमान स्था जैन श्रावक सघ, हैदराबाद के आप अध्यक्ष है। श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर के वार्षिक महोत्सव के आप सभापति बने थे। इस प्रकार अपनी दानवीरता से समाज, धर्म एव राष्ट्र की दिल खोलकर आपने धन से सेवा की है। आप सच्चे लक्ष्मीपति हैं जो लक्ष्मी को बढाना तथा उसे काम में लगाना जानते हैं। समाज के श्रीमन्त आपके आदर्श का अनुकरण कर अपने धन से अपना गौरव बढावें-इसी में धन की और मानव-जीवन की सार्थकता है।

श्री हस्तीमलजी देवडा, औरगाबाद

श्री देवडाजी की जन्मभूमि तो मारवाड है परन्तु उनके पूर्वज २-३ पूर्वज पहले व्यापारार्थ हैदराबाद रियासत में आये और औरगाबाद में बस गये। औरगाबाद में देवडा परिवार के १०-१५ घर हैं। श्री हस्तीमलजी का जीवन सीधा-सादा और वर्तमान तडक-भडक से बिलकुल परे है। वे सामान्य स्थिति के व्यक्ति हैं। श्रीमानों की श्रेणी में उन की गिनती नही की जा सकती है, फिर भी उनकी उदारता प्रशसनीय है। धार्मिक पाठ्यपुस्तको के प्रकाशन के लिये उन्होंने ५ हजार रुपये कॉन्फरन्स को प्रदान किये। अपनी पुत्री के लग्न-प्रसग पर विविध सस्थाओ को ३ हजार रुपया दान दिया। 'जैनप्रकाश' के महावीर जयती विशेषाक के लिये ५०१) रु० प्रदान किये। आप विशेष पढे-लिखे भी नहीं हैं। परन्तु आपके हृदय में समाजोत्थान के विचार पैदा होते रहते हैं और समय-समय पर आप उन्हें अपनी भाषा में लिखते भी रहते है। साहित्य की दृष्टि से वे शून्य है, पर भावना की दृष्टि से वे प्रगतिशील हैं। बीच में राजनीतिक वातावरण से वे जोधपुर आ गये थे, पर अब वापिस औरगाबाद चले गये है। औरगाबाद में आप कपडे का व्यापार करते है।

● ● ●

समाज के कार्यकर्ता

प० रायावध त्रिपाठी गोरखपुर

श्री तिलोकचन्दजी बरडिया बोदवड
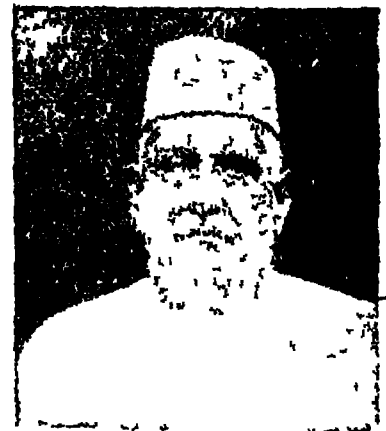
कन्हैयालालजी कोटेचा बोदवड

समाज सेवा खाडे की धार है

मोरवी अधिवेशन के अध्यक्ष राय सेठ श्री चाँदमल जी के साथ प्रमुख कार्यकर्त्ता
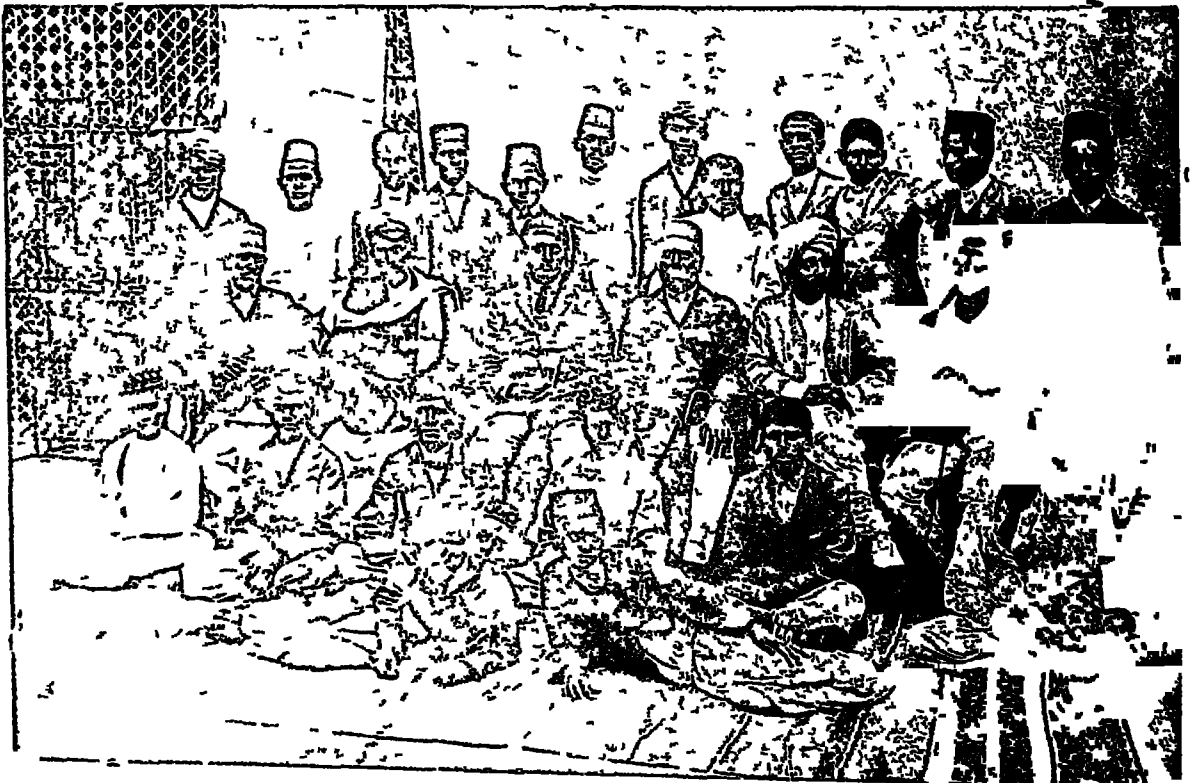
अजमेर ओफिस समय के कार्यकर्त्ता

मलकापुर अधिवेशन की स्वागत समिति

अजमेर अधिवेशन के समय अध्यक्ष श्री० हेमचद भाई महेता का पडाल-प्रवेश का एक दृश्य
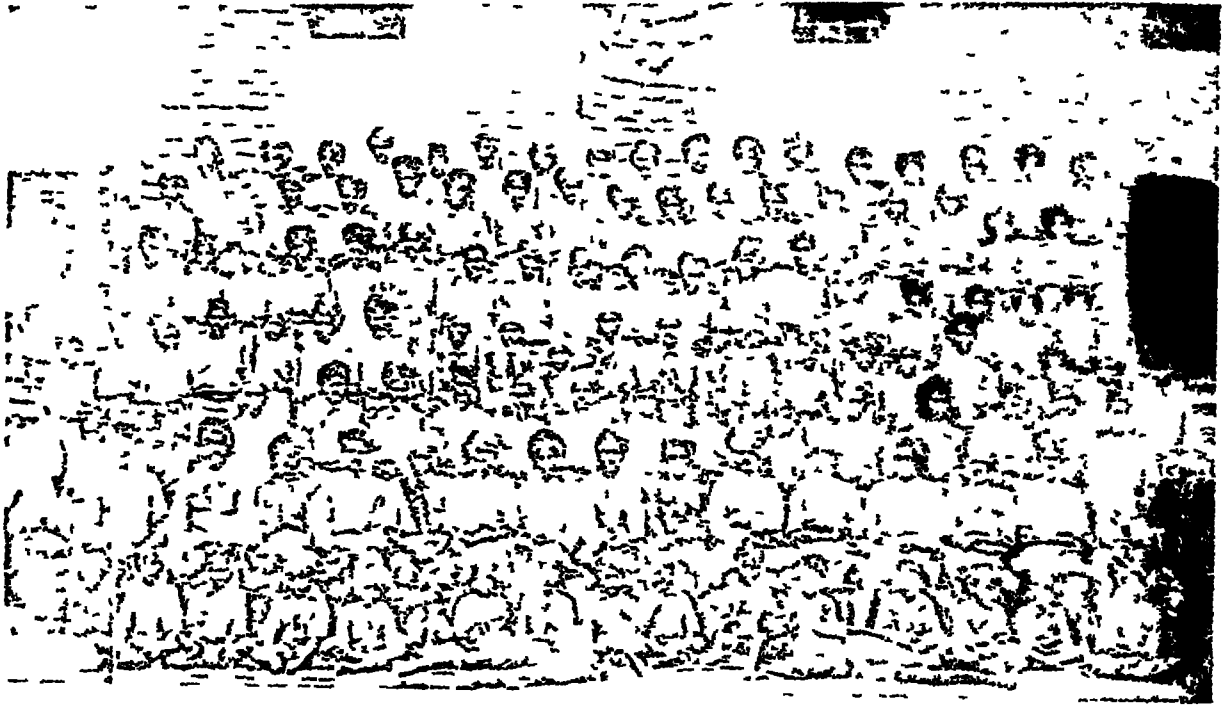
श्री साधु सम्मेलन समिति तथा स्वयंसेवक दल, अजमेर

घाटकोपर अधिवेशन के सभापति सेठ वीरचंद भाई का स्वागत

घाटकोपर अधिवेशन के अध्यक्ष सेठ वीरचंद भाई के पंडाल-प्रवेश का एक दृश्य

घाटकोपर अधिवेशन के मंच का एक दृश्य
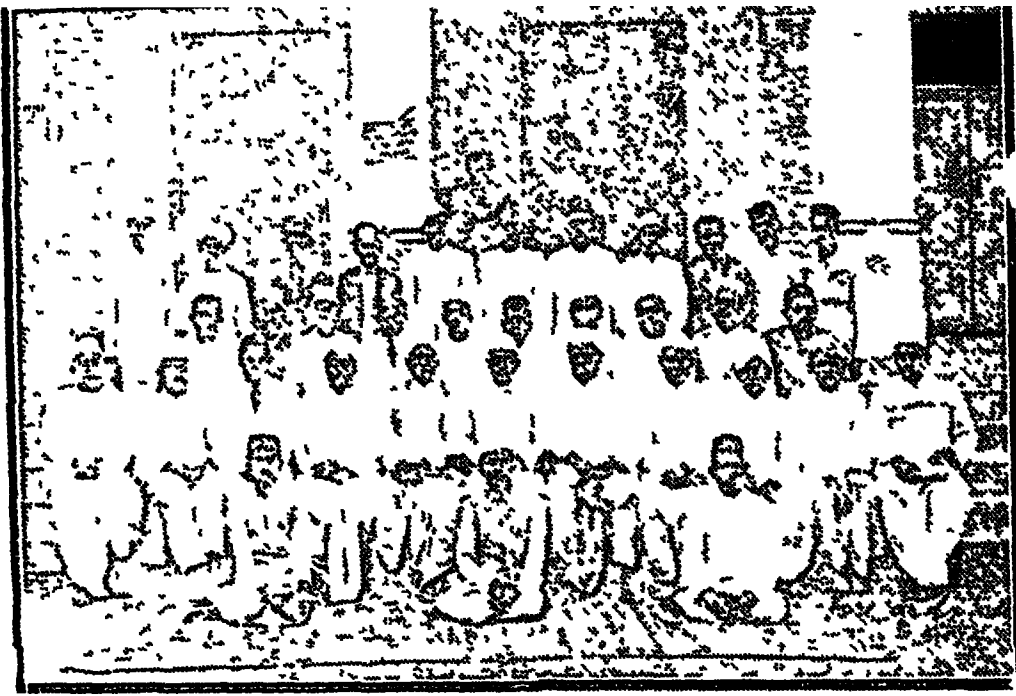
घाटकोपर अधिवेशन की स्वागत-समिति

अधिवेशन के प्रमुख फिरोदियाजी तथा परिषद् के अध्यक्ष श्री खेताणी जी को चोरी- दी जाने वाली विदाई का एक दृश्य

• • •

मद्रास अधिवेशन की स्वागत-समिति के प्रमुख कार्यकर्त्ता

* * सादड़ी-अधिवेशन के भव्य दो दृश्य * *

सादडी अधिवेशन के जुलूस का एक दृश्य

श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फ्रन्स द्वारा स्थापित तथा श्री एज्युकेशन सोसायटी द्वारा संचालित
श्री स्था० जैन बोर्डिङ्ग पूना, (दक्षिण)
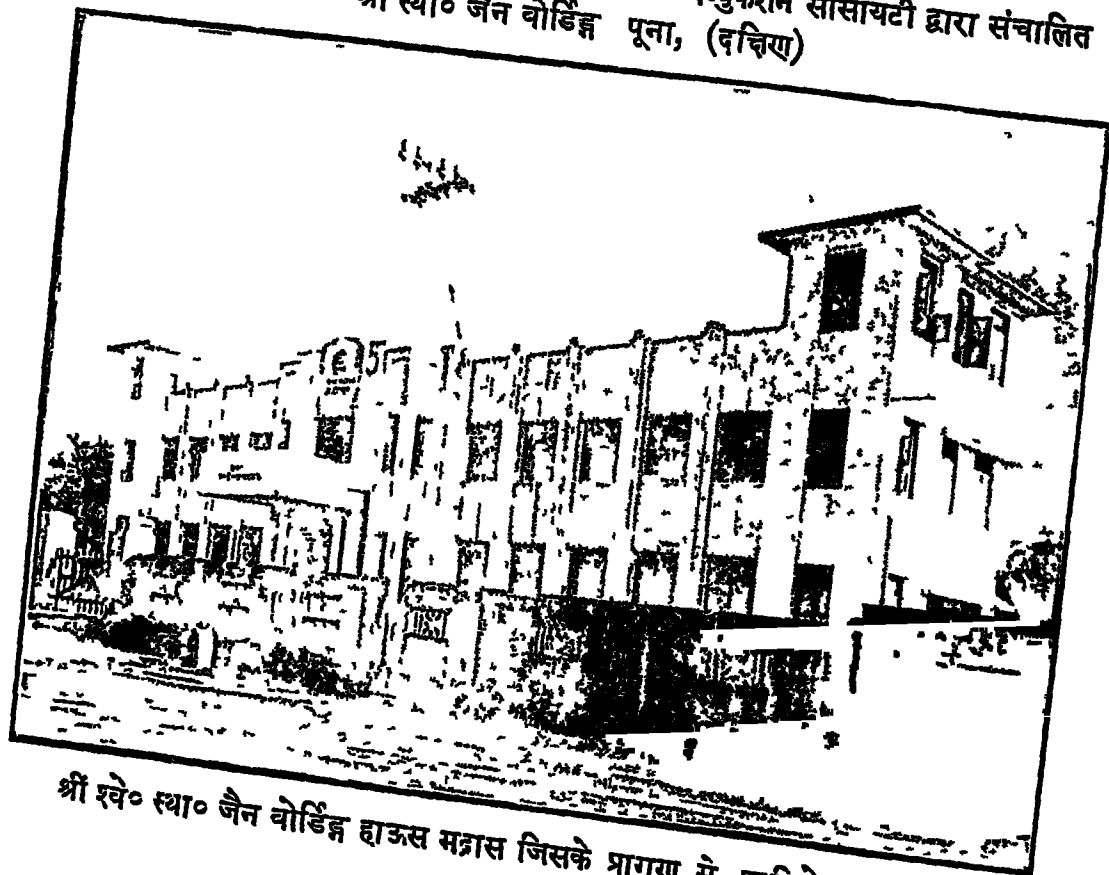
श्री श्वे० स्था० जैन बोर्डिङ्ग हाऊस मद्रास जिसके प्रागण मे अधिवेशन हुआ था।

लाला रतनलालजी पारख, देहली

आपका जन्म स० १६४८ में जोधपुर में हुआ था। स० १६५६ में आप लाला पूरनचन्दजी जौहरी बी० ए० के यहाँ दत्तक लाये गए। आपने भी योग्य उम्र होनेपर जौहरी का व्यवसाय प्रारम्भ किया। आप स्वभाव के बडे नम्र और मिलनसार प्रकृति के हैं। धर्म ध्यान, धर्मक्रिया और तपस्या की बडी रुचि रखते हैं। हरएक धार्मिक अवसर का आप लाभ लेते है। असाम्प्रदायिक मानस के और श्रद्धालु मुनिभक्त श्रावक है। व्यवसाय और व्यवहार में भी बडे प्रामाणिक हैं। दिल के भी बडे उदार हैं। स्था० जैन समाज की कई सस्थाओ में आपके दान का प्रवाह पहुँचा होगा। गरीवो के प्रति और जीवदया में आपका हृदय सदा द्रवित रहता है और यथाशक्ति सहायता करते रहते है। आपके ४ पुत्र और वहुत वडा परिवार है। सवमें आपके ही धार्मिक सुसस्कार और धर्मप्रेम ओत-प्रोत हैं।

डॉ० श्री ताराचन्दजी पारख, देहली

आप श्री रतनलालजी जौहरी के सुपुत्र है। आपका जन्म स० १६८० में हुआ। तीव्र वुद्धि और गरीवो के प्रति प्रेम वचपन से ही है। पढाई के लिए आपको घर से जो खर्च मिलता था, उसमें वचत करके आप गरीवो की दवाई आदि से सेवा करते थे। आप एक सेवाभावी एम० वी० वी० एस० (डॉक्टर) हैं। आपने अपना घर का ही अस्पताल शुरू किया। गरीवो को आप मुफ्त दवा देते है और उपचार भी करते है। साधु-साध्वियो की सेवाभक्ति और उपचार हार्दिक भाव से करते हैं। छोटी अवस्था में भी आपने जीवन की सौरभ फैलाई है।
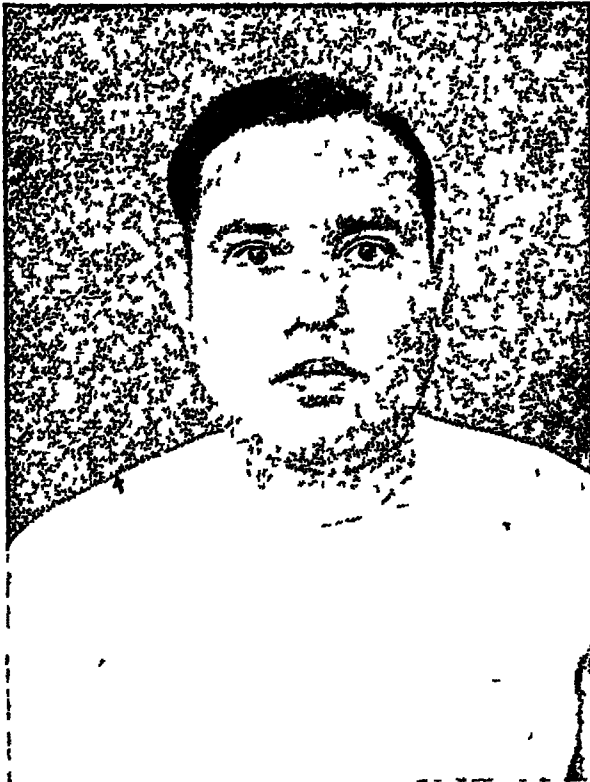
श्री गुलावचन्दजी जैन, दिल्ली

आप दिल्ली के प्रसिद्ध पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आप उग्र विचारो के समाज-सुधारक नेता हैं। अपने विचारो से आपने अपने साथियो और आसपास के लोगो को काफी प्रभावित किया है। आप ऑल इण्डिया महावीर जयन्ती कमेटी के मन्त्री है। यह कमेटी भगवान् महावीर स्वामी के जन्म-दिन पर केन्द्र की तरफ से सार्वजनिक छुट्टी कराने की कोशिश कर रही है।

श्री गुलावचन्दजी जैन स्थानकवासी जैन कान्फरेंस के भूतपूर्व मन्त्री भी रह चुके हैं।

लाला फूलचन्दजी नौरतनचन्दजी चोरड़िया, दिल्ली

श्री नौरतनचन्दजी सा० दिल्ली की ओसवाल समाज के एक रत्न हैं। आपके यहाँ परम्परा से पगडी का व्यापार चलता आया है। लाला नेमचन्द फूलचन्द के नाम से आपकी एक दुकान उज्जैन में भी है। इस समय आप एस० एस० जैन महावीर भवन (बारहदरी) ट्रस्ट (रजि०) दिल्ली के खजाची है। जैन कन्या पाठशाला के उपप्रधान, श्री जैन तरुण समाज के प्रधान और श्री महावीर जैन औषधालय की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। आपके नेतृत्व मे उपरोक्त सस्थाएँ उत्तरोत्तर प्रगति कर रही हैं। आप बडे ही मिलनसार एव गुणी व्यक्ति हैं।

श्री लाला कु जलालजी ओसवाल, दिल्ली सदर

आपका जन्म सवत् १९०१ में अमृतसर के प्रतिष्ठित व्यापारी घराने में हुआ है। स्व० पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज तथा स्व० पूज्य श्री काशीरामजी म० सा० के आप अनन्य भक्त रहे हैं। आपका जीवन प्रारम्भ से ही क्रियाशील रहा है और यही कारण है कि अपनी बाल्यावस्था में आपने जैन कुमार-सभा की स्थापना की। वर्षों तक अमृतसर की जैन कन्या शाला का आपने योग्यतापूर्वक सफल सचालन किया। व्यावसायिक जगत् में भी आपने प्रसिद्धि प्राप्त की है। सूत के गोलो का बडे पैमाने पर आपका व्यापार है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आप कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आपका सादा रहन-सहन, आपके सरल और सुघरे हुए विचारो का प्रतिनिधित्व करते हैं। सन्त-मुनि-राजो की सेवा-भक्ति तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र का आराधन आपके जीवन के अभिन्न अग हैं। अपने सुयोग्य पुत्रो को पारिवारिक तथा व्यावसायिक कार्य-भार सौंपकर समाज सेवा में अब आप लगे हुए हैं।

दिल्ली की प्राय सभी जैन सस्थाओ के माननीय सदस्य, अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सचालक अथवा सस्थापक कुछ-न-कुछ अवश्य रहे हैं। इस प्रकार अपनी सामाजिक गतिविधियो से तथा सेवा-भावना से अपने जीवन को सुवासित तथा मुखरित कर रहे हैं। इससे बढकर आप का और क्या गौरव हो सकता है कि आपके नाम से तथा आपके काम से दिल्ली का जैन समाज तथा स्थानीय जैन सस्थाएँ गौरवान्वित होकर समाज के लिए आशीर्वादरूप, सिद्ध हो रही हैं।

लाला रामनारायणजी जैन, दिल्ली B A. (Hon) Ll B

आप सुप्रसिद्ध धर्मनिष्ठ जैन समाज के अग्रगण्य लाला स्नेहीरामजी के सुपुत्र हैं। आपके पिता श्री श्रीवर्द्धमान स्था० जैन सघ सदर बाजार के उपाध्यक्ष हैं और आप जनरल सेक्रेट्री हैं। आपने बी० ए०, एल-एल० बी० तक शिक्षा प्राप्त की है। छोटी उम्र में भी आप अनेक सस्थाओ से सम्बन्धित हैं और मन्त्री या कार्यकारिणी के सदस्य रूप में सेवा दे रहे हैं। अपनी कॉन्फरन्स की कार्यकारिणी के आप सदस्य रह चुके हैं। आपकी चावलो की बडी और प्रतिष्ठित दूकान नया बाजार, दिल्ली में 'सनेहिराम रामनारायण जैन' के नाम से चलती है।

आप उदारदिल से गरीबो की सहायता करते हैं। धर्मकार्यों में खर्च करते हैं। धर्म-स्थानको में सहायता

करते है। आप धर्मप्रेमी शिक्षित और सस्कारी जैन युवक है। जैन समाज को आपसे बहुत आशाएँ रखना चाहिए।

लाला विलायतीरामजी जैन, नई दिल्ली

लाला गेंदामलजी जैन के यहाँ नालागढ (पजाब) में आपका जन्म स० १६५० के चैत्र २३ को हुआ था। थोडा व्यावहारिक शिक्षण लेकर आप आपके दादा लाला हीरालालजीने प्ररम्भ की हुई जनरल मर्चन्ट की सीमला दूकान पर काम करने लगे।

आपकी प्रामाणिकता और कर्त्तव्यपरायणता से आपकी दूकान खूब प्रतिष्ठित हुई और फलने लगी। आपने सन् १६३५ में कॅनोट सर्कल, दिल्ली में भी जनरल मर्चन्ट का कारोबार शुरू कर दिया। आपके भाई की दूकानें 'गेंदामल हेमराज' के नाम से सन् १६४७ से नई दिल्ली, शिमला, कालका और चण्डीगढ में चल रही है—

आप बडे विनम्र और श्रद्धालु श्रावक है। सामयिक और व्याख्यान-श्रवण आप रोजाना करते है। तपस्याएँ भी करते रहते है। नई दिल्ली में साधु-साध्वियो को ठहराने का विश्वास स्थान आपका मकान ही है।

आप धर्मप्रेमी है। इतना ही नही दानी भी है। नालागढ में सघ के रु० १० हजार में अपनी तरफ से शेष २२ हजार रु० लगाकर धर्मस्थानक बनवा दिया। चिराग दिल्ली में धर्मस्थानक बनाने में २०००) देकर पूरा सहयोग दिया। कॉन्फरन्स की मैनेजिंग कमेटी के आप सदस्य है। भवन-निर्माण की योजना में आप ने रु० ५०००) दिये है। इस प्रकार प्रकट और अप्रकट दान करते ही रहते है।

श्री विलायतीरामजी जैन, नई दिल्ली B A

आप नई दिल्ली के उत्साही कार्यकर्ता है। गत पाँच साल से "कोपरेटिव स्टोर्स मिनस्ट्री ऑफ फायनेन्स, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया" के मैनेजर और कोषाध्यक्ष है। नई दिल्ली की जैन सभा और उसके नवयुवक सघ के, भारत सेवक समाज, श्री जैन सघ, पजाब और सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली आदि अनेक सस्थाओ के आप सदस्य है। जैनेन्द्रगुरुकुल, पंचकूला की कार्यकारिणी समिति के आप पाँच साल तक सदस्य रह चुके है।

काम करने में आपको आनन्द आता है और यही कारण है कि दिल्ली में होने वाले सभी सामाजिक कार्यो में आपकी उपस्थिति अनिवार्य-सी होती है। दिल्ली के जैन समाज को आपके होनहार जीवन से बडी-बडी आशाएँ है।

श्री उल्फतरायजी जैन, नई दिल्ली

आप जिन्द निवासी श्री अर्जुनलालजी के सुपुत्र है। आपकी नई दिल्ली में बेयर्ड रोड पर बाईस साल से कपडे की दुकान है। आपकी फर्म का नाम "अर्जुनलाल उल्फतराय जैन" है, जो दिल्ली की प्रसिद्ध फर्मो में से एक है।
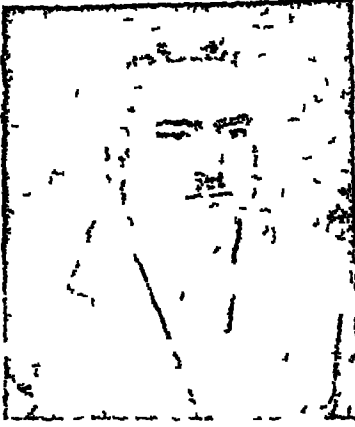
प्रारम्भ से ही आपका जीवन विभिन्न प्रवृत्तियो में लगा हुआ रहा है। सेवा करने में आपको आनन्द आता है। यही कारण है कि इस समय गोल मार्केट वेयर्ड रोड की पचायत के सरपच है। कई वर्ष तक नई दिल्ली की जैन सभा के आप कोषाध्यक्ष रहे हैं। पूज्य श्री काशीराम जी म० सा० की स्मृति-ग्रन्थ माला के आप उपाध्यक्ष रहे हैं। देहली क्लोथ रिटेलर एसोसिएशन के आप उपाध्यक्ष है।

आप सामाजिक कार्यकर्ता है। समाज सेवा का कुछ भी काम क्यो न हो—उसे अपने जिम्मे लेने और यथाशक्य पूरा करने में आप सदा तत्पर रहते हैं। मृदु-भाषण, मृदु-व्यवहार और सरलता आपके विशिष्ट गुण हैं। समाज-सेवा के क्षेत्र में हम आपको और अधिक आगे बढा हुआ देखना चाहते है।

लाला गुगनमलजी चौधरी, दिल्ली

आप लाला गगारामजी चौधरी के सुपुत्र हैं। आपका जन्म स० १९४५ भादवा वदी ५ को घसो (नरवाना-पेप्सु) में हुआ। आप अग्रवाल जैन है। स० १९५५ में १० वर्ष की अवस्था में आप दिल्ली पधारे और ननिहाल में रहे। सन् १९६२ में आपने कपडे का व्यवसाय प्रारम्भ किया जो आपके परिश्रम और प्रामाणिकता के कारण उत्तरोत्तर बढता गया। इस समय आप एसोसिएशन के मैनेजिंग सदस्य तथा प्रमुख व्यापारियो में से हैं।

आप विद्याप्रेमी और सामाजिक कार्यकर्ता है। महावीर जैन हायरकूल, स्थानीय श्रावक सघ और कॉन्फरन्स की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य है। आप बडे उदार दिल के है। धर्म कार्यों में तथा सामाजिक कार्यों में हजारो रुपये खर्चते रहे है। हरेक चन्दे में आप खुद देते है और साथ चलकर दूसरो से भी दिलाते है। धर्म क्रियाओ में अच्छी रुचि रखते है। आपने अपना जीवन श्रावक-मर्यादा के अनुसार बना रखा है। साधु-साध्वियो के प्रति आपकी श्रद्धा और भक्ति प्रशसनीय एव अनुकरणीय है।

डॉ० कैलाशचन्द्र जैन, M B B S दिल्ली

आपका जन्म नवम्बर १९२३ में हुआ था। सामाजिक, साहित्यिक और स्पोर्टस् का आपको प्रारम्भ से ही प्रेम है। आपका शिक्षण लाहौर में हुआ। १९४२ की मुवमेन्ट में आप प्रमुख विद्यार्थी थे। मेमो हॉस्पीटल और इर्वीन हॉस्पीटल में आपने विशिष्ट सेवाएँ दी है। श्री रामकृष्ण मिशन फ्री टी० बी० क्लीनीक के अफसर और भाकरा डेम डिरेक्टरोरेट (नई दिल्ली) आप रह चुके है।

डॉक्टर साहब अच्छे सोशियल वर्कर है और प्रसिद्ध डॉक्टर है। आप श्री सनातन धर्म युवक मण्डल, धर्म मन्दिर, कला मन्दिर आदि सस्थाओ के कार्यकर्ता है। दिल्ली मेडिकल असोसिएसन की मैनेजिंग कमेटी में आप दो बार चुने गए है। आप दिल्ली म्युनिसिपल कमिश्नर कांग्रेस टिकिट से चुने गए है और चाफ व्हीप है।

आप कभी-कभी आल इण्डिया रेडियो से स्वास्थ्य विषय में बोलते रहते है। कई सस्थाओ को आपकी सेवाएँ मिल रही है।
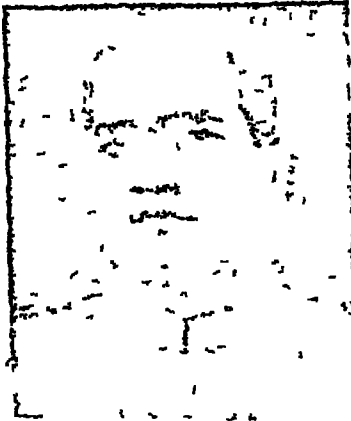
जम्मू, पंजाब तथा यू० पी० के प्रमुख कार्यकर्ता

मेजर जनरल रा० ब० दीवान विशनदास जी C S I C.I E जम्मू (काश्मीर)

लाला विशनदास जी का सन् १८६५ के जनवरी मास में स्यालकोट में जन्म हुआ था। आप जाति से ओसवाल दूगड थे। आप बचपन से ही बडी कुशाग्र बुद्धि वाले थे। प्रारम्भिक शिक्षा आपकी स्यालकोट के हाई स्कूल में ही हुई। आगे आपने लाहौर कालेज में प्रविष्ट हो शिक्षा प्राप्त की। पढने के साथ-साथ आपको घुडसवारी, और अन्य खेलो का भी बहुत शौक था।

सन् १८८६ में जब आपने कालेज की डिग्री प्राप्त कर ली तब आपको जम्मू काश्मीर नरेश सर राममिंह जी महाराज ने अपने यहाँ बुला लिया और राजकीय उच्च विभाग में स्थान दे दिया। आप वहाँ ६ वर्ष तक काम करते रहे। बाद में आपकी योग्यता से प्रसन्न हो महाराजा साहिब ने आपको 'चीफ एडवाइजर-मुख्य सलाहकार' के पद पर नियुक्त किया और दीवान का बहुमान सूचक पद प्रदान किया। तीन वर्ष बाद मेजर जनरल बना दिये गए और पैदल सेनापति की स्वर्ण-खचित तलवार आपको भेंट की गई।

सन् १८९९ ई० में महाराजा राममिंह जी के स्वर्गवास हो जाने पर अमरसिंह जी राजगद्दी पर बैठे। आपने गद्दी पर आते ही दीवान विशनदास जी को कमान्डर-इन-चीफ के नीचे सेक्रेटरी नियत कर दिए। बाद में आप इसी विभाग में लेफ्टिनेन्ट कर्नल बना दिए गये। सन् १९१४ में आप होम डिपार्टमेंट के प्रधानमन्त्री बनाए गये। १९१९ में आप रेवेन्यू विभाग के प्रधान मन्त्री बनाए गये। इसके दो वर्ष बाद आप जम्मू और काश्मीर स्टेट के प्रधानमन्त्री बना दिए गये जिस पर आपने बडी योग्यता से पेंशन मिलने तक काम किया।

भारत सरकार द्वारा भी आपको राय बहादुर C I E और C.S I की पदवियाँ प्रदान की गई थी।

स्थानकवासी जैन समाज में ही नहीं, किन्तु समस्त जैन समाज में आपने जो सन्मान प्राप्त किया, वैसा सन्मान और किसी को नहीं मिला।

इतने विद्वान्, श्रीमान् और राज्य प्रतिष्ठित होने पर भी आपकी समाज सेवा व सरलता उल्लेखनीय थी। आप में अहभाव तो था ही नहीं। अजमेर साधु सम्मेलन के समय आपने बडी लगन से वहाँ कार्य किया था। समय-समय पर आप कोन्फरन्स के अधिवेशनो में उपस्थित होते थे और सक्रिय भाग लेते थे।

लाला रत्नचन्द्रजी जैन, अमृतसर

लाला रत्नचन्द्र जी का जन्म स १९४५ में अमृतसर में हुआ था। आपके पिताजी का नाम जगन्नाथ जी और माता का नाम जीवन देवी था। आपकी शिक्षा साधारण ही हुई। आपके पिताजी असली मूँगे का व्यापार करते थे। आपका अनुभव विशाल था। सामाजिक सेवाओं का मौका अपने हाथ से जाने नही देते थे। रतलाम अधिवेशन के

बाद आप प्रत्येक अधिवेशन में भाग लेते रहे। साधु सम्मेलन की आयोजना के लिए जो डेपुटेशन सब स्थानो पर घूमा था, उसके आप भी एक सदस्य थे। श्वे० स्था० जैन सभा पजाब के आप अन्त तक प्रधान रहे। एकता और सगठन में आपका दृढ विश्वास था। स्व० आचार्य श्री सोहनलाल जी की आप पर पूर्ण कृपा थी। स० १९९५ में शतावधानी प० मुनि रत्नचन्द्र जी का अमृतसर में चातुर्मास हुआ था जिसका मुख्य श्रेय आपको ही था। उसी चातुर्मास में स्व० पूज्य श्री सोहनलाल जी के स्मारक रूप में श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति का जन्म हुआ जिसकी ओर से बनारस में श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम का प्रादुर्भाव हुआ, जहाँ जैन दर्शन, आगम और इतिहास का उच्चाध्ययन किया जाता है। पार्श्वनाथ विद्याश्रम के मकान के लिए आपने ६२०० रु० का दान दिया था। श्री शतावधानी रत्नचन्द्र पुस्तकालय के लिए आपने १५०० रु० प्रदान किए। समिति के आरम्भ में आपके परिवार ने ५४०० रु० का दान दिया था इससे पूर्व अनाथालय के लिए आपने २५०० रु० प्रदान किए थे। जैन गुरुकुल पचकूला आदि आपकी सहायता के पात्र रहे हैं।

जैन दर्शन के प्रसार की आपकी हार्दिक इच्छा थी। आप इसका फैलाव सारे विश्व में देखना चाहते थे। आपको हृदय रोग की बीमारी हो गई थी। अचानक आपको इस रोग का दौरा हुआ और १६ फरवरी १९४२ को प्रात आठ बजे आप इस असार ससार से विदा हो गए।

श्री हरजसराय जैन बी० ए० अमृतसर

आप अमृतसर निवासी श्री लाला जगन्नाथ जी के सुपुत्र हैं। आप पजाब जैन समाज की प्रवृत्तियो के केन्द्र और वहाँ के प्रमुखतम प्रतिष्ठित कार्यकर्ता हैं। अमृतसर की श्री रामाश्रम हाई स्कूल के आप सस्थापक और लगातार ३३ वर्ष से मन्त्री हैं। इस विद्यालय में सह-शिक्षा पद्धति से शिक्षा दी जाती है। इस महाविद्यालय का वार्षिक खर्च ६२,४००) का है। सन् १९३५ में सस्थापित "श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति" के आप प्रारम्भ से ही मन्त्री हैं। आप अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स की व्यवस्थापिका समिति के सदस्य और श्वे० स्था० जैन सभा पजाब के प्रधान हैं। आपकी फर्मों के नाम उत्तमचन्द जगन्नाथ लाला और रतनचन्द हरजसराय है। दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई आपके व्यवसाय के केन्द्र है।

श्री हरजसराय जी एस० एस० जैन सभा, पजाब के वर्षों से प्रमुख है। यही कॉन्फरन्स के दिल्ली ऑफिस के मानद मन्त्री रह चुके हैं। घाटकोपर अधिवेशन के समय जैन युवक परिषद् के मनोनीत सभापति थे। बडे सुधारक और आगामी विचारो के होने पर भी शिस्त पालन में चुस्त धर्म श्रद्धालु है। बडे उदारदिल के हैं। सक्षिप्तमें आप पजाब के गौरव हैं।

बाबू परमानन्दजी जैन, कसूर (पजाब)

आपका जन्म चैत सुदी १ स० १८३० को कसूर नगर में हुआ। कसूर एक ऐतिहासिक स्थान है। लोग कहते

है कि यह नगर रामचन्द्र जी के लघु पुत्र कुश द्वारा बसाया गया था। आप के दो भाई और थे। बड़े का नाम गौरी-शंकर जी और छोटे का नाम चुन्नीलाल जी था। दोनो ही आपस में चल बसे थे। आप बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि वाले थे। सन् १८९७ में आपने बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। सन् १९०२ में आपने वकालत की परीक्षा पास की और सन् १९०८ में आप लाहौर के चीफ कोर्ट के प्लीडर नियुक्त किये गए। लाहौर चीफ कोर्ट के सन् १९१९ में हाईकोर्ट बन जाने पर आप भी हाईकोर्ट के वकील बन गये।

आपकी धार्मिक और सामाजिक सेवा भी उल्लेखनीय है। लाहौर में आपने वेजीटेरियन सोसाइटी की स्थापना कराई थी। सन् १९०९ में पजाब प्रान्तीय स्था० जैन कोन्फरन्स की स्थापना हुई। सभा की स्थापना और प्रगति में आपका बहुत बड़ा हाथ रहा था।

सन् १९१४ में जब जर्मन प्रोफेसर हर्मन जैकोबी बम्बई आये थे, तब आचारांग सूत्र के अनुवाद में उन्होने जो भूलें की थी उन पर विचार करने के लिए पजाब प्रान्तीय सभा की तरफ से ७ विद्वानो का एक डेपुटेशन भेजा गया था। उस डेपुटेशन के सभापति श्री परमानन्द जी ही थे। आपने अपनी विद्वतापूर्ण दलीलो से प्रो० हर्मन जैकोबी को सन्तुष्ट कर उन्हें अपनी भूल सुधारने के लिए बाध्य किया था।

पजाब प्रान्तीय सभा ने लाहौर में 'अमर जैन होस्टल' की स्थापना की थी। आपने इस छात्रालय को हजारो रुपयो की सहायता दी और अच्छा-सा फण्ड भी एकत्रित कराया। लाहौर में इस छात्रालय की अपनी भव्य इमारत भी थी।

आप विद्यार्थियो को जैन साहित्य के अध्ययनार्थ छात्रवृत्तियाँ भी दिया करते थे। आप स्था० जैन समाज की तरफ से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के फैलो भी (Fellow) रहे हैं।

आप बिलकुल सरल स्वभाव के सादा जीवन व्यतीत करने वालो में से थे। बनावटी दिखावे से आपको घृणा भी थी। जातीय भेदभावो को भी आप मानने वाले नही थे।

श्रीमान् लाला गूजरमलजी का सक्षिप्त परिचय

स्वर्गीय ला० गूजरमल जी, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ लुधियाना के एक प्रतिष्ठित एव सम्माननीय श्रावक थे। आप स्वभाव से मृदु, शान्त और गम्भीर थे। आपमें स्पष्टवादिता का विशेष गुण था। सघ-सेवा के कार्यों में आप असाधारण अभिरुचि रखते थे। आजीवन आप समाज-सेवा के कामो में सलग्न रहे। कई बार आप स्थानीय श्रावक-सघ के प्रधान भी बने, परन्तु अधिकतर और अधिक समय तक आप मन्त्री-पद पर ही नियुक्त रहे, इसीलिये यहाँ और बाहिर के दूर-दूर के नगरो में मन्त्री गूजरमल के नाम से आप विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। दूर-दूर तक आपकी प्रख्याति का एक कारण यह भी है कि स्थानीय श्रावक-सघ की ओर से डाक सम्बन्धी पत्र-व्यवहारादि सभी कार्य प्राय आपके द्वारा ही होते रहे हैं, और आजकल भी गूजरमल प्यारेलाल अथवा गूजरमल बलवन्तराय के नाम से ही हो रहे हैं। लाला प्यारेलाल जी ला० बलवन्तराय जी, ला० पन्नालाल जी और ला० भिक्काराम जी ये चारो आपके सुयोग्य पुत्र हैं, जो यथाशक्ति आपके ही पदचिह्नो पर चल रहे हैं।

अब आगे कुछ अन्य स्थानीय कार्यकर्ताओ और पदाधिकारियो का सक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है—

श्री पन्नालाल जी मालिक फर्म (जिनेन्द्रा होजयरी मिल्स)

आप एस० एस० जैन बिरादरी (रजिस्टर्ड) लुधियाना के प्रधान हैं। आप जैन समाज के सब कार्यों में बड़े प्रेम और उत्साह से भाग लेते हैं। जैन समाज की उन्नति के लिये आपके हृदय में सच्ची तड़प है।

श्री प्यारेलाल जी जैन (मन्त्री) मालिक फर्म (श्री गूजरमल प्यारेलाल जैन लुधियाना)

आप एस० एस० जैन विरादरी के मन्त्री हैं। अपने पूज्य पिता ला० गूजरमल जी की तरह समाज-सेवा के कामो में खास दिलचस्पी रखते है। स्थानीय ऐस० ऐस० जैन विरादरी (श्री वर्धमान स्थानक-वासी जैन श्रावक सघ) के डाक सम्बन्धी पत्र-व्यवहारादि कार्य प्राय आपके द्वारा ही सम्पन्न होते हैं।

श्री सोहनलाल जी जैन मालिक फर्म (श्री सिद्धीमल वावूलाल जैन रईस लुधियाना)

आप विरादरी में प्रतिष्ठित-सम्मानित श्रावक हैं। समाज-सेवा के सब कार्यों में आप पूर्ण सहयोग देते हैं। आपका स्वभाव बहुत शान्त है। सहनशीलता, गम्भीरता और शिष्टता आपके विशेष गुण हैं। उलझी हुई समस्याओं को सुलझाने में आपका विशेष रूप से परामर्श लिया जाता है।

श्री पन्नालाल जैन मालिक फर्म (जैन निटिंग वर्क्स)

आप जैन गर्ल्स हाई स्कूल लुधियाना के प्रधान हैं। स्कूल के सब प्रकार के कार्य आप बड़े प्रेम और उत्साह से करते हैं तथा श्रावक-सघ के अन्य कार्यों में भी आप यथाशक्ति सहयोग देते रहते हैं।

लाला प्यारेलाल जी सराफ

आप स्थानीय श्रावक-सघ के उप-प्रधान हैं। प्रत्येक धार्मिक कार्य में आप हर्ष और उत्साह से भाग लेते हैं। आप में पैतृक धर्म सस्कार हैं। जैन धर्म के आप महान् अनुरागी हैं।

लाला कस्तूरीलाल जी जैन

आप स्थानीय श्रावक-सघ के कोषाध्यक्ष हैं। धर्म में दृढ आस्था रखने वाले हैं और उदार-चेता भी हैं।

लाला रतनचन्द्र जी जैन जोडयाँ वाले

स्थानीय श्रावक-सघ के आप उपमन्त्री हैं। उत्साही नवयुवक हैं। इनमें समाज-सेवा की बहुत लग्न है।

लाला शम्भुनाथ जी जैन जोडयाँ वाले

आपकी प्रतिभा बहुत विलक्षण है। सघ के प्रत्येक कार्य में आपका परामर्श लिया जाता है।

श्री रामलालजी जैन

आप स्थानीय नगरपालिका (म्यूनिसिपैलिटी) के सदस्य हैं। उत्साही नवयुवक है। अपने कर्तव्य का सुचारु रूप से पालन करते हैं। इनका स्थानीय जैन धर्मशाला के प्रवन्ध में विशेष रूप से भाग है।

श्री कृष्णकान्त जी जैन वकील

बहुत वर्षों तक आप ऐस० ऐस० जैन सभा पजाव के मन्त्री-पद पर नियुक्त रहे। आजकल आप जैन गर्ल्स हाई स्कूल लुधियाना के मैनेजर हैं। आप प्रतिभा-सम्पन्न और स्वतन्त्र विचार रखने वाले हे। अपने कर्तव्य-पालन का आप खूब ध्यान रखते हैं।

श्री मीठूमल जी जैन

आप नगर के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, दानवीर है। धार्मिक कार्यों के लिये यथासमय दान देते रहते हैं।

श्री चमनलाल जी जैन

धार्मिक कार्यों में उत्साह रखने वाले युवक हैं। आजकल आप जैन गर्ल्स हाई स्कूल कमेटी के कोषाध्यक्ष हे।

श्री प्रेमचन्द जी जैन

आप लाला सलेखचन्द जी के सुपुत्र हैं। अपने पूज्य-पिता के समान ही धार्मिक कार्यों में यथाशक्ति भाग लेते रहते हैं।

श्री तेलूराम जी (टी० आर० जी) जैन

आप स्थानीय श्रावक-संघ के अत्यधिक उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता हैं। समय-समय पर उदारता से दान भी करते रहते हैं। सगीत कला में भी आप अच्छी कुशलता रखते हैं।

लाला हसराजजी और लाला सोहनलालजी तथा ला० मुनिलालजी लोहिया

आप दोनो सगे भाई हैं। स्वर्गीय ला० नगीनचन्द जी के आप सुपुत्र हैं। ला० नगीनचन्द जी और आपके लघुभ्राता स्वर्गीय ला० कुन्दनलाल जी यहाँ के प्रसिद्ध दानवीर श्रावक थे। ला० मुनिलाल जी ला० कुन्दनलाल जी के सुपुत्र है। श्री हसराजजी, श्री सोहनलालजी और श्री मुनीलालजी भी अपने पूज्य पिताओ के पदचिन्हो पर चलते हुए दानादि धर्म-कार्यो में महत्त्वपूर्ण भाग लेते रहते हैं।

ला० अमरजीत जी जैन वकील

आप ला० हुकमचन्द जी के सुपुत्र हैं, और स्थानीय श्रावक सघ की कार्यकारिणी-कमेटी के सम्मानित सदस्य हैं। सघीय कार्यो में आप उत्साहपूर्वक भाग लेते रहते हैं।

ला० किशोरीलालजी जैन

आप अत्यधिक दृढधर्मी श्रावक हैं धार्मिक भवनो के निर्माण में विशेप रुचि रखते हैं। जैन धमशाला लुधियाना के निर्माण में आपने विशेप रूप से भाग लिया था।

लाला नौहरियामलजी जैन

ला० जी उदारमना दानवीर हैं। अभी-अभी आप ने जैन मॉडल हाईस्कूल की भावी बिल्डिंग के लिए २७०० वर्ग गज भूमि का उल्लेखनीय दान दिया हैं। इस भूमि का वर्तमान मूल्य चालीस हजार रुपये के लगभग है। बहुत वर्ष पहले आपने एक विशाल बिल्डिंग बनाई थी, जिस पर आपके लगभग पन्द्रह बीस हजार रुपये खर्च आए थे। इस का धार्मिक कार्यों में ही सदुपयोग हो एतदर्थ आपने एक ट्रस्ट बनाया हुआ है। इस बिल्डिंग का नाम जैनशाला है। प्राय महासतियों—आर्यिकाओ के चातुर्मास इसी बिल्डिंग में होते हैं।

बाबू रामस्वरूपजी जैन

स्वर्गीय बाबू रामस्वरूप जी जैन यहाँ के प्रसिद्ध श्रावक थे। पुरानी कोतवाली नामक बहुत प्रसिद्ध और बहुत विशाल बिल्डिंग के मालिक आप ही थे। पुरानी कोतवालीमें साठ सत्तर साल तक मुनि महाराजो और महासतियो के प्राय निरन्तर चातुर्मास होते रहे है। इस प्रकार आपके पूर्वजो और आपने अति दीर्घ-काल तक शय्या (वसति-मकान) का दान दिया था।

प्रोफेसर रत्नचन्द्रजी जैन

आप स्थानीय गवर्नमेंट कालेज में इक्नामिक्स के बहुत प्रसिद्ध प्रोफेसर हैं। जैन मॉडल हाई स्कूल के निर्माण में आप का बहुत बडा हाथ है। आप इसे समुन्नत बनाने के लिये भरसक प्रयत्न करते रहते हैं।

श्री रत्नचन्द्रजी जैन एम० ए०

आप शिक्षण-संस्थाओं के कार्यों में विशेष अभिरुचि रखते हैं, और यथा-शक्ति समाज सेवा के कामों में भाग लेते रहते हैं।

ला० हरबसलालजी सूतवाले

आप बहुत वर्षों तक स्थानीय श्रावक संघ के प्रधान पद पर नियुक्त रह चुके हैं। समाज-सेवा के कार्यों को पूरी दिलचस्पी से करने वाले प्रसिद्ध श्रावक हैं।

श्री वेदप्रकाशजी जैन

आप भूतपूर्व प्रधान ला० हरबसलालजी के लघुभ्राता हैं। आजकल आप जैन मॉडल हाई स्कूल के मैनेजर हैं। अपने कर्तव्य का अच्छी तरह से पालन कर रहे हैं। उत्साही नवयुवक हैं।

ला० मेलारामजी सूत वाले

आप बहुत वर्षों तक जैन गर्ल्स हाई स्कूल के मैनेजर रह चुके हैं। अपने कर्तव्य को बहुत अच्छी तरह से निभाते रहे हैं।

ला० बनारसीदासजी और ला० मेलारामजी

आप दोनों सगे भाई हैं। समाज-सेवा के प्राय सभी कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते रहते हैं।

ला० सीतारामजी और ला० ओमप्रकाशजी

आप दोनों सगे भाई हैं। आपके पूज्य पिता स्वर्गीय ला० सन्तलाल जी और पितामह ला० मक्खीमल जी यहाँ के प्रमुख श्रावक थे। ला० सीताराम जी और ला० ओम्प्रकाश जी संघ के मुख्य कार्यों में यथाशक्य भाग लेते रहते हैं।

ला० ईश्वरदासजी

यहाँ के प्रसिद्ध स्वर्गीय श्रावक ला० फूलामल जी के आप सुपुत्र हैं। संघ-सेवा के कार्यों में आप उत्साह के साथ भाग लेते रहते हैं।

बहिन देवकी देवी जी जैन (प्रिंसिपल जैन गर्ल्स हाई स्कूल, लुधियाना) का संक्षिप्त परिचय

बहिन देवकी देवी जी लुधियाना के सुप्रसिद्ध भक्त प्रेमचन्द जी की सुपुत्री हैं। आप में भक्ति और सेवा के अद्भुत संस्कार हैं जोकि आपको अपने पूज्य पिता से प्राप्त हुए हैं। आपका चरित्र उच्च-कोटि का है। आपने लगभग अठारह वर्ष की आयु में स्वेच्छा से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अङ्गीकार किया था। आप बाल-ब्रह्मचारिणी हैं। आपके मुखमण्डल पर ब्रह्मचर्य का महान् तेज है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। आप केवल खादी के वस्त्र पहनती हैं। आप किसी प्रकार का कोई भी आभूषण नहीं पहनती। विद्या, नम्रता, शिष्टता' पवित्रता और सेवा आदि सद्गुण ही आप के आभूषण हैं।

सन् १९२३ में जैन गर्ल्स स्कूल के साथ एक अध्यापिका के रूप में आपका सम्पर्क स्थापित हुआ था। सन् १९२९ में आप स्कूल की मुख्याध्यापिका बनाई गई। सन् १९४६ तक आप बहुत ही अच्छे ढंग से अध्यापन कार्य करती रहीं। सन् १९४७ में आपकी जैन गर्ल्स हाईस्कूल लुधियाना की प्रिंसिपल के पद पर नियुक्ति हुई। तब से आज तक आप इस पद को बड़ी ही योग्यता और उत्तमता से निभा रही हैं। आप यथावकाश पौषध, व्रत, बेला, तेला आदि रूप तपस्या भी करती रहती हैं, और प्रतिदिन सामायिकादि का अनुष्ठान भी किया करती हैं। आपने आज, तक विद्या-

क्षेत्र तथा अन्य धार्मिक क्षेत्रो में हजारो रुपयो का दान दिया है और अपनी सारी अचल सम्पत्ति स्थानीय-स्थानकवासी जैन श्रावक-सघ को शिक्षार्थ दान कर दी है। सम्माननीय बहिनजी चिरजीवी हो यही हमारी हार्दिक कामना है।

निवेदक—मन्त्री जैन गर्ल्स हाई स्कूल कमेटी, लुधियाना।

जैन माडल (Model) हाई स्कूल लुधियाना का सक्षिप्त परिचय

इस स्कूल का प्राइमरी विभाग १५ वर्षों से चल रहा है, परन्तु हाई-विभाग इसी वर्ष चालू हुआ है। इस समय दोनो विभागो में १५ अध्यापक और लगभग ५०० विद्यार्थी हैं। ला० नोहरियामल जी जैन ने अपने बाग में २७०० गज भूमि इस स्कूल की बिल्डिंग के लिये दान दी है। वहाँ बिल्डिंग बनाने की योजना विचाराधीन है। आशा है कि जैन गर्ल्स हाई स्कूल की तरह जैन माडल हाई स्कूल (Jain Model High School) भी दिन-दिन उन्नति के पथ पर आगे ही आगे बढता रहेगा।

जैन गर्ल्स हाई स्कूल और जैन माडल हाई स्कूल ये दोनो शिक्षण-सस्थाएँ ऐस० ऐस० जैन बिरादरी रजिस्टर्ड (श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक-सघ) की ओर से सुचारु रूप से चलाई जा रही हैं। इन दोनो शिक्षण सस्थाओ की बिल्डिंगें, जैन-धर्मशाला और जैन स्थानक की बिल्डिंगें तथा अन्य कई बिल्डिंगें स्थानीय श्रावक-सघ के अधिकार में हैं, और इन सबका यथायोग्य प्रबन्ध भी स्थानीय श्रावक-सघ की ओर से ही किया जाता है।

श्री किशोरीलालजी जैन B. A. (Hon) LL. B एडवोकेट, फरीदकोट

आपका जन्म सन् १९०३ में हुआ। बचपन में ही विद्योपार्जन के प्रति आपकी तीव्र रुचि थी। सन् १९२५ में अपने B A (Hons) और १९२७ में LL B. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपका विद्याध्ययनकाल बडा ही शानदार रहा। कक्षा के सुयोग्य एव होनहार छात्रो में आप सर्वप्रथम थे। धार्मिक तथा सामाजिक प्रेम बचपन से ही आपमें प्रतीत होने लगता था। तत्कालीन 'आफताब जैन" पत्र के आप वर्षों तक यशस्वी सम्पादक रह चुके हैं। सन् १९२९ से ३० तक रिसाला "जितेन्द्र" का प्रबन्ध करते रहे। जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला के प्रिंसीपल तथा अधिष्ठाता पद पर आप वर्षों तक काम कर चुके हैं। साइमन कमीशन से मिलने वाले 'जैन डेप्युटेशन' के आप भी सदस्य थे। इस समय आप भटींडा जिले के सुयोग्य वकीलो में से हैं। स्थानीय बार एसोसिएशन के आप सभापति भी रह चुके हैं। स्थानीय नगरपालिका के सन् ४८ से सन् ५२ तक अध्यक्ष रह चुके है। आप उर्दू के सुयोग्य कवि और लेखक हैं। आपके विचार धार्मिक किन्तु प्रगतिशील है। आप स्थानीय जैन सभा के प्रधान है। आपके ही भगीरथ प्रयासो से 'जैन कन्या' पाठशाला हाईस्कूल के रूप में परिणित हुई। आपके ही मार्गदर्शन एव नेतृत्व से जैन सभा हर प्रकार से प्रगति कर रही है।
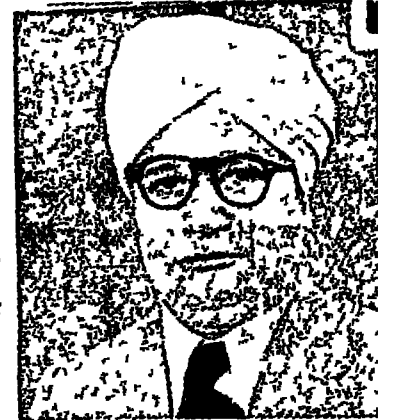
स्व० बाबू जयचन्द्रजी जैन, जालंधर (पंजाब)

आपका नाम पजाब जैन समाज के बच्चे-बच्चे की जबान पर है। आप जैन समाज के प्रमुख एव प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपकी इंग्लिश बहुत ही ऊँची थी। आप दानवीर स्व० श्री कृपारामजी के सुपुत्र थे। आप जैन बिरादरी

गुजरावाला (पाकिस्तान) के गण्यमान व्यक्ति थे। आपकी स्वाभाविक सरलता तथा दयाशीलता उल्लेखनीय है। प्रत्येक समाज सेवा के कार्य में आप सहयोग देते रहते थे। आपकी उदारता आपके उच्च गौरव का प्रथम स्तम्भ है। समाज की एकता और शान्ति का आपको हर समय ध्यान रहता था। आपकी उच्च कोटि की शिक्षा के कारण समाज को बड़ा लाभ हुआ। आप मत-मतान्तर के झगड़ो से सदैव दूर रहते थे। आप एक महान् व्यापारी भी थे। अमन पसन्द से आपका नाम पंजाब की हरएक बिरादरी में अमर हो गया है।

इसके अतिरिक्त आपकी अनन्य गुरुभक्ति भी अनन्य थी। इसीलिए प्रत्येक स्था० जैन साधु आपके नाम से भली भाँति परिचित है। वर्तमान आचार्य श्री आत्मारामजी म० के आप परम श्रद्धालुओ में से थे। प्रतिदिन सामायिक संवर स्वाध्याय एवं धर्मध्यान आदि करना आपका नित्य कर्म था। सैद्धान्तिक बोलचाल तथा उत्तराध्ययन एवं कल्प-सूत्र आदि के भी आप भलीभाँति जानकार थे। इस प्रकार से आप एक कट्टर जैन संस्कारो वाले श्रावक थे। आज भी आपकी उच्चशिक्षा का प्रभाव आपके परिवार में पाया जाता है। आप एक उच्च कोटि के हुस्नलेखक भी थे। हस्तलिखित कुछ रचनाएँ आज भी प्राप्य है। आपने अपनी आयु के करीब २० वर्ष रावलपिण्डी में बिताये थे। वहाँ भी समाज की काफी सेवा की। धर्म एवं समाज सेवा करते हुए आपका ता० २२-११-१९४९ को ७४ वर्ष की उम्र में पंडित मरण हुआ। मृत्यु के अन्तिम समय तक आपके मुँह पर नमस्कार मन्त्र का उच्चारण था। ऐसे महान् समाज सेवी की देवलोकयात्रा से समाज को भारी क्षति पहुँची है

लेफ्टिनेण्ट श्री अभयकुमारजी जैन, सिरसा

श्रीमान् अभयकुमार जी जैन का जन्म ३१ मई सन् १९३४ को आपका जन्म स्थान सिरसा (पंजाब) है। आप के पूज्य पिताश्री का नाम श्री देशराम जी जैन है।

आपने नेशनल डिफेन्स एकाडमी में ट्रेनिंग पाकर दिसम्बर सन् १९५४ में भारतीय सेना में परमानेण्ट रेग्यूलर कमीशन प्राप्त किया है। आप सुयोग्य एवं उत्साही कार्यकर्ता है। आपका पूरा पता है—मारफत लाला गंगाराम जी प्रभुदयाल जी, रोड़ी बाजार, सिरसा (पंजाब)।

स्व० प्रोफेसर के० एम० खिन्ना बी० ए० एल-एल० बी० स्यालकोट

आप अत्यन्त उत्साही धर्मप्रिय सज्जन थे। उज्जैन में आने के पश्चात् यहाँ के धार्मिक क्षेत्र में काफी लगन के साथ कार्य किया। आपने जैन शान्ति संघ छात्रालय को अपनी अवैतनिक सेवाएँ प्रदान कर सुचारु रूप से चलाया तथा इस प्रकार अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी आपने धर्म के प्रति अपने प्रेम का पूर्ण परिचय दिया। कुछ समय के लिए इन्दौर चले जाने के कारण आपके समान सुयोग्य प्रधान कार्यकर्ता सुपरिन्टेन्डेन्ट संस्था को प्राप्त नही हो सका, अत तभी से छात्रालय बन्द रहा। आपका स्वर्गवास २० जून १९५३ में हुआ। आपके निधन से समाज ने अपना सेवाभावी कार्यकर्ता खो देने की क्षति उठाई है।

हकीम वैनोप्रसादजी जैन, रामामण्डो (पजाब)
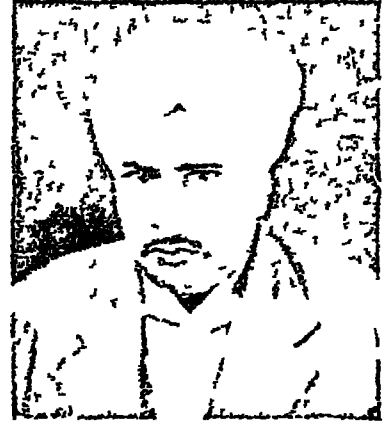
आप मुंशीराम कौक के पुत्र हैं। आपकी उम्र ५० वर्ष की है। पिछले ३० वर्षों से वैद्यक का काम कर रहे हैं। साधु-मुनिराज एव स्वधर्मी भाइयों का उपचार बडे तन-मन से करते हैं। आप बडे दानी सज्जन हैं। जो भी रोगी आप से औषधि लेने आता है उससे शराब मास का त्याग कराते हैं।

स्व० मुनि श्री खजानचन्द्र जी महाराज के पाँव की पीडा की शल्य-चिकित्सा बडी भावभक्ति से की थी।

श्री नत्थूराम जी जैन कोचर, रामामंडी

आपका जन्म भाद्रव वदी अमावस सवत् १९८१ में रामामण्डी में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री दौलतराम जी है। आपका व्यवसाय दलाली है। श्री नत्थूराम जी बडे ही समाजप्रेमी व्यक्ति है, धार्मिक कार्यों में आप सदा अग्रसर रहते हैं। व्रत प्रत्याख्यान, सामायिक प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रिया-कलाप में आप बडे ही आस्थावान सुश्रावक है। भविष्य में आपके द्वारा समाज तथा धर्म की ओर भी अधिक सेवा होगी ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

श्री बनारसदासजी बाठेड, पक्काकला

आपका पेप्सु राज्य के पक्काकला ग्राम में जन्म हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री खजानचन्द जी है, जो अपने समय के एक कुशल व्यापारी थे। श्री बनारसीदासजी ने अपने माध्यमिक शिक्षा के पश्चात् व्यावसायिक कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि आपका शिक्षा अधिक नहीं हुई, किन्तु फिर भी आप सुलझे हुए विचारो के धर्मप्रेमी नवयुवक सज्जन हैं। सन्त-मुनिराजो के सान्निध्य में धर्मकार्यों एव सामाजिक गतिविधियो में आपकी बडी दिलचस्पी रहती है। इस समय रामामडी में बडी दक्षता के साथ अपनी फर्म का सचालन कर रहे हैं। समाज को आपसे बडी-बडी आशाएँ है।

श्री श्वे० स्थानकवासी जैन सभा, कलकत्ता

आज से लगभग २८ वर्ष पहले सन् १९२७ ई० में स्व० श्रीमान् मगनलाल जी कोठारी के सभापतित्व में श्री फूसराज जी बच्छावत, स्व० श्री नथमल जी दस्साणी, स्व० श्री नेमीचन्द जी सा० बच्छावत आदि प्रमुख सज्जनो के सामूहिक प्रयास से पाचागली में स्थित मकान में इस सस्था की स्थापना हुई। तब से लेकर अब तक इस सस्था ने विभिन्न प्रकार की प्रवृतियो में भाग लिया और अच्छी उन्नति की।

इस सभा के सरक्षण में एक विद्यालय भी खोला गया। स्वर्गीय श्रीमान् किशनलाल जी काकरिया के सभापतित्व में इस सस्था को नवीन रूप दिया गया और सभा का वर्तमान भवन १८६, क्रास स्ट्रीट में ८५०००) रु० में खरीदा गया और इसी में उक्त विद्यालय चलाया गया। वर्तमान में श्री सोहनलाल जी सा० बाठिया इस सभा के सभापति हैं। आप ही की प्रेरणा से सभा-भवन के लिए नई जमीन लगभग १,५०,०००) रु० में खरीदने का निश्चय कर लिया है।

इस सस्था के भूतपूर्व मन्त्री श्री फूसराज जी बच्छावत लगभग २८ वर्ष से इस सस्था की सेवा कर रहे हैं। इस समय आपके सुपुत्र श्री सूरजमल जी बच्छावत सभा के मन्त्री है। आप भी अपने पिताश्री के समान सभा की

श्री सेठ फूलराजजी बच्छावत, कलकत्ता

सेवा में पूर्ण प्रयत्नशील हैं।

सभा द्वारा जो विद्यालय सचालित है उसमें विभिन्न प्रान्तो के १७५ छात्र विद्याभ्यास करते हैं। विद्यालय में आठ अध्यापक हैं। जैन धर्म की पढाई के लिए भी विशेष व्यवस्था है। शीघ्र ही विद्यालय हाइस्कूल बना दिया जायगा।

स्थानक-भवन

यहाँ के गुजराती स्थानकवासी बन्धुओ के विशेष प्रयास से स्थानक का भव्य भवन बनाया गया है। इसके निर्माण में लगभग ४,००,०००) रु० खर्च हुए हैं। इस स्थानक के बन जाने मे कलकत्ता में पधारने वाले मुनिवरो के लिए विशेष सुविधा हो गई है। सवत् २००९ में श्री जगजीवन जी महाराज व जयन्तिलाल जी महाराज का चातुर्मास हुआ। इस चातुर्मास में गुजराती, मारवाडी और पजाबी बन्धु आपस में एक-दूसरे से परिचित हुए। सवत् २००२ और २०१२ में प० मुनि श्री प्रतापमल जी महाराज आदि सात सन्तो का चातुर्मास हुआ। इन महात्माओ के चातुर्मास में कलकत्ता-स्थित स्थानकवासी समाज में बहुत उन्नति हुई। मारवाडी, गुजराती व खासकर पजाबी भाइयो को संगठित करने का श्रेय इन्ही मुनिवरो को है। अब इस समय इन तीनो समाजो में पारस्परिक प्रेम-सम्पर्क स्थापित हो गया है। इन तीनों मे सम्मिलित रूप से प्रीति भोज भी हुआ, जिसका बहुत ही सुन्दर प्रबन्ध किया गया था। इस प्रकार कलकत्ता धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत बढा-चढा है। गुजराती बन्धुओ का एक भोजनालय है जिसमें केवल १८) रु० मासिक में २०० व्यक्ति भोजन करते हैं।
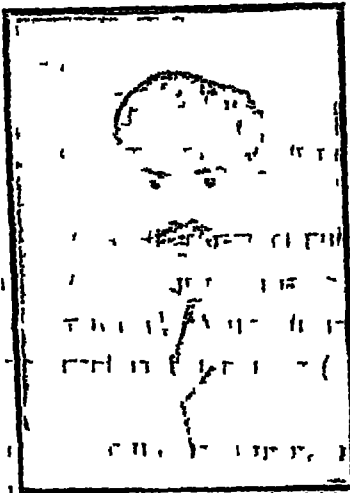
इसके अतिरिक्त पजाबी बन्धुओं की भी एक सभा है जिसका नाम श्री महावीर जैन सभा है।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, मद्रास

यहाँ का सघ बडा ही समृद्धशाली, व्यवस्थित और प्रत्येक दिशा में प्रगतिशील है। श्री मोहनमल जी चौरडिया और श्री ताराचन्द जी सा० गैलडा के द्वारा दिये गये दानो से मद्रास का श्री सघ प्रगतिगामी बन गया है। मद्रास सघ द्वारा स्थापित 'जैन एज्युकेशन सोसायटी' के तत्त्वावधान में निम्नलिखित विशाल पैमाने पर कार्य हो रहे हैं—

(१) स्थानकवासी जैन बोर्डिग।
(२) जैन हाईस्कूल।
(३) जैन कॉलेज।
(४) जैन मीडिल स्कूल।
(५) श्री ताराचन्द जैन विद्यालय।
(६) श्री जैन कन्या विद्यालय।

इनके अलावा धार्मिक क्रियाओ के लिये विशाल और सुविधाप्रद स्थानक है। साधु-साध्वियो का यहाँ तक पहुँचना कठिन होता है। महासतिजी श्री सायरकु वरजी द्वारा इस तरफ क्षेत्र में धर्मप्रचार तथा शिक्षा-प्रचार अच्छा हुआ और अभी भी हो रहा है।

यहाँ मारवाडी समाज की सख्या अधिक है। जो इस प्रान्त तथा नगर के प्रमुख व्यापारी है। गुजराती समाज कम होते हुए भी दोनो मे घनिष्ट प्रेम है। सभी सामाजिक और धार्मिक कार्य दोनो के सहयोग से होता है।

अपने व्यवसाय में लगी रहने पर भी अपनी जाग्रत तथा समयानुकूल प्रवृत्तियो के कारण यहाँ का स्थानवासी जैन समाज वैभवसम्पन्न होने के साथ प्रतिष्ठा-सम्पन्न भी है।

श्री एस० एस० जैन सोसायटी कुनूर (मद्रास) का सक्षिप्त परिचय

कुनूर का स्थानीय स्था० समाज धर्मकार्य में बहुत पीछे रहा है क्योकि यहाँ पर साधु-साध्वियो का आगमन नही हो सकता है। अत नवयुवको में धर्म के प्रति अरुचि के भाव दिन प्रतिदिन बढते जा रहे थे। किन्तु सन् १९५४ ई० से यहाँ एस० एस० जैन सोसायटी की स्थापना हो गई इससे प्रात काल स्थानक में प्रार्थना और सामयिक होने लगी। इसी सोसायटी की सहायता से यहाँ एस० एस० जैन स्कूल और पुस्तकालय भी चलाता है। स्थानकवासियों के यहाँ केवल १५ घर है। अब समाज में जागृति अच्छी है।

श्री स्थानकवासी जैन श्री सघ, अहमदनगर जिले का सक्षिप्त वर्णन

बम्बई राज्य के महाराष्ट्र विभाग का अहमदनगर एक जिला है। रेल के धौंड मनमाड लाइन पर अहमदनगर स्टेशन है। आबहवा की दृष्टि से यह स्थान अनुकूल और प्रशस्त है।

मुनिराजो द्वारा पावन की हुई भूमि

स्थानकवासी साधु-साध्वियो का आवागमन इस तरफ ८० वर्ष पूर्व हुआ। अहमदनगर में प्रथम चातुर्मास पू० पू० कोटा सम्प्रदाय के श्री छगनमल जी म० सा० का हुआ। उसी समय ही ऋषि-सम्प्रदाय के पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० इधर पधारे थे और उनका प्रथम चातुर्मास अहमदनगर के समीप घोडनदी में हुआ था। वहाँ का चातुर्मास पूर्ण कर श्री तिलोक ऋषिजी महाराज सा० ने दूसरा चातुर्मास अहमदनगर में किया और बहुत समय तक जिले के अलग-अलग भाग में घूमकर स्थानकवासी लोगो की श्रद्धा दृढ बनाने का बडा श्रेय प्राप्त किया। इसका परिणाम यह हुआ कि जिले भर में अनेक अनुकूल क्षेत्र निर्माण हो गये। इस समय तो अहमदनगर दक्षिण का बडा क्षेत्र माना

जाता है। बडे बडे मुनिराज जो भी दक्षिण में पधारे उनके द्वारा अहमदनगर पावन हुआ है। स्व० पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० सा० जैन दिवाकर चौथमल जी म० सा०, पूज्य श्री काशीराम जी म० सा०, पूज्य श्री अमोलख ऋपिजी म० सा०, पूज्य श्री प्रसन्नचन्द जी म० सा० तथा वर्तमान में सहमन्त्री प० मुनि श्री हस्तीमल जी म० सा० और श्री परपोत्तम जी म० सा० आदि सन्तो ने यह भूमि पावन की है। प्रधान मन्त्री प० रत्न श्री आनन्द ऋपिजी म० सा०, प० मुनि श्री सिरेमल जी म० सा० इनका तो जन्म ही इस जिले का है। उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म० सा० और प० मुनि श्री घासीलाल जी म० सा० का शिक्षा प्रबन्ध भी अहमदनगर में हुआ था। महासतियो में श्री हीराजी, भूराजी, रामकुंवर जी, रभा कुंवर जी, नन्दकुंवर जी आदि अनेक महासतियो ने यहाँ चातुर्मास किये हैं। वर्तमान में अस्वस्थता के कारण आत्मार्थी श्री मोहन ऋपिजी महाराज तथा विनयऋपि जी म० सा० यहाँ विराजमान हैं। विदुपी महासति जी श्री उज्ज्वलकुमारी जी म० सा० के भी यहाँ पर अनेक चातुर्मास हुए हैं और अभी आँखो की बीमारी के कारण यहाँ पर विराजमान हैं। जिले भर में अनेक क्षेत्र साधु-साध्वियो के लिए अनुकूल हैं।

शास्त्रवेत्ता और कार्यकर्ता

अहमदनगर के श्रावकगण भी धर्मप्रेमी हैं। श्री किसनदास जी सा० मुथा तथा श्री हणूमल जी सा० कोठारी बडे ही शास्त्रज्ञ श्रावक थे। अभी श्री घोडीराम जी मुथा शास्त्रवेत्ता हैं। श्री चन्दनमल जी पितलिया यहाँ के बडे सेवाभावी श्रावक थे। इनके अलावा श्री मगनमल जी गाधी, श्री पृथ्वीराज जी चौरडिया, श्री मन्नालाल जी डोमी, माणकचन्द जी मुथा वकील आदि अनेक श्रावक हो गये है जो धर्मप्रेमी और धर्मचुस्त थे।

वर्तमान में श्री कुन्दनमल जी फिरोदिया वकील, श्री माणकचन्द जी मुथा, श्री किसनदास जी मुथा, श्री पूनमचन्द जी भण्डारी, सुखलाल जी लाढा, डाक्टर भीकमचन्द जी वोरा आदि अनेक श्रावक धर्म की सेवा करते हैं, समाज के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

धार्मिक परीक्षा-बोर्ड और सस्थाएँ

पूज्य मुनिवरो के उपदेश से जिले में कई स्कूलें खुली। पाथर्डी में श्री तिलोक जैन हायस्कूल नाम की सस्था अच्छा कार्य कर रही है। यहाँ पर श्री आनन्द ऋपिजी महाराज सा० के सदुपदेश से सस्थापित धार्मिक परीक्षा बोर्ड और जैन सिद्धान्तशाला-पुस्तक-प्रकाशन विभाग है तथा अहमदनगर घोडनदी में भी श्री जैन सिद्धान्तशाला की व्यवस्था है। अहमदनगर शहर में जैन बोर्डिंग लगभग ३२ वर्ष से चलता है—जिसमें माध्यमिक से कोलेज तक के विद्यार्थी लाभ लेते है। इस बोर्डिङ्ग में धार्मिक पढाई की भी व्यवस्था है। अहमदनगर जिले में पाथर्डी-कडा नाम का ग्राम है। वहाँ पर भी एक जैन स्कूल है, जिसमें गरीब विद्यार्थियो के शिक्षण की व्यवस्था है। शीघ्र ही इस स्कूल को हायस्कूल बना दिया जायगा।

वात्सल्य फण्ड

स्व० पूज्य श्री काशीराम जी म० सा० के सदुपदेश से यहाँ पर वात्सल्य फड नाम की सस्था स्थापित हुई। पिछले १५ साल से समाज के अपग, अनाथ और असहाय भाइयो की सहायता की जाती है। इस फण्ड में से अब तक लगभग ५०,००० इस कार्य में खर्च हुआ है।

मण्डल और धर्मशालाएँ

यहाँ महावीर मडल नाम की एक सस्था है, जो समस्त जैन समाज का सगठन करने और पारस्परिक भाई-चारा बढाने का कार्य कर रही है। इस सस्था के स्वयसेवक मडल ने अजमेर के साधु-सम्मेलन के समय अच्छी सेवा की। इसके अतिरिक्त जीव दया मडल सस्था है जिसके द्वारा जीवो की रक्षा का कार्य होता है। यहाँ पर दो धर्म-

शालाएँ हैं जो श्री सतोकचन्द जी गुदेचा, सदाबाई चगेडिया, श्री हेमराज जी फिरोदिया के परिवार के लोगो द्वारा निर्माण कराई गई। एक सेवा समिति है जिसके द्वारा गरीब और बीमारो की सेवा की जाती है।

स्थानक

यहाँ पर रम्भाबाई पितलिया के द्वारा प्रदत्त एक स्थानक है। इसी के निकटस्थ जमीन को श्री मोहनलालजी वेद की इस्टेट में से उनके ट्रस्टियो ने ५०००) में खरीदी जिसके कारण बडा भव्य स्थानक बना है। शास्त्रवेत्ता श्री किसनदास जी मुथा ने इस स्थानक की मरम्मत के लिए ३०००) प्रदान किये। इसके अलावा सीताबाई और श्री गेनजी द्वारा दिये गए दो स्थानक हैं। सघ के द्वारा विनिर्मित एक स्थानक घास गली में है। श्री भीकूबाई कोठारी के द्वारा दिया गया स्थानक के लिए एक मकान है।

लगभग पन्द्रह वर्ष ने पहले यहाँ जैन कान्फरस की जनरल कमेटी की बैठक हुई थी।

लगभग २० वर्ष तक यहाँ जैन स्कूल चला परन्तु अब वह बन्द हो गया है और उसके फण्ड में से धार्मिक शिक्षण की व्यवस्था होती है।

छात्रालय

श्री चन्दनमल जी पितलिया के सुपुत्र श्री मोतीलाल जी कुँवरलाल जी ने जैन छात्रालय के लिए दो एकड़ जमीन लगभग १५,०००) के लागत की दी है। छात्रालय के भवन निर्माण कार्य के लिये सघ के द्वारा ५०,०००) एकत्रित किया गया है। इस छात्रालय में ५० छात्र रह सकेंगे।

श्रावक-सघ

सादडी सम्मेलन के बाद यहाँ पर श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ की स्थापना हुई। श्री कुन्दनमल जी फिरोदिया उसके अध्यक्ष और श्री माणकचन्द जी मुथा व श्री सुखलाल जी लोढा मन्त्री हैं।

सहअस्तित्व और सहवास

अहमदनगर के स्थानकवासी, मदिरमार्गी और दिगम्बर समाज में प्रेमपूर्वक सम्बन्ध है। श्री महावीर जयती के समान कार्यक्रम सभी के सहयोग से एकत्रित होकर मनाये जाते हैं।

यहा तेरापथी का घर नही है। मन्दिरमार्गी के लगभग १०६, दिगम्बर ५० तथा स्थानकवासी समाज के ५०० घर होगे जिसमें मारवाडी, गुजराती, कच्छी सभी शामिल हैं।

जैन धर्म की उन्नति के लिए जो-जो प्रयत्न किये जाते हैं उसमें स्थानीय सघ यथाशक्य सहयोग देता है। जैन सघ में १०-१२ वकील, डाक्टर हैं तथा अनेक ग्रेज्युएट हैं। यहाँ शिक्षा का प्रचार अच्छा है। यहाँ सुलझी हुई नवीन विचारधारा के लोग हैं। सम्प्रदायवाद यहाँ कभी भी नही था और अब भी नही है।

श्री वर्धमान श्रावक सघ घोडनदी का प्रगतिपत्र और सक्षिप्त इतिहास

पूना और अहमदनगर के बीच में बसा हुआ घोड़नदी ग्राम जैन संघ की दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखता है। यहाँ जैन समाज के १००-१२५ घर हैं, जिनमें कुछ व्यापारी हैं, कुछ नौकरी करते हैं और कुछ साधारण व्यवसाय से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। साधारण परिस्थिति वालों की सख्या अधिक है।

धर्मस्थानकों की दृष्टि से घोडनदी का महाराष्ट्र में गौरवपूर्ण स्थान है। स्थानक से सम्बन्धित यहाँ छ मकान हैं। मुनिराजों के ठहरने-आत्मचिन्तन-आत्मसाधना करने की दृष्टि से घोडनदी के स्थानको की व्यवस्था सर्वांग-

पूर्ण है। इसके अलावा यहाँ मन्दिर-उपाश्रय आदि भी हैं। खर्च की दृष्टि से स्थानीय संघ के मकानात स्वावलंबी हैं। यहाँ एक गौशाला, जैन पाठशाला, जीवदयामण्डल, सार्वजनिक वाचनालय, हाईस्कूल, हैल्थयुनिट और औषधालय आदि सार्वजनिक तथा सरकारी सेवारत संस्थायें हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में विशुद्ध रूप में सेवाकार्य करती हैं।

महाराष्ट्र प्रान्त में मुनिराजो का सर्वप्रथम चातुर्मास करने-कराने का गौरव भी घोड़नदी को ही प्राप्त है। वि० संवत् १६३६ में महाराष्ट्र में मुनिराजो का सर्वप्रथम चातुर्मास हुआ जो घोड़नदी में ही हुआ। यह चातुर्मास महान् प्रतापी कविवर पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० ने किया था। इसके अलावा मुनिराजों में संस्कृत शिक्षण की प्रणाली का बीजारोपण भी घोड़नदी में ही हुआ। महान् प्रतापी पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० सा० ने अपने शिष्य और वर्तमान उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म० सा० और पं० मुनि श्री घासीलाल जी म० सा० के संस्कृत शिक्षण लेने की यहीं से व्यवस्था करके मुनिराजों में संस्कृत-शिक्षण की प्रणाली का शुभारम्भ किया।

यहाँ मुनिराजो के अनेक चातुर्मास हुए हैं और होते रहते हैं। आजतक जो चातुर्मास हुए हैं उनमें निम्नोक्त चातुर्मास विशेष महत्त्वशाली हैं। पूज्य श्री तिलोक ऋषिजी म० सा० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० मुनि श्री प्रसन्नचन्द्रजी म० सा०, पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० सा०, मुनि श्री मोहन ऋषिजी म० सा०, पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म० सा०, मुनि श्री प्रेमराज जी, गणेशलाल जी म० सा०, और महासति जी श्री उज्ज्वलकंवर जी म० सा० आदि-आदि सतों-सतियों के चातुर्मास धर्म-प्रभावना की दृष्टि से खूब ही गौरवशाली रहे। धर्मभावना की वृद्धि के कारण आजतक यहाँ अनेक दीक्षाएँ भी हुई हैं। जिनमें प्रमुखत श्रीमान् विरदीचन्द जी दूगड के घराने से श्री विरदीचन्द जी की माताजी, उनकी बहन और दो कन्यायें इस प्रकार चार दीक्षाएँ एक ही घर से हुईं। वर्धमान श्रमणसंघ के वर्तमान प्रधान मंत्री श्री आनन्द ऋषिजी म० सा० के गुरुदेव पूज्य श्री रत्न ऋषिजी म० सा० के दीक्षा महोत्सव का गौरव भी घोड़नदी को ही प्राप्त है। पूज्य श्री के साथ ही श्री स्वरूपचन्द जी और महासति जी श्री चम्पाकंवर जी तथा महाभाग्यवान् महासति जी श्री रामकँवरजी म० सा० अर्थात् पिता-पुत्र, माता-पुत्री की एक ही साथ दीक्षायें हुईं। ये दीक्षायें वि० सं० १६३६ के आषाढ़ शुक्ला ६ को हुईं।

घोड़नदी में श्री वर्धमान श्रमण सघीय श्रावकसंघ बना हुआ है, जिसके अध्यक्ष दानवीर श्रीमान् सेठ हस्तीमल जी दूगड़ हैं। आप महासति जी श्री सुमतिकँवरजी के संसारपक्षीय पिताजी हैं। श्रीमान् दूगड़ जी स्थानीय अनेक संस्थाओं के प्राण हैं। शरीर से दुर्बल, अशक्त और बुढ़ापे से दबे होने पर भी स्थानीय संस्थाओं की सर्वांगीण प्रगति के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

श्रीमान् डाक्टर साहेब, श्री चुन्निलाल जी नाहर शास्त्रों के सूक्ष्म रहस्यों के एक अच्छे ज्ञाता हैं।

घोड़नदी श्री संघ की एकता-संगठन अपने एक विशेष आदर्श को रखते हुए है। क्या सामाजिक और क्या धार्मिक सभी कार्य बड़े प्रेम से हिलमिलकर एकमत से होते हैं। आगत मुनिराजो के स्वागत-सत्कार करने की और धर्मलाभ प्राप्त करने की हमेशा भावना रहती है। यही स्थानीय श्री संघ की विशेषता है।

नासिक जिला जैन समाज का परिचय

नासिक ज़िला १२ तहसीलों में बँटा हुआ है। इस जिलों में स्था० जैनियों की संख्या लगभग छः हजार हैं। हर तहसील में स्थानक हैं। और चातुर्मास भी हुआ करते हैं। निम्न-स्थानों पर मुख्यत चातुर्मास होते रहते हैं —

नासिक—यहाँ २०० घर स्थानकवासियों के हैं। समाज के मुख्य कार्यकर्ता हैं श्री चाँदमलजी बरमेचा, श्री हंसराज जी सेठिया, श्री भीकमचन्द जी पारख और बेचरचन्दजी पारख आदि हैं।

इगतपुरी—यहाँ समाज के ६० घर हैं। और अग्रणी श्री लादूराम जी बोथरा आदि हैं।

घोटी—यहाँ समाज के ८० घर हैं। और मुख्य कार्यकर्ता श्री कचरदास जी आदि हैं।

लासलगाँव—यहाँ स्था० के १०० घर हैं। जहाँ श्री मुगालचन्द जी बरमेचा आदि मुख्य कार्यकर्ता हैं।

पिंपलगाँव—यहाँ समाज के ७६ घर हैं। और अग्रणी हैं श्री मीकमचन्द जी सेनी श्री मोकमचन्द जी लालचन्द जी आदि।

मनमाड—यहाँ समाज के १०० घर हैं। यहाँ की समाज का संचालन करते हैं श्री गुलाबचन्दजी भण्डारी व माणकलाल जी ललवानी आदि।

मालेगाँव—यहाँ स्था० समाज के १०० घर हैं और अग्रणी श्री किशनलाल जी फतहलाल जी मालू व मोतीलाल जी लोढा आदि हैं।

येवला—यहाँ समाज के ७४ घर हैं। मुख्य व्यक्ति श्री जुगराज जी श्रीश्रीमाल और हरकचन्द जी मण्डलेचा आदि हैं।

निफाड—यहाँ स्था० समाज के ३० घर हैं। और कार्यकर्ता हैं श्री सुखराज जी विनायकिया।

चालीस वर्ष पूर्व इस ज़िले में स्था० समाज के घर बहुत कम थे और धर्म स्थान भी नहीं था। उस समय श्री चाँदमल जी बरमेचा, श्री भीमचन्द जी पारख, श्री हीरालाल जी सांखला आदि के अथक परिश्रम से श्री १००८ श्री प्रेमराज जी म० का चातुर्मास हुआ। धार्मिक कार्यों के मुहूर्तस्वरूप म० सा० के उपदेश से श्रीमती सुन्दराबाई ने अपना मकान दे दिया। स्थानक छोटा होने से श्रीमती तोलाबाई व अन्य धर्म बन्धुओं ने बाद में विशाल स्थानक निर्मित कराया। धीरे-धीरे काफी तरक्की होती रही। सन् १६३३ में रा० ब० स्व० श्री कन्हैयालाल जी भण्डारी इन्दौर निवासी की अध्यक्षता में श्री ओसवाल सम्मेलन हुआ। तब श्री ओसवाल जैन बोर्डिंग की स्थापना हुई। धर्मस्थान में स्थानीय संघ ने जैन पाठशाला स्थापित की। दोनों संस्थाएँ धार्मिक परीक्षा पाथर्डी बोर्ड की देती हैं। बाद में लासलगाँव में श्री महावीर जैन विद्यालय की स्थापना हुई। चाँदवड में श्री नेमीनाथ जैन गुरुकुल की स्थापना हुई। नासिक शहर में श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघ की स्थापना हुई जिसके पदाधिकारी श्री चांदमल जी बरमेचा, अध्यक्ष मोहनलाल जी चोपडा, उपाध्यक्ष, घेवरचन्द जी सांखला सूरजमल जी बरमेचा मन्त्री हैं।

श्री महावीर जैन वाचनालय, नासिक

इस वाचनालय और पुस्तकालय के संस्थापक महाराष्ट्र मन्त्री पं० मुनि श्री किशनलाल जी म० सा० तथा प्र० वक्ता प० मुनि श्री सौभाग्यमल जी म० सा० हैं। यह वाचनालय नासिक के रविवार पेठ में विशाल एवं दर्शनीय भवन में है। इस भवन में बड़े-बड़े चातुर्मास हो चुके हैं। यह स्थान मुनिराजों के ठहरने के लिए बहुत ही साताकारी है। इस वाचनालय के साथ संलग्न विशाल पुस्तकालय में धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, मराठी और गुजराती आदि भाषा और विषयों की हजारों पुस्तकें हैं। हजारों की संख्या में लोग वाचनालय और पुस्तकालय का लाभ लेते हैं। इस समय इसकी व्यवस्था श्री धनसुखलाल जी विनायकिया कर रहे हैं। श्री भँवरलाल जी सांखला तथा श्री देवीचन्द जी सुराना उत्साही युवक हैं जो उत्साहपूर्वक अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त यहाँ एक जैन युवक-मण्डल है जिसके श्री दीपचन्द जी वेदमुथा वकील-अध्यक्ष और भँवरलाल जी सांखला सेक्रेटरी हैं। यहाँ एक जैन पाठशाला भी है जिसमें पाथर्डी के धार्मिक परीक्षा बोर्ड के पाठ्य-क्रमानुसार बालकों को धार्मिक शिक्षा दी जाती है।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, नागपुर का परिचय

कई वर्ष पूर्व किसी अज्ञात व्यक्ति ने एक छोटा-सा मकान स्थानक के लिए अर्पण किया था। किन्तु वह मकान उस समय के समस्त श्वेताम्बर बन्धुओं के अन्तर्गत था। सन् १२० में श्री न्यायविजय जी महाराज की प्रेरणा से स्थानकवासी बन्धुओं के सरक्षण में आया।

धर्म ध्यान की बढ़ती हुई प्रवृत्ति से पास का मकान खरीदा गया।

प्रथम के पुराने मकान का जीर्णोद्धार करने के हेतु सन १९३६ मे नया मकान बनाया गया।

वर्तमान समय में नागपुर श्रीसघ की बढ़ती हुई जनसख्या फिलहाल १०० घर है। सदर में भी २० घर हैं। जहाँ धर्म स्थानक भी बना हुआ है।

वर्तमान प्रवृत्तियाँ

श्रीसघ की वर्तमान प्रवृत्तियो में—

(१) श्री दानवीर सेठ सरदारमलजी पुगलियाँ श्वेताम्बर स्थानकवासी जैनशाला चलती है जिसकी स्थापना सम्‌त् २००० में नागपुर के अग्रसर श्री सरदारमलजी के स्मारकरूप स्थापन की गई है। जिसकी प्रेरणा प० रत्न श्री आनन्द ऋषिजी महाराज ने की थी। वर्तमान समय १०० विद्यार्थी धार्मिक शिक्षा ग्रहण करते हैं।

(२) शाह मुलजी देवजी वाचनालय—

जिसकी स्थापना सन् १९५२ में हुई। नागपुर श्रीसघ के सेवाभावी मन्त्री श्री मुलजी भाई के स्मरणार्थ उनकी ३० वर्षों की सेवा की स्मृति में की गई है। यह वाचनालय आम जनसमुदाय के लिए खुला है।

(३) श्री स्थानकवासी शिष्यवृत्ति कोष—

स्थानकवासी विद्यार्थियों को शिक्षा की पुस्तकें अथवा फीस के रूप में सहायतार्थ यह कोष स्थापित किया गया है। आज इस कोष मे करीब ५०००) पाँच हजार रुपये हैं।

(४) श्रीसघ की बढ़ती हुई प्रवृत्तियों को देखकर विशाल व्याख्यान हॉल बनाने के लिए अभी श्रीसघ को इम्प्रुवमेन्ट ट्रस्ट का एक प्लोट प्राप्त हुआ है। जिस पर विशाल भवन बनाने के लिए करीब रुपया पचास हजार प्राप्त हो चुके हैं।

इस तरह नागपुर श्रीसघ अपनी प्रवृत्तियो मे सुदृढ आगे कदम बढाता जा रहा है।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, रायपुर

यहाँ के श्रावक संघ की स्थापना १३ जुलाई सन् १९५२ मे हुई। सघ का कार्य सम्यक् प्रकार से होता रहे, इसके लिए निम्नांकित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का निर्वाचन किया गया—

श्री लखमीचन्द जी सा बाडीवाल—अध्यक्ष, श्री अगरचन्द जी सा० वेद—उपाध्यक्ष, टीकमचन्द जी सा० डागा—उपाध्यक्ष, सम्पतराजजी सा० धाडीवाल—मन्त्री, भूरचन्द जी सा० देशलहरा और मोहनलाल जी सा० टाटिया—सहमन्त्री, भीखमचन्द जी सा० वेद—कोषाध्यक्ष।

इनके अतिरिक्त अन्य आठ व्यक्ति कार्यकारिणी के सदस्य हैं। सघ की तरफ से चार गतिविधियाँ गतिमान है—

(१) श्री श्वे० स्था० जैन पाठशाला (२) श्री जैन जवाहर ज्ञान प्रचारक मण्डल (३) जीवदया खाता ४) ज्ञान खाता।

श्री श्वे० स्था० जैन पाठशाला

इस संस्था में धार्मिक शिक्षण दिया जाता है। इस वर्ष ४७ छात्र-छात्राएँ पाथर्डी बोर्ड की सिद्धान्त-विशारद तक की परीक्षाओं में सम्मिलित हुए। स्कूल की प्रगति शानदार है। इस पाठशाला को निम्नांकित सज्जनों से इस प्रकार सहायता मिलती है —

श्रीमान् अगरचन्दजी सा० वेद ६००) श्री उत्तमचन्दजी सा० धाड़ीवाल ३६०) श्री अगरचन्दजी चम्पालालजी सुराणा ३००) श्री अमोलकचन्दजी केवलचन्दजी वेद ३००) श्री अमरचन्दजी जेठमलजी वेद २००)।

इस स्कूल का संचालनकार्य श्री सम्पतराजजी धाड़ीवाल के अथक परिश्रम द्वारा होता है। श्री सुगनचन्द जी सा० धाड़ीवाल, श्री महावीरचन्द जैन और श्री जेठमलजी वेद पाठशाला के कार्यों में और शिक्षण में विशेष दिलचस्पी लेते हैं।

श्री जैन जवाहर ज्ञान-प्रचारक मण्डल

स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० का सत्साहित्य संग्रहीत है। इसके अतिरिक्त जैन संस्कृति को चिरस्थायी बनाने वाला अन्य साहित्य भी प्रचुर मात्रा में है। 'श्रमण-वाणी' जो अभी फिलहाल प्रकाशित हुई है मण्डल की तरफ से आधे मूल्य ॥।) में वितरित की जा रही है। इस मण्डल के अध्यक्ष श्री सम्पतराजजी सा० धाड़ीवाल और मन्त्री श्री महावीरचन्द जी जैन हैं।

जीव दया खाते में प्रतिवर्ष ३००) ७००) की रकम इकट्ठी हो जाती है जो जीव दया के लिए बाहर भेजी जाती है।

ज्ञान खाते में एकत्रित होने वाली रकम का पुस्तक-प्रकाशन और शास्त्रादि सुन्दरतम साहित्य मँगाने में उपयोग होता है।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, रायचूर का परिचय

यहाँ संघ की दो इमारतें हैं जिनमें से एक भवन का निर्माण सं० १९७२-७३ में श्री कल्याणमलजी सुथा की देखरेख में हुआ। संवत् १९७८ में स्व० पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज सा० का इधर पदार्पण हुआ और तब से साधु-मुनिराजों का इधर पधारना प्रारम्भ हुआ। संवत् १९९८ में पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज सा० के चातुर्मास में 'जैन रत्न पाठशाला' की स्थापना हुई। संवत् २००३ में कल्याणऋषिजी महाराज के चातुर्मास में श्रीमती गोपीबाई ने अपना निजी मकान तथा दुकान स्थानक के काम में लाने के लिये संघ को अर्पण की। इन सबको मिलाकर संघ के द्वारा ४०,०००) के संग्रहीत धन से विशाल भवन बनाया गया जिसके ऊपर और नीचे एक-एक प्रांगण है जिसमें दो हजार आदमी एक साथ व्याख्यान का लाभ ले सकते हैं।

इसके पास ही "श्री वर्द्धमान जैन हिन्दी पाठशाला" का भवन है। श्री वस्तीमलजी पारसमलजी सा० सुथा ने पाँच वर्ष तक इस संस्था का खर्च अपने पास से प्रदान कर विद्यादान का आदर्श परिचय दिया है। इस संस्था के स्थायी फण्ड के लिए संघ ने २०,०००)रु० एकत्रित कर लिये हैं। इस फण्ड को और भी आगे बढ़ाया जा रहा है।

इस समय स्थानकवासियों के यहाँ ८० घर हैं। धार्मिक प्रेम अच्छा है। नित्य प्रातःकाल प्रार्थना होती है। लगभग प्रत्येक गृहस्थ सामयिक करने के लिए स्थानक में आता है।

इसके अतिरिक्त यहाँ "श्री वर्द्धमान पुस्तकालय" भी है, जिसमें काफी पुस्तकों का संग्रह है।

श्री वर्धमान हिन्दी पाठशाला रायचूर (दक्षिण)
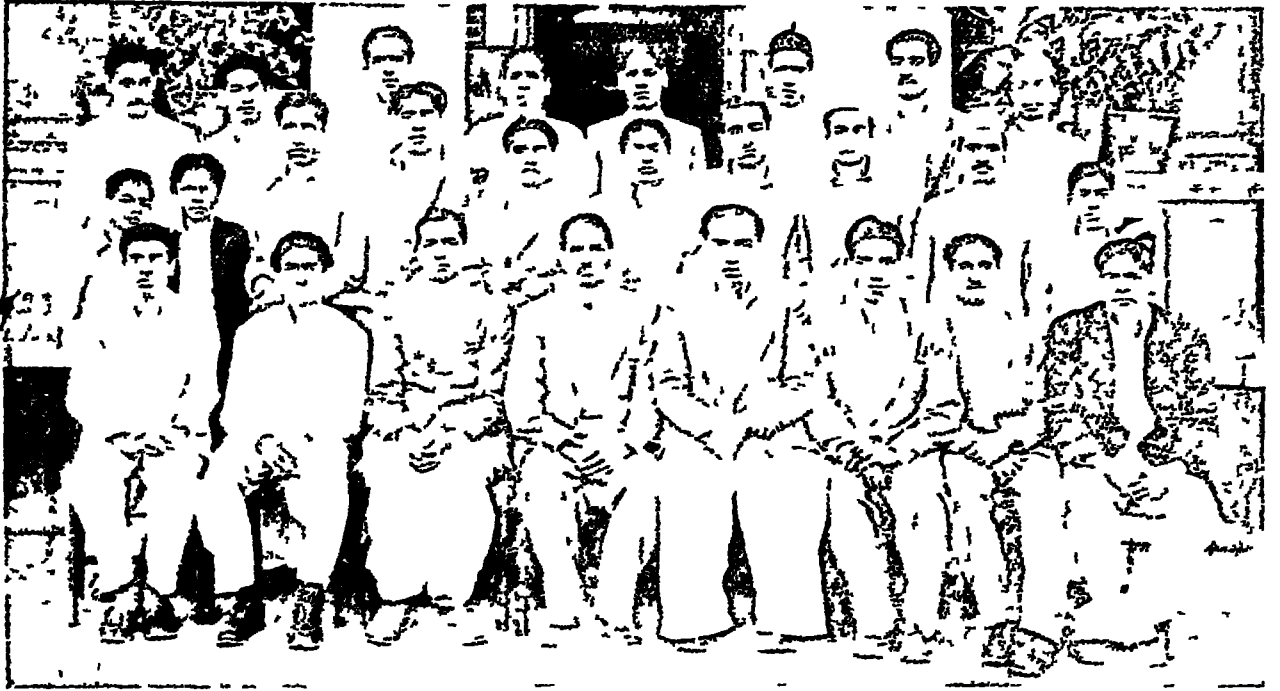
श्री स्था० जैन युवक-संघ, उज्जैन (मध्य भारत)

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक, संघ, नमक मण्डी, उज्जैन (मध्य भारत)

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, इगतपुरी

यह कस्बा बम्बई तथा नासिक के बीच में आगरा रोड पर बसा हुआ है। बीस हज़ार की जनसंख्या है। जिसमें बम्बई तथा नासिक की तरफ विचरने वाले सन्त, सतियाँ अनायास ही पधार जाते हैं। यह क्षेत्र रूपैंठ में बसा हुआ है। हायर पैंठ में यहाँ के सेवाभावी एवं उदार सेठ श्री खेवरचन्दजी कुन्दनलालजी छाजेड़ ने अपने अथक परिश्रम एवं त्याग से धर्मस्थानक बना दिया है। जलवायु की दृष्टि से भी प्रथम साधु लोग यहाँ ठहरते हैं। अपर पैंठ में नवयुवक सेठ श्री पन्नालालजी लखमीचन्दजी टाटिया ने अपनी ज़मीन में निजी खर्च से करीब तीस हज़ार की लागत का एक नवीन सुन्दर धर्म स्थानक बनवाकर संघ के सुपुर्द कर दिया है। लोअर पैंठ में भी संघ की अच्छी प्रोपर्टी है। यहाँ पर संवत् १९९७ से मुनि श्री वर्द्धमान ऋषिजी तथा पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी किशनलालजी, म० सा० के उपदेश से संचालित धार्मिक पाठशाला चल रही है। पं० दयाशंकरजी करीब ४० बालक बालिकाओं को धार्मिक-शिक्षण दे रहे हैं। सादड़ी सम्मेलन के पश्चात् ही यहाँ भी श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघ की स्थापना हो गई। सभी स्थानकों पर श्रावक संघ के बोर्ड लगा दिये गए हैं। श्रावक संघ के पदाधिकारी श्री लादूराम जी मनोरलालजी बोथरा—अध्यक्ष, श्री पन्नालालजी लखमीचन्दजी टाटिया—उपाध्यक्ष, खेवरचन्दजी चौ कुन्दनलालजी छाजेड़—मन्त्री, चौ भोजराजजी ताराचन्दजी सचेती—उपमन्त्री और श्री पन्नालालजी लखमीचन्दजी लूणावत—कोषाध्यक्ष हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, बालाघाट (म० प्र०)

यहाँ धर्म प्रेमी श्री चुन्नीलालजी बागरेचा के सत् प्रयत्न से धर्म स्थानक और श्री वर्द्धमान श्रावक-संघ की स्थापना हुई। यहाँ स्थानकवासियों के ४०-४५ घर हैं। श्री खुशालचन्दजी जैन भी उत्साही व्यक्ति हैं। आप दोनों का प्रत्येक धर्म कार्य में अच्छा सहयोग रहता है।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, रतलाम

रतलाम स्था० जैनों का बड़ा केन्द्र है। पहिले तीन संघ थे, परन्तु अब एक ही हो गया है। संघ के अनेक स्थान और जायदादों का एकीकरण कर दिया है।

समस्त भारत में यहाँ का संघ विख्यात है। समाज के प्रमुखतम मुनिराजों के पधारने, स्थिरवास करने और चातुर्मास करने के कारण यहाँ का संघ धार्मिक कार्यों में सदा ही जागृत रहा है। संघ की तरफ से निम्नांकित प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं —

जैन-पाठशाला—इसमें लगभग २५० लड़के पढ़ते हैं। धार्मिक-शिक्षण के साथ साथ व्यावहारिक शिक्षण भी दिया जाता है। बच्चों के धार्मिक संस्कारों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

जैन कन्या पाठशाला—इसमें लगभग २०० लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त करती हैं। पहली से लेकर आठवीं कक्षा तक शिक्षा की समुचित व्यवस्था है। पाठशाला शनैः शनैः प्रगति पथ पर अग्रसर हो रही है।

आयम्बिल खाता—इसकी स्थापना पं० मुनि श्री शेषमलजी म० सा० के चातुर्मास में हुई थी। संघ की तरफ से व्यवस्थित रूप से आयम्बिल खाता चल रहा है। प्रतिदिन आयम्बिल किया जाता है और तपस्या की सुगन्ध से जीवन सुगन्धित किया जाता है।

पुस्तकालय—संघ की तरफ से विशाल पुस्तकालय एवं वाचनालय का संचालन किया जा रहा है। प्रतिदिन नियमित रूप से सैकड़ों पाठक इससे ज्ञानार्जन करते हैं। नागरिकों के लिए यह पुस्तकालय तथा वाचनालय अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

पौपधशाला —सघ के कई स्थानक-भवन हैं। एक नव निर्मित पौषधशाला है, जिसके निर्माण में ६०००८) रु० लगे हैं। जहाँ नित्य व्याख्यान और धर्मध्यान होता रहता है।

इसके अतिरिक्त समस्त सम्प्रदायों की पुरानी मिल्कियत अब सघ की सम्पत्ति है। श्रावक सघ का संगठन हो जाने से स्थानीय संघ एक विशाल दायरे में आ गया है।

इसके अतिरिक्त अजारक्षण सस्था से अमरिए बकरों का रक्षण होता है। एक अन्न क्षेत्र है, जो सार्वजनिक सस्था है किन्तु इसकी कार्यकारिणी के अधिकाश सज्जन स्थानकवासी जैन हैं।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, जावरा (मध्य-भारत)

मध्यभारत में यहाँ का श्रावक मघ अपना अग्रगण्य स्थान रखता है। स्थानकवासी समाज के यहाँ २११ घर हैं जिनकी जन सख्या १००७ है। भारत में सर्व प्रथम यहीं पर ही श्रावक सघ का निर्माण हुआ था। ऐतिहासिक नगर होने के साथ-साथ यहाँ का जैन समाज भी ऐतिहासिक महत्त्व रखता है।

यहाँ छोटे-मोटे ८ स्थानक हैं, जो सभी अच्छी स्थिति में विद्यमान हैं। सघ की देख-रेख में निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ चल रही हैं—

श्री वर्द्ध० स्था० जैन आयम्बिल खाता

स्वर्गीय सूरजबाई पगारिया की पुण्य-स्मृति में यह खाता चल रहा है। इसके सचालन के लिए एक समिति बनाई गई है—श्री चम्पालालजी पगारिया अध्यक्ष, श्री गेंदालालजी नाहर-उपाध्यक्ष, श्री सुजानमलजी मेहता मन्त्री, श्री सौभाग्यमलजी कोचेटा संयुक्तमन्त्री, श्री राजमलजी पगारिया कोषाध्यक्ष।

श्री वर्द्ध० स्था० जैन कन्या पाठशाला

यह कन्या पाठशाला भी स्व० सूरजबाई पगारिया की पुण्य स्मृति मे चलाई जा रही है। इस पाठशाला में छात्राएं धार्मिक शिक्षण का लाभ लेती हैं। इस पाठशाला के निम्न पाँच ट्रस्टी सस्था को सँभाल रहे हैं —

श्री गेंदालालजी नाहर, श्री समीरमलजी डफरिया श्री सुजानमलजी मेहता, श्री सौभाग्यमलजी कोचेटा, श्री राजमलजी पगारिया।

श्री वर्धमान स्था० जैन नवयुवक मण्डल

स्थानीय जैन नवयुवकों का एक मण्डल भी व्यवस्थित रूप से बना हुआ है। सामाजिक तथा विभिन्न कार्यक्रमों में यह मण्डल अच्छा भाग लेता है। नवयुवक मण्डल के पदाधिकारी इस प्रकार हैं —

श्री सुजानमल जी मेहता अध्यक्ष, श्री अभयकुमारजी मास्टर उपाध्यक्ष, श्री समरथमलजी काठेड़ मन्त्री, श्री मगतलालजी उपमन्त्री श्री छगनलालजी काठेड़ कोषाध्यक्ष।

इन विभिन्न गतिविधियों के अलावा छ काया (प्राणि-दया) व्यवस्था-कमेटी, और महावीर जैन सयुक्त विद्यालय हैं। यहाँ के सघ के पदाधिकारी इस प्रकार हैं —

श्री चम्पालालजी कोचेटा, अध्यक्ष, श्री सुजानमलजी मेहता, मन्त्री और श्री उम्मेदमलजी मेहता, कोषाध्यक्ष।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, इन्दौर

इन्दौर में स्थानकवासी जैन समाज के अनुमानत. ९०० घर होने पर भी आपस में सगठन का ऐक्य भाव

है यह अनुकरणीय है।

जब सादडी में कॉन्फरन्स के श्रावक संघ बनाने की प्रेरणा की तब से ही यहाँ श्रावक संघ कायम हुआ है और उसके अध्यक्ष जैनरत्न श्री सुगनमलजी भण्डारी व प्रधानमन्त्री श्री राजमलजी चोरड़ा के अतिरिक्त २३ महानुभाव चुने गये हैं। समय-समय पर श्रावक संघ की मीटिंग होकर उसका कार्य सुचारु रूप से चल रहा है।

यहाँ पर संघ के खास कर तीन स्थानक हैं जिनमें (१) मोरसली गली में, (२) पीपली बाजार में व (३) इमली बजार में (जिसका नाम महावीर भवन) है। इसी महावीर भवन का निर्माण सम्वत् २००१ में हुआ था और वह अभी विशाल भवन के रूप में तैयार हो चुका है व उसके आगे का कार्य चालू है।

भवन निर्माण कार्यमें जैन रत्न श्री सुगनमलजी भण्डारी व सेठ मांगीलालजी मूथा पूर्ण सहयोग दे रहे हैं।

संघ के तत्त्वावधान में निम्नलिखित संस्थाएँ यहाँ पर चालू हैं .

आयंबिल खाता—जो श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन सेवा-सदन के नाम से गत आठ वर्ष से प० मु० श्री प्रतापमलजी महाराज की प्रेरणा से चालू हुआ। शुरू में ही उसके संरक्षक श्रीमती केसरबाई भटेवरा व श्री पन्नालालजी भटेवरा हैं। इस संस्था की कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री बक्तावरमलजी सांड व कैशियर श्री भंवरलालजी धाकड़ हैं। इन्हीं की कोशिश से संस्था का कार्य सुचारु रूप से चालू है। सालाना १४-१५ हजार भाई व बहिन (आयम्बिल, एकासन आदि) इस संस्था से लाभ लेते हैं। समाज की ओर से धान्य व नगदी के रूप में भेंट प्राप्त होती है। इस वक्त संस्था के पास लगभग ८०००)रु० का फण्ड, बर्तन व धान्य आदि सिल्लक में है। काम सन्तोष-जनक है। सदन का कार्य श्री बक्तावरमलजी साड के भवन में चालू है।

श्वेताम्बर जैन लायब्रेरी—३६ वर्ष पहिले स्व० श्री केसरीचन्दजी भण्डारी ने यह संस्था स्थापित की थी। तब से बराबर लायब्रेरी की प्रगति हो रही है। धार्मिक, व्यावहारिक सब प्रकार का साहित्य इसमे मौजूद है, दैनिक साप्ताहिक-पत्र आदि मंगवाए जाते हैं। यह संस्था मित्र-मण्डल-की देख-रेख में चलती है। इसके प्रेसिडेन्ट श्री भंवरसिंहजी भण्डारी हैं। यह संस्था मोरसली गली के स्थानक के नीचे के हिस्से में है। उसका कार्य सुचारु रूप से चालू है। मध्य भारत गवर्नमेन्ट से ४००) रु० सालाना ग्रान्ट भी मिलती है।

श्री महावीर जैन सिद्धान्त शाला—स्व० श्री छोटेलालजी पोखरना के प्रयत्न से १५ साल से यह कायम हुई। इसमें धार्मिक व व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है। इस वक्त संस्था के अध्यक्ष श्री बक्तावरमलजी साड हैं। इस वक्त बालक-बालिकाएँ मिलकर ८०-८५ की संख्या में लाभ उठा रहे हैं।

महिला कला-भवन—श्रीमती सौ० हीराबाई बोरुदिया व श्रीमती फूल कँवर बाई चौरडिया की प्रेरणा से गत वर्ष २६ जनवरी १९५५ से इसका कार्य प्रारम्भ हुआ। इससे समाज की बहिनों को सिलाई, कसीदा आदि कार्य सिखलाया जाता है। इसका कार्य बहुत ही सुचारु रूप से चालू है। इसमें प्रतिदिन २५-३० बहिनें लाभ उठाती हैं। समाज की ओर से इस संस्था को पूर्ण सहयोग है तथा मध्य भारत गवर्नमेन्ट की ओर से ग्रान्ट मंजूर की गई है। फिलहाल इस संस्था का कार्य श्री बक्तावरमलजी साड़ के भवन में चालू है।

उपरोक्त सभी संस्थाओं के हिसाब हर साल ऑडिट होकर तथा उन्हें छपवाकर समाज के सम्मुख श्री पर्यूषण-पर्व में पढ़कर कन्फ़र्म करवाये जाते हैं।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, उज्जैन

उज्जैन-अवन्तिका का इतिहास सदा ही उज्ज्वल और महान् रहा है। यहाँ के स्थानकवासी जैन समाज ने सामाजिक संगठन के आधार पर समाजोत्थान के उद्देश्य से कई महान् प्रयास किए हैं। यहाँ श्रावक संघ का निर्माण

किया जा चुका है। स्थानीय संघ को श्री हजारीलालजी भटेवरा, श्री कंचनलालजी भटेवरा, श्री बाबूलालजी चौरड़िया, श्री नाथूलालजी श्री श्रीमाल और श्री छोटेमलजी मुथा का सहयोग प्रशंसनीय रहा है। तथाकथित महानुभावों के सहयोग से 'महावीर भवन' का निर्माण कराया गया जिसमें ६०,०००) लग गया हैं इसके अतिरिक्त २०,०००) और भी लगने की सम्भावना है। इस भवन में ३००० श्रोता बैठकर प्रवचन का लाभ उठा सकते हैं। इसी भवन में आधुनिकतम ढंग के सुव्यवस्थित पुस्तकालय तथा वाचनालय की व्यवस्था की जा रही है।

वर्तमान समय में श्री संघ के अन्तर्गत स्थायी सम्पत्ति निम्न प्रकार है :—

(१) स्थानक फ्रीगंज (२) स्थानक दौलतगंज (३) शान्तिरक्षक सघ भागसीपुरा (४) आयुर्वेद औषधालय भागसीपुरा (५) रतन पाठशाला नमक मंडी (६) महासतियाँजी का स्थानक नमक मंडी और पटनी बाजार स्थित दुकानें।

इस समय संघ के प्रमुख कार्यकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं —

श्री गोकुलचन्दजी, श्री दीपचन्दजी जिन्दानी, श्री नाथूलालजी, श्री बाबूलालजी, चौरड़िया, श्री हजारीलाल जी भटेवरा श्री गेंदालालजी।

गत वर्ष का अखिल भारतीय सर्वधर्म-सम्मेलन जो यहाँ के संघ द्वारा आयोजित किया गया था उज्जयिनी के परम्परागत गौरव के अनुकूल ही था।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन नवयुवक संघ, उज्जैन

इस संस्था का निर्माण गत वर्ष प्र० व० कवि मुनि श्री केवल मुनिजी म० सा० के सदुपदेश एवं प्रेरणा से हुआ था। आज इस संस्था को कार्य करते हुए एक वर्ष से ऊपर समय हो गया है। इस संस्था का वार्षिक अधिवेशन सर्व धर्म-सम्मेलन के प्रसंग पर सम्पन्न किया गया था। संस्था स्थापित हुए यद्यपि अभी बहुत कम समय हुआ है किंतु इस अल्प अवधि में संस्था ने जो कुछ कार्य उज्जैन के धार्मिक क्षेत्र में किया उस पर संस्था को गर्व है। इस वर्ष प्र० व० पंडित मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज एवं मुनि श्री सुशीलकुमारजी महाराज का सम्पर्क संस्था को प्राप्त हुआ जिससे संस्था के सदस्यों को नया जोश एवं नया उत्साह प्राप्त हुआ। इस संघ की तरफ से ४ सितम्बर को "जैन धर्म शिक्षण शिविर" प्रारम्भ किया था, जिसका उद्‌घाटन भोपाल के मुख्य मन्त्री डॉ० शंकरदयालजी शर्मा के कर कमलों से सम्पन्न हुआ था। इस शिविर में भारत के विभिन्न भागों से ६०० विद्यार्थियों ने भाग लेकर लाभ उठाया था।

सर्व धर्म-सम्मेलन के अवसर पर आगन्तुक अतिथियों का इस संघ ने सुन्दर आतिथ्य कर अपनी सेवा-भावना का परिचय दिया। संघ के लगभग ५० नियमित सदस्य हैं। मासिक चन्दा दो आने प्रति माह है। प्रत्येक रविवार को महावीर भवन में सभा आयोजित की जाती है, जिसमें धार्मिक, सामाजिक और साहित्यिक विषयों पर अपने विचार व्यक्त करते हैं।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, धार

धार—यह अति प्राचीन ऐतिहासिक, इतिहास प्रसिद्ध श्री सम्राट् भोज की राजधानी रह चुकी है।

ऐतिहासिकता—यहाँ करीब ३०० वर्ष पुराना स्थानक है। इसी स्थानक में समाज के प्रसिद्ध मुनि पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज ने अपने शिष्य की कायरता (कि जिसने संथारा लेकर तोड़ने की इच्छा की थी) से जैन धर्म को कलंकित होने से बचाने के लिए पूर्ण स्वस्थ होते हुए भी संथारा लेकर जैन शासन के गौरव को बढ़ाया तथा जिस पाट पर पूज्य महाराज सा० ने संथारा किया था, वह पाट आज भी रखा हुआ है। इसके अतिरिक्त पूज्य श्री ताराचन्दजी महाराज का स्वर्गवास भी यहीं हुआ था।

धर्म स्थानक—यहाँ समाज के तीन स्थानक भवन हैं, जिनमें एक भवन कलात्मक सुन्दर कलशों से सुशोभित है। इसके अतिरिक्त दो मकान जीवदया के हैं।

श्रावक सघ—समाज को सगठित बनाये रखने के लिए कान्फ्रन्स की योजनानुसार सन् १९५४ में श्रावक सघ का निर्माण हो चुका है। समाज की उन्नति हेतु श्रावक सघ के अन्तर्गत कई प्रवृत्तियाँ चालू हैं, जो निम्न प्रकार हैं

जीवदया प्रबन्ध—यहाँ करीब ४०० वर्ष पूर्व बादशाही ज़माने से एक ऐसा नियम चला आ रहा है कि यहाँ की गली जो 'वनियावाड़ी' के नाम से है, जिसमें जैन स्थानक व समाज के घर हैं—इसमें कोई भी पशु यदि वध के लिए ले जाता हुआ पाया जाता है तो उस पशु पर समाज का अधिकार हो जाता है और वह पशु 'अमर' बना दिया जाता है। प्रतिवर्ष पर्यूषण में अगता पलाया जाता है।

महावीर मित्र-मण्डल—इस मण्डल की स्थापना सन् १९२७ में हुई थी। इसके अन्तर्गत एक वाचनालय चल रहा है। अजमेर मुनि सम्मेलन के समय इस मण्डल की ओर से एक स्वयंसेवक दल अजमेर मुनि-सम्मेलन के समय पर सेवाकार्य के लिए गया था।

साप्ताहिक सामूहिक प्रार्थना—लगभग १२ वर्ष पूर्व पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज के सदुपदेश से यहाँ सामूहिक प्रार्थना प्रारम्भ की गई थी, जो कि प्रति रविवार को निर्बाधरूप से होती जा रही है।

श्री महावीर जैन पाठशाला—इस सस्था की स्थापना स्वर्गीय जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज के सदुपदेश से सन् १९३५ में हुई थी। प्रारम्भ में केवल १२ छात्र शिक्षा पाते थे किन्तु अब ६ कक्षाओं में १०० विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं। व्यावहारिक शिक्षा के साथ पाथर्डी बोर्ड की धार्मिक शिक्षा भी होती है। प्रतिवर्ष अनेक समाजोपयोगी और शिक्षोपयोगी कार्यक्रम को लेकर सस्था वार्षिकोत्सव करती है। सस्था की ओर से भगवान महावीर स्वामी आदि महापुरुषों की जयन्तियाँ धूमधाम से मनाई जाती हैं। संस्था में सामायिक-प्रतिक्रमण, व्रत-प्रत्याख्यान आदि आवश्यक धार्मिक क्रियाओं पर विशेषतया ध्यान दिया जा रहा है। सस्था की आर्थिक व्यवस्था का सचालन तथा सरक्षण ट्रस्ट-मण्डल करता है। सस्था के सचालक इस प्रयत्न में है कि इसे मिडिल स्कूल बना दिया जाय और एक छात्रावास कायम किया जाय। श्री केशरीमलजी जैन M. A L. L. B. की अध्यक्षता तथा श्री बाबूलाल जी जैन के मन्त्रीत्व में सस्था प्रगति कर रही है। मध्यभारत की इस प्रगतिशील सस्था की हम और अधिक प्रगति चाहते हैं।

श्री न्यादरमल जी जैन रईस, विनौली (मेरठ)

आप विनोली के निवासी लाला सौसिहरायजी के सुपुत्र थे और अपने चाचा तुलसीरायजी के यहाँ गोद चले गये। आप कपडे के व्यापारी और जमीदार थे। अपने परिश्रम द्वारा उपार्जित धन को अनेक प्रकार के धार्मिक कार्यों में लगाकर धन का सदुपयोग किया। बचपन से ही आपको धर्म के प्रति प्रगाढ प्रेम था। आपने सोनीपत, सराय लुहारा और अपने ग्राम में इस प्रकार तीन स्थानक बनवाये। सयम और सादगी से जीवन-यापन करना यह आपका गुण था। जीवन-भर आप खादी धारण करते रहे। दूर-दूर तक साधु-मुनिराजो के दर्शन करने के लिये जाते रहते थे। सन् १९४० में दो दिन के सथारे के साथ पडित मरण से आप स्वर्गवासी हुए।

श्री पलटूमलजी जैन, काधला

आप मुजफ्फरपुर (यू० पी०) जिले के काधलाके निवासी हैं। आपके पूर्वज राव केशरीमलजी मुगल साम्राज्य के समय मन्त्री थे। आप के बाबा लाला घमडीलालजी स्थानकवासी समाज के स्तम्भ तथा यू० पी० प्रान्त के अग्रगण्य नेता थे जिन्होंने अपने समय में ४० स्थानक बनवाये थे।

श्री पलटूमलजी सा० को बचपन से ही धार्मिक कार्यों में अत्यन्त दिलचस्पी है। आप १६ वर्ष की अवस्था में ही कॉन्फरन्स की पजाब शाखा के सयुक्त मत्री नियुक्त कर दिए गये। अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस की कार्यकारिणी के आप सदस्य रह चुके हैं। यू० पी० स्थानक जैन कॉन्फ्रेन्स के आरम्भ से आप ज० सेक्रेट्री हैं। आप अनेक सामाजिक, शैक्षणिक तथा स्थानीय सस्थाओ के विभिन्न पदाधिकारी हैं। आपकी धर्मपत्नी भी समाज की एक आदर्श-महिला हैं। आपके एक वडा कुटुम्ब है जो अत्यन्त ही सुरक्षित एव सुसंस्कृत है।

इस समय आपकी उम्र ४७ वर्ष की है। अत्यन्त सुशिक्षित होते हुए भी आप धर्मपरायण हैं। आपको रात्रि-भोजन का त्याग है। उर्दू, हिन्दी, अग्रेजी, फारसी, प्राकृत आदि अनेक भाषाओ का आपको यथेष्ट ज्ञान है और जैन तथा अजैन ग्रन्थो का आपने काफी अध्ययन किया है। आप निर्भीक विचारधारा के कुशल वक्ता हैं। आपके सुपुत्र श्री आदीश्वरप्रसादजी जैन एम० ए० एल-एल० बी० कानपुर में वेलफेयर लेवर ऑफिसर हैं। दूसरे पुत्र श्री अजितप्रसाद जी जैन B. SC लखनऊ में एम० बी० बी० एस० कर रहे हैं। श्री जगप्रसादजी जैन बी० कॉम एक होनहार और तेजस्वी युवक हैं।

श्री रतनलालजी नाहर, बरेली

स्वभाव और वाणी में सरल तथा मधुर, श्रीमत किन्तु गृहस्थ सत, पुरातन किन्तु नवीन, सतत् शिक्षा और सुधार की आग दिल में जलाये हुए, अप्रकट किन्तु ठोस कार्य करते हुए, सामाजिक और राष्ट्रीय शालाओ, गुरुकुलो और विद्यालयो में प्राण फूकते हुए श्रीमान् रतनलाल जी सा० नाहर को हम जब कभी देख सकेंगे।

समाज की ऐसी कौनसी सस्था है जिसकी रिपोर्ट में आज तक आपका नाम न पहुँचा हो। समाज का ऐसा कौनसा समझदार व्यक्ति है जो आपसे परिचित न हो? जिसको आपका परिचय हुआ—बस वही आपसे प्रभावित हुआ।

पर्यूषण पर्व पर वेले-चौले की कठिन तपस्याएँ करते आप देखे गये हैं। शिक्षण-सस्थाओ से तन-मन धन से सक्रिय सहायता करते पाए गये हैं। आपकी सरलता, विद्यानुरागिता एव जीवन की पवित्रता और आदर्श अनुकरणीय हैं।

कानपुर के प्रमुख कार्यकर्ता

श्रीमान् ला० फूलचन्दजी जैन

कानपुर में श्री स्था० जैन समाज के कार्यों की ओर ध्यान आकर्षित करने का श्रेय आपही को है। आपने गत ३० वर्ष पहले स्व० जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज का यहाँ आग्रहपूर्ण विनति द्वारा चातुर्मास कराया था। उस चातुर्मास में बाहर से आये हुए दर्शनार्थियो को आज भी यहाँ की सेवा व सत्कार की याद भली भाँति है। काग्रेस कार्य में आपने तन-मन-धन से सेवा की। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर विश्ववद्य महात्मा गाधी ने 'यगइडिया' में आप की सराहना की है। इसी सिलसिले में सन् १९३० में एक वर्ष का सपरिश्रम कारावास भी काटा। आपकी ही प्रेरणा से आपके सुपुत्र स्व० मनोहरलालजी जैन ने अपनी माता की स्मृति में "श्री माता रूक्मणी भवन" निर्माण के लिए लगभग ५०,०००) रु० की जमीन समाज को ट्रस्ट बनाकर दी। आप स्था० समाज की आज भी तन-मन-धन से सेवा करते रहते हैं। श्री जैन दिवाकर स्मारक समिति के आप उप-प्रधान हैं।

श्री जगजीवनलाल शिवलाल

आप स्थानीय जैन स्था० समाज में गुजराती भाइयो में सबसे अधिक उत्साही तथा पुराने कार्यकर्ता हैं। गत बीस वर्षों से आप यहाँ के समाज का कार्य चलाते रहे हैं। आप अत्यत ही धर्मप्रिय व्यक्ति हैं। इधर तीन वर्षों से आपके नेत्रों में खराबी हो जाने के कारण सामाजिक कार्यों में अधिक भाग नहीं ले सके हैं। पर आज भी समाज आपके

परामर्श और मार्गदर्शन से लाभान्वित हो रहा है। स्थानीय सघ के आप उपसभापति तथा ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं।

श्रीमान् ला० किशनलालजी जैन

आप कानपुर में गत चालीस वर्ष पहले आये थे। आपके पिताजी का नाम ला० रिखीरामजी था। आपने अपने परिश्रम एव व्यवसाय-कुशलता से धन अर्जित किया तथा धार्मिक कार्यों में भी अत्यधिक रुचि ली। यहाँ पर साधु-सतो का चातुर्मास आदि कराने में आपका विशेष महत्त्पूर्ण हाथ रहता है। आप पर ही यहाँ के समाज की सर्व-प्रधान जिम्मेवरी है। आपके दो सुपुत्र हैं—श्री पदमकुमारजी और श्री पवनकुमारजी दोनो ही सामाजिक कार्यों में उत्साहित होकर भाग लेते हैं।

श्रीमान् ला० कुगासलजी जैन

आप स्थानीय सघ के सभापति हैं। आपके पिता का नाम श्री दौलतराम जी था। आपने अपने परिश्रम से स्थानीय लोहे के बाजार में यश और धन दोनो कमाया। आपने स्थानीय सघ को अपनी स्व० धर्मपत्नी कटोरादेवी की पुण्य स्मृति में एक विशाल भवन स्थानक के हेतु प्रदान किया जिसकी कीमत ५०,०००) रु० है। आपके दो सुपुत्र हैं—श्री त्रिलोकीनाथजी और श्री अमरनाथजी। दोनो ही सामाजिक कार्यों में दिलचस्पी दिखाते हैं। समाज को आपसे बडी-बडी आशाएँ हैं।

श्रीमान् राधाकिशनजी ठेकेदार

आप स्थानीय स्था० समाज में पजाबी भाइयो में सर्वप्रधान है। आपका सहयोग सदैव ही समाज को मिलता रहा है। आपका परिवार भरापूरा है। आपके ही अथक परिश्रम और सहयोग से रुक्मणी भवन का निर्माण हुआ। आप मूल निवासी जिंद (पजाब) के हैं। स्थानीय सघ की कार्यकारिणी समिति के आप सम्मानित सदस्य हैं।

श्रीमान् मदनसिंहजी छाजेड

आप स्था० जैन समाज में मारवाडी भाइयो में सर्वप्रधान हैं। आप गत बीस वर्षों से सघ के कार्यों में विभिन्न पदो पर रहकर सहयोग देते रहे हैं। आप स्थानीय समाज के सक्रिय तथा महत्त्वपूर्ण सदस्य है।

श्रीमान् नरोत्तम भाई

आप यहाँ के समाज में गुजराती युवक कार्यकर्ताओ में सर्व प्रधान हैं। सुदीर्घकाल से समाज की सेवा करते आ रहे हैं। आपके सहयोगसे इस समय सघ का कार्य अत्यन्त सुचारु रूप से चल रहा हैं। आप इस समय स्थानीय सघ के सम्मानित कोषाध्यक्ष हैं।

श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक सघ, राजगढ (धार)

यहाँ श्रावक सघ की स्थापना हो चुकी है। कुछ वर्षों से एक धार्मिक पाठशाला चल रही थी किन्तु वर्तमान में बन्द हो गई है। यहाँ सम्वत् २००५ में श्री लौंकाशाह जैन पुस्तकालय की स्थापना हुई थी और अभी तक सुचारुरूपेण कार्यक्रम चल रहा है। यह पुस्तकालय दिन-प्रतिदिन उन्नति करता जा रहा है। अभी इसमें ५५० पुस्तकें हैं। अ० भा० स्था० जैन कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष श्री चंपालालजी बाठिया ने स्व० श्री मज्जैनाचार्य के व्या-ख्यानों का एक पूरा सेट जिसमें २७ किरणावलियाँ हैं, निःशुल्क भेजी हैं। और श्री पार्श्वकुमारजी चत्तर-कोटवाली वालों ने अपनी भगवती दीक्षा के उपलक्ष्य में पुस्तकालय के लिए एक लोहे की अलमारी तथा २०० पुस्तकें भेंट

की। अन्य महानुभावों से भी पुस्तकें भेंट स्वरूप आई। वर्तमान समय में पुस्तकालय की समुचित व्यवस्था वर्द्ध० स्था० श्रावक संघ के मन्त्री श्री बाबूलालजी बाघरेचा करते हैं। निम्नलिखित पदाधिकारी समाज में परमोत्साह से कार्य करते हैं :

श्री नानालालजी बाफना, अध्यक्ष और श्री बाबूलालजी बाघरेचा मन्त्री हैं।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, भीलवाडा (राजस्थान)

यह मेवाड़ राज्य का प्रमुख औद्योगिक तथा व्यापारिक नगर है। यहाँ का संघ भी विशाल है। यहाँ स्थानकवासी समाज के ३०० घर हैं और धर्मध्यान के लिये संघ के पास २ धर्मस्थानक हैं।

स्थानीय सघ के द्वारा संचालित प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं :—
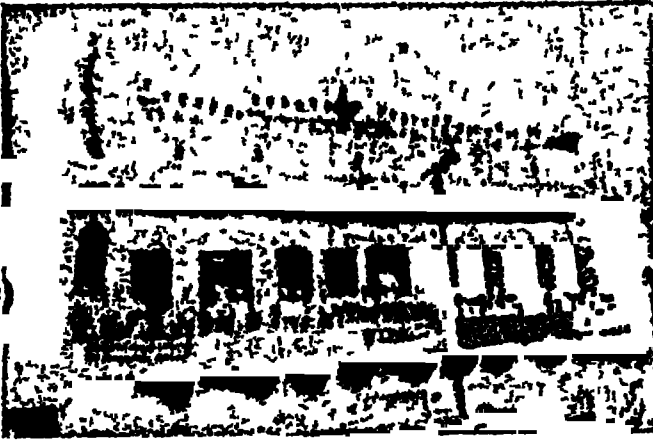
श्री श्वे० स्था० जैन मिडिल स्कूल

इसमें १२५ छात्र और ४ अध्यापक अध्ययन और अध्यापन का कार्य करते हैं। धार्मिक अध्ययन पाथर्डी बोर्ड के पाठ्यक्रम के अनुसार होता है। स्कूल का वार्षिक खर्च ४०००) रु० है जिसे संघ ही वहन करता है। स्कूल के लिये सघ की तरफ से विशाल भवन बनाया हुआ है।

पुस्तकालय तथा वाचनालय

संघ की तरफ से एक विशाल पुस्तकालय और वाचनालय संचालित हो रहे हैं। सर्वसाधारण जनता इनसे अच्छा लाभ उठाती है।

यहाँ व्यवस्थित-रूप से संघ के पदाधिकारियों का चुनाव हो चुका है।

श्री अर्जुनलालजी डॉगी-अध्यक्ष और श्री कन्हैयालालजी मूलावत मन्त्री हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, निम्बोद

यहाँ एक स्थानक भवन बना हुआ है। भवन साताकारी है। स्थानीय बन्धुओं ने इसके निर्माण में आर्थिक

सहयोग देकर संघ भक्ति का सुन्दर परिचय दिया है। भवन-निर्माण का कार्य अभी भी जारी है।

यहाँ एक जैन पाठशाला भी चल रही है। तीस बालक-बालिकाएं इसमें शिक्षा लेती हैं। धार्मिक परीक्षा बोर्ड, पाथर्डी के पाठ्यक्रम का धार्मिक शिक्षण देने की व्यवस्था है। स्थानीय श्रावक संघ ही पाठशाला का व्यय वहन करता है।

यहाँ व्यवस्थितरूप से वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ का निर्माण हो चुका है। यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता निम्न प्रकार हैं —

श्रीमान् सेठ जोधराजजी, श्री फूलचन्दजी, श्री दीपचन्दजी, श्री केशरजी, रतनलालजी, श्री मागीलालजी।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, झाबुआ (मालवा)

यहाँ एक पुस्तकालय है जिसका नाम है "श्री वर्धमान स्था० जैन पुस्तकालय" दो। स्थानक भी बने हुए हैं। श्रीमती सुन्दर बाई ने १,१००) रु० में एक मकान खरीद कर श्राविकाओं के धर्मध्यान-हेतु दिया है।

यहाँ के निम्नलिखित कार्यकर्ता हैं जो सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में प्रमुखता से भाग लेते हैं —

श्री सूरजमलजी, घासीरामजी कटकानी, श्री वेणीचन्दजी, नन्दाजी रूनवाल, श्री राजमलजी, सौभागमल जी मेहता, श्री रतनलालजी नेमचन्दजी रूनवाल, श्रीमती सुन्दरबाई, नेमचन्दजी, श्री माणकचन्दजी जवरचन्दजी रूनवाल।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, कुशलगढ (मालवा)

यहाँ एक पुराना पौषधशाला भवन और श्राविकाओं के धार्मिक कार्यों के लिये एक भवन है, जो चम्पालाल जी गादिया के द्वारा खरीद कर दिया गया है। पुराने पौषधशाला भवन को साताकारी बनाने के लिये २,०००) रु० का चन्दा एकत्रित कर लिया गया है।

यहाँ व्यवस्थित रूप से श्रावक संघ का निर्माण हो चुका है। श्रावक संघ के पदाधिकारी इस प्रकार हैं — श्री चम्पालालजी, देवचन्दजी गादिया अध्यक्ष, श्री नानालालजी, हीराचन्दजी खाबिया, उपाध्यक्ष, श्री प्यारेलाल जी खेंगारजी बोरा, मन्त्री, श्री भैरू लालजी लुणाजी तलेसरा-उपमंत्री, श्री भैरू लालजी कवरजी कोषाध्यक्ष।

इनके अलावा श्री नवलजी उमेदमलजी, श्री प्रादमलजी जड़ावचन्दजी, श्री केशरीमलजी थावरचन्दजी आदि सज्जन भी उत्साही तथा धर्म प्रेमी हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, आलोट

यहाँ सम्वत् १९७२ में स्थानकवासी समाज के केवल तीन ही घर थे, किन्तु अब काफी घर बढ़ गये हैं। संघ की तरफ से एक मकान खरीदा गया और उसे ६०००) रु० लगाकर सुधारा गया। इसमें श्री वर्धमान जैन पाठशाला आज नौ वर्ष से चल रही है। संघ के सामाजिक व धार्मिक कार्यों में श्री केशरीमलजी पगारिया का तन मन-धन से सब तरह का सहयोग रहा है। यहाँ पर व्यवस्थित रूप से संघ बन चुका है। श्री रतनलालजी पगारिया अध्यक्ष और श्री बसन्तीलालजी भण्डारी मन्त्री हैं।

श्री वर्द्धमान, स्था० जैन श्रावक संघ, बिलाडा (मारवाड)

राजस्थान प्रान्त के अन्तर्गत जोधपुर डिविज़न में बिलाड़ा प्राचीन नगर है। चालीस-पचास साल पूर्व

यहाँ जैनो के लगभग ५०० घर थे किन्तु शनै -शनै यह सख्या घटती गई और आज केवल ११० घरों की संख्या रह गई है जिनमें स्थानकवासी जैनों के ६० घर हैं।

सवत् १९९७ में मरुधर केशरी मन्त्री मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज सा० का चातुर्मास होने के बाद से यहाँ का स्थानकवासी सघ एक सूत्र में सगठित हुआ। तब से सघ दिन प्रतिदिन उन्नति करता आ रहा है और आपसी प्रेम, सगठन व धर्मप्रवृत्ति बढ रही है। यहाँ पर पहिले के दो स्थानक हैं किन्तु वे अपर्याप्त होने से अभी-अभी एक भव्य स्थानक का निर्माण किया जा रहा है। विलाड़ानगर में यह भवन अपनी सान का एक ही होगा और इसमें ३५,०००) रु० खर्च होंगे। दो तीन माह में बन कर सम्पूर्ण हो जायगा।

मरुधर केशरी की प्रेरणा से यहाँ सवत् १९९७ मे एक नवयुवक मण्डल "वीर दल मण्डल" की स्थापना हुई थी, जिसने सभी क्षेत्रों में आशातीत उन्नति की है। सघ की तरफ से एक पुस्तकालय भी नियमित रूप से चल रहा है।

सघ का चुनाव बालिग मताधिकार के आधार पर हर तीसरे साल होता है। वर्तमान श्रावक सघ के पदाधिकारी श्री पुखराजजी ललवानी, अध्यक्ष, श्री मोहनलाल जी भडारी, उपाध्यक्ष श्री मोहनलालजी कटारिया, मन्त्री श्री चम्पालालजी जागड़ा, उपमन्त्री और श्री गेहरालालजी पगारिया कोषाध्यक्ष और अन्य ५ सदस्य हैं।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, जालिया (अजमेर)

स्थानीय सघ के तत्वाधान में गत पाँच वर्षों से स्वाध्याय सघ चल रहा है, जो प्रान्त-मन्त्री पण्डित मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० के सदुपदेश से स्थापित हुआ था। सघ की तरफ से पुस्तकालय भी चलाया जा रहा है। स्थानीय सघ के मुख्य कार्यकर्ता श्री गजराजजी कोठारी हैं जो सघ के मन्त्री हैं। धार्मिक कार्यों में निम्नाकित सज्जन बड़ी दिलचस्पी से भाग लेते हैं —श्री मोतीलाल जी श्री श्रीमाल, श्री शिवदानसिहजी कोठारी, श्री गुलाबचन्दजी लोढ़ा।

यहाँ स्थानकवासियो के ३० घर हैं और धार्मिक कार्यों के लिये तीन स्थानक हैं। धर्मप्रेम व सामाजिक सगठन खूब अच्छा बना हुआ है।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, कानपुर

गत पचास वर्षों से श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सघ की एक सर्वस्वीकृत संस्था यहाँ चल रही है। यह रजिस्टर्ड है। इन वर्षों में जो भी कार्य स्था० जैन समाज के हुए हैं—उनको पूर्ण करने का श्रेय इसी सस्था को है। सघ के पास एक विशाल स्थानक भवन है, जो किराये पर उठा हुआ है।

इसके अतिरिक्त सघ के पास एक और विशाल भवन जिसका नाम "श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी माता रुक्मणी भवन" इस भवन का ट्रस्ट बनाया हुआ है।

सघ की तरफ से श्री वर्धमान पुस्तकालय' भी चलाया जा रहा है। इस पुस्तकालय के माध्यम से समाज ; नवयुवकों में धार्मिक जागृति का यथेष्ट प्रचार किया जा रहा है।

सघ की कार्यकारिणी समिति की रचना इस प्रकार की गई है —

श्रीमान् छगामलजी जैन, अध्यक्ष, श्री० किशनलालजी जैन तथा श्री० जगजीवन शिवलाल भाई, उपसभापति हैं। श्री० पवन कुमार जी जैन प्रधान मन्त्री हैं। बच्चू भाई और श्री० रोशनलालजी जैन, मन्त्री हैं तथा श्री नरोतम भाई कोषाध्यक्ष हैं।

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, बड़ी सादड़ी

यहाँ निम्नांकित प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं, जिनका सामाजिक और धार्मिक कार्यों में प्रमुख भाग रहता है :—

श्री बस्तीमलजी मेहता, श्री सेंसमलजी मेहता, श्री बोतलालजी पितलिया, श्री भूरालालजी मारू, श्री विरदीचन्दजी गांग, श्री डबेलालजी मेहता, श्री माधवलालजी नागौरी, श्री कजौड़ीमलजी नागोरी, श्री फूलचन्दजी जालोरी।

उपरोक्त सभी व्यक्ति अटूट श्रद्धा के साथ समाज की सवा करते है।

कन्या पाठशाला

यहाँ एक कन्या पाठशाला भी चल रही है। इसमें दो अध्यापिकायें है। लगभग १०० कन्याएं शिक्षा प्राप्त करती हैं। आपसी चन्दे से खर्च की पूर्ति की जाती है। मासिक खर्च १००) रु० हैं।

श्री वर्द्ध० श्वे० स्था० जैन श्रावक संघ, देशनोक

यहाँ एक मात्र स्थानकवासी संस्था है जिसका नाम 'श्री जैन जवाहर-मडल देशनोक' है। यहाँ श्रावक संघ की स्थापना हो चुकी है। निम्न मुख्य-मुख्य कार्यकर्ता हैं —

श्री० नेमचन्दजी गुलगुलिया, सभापति, श्री० अबीरचन्दजी भूरा, उपसभापति, श्री० लूनकर जी हीरावत, मन्त्री, श्री० हुलासमलजी सुराना, उपमन्त्री और श्री रामलालजी भूरा कोषाध्यक्ष हैं।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, बारा (कोटा)

यहाँ स्थानकवासी भाइयों के २०-२१ घर है। एक धर्मस्थानक भी है जिस पर 'श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ' का बोर्ड लगा हुआ है। वैधानिक चुनाव होता है। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष एवं मन्त्रीगण अपना-अपना कार्य सुव्यवस्थित रीति से करते हैं।

यहाँ साधु-साध्वी जी का पधारना बहुत कम होता है। कॉन्फरन्स प्रचारक भी कभी नहीं आते हैं। फिर भी स्था० जैन पत्र मंगाकर समाज की प्रगति से अवगत होते रहते हैं। यहाँ का संघ अन्यत्र आर्थिक सहायता भी देता रहता है। एक वाचनालय तथा धार्मिक शिक्षण का भी प्रबन्ध है।

यहाँ सौराष्ट्र से आए हुए ६-७ कुटुम्ब स्थायी रूप से बस गए हैं। संघ के प्रत्येक कार्य में इनका अच्छा सहयोग प्राप्त है।

प्र० वक्ता, जैनदिवाकर श्री० चौथमलजी म०, व० प० मुनि श्री केवलचन्दजी म० सा० यहाँ शेष काल में पधारे थे। उनके सार्वजनिक व्याख्यानों से जैन-अजैन जनता ने अच्छा लाभ उठाया।

श्री ताराचन्द भाई, श्री मणिलाल भाई आदि-आदि यहाँ के संघ के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

श्री श्वे० स्था० जैन सभा, पंजाब

एस० एस० जैन सभा, पंजाब का जन्म १९११ में गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज की प्रेरणा से हुआ था, कुछ साधुओं के सम्बन्ध में वे लोकमत (Public opinion) की योजना करना चाहते थे। सभा के एकत्रित होते-होते मूल कारण मिट गया तो निमन्त्रण देने वालों ने अपने प्रयास को विफल जाने देने से रोकना और अवसर को प्रयोग [illegible] बुद्धिमत्ता समझी। स्व० बाबू परमानन्दजी वकील, कसूर, स्व० रायसाहिब टेकचन्दजी और उनके विद्यमान

अवशिष्ट साथी लाला गन्डामलजी ने सोचा कि लोकमत तैयार करना ही तो सभा का परम अभिप्राय था। उन्होंने आमन्त्रित सज्जनों के सामने सामाजिक, धार्मिक आदि प्रश्नों के बारे में विचारने और निर्णय करने का प्रोग्राम उपस्थित किया, इस प्रकार इस संस्था और उसके उपयोग की नींव उन महानुभावों ने रखी। प्रत्येक वर्ष वे इस संस्था का सदेश लेकर पजाब, पेप्सु आदि, जो सभा के कार्यक्षेत्र थे—के किसी न-किसी भाग में जाते रहे।

सभा जब तक उत्साह से कार्य में लगी रही, इसने जैन-जनता का बहुत अच्छा पथ-प्रदर्शन किया। इसके कार्य और कार्यकर्ताओं के चुनाव में कोई साम्प्रदायिक भाव काम नहीं करता रहा। इसने अपने उत्सवों के प्रधानों के चुनाव में श्वेताम्बर और दिगम्बर सभी प्रकार के सज्जनों के गुणों और योग्यता का उपयोग किया। अपनी प्रवृत्तियों में सर्वप्रकार के जैनों के अतिरिक्त जैनेतर विद्यार्थियों को भी उन्हीं शर्तों पर अग्रसर किया। इसी कारण से इसकी संस्था 'श्री अमर जैन होस्टल' पजाब यूनिवर्सिटी से मान्य थी और यूनिवर्सिटी से उसको ग्राट भी मिलती थी।

सन् १९२३ में सभा ने प्रस्ताव पास किया था कि कोई जैन यदि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि से शादी कर लेगा तो सभा उसको बुरा नहीं समझेगी। विधवा विवाह की स्वीकृति सभा ने १९२८ में दे दी थी। १९३० में मृतक के सम्बन्ध में शोक मनाने को चौथे तक सीमित कर दिया था। सम्बन्धियों (लड़के-लड़की वालों) के परस्पर व्यवहार को सभा ने सरल किया और लेन-देन के भार से पड़े सकोच को दूर किया। परस्पर स्नेह और उदारता, सहयोग का रास्ता खोला। ओसवालों में दस्से-बीसे के दरम्यान भेदभाव के रिवाज़ को दूर किया। रिश्ता-नाता सरल किया। नाच और आतिशबाजी बन्द की और बड़ी-बड़ी बारातों को ६० रेलवे टिकट तक सीमित किया। दहेज की सीमा ५००) तक बाँध दी। चार-गोत्र की वर्जना को शादी विवाह के लिये हटाया क्योंकि विवाहादि रिश्ते-सम्बन्ध की सीमा अति सकीर्ण होती जाती थी। सगनी आदि के लिए केवल पत्र-व्यवहार की प्रथा पर्याप्त नियत की, सम्बन्धियों के मेल-मिलाप पर, विशेषत प्रथम बार के मिलाप पर, जो भारी खर्च और लेन-देन का रिवाज था, उसको रोका। दर्शनार्थ या उत्सव पर आये हुए रिश्तेदारों को भेंट देने-दिलाने से मना किया। मिठाई बाँटने और दूध-मलाई की पैंचोदगियों को बिल्कुल सरल और कम खर्चीली बनाया, बारातों के ठहरने-ठहराने के काल को भी सीमित किया। समय पाकर सभा के यह सब प्रयास सफलता पाकर समाज के हित का कारण बने।

सभा ने अपने उत्साहपूर्ण जीवन-काल में जैन विद्यार्थियों की आर्थिक सहायता छात्रवृत्ति आदि देकर की। इस समय भी ऐसे अनेक सज्जन विद्यमान हैं जिन्हें इस प्रकार की हितकर सहायता से बड़ा लाभ पहुचा हुआ है। गो सब ने इस क्रम के जारी रखने में उचित दृष्टि जाहिर नहीं की है और सभा की सहायता को लौटाकर वृत्ति फण्ड को जीवित रखने का कारण नहीं बने हैं। उस समय की आवश्यकताओं के अनुसार सभा इस यत्न में भी सफल हुई कि लाहौर सेन्ट्रल ट्रेनिंग कॉलेज में (तब यही इस प्रकार की संस्था थी) B T में एक, S A V और J A V में दो-दो जैन विद्यार्थी इसकी सिफारिश पर प्रतिवर्ष लिए जा सकें। जब वर्तमान आचार्य श्री और डॉ० वुलनर जो उन दिनों Oriental College के प्रिन्सिपल और यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार थे, १९१६ में दोनों का मिलन हुआ तो पजाब जैन सभा के प्रयास से M A संस्कृत में जैन दर्शन (Jain Philosophy) का alternative paper नियत हो गया। जैन अभ्यासियों के हितार्थ १९१६ में लाहौर में श्री अमर जैन होस्टल का जन्म हुआ १९२० में कुछ सज्जनों की आर्थिक सहायता और प्रभाव से इसका अपना भवन बनना शुरू हो गया। इस भवन की आधारशिला पंजाब यूनिवर्सिटी के Vice Chancellor ने रखी। इसी होस्टल का २,३८,०००) रुपये का क्लेम (claim) पुनर्वास विभाग से इन्हीं दिनों मजूर हुआ है।

सभा ने अपने इस जीवन-काल में साधु समाज से सम्बन्धित कई प्रश्नों में भी सम्मति देने से सकोच

नहीं किया। स्व० आचार्य श्री सोहनलालजी म० का सहयोग सभा को सदैव प्राप्त रहा। जब सभा ने इसका ध्यान दीक्षादि महोत्सवों के असीम खर्च और अपव्यय की ओर आकर्षित किया तो उन्होंने सम्मति प्रकट की तथा जीवन-पर्यन्त वे इसको कार्यान्वित करते रहे। सभा के विचारों को आचार्य श्री आदर से देखते रहे और आवश्यकता के समय उनसे सलाह परामर्श भी लेते रहे।

जब समस्या उपस्थित हुई तो १६४१ में सभा ने पूर्व परम्परा के अनुसार समाज के विशेष हित के लिए और दोष को दूर हटाने के लिए साधुवर्ग के प्रश्न में हस्तक्षेप करने में सकोच नहीं किया। सभा के आन्दोलन करने पर कई साधुओं के सम्बन्ध में साधु श्रावक सयुक्त जाँच कमेटी बनी। जैन इतिहास में सम्भवतः यह प्रथम सफल प्रयास था।

बँटवारे के बाद पजाब की राजधानी चण्डीगढ़ बनी है। एक विशाल सुन्दर नगर बसाया जा रहा है। स्वभावतः राजकाजके सर्व विभागों का केन्द्र वहीं होगा। यूनिवर्सिटी भी वहीं होगी। हाईकोर्ट भी वहीं होगा। इस प्रकार राजकीय और सास्कृतिक तथा सामाजिक जीवन वहाँ केन्द्रित हो जाएगा। अनेक प्रकार की शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के कॉलेज आदि का विकास सरकार वहीं करेगी। इसलिए विद्यार्थियों को वहाँ जाने और रहने की विशेष जरूरत होगी। बल्कि यूँ कहना चाहिए कि पजाबवासियों का सम्बन्ध और वास्ता चण्डीगढ़, उसके कार्यालयों, न्यायालयों और शिक्षालयों से अवश्य होगा।

इसलिए पजाब की राजधानी चण्डीगढ़ में जैनों की ओर से वहाँ के सास्कृतिक और सामाजिक जीवन में पर्याप्त भाग लेने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वहाँ पर जैन विद्यार्थियों के लिए उनकी विशेष जरूरतों के अनुसार सुविधाओं से परिपूर्ण होस्टल बनाया जाए। जहाँ कम से-कम १०० विद्यार्थी रह सकें। वहाँ पर जैनाभ्यास के लिए लायब्रेरी और रीडिंग रूम भी हो। व्याख्यान हॉल भी हो। उपाश्रय (स्थानक) भी हो जिससे साधु साध्वी अपने भ्रमण में वहाँ भी उपदेशामृत का प्रसार कर सकें। समय आने पर स्कूल, कालेज आदि सस्थाएँ भी हों और इन सब के लिए ज़मीन अभी से ले लेनी चाहिए।

हर्ष की बात है कि पजाब सभा ने यह जमीन ले ली है। जमीन उस खंड में है जहाँ विद्या सम्बन्धी उस नगर की प्रवृत्तियाँ होंगी। प्राय २४००० वर्ग जमीन सभा को सस्ते दामों पर मिली है। पंजाब सभा के प्रमुख लाला हरजसरायजी जैन, अमृतसर, ज० से० लाला छज्जूरामजी जैन, पटियाला तथा खजाँची श्री प्यारेलालजी जैन, पटियाला हैं।

श्री एस० एस० जैन सभा अमृतसर

श्री सोहनलाल जैन कन्या पाठशाला

यह अमृतसर की जैन बिरादरी द्वारा संचालित है। इसमें आरम्भ से लेकर कुल ६ श्रेणियाँ है। १,६००) रु० खर्च कर दो मकानों को मिलाकर एक नया भवन बना दिया गया है। इस शाला को और अधिक विकसित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

श्री अमरसिंह जीवदया-भण्डार

यह सस्था लगभग ४० वर्ष से कार्य कर रही है। इस सस्था के द्वारा रोगी पक्षियों की चिकित्सा और रक्षा की जाती है। पक्षियों के लिए यह सस्था बड़ा ही सुन्दर कार्य कर रही है।

स्थानक

यहाँ पर दो पुराने स्थानक हैं। एक का नाम है धन्न पूजा का स्थानक और दूसरे का नाम है "मानेशाह का स्थानक।" प्रथम में स्व० आचार्य शिरोमणि श्री सोहनलालजी महाराज ने बहुत काल व्यतीत किया और दूसरे में कन्या पाठशाला है।

जैन परमार्थ फण्ड सोसायटी

इस सोसायटी की तरफ से जलयांवाला बाग के पास ही में १,००,०००) रु० की लागत का विशाल और ऊँचा भवन बनवाया गया है। साधु-साध्वी प्राय अब इसी भवन में ही ठहरते हैं। एक ओर जलयांवाला बाग होने से भवन बहुत ही हवादार और सुखकर है। यह भवन अब स्थानक के रूप में काम में लाया जाता है। सचालकगण अब इसमें पुस्तकालय खोलना चाहते हैं। अमृतसर में पुस्तकों का पुराना भण्डार है।

श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति

इस समिति का प्रमुख कार्यालय यहीं है। इस समिति की प्रवृत्तियाँ और उनकी योजना का स्थान बनारस हिन्दू-यूनिवर्सिटी है। स्व० शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज की कल्पना साहित्य-प्रेम से इसका उदय हुआ। स्व० पूज्य श्री काशीरामजी महाराज शतावधानीजी के सहायक थे। इस समिति के उद्देश्य इस प्रकार है —

(१) शान्त, आचार और दर्शन के सम्बन्ध में जैन विचारों का प्रसार करना।

(२) जैन शास्त्रों और साहित्य के प्रामाणिक सस्करण प्रकाशन करना और उसे देशी तथा विदेशी भाषाओं में सब के ज्ञानार्थ प्रसारित करना।

(३) जैन मत के दर्शन, इतिहास और संस्कृति मे और उसके सम्बन्धित विषयों में सशोधन-कार्य की व्यवस्था करना और उसे प्रकाशित करना।

(४) उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये शाखाएँ, सस्थाएँ और छात्र वृत्तियाँ आदि स्थापित करना, और उनको कायम रखना।

(५) ऊपरोक्त कामों के लिये हॉस्टल, लायब्रेरी, कॉलेज, संस्थाएँ और व्याख्यान स्थान आदि के लिये और समिति के अन्य उद्देश्यों के विकास तथा उन्नति के लिये भूमि या अन्य सम्पत्ति उपार्जन करना।

इस सम्बन्ध में यह स्पष्ट कर देना आवश्यक होगा कि इस समिति की व्यवस्था से तीन स्कालर बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी मे सशोधन-कार्य के फलस्वरूप पी० एच० डी० होगए है। उनकी पुस्तकोंके विषय इस प्रकार हैं —

(१) "जैन ज्ञानवाद"—डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री एम० ए० पी-एच० डी०।

(२) "उत्तरी भारत का राजनीतिक इतिहास सन् ६५० ई० से १३०० तक"
जैन साहित्य के आधार से डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी एम० ए० पी-एच० डी०।

(३) जैन दर्शन के कर्म सिद्धान्त की मनोवैज्ञानिक व्याख्या—डॉ० मोहनलाल मेहता एम० ए० पी-एच० डी०

इनके अतिरिक्त "ज्ञान सापेक्ष है" इस विषय पर पुस्तक लिखी जा रही है। यह समिति अपने ध्येय की पूर्ति के सम्बन्ध में पिछले २,५०० वर्ष से जैनों द्वारा लिखित हर प्रकार के साहित्य का जो किसी भी भाषा में है, "जैन साहित्य का इतिहास" तैयार करा रही है। इसकी तैयारी और प्रकाशन पर हजारों रुपये लगेंगे

इस समिति ने निम्न संस्थाएँ, योजनाएँ, और अन्य प्रवृत्तियाँ बनारस में आज तक स्थापित की हैं:—

(१) श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम (२) श्री शतावधानी रत्नचन्द्र लायब्रेरी—जिसका ग्रन्थ-सचय संशोधन-कार्य के

लिये और जैन साहित्य निर्माण के लिये अपूर्व है। (३) 'श्रमण' मासिक-पत्रिका (४) जैन साहित्य निर्माण-योजना (५) व्याख्यान-माला (६) स्कॉलरशिप एण्ड फैलो शिप्स।

श्री सोहनलालजी दूगड़ कलकत्ता वालों के २५,०००) रु० के दान से ३,७८ एकड़ जमीन लेने की व्यवस्था की गई है। इससे पूर्व लाला रतनचन्दजी अमृतसर निवासी और उनके भाइयों आदि की सहायता से जैनाश्रम और उसकी जमीन सन् १९४५ में बनारस में उपार्जन की थी।

प्रज्ञाचक्षु प० सुखलालजी और श्री दलसुख भाई मालवणिया जो हिन्दू-युनिवर्सिटी में जैन धर्माध्यापक हैं, इसके मार्गदर्शक हैं। इस समिति का कार्यवाहक-मण्डल इस प्रकार है —

श्री लाला त्रिभुवननाथ, अध्यक्ष, श्री हरजसरायजी जैन मन्त्री, लाला मुन्नीलालजी खजाची। इनके सहायकर्त्ता पजाब भर में फैले हुए हैं। श्री कृष्णचन्द्रजी जैन दर्शनाचार्य 'श्रमण' पत्रिका के सम्पादक हैं।

श्री एस० एस० जैन सभा, नाभा (पेप्सु)

पजाब के स्थानकवासी मुनिराजों के लिये यह पुराना क्षेत्र है। स्थानकवासियों के यहाँ पहले काफी घर थे किन्तु समय की परिवर्तनशील परिस्थितियों को लेकर अब केवल १५-२० घर ही हैं। जिसमें ओसवाल और अग्रवाल दोनों शामिल हैं। लगभग २२ वर्ष से रुग्णावस्था के कारण प० मुनि श्री रामस्वरूपजी महाराज यहाँ विराजमान हैं। आपके सदुपदेश से प्रभावित होकर स्थानीय जैन समाज "रामस्वरूप जैन पब्लिक हाई स्कूल" इस वर्ष से चला रही है।

इतनी छोटी समाज होते हुए भी जैन सभा के पास समाज के कार्यो के लिए चार भवन हैं, एक स्थानक है। इन भवनों में समाज की तरफ से विभिन्न गति-विधियाँ गतिमान हो रही है।

यहाँ की जैन सोसायटी रजिस्टर्ड है। सोसायटी के श्री दीवान मोहनलालजी प्रधान, श्री ज्ञानचन्दजी ओसवाल, उपप्रधान, श्री विद्याप्रकाशजी ओसवाल, मन्त्री हैं।

स्थानीय जैन हाई स्कूल के लिये नवीन भवन का निर्माण-कार्य चालू है।

श्री श्वे० स्था० जैन सभा, फरीदकोट (रजिस्टर्ड)

फरीदकोट मेनलाइन (फिरोजपुर-भटिंडा-देहली) पर एक सुन्दर और रमणिक नगर है। सन् १९४८ से पहले यह फरीदकोट रियासत की राजधानी थी। यह स्थानकवासियों का प्रसिद्ध क्षेत्र है। यहाँ स्थानकवासियों के लगभग १२५ घर हैं जो ३० वर्ष से भी अधिक समय से जैन सभा के रूप में ठीक ढग से संगठित हैं। यहाँ की जैन सभा यहाँ के समाज को धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में ऊँचा उठा रही है। लगभग ३० वर्ष से यहाँ जैन कन्या पाठशाला चल रही है जो अब (Girls High School) बन चुका है और पेप्सु सरकार से मान्य है। यहाँ दस साल तक जैन कन्या महा विद्यालय भी चलता रहा, जिसमें रत्न, भूषण और प्रभाकर की परीक्षाएँ पास कराई जाती थीं, किन्तु छात्राओं के अभाव के कारण यह विद्यालय बन्द करना पडा और इसका भवन युनिवर्सिटी की परीक्षाओ का कन्याओं के लिए केन्द्र है।

जैन सभा का मन्त्री मण्डल इस प्रकार है :—

श्री किशोरीलालजी जैन बी० ए० एल-एल० बी०, प्रधान, श्री कस्तूरीलालजी, उपप्रधान, श्री अमरनाथजी तातेड, विद्यामन्त्री, श्री दीवानचन्दजी बोथरा, अर्थमन्त्री, श्री बृजलालजी बोथरा, महामन्त्री, श्री बाबूरामजी पशौरिया, स्थानक मन्त्री, श्री रामलालजी पशौरिया, रीतिरिवाज मन्त्री।
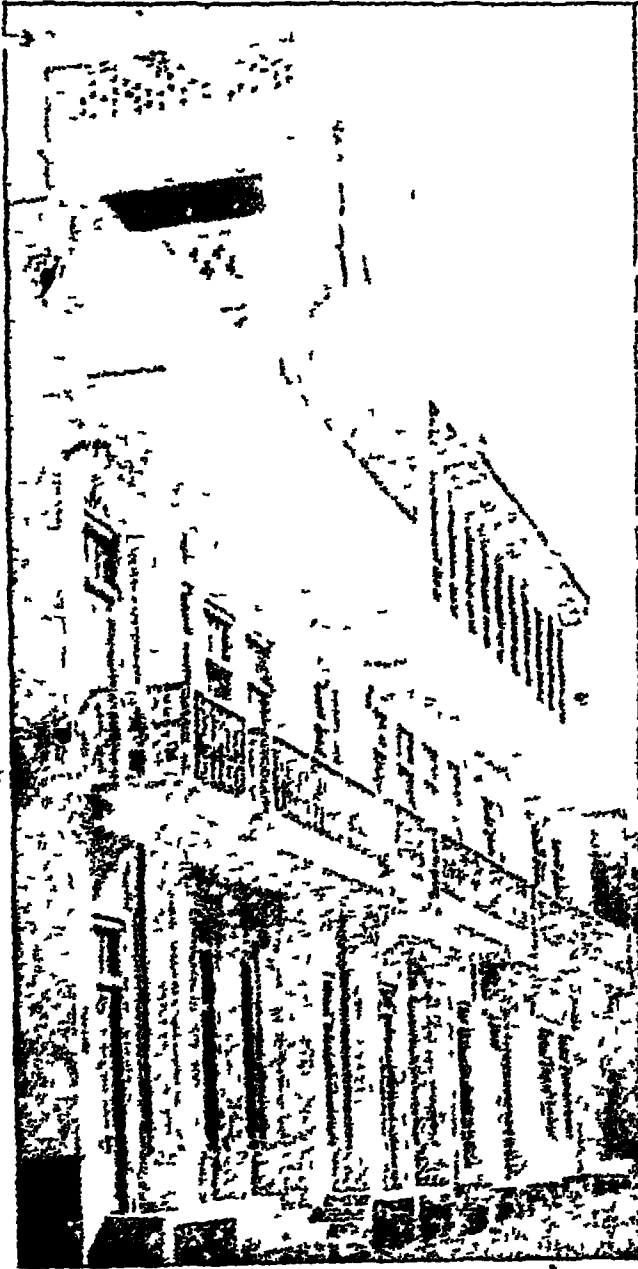
एम० एस० जैन सभा फरीदकोट

श्री किशोरीलालजी जैन सभा के प्रधान और यहाँ के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता हैं। श्री मुंशीरामजी जैन बी० ए० बी० टी०, जो गवर्नमेंट हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं, प्रोफेसर हंसराजजी जैन, एम०ए०, श्री शिवचंदामजी जैन बी० ए० बी० टी०, श्री विद्यारतन बी०ए० एम०ए०बी०, श्री दीवान चन्दजी जैन, बी० ए० बी० टी० सभा की विभूति हैं। श्री रोशनलालजी बी० ए० बी० टी० विशेष शिक्षा के लिए लन्दन हो आये हैं। श्रीमती कमला जैन बी० ए० बी० टी० महिला जाति की गौरव है। श्री किशोरीलालजी रक व श्री ज्ञानचन्दजी सर्राफ सभा के स्तम्भ हैं।

यहाँ महावीर जयन्ती उत्सव निरन्तर ३० वर्षों से धूमधाम से मनाया जाता है, जो कि फरीदकोट के प्रसिद्ध मेलों मे गिना जाता है। महावीर जयन्ती और संवत्सरी की हमेशा सार्वजनिक छुट्टी होती आई है। संवत्सरी के दिन सरकारी आज्ञा से कसाई खाने, मीट मार्किट और बूचड़खाने बन्द रहते हैं।

जैन सभा की सम्पत्ति इस प्रकार है —

(१) विशाल स्थानक (बरकतराम जैन हॉल के नाम से), (२) महावीर जैन भवन, (३) जैन गेस्ट हाउस, (४) स्कूल की दो बिल्डिंगें (५) चार दुकानें और एक जगह तथा (६) भूमि २१ एकड़

उपरोक्त सम्पत्ति के दाताओं के नाम क्रमश इस प्रकार हैं —स्वर्गीय बरकत रामजी बोथरा, स्वर्गीय बसंतीमलजी बोथरा, स्वर्गीय मुंशीरामजी राका, स्वर्गीय देवीचन्दजी बोथरा स्वर्गीय श्रीमती बाई बीरो बोथरा, स्वर्गीय श्रीमती चन्दोबाई बोथरा आदि।

जैन सभा फरीदकोट सरकारी तथा गैर-सरकारी क्षेत्रों में प्रसिद्धि के साथ-साथ प्रतिष्ठा लिये हुए है।

श्री एस० एस० जैन सभा मालेर कोटला (पेप्सू)

उक्त सभा का चुनाव प्रतिवर्ष होता है। बिरादरी में संप अच्छा है। यहाँ चार सन्त १४-१५ साल से ठाणापति हैं। दो सौ घरों की आबादी है। निम्न पदाधिकारी हैं :—
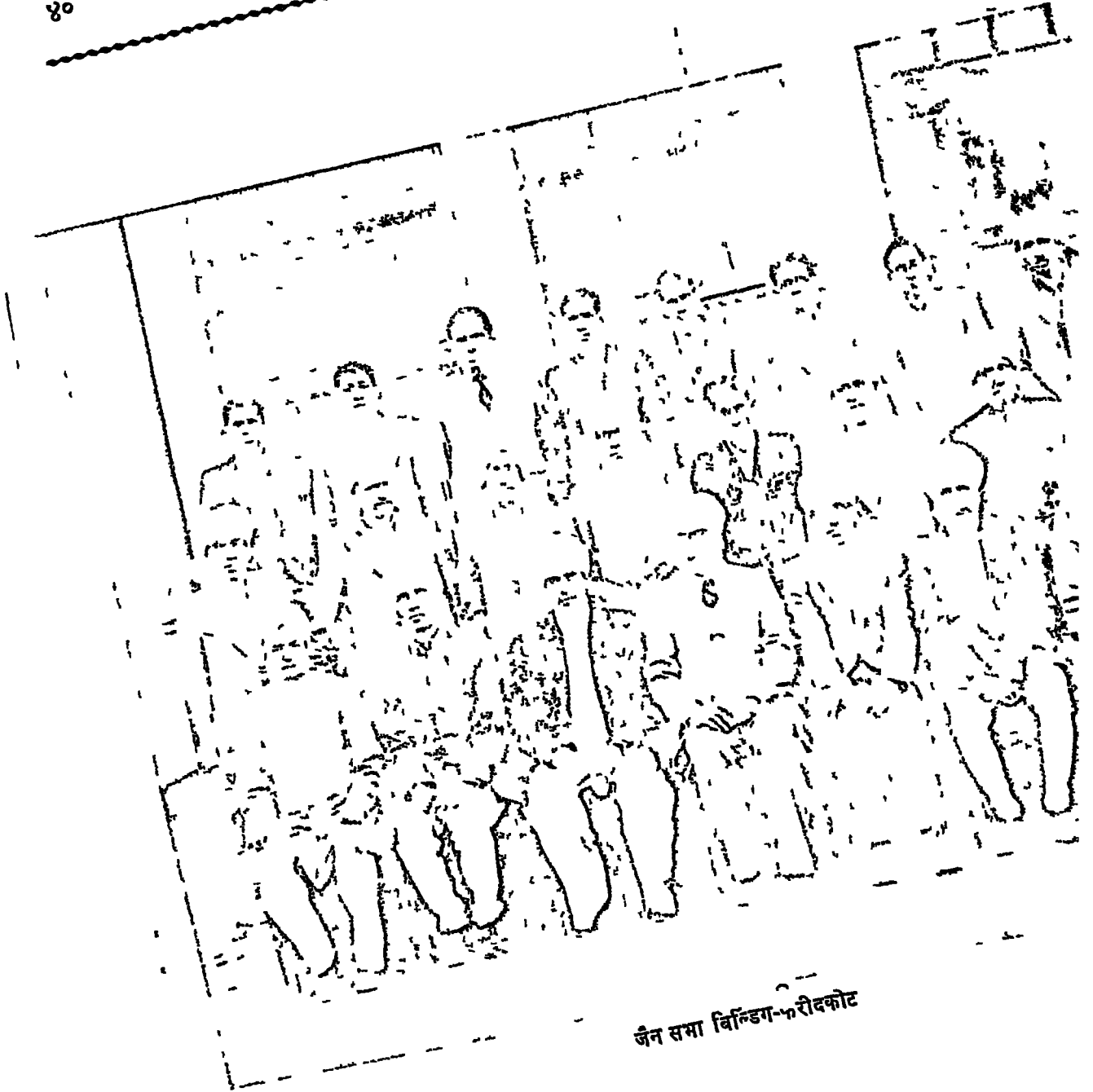
जैन सभा बिल्डिंग-फरीदकोट

एस० एस० जैन भवन मालेरकोटला
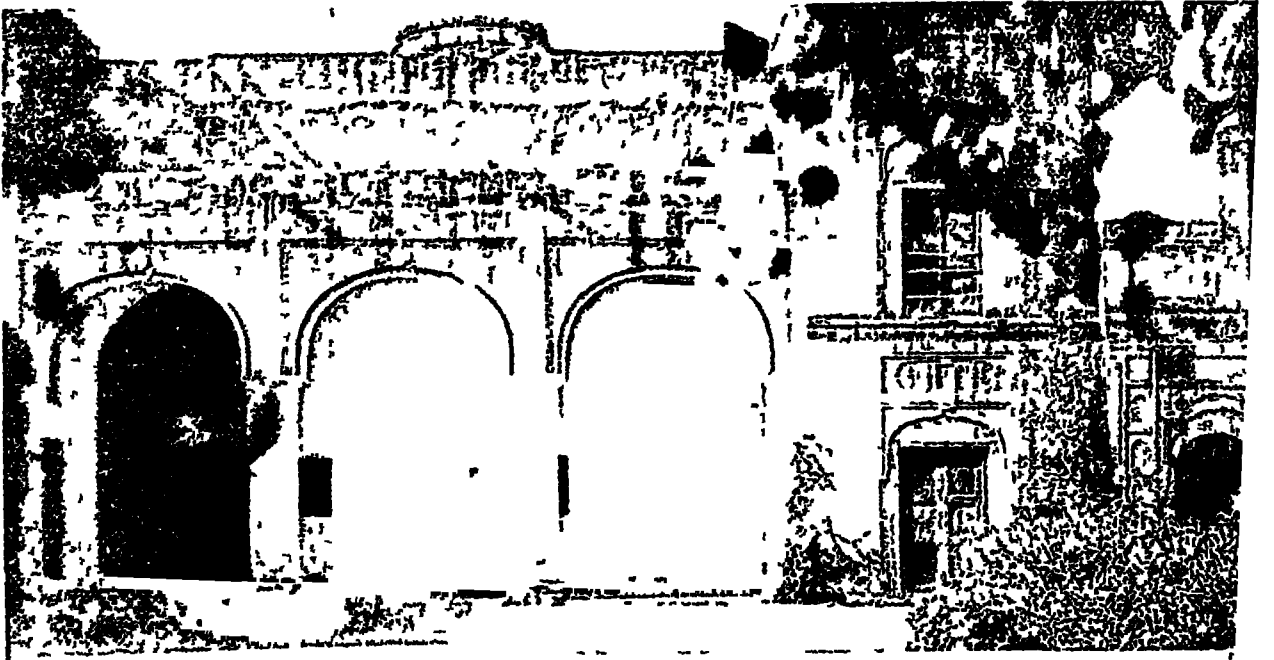
एस० एस० जैन गर्ल्स हाई स्कूल मालेरकोटला

लाला अतरचन्दजी जैन प्रधान, ला० टेकचन्दजी जैन उपप्रधान, ला० देवदयालजी जैन मन्त्री, लाला खेमचन्दजी जैन, बी० ए० एल० एल० बी० उपमन्त्री लाला नौहरियामलजी जैन बज़ाज खजान्चीजी, ला० हरीचन्द ओसवाल जैन, ऑडीटर।

श्री एस० एस० जैन गर्ल्स हाई स्कूल चल रहा है। जिसकी व्यवस्था ला० टेकचन्दजी जैन, प्रधान, लाला रतनचन्दजी जैन भालेरी, उपप्रधान, और ला० जसवन्तराजजी जैन मन्त्री करते हैं।

जैन जनरल स्टोर का कार्य बा० बनारसीदासजी मित्रा, मैनेजर, बा० देवराजजी जैन, ऑडीटर, ला० पवनकुमारजी ओसवाल जैन खजान्ची और मिस० सुशीला जैन एम० ए० बी० टी० प्रिंसिपल करते हैं।

एस० एस० जैन युवक सभा–का कार्य ला० रतन चन्दजी जैन भालेरी, प्रधान, ला० ज्ञानचन्दजी जैन बज़ाज, उप प्रधान, बा० प्रेमचन्दजी जैन भालेरी, मन्त्री, मि० ओमप्रकाश जी जैन, उप मन्त्री और ला० दयाराम जी नुनामी खजान्चो और स्टोर कीपर मिलकर करते हैं।
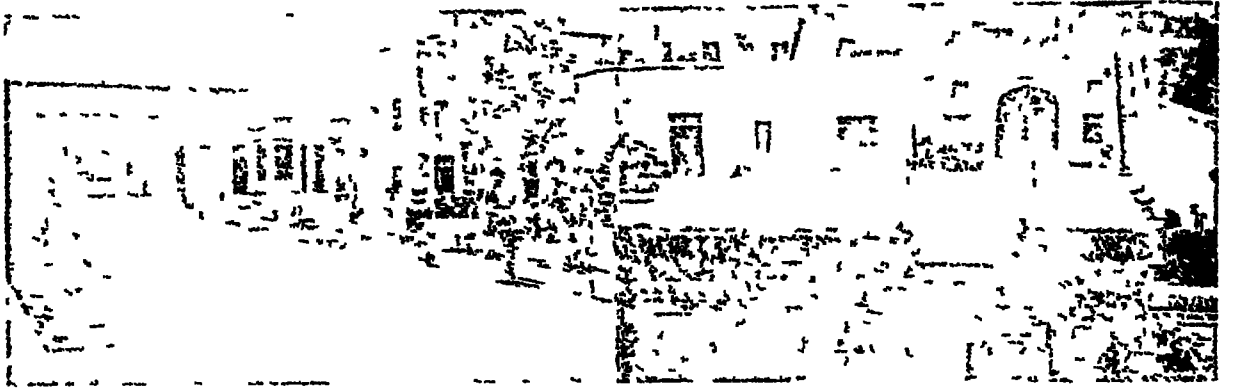
एस० एस० जैन गर्ल्स हाई स्कूल, मालेरकोटला

श्री स्थानकवासी जैन सभा, मेरठ

यह एक नवनिर्मित सभा है। इस संगठित संगठन के निर्माण में पश्चिमी पंजाब की विभिन्न बिरादरियों का मिलन हुआ है। इससे पहले कि जैन बिरादरी, मेरठ का परिचय दें—उसमें सम्मिलित बिरादरियों का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक हो जाता है जिनको कि देश विभाजन के कारण पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आना पड़ा था। जो-जो बिरादरियाँ मेरठ में आकर एकत्रित हुईं उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है —

१ रावलपिण्डी की जैन-बिरादरी—पचास वर्ष पूर्व ही इस बिरादरी का संगठन हुआ था। यह बिरादरी बड़ी ही सुसंगठित, प्रभावशाली, धर्मज्ञ और साधु-मुनिराजों की अनन्य भक्त तथा सेवा करने का आदर्श उपस्थित करने वाली हुई है। यहाँ के लोगों की आजीविका का मुख्य साधन जमींदारी, सर्राफी, साहूकारी और कपड़े आदि का था। सन् १६१३ में मुनि श्री धनीरामजी महाराज की प्रेरणा से "श्री सुमति जैन मित्र मण्डल की स्थापना हुई। इस मण्डल के प्रयत्न से जैन कन्या पाठशाला की स्थापना हुई। श्री दीवानचन्दजी तथा श्री चुन्नीलालजी के प्रयत्नों से इस मंडल के पास २०,०००) रु० एकत्रित हो गए जिनसे अनेक गतिविधियों–जैन औषधालय, महावीर जैन लायब्रेरी आदि स्थापित हुईं। श्री जैन सुमति ट्रैक्टमाला प्रारम्भ की गई, जिनसे मांस निषेध आदि

का प्रचार किया गया। स्व० पूज्य श्री खजानचन्दजी महाराज के सदुपदेश से श्री महावीर जैन माडर्न हाई स्कूल स्थापित किया गया। इस हाई स्कूल के लिए लाखों का फण्ड एकत्रित हो गया था। यह हाई स्कूल कॉलेज का रूप धारण करने ही वाला था कि देश का विभाजन हो गया।

इस प्रकार रावलपिण्डी की जैन बिरादरी ने समाज और धर्म की उन्नति के लिए अनेक प्रयत्न किये। श्री पिंडीदासजी जैन बी० ए०, श्री रामचन्द्रजी, श्री धर्मपालजी, श्री शादीलालजी आदि अनेक योग्य कार्यकर्ताओं का इस बिरादरी को नेतृत्व मिला। अब इस बिरादरी का दो तिहाई भाग श्री जैन बिरादरी, मेरठ में सम्मिलित होकर वहाँ की बिरादरी को उन्नतशील बनाने में सहयोग दे रहा है।

स्यालकोट की जैन बिरादरी—यह बिरादरी पंजाब की सबसे बड़ी बिरादरी थी जो अत्यन्त सुसंगठित, प्रभावशाली, धर्मज्ञ तथा व्यापार में अतिकुशल थी। साधु-संतों की सेवा-सुश्रूषा तथा धार्मिक कार्यों में बिरादरी ने प्रशंसनीय कार्य किए। श्री जैन कन्या पाठशाला और औषधालय वहाँ की उन्नत संस्थाएँ थीं। देश विभाजन के कारण यह बिरादरी भारत के अनेक नगरों में अवस्थित हो गई। अनुमानतः ४० घर मेरठ शहर में आकर बसे हैं। इन बिरादरियों के अलावा अन्य नगरों की जैन बिरादरियाँ मेरठ में आकर बस गई हैं, जिससे मेरठ की जैन-बिरादरी का विराट् स्वरूप बन गया है।

जैन बिरादरी, मेरठ—यहाँ की जैन बिरादरी ने "जैन नगर" निर्माण करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी है। यह जैन नगर मेरठ शहर स्टेशन के निकट तथा शहर व सदर के समीप रमणीय स्थान पर श्री जैन पुरुषार्थी कोओपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी के परिश्रम से बसाया जा रहा है। अनुमानतः २५० घर इस नगर में बसेंगे। इस जैन नगर में विशाल श्री जैन उपाश्रय का कुछ भाग बन चुका है। श्री जैन महिला उपाश्रय, श्री जैन औषधालय, पुस्तकालय तथा स्कूल आदि संस्थाओं के प्रारम्भ करने की योजनाएँ विचारणीय हैं।

इस सभा की कार्यकारिणी में १३ सदस्य हैं। श्री मुन्नालालजी अध्यक्ष, श्री चिरंजीलालजी मन्त्री, और श्री अतरचन्दजी कोषाध्यक्ष हैं।

यह सभा मेरठ में जैन समाज में संगठन, प्रेम तथा उन्नति लाने के लिए प्रयत्नशील है। प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती, पर्यूषण पर्व तथा संवत्सरी पर्व के अतिरिक्त अन्य छोटे-मोटे उत्सवों को सोत्साह मनाकर समाज में संगठन तथा सामाजिक और धार्मिक उन्नति करने में संलग्न हैं।

रामा मण्डी (पंजाब-पेप्सु)

यहाँ पर अर्से से एस० एस जैन सभा कायम है। जिसके अधिकारी अध्यक्ष, लाला रौनकलालजी जैन, उपाध्यक्ष, लाला करमचन्दजी जैन, मन्त्री, लाला बनारसीदासजी तातेड़ जैन, उपमन्त्री लाला रूपचन्द्रजी जैन और खजान्ची—लाला कुन्दनलालजी जैन हैं।

इन सज्जनों ने तन-मन-धन से जैन समाज की बहुत अधिक सेवाएँ की है और आप लोगों के ही प्रयत्नों से इस समय रामामण्डी में समाज की तीन इमारतें हैं।

(१) इमारत—सन् १९३० में खरीद कर सन् १९३३ में बनाई।
(२) इमारत—सन् १९४७ में खरीदकर सन् १९४९ में बनवाई।
(३) इमारत—सन् १९५५ में खरीद की।

श्री श्वे० स्था० जैन संघ, बामनौली

यहाँ के संघ के प्रमुख कार्यकर्ता श्री हरदेवसहायजी श्री रामस्वरूपजी, मैनेजर श्री जैन पाठशाला, श्री

सुजानसिंहजी, श्री त्रिलोकचन्दजी और श्री उग्रसेनजी हैं।

यहाँ एक जैन पाठशाला प्राइमरी शिक्षा की है जो गवर्नमेन्ट से रिकग्नाइज्ड है। इसके मेनेजर श्री रामस्वरूपजी जैन हैं। आप हिकमत का कार्य करते हैं। और साधु-साध्वियों की सेवा हार्दिक भाव से करते हैं।

श्री श्वे० स्था० जैन संस्थाएँ एलम (मुजफ्फर नगर)

स्थानीय स्था० समाज की सतत प्रेरणा से संचालित निम्न संस्थाएँ सुचारु रूपेण कार्य कर रही हैं —

जैन स्थानक—तीन मंजिला है। व्याख्यान के लिए दो हॉल हैं। भव्य भवन है।

श्री ऋषिराज जैन पुस्तकालय—के संस्थापक हैं श्री १००८ श्री श्यामलालजी महाराज। आपने यहाँ कई चातुर्मास कर समाज में अच्छी जागृति की। पुस्तकालय के पूर्वाध्यक्ष श्री मूलचन्दजी जैन थे। पुस्तकालय में करीब १५०० पुस्तकें हैं। वर्तमान में इसका संचालन नवयुकों के हाथ में है। इनके मुख्य कार्यकर्ता श्री मोखमदास जी, इन्द्रसेनजी आदि हैं। स्वाध्याय नियमित रूप से होता है।

श्रावक संघ—श्री स्था० श्रावक संघ की भी स्थापना प्रचारक श्री माधोसिंहजी की प्रेरणा से हो गई है। आपके प्रभावोत्पादक भाषण का जैन अजैन जनता पर अच्छा असर पड़ा। श्री चतरसेनजी अध्यक्ष श्री मोखमसिंह जी उपाध्यक्ष, श्री जौहरीमल जी मन्त्री, श्री पूर्णमलजी उप-मन्त्री और श्री ज्योतिप्रसादजी कोषाध्यक्ष सेवा कर रहे हैं।

श्री जैन नवयुवक मण्डल, लायब्रेरी—कान्धला निवासी श्री श्रीमालजी तथा श्री महेन्द्रकुमारजी के अथक परिश्रम से प्रथम कान्धला में मण्डल कायम हुआ। बाद में इसकी शाखाएँ पडासौली और एलम में कायम की गईं। इसी मण्डल की देख-रेख में एक लायब्रेरी भी एलम में १९ जून सन् १९५१ में कायम की गई जिसके अध्यक्ष श्री मोखमदासजी तथा मन्त्री श्री इन्द्रसेनजी नियुक्त हुए। आप दोनों के सुप्रबन्ध से कई पाठक नित्य प्रति लाभ लेते हैं। श्री गरीबदासजी अपना अधिकांश समय इसकी सेवा में देते हैं।

जैनपाठशाला—इस पाठशाला की स्थापना १ जुलाई सन् १९४४ में हुई थी। इसमें जैन शिक्षा विशेष रूप से दी जाती है। लगभग ८० छात्र विद्याभ्यास कर रहे हैं। पहले इसका सुप्रबन्ध न होने से नवयुवक मण्डल ने इसका प्रबन्ध अपने हाथ में लिया। सन् १९५३ में इसकी प्रबन्ध कार्यकारिणी सभा बनाई गई जिसके श्री चतरसेनजी अध्यक्ष, श्री जोहरीमलजी, उपाध्यक्ष, श्री मोखमदासजी, मन्त्री, इन्द्रसेनजी, उपमन्त्री और श्री ज्योतिप्रसादजी कोषाध्यक्ष हैं।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, नाथद्वारा

मेवाड़ में यह नगर तीर्थ स्थान के रूप में समस्त भारत में प्रसिद्ध है। स्थानीय श्रावकसंघ व्यवस्थित और सुयोजित है। स्थानीय श्रावक संघ के श्री छगनलालजी मुन्शी अध्यक्ष, श्री चौथमलजी उपाध्यक्ष और श्री कन्हैया-लालजी सुराणा मन्त्री हैं। संघ में प्रेम का सम्बन्ध अच्छा है।

धार्मिक कार्यों के लिये संघ के पास एक पक्का स्थानक है। इसी स्थानक भवन में सभी प्रकार की धार्मिक प्रवृत्तियाँ सम्पन्न की जाती हैं।

स्थानीय समाज में नव चेतना लाने के लिये यहाँ एक "जैन सेवा समिति" नाम की संस्था है जिसकी देखरेख में लड़कां तथा लड़कियों के लिये अलग-अलग पाठशालाएँ चलती हैं। इसी समिति की देखरेख में 'मोपेरा' में एक "महावीर जैन पाठशाला" चलती है जो आज लगातार दस वर्ष से चल रही है। यह पाठशाला पाथर्डी बोर्ड की उच्चतम परीक्षाओं के लिए केन्द्र भी है।

यहाँ स्थानीय संघ की तरफ से वाचनालय तथा पुस्तकालय भी चलाया जाता है। स्थानीय संघ की तरफ से "विधवा सहायक-फंड" भी एकत्रित किया गया है जिसके द्वारा आस-पास की विधवा बहिनों की सहायता की जाती है। "श्री जैन रत्न दया फण्ड" द्वारा समय-समय पर दया-दान के लिये लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके मुख्य संचालक वकील श्री मन्नालालजी सिसोदिया हैं।

स्थानीय मुख्य कार्यकर्ता श्री चौथमलजी सुराणा द्वारा समयोचित दान होता रहता है। यहाँ स्थानकवासी जैन समाज के ७० घर हैं।

स्थानकवासी जैन समाज के विद्वान्

किसी भी समाज के विद्वान् और साहित्यकार उस समाज के गौरव होते हैं क्योंकि इन्हीं विद्वानों के द्वारा समाज का बौद्धिक विकास गतिमान होता है। बौद्धिक विचार धारा समाज के सर्वांगीण क्षेत्र को खींच-खींच कर सुन्दर तम बनाने का प्रयत्न करती है। हमारे समाज में साधु-साध्वियों की अन्य समाजों की अपेक्षा कुछ अधिकता होने से विद्वानों की इतनी कमी खटकती नहीं है किन्तु जिस गति से समाज को प्रगति करनी चाहिये थी उस गति से समाज प्रगति इसलिए नहीं कर पाया कि हमारे समाज में विद्वानों की कमी है। हमारी समाज में जो कुछ भी इने-गिने विद्वान् हैं वे या तो कॉन्फ्रेन्स की तरफ से स्थापित किए गये जैन ट्रेनिंग कॉलेज के हैं अथवा श्री गोदावत जैनाश्रम, छोटी सादड़ी, श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर, श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम बनारस, सेठिया जैन विद्यालय, बीकानेर, जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला, श्री वीराश्रय, ब्यावर आदि के हैं। इनमें से बहुत सारे विद्वान् ऐसे भी हैं जो समाज के उदार श्रीमानों द्वारा दी गई छात्रवृत्ति से तैयार हुए हैं। इन सब विद्वानों के नाम हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं जो समाज की विभिन्न संस्थाओं में कार्य करते हुए पत्र-सम्पादन करते हुए, राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में, सामाजिक क्षेत्रों में अथवा व्यावसायिक कार्य करते हुए समाज में बौद्धिक चेतना जागृत कर रहे हैं:—

डॉ० दौलतसिंहजी कोठारी एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० अमृतलाल सवचन्द गोपाणी एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० इन्द्रचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० मोहनलाल मेहता एम० ए० पी० एच डी०, डॉ० अमोलकचन्दजी सुरपुरिया, एम० ए० पी० एच डी० पूना, श्री कृष्णकान्तजी, एडवोकेट, श्री रतनचंदजी जैन लुधियाना, पं० श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री आचार्य।

पं० दलसुख भाई मालवणिया 'न्यायतीर्थ', पं० हर्षचन्द्रजी, पं० कपूरचन्दजी डोसी, पं० खुशालचन्द जगजीवन करगथला, एन० के० गांधी, पं० शांतिलालजी व० सेठ, पं० प्रेमचन्दजी लोढा, पं० डाऊलालजी वैद्य पं० जोधराजजी सुराणा, पं० नन्दलालजी सुरपुरिया, वकील सज्जनसिंहजी चौधरी, पं० केशरीमलजी जैन, पं० चिम्मनसिंहजी लोढ़ा, पं० पूर्णचन्द्रजी दक, पं० रोशनलालजी चपलोत बी० ए० एल० एल० बी०, पं० श्यामलालजी, पं० बालचन्दजी मेहता एम० ए० बी० टी० (जयपुर) श्री जालमसिंहजी मेड़तवाल, एडवोकेट ब्यावर श्री मोतीलालजी श्रीमाल, श्री मयालाल शिवलालजी शेठ, श्री पं० त्रिलोकचन्दजी जैन, वकील बन्नीलालजी पोरवाल, श्री गोटीलालजी सेठियाँ, श्री रतनलालजी नलवाया, पं० बेवरचन्दजी बांठिया, पं० जसवंतराजजी, पं० लालचन्दजी मुणोत, पं० चांदमलजी जैन।

पं० महेन्द्रकुमारजी जैन, पं० रतनलालजी संघवी, पं० रोशनलालजी जैन पं० कन्हैयालालजी दक श्री नानालालजी मट्ठा, श्री केशरीकिशोरजी, श्री हीरालालजी डाबरिया, श्री समरथमलजी गोरवरू, श्री रमेशचन्द्रजी रांका।

श्री लालचन्द्जी कोठारी, प० लक्ष्मीलालजी चौधरी, प० बसन्तीलालजी नलवाया, प० धर्मपालजी मेहता, प० चन्दनमलजी कोचर (वनवट) श्री अमृतलाल झवेरचन्द्र मेहता, प० मुनीन्द्र कुमारजी भडारी, प० अम्बालालजी नागौरी, श्री भीनराजजी बाफणा, श्री मणीन्द्रकुमारजी, श्री चन्द्रकान्तजी, श्री बसन्तीलालजी लोढ़ा, प० हर्षचन्द्रजी बडोला, प० समर्थसिंहजी भड़कत्या श्री चपालालजी कर्णावट, एम० ए० श्री रिखवराजजी कर्णावट, एडवोकेट, श्री शान्तिचन्द्रजी मेहता। प० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल स्था० जैन धर्म के साहित्य क्षेत्र में बड़ा योगदान दे रहे हैं। प० बद्रीनारायणजी शुक्ल और प० चन्द्रभूषणजी त्रिपाठी ब्राह्मण कुल में जन्म लेने पर भी परीक्षा बोर्ड पाथर्डी में बहुत सेवा दे रहे हैं।

भारतव्यापी जैन सस्थाएँ

१ श्री त्रिलोकजैन पाठशाला पाथर्डी।
२ ,, अमोल रत्न जैन सिद्धान्तशाला पाथर्डी
३. ,, रत्न जैन कन्या पाठशाला पाथर्डी
४ ,, शान्तिनाथ जैन पाठशाला कोपरगाव
५ ,, अमोल जैन पाठशाला कडा
६ ,, जैन सिद्धान्तशाला अहमदनगर
७. ,, जैन कन्या पाठशाला अहमदनगर
८ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला दावडी
९ ,, महावीर जैन पाठशाला बोरी
१० ,, अमोल जैन बोर्डिंग धूलिया
११ ,, ओसवाल जैन बोर्डिंग धूलिया
१२ ,, आदर्श जैन विद्यालय बेलापुर
१३ ,, शांतिनाथ जैन पाठशाला कान्हूर
१४. ,, महावीर जैन पाठशाला सोनई
१५ ,, नेमीनाथ जैन ब्रह्मचर्याश्रम चाँदवड
१६ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला सिकन्द्राबाद
१७ ,, महावीर स्था० विद्यालय जालना
१८ ,, कानजी शिवाजी ओसवाल, जैन बोर्डिंग हाउस जलगाव
१९. ,, जैन धार्मिक पाठशाला खरवण्डी
२० ,, नारायण, तुलसीदास संस्कृत पाठशाला पचवटी
२१ ,, महावीर जैन विद्यालय औरंगाबाद
२२ ,, पद्मावाई जैन पाठशाला भुसावल
२३ ,, रत्न जैन पाठशाला बोदवड
२४ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला वरणगाँव
२५ श्री महावीर जैन पाठशाला लासलगांव
२६ ,, महावीर जैन पाठशाला जामखेड
२७ ,, जैन ओसवाल बोर्डिंग नासिक
२८ ,, जैनपाठशाला रविवारपेठ नासिक
२९ ,, आनन्द स्था० जैन पाठशाला येवला
३० ,, रत्नानन्द जैन विद्यालय राहू
३१ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला इगतपुरी
३२ ,, स्था० जैन पाठशाला मालेगाव
३३ ,, महावीर जैन पाठशाला लातूर
३४ ,, महावीर जैन पाठशाला जुन्नर
३५ ,, महावीर जैन पाठशाला घोटी
३६ ,, महावीर जैन पाठशाला फत्तेपुर
३७ ,, शान्तिनाथ जैन पाठशाला घोडनदी
३८ ,, अमोल जैन सिद्धान्त शाला घोडनदी
३९ ,, फत्तेचन्द जैन विद्यालय चिचवड
४० ,, ज्ञानोदय जैन पाठशाला जामनेर
४१ ,, महावीर जैन पाठशाला लोनावला

कर्नाटक

१. ,, हस्तीमल जैन पाठशाला शोरापुर
२ ,, जैन रत्न पाठशाला रायपुर
३ ,, महावीर जैन स्कूल सिन्धनूर
४ ,, महावीर जैन विद्यालय कोप्पल
५ ,, पार्श्वनाथ हिन्दी जैन पाठशाला हुबली

सी० पी०

१ ,, रत्नानन्द जैन पाठशाला रालेगाव

२. श्री महावीर जैन पाठशाला कारंजा
३. „ श्वे० स्था० जैन पाठशाला चउनेरा
४ „ श्वे० स्था० जैन पाठशाला अमरावती
५. „ देवआनन्द जैन विद्याभवन राजनादगांव
६. „ वर्द्धमान जैन पाठशाला बुलढाणा
७. „ जैन कन्या पाठशाला दुर्ग

मध्यभारत

१. „ धर्मदास पूनमचन्द जैन पाठशाला रतलाम
२ „ महावीर जैन पाठशाला महिदपुर
३ „ मेहता सार्वजनिक जैन बाल-पाठशाला जावरौद
४ „ ऋषि जैन पाठशाला नागदा
५. „ महावीर पाठशाला उग
६ „ जैन विद्यामन्दिर शाढा
७. „ श्वे० स्था० जैन पाठशाला पचपहाड़
८. „ धर्मदास जैन रत्न स्था० पा० उज्जैन
९ „ श्वे० स्था०जैन पाठशाला पेटलावद
१० „ कृष्ण ब्रह्मचर्याश्रम घरोली
११. „ अमोल जैन पाठशाला मगरदा
१२. „ महावीर जैन पाठशाला रावटी
१३. „ धर्मदास जैन विद्यालय थान्दला
१४ „ वर्द्धमान जैन विद्याभवन मन्दसौर
१५. „ महावीर जैन श्रमण वि० मन्दसौर
१६. „ चेनराम जैन विद्याभवन मन्दसौर
१७ „ श्वे० स्था० जैन पाठशाला गंगाधर
१८. „ महावीर स्था० जैन पाठशाला धार स्टेट
१९. „ लू कड जैन शान्ति कन्या पाठशाला इन्दौर
२०. „ विट्ठलजी चौधरी जैन पाठशाला रामपुरा
२१ „ वर्द्धमान जैन पाठशाला पपिलोदा
२२. „ श्वे० स्था० जैन ज्ञा० व० पन्नालाल मेहता पाठशाला करजू
२३ „ जैन पाठशाला पैंभी
२४ „ आत्मानन्द वर्द्ध० स्था० जैन पाठशाला शाजापुर
२५. श्री जैन पाठशाला, नगरी
२६ „ श्वे० स्था० जैन पाठशाला, रायपुर
२७ श्री महावीर जैन पाठशाला, सिंगोली
२८ „ वर्द्धमान जैन पाठशाला, नारायणगढ़

राजस्थान

१. „ विजय जैन पाठशाला, सनवाड़
२. „ शान्ति जैन पाठशाला, पाली
३ „ जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़
४ „ महावीर जैन विद्यालय, खीचन
५ „ श्वे० स्था० जैन पाठशाला, नोरवामण्डी
६ „ जैठ श्वे० स्था० जैन पाठशाला, डेह
७ „ श्रमणोपासक जैन धार्मिक रात्रि पाठशाला, अजमेर
८ „ नानक जैन छात्रालय, गुलाबपुरा
९ „ महावीर जैन पाठशाला, राणावास
१० „ जवाहिर विद्यापीठ, कानौड़
११. „ „ जैन कन्या पाठशाला, कानौड़
१२ „ वर्द्ध० जैन पाठशाला, कुँवारिया
१३ „ श्वे० स्था० जैन शिक्षण संघ (संस्था), उदयपुर
१४ „ शम्भूमल गंगाराम जैन पाठशाला, जैतारण
१५ „ जैन गुरुकुल शिक्षण संघ, ब्यावर
१६ „ मुथा जैन विद्यालय, बलून्दा
१७. „ जैन पाठशाला, जम्भू
१८ „ महावीर मिडिल स्कूल, बगड़ी
१९ „ सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर
२० „ श्वे० स्था० जैन शिक्षण संघ, केकड़ी
२१ „ लौंकाशाह जैन गुरुकुल, सादड़ी
२२. „ मुथा जैन पाठशाला, बड़ी सादड़ी
२३ „ वर्द्ध० जैन पाठशाला, कोठारिया
२४ „ महावीर जैन पाठशाला, बम्बोरा
२५ „ ज० क० स० दु० जैन कन्या पाठशाला, बीकानेर
२६ „ जैन कॉलेज, बीकानेर
२७ „ महावीर जैन हिन्दी स्कूल, देवगढ़
२८. „ जवाहर विद्यापीठ, भीनासर
२९ „ गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादड़ी
३० „ महावीर जैन विद्यालय, डूंगला
३१. „ सुबोध जैन हाई स्कूल, जयपुर

३२. श्री वर्द्धमान जैन पाठशाला, मोलेला
३३ ,, फलोदी पार्श्वनाथ महाविद्यालय
३४ ,, श्वे० जैन पाठशाला, भीलवाड़ा
३५ ,, महावीर जैन पाठशाला, नाथद्वारा
३६ ,, जैन कन्या पाठशाला, कोटा
३७ ,, वर्द्ध० जैन पाठशाला, कोटा
३८ ,, महावीर जैन पाठशाला, चिकारडा
३९ ,, वर्द्धमान जैन कन्या पाठशाला, जोधपुर
४० ,, वीर जैन विद्यालय, अलीगढ़
४१ ,, जैन बोर्डिंग, कुचेरा
४२ ,, गुलाबकँवर ओसवाल कन्या पाठशाला, अजमेर
४३ ,, वर्द्धमान स्था० जैन पाठशाला, राजगढ़
४४ ,, दिवाकर जैन बोर्डिंग, किला चित्तौड़गढ़
४५ ,, जिनेन्द्र ज्ञानमन्दिर, सिरियारी
४६ ,, शान्ति जैन पाठशाला, अलाय
४७ ,, जैन सभा पाठशाला, बून्दी
४८ ,, वर्द्धमान जैन पाठशाला, रामगंज मण्डी
४९ ,, कुन्दन जैन सिद्धान्तशाला, ब्यावर
५० ,, महावीर जैन मण्डल, ब्यावर
५१ ,, जैन जवाहिर मण्डल, देशनोक
५२ ,, महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, देवगढ़-मदारिया
५३ ,, महिला समिति, उदयपुर
५४ ,, जैन कन्या पाठशाला, बड़ी सादड़ी
५५ ,, जीवन जैन कन्या पाठशाला, बीकानेर
५६ ,, वर्द्धमान स्था० जैन पाठशाला, नसीराबाद
५७ ,, फूलाबाई जैन श्रमणोपासक पाठशाला, अजमेर
५८ ,, जैन कन्या पाठशाला, वल्लभनगर
५९ ,, वर्द्ध० स्था० जैन धार्मिक शिक्षण संघ, गंगापुर
६० ,, स्था० जैन पाठशाला, कजोडी
६१ ,, विजय जैन पाठशाला, मरुधाड़
६२ ,, जैन इन्द्र पाठशाला, कपासन

गुजरात-काठियावाड़

१ श्री महावीर जैन गु०, खम्भात
२ ,, धर्मदास जैन वि०, लींबड़ी
३ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला, कलोल
४ ,, श्वे० स्था० जैन पाठशाला, रामनगर
५ ,, स्थानकवासी जैन वि०, जेतपुर
६ ,, स्थानकवासी जैन पाठशाला, अहमदाबाद
७ ,, श्वे० स्था० जैन पा० साबरमती
८ ,, श्वे० स्था० जैन पा०, प्रांतिज
९ ,, स्थानकवासी जैन पाठशाला, बोटाद

पंजाब

१ ,, जैन कन्या पाठशाला, लुधियाना
२ ,, पू० काशीराम जैन कन्या वि०, अमृतसर
३ ,, पू० काशीराम जैन गर्ल्स हाई स्कूल, अम्बाला सिटी

पेप्सु

१. ,, जैन कन्या म०, फरीदकोट
२ ,, जीतराम जैन कन्या वि०, रोहतक

उत्तर प्रदेश

१ ,, राजधारी त्रिपाठी स० वि०, रौरौटी
२ ,, पार्श्वनाथ वि० का० हि० वि०, बनारस

मद्रास

१ ,, जैन महिला विद्यालय साहूकार पैठ, मद्रास
२ ,, एम० एम० जैन बोर्डिंग होम, मद्रास
३ ,, ताराचन्द गेलड़ा जैन बोर्डिंग, मद्रास
४ ,, श्री जैन स्कूल, कुन्नुर

नोट —जिन जिन संस्थाओं का विशेष वर्णन मिल सका है, उन्हें अगले पृष्ठों पर देखिए।

श्री गोदावत जैन गुरुकुल (हाई स्कूल) छोटी सादडी (राजस्थान)

मेवाड प्रदेश में चलने वाले इस गुरुकुल की स्थापना स्वर्गीय दानवीर सेठ नाथूलालजी सा० गोदावत ने १,२५,०००) एक मुश्त निकालकर की। सेठ सा० द्वारा प्रदत्त इस धन राशि का एक ट्रस्ट बनाया गया। सर्व प्रथम एक आश्रम और एक प्रायमरी स्कूल के रूप में इस सस्था की सवत् १९७६ में स्थापना हुई। कालान्तर में तथाकथित आश्रम और स्कूल ही विशाल गुरुकुल के रूप में परिणित हो गए। इस सस्था को विशाल रूप देने में स्वर्गीय सेठ सा० के पौत्र सेठ छगनलालजी सा० तथा सेठ रिखवदासजी सा० का प्रमुख हाथ रहा है। आज यही गुरुकुल मेवाड भर के सामाजिक व राष्ट्रीय प्रवृत्तियो का केन्द्र स्थान बन गया है। यहाँ विद्यार्थियो को स्थानीन पाठ्यक्रम के अलावा धर्म, न्याय, सस्कृत, हिन्दी, अग्रेजी आदि विषयो को उच्च पढाई कराई जाती है और उनकी परीक्षाएँ दिलाई जाती हैं। जैन समाज की अधिकाश सस्थाओ में व्यवस्थापक, शिक्षक, गृहपति आदि उत्तरदायी स्थानो पर इसी सस्था के स्नातक पाये जायँगे। आज भी यह सस्था एक हाई स्कूल के रूप में चलती हुई धार्मिक शिक्षण प्रदान करके विद्यार्थियो के जीवन में उत्तम नागरिकता के सस्कारो का सिंचन करती हुई अदम्य उत्साह एव स्फूर्ति के साथ समाज सेवा कर रही है। गुरुकुल में शिक्षणकार्य के लिए अपने-अपने विषय के विद्वान व परिश्रमी अध्यापक हैं। गुरुकुल की सम्पूर्ण प्रवृत्तियाँ तीन भागो में बँटी हुई है—विद्यालय, छात्रालय और जैन सिद्धान्तशाला। छात्रालय में इस समय ६५ छात्र और विद्यालय में १६० छात्र हैं।

आर्थिक दृष्टि से इस सस्था का इस बडे पैमाने पर स्वतन्त्रतापूर्वक सचालन करने का श्रेय सस्था के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री भूपराजजी सा० नलवाया बी० ए० व मान्य मन्त्री चादमलजी सा० नाहर को है।

इस सस्था के पास अपना निजी भवन है। भवन अति भव्य व शहर से कुछ दूर उत्तम स्थान पर अवस्थित है। जहाँ बगीचा, जलाशय, क्रीडागण आदि सभी की स्वतन्त्र व उत्तम व्यवस्था है। सस्था में एक उच्च कोटि का पुस्तकालय भी है, जिसमें भिन्न-भिन्न विषयो व भाषाओ की लगभग ७००० पुस्तकें हैं।

इस प्रकार यह सस्था ३६ साल से समाज की सेवा करती चली आ रही है।

श्री जैन गुरुकुल शिक्षण संघ, ब्यावर

स्था० जैन समाज में गुरुकुल प्रणाली की कल्पना भी नही थी उस वक्त आत्मार्थी मोहनऋषिजी और श्री चैतन्यजी के उद्देश और प्रेरणा द्वारा स० १९८४ के विजयादशमी (आसोज शु० १०) को श्री जैन गुरुकुल का प्रारम्भ बगडी-सज्जनपुर में हुआ। सेठ मिश्रीलालजी वेद, फलौदी, श्री अमोलकचन्दजी लोढा, बगडी, श्री शकरलालजी गोलेछा आदि अच्छे प्रेरक थे। धर्मवीर दुर्लभजी भाई जौहरी आदि पोषक थे। श्री आणदराजजी सुराणा महामन्त्री और श्री धीरजलाल के० तुरखिया इसके अधिष्ठाता थे। ज्ञान पचमी को इसे ब्यावर में लाया गया।

स्था० जैन समाज में तथा प्रान्त में राष्ट्रीय चेतना जगाना, समाज में शिक्षण सस्थाओ का प्रचार और सूत्रबद्धता, धार्मिक शिक्षण का प्रचार, हुन्नर-उद्योग के विविध प्रयोग, वार्षिकोत्सव और परिषदो द्वारा जागृति लाने के लिए इस गुरुकुल ने अनेक प्रयत्न किये। ६ वर्ष बाद गुरुकुल के लिए स्वतन्त्र भवन-निर्माण हुआ। उपरोक्त नाम से रजिस्ट्रेशन हुआ और विद्यार्थियो के लिए गुरुकुल, साधु-साध्वियो के लिए सिद्धान्तशाला, साहित्य प्रकाशन के लिए आत्मजागृति कार्यालय, उद्योगशाला आदि विविध प्रवृत्तियाँ २५ वर्ष तक उत्तरोत्तर वृद्धिगत होती रही। सघ सेवा में भी सस्था ने सहयोग दिया। सघ-ऐक्य योजना और श्राविकाश्रम की योजनाएँ गुरुकुल की पवित्र भूमि में वार्षिकोत्सव के अवसर पर ही बनी और मूर्तस्वरूप लिया।

भारत स्वतन्त्र होने पर स्वतन्त्र राष्ट्रीय शिक्षण-की आवश्यकता का वातावरण कम हो चला। जिससे उक्त
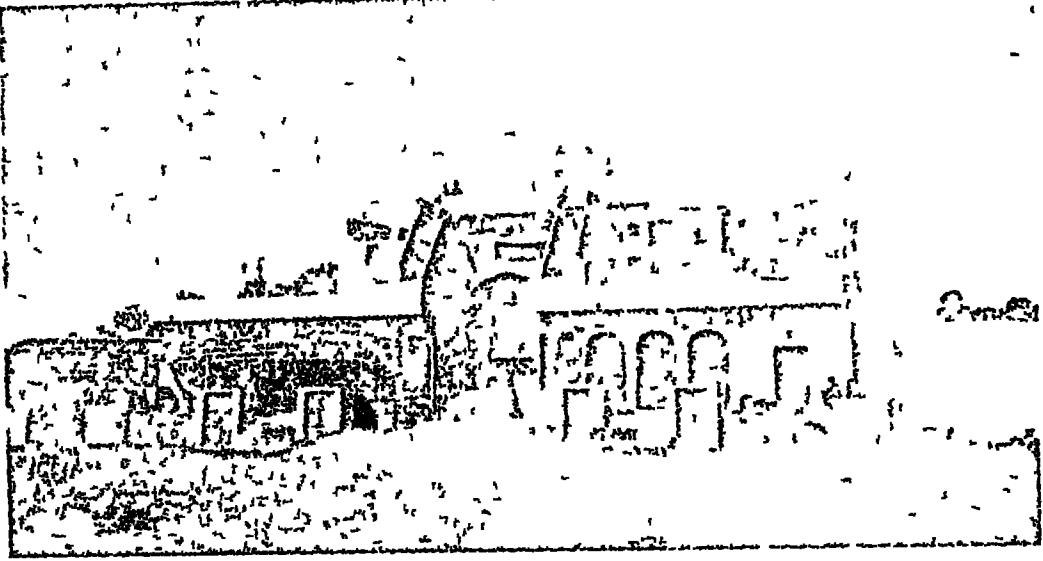
श्री जैन गुरुकुल-भवन (पुराना) ब्यावर
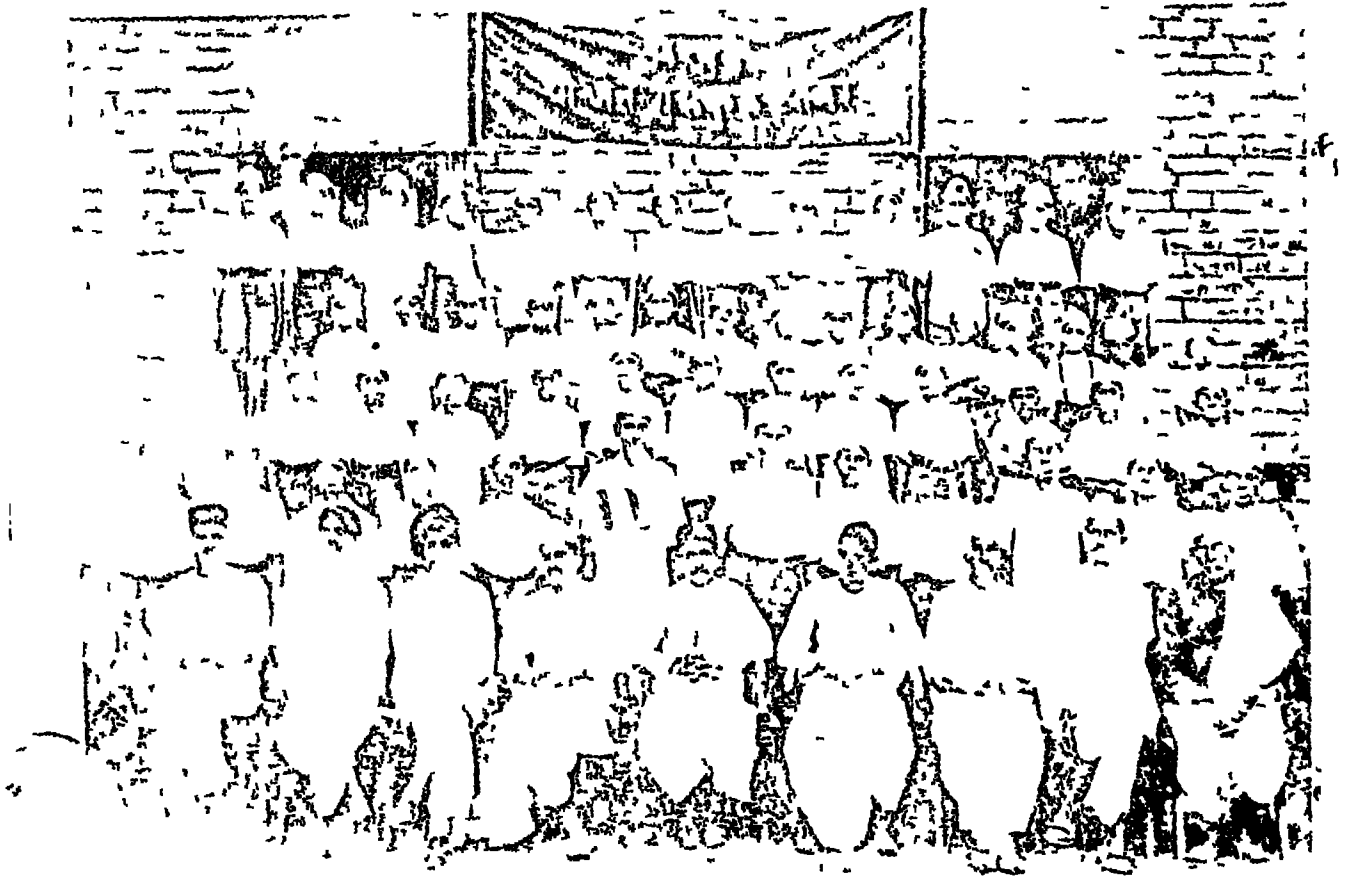
श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर के अध्यापक और विद्यार्थीगण

सघ के अग्रणियो ने भी सस्कृति विभाग और हाई स्कूल विभाग किये। धीरे-धीरे संस्कृति विभाग में छात्र नही आने लगे तो सिर्फ हाई स्कूल विभाग ही रहा। प्रायमरी स्कूल भी प्रारम्भ की और इस रूप में कार्य चल रहा है।

ब्यावर गुरुकुल ने सैंकडो नवयुवको को तैयार किये जो आज समाज में विद्वान्, लेखक, सचालक, व्यायाम पटु, हुनर ज्ञान, धार्मिक शिक्षण-सस्कृति द्वारा कार्य कर रहे है। जीवन यापन के साथ समाज को योगदान दे रहे हैं।

श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला (अम्बाला)

यह गुरुकुल स्वामी धनीरामजी तथा प० कृष्णचन्द्राचार्यजी के अनवरत प्रयत्नो से जैन समाज भूषण स्व० सेठ ज्वालाप्रसादजी के करकमलो द्वारा फरवरी स० १९२७ मे स्थापित किया गया। इसे समाज सेवा करते हुए २५ वर्ष हो चुके है। यहाँ धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ प्रायमरी से लगाकर हाई स्कूल तक की व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। साइस और ड्राइग विषयो के लिए यहाँ मुख्य व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त छात्रो के जीवन को स्वावलम्वी बनाने के लिए टेलरिंग, कारपेन्टरी, वीविंग और टीनस्मिथी आदि अनेक हुनर उद्योगो व कला-कौशलो का व्यापक रूप में समुचित प्रबन्ध है। यहाँ की बनी हुई दस्तकारी की चीजें ऑर्डर देने पर बाहर भी लागत मूल्य में भेजी जाती है।

इस समय गुरुकुल में एक हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे है, जिनमें से लगभग ८०० छात्रो के खाने-पीने आदि की सारी व्यवस्था गुरुकुल के बोर्डिंग हाउस में ही है। ये सभी छात्र वे हैं, जिन्हे पजाब गवर्नमेंट ने यहाँ की सुव्यवस्थाओ से आकर्षित होकर भेजने का इरादा किया था और जो भारत-विभाजन के बाद सन् १९४८ से यहाँ आने शुरु हो गए। यहाँ की कार्यकारिणी समिति ने भी इस कार्य को भगवान महावीर के पवित्र सन्देश और अहिंसा धर्म के अनुरूप समझकर सहर्ष अपने हाथो में लिया एव अपने उद्देश्यो के अनुसार आज तक बराबर निभाती आ रही है।

यहाँ की वर्तमान मैनेजिंग कमेटी के २३ सदस्य है जिसके अध्यक्ष—सेठ तेलूरामजी जैन जालन्धर और मन्त्री श्री ओमप्रकाशजी जैन है। आप लोगो के सतत् परिश्रम से ही आज यह सस्था जैन समाज के लिए आकर्षक और गौरवपूर्ण बनी हुई है। युनिवर्सिटी की परीक्षाओ का परिणाम भी यहाँ का प्रति वर्ष ९४ प्रतिशत रहता है। इससे ही इसकी शिक्षा-व्यवस्था का अनुमान लगाया जा सकता है। यहाँ के छात्रो की खेल के विषय में अभिरुचि, परेड करने का सुन्दर तरीका और व्यायाम के अद्भुत प्रकार वास्तव में वर्णनीय है। गृहपतियो, योग्य अध्यापको व वाडनरो की देखरेख में छात्रालय के छात्र रहते हैं। गुरुकुल का अपना अग्रेजी दवाखाना है, जिसमें सब प्रकार के रोगो का उपचार किया जाता है।

इस समय सस्था में करीब ३५ अध्यापक एव कार्यकर्ता है, जो कि सब ट्रेन्ड, अनुभवी और डिप्लोमा प्राप्त है। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इस गुरुकुल की सारी व्यवस्था जैन समाज द्वारा चुनी हुई कार्यकारिणी के ही हाथो में है। गवर्नमेंट का कोई भी हस्तक्षेप नही है। इस समय वख्शी ससारचन्दजी बी० ए० बी० टी० यहाँ के योग्य व अनुभवी प्रिन्सिपल है, जो अपनी कार्यकुशलता और अपनी अद्भुत अनुभव शक्ति द्वारा सस्था का सचालन—कर रहे है।

श्री लौंकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी (मारवाड़)

यह सस्था सम्वत् २००० के माघ शुक्ला १० सन् १९४४ में मरुधर केशरी पडित रत्न मन्त्री मुनि श्री मिश्रीमलजी म० सा० के सदुपदेश से तथा पजाबी प० मुनि श्री तिलोकचन्दजी म० सा० के चातुर्मास में श्री धर्मपालजी मेहता,

अजमेर वालो के अध्यापकत्व में स्थापित हुई। इस सस्था के आद्य सस्थापको में श्री अनोपचन्दजी पुनमिया, श्री निहालचन्दजी पुनमिया तथा श्री हस्तीमलजी मेहता आदि सज्जन प्रमुख है। दानवीर बलदोटा बन्धुओ ने ५१०००) रु० श्री मोहनमलजी चोरडिया ने ११,१११, रु० तथा श्री केवलचन्द्रजी चौपडा ने ५०००) रु० देकर इस सस्था को सुदृढ वनाया है। सस्था का १,५०,००० रु० की लागत का आकर्षक नवीन और सुन्दर भवन है। इसी गुरुकुल भवन में और इसी के प्रागण में वृहद् साधु सम्मेलन और कान्फरस का अधिवेशन हुआ था जहाँ एक ओर अखण्ड श्रमण सघ और श्रावक सघ का निर्माण हुआ।

इस समय गुरुकुल में ५० छात्र, ३ अध्यापक गण, ६ भृत्यु-वर्ग और एक कन्या पाठशाला की अध्यापिका है।

छात्रो के लिये सभी प्रकार के व्यायाम और खेल-कूद का सर्वोत्तम प्रवन्ध है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के उद्योग—जैसे सिलाई, कताई, बुनाई, चित्रकला, कृषि, टाइपिंग का भी शिक्षण दिया जाता है। धार्मिक परीक्षा वोर्ड पाथर्डी की विशारद एव प्रभाकर तक की परीक्षाओ में छात्र प्रविष्ट होते हैं। विभिन्न प्रकार की पुस्तको एवं समाचार-पत्रो से यहाँ का पुस्तकालय तथा वाचनालय सुसमृद्ध है। प्रत्येक रविवार को छात्रो की सभा होती है जिसमें वक्तृत्व-कला का अभ्यास कराया जाता है।

गुरुकुल से ही सम्वन्धित "श्री जैन हितेच्छु कन्या-शाला" है। जिसमें बालिकाओ को व्यावहारिक एव धार्मि शिक्षण दिया जाता है। गुरुकुल का सचालन कार्यकारिणी समिति द्वारा होता है। इस कार्यकारिणी का चुनाव मत प्रणाली से होता है। इस समय प्रतिष्ठित ३२ सज्जनो की कार्यकारिणी समिति विनिर्मित है।

अपने क्षेत्र में सादडी का यह गुरुकुल विद्या प्रचार के साथ धार्मिक शिक्षा का प्रसार बडे ही सुन्दर ढग से कर रहा है।

श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर (बीकानेर)

जैन-जगत् के परम प्रसिद्ध आचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज का यह स्मारक श्री जवाहर विद्यापीठ सम्वत् २००१ में सस्थापित हुआ था। इसको कार्य करते हुए करीव १२ वर्ष होने आये हैं। उस महान् मनस्वी का यह स्मारक अविचल रूप से एकनिष्ठ साधक की तरह उन्ही के चरणचिन्हो का अनुकरण इन वर्षों में करता चला आया है। उस तप पूत युगद्दृष्टा के शुभाशीर्वाद के फलस्वरूप यह विद्यापीठ अपनी सौरभ से समस्त जैन जगत को सुवासित कर रहा है।

विद्यापीठ आज अपने-आपको विशेष रूप से गौरवान्वित अनुभव कर रहा है कि उसने परम पुनीत प्रागण में अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एव १३ वा अधिवेशन सम्पन्न होने जा रहा है। साथ ही श्रमण-सघ का सम्मेलन भी यही सम्पादित होने जा जा रहा है, उस महा महिम आचार्य के स्मारक-स्थल पर ही उनके सपने साकार होने जा रहे हैं। हमारे अधिक सौभाग्य और सुयोग का अवसर क्या प्राप्त हो सकता है, यह तो सोने में सुगन्ध है। हम क्राति के किस मार्ग से चलकर अपने लक्ष्य का निर्धारण कर रहे हैं, उसमें सफलता अवश्यभावी मानी है।

सस्था में छ विभाग हैं।

१ प्रकाशन विभाग, २ पुस्तकालय, ३ जैन विद्यार्थी निवासुयोग, ४ धार्मिक शिक्षण सदन, ५ उच्च शिक्षण सदन, ६ उपदेशक विभाग।

प्रकाशन व विभाग का कार्य जवाहर साहित्य समिति के कर-कमलो से सुचारु रूप से चल रहा है। इस समिति स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज के व्याख्यानो को किरणावलियो के रूप में पुस्तकाकार प्रकाशित करवाया

है। अब तक ३१ किरणावालियाँ प्रकाशित हो चुका है।

पुस्तकालय आधुनिक साधनो से सुशोभित सुन्दर कलापूर्ण भवन है। पुस्तकालय में ३५०० जिल्दो में विविध विषयो की लगभग ६००० पुस्तकें सग्रहीत हैं। साथ ही वाचनालय भी है। वाचनालय में कुल २० समाचार-पत्र-दैनिक, सप्ताहिक, पाक्षिक एव मासिक आते हैं। भारत भर की समस्त स्थानकवासी सस्थाओ में पुस्तकालय अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

इस वर्ष छात्रा-वास में छठी कक्षा से लेकर एम० ए० फाइनल अर्थात् सोलहवी कक्षा तक के १५ छात्र
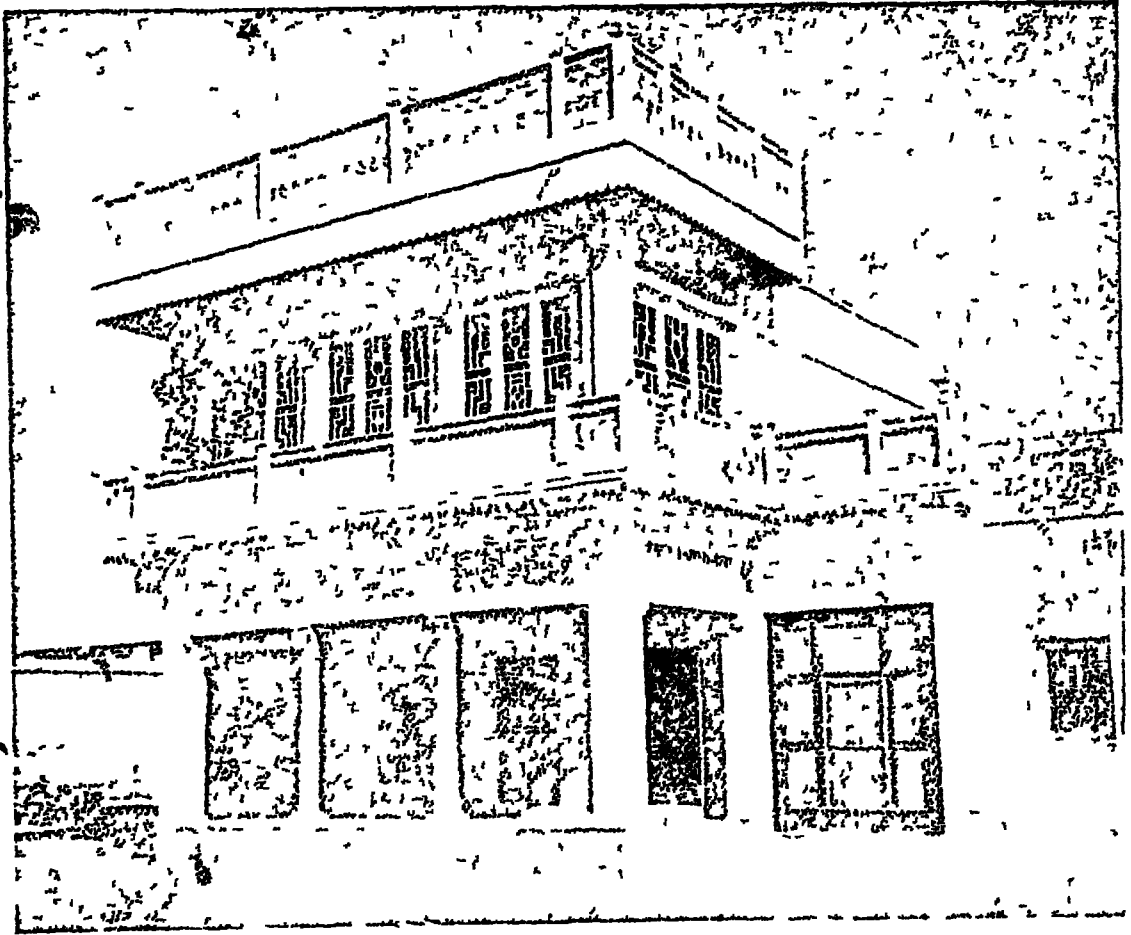
जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर

हैं। स्वय यहाँ के गृहपति भूपराज जैन भी एम० ए० फाइनल के छात्र हैं। ये यहाँ के स्नातक है और अब गृहपति का कार्यभार सभाले हुए हैं।

विद्यालय की परीक्षाओ के अलावा छात्र पाथर्डी बोर्ड की धार्मिक परीक्षाओ में प्रविष्ट होते हैं। इस वर्ष विभिन्न धार्मिक परीक्षाओ में १२ छात्र प्रविष्ट हुए हैं।

इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष कुछ छात्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की हिन्दी-परीक्षाओ में सम्मिलित होते हैं।

संस्था की ओर से साधु-साध्वियो के अध्ययन कराने का प्रबन्ध है।

गत वर्षों में अनेक छात्र इस संस्था से अपना अध्ययन समाप्त कर निकले हैं। ये हमारे समाज की विभिन्न संस्थाओ एवं प्रवृत्तियो का संचालन सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ

आज से सत्ताईस साल पूर्व जब कि यहाँ आसपास शिक्षा-प्राप्ति के किसी भी साधन के अभाव के कारण अज्ञान तथा अशिक्षा का अन्धकार छाया हुआ था—ऐसे कठिन समय मे स्थानीय नवयुवको के जोश एव निष्ठा से १५ जनवरी सन् १९२९ में इस विद्यालय की पुनीत स्थापना हुई। शनै-शनै इस विद्यालय की सुवास समीपवर्ती ग्रामो में फैल गई जिसके कारण बाहरी छात्र भी विद्यालय मे विद्याध्ययन करने के लिए आकर्षित हुए—जिसके फल-स्वरूप "श्री जैनरत्न छात्रालय" की स्थापना करनी पडी। विद्यालय ने अपनी लक्ष्यपूर्ति में गतिशील रहते हुए समाज की संस्थाओ मे अच्छा स्थान प्राप्त किया है।
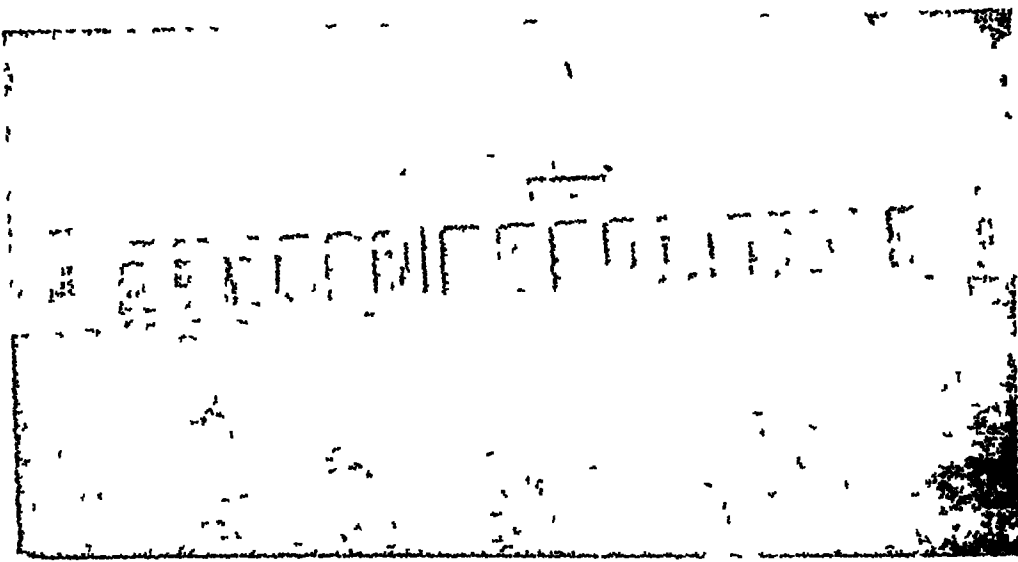
श्री रत्न जैन विद्यालय-भवन भोपालगढ (मारवाड)

संस्था का अपना निजी विशाल भवन भी है। संस्था के प्राण दानवीर सेठ श्री राजमलजी सा० ललवानी व विद्यालय के तत्कालीन अध्यक्ष श्री विजयराजजी सा० काकरिया ने भवन-निर्माण के लिए एक बडी रकम देकर तथा बाहर प्रवास में घूम-घूमकर ६५,०००) की धन-राशि एकत्रित की और भवन निर्माण कराया।

इस विद्यालय में अंग्रेजी में मेट्रिक, हिन्दी में विशारद, महाजनी में मुनीमी तथा धर्म में धर्म प्रभाकर की उच्च परीक्षाएँ दिलाकर समाज के सुशिक्षित एव होशियार नागरिक तैयार किये जाते हैं।

इस संस्था की तरफ से सुप्रसिद्ध मासिक धार्मिक पत्रिका 'जिनवाणी' का प्रकाशन कर अन्य संस्थाओ के सम्मुख एक आदर्श उपस्थित किया था।

इस संस्था के तत्त्वावधान में ही 'श्री जैन रत्न कन्या पाठशाला' भी अच्छा कार्य कर रही है, जिससे वर्तमान में ३० कन्याएँ शिक्षा का लाभ ले रही हैं।

छात्रो को पार्लियामेंटरी सिस्टम (संसदीय पद्धति) का ज्ञान देने के लिए छात्र-मण्डल की भी यहाँ प्रवृत्ति

विद्यमान है। छात्रो के शारीरिक विकास के लिए खेल एव व्यायाम की यहाँ समुचित व्यवस्था है। छात्रालय के छात्रो के वर्तमान सेवाभावी गृहपति एक कुशल वैद्य हैं। उन्ही की देख-रेख में विद्यालय का अपना निजी औपधालय भी है जिससे सर्वसाधारण जनता भी लाभ उठाती है।

विद्यार्थियो के बौद्धिक विकास के लिए एक विशाल पुस्तकालय भी है जिसमें लगभग ३००० से भी अधिक पुस्तकें हैं। ससार की विविध हलचलो को जानने के लिये एक वाचनालय भी है जिसमें हर प्रकार के मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक तथा दैनिक (परचा) पत्र आते हैं।

छात्रो की लेखन-शैली को विकसित करने के लिए छात्रो को ही तरफ से हस्तलिखित मासिक 'विकास' प्रकाशित किया जाता है। वक्तृत्व कला के विकास के लिए साप्ताहिक श्रेणी-सभाएँ की जाती है जिनमें अन्त्याक्षरी, वादविवाद, निबन्ध, कहानी आदि प्रतियोगिताओ के सुन्दर कार्यक्रम रहते हैं।

सस्था के अधिकारियो तथा छात्रो का धार्मिक क्षेत्र में विशेप लक्ष्य रहे—इस ओर विशेप ध्यान रहता है। नियमित सामायिक, अष्टमी-चतुर्दशी को प्रतिक्रमण एव धार्मिक पर्वों पर ये आयोजन किये जाते हैं।

विद्यालय में औद्योगिक शिक्षण के लिए सिलाई का काम सिखानेकी उत्तम व्यवस्था है। अल्प व्यय में अधिक शिक्षा, महाजनी मवाल, वहीखाता और पुस्तक-रखना और धार्मिक शिक्षण—इस सस्था की विशिष्ट विशेपताएँ हैं।

इस प्रकार विगत २६ सालो मे राजस्थान की यह प्रगतिशील सस्था ज्ञान का प्रचार कर मरुधर के सूखे अचल को ज्ञान-प्रवाह से सीच-सीचकर हरा-भरा बनाने का पूर्ण प्रयत्न कर रही है—जो इस विद्यालय के लिए गौरव और हर्ष का विपय है।

विद्यालय के सभी विभागो का सचालन करने के लिए २२ सदस्यो की सचालन-समिति है जिसके श्री जालम-चन्द्रजी सा० बाफणा—अध्यक्ष,श्री शकुनचन्द्र जी सा० ओसवाल—मन्त्री, श्री मदनचन्द्रजी सा० मेहता—प्रधान मन्त्री, श्री सुगनचन्द्रजी सा० काकरिया—कोपाध्यक्ष हैं।

श्री जैन शिक्षण सघ, कानौड (राजस्थान)

सन् १९४० में तीन छात्रो से प्रारम्भ हुई, 'विजय जैन पाठशाला' आज शिक्षण-सघ के विराट् रूप में परिवर्तित हो गई है। इस सघ के सचालक श्री 'उदय' जैन है। इस शिक्षण सघ के द्वारा अनेक गतिविधियाँ गतिमान की जा रही हैं। श्री जवाहर विद्यापीठ हाई स्कूल, प्राइमरी स्कूल, श्री जैन जवाहर गुरुकुल (छात्रालय), श्री जैन जवाहर वाचनालय, रात्रि हिन्दी विद्यापीठ, श्री विजय जैन विद्यालय और जैन कन्या पाठशाला आदि सघ की प्रवृत्तियाँ हैं। विद्यापीठ हाई स्कूल में १८ अध्यापक हैं। सदाचारी, निर्व्यसनी और सेवाभावी अध्यापको की सहायता से यह विद्यापीठ अपना गौरव बढा रहा है। ग्रामीण वातावरण से दूर जैन शिक्षण सघ की भव्य इमारत में और ग्राम के दो नोहरो में ये सस्थाएँ चल रही हैं।

हिन्दी विद्यापीठ द्वारा हिन्दी का प्रचार किया जाता है जिसके लिए प्रथमा और मध्यमा का विद्यार्थियो को अभ्यास कराया जाता है। इन परीक्षाओ का यह सघ केन्द्र भी है।

श्री विजय जैन पाठशाला में धार्मिक शिक्षण पर विशेप जोर दिया जाता है और प्रतिवर्ष १२५ छात्र धार्मिक परीक्षाओ में सम्मिलित होते हैं। लगभग १५० प्रतिदिन सामायिक होती है।

गुरुकुल (छात्रालय) में बाहर के २५ ३० छात्रो के रहने की समुचित व्यवस्था है। अनुभवी गृहपति की देख-रेख में छात्रालय का सचालन किया जाता है।

जैन शिक्षण सघ के अन्तर्गत चलने वाली सस्थाओ के लिए ३०,०००) रु० का भवन बन चुका है। एक पक्का कुआँ और सात बीघा जमीन सघ की अचल सम्पत्ति है। इन सस्थाओ का सचालन-खर्च वार्पिक ३५,०००) का है।

समाज के अति पिछडे क्षेत्र की यह सस्था विगत १५ वर्षों से बिना स्थायी फड के कार्य कर रही है। इस

समय ४०० से भी अधिक छात्र इस सस्था से लाभ ले रहे हैं। इस सस्था की सभी प्रवृत्तियो के सचालन में प्रधान हाथ श्री 'उदय' जैन का है।

श्री वर्धमान स्था० जैन छात्रालय, राणावास (राजस्थान)

काठा प्रान्त में स्थानकवासी समाज की अब तक एक भी सस्था नही थी, जिसका अभाव समाज के समस्त शिक्षाप्रेमियो के हृदय में खटकता था। प्रधानाचार्य श्री प० रत्नमुनि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज सा० की प्रेरणा से और श्री चम्पालालजी सा० गुगलिया क प्रयत्न से इस सस्था की स्थापना हुई। सस्था की स्थापना के लिए आसपास के गाँवो से २१,०००) रु० का चन्दा एकत्रित हुआ। छात्रालय में इस समय कुल २४ विद्यार्थी हैं। भोजन फीस १३) रु० रखी गई है। जिसमें एक पाव दूध के अतिरिक्त स्वास्थ्यप्रद और रुचिप्रद भोजन की उत्तम व्यवस्था है। छात्रालय का भवन स्टेशन के पास ही बना हुआ है। यहाँ का मुक्त और स्वच्छ वातावरण मस्तिष्क और जीवन को स्फूर्ति प्रदान करता है।

सस्था के पदाधिकारियो में श्री लालचन्दजी मुणोत—अध्यक्ष, श्री चम्पालालजी गुगलिया—मन्त्री, श्री फूलचन्दजी कटारिया—कोषाध्यक्ष हैं। इनके अतिरिक्त ३१ सदस्यो की कार्यकारिणी समिति बनी हुई है। एक वर्ष की अत्यल्प अवधि में सस्था ने आशातीत उन्नति की है।

निस्सन्देह राणावास का यह छात्रालय अपने समीपवर्ती इलाके का सुन्दर बालोद्यान है जिसकी सुरभि-सुवास से यह इलाका कालान्तर में सुवासित हो उठेगा।

श्री देव आनन्द जैन शिक्षण संघ, राजनांदगाँव

इस सस्था का सस्थापन दानवीर स्व० श्री अगरचन्दजी गुलेछा के कर-कमलो से हुआ था। यहाँ मेट्रिक तक शिक्षण का प्रबन्ध है। शिक्षण के लिहाज से यहाँ के विद्यार्थी सतोषप्रद परिणाम लाते हैं। सस्था का निजी विद्या-भवन है। जिसमें १२५ विद्यार्थियो के निवास का समुचित प्रबन्ध है। वर्तमान में विद्यार्थियो की सख्या १०० से अधिक हो गई है। किन्तु उचित भोजनालय के अभाव के कारण विशेष विद्यार्थी नही रह सकते। आज सस्था के पास कुल ९६ एकड जमीन है। इसका सस्था को कुछ हद तक स्वावलम्बी बनाने में काफी उपयोग हो सकेगा।

इस सस्था की निजी गौशाला भी है। इसमें चार जोडी बैल और तीस-बत्तीस छोटी-बडी गाएँ तथा चार पाँच भैंसें भी हैं। विद्यार्थियो को शुद्ध दूध मिल सके इसी उद्देश्य से यह खोली गई है।

छात्रो का जीवन विशुद्ध एव सयमी बने यही सस्था का एकमात्र लक्ष्य है। अलिप्तता, नियमितता, अनुशासन, स्वावलबन तथा धर्मशीलता ये इस जीवन के लक्ष्य की पूर्ति की अखण्ड धाराएँ हैं। ज्ञान, दर्शन, चरित्र की सुसगत सीढियाँ निर्माण करने का इस सस्था में भरसक प्रयत्न हो रहा है।

गत चार वर्षों में कई नेताओ तथा समाज-सेवको ने सस्था में पधारने की कृपा की और अपने शुभाशीर्वाद प्रदान किए।

छात्रालय में गृहपति का कार्य श्री मुनीन्द्रकुमारजी सभालते थे। आपका विद्यार्थियो की सर्वतोमुखी जागृति में परम लक्ष्य था आप एक विचारशील, उत्साही एव कर्मठ व्यक्ति हैं। छात्रालय की प्रगति में आपका पूरा हाथ रहा और सदैव सस्था को उन्नत शिखर पर पहुँचाने की हार्दिक इच्छा रखते हैं।

गया। इस वर्ष ६१ केन्द्रों में ३७०१ परीक्षार्थी विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित हुए हैं।

चन्द्रमणिभूषण त्रिपाठी
पाथर्डी

इस परीक्षा-बोर्ड की कार्य-प्रणाली एवं प्रगति पर समाधान व्यक्त करते हुए कॉन्फरन्स ने पहले वार्षिक 'एड' देकर इसे सम्मानित किया। तत्पश्चात् सन १९५४ में अपनी मान्यता प्रदान कर इसे कॉन्फरन्स ने मान्य परीक्षा-बोर्ड घोषित किया है।

श्री अमोल जैन सिद्धान्तशाला, पाथर्डी

इस संस्था की स्थापना संवत् १९९३ में प्रधानमन्त्री पं० रत्न आनन्दऋषिजी म० सा० के सदुपदेश से हुई। इसके द्वारा सन्त सतियों के शिक्षण की समुचित व्यवस्था की जाती है।

श्री रत्न जैन पुस्तकालय, पाथर्डी

इस विशाल पुस्तकालय में प्रायः सभी भारतीय दर्शनों व भाषाओं का साहित्य संग्रहीत है। इस समय इस पुस्तकालय में ७००० से भी अधिक पुस्तकों का संग्रह विद्यमान है।

इसके अतिरिक्त "श्री देवप्रेम स्था० जैन धार्मिक उपकरण भण्डार" से ओघे पात्रे, पूंजनी, बैठकें, मालाएँ आदि धार्मिक उपकरणों की सुलभता प्राप्त होती है।

इसके अलावा स्थानीय छात्राओं को बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार धार्मिक शिक्षा देने के लिए कन्या पाठशाला भी स्थापित है। इस कन्याशाला को श्राविकाश्रम के रूप में परिणत करने की योजना विचाराधीन है।
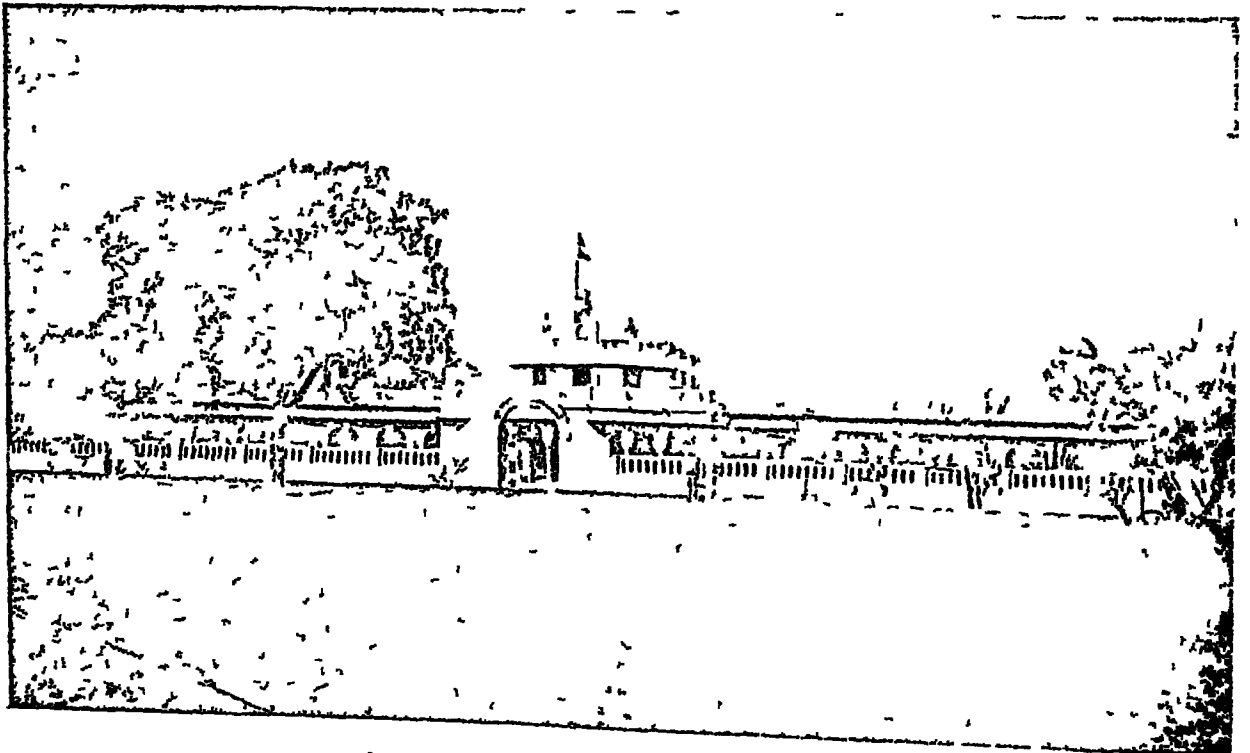
श्री जैन गुरुकुल विद्यामन्दिर भवन, ब्यावर (राज्य)

श्रीमान चम्पालालजी जैन, ऑफ स्यालकोट, हाल मुकाम दिल्ली
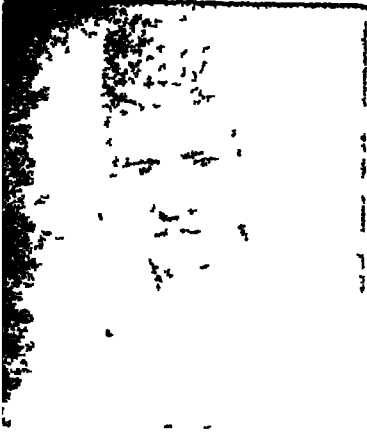
आपका शुभ जन्म स्यालकोट (पजाब) में हुआ था। पाकिस्तान बन जाने के पश्चात् आप दिल्ली पधार गए। यहाँ सदर बाजार में व्यापार कर रहे हैं।

वर्तमान में आप श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ, दिल्ली के वाइस प्रेसिडेन्ट और वेस्टर्न पजाब जैन रिहेबीटेशन असोसिएशन दिल्ली के प्रचार-मन्त्री हैं। दिल्ली में आने के बाद ही आपने वीर नगर जैन कॉलोनी गुड की मण्डी, दिल्ली में जो बन रही है, उसकी स्थापना में प्रारम्भ से ही सक्रिय सहयोग दिया है।

यह आपकी अन्तर्भावना है कि पाकिस्तान से जो जैन भाई आए हैं, उनके लिए मकानो की व्यवस्था जल्दी-से-जल्दी हो जाए। असोसिशन ने इस कार्य में करीब ४ लाख रुपया खर्च करके जमीन खरीद कर ली है। (इस असोसिएशन के प्रधान श्री कुञ्जलालजी शीतल स्यालकोट वाले हैं, इनके नेतृत्व में तथा प्रचार मन्त्रीजी श्री चम्पालालजी के अथक परिश्रम से यह कार्य सफलतापूर्वक हो रहा है।

आप बड़े ही मिलनसार और समाज के हर कार्य को लग्न से करते हैं। कॉन्फरन्स के प्रति आपकी बडी सद्भावना है।

श्री रामानन्दजी जैन, खिवाई (जि० मेरठ)

आपका जन्म खिवाई में श्री धर्मसिंहजी जैन के यहाँ अगस्त सन् १६११ में हुआ। आपका प्रारम्भिक शिक्षण जैन स्कूल, बडौत में हुआ। वहाँ से सन् १६३२ में हाईस्कूल की परीक्षा पास करके इंटर कॉमर्स यू० पी० बोर्ड से सन् १६३१ में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। सन १६३३ में B Com भी प्रथम श्रेणी में किया। तदनुसार एल० एल० बी० भी प्रथम श्रेणी में पास किया। सन् ३४ में इन्कमटैक्स सर्विस में आए और १६५० में असिस्टेन्ट कमिश्नर हुए। आपका अधिक समय कानपुर में व्यतीत हुआ। और सन् १६५३ से अब तक दिल्ली में हैं।

आप समाज के एक उत्साही तथा सुयोग्य कार्यकर्ता हैं।

ला० जसवन्तसिंहजी जैन सब्जीमण्डी, दिल्ली

आप बडे ही धर्म प्रेमी तथा समाज-सुधारक हैं। अनेक संस्थाओं के आप सचालक हैं। स्था० कॉन्फरन्स की कार्यकारिणी कमेटी के आप सदस्य हैं। समाज को आप से बडी २ आशाएँ हैं।

लाला लद्धारामजी जैन

स्व० शेठ शामजी भाई वीराणी, राजकोट

स्था० जैन समाजना दानवीर श्रीमन्तोमा राजकोटना सेठ शामजी भाई वीराणीनु अग्रस्थान छे तेओ परम श्रद्धालु मुनिभक्त अने क्रियारुचि वाला श्रावक हता। गृहस्थाश्रममा मोटा परिवार वाला होवा छता अनासक्त वृत्तिथी जीवन गालता हता। अनेक प्रकारना नियमो अने मर्यादामय जीवन हतु। स्वभावे विनम्र, दयालु अने उदार दिलना हता। राजकोटना 'वीराणी बापा' ने नामे सुप्रसिद्ध हता। लाखो रुपयानु दान अनेक प्रकारे विविध सस्थाओ ने तथा ज्ञाति भाईओ ने गुप्त दान करवामा तेओ सदा तत्पर रहेता। पुण्य योगे वीराणीजी ना सुपुत्रो श्रीमान् रामजी भाई, दुर्लभजी भाई अने, छगनलाल भाई, मणिलाल भाई, बधा सुशील, सुसस्कारी, धर्मप्रेमी उदार अने मातृ-पितृ भक्त छे।

वीराणी भाईओनी उदार सखावतो सौराष्ट्रमा प्रसिद्ध छे। एमनी सखावतो ने लीधेज राजकोटमा अने अन्यत्र भव्य उपाश्रयो, हाईस्कूलो, दवाखानाओ ऊभा थया छे। साहित्य प्रकाशन चाले छे। सैकडों साधर्मीओने सहायता आपे छे अने अनेक विद्यार्थिओने उत्तेजन आपे छे। आरीते सौराष्ट्रमा वीराणी भाइयोनी यशगाथा ए पुण्यवान पुरुष श्री वीराणी बापानो पुण्य प्रताप छे।

श्री जगजीवनदास शीवलाल देशाई, कलकत्ता

सायला (सौराष्ट्र) ना वतनी छे। तेओए विद्याभ्यास कलकत्तामा कर्यो हतो। आप वले आगल वधीने श्री जगजीवन भाई आजे कोलसाना मोटा व्यापारी छे। आर्थिक प्रगति साधवा साथे धर्मप्रेम अने समाज सेवामा पण एमनो आगेवानी भर्यो भाग होय छे। कलकत्ताना गुजराती स्थानकवासी जैन सघना १५ वर्ष थी मानद् मत्री छे। एमना मत्रीत्वमा श्री सघे खूबज प्रगतिसाधी छे। धर्मप्रेम तथा सेवाभाव एमधा विशेषता छे।

श्री धर्मपालजी मेहता, अजमेर

आप मूल निवासी भोपाल के है किन्तु आजकल अजमेर में ही रह रहे हैं। समाज की सुप्रसिद्ध सस्था श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर में अभ्यास करके विभिन्न विद्यालयो में कार्य करते हुए शिक्षा प्रचार में अच्छा योग दान दे रहे हैं। हिन्दी की शॉर्टहैण्ड का आपको अच्छा अभ्यास है। आपने स्व० जैन दिवाकरजी म० कविवर्य श्री अमरचन्दजी म०, उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० आदि कई बड़े-बड़े मुनिराजो के व्याख्यानो की चातुर्मास में रिपोर्ट लेकर जैन साहित्य की अभिवृद्धि में सहयोग प्रदान किया है। आपके द्वारा लिखे गए व्याख्यानो से करीब २० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'महावीर की अमर-कहानिया' आपकी प्रसिद्ध रचना है। 'सन्तवाणी' मासिक पत्रिका का सचालन और सम्पादन भी कर रहे हैं। आप एक कुशल गायक, कवि तथा लेखक हैं। कॉन्फरस के स्वर्ण-जयती-ग्रन्थ के लेखन प्रूफ-सशोधन और सम्पादन कार्य में आपने अथक परिश्रम किया है। आप सरल स्वभावी तथा सादगी प्रिय धार्मिक व्यक्ति है। समाज को आप से बडी बडी आशाए हैं।

श्री मुनीन्द्र कुमारजी जैन

आपका जीवन प्रारम्भ से ही उतार-चढाव की एक लम्बी कहानी है। जैन गुरुकुल, ब्यावर में अभ्यास करने के पश्चात् आपने दामनगर (काठियावाड) में रहकर शास्त्राभ्यास किया। श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ और मध्यप्रदेश की सस्था श्री जैन गुरुकुल राजनादगाव में आठ वर्ष तक गृहपति का कार्य कर सस्था को आगे बढाने में आपका काफी हाथ रहा है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के विभाजन के समय अपने प्राणों को सकट में डालकर भी पाकिस्तान से वायुयानों द्वारा जैन भाइयो को लाने में आपने अपूर्व साहस का परिचय दिया। आप एक अच्छे लेखक, कवि, गायक और गीतकार हैं। कॉन्फरस के स्वर्णजयती ग्रन्थ के लेखन और सम्पादन में आपका बडा हाथ रहा है।

कॉन्फरन्स-स्वर्ण-जयंती-ग्रन्थ के लेखन-
सम्पादन-प्रूफ-संशोधन में
सक्रिय सहयोगी

श्री धर्मपालजी मेहता, अजमेर

श्री मुनीन्द्रकुमारजी जैन

श्री प्राणजीवन भाई नारणजी भाई
पारख, राजकोट

लाला टेकचन्दजी
मालिक फर्म—गेंदामलजी हेमराजजी
नई दिल्ली व शिमला

श्री खेलशंकर भाई दुर्लभजी भाई
जौहरी जयपुर
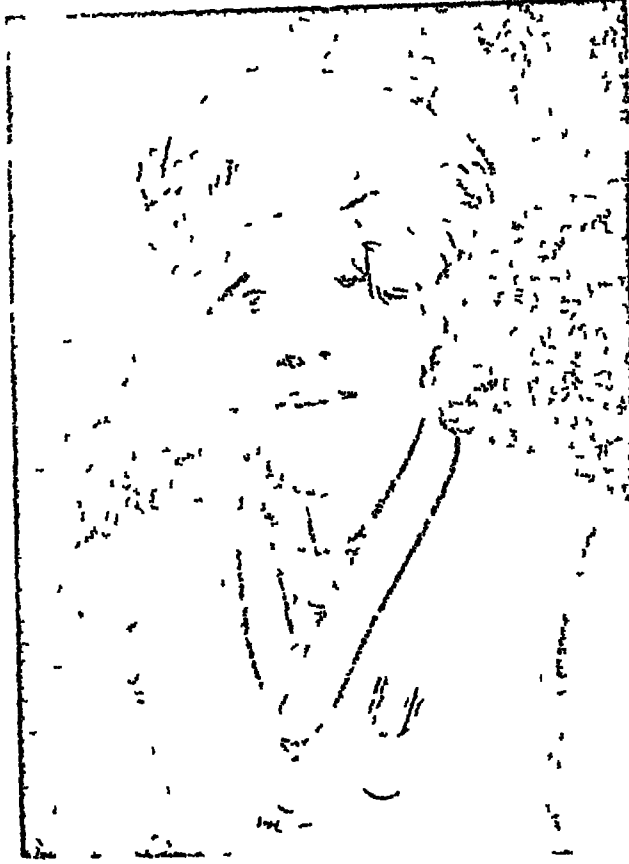
राय बहादुर श्री मोहनलाल पोपटलाल, राजकोट

जगजीवनदास शिवलाल
गाधना निवासी, कलकत्ता

से० केशवजी भाई सवचन्द भाई
कलकत्ता
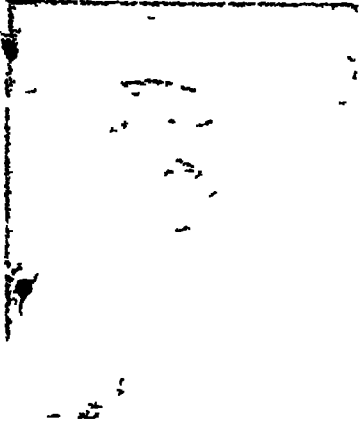
ज० सेक्रेटरी स्व० लाला गोकुल चन्द्रजी नाहर दिल्ली

कॉन्फरन्स के पुराने और दीर्घ-कालीन नेता व सेवक, दिल्ली के अग्रणी जिन्होंने 'महावीर भवन', महावीर हाईस्कूल आदि बनाकर दिल्ली का गौरव बढाया है।

श्री रतनलालजी कोटेचा बोदवड

स्व० सेठ चांदमलजी नाहर बरेली

आप धर्म-श्रद्धालु मुनिभक्त और उत्साही दयावान श्रावक थे। आपने समय-समय पर समाज एवं राष्ट्र की सेवा में सक्रिय सहयोग दिया है। बरेली (भोपाल) के जमींदार व श्रीमान् भी थे।
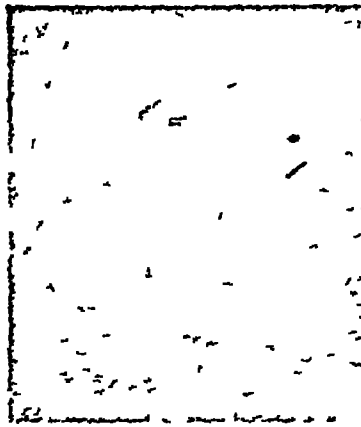
लाला अमरनाथ जी जैन रूपूर
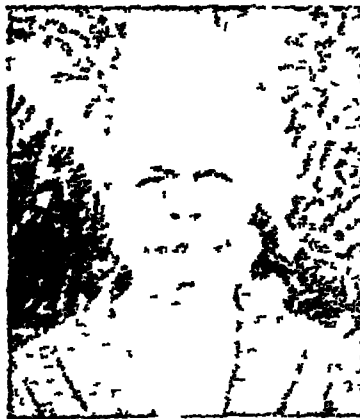
लाला तोतारामजी, दिल्ली

आप श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पचकूला के भूतपूर्व अधिष्ठाता रह चुके हैं। वर्तमान में निवृत्त धर्ममय जीवन बिता रहे हैं।

मोतीलालजी माड बोदवड

स्व० रा० सा० टेकचन्दजी जंडियाला गुरु

आप पंजाब के सुधारक और अग्रणी कार्यकर्ता थे। आपने अजमेर साधु सम्मेलन के समय अमूल्य सेवाएँ दी थीं।
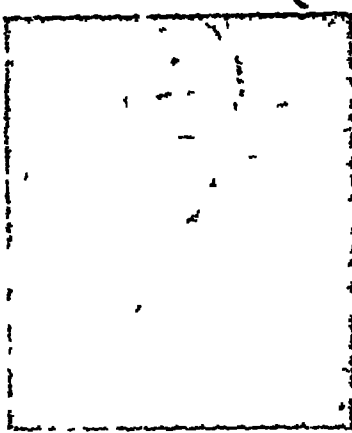
ला० रूपेशाह नत्थुशाह
स्यालकोट
पजाब के धर्म प्रधान अग्रणी
श्रावक

लाला त्रिभुवननाथजी,
कपूरथला
पजाब के प्रतिष्ठित और अग्रणी सुधारक श्रीमान् हैं। आपने अजमेर सम्मेलन के समय बहुत सेवाएँ की थीं।

लाला मस्तरामजी जैन
वकील M. A. अमृतसर
पजाब के सुधारक, उत्साही अग्रणी कार्यकर्ता
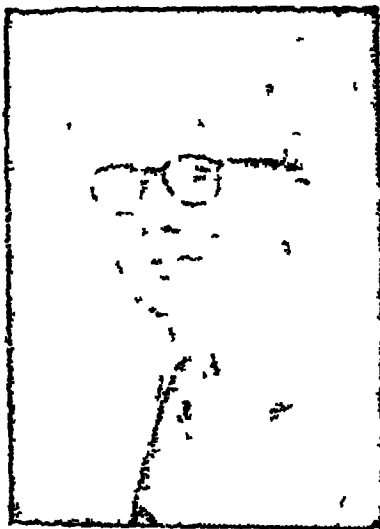
लाला जगन्नाथजी जैन
म्याग (बम्बई)
पजाब के सुधारक एव अग्रणी कार्यकर्ता कॉन्फरन्स की यथावसर सेवा करते रहते हैं।

श्रीरतनलालजी सुराणा बोदवड

स्व० श्री शामजी वेलजी
विराणी राजकोट

श्री जैन बोर्डिंग हाउस, जलगाँव

जैन बोर्डिंग हाउस जलगाँव के कार्यकर्ता
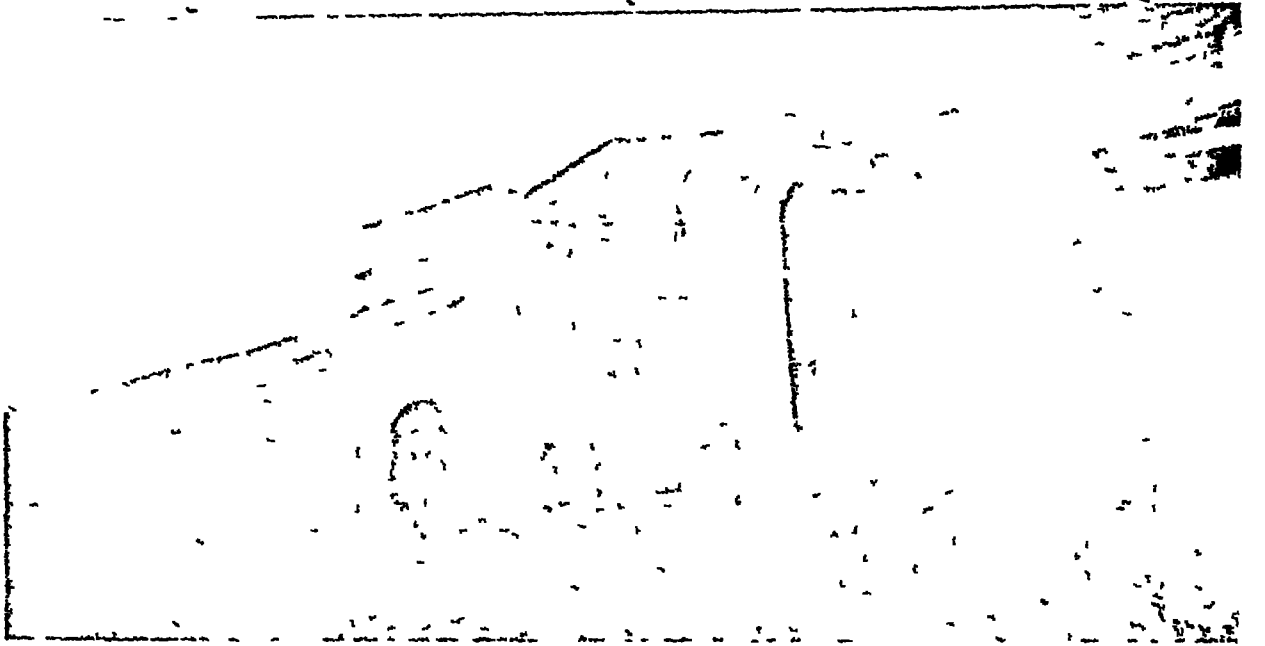
जैन विद्यालय, जालना बंगला न० १
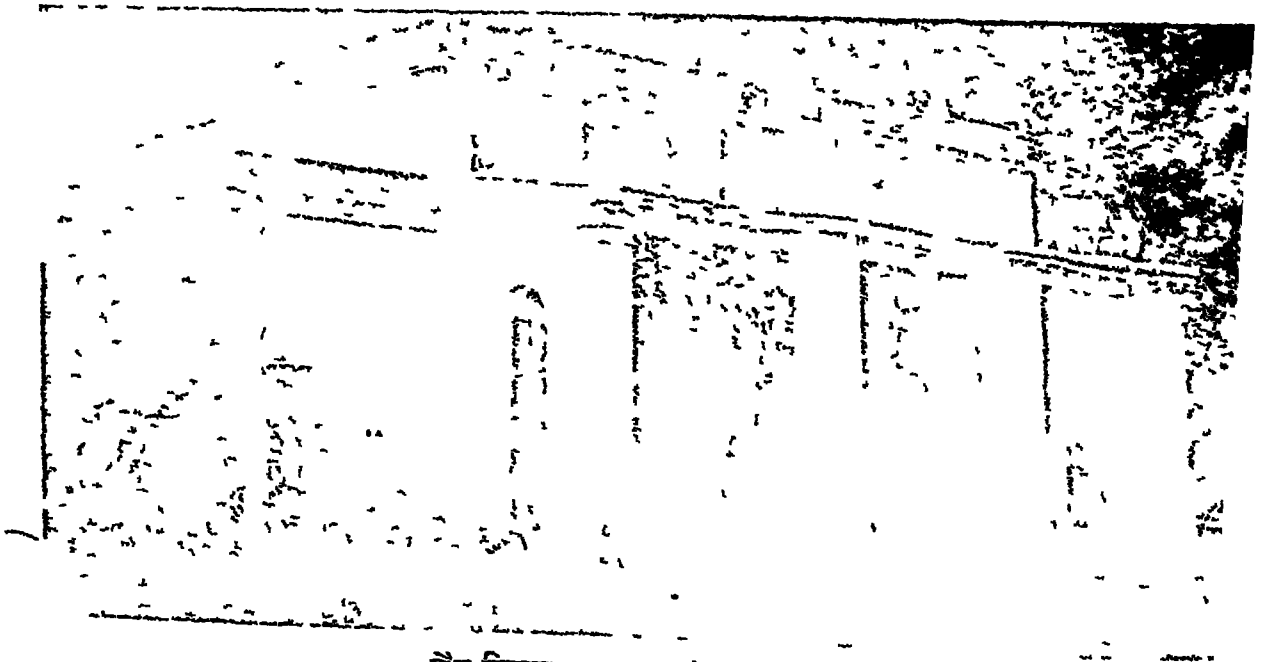
जैन विद्यालय, जालना बंगला न० २

श्री जैन स्थानक जालना
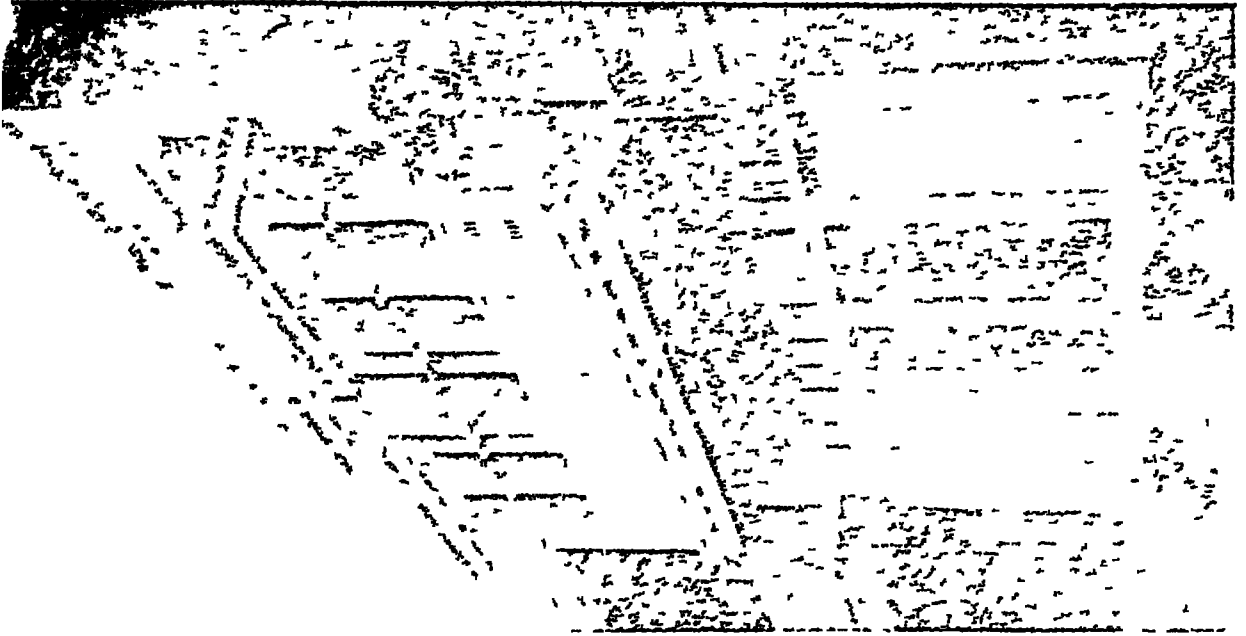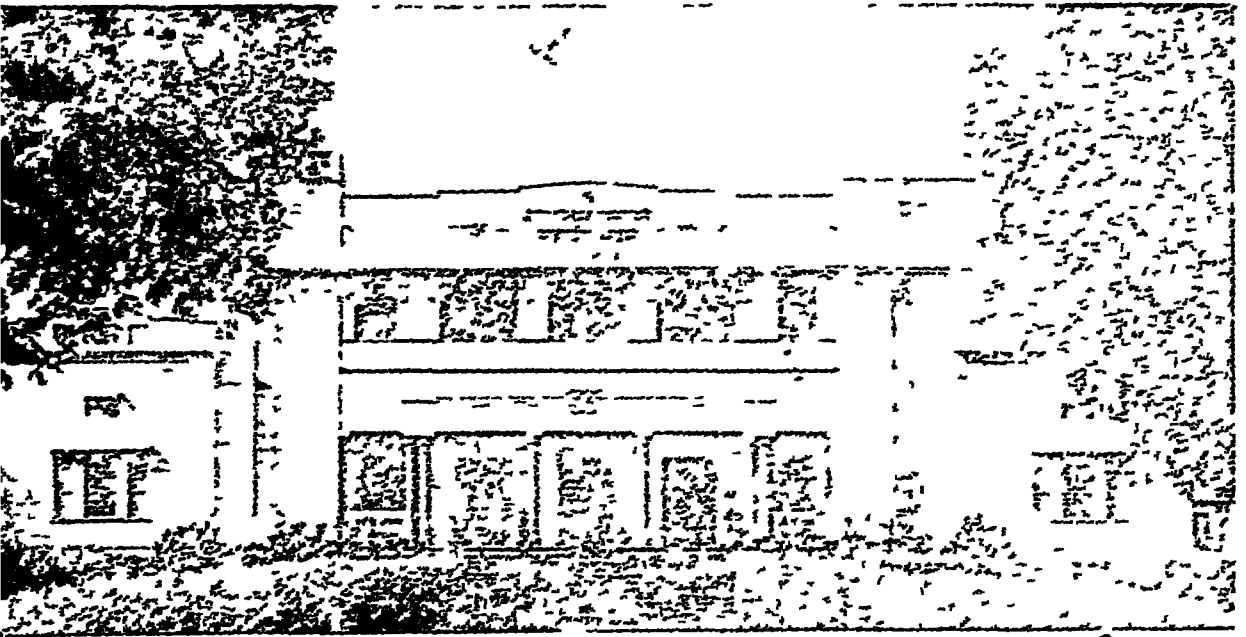
श्री महावीर भवन अलवर (राजस्थान)

श्री ज्ञानसागर पाठशाला किशनगढ

इस पाठशाला की स्थापना स० १९८३ में पं० मुनिश्री सागरमलजी म० सा० के यहाँ ५९ दिन के सथारे के पश्चात् स्वर्ग सिधार जाने पर उनकी पवित्र स्मृति में हुई थी। यह सस्था २९ वर्ष से जैन-अजैन तथा हरिजनो के विद्यार्थियो को बिना किसी भेदभाव के शिक्षण दे रही है। छ कक्षाओ में करीब २०० विद्यार्थी अध्ययन करते है। धार्मिक शिक्षण अनिवार्य है। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। स्था० समाज का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाता है।
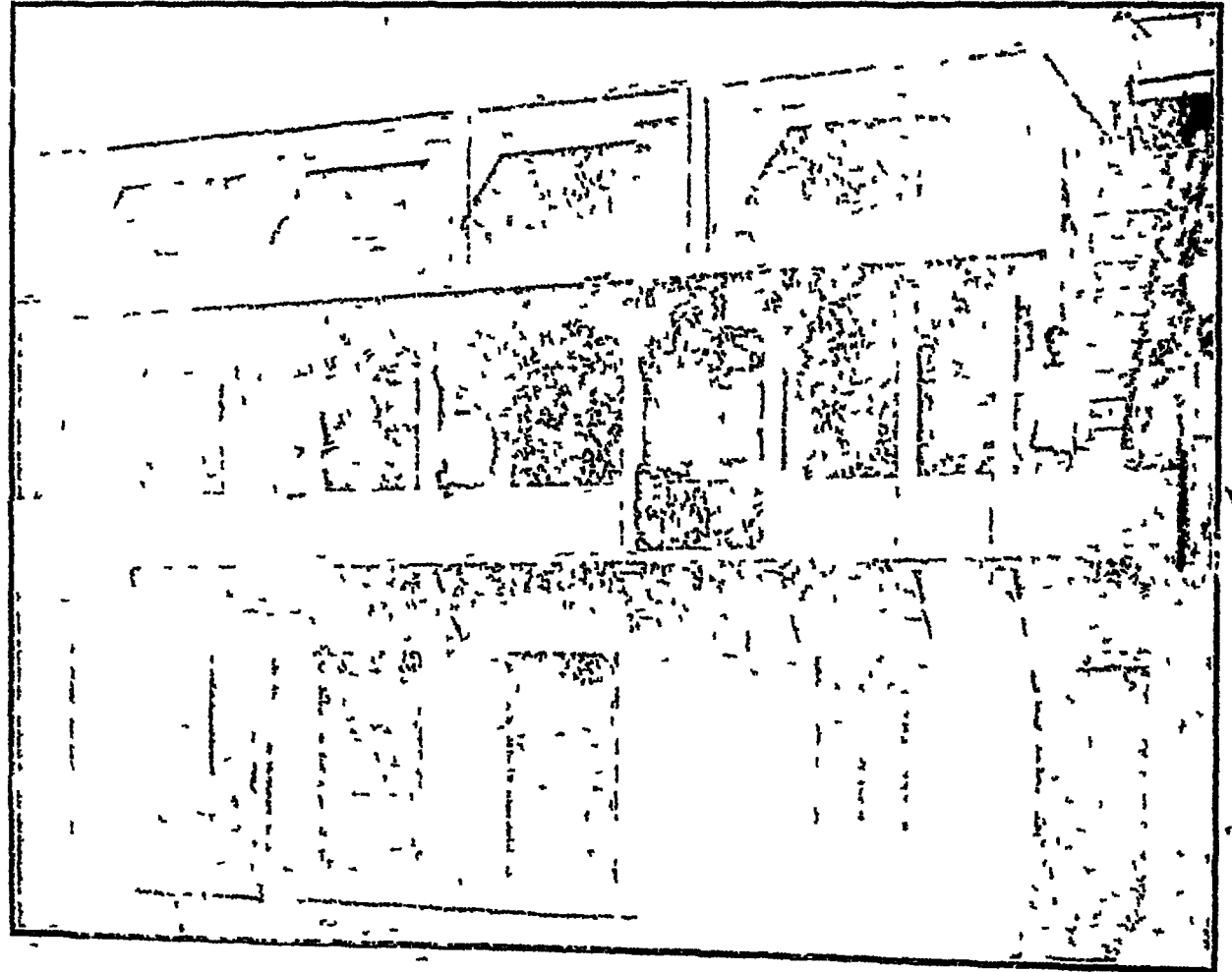
जैन रत्न पुस्तकालय, जोधपुर

उपरोक्त पुस्तकालय जोधपुर सिंह पोल के पास जैन पाठशाला के भवन में स्थित है। पुस्तकालय के लिये दस हजार रुपया लगाकर इसका निजी भवन बनाया गया है। इसमें दो हजार से अधिक हस्त लिखित सूत्र सुरक्षित है, सात हजार से अधिक मुद्रित पुस्तकें है, जिनका मूल्य आधा लाख से अधिक है। वर्तमान में इसके सभापति श्री इन्द्रनाथजी मोदी जज हाई कोर्ट, जोधपुर व मत्री श्री सम्पतचन्दजी सिंगवी है। भूतपूर्व पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० की सम्प्रदाय के श्रावको द्वारा यह पुस्तकालय स्थापित किया गया था।

श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम देवगढ मदारिया (राज)

उक्त सस्था की स्थापना सन् १९५० में हुई। लगभग ढाई वर्ष तक सस्था का कार्य किराये के मकान में ही चलता रहा। तदनन्तर देवगढ मदारिया के बाहर प्रकृति की सुन्दर गोद में इसका एक सुरम्य भवन बनाया गया। आश्रम की स्थापना में श्री शकर जैन तथा उनके युवक साथियो का प्रमुख हाथ रहा है।
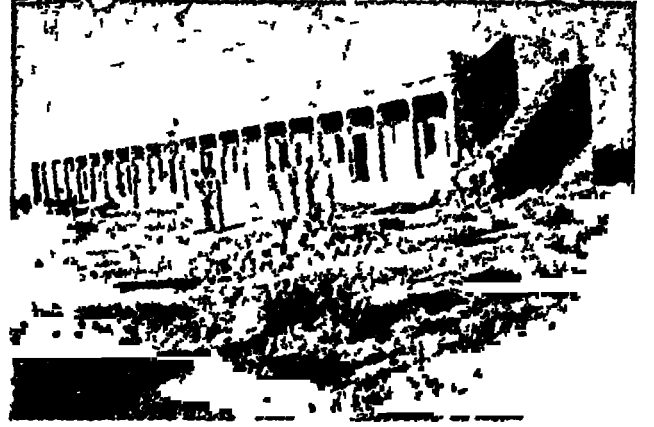
आश्रम् भवन के एक भाग का दृश्य

श्री चतुर्थ जैन वृद्धाश्रम चित्तौडगढ (राजस्थान)

इस सस्था की स्थापना स० २००१ में प्र० वक्ता० जैन दिवाकर स्व० प० मुनिश्री चौथमलजी म० सा० के सदुपदेश से रा० भूषण, रा० ब० स्व० श्री कन्हैयालालजी भण्डारी इन्दौर निवासी की अध्यक्षता में हुई थी। इसमें थ्या० समाज के असहाय, निराश्रित, अपग एव धर्मध्यानी वृद्ध बन्धुओ को आश्रय मिलता है। उनके खाने, वस्त्र, दवादि की सम्पूर्ण व्यवस्था यहीं से की जाती है। आत्मचिन्तन, स्वाध्याय, ज्ञान, ध्यनादि की व्यवस्था भी यहीं से की जाती है। यहाँ रहकर वृद्ध पुरुष आत्मचिन्तन, धर्मध्यान में लीन रहते हैं। उनके स्वाध्याय के लिए एक विशाल 'पूज्य श्री खूबचन्द जैन ग्रन्थालय' भी है जिसमें करीब २ हजार ग्रन्थ एव पुस्तकें हैं।

वृद्धो के निवास के लिए चित्तौड किले पर एक तिमजिला भव्य भवन भी है। जिसकी लागत ६५ हजार रुपये है। अभीतक करीब २०० वृद्ध पुरुष इसमें आश्रय ले चुके है। हमेशा औसतन उपस्थिति २५ वृद्धों की रहती है। स्व० श्री जैन दिवाकरजी की पुण्य स्मृति में सवत् २००८ में साधु-सम्मेलन सादडी (मारवाड) के सुअवसर पर बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज ने अक्षय तृतीया को एक 'श्री जैन दिवाकर बोर्डिग' के सचालन करने की स्वीकृति दी और तभी से दोनो प्रकार की प्रवृत्तियाँ चल रही हैं। इस वर्ष आश्रम में ५० छात्र है जिन्हें धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षण भी दिया जाता है।

श्री खानदेश ओसवाल शिक्षण-सस्था, भुसावल

इस सस्था का उद्देश्य ओसवाल जैन समाज की किसी भी सम्प्रदाय के निर्धन और होनहार बालक-बालिकाओ को प्राथमिक तथा उच्च शिक्षण देने में सहायक होना है। श्री पूनमचन्दजी नाहटा भुसावल वालो की सलाह पर सन् १९२२ में श्री राजमलजी ललवानी ने एक मुश्त २०,०००) रु० प्रदान किए। प्रतिवर्ष बजट के अनुसार वृत्तियाँ मजूर करना तथा अधिक व्याज उपार्जन करने की नीति के कारण सस्था को अब तक नाम मात्र भी घाटा नहीं पडा। सस्था के पास इस समय एक लाख रुपया स्थायी फण्ड में जमा है।

इस सस्था के प्रमुख पदाधिकारी इस प्रकार हैं —श्री पूनमचन्दजी नाहटा, भुसावल—सभापति, श्री रतनलालजी कोटेचा, बोदवड—उपसभापति, श्री फकीरचन्दजी मेहता, भुसावल—महामन्त्री तथा श्री मोतीलालजी बव, भुसावल—मन्त्री।

मध्यप्रदेश व बरार ओसवाल शिक्षण-समिति, नागपुर

ओसवाल विद्यार्थियों को शिक्षण में आगे बढाने के लिए छात्रवृत्तियाँ और लोन रूप से सहायता प्रतिवर्ष दी जाती है। इसकी कार्यकारिणी २१ सज्जनो की बनाई जाती है। उसमें आये हुए आवेदन पत्रो पर निर्णय होता है। सन् १९५५-५६ के सभापति श्री सुगनचन्दजी लूणावत, धामणगाँव तथा मन्त्री—श्री जेठमलजी कोठारी कामठी व श्री० केशरीचन्दजी धाडीवाल, नागपुर हैं।

श्री वर्द्धमान सेवाश्रम शान्ति भवन, उदयपुर

यह सेवाश्रम वर्षों से समाज की सेवा करता आ रहा है। ज्ञान का प्रचार, अनाथ, अपाहिज और निर्धन व्यक्तियो की सहायता करना आश्रम का मुख्य ध्येय रहा है। इस आश्रम के प्रयत्न से आदिवासियो के लिए 'श्री वर्द्ध-मान आदिवासी आश्रम' कोटडा (छावनी) में खोला गया है। आदिवासियो के जीवन सुधारने और आदर्श बनाने के लिए इस सस्था से सस्ता और उपयोगी प्रकाशन भी होता है। यहाँ से छोटी-मोटी कुल ७२ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

इस सेवाश्रम के सचालक समाज के पुराने, तपे हुए एव अनुभवी कार्यकर्ता श्री रतनलालजी मेहता हैं।

श्री श्वे० स्था० महावीर जैन पाठशाला, धार

यह सस्था धार (मध्यभारत) में प्रसिद्ध सस्थाओ में से है। यहाँ बालक-बालिकाओ में ठोस धार्मिक सस्कार डाले जाते हैं। कई आगन्तुक निरीक्षको ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशसा की है।

श्री कानजी शिवजी ओसवाल जैन बोर्डिंग, जलगाँव

इस सस्था का बीजारोपण दि० १२-१२-२५ को प्रातस्मरणीय विद्यावारिधि परम पूज्य स्व० मुनि श्री जवाहर-लालजी म० के सदुपदेश से हुआ था। साथ ही प्र० वक्ता जैन दिवाकर स्व० प० मुनिश्री चौथमलजी म० के शुभागमन पर उनके स्नेह-सिचन से सिंचित होकर यह नन्हा-सा पौधा फूल उठा। इसकी प्रगतिशीलता से आकर्षित होकर समाज के गण्य मान्य दानवीरो ने आर्थिक सहायता प्रदान की। एक ओर सम्माननीय स्व० सेठ श्री सागरमलजी सा० लूकड सदृश इस सस्था के जनरल सेक्रेटरी पद पर सुशोभित होकर कई वर्षो तक कार्य करते रहे और दूसरी ओर श्री कानजी शिवजी एण्ड क० बम्बई वालो ने १५००१) रु० देकर सस्था के भाग्याकाश को और भी आलोकित कर दिया। परि-णामस्वरूप सस्था का भव्य भवन भी बन गया। सस्था निरन्तर प्रगतिशील पथ पर बढ रही है।

श्री सेठ सागरमलजी लूकड चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा सचालित विभिन्न सस्थाऐं

१—श्री सागर जैन हाई स्कूल, २—श्री सागर धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय

३—श्री सागर-भवन ४—श्री सागर पार्क ५—श्री सागर व्यायामशाला

वर्तमान में उपरोक्त समस्त सस्थाओ का सचालन सुचारु रूपेण श्रीमान् स्व० श्री सागरमलजी सा० के ज्येष्ठ पुत्र श्री सेठ नथमलजी लूकड ने अपने अन्य तीनो भाइयो (श्री पुखराजजी, श्री मोहनलालजी तथा श्री चन्दनमलजी) के पूर्ण सहयोग से बडी योग्यता, दक्षता तथा दूरदर्शिता से कर रहे हैं। आप एक उत्साही, होनहार तथा कर्मठ नेता हैं। इस समय आप अन्य भी कितनी ही सामाजिक, धार्मिक तथा व्यापारिक सस्थाओ का सचालन बडी योग्यता से कर रहे हैं।

श्री जैन छात्रालय, अमरावती

मध्य प्रदेश के विदर्भ विभाग में अमरावती शिक्षा का बहुत बडा केन्द्र है। यहा पर लॉ, साइन्स, कॉमर्स, आर्ट, एग्रीकल्चर और आयुर्वेदिक कॉलेज भी हैं। अत विविध भागों से यहा छात्र शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं,

जिनमें से कई छात्र जैन भी होते हैं। अत जैन विद्यार्थियो की सुविधा के लिए अमरावती के कुछ उदार सज्जन सन् १९४५ से एक बोर्डिंग चला रहे थे। किंतु मकान की व्यवस्था ठीक न होने से लोगो का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और श्री जैन शिक्षण समिति की स्थापना हुई। उसी समय स्व० सेठ श्री केसरीमलजी गुगलियाने अमरावती में माल टेकड़ी रोड पर स्थित अपने बगले के मैदान की जमीन जो २६५०० रकबे फीट है—बोर्डिंग भवन के लिए दे दी। और ट्रस्टडीड भी लिख दिया। वर्तमान में जो ८५ हजार की लागत का जैन बोर्डिंग का भव्य भवन है उसके सस्थापक श्रीमान् गूगलियाजी ही है। ९ सज्जन इसके ट्रस्टी हैं जिन्होने परिश्रम पूर्वक धन एकत्रित किया है .— (१) श्री राजमलजी ललवानी, (२) श्री सुगनचन्दजी लूणावत (३) श्री केसरीमलजी गूगलिया (४) श्री ऋषभदासजी रांका (५) श्री जवाहरलालजी मुणोत (६) श्री रघुनाथमलजी कोचर (७) श्री मिश्रीमलजी सामरा (८) श्री पीरचन्दजी छाजेड आदि-आदि। वर्तमान में बोर्डिंग के व्यवस्थापक व गृहपति का कार्य रत्नकुमारजी कर रहे है।

स्थानकवासी जैन समाज के समाचार-पत्र

किसी भी राष्ट्र, समाज अथवा जाति के समाचार-पत्र उन्हे उठाने वाले अथवा गिराने वाले होते हैं। समाचारपत्रो का दायित्व महान् है। हमारी समाज में सामाजिक अथवा साहित्यिक पत्र-पत्रिकाए पढ़ने की दिलचस्पी बहुत कम है। हम चाहते हैं कि अपनी समाज में सामाजिक पत्रो का विकास हो, उनका क्षेत्र महान् हो और वे सच्चे रूप में समाज का प्रतिनिधित्व करने वाले हो। हम अपनी समाज में अगुलियो पर गिनने लायक ही समाचारपत्र पाते हैं—इनमें मासिक हैं, पाक्षिक हैं, साप्ताहिक हैं।

१ जैन प्रकाश—अ० भा० श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरस का यह मुखपत्र है। यह साप्ताहिक पत्र है और हिन्दी तथा गुजराती भाषा में १३९० चादनी चौक दिल्ली से प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री धीरजलाल के० तुरखिया, श्री खीमचन्द भाई म० वोरा और प० शातिलाल व० शेठ हैं।

२ स्थानकवासी जैन —पाक्षिक-गुजराती भाषा में पचभाई की पोल, अहमदावाद से प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री जीवनलाल छगनलाल सघवी।

३ रत्न ज्योत—शतावधानी प० श्री रत्नचन्दजी जैन ज्ञानमदिर का मुखपत्र, पाक्षिक गुजराती भाषा में सुरेन्द्रनगर (सौराष्ट्र) से प्रकट होता है। सपादक—"सजय" हैं।

४ तरुण जैन—साप्ताहिक, हिन्दी भाषा में, महावीर प्रेस, जोधपुर से प्रकट होता है।

सम्पादक—बाबू पद्मसिंह जैन हैं।

५. जैन जागृति—पाक्षिक, गुजराती भाषा में राणपुर (सौराष्ट्र-झालावाड) से प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री महासुखलाल जे० देसाई तथा श्री वचुभाई पी० दोशी हैं।

६ जिन वाणी—श्री सम्यक्-ज्ञान प्रचारक-मडल की तरफ से मासिक हिन्दी भाषा में चौडा बाजार, लालभवन, जयपुर से प्रकट होता है.—

सम्पादक—श्री चपालालजी कर्नावट B A LL B, श्री शशिकान्त झा शास्त्री है।

७ जैन सिद्धान्त—जैन सिद्धान्त सभा का मुख पत्र, मासिक, गुजराती भाषा में शाति सदन, लेमिंगटन रोड, बम्बई से प्रकट होता है।

सम्पादक—श्री नगीनदास गि० शेठ हैं।

८ सम्यग्दर्शन—मासिक हिन्दी भाषा में सैलाना (म० भा०) से प्रकट होता है।

सम्पादक श्री रतनलाल जी डोसी हैं।

९ श्रमण—श्री जैन सांस्कृतिक-मंडल का मुख-पत्र, मासिक हिन्दी भाषा में पार्श्वनाथ, जैनाश्रम हिन्दू यूनिवर्सिटी, बनारस से प्रकट होता है। सम्पादक—प० श्री कृष्णचन्द्रजी शास्त्री हैं।

१० संत वाणी—मासिक पत्रिका हिंदी भाषा में अजमेर से प्रगट होती है। इसमें विद्वद् मुनिराजो तथा त्यागी सन्तो के ही लेख प्रकाशित होते हैं। संचालक—प० श्री धर्मपालजी मेहता हैं।

प्रकाशन-संस्थाएँ

१ सेठिया जैन ग्रन्थमाला, बीकानेर
२ आत्म-जागृति-कार्यालय (श्री जैन गुरुकुल) ब्यावर
३ जवाहर साहित्य माला, भीनासर
४ जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति, रतलाम
५ अमोल जैन ज्ञानालय, धुलिया (पू० अमोलकऋषिजी म० के प्रकाशन)
६ स्थानकवासी जैन प्रकाशन, अहमदाबाद
७ शता रत्नचन्द्रजी महाराज के प्रकाशन, सुरेन्द्र नगर
८ लींबडी सम्प्रदाय के प० नानचन्द्रजी म० छोटालालजी म० के प्रकाशन
९ कच्छ के प्रकाशन—नागजी स्वामी, रत्नचन्दजी स्वामी इत्यादि के
१० लींबडी छोटे सिंघाडे के प्रकाशन पू० मोहनलालजी, मणीलालजी म० आदि के
११ प० मुनि श्री हस्तीमलजी म० सा० के प्रकाशन
१२ पूज्यश्री आत्मारामजी महाराज के प्रकाशन
१३ डॉ० जीवराज घेला भाई के प्रकाशन
१४ बालाभाई छगनलाल ठि० कीकाभ, अहमदाबाद
१५ दरियापुरी प० मुनिश्री हर्षचन्द्रजी म० आदि के प्रकाशन
१६ बोटाद सम्प्रदाय के मुनियो के प्रकाशन
१७ गोंडल सिंघाडे के मुनियो का प्रकाशन
१८ बरवाला सिंघाडे के मुनिवरो का प्रकाशन
१९ श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह के प्रकाशन
२० जैन कल्चरल सोसाइटी, बनारस के प्रकाशन
२१ सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामण्डी, आगरा के प्रकाशन
२२ जैन गुरुकुल प्रेस, ब्यावर के प्रकाशन
२३ श्री महावीर प्रि० प्रेस, ब्यावर के प्रकाशन
२४ श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फरंस के प्रकाशन
२५ प० शुक्लचन्दजी म० के प्रकाशन
२६ मरुधर प० मुनि मिश्रीमलजी म० और प० कन्हैयालालजी म० के प्रकाशन

२७ महासति पार्वतीजी म० सा० के प्रकाशन
२८ जैन सिद्धान्त सभा, बम्बई के प्रकाशन
२९ श्री रतनलालजी डोशी, सैलाना के प्रकाशन
३०. जिनवाणी और सम्यक्ज्ञान, प्रचारक समिति के प्रकाशन
३१. श्री मोतीलालजी रांका, ब्यावर के प्रकाशन
३२. श्री वीराणी ट्रस्ट, राजकोट के प्रकाशन
३३. श्री ज्ञानोदय सोसाइटी, राजकोट के प्रकाशन
३४. श्री शास्त्रोद्धार प्रकाशन समिति के प्रकाशन
३५. प० मुनिश्री पुष्फभिक्खु के प्रकाशन
३६. श्री हितेच्छु श्रावक मण्डल, रतलाम के प्रकाशन

स्था० जैन समाज में मुख्यतः उक्त संस्थाओं द्वारा प्रकाशन और साहित्य प्रचार का कार्य हो रहा है। अन्य प्रकाशन भी होते रहते हैं। अनेक विद्वान् मुनिवर्गों का अप्रकट साहित्य भी मुनिवरों-महासतियाँजी और श्रावकों के पास पड़ा है।

प्रकाशन की सूचियाँ जो मिल सकी हैं, वे उपर्युलिखित हैं।

स्वर्ण-जयन्ती के अग्रिम ग्राहक बनने वालों की शुभ नामावली

१५) श्री कन्हैयालालजी भटेवड़ा, विजयनगर (राज०)
१५) ,, मनोहरलालजी पोखरना, चित्तौड़गढ़
१५) ,, रिखवचन्दजी सन्तोषचन्दजी, रामपुरा
१५) ,, खीमचन्दभाई मूलजी भाई, बुलसर
१५) ,, मोहनलाल पानाचन्द खोखानी, बरवाला
१५) ,, श्वे० स्था० जैन संघ, बोरवाड़
१५) ,, श्वे० स्था० जैन संघ, वेरावल
१५) , त्रिकमजी नाथाभाई, जूनारदेव (इटारसी)
१५) , सेठ धारसीभाई झवेरचन्दभाई, अहमदाबाद
१५) ,, सेठ लखमीचन्द झवेरचन्द, अहमदाबाद
१५) ,, केशवचन्द हरीचन्दभाई मोदी ३ प्रतियों के लिये, अहमदाबाद
१५) ,, हीरालाल भाई लालचन्द भाई, अहमदाबाद
१५) ,, श्वे० स्था० जैन संघ, मणीलार
१५) ,, जयदेवमलजी माणकचन्दजी, बागलकोट
१५) ,, हिम्मतलाल कस्तूरचन्द, बम्बई
१५) ,, चुन्नीलाल कल्याणजी कामदार, बम्बई
१५) ,, बापालाल रामचन्दभाई गांधी, घाटकोपर
१५) श्री ठाकरशीभाई जसराजभाई वीरा, बम्बई
१५) ला० मुसद्दीलाल ज्योतीप्रसादजी जैन, बम्बई
१५) सेठ लालचन्दजी चुन्नीलालजी, बम्बई
१५) सी० एम० जैन, बम्बई
१५) श्री श्वे० स्था० वर्धमान जैनसंघ, सीम
१५) ,, रतनचन्दजी रोपमलजी, कन्दरा
१५) ,, नन्दलाल पोपटलाल, घाटकोपर
१५) ,, रमणीकलाल जेठालाल पारख, घाटकोपर
१५) ,, मगनलाल पी० डोशी, बम्बई
१५) ,, चुन्नीलालजी सौभाग्यचन्दजी, बम्बई
१५) मणीलाल भाई शाह, बम्बई
१५) विट्ठलदास पीताम्बरदास बम्बई
१५) श्री वेरा० स्था० जैन श्रावक संघ, कोट
१५) ,, वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, बम्बई
१५) ,, गिरधरलाल हीराचन्द, बम्बई
१५) ,, सेठ लखमशी ओघाभाई, बम्बई
१५) ,, डॉ० वाडीलाल डी० कामदार, बम्बई
१५) मेसर्स हेमचन्द एण्ड कम्पनी, बम्बई

१५) सेठ अमोलकभाई अमीचन्द, बम्बई
१५) श्री मुफतलाल ठाकरशी शाह, बम्बई
१५) „ हिम्मतलाल जादवजी भाई कोठारी, मलाड
१५) „ जया बहन, जामनगर
१५) „ सेठ वल्लभजी खेताशीभाई, जामनगर
१५) „ कालूभाई नवलभाई, जामनगर
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, ताल (राज०)
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, विजयनगर
१५) शाह भाईलाल मोहनलाल, बम्बई
१५) श्री भीखालाल मोतीचन्द सिंघवी, बम्बई
१५) „ रायचन्दभाई जगजीवनदास पारिख, बम्बई
१५) सेठ शातिलाल हेमचन्द सिंघवी, बम्बई
१५) श्री केवलचन्दजी चौपडा, बम्बई
१५) मेसर्स शान्तिलाल रूपचन्द, बम्बई
१५) सेठ नागरदास नानजी भाई, बम्बई
१५) श्री रामजी भाई केशवजी भाई शाह, बम्बई
१५) श्री नाथालाल मानकचन्द पारिख, माटुंगा
१५) „ रामजी भाई इन्दरजी भाई, माटुंगा
१५) „ वर्धमान स्था० जैन संघ, माटुंगा
१५) „ केशवलाल मूलचन्द भाई, माटुंगा
१५) „ सेठ लालदास भाई जमनादास भाई, बम्बई
१५) „ सेठ वारीलाल अमरसी भाई, बम्बई
१५) „ वर्धमान स्था० जैन संघ, बम्बई
१५) „ वर्धमान स्था० जैन संघ, विले पारले (बम्बई)
१५) „ गिरजाशंकर उमाशंकर मेहता, दादर
१५) „ गिरधर दामोदर दफ्तरी, बम्बई
१५) „ पोपटलाल पानाचन्द, बम्बई
१५) „ वीरचन्द मेघजी भाई, बम्बई
१५) „ मणीलाल वीरचन्द, बम्बई
१५) „ अमृतलाल रायचन्द जौहरी, बम्बई
१५) „ जमनादास हरकचन्द, बम्बई
१५) „ मणीलाल केशवजी भाई, वाडिया
१५) „ रामजी भाई हसराज भाई कमाणी, बम्बई
१५) „ छोटालाल केशवजी भाई, बम्बई
१५) „ जयचन्द भाई जमनादास भाई, बम्बई
५) „ प्राणलाल छगनलाल गोडा, बम्बई

१५) श्री मनसुखलाल विक्रमशीशाह, बम्बई
१५) „ कोरशी भाई हीरजी भाई, बम्बई
१५) „ लीलाचन्द प्रेमचन्द भाई, बम्बई
१५) „ छोटालाल जगजीवनदास भाई, बम्बई
१५) „ कामजी भाई लक्ष्मीचन्द, बम्बई
१५) „ हरकचन्द त्रिभुवनदास, बम्बई
१५) „ जयचन्द हसराज, बम्बई
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, बम्बई, २१
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, राती (मारवाड)
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, निम्बोल
१५) „ वागमलजी जटावचन्दजी जैन, उमरकोट
१५) „ स्थानकवासी जैन संघ, बिलरवा
१५) „ वर्धमान श्रावक संघ, जोगीनगरा
१५) „ वनिता बहन, जामवथली (सौराष्ट्र)
१५) „ प्रीतमलाल पुरसोत्तम सेठ, जामनगर
१५) „ वीसा श्रीमाली स्था० जैन संघ, जाम खम्भालिया (सौराष्ट्र)
१५) „ सिंघवी विशनजी नारायणजी, जाम खम्भालिया
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, फूलिया (अजमेर)
१५) „ टी० जी० शाह, बम्बई २
१५) „ रमणीकलाल दलीचन्द भाई, बम्बई
१५) „ सेठ मनसुखलाल अमीचन्द, बम्बई
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ, अन्धेरी (बम्बई)
१५) „ हिम्मतलाल मगनलाल तुरखिया, बम्बई
१५) „ जयचन्द भाई जसराज भाई वोरा, बम्बई
१५) „ मागीलाल सेठिया, भीनासर
१५) „ पोपटलाल कालीदास, राजकोट
१५) „ उधवजी तलशी भाई डोसी, ध्रोल (सौराष्ट्र)
१५) „ गाधी हीराचन्द नत्थूभाई, ध्रोल
१५) „ महेता ऊधवजी भाई नारायणजी भाई, राजकोट
१५) „ जेठाचन्द पानाचन्द पटेल, पडधरी
१५) „ मनसुखलाल भाईचन्द भाई, बम्बई
१५) „ गोकुलदास शिवलाल अजमेरा, बम्बई
१५) „ हरजीवनदास त्रिभुवनदास, बम्बई
१५) „ खीचन्दभाई सुखलाल भाई, दादर
१५) „ रसिकलाल प्रभाशंकर, बम्बई

१५) श्री अर्जुनलालजी भीमराजजी डागी, भीलवाडा
१५) „ सेठ नागरदास त्रिभुवनदास, बम्बई
१५) „ हरजीभाई उमरशीभाई, बम्बई
१५) „ मणीलाल भाई शामजी भाई विराणी, बम्बई
१५) „ हकीम वेनीप्रसादजी जैन, रामामण्डी
१५) „ रत्न जैन पुस्तकालय, बोदवड
३०) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बोदवड
१५) „ फोजराजजी चुन्नीलालजी बागरेचा, बालाघाट
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, निम्बाहेडा
१५) „ स्था० जैन सघ, लींवडी (सौराष्ट्र)
१५) „ स्था० बडा उपाश्रय जैन सघ, लींवडी
१५) „ सेठ जवानमलजी चादमलजी डुगड, जैतारण
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, इगतपुरी
१५) „ कन्हैयालालजी साहूकार, आरकोनाम
६०) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, नागपुर
१५) „ रूपचन्दजी चौधरी, रामपुरा
१५) „ जैन जवाहर मडल, देशनोक
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, बिलाडा
१५) „ मत्रीजी श्री जैन गुरुकुल, राजनोदगाव
१५) „ शिवचदजी अमोलकचदजी कोटेचा, शिवपुरी
१५) „ वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, शिवपुरी
१५) „ जौहरी केसरीमलजी घीसूलालजी, जयपुर
१५) „ हजारीलालजी रामकल्याणजी जैन, सवाई माधोपुर
१५) „ मागीरामजी छगनलालजी, कोटा
१५) „ नार्थूसिहजी बछराजजी, कोटा
१५) „ वर्धमान स्था० जैन संघ, रायचूर
१५) „ सम्पतराजजी सिघवी, बकाती
१५) „ चादमलजी सा० जैन, बकाती
१५) „ गुलाबचन्दजी पूनमचन्दजी सा० जैन, रायपुर
१५) „ रमेशचन्द दयाचन्दभाई जैन, रामगज मडी
१५) „ कन्हैयालालजी बोहरा, भिवानीगज मडी
१५) „ सम्पतराजजी धारीवाल, रायपुर
१५) श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, गगाधर
१५) „ वर्धमान स्था० जैन संघ, आलोट
१५) „ मेसर्स मोतीरामजी केवलरामजी, महीदपुर
१५) , वर्धमान स्था० जैन श्रावक सघ, नागदामंडी
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, उन्हेल (उज्जेन)
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, उग (झालावाड)
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, नलखेडा
१५) „ दलीचन्दजी ओकारचन्दजी राका, सैलाना
१५) श्री वर्धमान स्था० जैन सघ, बारा (राजस्थान)
१५) „ पारख ब्रदर्स नासिक सिटी
१५) „ शभुलाल कल्याणजी भाई, माटु गा
१५) „ मलूकचद झवेरचद मेहता, बम्बई
१५) „ चिमनलाल अमरचद सिंघवी, दादर
१५) „ उम्मेदचद काशीरामभाई, बम्बई
१५) „ खुशालदासभाई खगारभाई, बम्बई
१५) „ चिमनलाल पोपटलाल शाह, बम्बई
१५) „ जगजीवनलाल सुखलाल अजमेरी, बम्बई
१५) „ हरीलालभाई जयचदभाई डोशी, घाटकोपर
१५) „ शादीलालजी जैन, बम्बई
१५) , नथमलजी बाठिया, बीकानेर
१५) „ प्रतापमलजी फूलचन्दजी बनवट, आष्टा (भोपाल)
१५) „ चादमलजी मिश्रीलालजी, भोपाल
१५) „ वर्धमान स्था० जैन मघ, वडोद
१५) „ विलायतीरामजी जैन, नई दिल्ली
१५) „ घासीलालजी पाचूलालजी, उज्जैन
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, उज्जैन
१५) „ सुगनचन्दजी चुन्नीलालजी लूनावत, धामणगाव
१५) „ वर्धमान स्था० जैन सघ, कुशलगढ
१५) „ जोरावरमलजी प्यारेलालजी, थादला
१५) „ रिखबचन्दजी दौलाजी घोडावत, थादला
१५) „ जेठमलजी वक्तावरमलजी साड, इन्दौर
१५) „ सोहनलालजी भूरा, मोरियाबाडी (आसाम)

मुद्रक

पेज नं० १ से २०० तक एशियन प्रेस, फैज बाजार, दिल्ली। गुजराती, जन्मभूमि प्रेस, बम्बई। पेज नं० १ से १६०+७६ तक नवीन प्रेस, दिल्ली।

प्रकाशक

आनन्दराज सुराना एम० एल० ए०, प्रधानमंत्री अ० भा० श्वे० स्था० जैन कॉन्फरन्स, १३६० चाँदनी चौक दिल्ली।

श्री भैरोंदान जी सेठिया की अध्यक्षता में बम्बई (माधव बाग) के अधिवेशन का एक दृश्य

कान्फरेन्स की जनरल कमिटी की भावनगर में एक बैठक श्री मेहता जी मध्य में बैठे हैं।
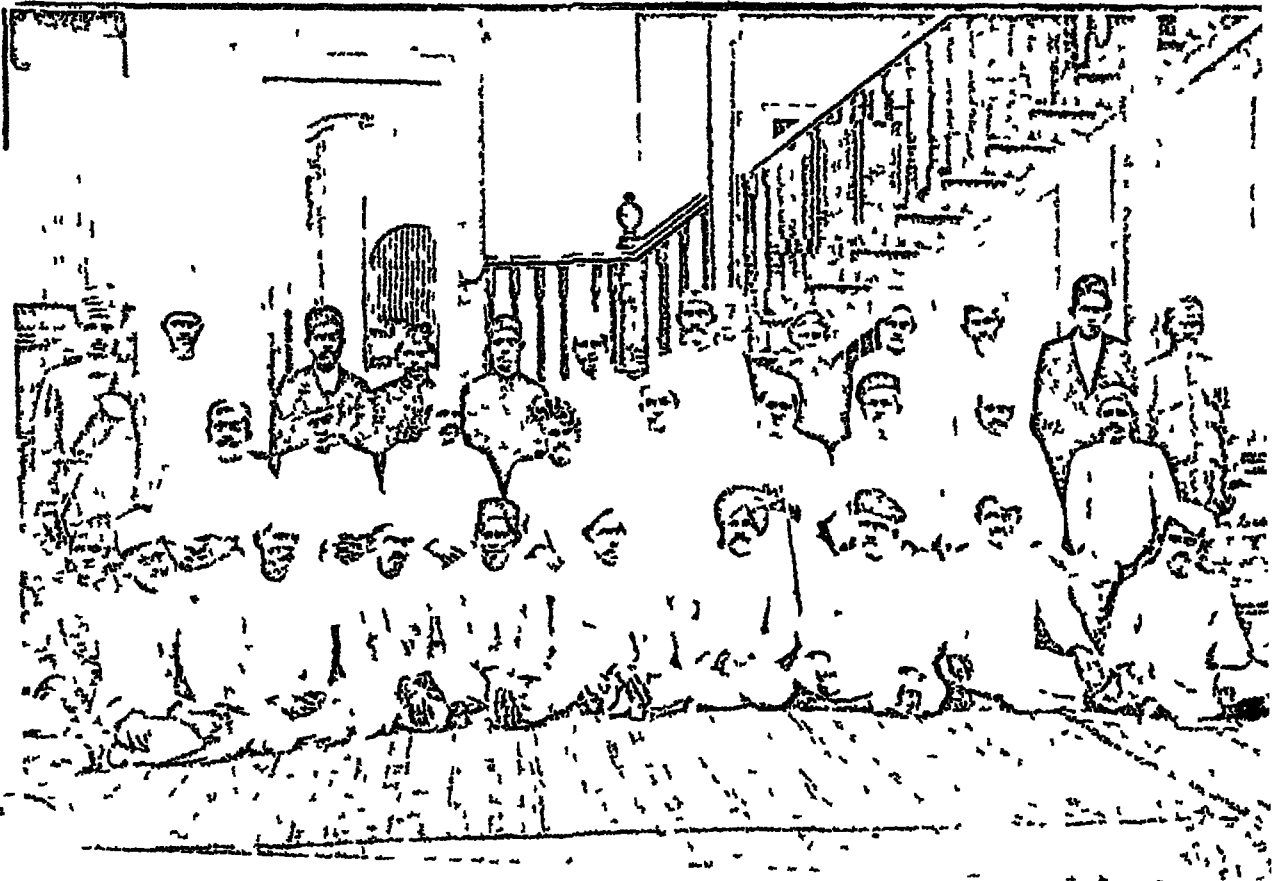
कान्फरेन्सकी जनरल कमिटी की एक बैठक
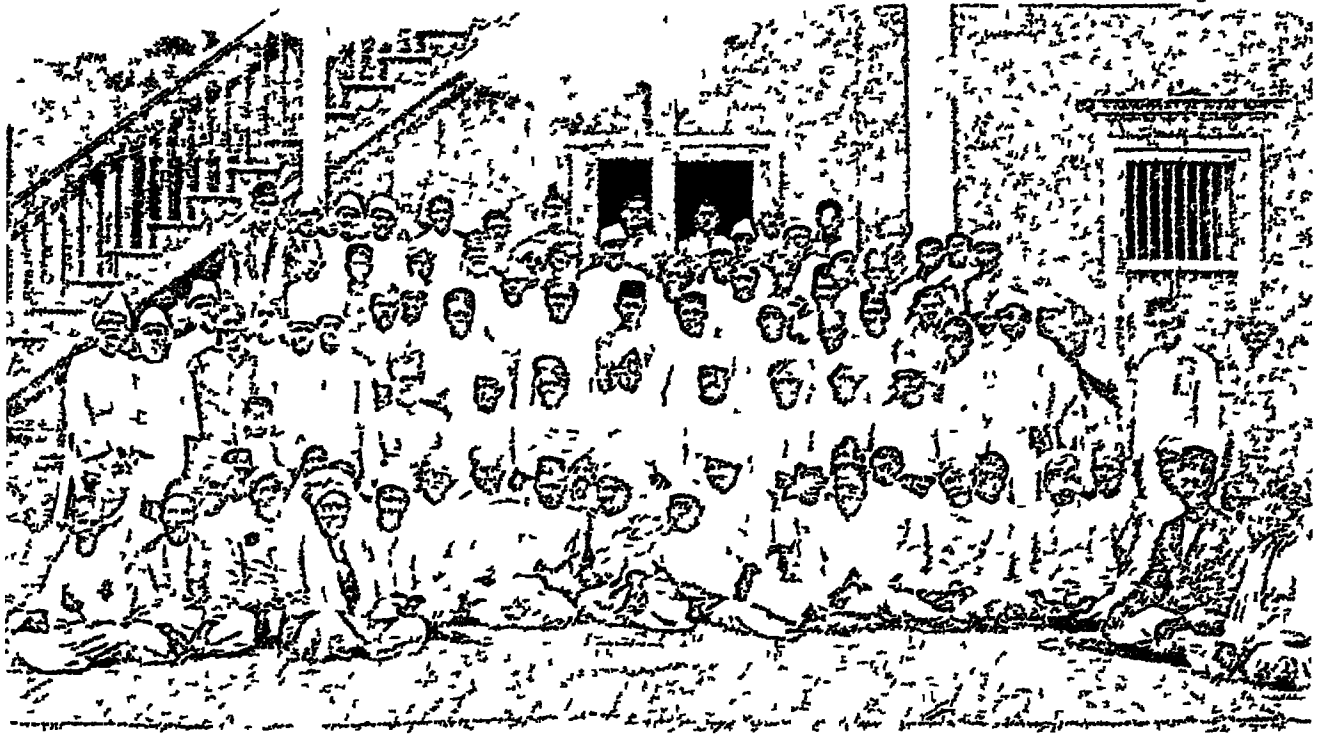
बंबई में हुई कान्फरन्स की जनरल कमिटी की एक बैठक
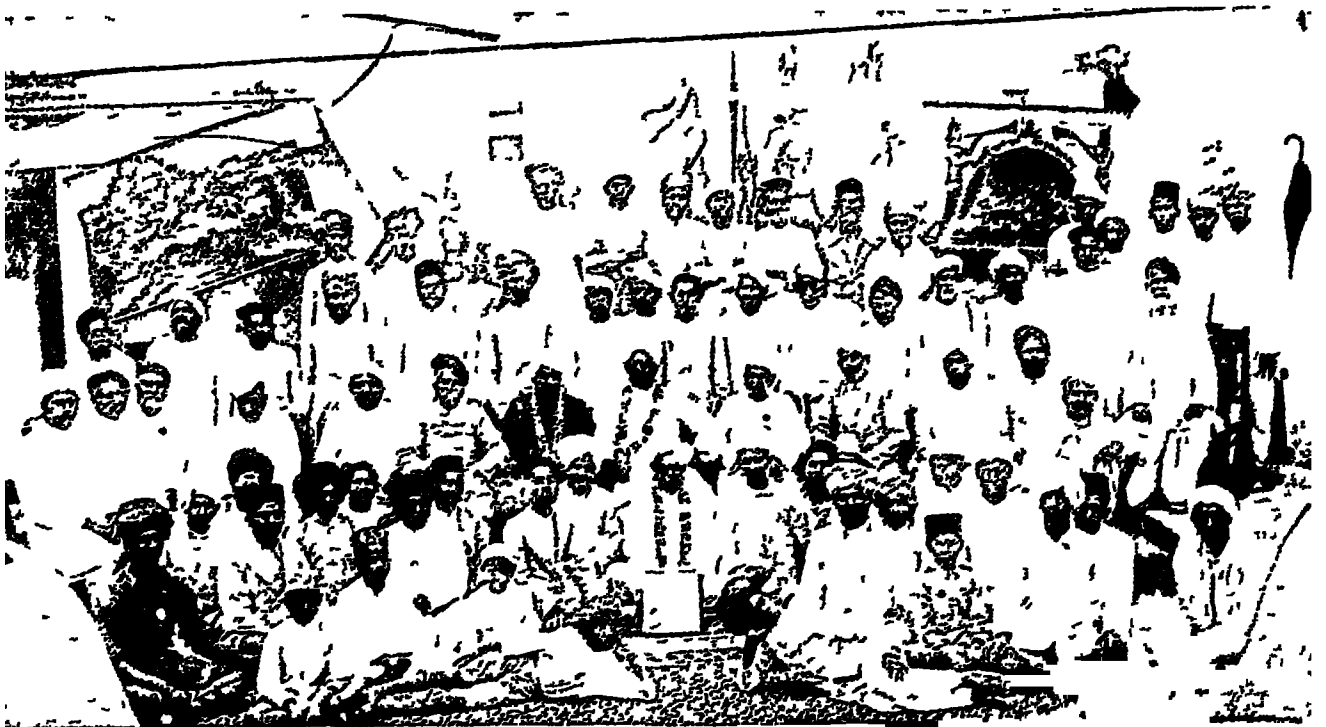
श्री हेमचन्द्र भाई मेहता के नेतृत्व में कांन्फरन्स का एक शिष्ट मण्डल

जैन बोर्डिङ्ग पूना के छात्रों के साथ कान्फरन्स के अधिकारी गण
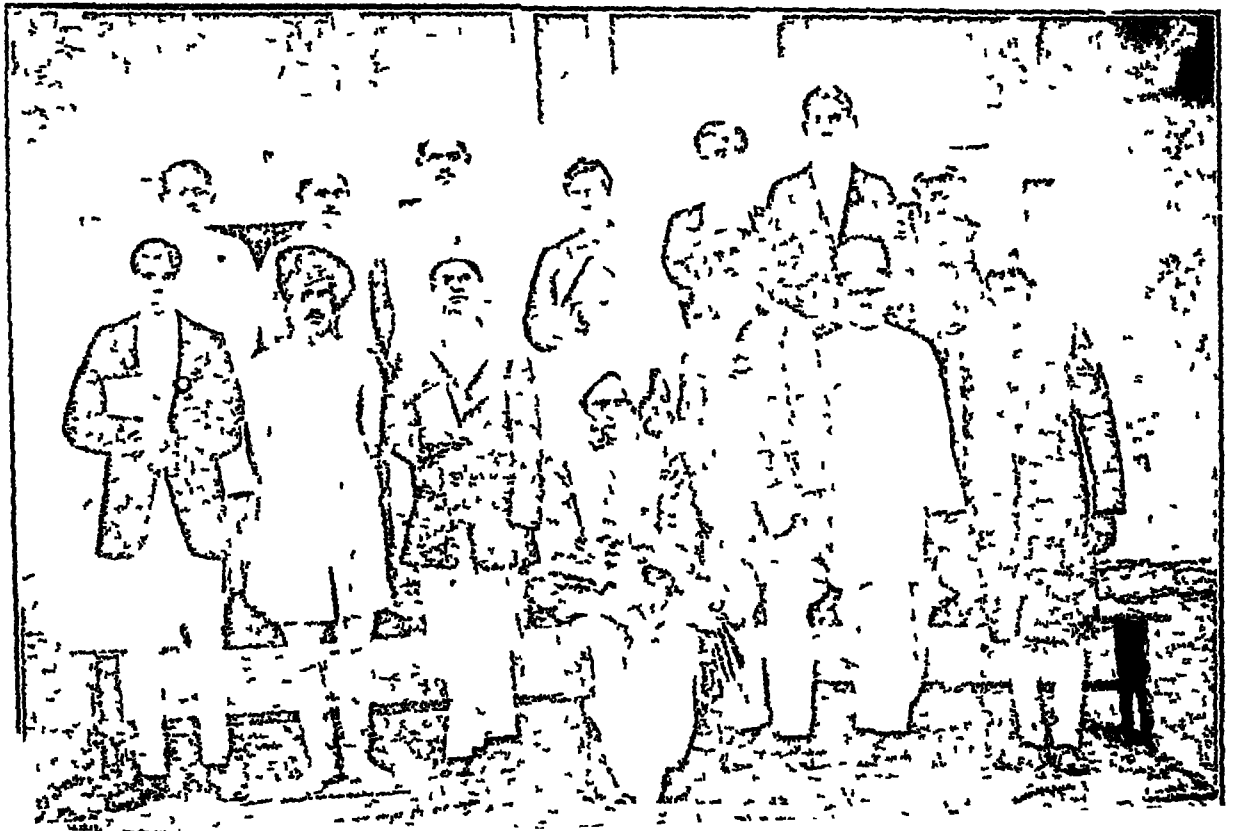
सौराष्ट्र धर्म शिक्षण समिति की राजकोट में एक बैठक
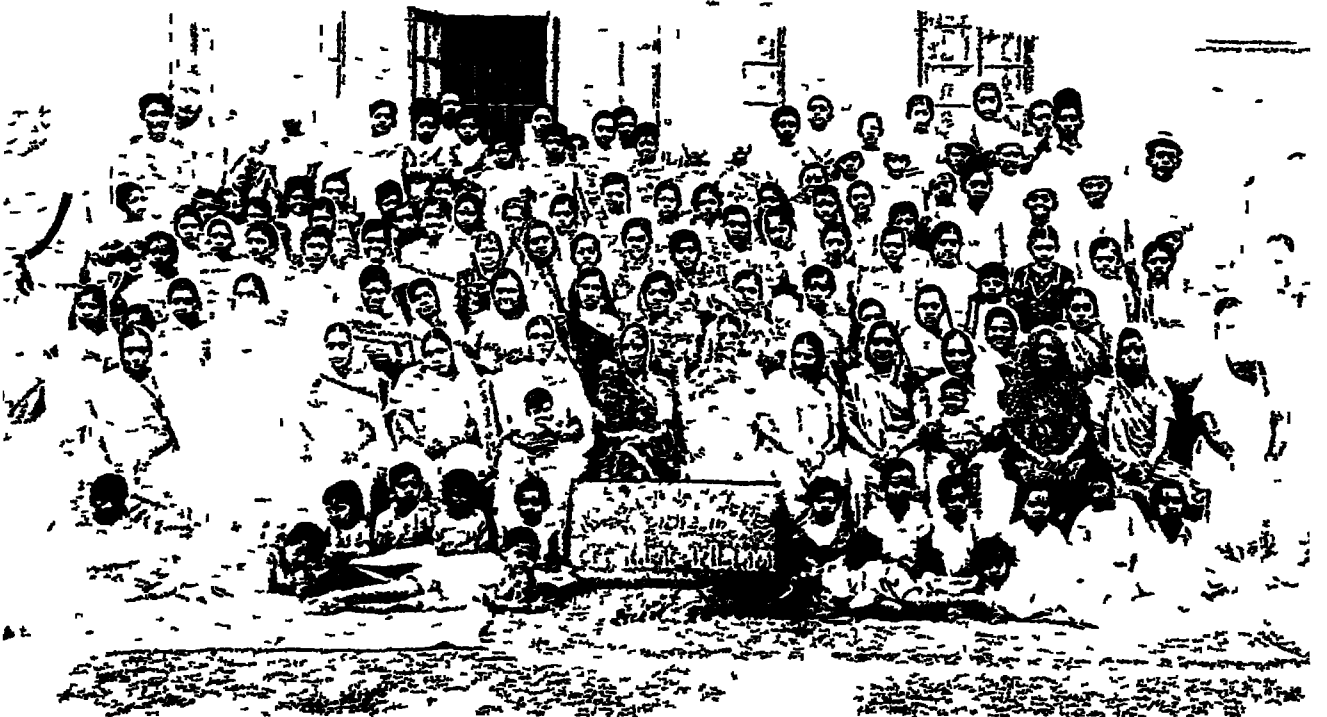
श्री रत्न चिन्तामणि मित्र-मंडल घाटकोपर द्वारा संचालित कन्याशाला व श्राविकाशाला

अधिवेशन के समय महिला-परिषद का एक दृश्य
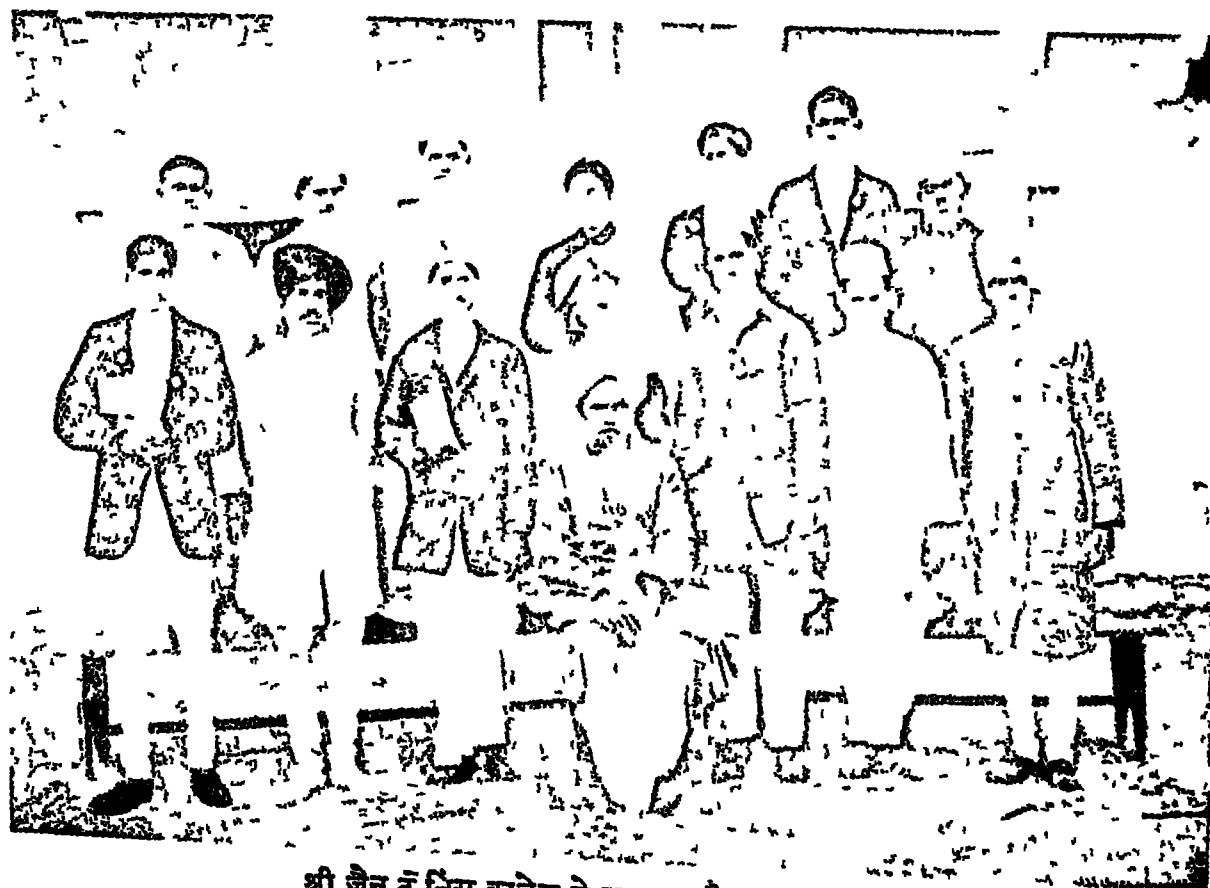
श्री जैन ट्रेनिंग कालेज के स्नातक, जैपुर (राजस्थान)

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વે. સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સ

સુવર્ણ-જયન્તી ગ્રંથ

ગુજરાતી વિભાગ

આમુખ

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વેતામ્બર સ્થા. જૈન કૉન્ફરન્સના પચાસવર્ષીય સ્વર્ણ-જયન્તી અધિવેશનના શુભ પ્રસંગે કૉન્ફરન્સના સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ-ગ્રન્થને પ્રકાશિત કરતા અમોને વણો જ હર્ષ થાય છે. આ ઇતિહાસના પ્રકાશનનો પણ એક નાનકડો ઇતિહાસ છે. આજથી લગભગ ૭ મહિના પહેલાં કૉન્ફરન્સના ઇતિહાસને પ્રકાશિત કરવાનો વિચાર ઉત્પન્ન થયો અને ત્યારે જ તે વિચારને મૂર્તરૂપ આપવાનો નિર્ણય પણ કરવામાં આવ્યો. કોઈ પણ ઇતિહાસના આલેખનને માટે હોવી જોઈતી લેખન-સામગ્રી, વ્યવસ્થિત સંપાદિત કરવાની સમય-મર્યાદા તથા જૈન સંઘોની સહાનુભૂતિ હોવી નિતાન્ત આવશ્યક છે, પરંતુ સમયાભાવ તથા કાર્યાધિક્યને કારણે આ સ્વર્ણ-જયન્તી-ગ્રન્થને જોઈએ તેવો સમૃદ્ધ અને જ્ઞાનભંડાર-માહિતીપૂર્ણ બનાવી શક્યા નથી, એ માટે અમને ખેદ થાય છે, છતાં પણ અમે આ ગ્રન્થને વિશેષ ઉપયોગી બનાવવા માટે યથાશક્ય પ્રયત્ન અવશ્ય કર્યો છે અને જાણીએ છીએ કે આ સ્વર્ણ જયન્તી-ગ્રન્થને ચિરસ્મરણીય બનાવવા માટે તેની અન્તર્ગત અનેક વિષયોનો સમાવેશ કરવો અત્યાવશ્યક હતો, પરંતુ અમને યથાસમય શ્રાવક-સંઘો, શ્રીમંતો, વિદ્વાનો, સંસ્થાઓના પરિચય વગેરે ન મળવાને કારણે અમે એવાનો યથાસ્થાને સમાવેશ કરી શક્યા નથી, એ માટે અમે ક્ષમાર્થી છીએ. અમને વિશ્વાસ છે કે આ નાનકડો સ્થા. સમાજનો ઐતિહાસિક ગ્રન્થ સ્થાનકવાસી જૈન સમાજનો સર્વાંગસુંદર ભાવિ માહિતી ગ્રન્થ તૈયાર કરવામાં ઉપયોગી સિદ્ધ થશે.

આ ગ્રન્થ નીચે જણાવેલ પરિચ્છેદોમાં વિભક્ત કરવામાં આવેલ છે.—

(૧) જૈન સંસ્કૃતિ, ધર્મ, તત્ત્વજ્ઞાન આદિનો સંક્ષિપ્ત પરિચય
(૨) સ્થા. જૈન ધર્મનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ.
(૩) સ્થા. જૈન કૉન્ફરન્સનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ.
(૪) સ્થા. જૈન કૉન્ફરન્સની વિશિષ્ટ પ્રવૃત્તિઓ
(૫) સ્થા. જૈન સાધુ-સમ્મેલનનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ
(૬) સ્થા. જૈન ધર્મના ઉન્નાયક મુનિરાજો
(૭) સ્થા. જૈન ધર્મના શ્રાવકો
(૮) સ્થા. જૈન સંસ્થાઓ તથા સંઘો.

સંક્ષેપમાં આ સ્વર્ણ-જયન્તી-ગ્રન્થમાં સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના ચતુર્વિધ શ્રીસંઘનો સંક્ષિપ્ત પરિચય આપવાનો યથાશક્ય પ્રયત્ન કરવામાં આવ્યો છે.

આ ગ્રન્થમાં સારાસારનો હંસબુદ્ધિથી વિવેક કરવાની તથા સારવસ્તુને ગ્રહણ કરી, રહી ગએલી ત્રુટિઓ કે સ્ખલનો માટે યોગ્ય સૂચનો મોકલવાની વિનમ્ર પ્રાર્થના છે, જેથી ભવિષ્યમાં તેનો સદુપયોગ કરી શકાય.

જે જે ધર્મપ્રેમી બંધુઓએ આ ગ્રન્થનું ગૌરવ વધારવામાં પોતાનું નામ અગ્રિમ-ગ્રાહક શ્રેણીમાં લખાવી તથા લેખન, સંશોધન તથા પ્રકાશન આદિ કાર્યોમાં સક્રિય સહકાર આપ્યો છે તે સર્વેના આભાર માનવાની આ તક લઈએ છીએ.

ચાંદની ચોક,
દિલ્હી. તા. ૨૮-૩-૫૬

નિવેદક —
ભીખાલાલ ગિરધરલાલ શેઠ
ધીરજલાલ કે. તુરખિયા

અનુક્રમણિકા

જૈન ધર્મનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ

૧. આદિ યુગ

આદિ યુગનો પ્રારંભ પ્રાચીનતમ છે તે જેટલો પ્રાચીન છે તેટલો જ અજ્ઞાત પણ છે. માનવ-સભ્યતાનો અરુણોદય થયો તે દિવસને આદિકાળનો પ્રથમ દિવસ માની લઈએ તો તે અનુચિત નથી

આ યુગનુ નામ ભગવાન આદિનાથના નામ ઉપરથી આદિ યુગ રાખવામા આવ્યુ છે

ભગવાન આદિનાથ, આર્ય સસ્કૃતિના સૃષ્ટા, વર્તમાન અવસર્પિણી કાળમા જૈન-ધર્મના પ્રથમ સસ્થાપક, પરમ દાર્શનિક અને માનવ સભ્યતાના જન્મદાતા તરીકે પ્રસિદ્ધ છે.

વર્તમાન ઇતિહાસ ભગવાન ઋષભદેવ (આદિનાથ)ના વિષયમા મૌન છે. કારણ કે ઇતિહાસકારની દૃષ્ટિ ૨૪૦૦૦ વર્ષથી પહેલાના સમયમા પહોચી શકવા અસમર્થ છે

આથી ઋષભદેવના વિષયમા જાણવા માટે આપણે જૈન શાસ્ત્રો, વેદ, પુરાણ અને સ્મૃતિગ્રંથોનો આશ્રય લેવો પડે છે.

ભગવાન ઋષભદેવના સબધમા વૈદિક સાહિત્યમાથી ઘણા ઉલ્લેખ પ્રાપ્ત થાય છે. શ્રીમદ્ ભાગવતના પાંચમા અને બારમા સ્કધમા તેમના વિષે વિસ્તૃત ઉલ્લેખ છે આ પ્રસગમા ભગવાન ઋષભદેવને મોક્ષ ધર્મના આદ્ય પ્રવર્તક માનવામા આવ્યા છે

ભગવાન ઋષભદેવના સમયને જૈન ધર્મમા 'યુગલિયા-કાળ' કહેવામા આવ્યો છે પુરાણોમા પણ એમજ કહેવામા આવ્યુ છે વેદમાં યમ-યમીના સવાદથી પણ જૈન ધર્માનુકૂળ વર્ણનની સત્યતા સાબિત થાય છે

તે યુગના માનવીઓ પ્રાકૃતિક જીવન જીવતા અને તેમનુ મન પ્રકૃતિજન્ય દૃશ્યો અને સમૃદ્ધિઓમા જ રમતુ. તે વખતના મનુષ્યો સરળ-સ્વભાવી હતા અને તેમની વ્યવસ્થા ઘણીજ સરળ હતી તેમનો નિર્વાહ પ્રકૃતિએ પેદા કરેલા કલ્પવૃક્ષો વડે થતો એક જ માબાપથી જોડલા રૂપે જન્મતાં પુત્ર-પુત્રીઓ દપતી બનતા અને જીવન વહન કરતાં.

આદિ જીવનનિર્વાહના સાધનો અને જીવનને ઉપયોગી ચીજો બનાવવાનું શીખવ્યુ મતલબ કે યુગલિયા-યુગનુ નિવારણ કર્યુ

એક જ માબાપના સતાનો વચ્ચે જે દાંપત્યજીવન જીવાતુ તેનુ પણ નિવારણ કરી ભગવાન ઋષભદેવે લગ્નપ્રથા દાખલ કરી તેમની સાથે જોડલે જન્મેલી સુમગલા નામની સહોદરા તો તેમના દામ્પત્યજીવનની ભાગીદાર હતી જ, પરતુ વ્યવસ્થિત લગ્નપ્રથાને જન્મ આપવા અને તેને વ્યાપકરૂપ આપી વસુધૈવ કુટુમ્બકમની ભાવનાને વિકસાવવા, એક સુનદા નામની કન્યા સાથે તેમણે વિધિપુરઃસર લગ્ન કર્યાં આ કન્યા પોતાના જન્મ સાથીના અવસાનને લીધે હતોત્સાહ અને અનાથ બની ગઈ હતી આ કાળમા, આ ક્ષેત્રમા વિધિસરના લગ્ન પ્રથમ આ જ હતા

આ બન્ને સ્ત્રીઓથી તેમને ભરત અને બાહુબલિ આદિ સો પુત્રો અને બ્રાહ્મી અને સુદરી નામની બે કન્યાઓની પ્રાપ્તિ થઈ.

વર્તમાન સસ્કૃતિના આદ્ય પુરુષને પ્રાપ્ત થએલ આ પરમ સૌભાગ્યને લીધે આજે પણ 'શત પુત્રવાન્ ભવ'નો આશીર્વાદ આપવામા આવે છે

ભગવાન ઋષભદેવનુ જન્મસ્થાન અયોધ્યા નગરી હતુ. જેનુ બીજુ નામ વિનીતા પણ હતુ. તેમનો જન્મ ત્રીજા આરાના અંત ભાગે ચૈત્ર વદી અષ્ટમીના રોજ મધ્ય રાત્રિએ, ઉત્તરાષાઢા નક્ષત્રમા નાભિકુલકરની રાણી મરુદેવાની કુક્ષિએ થયો હતો

ભગવાન ઋષભદેવના રાજ્ય-અમલનો સમય નિર્માણ-કાળ કહી શકાય કારણ કે તેમના જ્યેષ્ઠ પુત્ર ભરત યૌવનાવસ્થામા હોઇ રાજ્યાધિકારી બનવાના માર્ગે અગ્રેસર બની રહ્યા હતા અને રાજ્ય નીતિમા નિપુણ હતા બાહુબલિનીશારીરિક બલિષ્ઠતા તે સમયના વીરોમા સ્પર્ધાનો વિષય બની ચૂકી હતી

ભગવાન ઋષભદેવની પુત્રી બ્રાહ્મીએ બ્રાહ્મી-લિપિનો આવિષ્કાર કર્યો હતો અને સુંદરીએ ગણિત વિદ્યાનુ પ્રચલન કર્યું હતુ

સંસાર પ્રત્યે વૈરાગ્યભાવ પ્રગટ થાય એ સ્વભાવિક છે. તેમણે પોતાનુ રાજ્ય પોતાના પુત્રોને વહેંચી આપ્યુ અને સંસારનો ત્યાગ કરી ચાર હજાર પુરુષો સાથે સંયમ અંગીકાર કર્યો.

એક હજાર વર્ષ સુધી આત્મસાધના અને તપશ્ચર્યા કરતા એક સ્થળેથી બીજે સ્થળે અને જનપદ વિહાર કરતા છેવટે પુરિમતાળ નગરમા તેઓને કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયુ કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ બાદ તેમણે ચતુર્વિધ સંઘરૂપી તીર્થની સ્થાપના કરી આ કારણે આ અવસર્પિણી કાળમા તેઓ આદિ તીર્થંકર કહેવાયા, વૈદિકશાસ્ત્રો મુજબ તે પ્રથમ 'જિન' બન્યા અને ઉપનિષદો મુજબ તેઓ બ્રહ્મા તથા ભગવાન પદના અધિકારી તથા પરમપદ પ્રાપ્ત કરનાર સિદ્ધ, બુદ્ધ અને અજર–અમર પરમાત્મા થયા

છદ્મસ્થાવસ્થા અને કેવળજ્ઞાનીપણે મળી કુલ એક લાખ પૂર્વ જેટલા દીર્ઘ સમય પર્યંત સંયમ પાળી અષ્ટાપદગિરિ ઉપર પદ્માસને સ્થિત થઇ અભિજીત નક્ષત્રમા તેઓ પરિનિર્વાણને પામ્યા.

૨. ભરત અને બાહુબલિ

ભગવાન ઋષભદેવના આ બને પુત્રોના નામ જૈન ગ્રંથોમા ઘણા સુવિખ્યાત છે

ભરતના નામ ઉપરથી આ ક્ષેત્રનુ નામ 'ભરત' યા ભારત પડ્યુ છે. ભરત આ અવસર્પિણી કાળના સર્વપ્રથમ ચક્રવર્તી રાજા હતા તેમની સત્તા સ્વીકારવા તેમના ભાઇ બાહુબલિ તૈયાર નહોતા બાહુબલિ પોતાના બળ ઉપર મુસ્તાક હતા આને પરિણામે બને વચ્ચે યુદ્ધ થયુ આ યુદ્ધ જૈન શાસ્ત્રોમા સૌથી પ્રાચીન યુદ્ધ–ઘટના ગણાય છે

- -

વિશ્વના લોકો વૈજ્ઞાનિક શોધખોળોનો આશ્રય લઇ અગણિત માનવસંહાર યુદ્ધમા કરે છે, તેને બદલે આવા નિર્દોષ યુદ્ધ થાય તો માનવજાતનુ શ્રેય થાય! મુષ્ટિ-યુદ્ધ, ચક્રયુદ્ધ અને મુષ્ટિયુદ્ધ જેવા હિંસક યુદ્ધો તે કાળે પણ જો કે હતા ખરા, પણ તેનો આશ્રય છેક છેલ્લે અને ન છૂટકે જ લેવામા આવતો

ચોથા યુદ્ધમા ભરતે ચક્ર છોડયુ, પરંતુ ભાઇઓમા તેની અસર થાય નહિ એટલે તે પાછુ ફર્યું.

છેલ્લા યુદ્ધમા બાહુબળીએ ભરતને મારવા માટે મુઠ્ઠી ઉગામી, પરંતુ તુરત તેને વિવેક જાગ્રત થયો અને ઇન્દ્રે સમજાવ્યા એટલે તેમણે મુઠ્ઠી ઉપર જ રોકી લીધી જો એ મુષ્ટિનો પ્રહાર થયો હોત તો ભરત ક્યા લુપ્ત થઇ જાત તેનો પત્તો પણ લાગત નહિ, એવુ બાહુબળીનુ અમાપ બળ હતુ, એમ કહેવાય છે.

બાહુબળી માટે ઘા કરવા માટે ઉપાડેલો હાથ એમને એમ પાછો ફરે એ પણ અસહ્ય હતુ તેથી તેમણે સામાનો કે પોતાનો ઘાત કરવા કરતા તે મુષ્ટિનો ઉપયોગ અભિમાનનો ઘાત કરવામા કર્યો. તેમણે તે હાથે કેશ લુંચન કર્યું અને સાધુવ્રતી બન્યા.

આમ આ ક્ષેત્રના સર્વપ્રથમ સમ્રાટ્ બનવાનુ સૌભાગ્ય ભરતને મળ્યુ

ભરતને અંગેનુ વિસ્તૃત વર્ણન જૈન જનતાના ગ્રંથોમા મળી આવે છે

૩. ઋષભદેવ પછીના બાવીસ તીર્થંકરો

ભગવાન ઋષભદેવ પછીના બાવીસ તીર્થંકરોનો ઇતિહાસ બનવાજોગ છે કે ઘણો મહત્ત્વપૂર્ણ હોય, પરંતુ તે સંબંધમા વિસ્તૃત હકીકતો મળી શકતી નથી એટલે તેમના નામો અને સામાન્ય હકીકત જ અત્રે આપવામા આવે છે.

	નામ	પિતા	માતા	સ્થાન
૨	અજીતનાથ	જિતશત્રુ	વિજયાદેવી	અયોધ્યા
૩	સંભવનાથ	જિતારિરાજા	સૈન્યાદેવી	શ્રાવસ્તી
૪	અભિનંદન	સંવરરાજા	સિદ્ધાર્થરાણી	વિનિતા
૫	સુમતિનાથ	મેઘરથરાજા	સુમંગલા	કુંચનપુરી
૬	પદ્મપ્રભુ	ધરરાજા	સુસિમા	કૌશામ્બી
૭	સુપાર્શ્વનાથ	પ્રતિષ્ઠેન	પૃથ્વી	કાશી
૮	ચંદ્રપ્રભુ	મહાસેન	લક્ષ્મા	ચંદ્રપુરી
૯	સુવિધિનાથ	સુગ્રીવ	રામાદેવી	કાકંદી
૧૦.	શીતલનાથ	દૃઢરથ	નંદારાણી	ભદ્દીલપુર

	નામ	પિતા	માતા	સ્થાન
૧૧	શ્રેયાંસનાથ	વિષ્ણુસેન	વિષ્ણુદેવી	સીંહપુર
૧૨	વાસુપૂજ્ય	વસુપૂજ્ય	જયાદેવી	ચંપાપુરી
૧૩	વિમળનાથ	કૃતવર્મ	શ્યામા	કંપિલપુર
૧૪	અનંતનાથ	સિંહસેન	સુયશા	અયોધ્યા
૧૫	ધર્મનાથ	ભાનુરાજ	સુવ્રતા	રત્નપુર
૧૬	શાંતિનાથ	વિશ્વસેન	અચિરા	હસ્તિનાપુર
૧૭	કુંથુનાથ	સૂરરાજ	શ્રીદેવી	,,
૧૮	અરનાથ	સુદર્શનરાજ	શ્રીદેવી	,,
૧૯	મલ્લિનાથ	કુંભરાજ	પ્રભાદેવી	મિથિલાનગરી
૨૦	મુનિસુવ્રત	મિત્રરાજ	પદ્માવતી	રાજગૃહી
૨૧	નમિનાથ	વિજયસેન	વપ્રા	મિથિલા-મથુરા
૨૨	નેમનાથ (અરિષ્ટનેમી)	સમુદ્રસેન	શિવાદેવી	દ્વારિકા
૨૩	પાર્શ્વનાથ	અશ્વસેન	વામાદેવી	બનારસ

આ બાવીસ તીર્થંકરો પૈકી ૧૬ મા શાંતિનાથ, ૧૭ મા કુંથુનાથ અને ૧૮ મા અરનાથ—આ ત્રણ તીર્થંકરો તેમના રાજ્યકાળ દરમ્યાન ચક્રવર્તી હતા

૧૯ મા મલ્લિનાથ સ્ત્રી રૂપે હતા. જૈન ધર્મમાં સ્ત્રીઓ પણ તીર્થંકર થઈ શકે છે, એ સત્યનુ આ સર્વશ્રેષ્ઠ પ્રમાણ છે જગતના કોઈપણ ધર્મમા સ્ત્રીને ધર્મ સંસ્થાપક તરીકેનુ મહત્ત્વ અપાયુ નથી આ એક જૈન ધર્મની ખાસ વિશિષ્ટતા છે

૨૦ મા મુનિસુવ્રત તીર્થંકરના સમયમા શ્રીરામ અને સીતા થયા હતા

બાવીસમા અરિષ્ટનેમી (નેમનાથ)ના વખતમા નવમા વાસુદેવ શ્રીકૃષ્ણ થયા હતા

અરિષ્ટનેમી લગ્ન કરવા જતા હતા ત્યારે રસ્તામા ભોજનને માટે લાવવામાં આવેલા પશુઓનો કરુણ ચિત્કાર સાભળી, પશુઓને બચાવવા, લગ્નના માંડવેથી પાછા ફર્યા અને પરમકલ્યાણકારી સયમધર્મ અંગીકાર કર્યો

તેમની અને કૃષ્ણ વાસુદેવ વચ્ચેની વાતચીતના પ્રસગો જૈનાગમોમાં ઘણા મળી આવે છે

ત્રેવીસમા તીર્થંકર પાર્શ્વનાથે પણ સંરક્ષણ અને જીવદયા કેટલી આવશ્યક છે તે બતાવ્યુ તેમનો અને કમઠ તાપસનો પ્રસગ જૈન ધર્મગ્રથોમા સુપ્રસિદ્ધ છે

૪. ભગવાન મહાવીર

ભગવાન પાર્શ્વનાથ પછી ૨૫૦ વર્ષે આજથી ૨૫૧૩ વર્ષ પૂર્વે ચોવીસમા પરમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીરનો જન્મ ચૈત્ર શુક્લા ત્રયોદશીના દિવસે, ક્ષત્રિયકુંડ નગરના રાજા સિદ્ધાર્થની રાણી ત્રિશલાદેવીની કુક્ષિએ થયો હતો તેમનુ જન્મનુ નામ વર્દ્ધમાન હતુ.

બાલસુલભ ક્રિડાઓ કરતા કરતાં તેઓ યુવાવસ્થાને પામ્યા તેમના લગ્ન યશોદા નામની એક રાજકન્યા સાથે કરવામા આવ્યા હતા લગ્નના ફળરૂપે પ્રિયદર્શના નામની એક કન્યાની તેમને પ્રાપ્તિ થઈ હતી

તેમના માતપિતા દેવલોક પામ્યા પછી તેઓ દીક્ષા લેવા તયાર થયા પરતુ તેમના મોટા ભાઈ નદીવર્ધને થોડો વખત રોકાઈ જવાનુ કહ્યુ પિતાની ગેરહાજરીમા મોટા ભાઈની આજ્ઞાનુ પાલન નાના ભાઈએ કરવું જોઈએ, એ આદર્શને મૂર્તિમત બનાવવા શ્રી વર્દ્ધમાન બે વરસ સુધી રોકાઈ ગયા, અને તે સમય દરમ્યાન સચિત્તજળ ત્યાગ આદિ તપશ્ચર્યા આદરી, સયમ માટેની પ્રાથમિક તૈયારીઓ કરતા રહ્યા છેવટે, એક વર્ષ સુધી વાર્ષિક દાન દઈ તેઓએ દીક્ષા અગીકાર કરી

દીક્ષા લીધા બાદ સાડાબાર વર્ષ અને એક પક્ષ સુધી મહાવીરે ઘોર તપશ્ચર્યાઓ કરી, તેને પરિણામે ચાર ઘનઘાતી કર્મોનો ક્ષય થઈ, જૃંભિકા નગરીની બહાર, ઋજુવાલિકા નદીને ઉત્તર તીરે સામાયિક ગાથાપતિ કૃષ્ણીના ખેતરમા, ચોવિહારો છઠ્ઠ કરી, શાલવૃક્ષ નજીક દિવસના પાછલા પહોરે, ગોદોહન (ઉકડા) આસને બેઠા હતા ત્યારે ધર્મધ્યાનમા પ્રવર્તતાં થકા વૈશાખ સુદી દશમીને દિવસે મહાપ્રકાશમય કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન પ્રગટ થયુ

કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ પછી ધર્મ દેશના દેતા પ્રભુ ૩૦ વર્ષ સુધી ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતા રહ્યા

હુંડાવસર્પિણી કાળના પ્રભાવે ભગવાન મહાવીરની પ્રથમ દેશના ખાલી ગઈ, કારણ તે દેશના વખતે કેવળ દેવતા જ હાજર હતા, મનુષ્યો ન હતા, પણ બીજી દેશના વખતે તેમણે વેદ-વેદાન્તના પારગામી એવા બ્રાહ્મણ પડિતોને શિષ્ય બનાવ્યા તેમા ઇન્દ્રભૂતિ (ગૌતમ) પ્રથમ હતા

ભગવાન મહાવીરના સમયમા સમાજનુ અધ પતન થયેલુ હતુ, તે સમયે મનુષ્ય જાતિની એકતાને બદલે ઊચનીચની ભાવનાનુ ભૂત જાતિવાદના નામે ઊભુ કરવામા આવ્યુ હતુ સ્ત્રીઓ અને શૂદ્રોને ધર્મ અને પુણ્ય કાર્યના લાભથી વચિત રાખવામા આવતા હતા.

ધર્મના મુખો એ મૃત્યુ પછીની અવસ્થાની વાત ગણાતી સ્વર્ગની ચાવી યજ્ઞ અને તેની ચાવી તેના અધિકારી બ્રાહ્મણોના યજ્ઞોપવિતને જ બાંધેલી હતી. યજ્ઞોમા પશુઓની હિંસા અને સોમરસના પાન થતા અનેક વળી નરમેધ યજ્ઞો પણ કરતા અને આ વૈદિક ક્રિયા, હિંસા ન ગણાતા સ્વર્ગાધિકાર આપનારી મનાતી

આ બધા ધર્મને નામે ચાલતા નાસ્તિક ધર્મથી વિરુદ્ધના ક્રિયાકાંડો સામે ભગવાન મહાવીર વિદ્રોહ જગાવ્યા ધર્મની માન્યતાઓના મૂલ્યાંકનો બદલવા એક અજબ ક્રાંતિ શરૂ કરી

છદ્મસ્થાવસ્થા અને કેવળપર્યાયના મળી બેતાળીસ વર્ષના દીક્ષાપર્યાય દરમ્યાન તેમણે એક અસ્થિગ્રામ, એક વાણિજ્યગ્રામ, પાંચ ચંપા નગરીમા, પાંચ પૃષ્ઠચંપામા ચૌદ રાજગૃહીમા, એક નાલંદાપાડામા, છ મિથિલામા બે ભદ્રિકા નગરીમા, એક આલંભિયામા, એક સાર્વથીમાં, એક લાઢદેશ (અનાર્ય દેશ)મા અને ત્રણ વિશાળા નગરીમા એમ એકતાળીસ ચાતુર્માસ કર્યા અને બેતાળીસમા ચાતુર્માસ માટે તેઓ પાવાપુરીમા પધાર્યા.

પાવાપુરી કે જેનુ બીજુ નામ અપાપાપુરી હતુ ત્યાંનુ ચાતુર્માસ ભગવાન મહાવીરનુ ચરમ ચાતુર્માસ હતું આ ચાતુર્માસ તેમણે પાવાપુરીના રાજા હસ્તિપાળની વિનંતિથી તેની શાળામા વિતાવ્યુ ભગવાનનો મોક્ષ–સમય નિકટમા હતો આથી તેઓ પોતાની પુણ્યમયી, સર્વ જગતના જીવોને હિતકારી વેગવંત વાગ્ધારા અવિરતપણે વહાવતા ગયા કે જેથી ભવ્ય જીવોને યથાર્થ માર્ગની પ્રાપ્તિ થઇ શકે

આયુષ્ય કર્મનો ક્ષય નજીકમા જાણી પ્રભુએ આસો વદ ચતુર્દશીના રોજ સવારે કર્યો પોતાના શિષ્ય ગૌતમ સ્વામીને નજીકના ગામે દેવશર્મા નામના એક બ્રાહ્મણને બોધ આપવા મોકલ્યા ચતુર્દશી અને અમાવાસ્યાના બે દિવસના સોળ પ્રહર સુધી પ્રભુએ સતત ઉપદેશ આપ્યો જીવનના ઉત્તર ભાગમા આપેલ આ ઉપદેશ 'ઉત્તરાધ્યયન' સૂત્રમા સંગ્રહીત છે. આમ ઉપદેશ દેતા દેતા આજથી ૨૪૮૧ વર્ષ ઉપર, જ્યારે ચોથા આરાના ત્રણ વરસ અને સાડાઆઠ મહિના બાકી હતા ત્યારે આસો વદી અમાવાસ્યા (દિવાળી)ની રાત્રે ભગવાન મહાવીર નિર્વાણ પામ્યા.

ગૌતમસ્વામી જે દેવશર્માને પ્રતિબોધવા ગયા હતા, તેઓ પાછા ફર્યા અને તેમણે ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણના સમાચાર જાણ્યા ત્યારે ઘણા જ આર્દ્ર બની ગયા, કારણ ભગવાન પ્રત્યે તેમના દિલમા અત્યંત સ્નેહ હતો, પરંતુ મહાપુરુષોમા પ્રવેશેલી નિર્બળતા ક્ષણિક જ હોય છે ગૌતમસ્વામીને પણ તુરત સત્યનો પ્રકાશ મળ્યો. તેમણે જાણી લીધુ કે પ્રભુ ઉપરનો પ્રશસ્ત સ્નેહ પણ કેવળ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવામા વિઘ્નરૂપ છે. તેમની વિચારશ્રેણીએ રૂપ બદલ્યુ–ખરેખર હુ મોહમા પડ્યો છુ. પ્રભુ તો વીતરાગ હતા દરેક આત્મા એકલો હોય છે, હુ એકલો છુ, મારૂ કોઇ નથી, હુ કોઇનો નથી ”

એ પ્રમાણે એકત્વ ભાવના ચિંતવવા લાગ્યા ક્ષપક શ્રેણીમા આરૂઢ થયેલા ગૌતમ સ્વામીએ તત્ક્ષણ ઘનઘાતી કર્મોનો નાશ કરી દીધો અને તેમને પ્રભુ નિર્વાણ પધાર્યા તે જ રાત્રિએ અર્થાત આસો વદી અમાવાસ્યાની પાછલી રાત્રે લોકાલોક-પ્રકાશક કેવળ જ્ઞાન અને કેવળદર્શન પ્રાપ્ત થયા

૫. બુદ્ધ અને મહાવીર

ભગવાન મહાવીર અને બુદ્ધ બન્ને સમકાલીન હતા. બુદ્ધ, શાક્યગોત્રીય, કપિલવસ્તુના રાજા શુદ્ધોદનના પુત્ર હતા તેમણે પણ સસારની નિસારતાનો ભાસ થતા સસારનો ત્યાગ કર્યો, અને તપશ્ચર્યા આદરી, બોધિસત્વ બન્યા તે પણ પોતાને 'આર્હત' મનાવતા (ભગવાન મહાવીરનો વધારેમા વધારે સામનો બુદ્ધે કર્યો)

મહાવીર અને બુદ્ધની તુલના નીચે મુજબ થઈ શકે

	મહાવીર	બુદ્ધ
પિતા	સિદ્ધાર્થ	શુદ્ધોદન
માતા	ત્રિશલા	મહામાયા
સ્થળ	ક્ષત્રિયકુડ ગ્રામ	કપીલવસ્તુ
જન્મ	ઇ સ પૂર્વે ૫૯૮	ઇ સ પૂર્વે ૫૬૫ યા ૫૭૫
સ્ત્રીનુ નામ	યશોદા	યશોધરા
સતાન	પ્રિયદર્શના (પુત્રી)	રાહુલ (પુત્ર)
આદિ તપ	૧૨ાા વર્ષ	૬ વર્ષ
નિર્વાણ	વિ સ નીપૂર્વે ૪૭૦ વર્ષ	વિ સ પૂર્વે ૪૮૫
આયુષ્ય	૭૨ વર્ષ	૮૦ વર્ષ
વ્રતો	પચ મહાવ્રત	પચશીલ
સિદ્ધાત	અનેકાન્તવાદ	ક્ષણિકવાદ
મુખ્ય શિષ્ય	ગૌતમ	આનદ

ભ મહાવીર અને બુદ્ધમા જેમ વિભિન્નતા છે તેમ સમાનતા પણ છે

અહિસા, સત્ય, અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય, અપરિગ્રહ તથા તૃષ્ણાનિવૃત્તિ આદિમા, મહાવીરની માફક બુદ્ધની દૃષ્ટિ પણ ઘણી ઉચી હતી બ્રાહ્મણ સસ્કૃતિની સામે આ બન્ને શ્રમણ-સસ્કૃતિનાં ઝળકતાં નક્ષત્રો હતા

જીવન શોધન, અહિસા પાલન અને શ્રમણો માટેના જરૂરી નિયમોમા પણ બન્ને મહાપુરુષોના વિધાનોમા ઘણુ સામ્ય છે

સસાર ત્યાગ પછી બુદ્ધે પણ કઠોર તપશ્ચર્યાઓ કરી હતી, પરન્તુ પાછળથી તેમને તેના તરફ ઘૃણા થઈ અને 'મધ્યમ પ્રતિપદા'નો માર્ગ સ્થાપ્યો

૬. ભ. મહાવીરની શિષ્ય પરંપરા

ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણ બાદ ગૌતમ સ્વામીને કેવળ જ્ઞાન થયુ, તે આપણે જોઈ ગયા તેઓ બાર વર્ષ સુધી કેવળજ્ઞાનીપણે વિચર્યા અને ધર્મપ્રચાર તથા સઘ વ્યવસ્થા આદિનુ નિર્વહન કર્યું

૧ **સુધર્મા સ્વામી:** ગૌતમસ્વામી કેવળજ્ઞાની થવાને લીધે આચાર્ય પદવિભૂષિત, ભગવાન મહાવીરના પ્રથમ પટ્ટધર થવાનુ અદ્વિતીય ગૌરવ શ્રી સુધર્મા સ્વામીને મળ્યુ તેમણે બાર વર્ષ સુધી સઘની બાહ્ય અને આતરિક બન્ને પ્રકારે રક્ષા, પોષણ અને સવર્ધન કર્યું ૯૨ વર્ષની ઉમરે તેમને કેવળજ્ઞાન થયુ, ત્યારે સઘ-વ્યવસ્થાનો ભાર તેમના શિષ્ય જમ્બુસ્વામીને સોંપ્યો ત્યાર બાદ આઠ વર્ષ સુધી તેઓ કેવળીપણે, વિચર્યા અને ૧૦૦ વર્ષનુ આયુષ્ય પૂર્ણ કરી નિર્વાણ પામ્યા

૨. **જમ્બૂસ્વામી** સુધર્મા સ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયા પછી જમ્બુસ્વામી પાટે આવ્યા

જમ્બુસ્વામી એક વણિક શેઠના પુત્ર હતા અખૂટ સપત્તિ, હોવા છતા તેમને વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થવાથી લગ્નના બીજે જ દિવસે, આઠ સ્ત્રીઓનો ત્યાગ કરી દીક્ષા લીધી તેમની સાથે તેમને વરેલી આઠે સ્ત્રીઓ, તે સ્ત્રીઓના માતાપિતા, પોતાના માતાપિતા અને તેમને ત્યા ચોરી કરવા આવેલ પ્રભવાદિ ૫૦૦ ચોરો એમ કુલ ૫૨૭ વિરક્ત આત્માઓએ ભાગવતી દીક્ષા અગીકાર કરી જીવન સફળ કર્યું.

શ્રી સુધર્માસ્વામીના નિર્વાણ બાદ શ્રી જમ્બૂસ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયુ તેઓ ૪૪ વર્ષ સુધી કેવળજ્ઞાનીપણે વિચરી મોક્ષે સિધાવ્યા

જૈન પરપરામા આ અવસર્પિણી-કાળમા કેવળજ્ઞાનનો સ્રોત ભગવાન શ્રી ઋષભદેવથી શરૂ થાય છે, તેના અતિમ કેવળી ભગવાન જમ્બૂસ્વામી હતા તેમના નિર્વાણ સાથે દસ વિશેષતાઓનો લોપ થયો —

૧ પરમ અવધિજ્ઞાન, ૨ મન પર્યવજ્ઞાન, ૩ પુલાક લબ્ધિ, ૪ આહારિક શરીર, ૫ ક્ષાયિક સમ્યક્ત્વ, ૬ કેવળજ્ઞાન, ૭ જિન કલ્પી સાધુ, ૮ પરિહાર

વિશુદ્ધ ચારિત્ર, ૯ સૂક્ષ્મ સંપરાય ચારિત્ર અને ૧૦ યથાખ્યાત ચારિત્ર

આમ ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણ પછી ૬૪ વર્ષે કેવળજ્ઞાન રહ્યું

૩ પ્રભવ સ્વામી. જંબૂસ્વામીને કેવળજ્ઞાન થયા પછી પ્રભવસ્વામી આચાર્યપદે બિરાજમાન થયા

તેઓ જયપુરના રાજા જયસેનના કુમાર હતા પ્રજાને કષ્ટ આપવાને કારણે તેમને દેશવટો મળ્યો. આથી તેઓ ભીમસેન નામના એક ચોરના સાથી બન્યા ભીમસેનના મરણ પછી ૫૦૦ ચોરોના સરદાર થયા

જંબૂસ્વામી લગ્ન કરી ઘેર પાછા ફર્યા ત્યારે તેમને ૯૯ ક્રોડનો કરિયાવર મળેલો આ વાત સાંભળી પ્રભવ પોતાના સાથીઓને લઈ ત્યાં ચોરી કરવા ગયો. તેની એક વિશેષતા હતી કે તે જ્યાં ચોરી કરવા જાય ત્યાં ઘરના માણસોને મંત્રબળે નિદ્રાધીન બનાવી દેતો આમ સેવકો અને ચોકીદારોને નિદ્રાધીન બનાવી, તેણે ધનના પોટલા બાંધ્યા અને ચાલવા માંડ્યું. પણ તેના પગ ઉપડતા નહોતા તે વિચારમાં પડ્યો કે આમ કેમ બન્યું ? આવો કોણ પ્રભાવશાળી છે કે જેના પ્રભાવથી મારું મંત્ર-બળ નિષ્ફળ થયું ?

આ બાજુ જંબૂસ્વામી મહાસંયમી અને બાળબ્રહ્મચારી હતા લગ્નની પ્રથમ રાત્રિએ આઠ સ્ત્રીઓની વિનવણીઓ અને સમજાવટ છતાં વ્રત ભંગ કરવાનો વિચાર સુદ્ધાં તેમને આવતો નહોતો પ્રભવ તેમના ઓરડાની નજીક આવ્યો અને અંદર ચાલતો વાર્તાલાપ સાંભળ્યો જંબૂસ્વામીની વાણી અને ચારિત્રથી તે પ્રભાવિત થયો અને પ્રાતઃકાળે તેણે પણ પોતાના સાથીઓ સહિત જંબૂસ્વામી સાથે સંયમ અંગીકાર કર્યો આ વખતે પ્રભવજીની ઉંમર ૩૦ વર્ષની હતી વીસ વર્ષ સુધી તેમણે જ્ઞાન–સાધના આદિ કરી ૫૦ વર્ષની ઉંમરે તેઓ સમસ્ત જૈન સંઘના આચાર્ય બન્યા

૪. શય્યંભવ આચાર્ય પ્રભવસ્વામી પછી શય્યંભવ આચાર્ય થયા

તેઓ રાજગૃહીના બ્રાહ્મણ કુળમાં ઉત્પન્ન થયા હતા અને વેદ–વેદાંગના નિષ્ણાત હતા એક સમય તેમને પ્રભવસ્વામીનો ભેટો થયો. પ્રભવસ્વામીએ તેમને દ્રવ્ય અને ભાવયજ્ઞના વિલક્ષણ સ્વરૂપના સમજ પાડી તેઓ પ્રભાવિત થયા અને સાધુ બન્યા

શય્યંભવ સ્વામીને 'મનક' નામે એક પુત્ર હતો. તેણે પણ દીક્ષા લીધી હતી આચાર્યવર્યે જ્યારે જ્ઞાનથી જાણ્યું કે તેનો અંતકાળ સમીપમાં છે, ત્યારે અલ્પ સમયમાં જિન-વાણીના રહસ્યોનું જ્ઞાન કરાવવા શાસ્ત્રોનું મંથન કરી તેના નવનીત રૂપે 'દશ વૈકાલિક સૂત્ર'ની રચના કરી.

૫ યશોભદ્ર વીર નિર્વાણ સં ૯૮માં યશોભદ્ર આચાર્ય પદ પર પ્રતિષ્ઠિત થયા

વીર નિર્વાણ ૧૦૮માં સંભૂતિવિજયે દીક્ષા લીધી.

૬ યશોભદ્ર અને સંભૂતિવિજય બન્ને સંઘના આચાર્યો હતા. તેઓએ બહુ જ કુશળતાપૂર્વક સંઘની વ્યવસ્થા જાળવી

૭. ભદ્રબાહુ યુગ

ભદ્રબાહુ સ્વામીની દીક્ષા વીર નિ સં ૧૩૯ પછી આચાર્ય યશોભદ્ર પાસે થઈ હતી અને સ્થૂળિભદ્રની દીક્ષા વીર નિ સં ૧૪૬ અગર ૧૫૦ માં થઈ હતી ભદ્રબાહુ સ્વામી ૪૫ વર્ષ ગૃહસ્થાવાસમાં રહ્યા સત્તર વર્ષ ગુરુની સેવાશુશ્રૂષા કરી ચૌદ પૂર્વની વિદ્યા સંપાદન કરી ચૌદ વરસ સુધી તે સંઘના એકમાત્ર આચાર્ય રહ્યા. વીર નિ. ૧૭૦ માં ૬૬ વર્ષની ઉંમરે તેઓ કાળધર્મ પામ્યા

ભદ્રબાહુ સ્વામીના સમયની મોટામાં મોટી ઘટના દુકાળ પડવાની બની એક વખત કાર્તિક શુક્લ પૂર્ણિમાના રોજ મહારાજા ચંદ્રગુપ્તે પૌષધ કર્યો હતો, ત્યારે રાત્રિના છેલ્લા ભાગમાં તેમણે સોળ સ્વપ્નો દેખ્યાં, તેમાં એક સ્વપ્નમાં બાર ફેણવાળો નાગ જોવામાં આવ્યો આનું ફળ જણાવતા ભદ્રબાહુ સ્વામીએ બાર વર્ષનો ભયંકર દુકાળ પડશે એવી આગાહી કરી

દુષ્કાળની ભયંકરતા ફેલાતા તેમણે મહારાજા ચંદ્રગુપ્તને દીક્ષા આપી અને દક્ષિણમાં કર્ણાટક તરફ વિહાર કરી ગયા

શ્રુત કેવળી ભદ્રબાહુ સ્વામીના જવા પછી સંઘને ખૂબ ક્ષોભ થયો દુષ્કાળનું ભયાનક તાંડવ પણ વધવા લાગ્યું શ્રાવકો ભદ્રબાહુ સ્વામીને યાદ કરવા લાગ્યા

ભદ્રબાહુ સ્વામીના જવા પછી સંઘની સત્તાનો દોર સ્થૂળિભદ્રના હાથમાં આવ્યો, પરંતુ તેઓ શાસ્ત્રો અને પૂર્વોના પૂર્ણ જ્ઞાતા નહોતા આથી શ્રાવક સંઘ ભદ્રબાહુ સ્વામીને પાછા પધારવા વિનંતી કરવા દક્ષિણમાં ગયો. આ વખતે ભદ્રબાહુ સ્વામી 'મહાપ્રાણ' નામના મૌન વ્રતમાં હતા. છતાં તેમણે શ્રાવક સંઘ સાથે વિચાર વિનિમય કરી

ત્યાર પછી શ્રી ભક્તામર સ્તોત્રના રચયિતા શ્રી માનતુંગાચાર્ય, જિનભદ્ર ગણિ, હરિભદ્રસૂરિ આદિ આચાર્યો થયા તે બાદ નવાંગી ટીકાકાર શ્રી અભયદેવ સૂરિ, [illegible] અને ગુજરાતમાં જૈન ધર્મની જય પતાકા ફરકાવનાર હેમચંદ્રાચાર્ય વિગેરે મહાનુભાવો થયા. તેમના [illegible] સાહિત્ય મળી આવે છે.

દરેક જગાએ બને છે તેમ ધીમે ધીમે જૈન શ્રમણ સંઘમાં પણ શિથિલતા પ્રવર્તવા લાગી ક્રિયાકાંડો અને સમાચારીના સંબંધમાં મતભેદો ઉપસ્થિત થવાને લીધે પૃથક્ પૃથક્ સંઘો અને ગચ્છો અસ્તિત્વમાં આવવા લાગ્યા એમ થતાં જૈન સંઘમાં જે એકતા અને અવિચ્છિન્નતા હતી તેને બદલે ચોરાસી જેટલા ગચ્છો થઈ ગયા.

વારંવાર પડતા દુષ્કાળોને પરિણામે શ્રમણ—સાધુઓ માટે શુદ્ધ ચારિત્ર્યનો નિર્વાહ કરવાનું મુશ્કેલ બનતું ગયું. તેમાંથી ચૈત્યવાદનો પ્રારંભ થયો અને સહજ સુલભ સાધન—પ્રાપ્તિની ઇચ્છાથી તેને ઉત્તરોત્તર વિકાસ થવા લાગ્યો

ચારિત્ર્યના કઠિન માર્ગ ઉપર ચાલવામાં રહેલી મુશ્કેલીઓને કારણે સાધુવર્ગ પીછેહઠ કરવા લાગ્યો અને લગભગ અર્ધસંસારી જેવી હાલતમાં આવી ગયો.

પંદરમી અને સોળમી સદીમાં જૈન સંઘમાં એકતા કે સંગઠન જેવું બીલકુલ રહ્યું નહિ. યતિવર્ગ પોતાની જ મહત્તા સ્થાપવા પ્રયત્ન કરી રહ્યો હતો. વૈદું, ઔષધિ, મંત્ર, યંત્ર તથા તંત્રવિદ્યા દ્વારા લોક સંગ્રહની જ પાછળ આ વર્ગ પડયો હતો.

આ વખતે જૈન સંઘમાં એક એવા મહાપુરુષની આવશ્યકતા હતી કે જે સંઘમાં એકતા સ્થાપી શકે, સાંપ્રદાયિકતાને બદલે સંગઠનનું સમર્થન કરે, ધાર્મિક જ્ઞાનનો ફેલાવો કરે અને ક્રિયોદ્ધાર માટે સક્રિય કાર્ય કરે

૧૦ ધર્મક્રાંતિનો ઉદયકાળ

યુરોપ અને એશિયા બન્ને ખંડોમાં વિક્રમની પંદરમી અને સોળમી શતાબ્દીનો સમય ઘણો મહત્ત્વનો છે.

એક તો રાજનૈતિક પરિવર્તન, અરાજકતા અને સુવર્ણ યુગ

બીજું ધાર્મિક ઉથલપાથલ, અસહિષ્ણુતા અને શાંતિ.

આ બે સદીઓમાં ધર્મક્રાંતિનો જુવાળ અને ક્રિયાકાંડો પ્રત્યે ઉદાસીનતા, સંતોની પવિત્ર પરંપરા, સુધારકોનો સમુદાય, સર્વધર્મ સમભાવની ભાવના, અહિંસાની પ્રતિષ્ઠા અને ગુણોનું પૂજન—અર્ચન આ કાળનો પ્રભાવ હતો.

ચૌદમી સદીના અંતથી માંડીને પંદરમી સદીની શરૂઆત સુધી સારાયે જગતમાં અરાજકતા અને ધાર્મિક અસહિષ્ણુતા ફેલાઈ ગઈ હતી

યુરોપમાં ધર્મના નામપર કેટલાય અત્યાચારો થયા. રોમન કેથોલિક અને પ્રોટેસ્ટન્ટોએ ઇશ્વરના નામ પર એક બીજા પ્રત્યે ભયંકર ઘૃણા અને વિદ્વેષના ઝેર ફેલાવ્યા.

યુરોપમાં જર્મનીના માર્ટીન લ્યુથરે અને ફ્રાંસમાં જોન ઓફ આર્કે પોતાના બલિદાનો આપી ચેતનાનો સંચાર કર્યો

આ સંક્રાંતિ—કાળમાં ભારતમાં પણ અનેક પરિવર્તનો થયા અને બીજા ધર્મોની સાથે સાથે જૈન ધર્મના પણ પરિવર્તન આવ્યું.

ધાર્મિક અવ્યવસ્થા અને પરિવર્તનના આ કાળમાં સુધારાવાદી અને શાંતિચાહકોની શક્તિઓ પણ પોતાનું કામ બરાબર કરતી રહી અને અંતે તેમનો વિજય થયો ધાર્મિક અશાંતિનો અંધકાર દૂર થયો અને ભારતમાં બાદશાહ અકબરે, ઇંગ્લાંડમાં રાણી એલીઝાબેથે અને બીજા ઘણાઓએ સુવર્ણયુગમાં સામાજિક સ્વસ્થતા અને સુરક્ષાનાં કાર્યો કર્યાં.

ભારતમાં આનો સર્વથી વધુ પ્રભાવ જાતિવાદની સંકુચિતતાની વિરૂદ્ધમાં પડયો પહેલીજવાર એક મોગલ બાદશાહ અકબર—'દેવાનામ્ પ્રિય' કહેવાયો તેની રાજસભા સર્વધર્મોના સમન્વયાત્મક સંમેલન જેવી બની ગઈ.

વીર પુરુષોએ રાજસભામાં રાજપુરુષોને પ્રભાવિત કરી ધર્મ અને સમાજની સુરક્ષાના પ્રયત્નો આદર્યા ત્યારે સંતો, મહંતો, સાધુઓ, સંન્યાસીઓ, ઓલિયા, પીરો અને ફકીરો પણ પોતાનો ફાળો નોંધાવતા ગયા

"અલ્લાહ એક છે," "ઇશ્વર એક છે" અને તેનું સ્થાન પ્રેમમાં જ છે—ના નાદ ગર્જી રહ્યા.

વાસ્તવમાં ધર્મ અને રાજકારણના એકીકરણનું જે માન આજે ગાંધીજીને આપવામાં આવે છે, તેનું ખરૂં બીજ તો કબીર, નાનક અને સુફી સંતોના સમયમાં જ નંખાયેલું હતું.

જેટલું મહત્ત્વ ક્રાંતિની વિપુલતાનું છે, તેટલું મહત્ત્વ તેના પ્રણેતાઓનું પણ છે આ દૃષ્ટિએ ક્રાંતિના અગ્ર-

ગણ્ય નાયકોમા વીર લોંકાશાહ ફક્ત ધાર્મિક જ નહિ, પરંતુ, સામાજિક અને રાજનૈતિક ક્ષેત્રમા પણ મહત્વ ધરાવે છે.

૧૧. ધર્મપ્રાણ લોંકાશાહ

સ્થાનકવાસી સમાજ વીરવર્ય લોંકાશાહના પુણ્ય પ્રયત્નોનું પવિત્ર પરિણામરૂપ પુષ્પ છે. જૈન સમાજની રૂઢિવાદિતા અને જડતાનો નાશ કરવા માટે તેમણે પોતાના પ્રાણપ્રદીપને પ્રજ્વલિત કર્યો અને જડપૂજાને સ્થાને ગુણપૂજાની પ્રતિષ્ઠા કરી, જડતા માત્ર સ્વરૂપને જાણતી હતી જ્યારે, ગુણે સ્વરૂપને છોડી, આકાર અને પ્રકારને ત્યાગી; ઉપયોગિતા અને કલ્યાણકારિતાને બળ આપી માનવ માત્રને મહત્વ આપ્યુ.

શક્રેન્દ્રે જ્યારે ભગવાન મહાવીરને પૂછ્યુ હતુ કે 'ભગવન ! આપના જન્મ નક્ષત્ર પર મહાભસ્મ નામનો ગ્રહ બેઠો છે તેનુ ફળ શુ ?'

ત્યારે ભગવાને કહ્યુ હતુ કે હે ઇન્દ્ર ! આ ભસ્મગ્રહને લીધે બે હજાર વર્ષ સુધી સાચા સાધુસાધ્વીઓની પૂજા મંદ થશે બરાબર બે હજાર વર્ષ પછી આ ગ્રહ ઉતરશે ત્યારે ફરીથી જૈન ધર્મમાં નવચેતના જાગૃત થશે અને યોગ્ય પુરુષો અને સતોનો યથોચિત સત્કાર થશે'

ભગવાન મહાવીરની આ ભવિષ્યવાણી અક્ષરે અક્ષર ખરી પડી વીર નિર્વાણ બાદ ૪૭૦ વર્ષે વિક્રમ સવત શરૂ થયો અને વિક્રમના ૧૫૩૧મા વર્ષમા એટલે (૪૭૦+૧૫૩૧=૨૦૦૧) બરાબર વીર સ ૨૦૦૧ના વર્ષમા વીર લોંકાશાહે ધર્મના મૂળ તત્વોને પ્રકાશિત કર્યા અને ગુણ પૂજક-ધર્મ વિસ્તાર પામવા લાગ્યો.

ધર્મપ્રાણ લોકાશાહના જન્મ સ્થળ, સમય અને માતપિતાનાં નામ વિગેરે વિષયોમા જુદા જુદા અભિપ્રાયો મળે છે, પરતુ વિદ્વાન સશોધકોના આધારભૂત નિર્ણય અનુસાર શ્રી લોકાશાહ, અરહટવાડામા ચૌધરી ગોત્રના, ઓસવાલ ગૃહસ્થ, શેઠ હેમાભાઇની પવિત્ર, પતિપરાયણ-ભાર્યા ગગાબાઇની કુક્ષિએ વિ સવત ૧૪૭૨ના કારતક શુદ ૧૫ને શુક્રવાર તા ૧૮મી ઓક્ટોબર સને ૧૪૧૫ના રોજ જન્મ્યા હતા

લોકાશાહનુ મન તો પ્રથમથી જ વૈરાગ્યમય હતુ, પરતુ માતાપિતાના આગ્રહને વશ થઇ તેમણે સ ૧૪૮૭ મા સિરોહીના સુપ્રસિદ્ધ શાહ ઓધવજીની વિચક્ષણ વિદુષી પુત્રી સુદર્શના સાથે લગ્ન કર્યા હતા

લગ્નના ત્રણ વર્ષ બાદ તેમને પૂર્ણચદ્ર નામના પુત્રરત્નની પ્રાપ્તિ થઇ

તેમની ત્રેવીસ વરસની ઉમરે તેમની માતાનુ અને ચોવીસમે વર્ષે પિતાનુ અવસાન થયુ

શિરોહી અને ચદ્રાવતિના રાજ્યો વચ્ચે યુદ્ધજનક સ્થિતિને લીધે અરાજકતા અને વ્યાપારિક દુર્વ્યવસ્થાને કારણે તેઓ અમદાવાદ આવ્યા અને અમદાવાદમા ઝવેરાતનો ધધો શરૂ કર્યો થોડા જ વખતમા તેમની પ્રામાણિકતા અને કુનેહને લીધે તેઓએ ઝવેરાતના ધંધામા નામના મેળવી

તે વખતના અમદાવાદના બાદશાહ મહમદશાહ ઉપર પણ તેમના બુદ્ધિચાતુર્યનો ઘણો પ્રભાવ પડયો અને તેમણે લોકાશાહને પોતાના ખજાનચી બનાવ્યા

એક વખત મહમદશાહના પુત્ર કુતુબશાહને પોતાના પિતા સાથે મતભેદ થવાથી પુત્રે પિતાને ઝેર આપી મારી નાખ્યો. સસારની આવી વિચિત્રતા અનુભવવાથી લોકાશાહનુ વૈરાગ્યપ્રિય હૃદય હાલી ઉઠયુ અને તેમણે સંસારથી વિરક્ત થવા રાજ્યની નોકરીનો ત્યાગ કર્યો

તેઓ મૂળથી જ તત્વશોધક તો હતા તેમણે એક લેખક મડળ સ્થાપ્યુ અને ખૂબ લહિયાઓ રાખી પ્રાચીન શાસ્ત્રો અને ગ્રથોની નકલો કરાવતા, અને અન્ય ધાર્મિક કાર્યોમાં પોતાનુ જીવન વિતાવતા

એક વખત જ્ઞાનસુદરજી નામના એક યતિ તેમને ત્યા ગોચરીએ આવ્યા તેમણે લોકાશાહના સુદર અક્ષરો જોઇ પોતાની પાસેના શાસ્ત્રોની નકલો કરી આપવા કહ્યુ લોકાશાહે શ્રુતસેવાનુ આ કાર્ય સહર્ષ સ્વીકારી લીધુ

જેમ જેમ તેઓ શાસ્ત્રોની નકલો કરતા ગયા, તેમ તેમ તેમને શાસ્ત્રોની ગહન વાતો અને ભગવાનની પ્રરૂપણાનું હાર્દ સમજાતા ગયા. તેમની આખો ઉઘડી ગઇ સઘ અને સમાજમા પ્રવર્તતી શિથિલતા અને આગમ-અનુકૂળ વર્તનનો અભાવ તેમને દૃષ્ટિગોચર થવા માડયો, જ્યારે તેઓ ચૈત્યવાસીઓના શિથિલાચાર અને અપરિગ્રહી નિર્ગ્રથોના અસિધારાવત્ પ્રખર સયમવ્રતનો તુલનાત્મક વિચાર કરતા ત્યારે તેમણે મનમાં ક્ષોભ થતો

મદિરો, મઠો અને પ્રતિમાગૃહોને આગમની કસોટીએ કસી જોતા, મોક્ષોપાયમા, ક્યાય પણ પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠાનુ વિધાન મળતુ નહોતુ તેમને શાસ્ત્રનુ વિશુદ્ધ જ્ઞાન

દર્શન, ચારિત્ર અને તપ એ ધાર્મિક અનુષ્ઠાનોમા મૂર્તિ-પૂજા અન્તર્નિહિત થઈ શકતી નથી

શાસ્ત્રોમા પાચ મહાવ્રત, શ્રાવકના બાર વ્રત, બાર પ્રકારની ભાવના તથા સાધુની દૈનિક ચર્યા-સર્વનુ સવિસ્તૃત વર્ણન છે. પરતુ પ્રતિમા પૂજનનુ મૂળ આગમોમા કોઈ પણ જગાએ વર્ણન આવતુ નથી

જ્ઞાતા સૂત્ર તથા રાયપસેણીય સૂત્રમા અન્ય ચૈત્યોના વદનનુ વર્ણન આવે છે, પણ કોઈ જૈન સાધુ કે જૈન શ્રાવકે મોક્ષની સાધના માટે નિત્ય કર્મની માફક તીર્થંકર પ્રતિમાનુ પૂજન કર્યું હોય એવુ એક પણ જગાએ લખેલુ નથી

લખમશી તો લોકાશાહને સમજાવવા આવ્યા હતા, પણ તે પોતે જ સમજી ગયા લોકાશાહની નીડરતા અને સત્યપ્રિયતા તેમને હૈયે વસી ગઈ અને તેઓ તેનાથી ઘણા પ્રભાવિત થયા અને તેમના શિષ્ય બની ગયા.

લખમશી લોકાશાહના શિષ્ય થયા એ વાતને આખાય યતિ અને સાધુવર્ગે એક ભયકર ઘટના માની અને ગભરાઈ ગયા ધીમે ધીમે લોકાશાહનો પ્રભાવ ચોમેર વધવા લાગ્યો

એક વખત અરહટ્ટવાડા શિરોહી, પાટણ તથા સુરત એમ ચાર શહેરોના સઘો યાત્રાએ નીકળેલા તે અમદાવાદ આવ્યા તે વખતે વર્ષાનુ જોર હોવાથી તેમને ત્યા રોકાઈ જવુ પડ્યુ આથી ચારે સઘના સઘવીઓ નાગજી, દલીચદ મોતીચદ અને શભુજીને લોકાશાહ સાથે વિચાર-વિનિમય કરવાનો અવસર પ્રાપ્ત થયો

લોકાશાહનો ઉપદેશ, તેમનુ જીવન, વીતરાગ-પરમાત્માઓ પ્રત્યેની સાચી ભક્તિ અને આગમિક પરપરાની તેમના ઉપર ખૂબ ઊડી અસર થઈ ચારે સઘો ઉપર આ અસર એટલી સચોટ પડી કે તેમાથી પિસ્તાળીસ શ્રાવકો લોકાશાહની પ્રરૂપણા અનુસાર સાધુ બનવા તૈયાર થઈ ગયા

આ વખતે જ્ઞાનજી મુનિ હૈદ્રાબાદ તરફ વિહાર કરી ગયા હતા તેમને લોકાશાહે બોલાવ્યા અને સ. ૧૫૨૭ના વૈશાખ સુદ ૩ના રોજ ૪૫ જણાને દીક્ષા આપી.

આ ૪૫ જણાએ પોતાના માર્ગદર્શક ઉપદેશક પ્રત્યે શ્રદ્ધા દર્શાવવા, પોતાના સઘનુ નામ 'લોકાગચ્છ' રાખ્યુ અને પોતાના નિયમો વગેરેનો કાર્યક્રમ લોકાશાહના ઉપદેશ પ્રમાણે બનાવ્યો

૧૩. લોંકાશાહનો ધર્મપ્રચાર અને સ્વર્ગવાસ

આગળ જોઈ ગયા તેમ લોંકાશાહની આગમિક માન્યતાને ખૂબ ટેકો મળવા માંડયો અત્યાર સુધી તેઓ પોતાની પાસે આવનારાઓને જ સમજાવતા અને ઉપદેશ આપતા, પરંતુ જ્યારે તેમને લાગ્યું કે ક્રિયોદ્ધારને માટે જાહેર રીતે ઉપદેશ કરવાનું અને પોતાના વિચારો જનતા સમક્ષ રજૂ કરવાનું જરૂરી છે, ત્યારે તેમણે સં. ૧૫૨૯ના વૈશાખ સુદ ૩, તા ૧૧-૪-૧૪૭૨ના રોજથી જાહેર રીતે ઉપદેશ દેવા માંડયો

તેમના અનુયાયીઓની સંખ્યા દિવસે દિવસે વધવા લાગી. મૂળથી જ તેઓ વૈરાગ્યપ્રિય તો હતા જ પરંતુ અત્યારસુધી એક યા બીજા કારણે દીક્ષા લઈ શકયા નહોતા. ક્રિયોદ્ધારને માટે પોતે પ્રત્યક્ષ ચારિત્ર્યનું પાલન કરી બતાવવું એ ઉપદેશક માટે જરૂરી છે. આથી તેમણે સં. ૧૫૩૬ના માગશર સુદી ૫ના રોજ જ્ઞાનજી મુનિના શિષ્ય, સોહનજી પાસે દીક્ષા અંગીકાર કરી

ટૂંકા સમયમાં જ તેમના ૪૦૦ શિષ્યો બની ગયા અને લાખો શ્રાવકો તેમના પ્રત્યે શ્રદ્ધા ધરાવતા થયા

તેમણે અમદાવાદથી માંડીને છેક દિલ્હી સુધી ધર્મનો જયઘોષ ગજાવ્યો અને આગમ–માન્ય સંયમધર્મનું યથાર્થ પાલન કર્યું અને ઉપદેશ કર્યો

પ્રત્યેક ક્રાંતિકારની કદર કોઈ દિવસ તેના જીવન દરમ્યાન થતી નથી સામાન્ય માનવીઓ તેના જીવનકાળ દરમ્યાન તેને ગાંડોઘેલો માને છે. જો તે શક્તિશાળી હોય તો લોકો તેની પ્રત્યે ઇર્ષાથી ઉભરાતા ઝેરની દૃષ્ટિએ જુએ છે અને તેને દુશ્મન માને છે

લોંકાશાહના સંબંધમાં પણ આમ જ બન્યું તેઓ દિલ્હીથી પાછા ફરતા હતા ત્યારે અલ્વર આવી પહોંચ્યા તેમને અઠ્ઠમ (ત્રણ દિવસના ઉપવાસ)નું પારણું હતું

સમાજના દુર્ભાગ્યે, તેમના શિથિલાચારી અને ઇર્ષ્યાળુ વિરોધીઓ કે જેઓ તેમનો પ્રતાપ સહન કરી શકતા નહોતા, તેઓએ એક ષડ્યંત્ર રચ્યું ત્રણ ત્રણ દિવસના ઉપવાસીને પારણાને દિવસે કોઈ દુષ્ટબુદ્ધિ, અભાગીએ વિષયુક્ત આહાર વહોરાવી દીધો મુનિશ્રીએ તે આહાર વાપર્યો

ઔદારિક શરીર અને તે પણ વન વટાવી ગયેલું તેના પર એકદમ વિષની પ્રતિક્રિયા થવા માંડી વિચક્ષણ પુરુષ તુરત સમજી ગયા કે અંત સમીપમાં છે, પણ મહામાનવીઓને મૃત્યુ ગભરાવી શકતું નથી તેઓ શાંતિથી સૂઈ ગયા અને ચોરાસી લાખ જીવયોનિને ખમાવી શુભ ધ્યાનમાં લીન બની સં ૧૫૪૬ના ચૈત્ર સુદ ૧૧ તા ૧૩મી માર્ચ ૧૪૮૯ના રોજ નશ્વર દેહનો ત્યાગ કરી સ્વર્ગે સિધાવ્યા.

૧૪. લોંકાશાહનો વારસો અને સ્થાનકવાસી સંપ્રદાય

લોંકાશાહના વારસાને સંભાળનારાઓનું એક વિશાળ દળ તો તેમની હયાતી દરમ્યાન જ ઉત્પન્ન થયું હતું; પરંતુ તેને કોઈ વિશેષ નામ આપ્યાનો ઉલ્લેખ પ્રાપ્ત થતો નથી

લોંકાશાહના ઉપદેશથી જે પિસ્તાળીસ શ્રીમંતોએ દીક્ષા લીધી હતી તેમણે પોતાના ધર્મોપદેશક પ્રત્યે કૃતજ્ઞતા પ્રગટ કરવા પોતાના ગચ્છનું નામ 'લોંકાગચ્છ' રાખ્યું, પરંતુ તેઓએ યતિધર્મના માધ્યમને જ સ્વીકારી તેનું નવસંસ્કરણ કર્યું હતું તેઓ દયા ધર્મને સર્વોત્કૃષ્ટ માનતા અને સાધુઓને નિમિત્તે ઉપાશ્રયો સુદ્ધાં બનાવવાનો, આરંભ–સમારંભનો નિષેધ કરતા કેટલાકના માનવા મુજબ લોંકાશાહની પરમ સત્યશોધક ઢુંઢક વૃત્તિને કારણે તેમને ઢુંઢિયા કહેવામાં આવતા અને તેમના નામે બનેલ ગચ્છને ઢુંઢિયા સંપ્રદાય તરીકે ઓળખવામાં આવતો કેટલાક ઢુંઢિયા શબ્દને તિરસ્કાર સૂચક વિશેષણ પણ માને છે.

શિથિલાચારી ચૈત્યવાસીઓને ધર્મપ્રાણ લોંકાશાહના વિશુદ્ધ શાસ્ત્રસંમત નિગ્રંથ ધર્મના સ્પષ્ટીકરણથી પ્રદ્વેષ પ્રગટયો અને તેમના ઉપદેશોના શુદ્ધ સનાતન ધર્મનું પાલન કરનારા સંઘને પ્રદ્વેષવશ 'ઢુંઢિયા' કહેવા લાગ્યા, પરંતુ શુદ્ધ સનાતન ધર્મનું આચરણ કરનાર સહિષ્ણુ શ્રાવકોએ સમભાવથી એવું વિચાર્યું કે વાસ્તવમાં ઢુંઢિયા શબ્દ લઘુતા નિર્દેશક (Humiliating) નથી ધર્મની ક્રિયાઓના આડંબર પૂર્ણ આવરણોને ભેદીને તેમાંથી અહિંસામય સત્ય ધર્મનું શોધન (ઢુંઢન) કરનારાઓને અપાયેલું 'ઢુંઢિયા'નું બિરૂદ ગૌરવ લેવા જેવું છે.

આ સંબંધમાં સ્વ શ્રી વાડીલાલ મોતીલાલ શાહે પણ સમભાવ દર્શાવી પોતાની ઐતિહાસિક નોંધમાં લખ્યું છે કે–મૂળે તો એ શબ્દનું રહસ્ય આ છે

"ઢૂંઢત ઢૂંઢત ઢૂંઢ લિયો સબ, વેદ–પુરાણ કીતાબમેં જોઇ,
"જેસો મહીમેં માખણ ઢૂંઢત, ઐસો દયામેં લિયો હૈ જોઇ,
"ઢૂંઢત હૈ તબ હી ચીજ પાવત, બીન ઢૂંઢે નવી પાવત કોઇ
"ઐસો દયામેં ધર્મ ઢૂંઢો, 'જીવદયા' બીન ધર્મ ન હોઇ"

લોકાશાહની પછી એકસો વર્ષમા જ લોકાગચ્છના ત્રણ વિભાગ પડી ગયા અને તેઓ ગાદીધારી યતિરૂપે ફરીથી રહેવા લાગ્યા (૧) ગુજરાતી લોકાગચ્છ, (૨) નાગોરી લોકાગચ્છ અને (૩) ઉત્તરાર્દ્ધ લોકાગચ્છ.

લોકાગચ્છની દશમી પાટ પર વજાગજી યતિ થયા. તેમની ગાદી સુરતમા હતી. તેમનુ ચારિત્ર્યબળ ક્ષીણ થઇ ગયુ હતુ તેમનામા શૈથિલ્ય અને પરિગ્રહ ઘર કરી ગયા હતા આથી તેમના સમયમા જુદા જુદા સ્થાનોમા ક્રિયોદ્ધારક સતો પેદા થયા.

સોળમી સદીના ઉત્તરાર્દ્ધમા અને સત્તરમી સદીમા પાચ મહાપુરુષો આગળ આવ્યા તેમણે લોકાશાહની અમરક્રાતિને પુનર્જીવન અર્પ્યું આ પાચ મહાપુરુષોના નામો આ પ્રમાણે છે –

(૧) પૂજ્ય શ્રી જીવરાજજી મહારાજ, (૨) પૂજ્ય શ્રી ધર્મસિહજી મહારાજ, (૩) પૂજ્ય શ્રી લવજી ઋષિજી મહારાજ, (૪) પૂજ્ય શ્રી ધર્મદાસજી મહારાજ અને (૫) પૂજ્ય શ્રી હરજીઋષિજી મહારાજ (હજુ આમનો ઇતિહાસ ઉપલબ્ધ નથી)

૧૫. પૂજ્ય શ્રી જીવરાજજી મહારાજ

શ્રી જીવરાજજી મહારાજનો જન્મ સુરત શહેરમા સ ૧૫૮૧ ના શ્રાવણ સુદ ૧૪ની મધ્યરાત્રિએ શ્રી વીરજીભાઇની ધર્મપરાયણ અને પતિપરાયણા ભાર્યા કેસરબેનની કુક્ષિએ થયો હતો.

જે ઘરમા તેમનો જન્મ થયો તે ઘર બીજી બધી રીતે સપન્ન હતુ, પરતુ એક માત્ર કુળદીપક પુત્રની જ ખોટ હતી. આ ખોટ પણ બાળક જીવરાજના જન્મથી પૂરાઇ ગઇ આથી આ બાળકનો જન્મ ઘણા હર્ષથી વધાવી લેવામા આવ્યો તેમની બાલ્યાવસ્થા ઘણા જ લાલનપાલન અને સ્નેહભર્યા વાતાવરણમા પસાર થઇ હતી. તેમનુ શરીર ઘણુ સુદર અને વાણી મધુર હતી

બાલ્યાવસ્થામાથી કિશોરાવસ્થામા આવતા તેમને નિશાળે બેસાડવામા આવ્યા. તેમનામાં રહેલી વિલક્ષણ બુદ્ધિ અને અજબ સ્મરણ-શકિતને લીધે ઘણા જ થોડા સમયમા તેમણે સપૂર્ણ શિક્ષણ પ્રાપ્ત કરી લીધુ.

વિદ્યાભ્યાસ પૂર્ણ થતા તેમના પિતાએ એક સુદર કન્યા સાથે તેમનાં લગ્ન કરી આપ્યા.

જીવરાજજીને યતિઓના સપર્કને લીધે બચપણથી જ ધાર્મિક જ્ઞાન મળતુ રહ્યુ હતુ. તેઓ મૂળથી જ વૈરાગ્ય પ્રિય હતા. વિવાહ, વિલાસ, લલના અને લાવણ્ય, રૂપ અને રસ, રગ અને રાગ, બધા મળીને પણ તેમના આકર્ષણનુ કેન્દ્ર બની શક્યા નહી. તેમની વૈરાગ્યવૃત્તિ અને જળકમળવત્ નિર્લેપ વ્યવહારે, તેમને સસારમા વધુ વખત રહેવા ન દીધા તેમનામા રહેલી વૈરાગ્યની ભાવના ઉછળવા માડી. બુદ્ધિની પ્રૌઢતા તેમને જ્ઞાનના સાક્ષાત્કાર માટે પડકારી રહી હતી. છેવટ સસાર-ત્યાગની પ્રબળ ઉત્કઠા જાગી અને આ હેતુની પૂર્તિ માટે તેમણે માતપિતાની પાસે દીક્ષાની આજ્ઞા માગી માતપિતાએ તેમને ઘણુ સમજાવ્યા, પરતુ તેમના જ્ઞાનના આગ્રહ આગળ સસારનો આગ્રહ ટકી શક્યા નહિ આમ સ ૧૬૦૧મા તેમણે પૂજ્ય શ્રી જગાજી યતિ પાસે દીક્ષા અગીકાર કરી.

દીક્ષા લીધા પછી તેમણે આગમોના અભ્યાસનો પ્રારભ કર્યો જેમ જેમ અભ્યાસ વધતો ગયો તેમ તેમ આગમ પ્રણિત સાધુચર્યા અને યતિજીવન, બન્ને વચ્ચેનુ અતર તેમને દૃષ્ટિગોચર થવા લાગ્યુ. 'આગમ પ્રણીત આપ્ત પ્રતિપાદિત માર્ગથી જ આત્માનુ કલ્યાણ સભવી શકે" એવી શ્રદ્ધા તેમને થઇ

જ્યારે યતિમાર્ગમા આગમિક અનુકરણ અને અપરિગ્રહી જીવનની તેજસ્વિતા એ બન્નેનો અભાવ તેમને જણાયો, ત્યારે યતિમાર્ગ પ્રત્યે તેમને અસતોષ થવા લાગ્યો તેમના મનમા એક જ વાત ઘુટાતી હતી કે–

'सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज भिक्खू।"

તેમણે પોતાના અતર્દ્વન્દ્વની વાત ગુરુદેવને કરી, પણ એક ક્રાતિકારીમા જોઇતી તેજસ્વિતા ગુરુમાં નહોતી, તેમણે શિષ્યને સમજાવ્યુ "હે શિષ્ય! આજના ભયકર જમાનામા સાધુચર્યાયુક્ત કઠોર જીવનનુ પાલન શક્ય નથી શાસ્ત્રનો માર્ગ આદર્શ માર્ગ છે, પરતુ તે વ્યવહાર્ય નથી"

આ સમજાવટથી જીવરાજજીનુ અતર્દ્વન્દ્વ શાત ન થયુ તેઓ અશાત અને ઉગ્ર બનતા ગયા. ગુરુદેવને આગમિક સયમી જીવન પાળવાનો આગ્રહ કરતા ગયા એક વખત તેમણે ગુરુની સામે શ્રી ભગવતી સૂત્રના વીસમા શતકનો પાઠ ધર્યો તેમા લખ્યુ છે કે, ભગવાન મહાવીરનુ શાસન લગાતાર એકવીસ હજાર વર્ષ સુધી અતૂટ ચાલશે"

ત્યારે ગુરુએ કહ્યુ કે—"હુ તો જે માર્ગે ચાલુ છુ તેજ માર્ગે ચાલી શકીશ; પરતુ તારી ઇચ્છા હોય તો તુ આગમાનુસાર સયમ માર્ગનુ વહન કર"

છેલ્લા સાત સાત વર્ષથી ચાલી રહેલા વૈચારિક દ્વદ્વનો આજે આમ અત આવ્યો

સ. ૧૬૦૮મા તેમણે પાચ સાધુઓ સાથે પચમહાવ્રતયુક્ત આર્હત દીક્ષા ગ્રહણ કરી

સાધુ ધર્મની દીક્ષા લીધા પછી શાસ્ત્રાજ્ઞાનુસાર વેશનો તેમણે સ્વીકાર કર્યો. આજે સ્થાનકવાસી સમાજના સાધુઓનો જે વેશ છે તેનુ પ્રમાણિકરૂપે પુન પ્રચલન શ્રી જીવરાજજી મહારાજથી થયુ

ભદ્રબાહુ સ્વામીના યુગથી સ્થવિર કલ્પમા આવનાર સાધુઓએ વસ્ત્ર અને પાત્ર ગ્રહણ કર્યા હત ધીમે ધીમે દુષ્કાળની ભીષણતાને કારણે દડ આદિ પણ રાખવા લાગી ગયા હતા

શ્વેતાબર પરપરામા સાધુઓના ચૌદ ઉપકરણો ગ્રહણ કરવામા આવે છે, તેથી આગળ વધીને આકર્ણ પર્યત દડ, સ્થાપનાચાર્ય, સિદ્ધચક્ર વિગેરે ક્યારે બન્યા અને કેવી રીતે આવ્યા તે માટે તો એટલુ જ કહી શકાય તેમ છે કે મુખવસ્ત્રિકા, રજોહરણ, ચાદર અને ચોલપટ્ટ આદિ વસ્ત્રો સિવાયની વસ્તુઓ તો પરિસ્થિતિવશ ઘુસી ગયેલી છે

જીવરાજજી મહારાજે આ બધા ઉપકરણોમાથી વસ્ત્ર, પાત્ર, મુહપત્તી, રજોહરણ, રજસ્ત્રાણ, પ્રમાર્જિકા સિવાયના ઉપકરણોનો ત્યાગ કર્યો અથવા જરૂર પડે તેને ઐચ્છિક વસ્તુઓનુ રૂપ આપ્યુ તેમા પણ દડ, સ્થાપનાચાર્ય અને સિદ્ધચક્ર વિ ને તો અનાવશ્યક જણાવી સાધુજનોને નિર્લોભિતાનો માર્ગ બતાવ્યો ઉપકરણોના સબધમા આ બધી પ્રથમ વ્યવસ્થા હતી

૧૬. સાધુમાર્ગીઓની ત્રણ માન્યતાઓ

૧ બત્રીસ આગમ ૨ મુહપત્તી ૩ ચૈત્ય પૂજાથી સર્વાશે વિમુક્તિ

૧ જીવરાજજી મહારાજે આગમોના વિષયમા લોકાશાહની વાતનો સ્વીકાર કર્યો, પરતુ આવશ્યક સૂત્રને પ્રામાણિક માની એકત્રીસ આગમના બત્રીસ આગમ માન્યા લોકાશાહની માફક જ તેમણે અન્ય ટીકાઓ અને ટિપ્પણીઓ કરતા મૂળ આગમોને જ શ્રદ્ધાપાત્ર માન્યાં આ પરપરા આજ સુધી સ્થાનકવાસી સમાજે માન્ય રાખી છે. સ્થાનકવાસી સમાજ નીચે પ્રમાણે આગમોને પ્રમાણભૂત માને છે

૧૧ અગસૂત્રો ૧ આચારાગ, ૨ સૂત્રકૃતાગ, ૩ સ્થાનાગ ૪ સમવાયાગ, ૫ વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞપ્તિ (ભગવતી) ૬. જ્ઞાતા ધર્મ કથાગ, ૭. ઉપાસક દશાગ, ૮ અતકૃત દશાગ, ૯ અનુત્તરોપ પાતિક દશાગ, ૧૦. પ્રશ્ન વ્યાકરણ અને ૧૧ વિપાક સૂત્ર

૧૨ ઉપાંગ સૂત્રો ૧ ઉવવાઇ ૨ રાયપસેણી ૩ જીવાભિગમ, ૪ પન્નવણા, ૫ સૂર્યપ્રજ્ઞપ્તિ, ૬ જબુદ્વિપ પ્રજ્ઞપ્તિ, ૭ ચદ્ર પ્રજ્ઞપ્તિ, ૮. નિરયાવલિકા, ૯ કલ્પાવતસિકા, ૧૦ પુષ્પિકા, ૧૧ પુષ્પ ચૂલિકા, ૧૨ વન્હિદશા

૪ મૂળ સૂત્રો ૧ દશવૈકાલિક, ૨. ઉત્તરાધ્યયન, ૩ નદી ૪ અનુયોગ દ્વાર.

૪. છેદ સૂત્રો: ૧ બૃહત્કલ્પ, ૨ વ્યવહાર, ૩ નિશીથ ૪ દશાશ્રુતસ્કધ

૧ આવશ્યક આ પ્રાચીન શાસ્ત્રોમા જૈન પરપરાની દૃષ્ટિએ આચાર, વિજ્ઞાન, ઉપદેશ, દર્શન, ભૂગોળ, ખગોળ આદિના વર્ણનો છે આચાર માટે આચારાગ, દશવૈકાલિક આદિ ઉપદેશાત્મક ઉત્તરાધ્યયન વિ દર્શનાત્મક સૂત્રકૃતાંગ, પ્રજ્ઞાપના, રાયપસેણી, નદી, ઠાણાગ, સમાવાયાગ, અનુયોગદ્વાર વિ ભૂગોળ ખગોળ માટે જબુદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ, ચદ્રપ્રજ્ઞપ્તિ, સૂર્ય પ્રજ્ઞપ્તિ વિ પ્રાયશ્ચિત વિશુદ્ધિ માટે છેદસૂત્રો અને આવશ્યક જીવનચરિત્રોનો સમાવેશ ઉપાસક દશાગ, અનુત્તરોવવાઇ વિ મા છે જ્ઞાતા ધર્મ કથાંગ, આખ્યાનાત્મક છે, વિપાક સૂત્ર કર્મવિષયક અને ભગવતી સવાદાત્મક છે.

જૈન દર્શનના મૌલિક તત્ત્વોની પ્રરૂપણા આ સૂત્રોમા વિસ્તૃત રૂપે દેખાય છે અનેકાંત દર્શન આદિના વિચાર, અગ અને દૃષ્ટિ-બધા વિષયો જૈનાગમોમા સગ્રથિત છે.

૨ જૈન ધર્મની બધી શાખાઓમા સ્થાનકવાસી શાખાની બે ખાસ વિશેષતાઓ છે ૧ સ્થાનકવાસીઓ મુહપત્તીને આવશ્યક અને ૨ મૂર્તિપૂજાને-આગમ-વિરૂદ્ધ હોવાથી અનાવશ્યક માને છે

જૈન સાધુઓનુ સર્વાધિક પ્રચલિત અને પરિચિત ચિહ્ન છે "મુહપત્તી" પરતુ દુર્ભાગ્યવશાત્ જૈન મુનિઓના

જેટલા પ્રતીક છે તેમાથી એકના પણ સબધમા બધો આખો સમાજ એકમત નથી

મુહપત્તી અને રજોહરણ આ બન્ને જૈન મુનિઓની મહાન નિશાનીઓ છે સાધુના મુખ પર મુહપત્તી અને બગલમા રજોહરણ આ બન્નેની પાછળ જૈન ધર્મના આત્મા—અહિસા—ની મહાન ભાવના રહેલી છે. રજોહરણની ઉપયોગિતા માટે શ્વેતાબર અને દિગબર બન્ને સપ્રદાયો એક મત છે દિગબર સાધુઓ રજોહરણને બદલે મોરપીછીનો ઉપયોગ કરે છે આમા વસ્તુભિન્નતા છે પણ ઉદ્દેશ-ભિન્નતા નથી

મુહપત્તીની ઉપયોગિતા અને મહત્તા માટે વિવાદ છે શ્વેતાબર મુહપત્તીને આવશ્યક સાધન માને છે કે જેના વિના વાણી અને ભાષા નિર્વદ્ય હોઇ શકતી નથી વાયુ-કાયના જીવોની રક્ષા થઇ શકતી નથી પરતુ દિગબરો મુહપત્તીને અનાવશ્યક અને સમુર્છિમ જીવોની ઉત્પત્તિનુ કારણ માને છે

શાસ્ત્રોના પ્રમાણોને સ્વીકારીએ તો દિગબર અને શ્વેતાબરના શાસ્ત્રોનો મેળ ખાતો નથી, પણ સૈદ્ધાતિક દૃષ્ટિથી જૈન સાધુના આદર્શના સબધમા, ભગવાન મહાવીરના અહિસાના સિદ્ધાતના આધારે આપણે વિચાર કરી શકીએ તેમ છીએ. શ્વેતાબર શાસ્ત્રોમા મુહપત્તીનુ આવશ્યક વિધાન છે સાધુના ચૌદ ઉપકરણોમા મુહપત્તીને મુખ્ય ઉપકરણ ગણવામાં આવેલ છે

ભગવતી સૂત્રના ૧૬મા શતકના બીજા ઉદ્દેશામા ભગવાને કહ્યુ છે કે—

"गोयमा ! जाहेण सक्के देविंदे देवराया, सुहुम काय अणिज्जूहित्ताण भास भासति, ताहेण सक्के देविंदे देवराया सावज्ज भास भासई ।"

અર્થાત્-હે ગૌતમ! શક્રદેવેન્દ્ર જ્યારે વસ્ત્રાદિકથી મુખ ઢાકયા સિવાય (ઉઘાડે મોઢે) બોલે છે, ત્યારે તેની ભાષા સાવદ્ય હોય છે

અભયદેવ સૂરિએ તેમની વ્યાખ્યામા મુખ ઢાકવાનુ વિધાન કરેલુ છે તેમણે લખ્યુ છે કે—વસ્ત્રાદિકથી મુખ ઢાકીને બોલવુ તે જ સૂક્ષ્મકાય જીવોનુ રક્ષણકર્તા છે

યોગશાસ્ત્રના તૃતીય પ્રકાશના સત્તાશીમા શ્લોકનુ વિવરણ કરતા હેમચદ્રાચાર્ય લખે છે કે

मुखवस्त्रमपि सम्पतिम जीव रक्षणादुष्ण मुख वात विराध्य मान बाह्य वायुकाय जीव रक्षणात् मुखे धूलि प्रवेश रक्षणाच्चोपयोगीति ।

અર્થાત્:—મુખવસ્ત્ર સપાતિમ જીવોની રક્ષા કરે છે. મુખથી નીકળતા વાયુ દ્વારા વિરાધિત થતા બાહ્ય વાયુ-કાયના જીવોની રક્ષા કરે છે, તથા મુખમા ધૂળ જતી અટકાવે છે એટલે તે ઉપયોગી છે.

આમ શ્વેતાબર સપ્રદાયે મુહપત્તીનો સ્વીકાર કર્યો છે, પરતુ મૂર્તિપૂજક સમાજ હમેશા મુખ ઉપર મુહપત્તી બાધી રાખવાની વિરુદ્ધ છે અને તે હાથમા મુહપત્તી રાખે છે. જ્યારે સ્થાનકવાસી હમેશા મુખ પર મુહપત્તી બાધવી આવશ્યક માને છે બન્ને જણા પોતપોતાને અનુકૂળ પ્રમાણો રજૂ કરે છે.

પરતુ જૈન સિવાયના અન્ય ગ્રથોમા જૈન સાધુઓના વર્ણનો આવે છે તે ઉપરથી મુહપત્તી મુખ ઉપર બાધી રાખવાનો રિવાજ પ્રાચીન હોવાનુ જાણી શકાય છે.

જેમ કે શિવ—પુરાણના એકવીસમા અધ્યાયના પદરમા શ્લોકમા જૈન સાધુનુ વર્ણન આ પ્રમાણે છે

हस्ते पात्र दधानश्च तुण्डे वस्त्रस्य धारका
मलिनान्येव वस्त्राणि, धारयन्तोऽल्प—भाषिण

અર્થાત્:—જૈન સાધુ હાથમા પાત્ર રાખે છે, મો ઉપર વસ્ત્ર ધારણ કરે છે, વસ્ત્રો મલિન હોય છે અને અલ્પ ભાષણ કરે છે

પુરાણો ગમે તેટલા અર્વાચીન હોય પણ મુહપત્તી મોઢે બાધવી કે હાથમા રાખવી એ વિવાદ કરતાં તો ઘણા પ્રાચીન છે એટલે સ્થાનકવાસીઓની મોઢે મુહપત્તી બાધવાની રીત પ્રાચીન છે

હિત શિક્ષા રાસ, ઉપદેશ અધિકારમા કહ્યુ છે કે —

મુખ બાધી તે મુહપત્તી, હેઠી પાટો ધાર;
અતિ હેઠી દાઢી થઇ, જોતર ગળે નિરધાર.
એક કાને ધ્વજ સમ કહી, ખભે પછેડી ઠામ,
કેડે ખોસી કોથળી, નાવી પુણ્યને કામ

જૈનાગમોમા તથા જૈન સાહિત્યમા મુહપત્તીને વાચના, પૃચ્છના, પરાવર્તના તથા ધર્મકથાના સમયે આવશ્યક ઉપકરણ કહ્યુ છે.

વસતિ પ્રમાર્જન, સ્થડિલ ગમન વ્યાખ્યાન પ્રસગ તથા મૃતક પ્રસગમા મુહપત્તીનુ આવશ્યક વિધાન કરવામા આવ્યુ છે

પન્યાસજી મહારાજ શ્રી રત્ન વિજયજીગણિએ "મુહપત્તી ચર્ચા—સાર" નામના એક પુસ્તકનો સગ્રહ કર્યો છે, જે આ વિષય ઉપર ખાસ પ્રકાશ ફેકે છે.

માત્ર સ્થાનકવાસીઓથી જુદા પડવાની ખાતર જ મૂર્તિપૂજકો મોં ઉપર મુહપત્તી બાંધતા નથી, એમ શ્રી વિજયાનંદસૂરિ (આત્મારામજી) મહારાજે સં. ૧૯૪૭ના કાર્તક વદિ ૦))ને બુધવારે સૂરતથી મુનિશ્રી આલમચંદજીને પત્ર લખ્યો છે તે ઉપરથી જાણી શકાય છે. આ શ્રી વિજયવલ્લભસૂરિજી કે જે તે વખતે શ્રી વલ્લભવિજયજી હતા, તેમના હસ્તાક્ષરે લખાયેલ તે પત્રમાં નીચે પ્રમાણે લખેલ છે.

"मुहपत्ती विषे हमारा कहना इतना ही है कि मुहपत्ती बंधनी अच्छी है और घणे दिनोंसे परंपरा चली आई है इनको लोपना अच्छा नहि है। हम बंधनी अच्छी जानते है, परन्तु हम ढुंढीए लोकोंमेंसे मुहपत्ती तोडके नीकले है इस वास्ते हम बंध नही सकते है। और जो कही बंधनी ईच्छीए तो यहा बडी निंदा होती है।'

— જીવરાજજી મહારાજે પણ શાસ્ત્રોના પ્રમાણો અને ઉભય પક્ષના તર્કોનો વિચાર કરીને મુહપત્તીને મુખ ઉપર બાંધવાનું નક્કી કર્યું.

સાંપ્રદાયિકતા માનવીના માનસને ગુલામ બનાવી મૂકે છે. મુહપત્તીની ઉપયોગિતા સ્વીકારનાર પણ મુહપત્તીમાં વપરાતા દોરાના ઉપયોગ સામે વાંધો લે છે. પરંતુ એક કાનથી બીજા કાન સુધી મુહપત્તી બાંધવામાં કપડું જ્યારે વાપરવું પડે તેના કરતા માત્ર દોરાથી જ ચાલી જતું હોય તો એટલો પરિગ્રહ ઓછો થાય. ધર્મ પરિગ્રહ વધારવામાં છે કે ઘટાડવામાં? આમ બધી દૃષ્ટિએ વિચારી જીવરાજજી મહારાજે દોરા સાથે મુહપત્તી બાંધવાનું સ્વીકાર્યું.

૩ મૂર્તિપૂજાના સંબંધમાં અગાઉ લોંકાશાહના વિચારો આપણે જોઈ ગયા છીએ, તેજ તેમણે માન્ય રાખ્યા અને મૂર્તિપૂજાને ધર્મ વિધિમાં અનાવશ્યક માની.

જીવરાજજી મહારાજ જ્યારે યતિ ધર્મમાંથી અલગ થયા ત્યારે તેમની સાથે બીજા પાંચ યતિઓ પણ નીકળ્યા અને તેમને સહકાર આપ્યો.

તેમનો શુદ્ધ સંયમ જોઈને લોકોનો તેમના પ્રત્યે ભાવ વધવા લાગ્યો. આથી યતિવર્ગે તેમની સામે વિરોધ જગાવવા માંડ્યો, પરંતુ આ બધાથી જરા પણ ગભરાયા વિના અહિંસાના અનન્ય પ્રહરી બનીને ઘૂમતા રહ્યા. માલવ પ્રદેશમાં ધર્મ–જાગૃતિ લાવવાનું માન પણ તેમના ફાળે જાય છે.

પ્રાંતે પ્રાંતમાં વિચરતા તેઓ આગ્રા આવ્યા ત્યાં તેમનું શરીર નિર્બળ બનવા લાગ્યું. અંત સમય નજીક સમજી, સંપૂર્ણ આહારનો પરિત્યાગ કરી તેઓ સમાધિપૂર્વક કાળધર્મ પામ્યા.

તેમના સમયમાં જ તેમના અનુયાયીઓની સંખ્યા ઘણી મોટી બની ગઈ હતી. તેમના દેહાંત પછી આચાર્ય ધનજી, વિંઘુજી, મનજી તથા નાથુરામજી થયા.

કોટા સંપ્રદાય, અમરસિંહજી મ. નો સંપ્રદાય, સ્વામીદાસજી મ. નો સંપ્રદાય, નાથુરામજી મ. નો સંપ્રદાય આદિ દસ અગિયાર સંપ્રદાય તેમને પોતાના મૂળ પુરુષ માને છે.

૧૭–ધર્મસિંહજી મુનિ

લોંકાશાહે જડવાદ અને આડંબરના વિરોધમાં મોરચો માંડ્યો હતો, તે પ્રમાણે ધર્મસિંહજી મહારાજે લોંકાગચ્છમાં પેસી ગયેલી કુરીતિઓનો નાશ કરવા માટે ઉદ્ઘોષણા કરી.

લોંકાશાહની સેનાની આન્તરિક સ્થિતિને સુદૃઢ કરનાર સ્થાનકવાસી સમાજના મૂળ પ્રણેતાઓમાંથી બીજા નંબરે તેઓ આવે છે.

શ્રી ધર્મસિંહજીનો જન્મ સૌરાષ્ટ્રના હાલાર પ્રાંતના જામનગરમાં થયો હતો. દશા શ્રીમાળી જિનદાસ તેમના પિતા અને શિવાદેવી તેમની માતા હતા.

એક વખત લોંકાગચ્છીય યતિ શ્રી દેવજીનું વ્યાખ્યાન સાંભળી તેમને સંસાર પ્રત્યે વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયો અને દીક્ષા લેવાનો નિર્ણય કર્યો. પંદર વર્ષના કુમાર ધર્મસિંહે માતપિતાની આજ્ઞા માગી. માતપિતાએ ઘણા સમજાવ્યા, પણ પ્રબળ વૈરાગ્યભાવના આગળ તેમને નમતું આપવું પડ્યું. એટલું જ નહિ પણ તેમના ઉપદેશથી પ્રભાવિત થઈ તેમના પિતાએ પણ તેમની સાથે દીક્ષા લીધી.

ધર્મસિંહજી મુનિને અપૂર્વ બુદ્ધિ તથા વિલક્ષણ પ્રતિભાની ખરેખર કુદરતી બક્ષિસ હતી. તેમણે થોડા જ વખતમાં બત્રીસ આગમો, તર્ક, વ્યાકરણ, સાહિત્ય તેમ જ દર્શનનું જ્ઞાન ઉપાર્જન કર્યું.

ધર્મસિંહજી મુનિ એક સાથે બન્ને હાથે લખી શકતા અને અવધાન કરી શકતા.

સામાન્ય રીતે વિદ્વાનોની સાથે ચા[illegible] ઓછો હોય છે. ત્યારે ધર્મસિંહજીમાં ચારિત્ર પણ ઘણા જ ઊંચા પ્રકારનું હતું

તેમના હૃદયમાં યતિઓના શિથિલાચારી જીવન પ્રત્યે અસંતોષ જાગ્યો. તેમણે નમ્રતાપૂર્વક પૂજ્ય યતિશ્રી શિવજીની પાસે ખુલાસો કર્યો અને કહ્યું

"ગુરુદેવ! પાંચમા આરાના બહાના નીચે શિથિલાચારનું આજે જે પોષણ થઈ રહ્યું છે, તે જોઈને આપના જેવા નરસિંહ પણ જો વિશુદ્ધ મુનિ ધર્મનું પાલન નહિ કરે તો પછી કોણ કરશે? આપ મુનિધર્મનું પાલન કરવાની પ્રતિજ્ઞા કરો હું પોતે આપની સાથે આગમાનુસાર સંયમ પાલન કરીશ."

ગુરુએ ઘણા જ પ્રેમપૂર્વક શિષ્યની વાત સાંભળી અને થોડો વખત રાહ જોવા કહ્યું

ધર્મસિંહજીએ ગુરુની વાત સ્વીકારી અને શ્રુતધર્મની સેવા કરવા તેમણે સૂત્રો ઉપર ટબ્બા લખવાનો આરંભ કર્યો. તેમણે સત્તાવીસ સૂત્રોના ટબ્બા લખ્યા. આ ટબ્બા એવી સરસ રીતે લખાયા છે કે આજ સુધી આ ટબ્બાઓને સ્થાનકવાસી સાધુઓ પ્રમાણિક માનતા આવ્યા છે. અને તેને લીધે જ ગુજરાતી ભાષા સ્થાનકવાસી સાધુઓને જાણવી પડે છે

આ પછી ફરીથી તેમણે ગુરુદેવને વિનંતિ કરી કે–"હવે વિશુદ્ધ સંયમના પાલનાર્થે નીકળી પડવાની મારી તીવ્ર ઇચ્છા છે આપ જો નીકળો તો આપણે બન્ને જણા શુદ્ધ ચારિત્રને માર્ગે વળીએ"

ગુરુએ કહ્યું "હે દેવાનુપ્રિય! તું જોઈ શકે છે કે હું તો આ ગાદી અને વૈભવને ત્યાગી શકું તેમ નથી. છતાં તારા કલ્યાણના માર્ગમાં હું આડે આવવા ઇચ્છતો નથી તારી ઇચ્છા હોય તો તું આગમાનુસાર ચારિત્ર્યનું પાલન કર. પરંતુ અહીંથી ગયા પછી તારી સામે વિરોધના વંટોળ ઊભા થશે તેની સામે ટકી શકવાની તારામાં શક્તિ છે કેમ? તે જાણવા માટે મારે તારી પરીક્ષા કરવી પડશે માટે આજે રાતના દિલ્હી દરવાજા બહાર (અમદાવાદમાં) દરિયાખાનનો ઘુમ્મટ છે. ત્યાં આજની રાત રહી, કાલે સવારે મારી પાસે આવજે.

ધર્મસિંહજી ગુરુની આજ્ઞા શિરોધાર્ય કરી ત્યાં ગયા. ત્યાંના અધિકારી પાસે રાતવાસો કરવાની આજ્ઞા માગી તે વખતે અમદાવાદ શહેરનો આટલો વિકાસ થયો નહોતો. રાતના ત્યાંથી શહેરની બહાર નીકળી શકાતું નહિ અને દરિયાખાનના ઘુમ્મટમાં તો રાતના કોઈથી રહી શકાતું ન્હોતું. આથી ત્યાંના મુસલમાનોએ તેમને કહ્યું –

"મહારાજ! અહીં કોઈ રાત્રે રહી શકતું નથી. જે રાત્રે અંદર જાય છે, તેનું સવારે શબ જ હાથ લાગે છે. આપ નાહક મરવાનું શું કરવા ઇચ્છો છો?

ધર્મસિંહજીએ કહ્યું "મને મારા ગુરુની આજ્ઞા છે કે રાતના અહીં રહેવું એટલે આપ મને આજ્ઞા આપો."

ત્યાંના લોકોએ વિચાર્યું કે આ કોઈ અજબ માણસ છે! આટલી જીદ કરે છે તો ભલે મરતો. તેમણે કહ્યું 'મહારાજ' આપ રહો તેમાં અમને કાંઈ વાંધો નથી, પરંતુ આપને કાંઈ થાય તો તેનો દોષ અમને ન દેતા."

ધર્મસિંહજીએ કહ્યું કે તેઓ કોઈપણ પ્રકારે કોઈને પણ દોષિત માનશે નહિ.

તેઓ ઘુમ્મટમાં પહોંચ્યા. સંધ્યા સમય થતાં તેઓ પોતાના ધ્યાન, કાર્યોત્સર્ગ અને શાસ્ત્ર સ્વાધ્યાયમાં લાગી ગયા. એક પ્રહર રાત્રિ વીતી ગઈ ત્યારે દરિયાખાન પીર પોતાની કબર ઉપર આવ્યો તેણે જોયું કે એક સાધુ સ્વાધ્યાયમાં બેઠેલ છે તેણે શાસ્ત્રોની વાણી સાંભળી આજ સુધી આવી વાણી તેણે કદી સાંભળી નહોતી સાધુ તરફ નજર કરી તો તેઓ સ્વાધ્યાયમાં લીન હતા તેમણે તો પોતાની દૃષ્ટિ સુદ્ધાં ફેરવી નહિ યક્ષનું હૃદય પલટાઈ ગયું જે આજ સુધી મળે તે માનવીનો સંહાર કરતો તે આ સાધુની સેવા-સુશ્રૂષા કરવા લાગી ગયો ધર્મસિંહજીએ તેને ઉપદેશ આપ્યો અને તેણે કોઈને પણ હેરાન ન કરવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી

જે લોકોએ આગલે દિવસે સાધુને અંદર જતાં જોયેલા તેઓ સવારમાં તેમનું શબ નિહાળવાની કુતૂહલતાથી પ્રેરાઈને બહાર ભેગા થયેલા. ત્યાં તો સૂર્યોદય થતાં ધીર, ગંભીર, પ્રતાપી ઓજસ્વી શ્રી ધર્મસિંહજી મુનિ બહાર પધાર્યા લોકો આશ્ચર્યચકિત થઈ ગયા.

શ્રી શિવજી ઋષિએ આ વાત સાંભળી ઘણી જ પ્રસન્નતા અનુભવી અને ધર્મસિંહજીને શાસ્ત્ર સંમત શુદ્ધ સંયમના માર્ગે વિચારવા આજ્ઞા આપી

શ્રી ધર્મસિંહજી ગુરુના આશિર્વાદ મેળવી તેમનાથી છૂટા પડી અમદાવાદ પધાર્યા. તે વખતે અમદાવાદમાં ચૈત્યવાસીઓનું બળ ઘણું અને યતિઓ તો અનેક સારી જેવા એટલે સંપૂર્ણ સંયમીને યોગ્ય એવી જગા ક્યાંથી મળે? આથી તેમણે દરિયાપુર દરવાજાની ઉપરની રંગેવાળની કોટડીમાં રહી, દરવાજા ઉપરથી ઉપદેશ દેવા માંડ્યો

આ ઉપરથી તેમનો સપ્રદાય "દરિયાપુરી સપ્રદાય" ના નામથી ઓળખાય છે.

આ વાત વિ. સ. ૧૬૯૨ ની આસની છે.

શ્રી ધર્મસિહજીના ઉપદેશની અસર અમદાવાદ ઉપર ઘણી જ ઊડી પડી છે તે વખતના અમદાવાદના બાદશાહના કારભારી દલપતરાય પણ તેમનાથી ઘણા પ્રભાવિત થયા હતા ધીમે ધીમે તેમનો શિષ્ય પરિવાર અને અનુયાયી વર્ગ વધવા માડયો.

પૂજ્ય શ્રી ધર્મસિહજી મહારાજનો અભ્યાસ ઘણો જ ઊડો હતો પોતાના જીવન દરમિયાન જૈન સાહિત્યની અજોડ સેવાનુ મહાન્ કાર્ય તેમણે કર્યું છે

શ્રી. ધર્મસિહજી મહારાજની માન્યતાઓમા બીજા સપ્રદાયોથી થોડોક ફેર છે તેમા મુખ્ય ભેદ (શ્રાવકોના પચ્ચક્ખાણમા) છ કોટિ અને આઠ કોટિનો છે સાધુઓને તો ત્રણ કરણ અને ત્રણે યોગની, નવ કોટિએ પ્રત્યાખ્યાન હોય છે

આ પૈકી બીજા સપ્રદાયોના શ્રાવકો બે કરણ અને ત્રણ યોગથી, છ કોટિએ પ્રત્યાખ્યાન કરે છે. જ્યારે ધર્મસિહજીની એ માન્યતા હતી કે શ્રાવક મનની અનુમોદના સિવાય બાકીની આઠ કોટિથી પ્રત્યાખ્યાન કરી શકે છે

સમાચારીના વિષયમા પ્રાય દરેક સપ્રદાયની પારસ્પરિક તુલનામા અતર જણાય છે, તેમ દરિયાપુરી અને બીજા સપ્રદાયો વચ્ચે પણ અતર છે આયુષ્ય તૂટવાની માન્યતામા પણ ફેર છે ધર્મસિહજી મહારાજનુ પ્રચારક્ષેત્ર સમસ્ત ગુજરાત અને સૌરાષ્ટ્રના પ્રદેશોમા હતુ.

પૂજ્ય શ્રી ધર્મસિહજી સારણગાઠના દર્દને લીધે દૂરના પ્રદેશોમા વિહાર કરી શક્યા નથી વિ સ ૧૭૨૮ના આસો સુદિ ૪ને દિવસે ૪૩ વર્ષની ઉમ્મરે તેઓ કાળધર્મ પામ્યા

આજે તેમની ચોવીસમી પાટે પૂજ્ય શ્રી ઇશ્વરલાલજી મહારાજ આચાર્યપદે બિરાજમાન છે તેઓ શાત, દાંત, ધીર, ગભીર અને શાસ્ત્રોના સમર્થ જાણકાર છે

આ સપ્રદાયની એક પ્રસન્નતાજનક વિશેષતા એ છે કે તેમાથી ડાળા પાખડાંની માફક એકમાથી અનેક સપ્રદાયો નીકળ્યા નથી, આજ સુધી એક જ કડી ચાલતી આવી છે

૧૮–શ્રી લવજીઋષિ

શ્રી લવજીઋષિના પિતાશ્રીનુ તેમની બાલ્યાવસ્થામા અવસાન થયુ હતુ. આથી તેઓ પોતાની વિધવા માતા ફૂલાબાઇ સાથે તેમના નાના (માના પિતા) વીરજી વોરાને ત્યા રહેતા વીરજી વોરા દશાશ્રીમાળી વણિક હતા તેમની ધાક ખભાતના નવાબ સુધી વાગતી તેમની પાસે લાખોની મિલકત હતી આ સમયે સુરતમા લોકાગચ્છની ગાદી ઉપર વજાગજી યતિ હતા વીરજી વોરા તેમની પાસે જતા આવતા બાળક લવજી પણ પોતાની માતા સાથે ત્યા જતો આવતો અને ધર્મક્રિયાના પાઠો સાભળતો અને મનમા તેનુ ચિતવન કરતો

એક વખત વીરજી વોરા, પોતાની પુત્રી અને બાળક લવજી સાથે શ્રી વજાગજીના દર્શનાર્થે ઉપાશ્રયમા ગયેલા ત્યારે વજાગજીએ લવજીનો હાથ જોયો અને સામુદ્રિક શાસ્ત્રના આધારે અનુમાન કર્યું કે આ બાળક મોટા થતા મહાપુરુષ થશે

વીરજી વોરાએ વજાગજી યતિને આ બાળકને શાસ્ત્રાભ્યાસ કરાવવા કહ્યુ યતિજીએ કહ્યુ કે પહેલા તો તેને સામાયિક પ્રતિક્રમણ શીખવવા જોઇએ

લવજીએ જવાબ આપ્યો કે "સામાયિક પ્રતિક્રમણ તો મને યાદ જ છે."

યતિજીએ તેમની પરીક્ષા લીધી અને જ્યારે તેમણે જોયુ કે સાત વર્ષના બાળકને સામાયિક પ્રતિક્રમણ આવડે છે, ત્યારે ઘણો હર્ષ થયો અને ભણાવવાનુ સ્વીકાર્યું.

શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા ભગવાન મહાવીરની વૈરાગ્યમયી વાણીથી તેઓ આત્મનિર્વેદના રસમા તરબોળ થવા લાગ્યા. પાર્થિવ વિષયો બહારથી મધુર પણ અદરથી હળાહળ વિષ ભરેલા કિપાક ફળ જેવા અને સસાર ક્ષણભગુર જણાયો

તેમણે પોતાની મા તથા માતામહને પોતાની સસારત્યાગ કરવાની ભાવના જણાવી. તેઓએ તેમને ઘણુ સમજાવ્યુ, પણ લવજી પોતાના નિશ્ચયમા દૃઢ રહ્યા આખરે તેમની જીત થઇ.

વિ સ ૧૬૯૨ મા મોટા ભવ્ય સમારોહ સાથે તેમણે દીક્ષા ધારણ કરી. ધ્યાનપૂર્વક તેઓ શાસ્ત્રાભ્યાસમા મગ્ન થઇ ગયા ગુરુદેવ વજાગજીને પણ લવજીઋષિ પર પ્રગાઢ સ્નેહ હતો. તેઓ મન દઇને અભ્યાસ કરાવતા અને પોતાના મહામુલા અનુભવો સભળાવતા

લવજીઋષિને નિરતર શ્રુતાભ્યાસથી સયમ પ્રત્યે દૃઢ રુચિ ઉત્પન્ન થઇ તેઓ અવારનવાર યતિવર્ગનુ

શિથિલાચારીપણુ અને સગ્રહવૃત્તિ પ્રત્યે ગુરુદેવનુ લક્ષ્ય ખેચતા અને શુદ્ધ સયમપાલનની વિનતી કરતા.

ગુરુદેવ તેમની વાત કબૂલ કરતા, પરન્તુ શુદ્ધ સયમ-પાલન માટે પરંપરાનુ પરિવર્તન કરવા અથવા યતિવર્ગથી અલગ થવા તેઓ તૈયાર ન હતા ખૂબ વિચાર-વિમર્શ બાદ લવજીઋષિએ યતિવર્ગથી અલગ થઇ વિ સ ૧૬૯૪મા શુદ્ધ દીક્ષા ધારણ કરી એક જૂની પટ્ટાવલિ મુજબ તેમણે પોતાના બે ગુરુભાઇઓ ભાણજી અને સુખાજી સાથે સ ૧૭૦૫મા શુદ્ધ દીક્ષા ધારણ કર્યાનુ જાણવા મળે છે આમ આ વિષયમા બે મત છે લવજી ઋષિની મધુરવાણી અને તપના તેજને લીધે તેમનો પ્રચાર વધવા માડયો ધર્મદાસજી મહારાજ અને ધર્મ-સિંહજીએ યતિસસ્થા સામે જેહાદ જગાવી હતી, ત્યા આ ત્રીજા લવજીઋષિ તેમા સામેલ થયા. આથી યતિવર્ગ, લવજીઋષિને પોતાના દુશ્મનરૂપે સમજવા લાગ્યો

યતિવર્ગે રચેલ ષડ્યત્રને કારણે વીરજી વોરા પણ લવજીઋષિ પર કોપે ભરાયા અને ખભાતના નવાબ પર પત્ર લખી લવજીઋષિને કેદ કરાવ્યા જેલના ચોકીદારોએ આ સાધુની ધર્મચર્યા અને જીવનની દિવ્યતા જોઇ બેગમ સાહેબને વાત કરી બેગમસાહેબે નવાબને સમજાવ્યા અને સપૂર્ણ સન્માન સહિત તેમને છોડાવ્યા

આમ યતિવર્ગનુ ષડ્યત્ર નિષ્ફળ જવાથી તેઓએ એક યા બીજી રીતે તેમને દુખ દેવા માડયુ, પરન્તુ લવજીઋષિ તો મનમા પણ ક્રોધ લાવ્યા સિવાય પોતાના કાર્યમા મગ્ન રહેતા.

અમદાવાદમા એકવાર લવજીઋષિ બિરાજતા હતા ત્યારે યતિવર્ગે કાવતરુ રચી તેમના ત્રણ શિષ્યોનો ઘાત કરાવ્યો આ બાબતની ફરિયાદ લવજીઋષિના શ્રાવકોએ દિલ્હીના દરબારમા પહોચાડી તેની તપાસ થતા એક મદિરમાથી તેમના ગમે દાટી દેવામા આવેલા તે મળી આવ્યા આથી કાજીએ તે મદિર તોડી પાડવાનો હુકમ આપ્યો

આથી લવજીઋષિના પ્રાચીન શ્રાવકો કે જેઓ ધર્મના ઉપાસકો હતા તેમણે કાજીને વિનતિ કરી કે જેમણે આ લોકો માર્ગ ભૂલ્યા અને ગમે તેવુ ખરાબ કામ કર્યુ છતા તેઓ અમારા ભાઇઓ જ છે. અમે મૂર્તિપૂજાને નથી માનતા પણ તેઓ મૂર્તિપૂજા દ્વારા જિનેશ્વર દેવોનુ જ આરાધન કરે છે જો મદિર તોડી પાડવામા આવશે તો તેમને અપાર દુખ થશે તેમના દુખના નિમિત્ત બનવાનુ અમોને -વીતરાગના ઉપાસકોને- શોભે નહિ, માટે આપ દેરાસર તોડી પાડવાનો હુકમ રદ કરો ”

કાજીએ હુકમ રદ કર્યો અને ભવિષ્યમા માર્ગમાર્ગી-ઓને આવા મકરા સહન ન કરવાં પડે તેવો પ્રબધ કરી દિલ્હી પાછા ફર્યા

આમ શ્રી લવજીઋષિના સમયમા યતિઓની સામે ઊભા રહેવુ એ કેટલુ કઠિન કાર્ય હતુ તે સ્પષ્ટ થાય છે.

છેવટે એક વખત વિહાર કરતા કરતા, લવજીઋષિ બુરાનપુર પધાર્યા, ત્યા તેમના પ્રતિસ્પર્ધીઓએ એક ભાવસાર બાઇ મારફત વિષમિશ્રિત મોદક વહોરાવ્યા આહારપાણી બાદ વિષની પ્રતિક્રિયા થવા માડી. ચકોર લવજીઋષિ સમજી ગયા તેમણે પોતાના શિષ્યોને ગુજરાત તરફ વિહાર કરવાની આજ્ઞા આપી ખૂબ શાતિપૂર્વક સમાધિમરણે સ્વર્ગે સચર્યા.

દરિયાપુરી સપ્રદાયની પટ્ટાવલિમા એવો ઉલ્લેખ મળી આવે છે કે પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજી અને લવજી-ઋષિનુ અમદાવાદમા મિલન થયુ હતુ. પણ છ કોટિ અને આઠ કોટિ તથા આયુષ્ય તૂટવાની માન્યતા પર બનેના અભિપ્રાય એક ન થઇ શક્યા.

પૂજ્ય શ્રી લવજીઋષિની પરપરા ખૂબ વિશાળ છે આજ પણ સ્થાનકવાસી સમાજમા ખંભાત સઘાડો ગુજરાતમા, ઋષિ સપ્રદાય માળવા તથા દક્ષિણમા અને પજાબમા પૂજ્ય અમરસિંહજી મહારાજનો સપ્રદાય આદિ તેમના અનુયાયિન સપ્રદાયો મોટી સખ્યામા છે,

૧૯—શ્રી ધર્મદાસજી મહારાજ

પૂજ્ય શ્રી ધર્મદાસજી મહારાજનો જન્મ અમદાવાદ પાસેના સરખેજ ગામમા, સઘપતિ જીવણલાલ કાળિદાસની ધર્મપત્ની હીરાબાઇની કુક્ષિએ સ ૧૭૦૧ના ચૈત્ર સુદિ ૧૧ને દિવસે થયો હતો તેઓ જાતના ભાવસાર હતા સરખેજમા તે વખતે ભાવસારોના સાતસો ઘર હતા, આ બધા લોકાગચ્છી હતા

સરખેજમા તે વખતે લોકાગચ્છના 'કેશવજી યતિના પક્ષના શ્રી પૂજ્ય તેજસિંહજી બિરાજતા હતા, તેમની પાસે ધર્મદાસજીએ ધાર્મિક જ્ઞાન શીઘ્ર પ્રાપ્ત કર્યુ.

એક વખત એકલપાત્રિયા પથના એક અગ્રેસર કલ્યાણજીભાઇ પોતાના પથના પ્રચારાર્થે સરખેજ આવ્યા

મળથી જ વૈરાગ્યમય ધર્મદાસજી પર તેમના ઉપદેશનો ઠીક ઠીક પ્રભાવ પડ્યો

શાસ્ત્રોમા વર્ણવેલ શુદ્ધ સંયમી જીવનના આચારો સાથે સરખાવતાં, યતિઓના શિથિલચારી જીવનથી તેઓને દુઃખ થતુ આથી તેઓ યતિઓની પાસે દીક્ષા લેવા ઇચ્છતા નહિ' કલ્યાણજીભાઇના ઉપદેશથી પ્રભાવિત થઇ માતપિતાની સંમતિ પ્રાપ્ત કરી ધર્મદાસજી તેમના શિષ્ય બન્યા

એક વર્ષ સુધી તેમના સંપર્કમા રહી શાસ્ત્રાભ્યાસ કર્યો. શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ કરતા તેમની એકલપાત્રિયા પંથની શ્રદ્ધા હટી ગઇ તેમણે એ અજ્ઞાનમૂલક માન્યતાનો ત્યાગ કર્યો અને વિ સં. ૧૭૧૬મા અમદાવાદમા દિલ્હી દરવાજા બહાર આવેલી પાદશાહની વાડીમા શુદ્ધ દીક્ષા અંગીકાર કરી

એમ કહેવાય છે કે અમદાવાદમા એક વખત તેમની અને પૂજ્ય શ્રી ધર્મસિંહજી મુનિ વચ્ચે વિચાર વિનિમય થયો હતો, પરંતુ આઠ કોટિ અને આયુષ્ય તૂટવાની માન્યતા ઉપર બંને સંમત થઇ શક્યા નહિ

આવી રીતે લવજીઋષિ સાથે પણ તેમને વાર્તાલાપ થયેલો પરંતુ તેમા પણ સાત મુદ્દાઓ ઉપર સમાધાન ન થઇ શકવાથી તેમણે સ્વતંત્ર રીતે દીક્ષા લીધી છતા ધર્મસિંહજી મુનિ અને ધર્મદાસજી મહારાજ વચ્ચે ખૂબ જ પ્રેમ હતો.

દીક્ષાને પ્રથમ દિવસે તેઓ શહેરમા ગોચરી કરવા ગયા. અકસ્માત તે એવા ઘેર પહોચ્યા કે જ્યા સાધુ માર્ગીઓના દ્વેષીઓ વસતા હતા તેમણે મુનિને આહારના સ્થાને રાખ વહોરાવી પવનને લીધે રાખ પવનમા ઉડી ગઇ અને થોડીક પાત્રમા રહી ધર્મદાસજી આ રાખ લઇ શહેરમા બિરાજતા ધર્મસિંહજી મુનિ પાસે આવ્યા અને ભિક્ષામા વિભૂતિ પ્રાપ્ત થયાની હકીકત કહી સંભળાવી

ધર્મસિંહજી મુનિએ કહ્યુ.—"ધર્મદાસજી ! આ રાખનુ ઊડવુ એમ સૂચવે છે કે તેની માફક આપની કીર્તિ ફેલાશે અને આપની પરંપરા પણ ખૂબ જ વિકાસ પામશે જેવી રીતે રાખ વિનાનુ કોઇ ઘર હોતુ નથી, તેવી રીતે તમારા ભક્તો સિવાયના કોઇ ગામ કે પ્રાંત રહેશે નહિ".

આ ઘટના વિ સં ૧૭૨૧ની છે. તેમના ગુરુદેવનો સ્વર્ગવાસ તેમની દીક્ષા પછી એકવીસ દિવસે મારગશર વદિ ૫ ના રોજ થયો હતો આથી લોકોમા એવો ભ્રમ ફેલાયો કે ધર્મદાસજી સ્વયંબોધી છે.

ધર્મદાસજી ઉપર સમસ્ત સંપ્રદાયની જવાબદારી હતી અને તે તેમણે ઘણી જ કુશળતાપૂર્વક અદા કરી. ભારતના ઘણા પ્રાંતોમા વિચરી તેમણે ધર્મનો પ્રચાર કર્યો

તેમના ગુણોથી આકર્ષાઇ તેમના અનુયાયી સંઘે સં ૧૭૨૧ માં માલવાના પાટનગર ઉજ્જૈનમા ભવ્ય સમારોહ વચ્ચે તેમને આચાર્ય પદવીથી વિભૂષિત કર્યા

પૂ ધર્મદાસજી મહારાજે ગુજ, કાઠિયાવાડ, વાગડ, ખાનદેશ, પંજાબ, મેવાડ, માળવા, હાડૌતી, ઢુંઢાર આદિ પ્રાંતોમાં પ્રચાર કર્યો લગભગ અર્ધ ઉપરાંતના ભારતમા નિર્ગ્રંથ ધર્મનો પ્રચાર કરતા તેઓ ઘૂમી વળ્યા હતા

ધર્મસિંહજી મુનિ અને લવજીઋષિ સાથે તેમને અનુક્રમે એકત્રીસ અને સાત બોલના અંતર હોવા છતા પણ પરસ્પર સ્નેહસંબંધ ગાઢ હતો ધર્મસિંહજી મહારાજ તો તેમને પોતાના શિષ્યો કરતા પણ વધુ ચાહતા હતા

ધર્મદાસજી મહારાજની શિષ્યપરંપરા તે વખતના સર્વ મહાપુરુષો કરતા અધિક છે તેમને ૯૯ શિષ્યો હતા, જેમાના ૩૫ તો સંસ્કૃત અને પ્રાકૃતના પંડિતો હતા. આ પંત્રીસ પંડિતોની સાથે તો શિષ્યોની એકેક ટોળી બની ગઇ હતી

આમ શિષ્યો અને પ્રશિષ્યોના મોટા પરિવારની વ્યવસ્થા તથા શિક્ષણનો પ્રબંધ કરવો એ એક વ્યક્તિ માટે મુશ્કેલ હતુ આથી પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજે ધારાનગરીમા બધા શિષ્યો પ્રશિષ્યોને એકત્ર કરી સં. ૧૭૭૨ના ચૈત્ર સુદિ ૧૩ ના રોજ બાવીસ સંપ્રદાયમા વહેચી નાખ્યા

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમા બાવીસ સંપ્રદાયનુ નામ ખૂબ પ્રચલિત છે તે બાવીસ ટોળાંને નામે પણ ઓળખાય છે કારણ કે એક જ ગુરુના પરિવારની બાવીસ અલગ અલગ ટોળીઓ છે આ બાવીસ સંપ્રદાયના નામો નીચે મુજબ છે

(૧) પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મ.નો સંપ્રદાય, (૨) પૂજ્યશ્રી ધનાજી મ નો સંપ્રદાય, (૩) પૂજ્યશ્રી લાલચંદજી મ નો સંપ્ર (૪) પૂજ્યશ્રી મનાજી મ નો સંપ્ર (૫) પૂજ્યશ્રી મોટા પૃથ્વીરાજજી મ નો સંપ્ર (૬) પૂજ્યશ્રી નાના પૃથ્વીરાજજી મ નો સંપ્ર (૭) પૂજ્યશ્રી બાલચંદજી મ નો સંપ્ર (૮) પૂજ્યશ્રી તારાચંદજી મ નો સંપ્ર. (૯) પૂજ્યશ્રી

પ્રેમચંદજી મ.નો સં. (૧૦) પૂજ્યશ્રી ખેતશીજી મ.નો સંપ્ર (૧૧) પૂજ્યશ્રી પદાર્થજી મ.નો સંપ્ર (૧૨) પૂજ્યશ્રી લોકમલજી મ.નો સંપ્ર (૧૩) પૂજ્યશ્રી ભવાનીદાસજી મ.નો સંપ્ર (૧૪) પૂજ્યશ્રી મલુકચંદજી મ.નો સંપ્ર (૧૫) પૂજ્યશ્રી પુરુષોત્તમજી મ.નો સંપ્ર. (૧૬) પૂજ્યશ્રી મુકુટરાયજી મ.નો સંપ્ર (૧૭) પૂજ્યશ્રી મનોહરદાસજી મ.નો સંપ્ર. (૧૮) પૂજ્યશ્રી રામચંદજી મ.નો સંપ્ર (૧૯) પૂજ્યશ્રી ગુરુસહાયજી મ.નો સંપ્ર (૨૦) પૂજ્યશ્રી વાનજી મ.નો સંપ્ર (૨૧) પૂજ્યશ્રી ગમરતનજી મ.નો સંપ્ર (૨૨) પૂજ્યશ્રી મૂળચંદજી મ.નો સંપ્રદાય

પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મહારાજના સ્વર્ગવાસની ઘટના તેમના જીવનકાળથી પણ અધિક ઉજ્જવળ અને રોમાંચક છે. તેમના સાંભળવામાં આવ્યું કે ધાર નગરીમાં તેમના એક શિષ્ય મુનિએ સંથારો કર્યો છે, પરંતુ હવે તેના મનના ભાવો કાંઇક ઢીલા પડવાથી અનશનની પ્રતિજ્ઞા તોડવા ઇચ્છે છે. આ વાત સાંભળતા જ તેણે સંદેશો મોકલ્યો કે, "હું ત્યાં આવું છું. મારા આવતા પહેલા પ્રતિજ્ઞાભંગ ન કરો." મુનિએ તેમની આજ્ઞા માની લીધી.

પૂજ્યશ્રી ખૂબ ઝડપથી વિહાર કરી સાંજના ધારાનગરીમાં પહોંચ્યા. ક્ષુધાતુર ઉદર અને તૃષાતુર માનસવાળા શિષ્ય–મુનિ અન્નજળ માગી રહ્યા હતા. પૂજ્યશ્રીએ તેમને પ્રતિજ્ઞાનું પાલન કરવા સમજાવ્યા. પરંતુ મુનિની સાહસશક્તિ તૂટી પડી હતી. તેમના પર ઉપદેશની અસર ન થઇ.

પૂજ્યશ્રીએ ઝટપટ પોતાનો ઓઘો ઉતારી નાખ્યો. સંપ્રદાયની જવાબદારી મૂળચંદજી મહારાજને સોંપી, સંઘને પોતાના મંતવ્યની જાણ કરી તુરત જ ધર્મની જ્યોતને ઝળહળતી રાખવા પોતે શિષ્યના સ્થાને સંથારો આદરી બેસી ગયા.

શરીરનો ધર્મ તો વિલય થવાનો જ છે. ધીમે ધીમે શરીર કૃશ થતું ગયું અને એક દિવસ શાંત વાતાવરણમાં વર્ષાના ઝીણાં ઝીણાં ફોરાં પડતા હતા એવા સમયે દેહત્યાગ કરી તેમનો આત્મા સ્વર્ગે સંચર્યો.

સં. ૧૭૭૯ કે ૧૭૭૨માં, ધર્મની કીર્તિની રક્ષાને કાજે તેમણે આમ પોતાના દેહનું બલિદાન દીધું.

ધન્ય હો, આવા મહાન આત્માને!!

૨૦ સ્થાનકવાસી સમાજનું પુનરુત્થાન

(ચાર ધર્મસુધારકોના જીવન વિષે આપણે જોઇ ગયા. પાંચમા ધર્મસુધારક શ્રી હરજીઋષિના સંબંધમાં ખાસ વિગતો હજી સુધી પ્રાપ્ત થઇ નથી. જૈન પ્રકાશમાં અનેક વખત વિનંતિઓ કરવા છતાં તેમના અનુયાયીઓ કે શિષ્ય પરંપરામાંથી કોઇએ પોતાની પાસેની માહિતી મોકલી નથી.)

પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજીનો સંપ્રદાય એક અને અવિચ્છિન્ન રહ્યો. તે સિવાય પૂજ્યશ્રી જીવરાજજી મહારાજ, લવજીઋષિ અને ધર્મદાસજી તથા હરજીઋષિની શિષ્ય પરંપરામાંથી ભાગલા પડીને ઘણા સંપ્રદાયો ઊભા થયા. થોડા થોડા વિચારભેદને પરિણામે એકબીજા વચ્ચે ઐક્યની ભાવનાનું વિલોપન થતું ગયું. "નમો લોએ સવ્વ સાહૂણં"નો પાઠ ભણનાર શ્રાવકોના હૃદયમાં પણ આ મારા ગુરુ અને આ તમારા ગુરુની વૃત્તિ જાગી પડી. આમ સ્થાનકવાસી સમાજ ઘણો વિસ્તૃત હોવા છતાં બિસ્માર હાલતમાં આવી પડ્યો.

સને ૧૮૯૪માં દિગંબર ભાઇઓએ આંતરિક અને સાંપ્રદાયિક દળબંધીઓથી ઉપર ચઢીને ઓ. દિગંબર કોન્ફરન્સની સ્થાપના કરી. સને ૧૯૦૨માં મૂર્તિપૂજક ભાઇઓએ પણ શ્રી શ્વેતાંબર મૂર્તિપૂજક કોન્ફરન્સનું નિર્માણ કર્યું.

આપણા સમાજમાં ખંભાત સંપ્રદાયના ઉત્સાહી મુનિશ્રી છગનલાલજી મહારાજે સ્થાનકવાસી સમાજના સંગઠન પ્રત્યે ધ્યાન ખેંચ્યું અને જૈન સમાજના સુવિખ્યાત લેખક, નિડર વક્તા, જાણીતા ફિલસૂફ, અને સ્વતંત્ર વિચારક સ્વ. શ્રી વાડીલાલ મોતીલાલ શાહને શ્રાવક સમાજના એકીકરણની પ્રેરણા આપી.

શ્રાવકો સામાજિક કાર્યોમાં તો એકરૂપ જ હતા પરંતુ ધર્મકાર્યમાં સંપ્રદાયોના નામે વહેંચાઇ ગયેલા હતા. સમયને સમજીને, કલહના પરિણામો નિહાળીને દરેકે એકીકરણની યોજનાને આવકારી અને સને ૧૯૦૬માં "શ્રી અખિલ ભારતીય શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સ"ની સ્થાપના થઇ.

કોન્ફરન્સનું પહેલું અધિવેશન મોરબીમાં સને ૧૯૦૬માં બીજું, સને ૧૯૦૮માં રતલામમાં, ત્રીજું, સને ૧૯૦૯માં અજમેરમાં, ચોથું, સને ૧૯૧૦માં જલંદર (પંજાબ)માં, પાંચમું, સને ૧૯૨૩માં સિકંદ્રાબાદમાં, છઠ્ઠું, સને ૧૯૨૪માં

મલકાપુરમા, સાતમુ, મુબઈમા, આઠમુ, બિકાનેરમા તથા નવમુ અજમેરમા સને ૧૯૩૩મા ભરાયુ હતુ.

અજમેરના નવમા અધિવેશનની સાથેસાથ સ્થાનકવાસી સમાજના સાધુઓનુ સમેલન પણ મળવાનુ નક્કી થયુ હતુ

સમ્રાટ ખારવેલ, રાજા સપ્રતિ તથા મથુરા તેમ જ છેલ્લે વલ્લભીપુરના સાધુ સમેલન પછી ૧૪૭૯ વર્ષે વિવિધ સપ્રદાયોના સાધુઓને એક સાથે, એક જ જગાએ નિહાળવાનો પ્રસગ સદ્ભાગ્યે સ્થાનકવાસી જૈન સમાજને સાંપડયો

આ વખતે સ્થાનકવાસી સમાજમા ૩૦ સપ્રદાયો હતા તેમાથી ૨૬ સપ્રદાયના પ્રતિનિધિઓ આ સમેલનમા ઉપસ્થિત થયા આ વખતે મુનિવર્ગની સખ્યા ૪૬૩ અને સાધ્વીઓની સખ્યા ૧૧૩૨ મળી કુલ ૧૫૯૫ની સખ્યા ગણાતી હતી.

આ સમેલનથી દૂરદૂરના સાધુઓનો પરસ્પર પરિચય થયો અને ઐક્યના બીજ રોપાયા

ત્યાર પછી દસમુ અધિવેશન ઘાટકોપરમા અને અગિયારમુ મદ્રાસમા મળ્યુ તે વખતે બારમુ અધિવેશન સાદડી (મારવાડ)મા ભરવાનો નિર્ણય લેવાયો

સાદડી સમેલન, અજમેર સમેલનમા રોપાયેલ બીજનુ વિકસિત ફળ પુરવાર થયુ

સમેલનમા ભાગ લેનાર મુનિવરોએ વિચારવિમર્શ બાદ પોતપોતાના સર્વ સપ્રદાયોને એક બૃહદ્ સઘમા વિલીન કરવાનુ સ્વીકાર્યુ

વૈશાખ-સુદિ ૩ અક્ષય તૃતીયાના પરમ પવિત્ર દિને સમેલનનો પ્રારભ થયો અને વૈશાખ સુદિ ૯ ના દિવસે શ્રી વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સઘના નામ હેઠળ, સઘપ્રવેશપત્ર પર સહીઓ કરી, જૈન ધર્મ દિવાકર પૂજ્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજને આચાર્ય તરીકે સ્વીકારી બાવીસ સપ્રદાયોનો એક મહાન એકત્રિત સઘ બન્યો

વ્યવસ્થા માટે સમિતિઓ નીમવામા આવી. કેટલાય અગત્યના ઠરાવો પસાર થયા કોન્ફરન્સે મુનિ સમેલનના બધા જ પ્રસ્તાવોનુ ઉત્સાહપૂર્વક અનુમોદન કર્યુ અને સપૂર્ણ સહયોગ અર્પવાની પ્રતિજ્ઞા કરી. મુનિ સમેલનના નિર્દેશાનુસાર શ્રાવક સઘને સુવ્યવસ્થિત બનાવવા તરફ પણ ધ્યાન આપવામા આવ્યુ સાથે સાથે સાધુ સમેલનના ઠરાવોનો અમલ કરવા માટે એકાવન સભ્યોની એક સચાલક સમિતિની નિમણૂક કરવામા આવી

૧૭મી ફેબ્રુઆરી ૧૯૫૩ના રોજ મત્રી મુનિયો તથા નિર્ણાયક સમિતિના મુનિવર્ગનુ સમેલન સોજતમા મળ્યુ. આ સમેલનમા, સાદડી સમેલન વખતે ચાતુર્માસ નજીક હોવાથી પૂરતો વિચારવિમર્શ થઇ શક્યો નહોતો તેથી જે કામો અધૂરાં રહેલા તે ફરીથી વિચારવામા આવ્યા.

આ વખતે મુનિઓની એકતા, પારસ્પરિક સદ્ભાવ, તથા આત્મસાધના અને સમાજકલ્યાણની ભાવના સર્વ મુનિરાજોના હૃદયમા કામ કરી રહ્યા હતા

આ સમેલનમા સચિત્તાચિત્તનો પ્રશ્ન, ધ્વનિવર્ધક યત્રનો પ્રશ્ન વિગેરે પ્રશ્નો ઉપર ખૂબ વિચારવિનિમય થયો, પરતુ કોઇ નિર્ણય લઇ શકાયો નહિ છેવટે, વિવાદાસ્પદ મુદ્દાઓ ઉપર સાથે મળીને વિચાર કરી શકાય તે માટે ઉપાચાર્ય શ્રી ગણેશીલાલજી મહારાજ, પ્રધાનમત્રી શ્રી આનદઋષિજી મહારાજ, સહમત્રી શ્રી હસ્તીમલજી મહારાજ, કવિરત્ન શ્રી અમરચદજી મહારાજ અને શતિરક્ષક વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ શ્રી મદનલાલજી મહારાજ આ પાચ સતોના એકત્રિત ચાતુર્માસનો નિર્ણય કરવામા આવ્યો તે માટે જોધપુર સઘની વિનતિ માન્ય કરવામા આવી, વિવાદાસ્પદ વસ્તુઓનો ઉપયોગ આગામી સમેલન સુધી ન કરવાનો આદેશ આપવામા આવ્યો અને ખૂબ જ પ્રેમપૂર્વક સમેલનની સમાપ્તિ થઇ

૨૧—આગામી સમેલન સમક્ષના પ્રશ્નો

હવે પછી આ વર્ષે ભીનાસર (બિકાનેર) ખાતે ચૈત્ર માસમા કોન્ફરન્સનુ અધિવેશન અને સાધુસમેલન મેળવવાનુ નક્કી થયુ છે આ સમેલન સમક્ષ ખાસ કરીને નીચેના મુદ્દાઓનો નિર્ણય કરવાનુ કપરુ કામ છે

૧ સચિત્તાચિત્તનો પ્રશ્ન, જેમા કેળા તેમજ બરફ વાપરવા અગેનો નિર્ણય

૨ ધ્વનિવર્ધક યત્રના ઉપયોગ સબધી નિર્ણય

૩. તિથિપત્રક સબધી નિર્ણય

૪ એક જ સવત્સરી કરવા સબધી નિર્ણય

આ પ્રશ્નો ઉપર બન્ને પ્રકારની વિચારધારાઓ પ્રવર્તે છે. એક પક્ષ બરફ અને કેળા વાપરવાની તરફેણમા છે તો બીજો તેની વિરુદ્ધમા છે.

ધ્વનિવર્ધક યત્રના ઉપયોગની તરફેણમા પજાબના

અને નવયુવાન સાધુઓ છે, જ્યારે મારવાડ, મેવાડના અને બીજા કેટલાક વૃદ્ધ સાધુઓ તેના ઉપયોગની વિરુદ્ધ છે

તિથિપત્રક સબધમા ઘટતી તિથિઓ અને શાસ્ત્રાધાર પરત્વે મતભેદ છે

આ બધા ઉપરાંત સ ૨૦૧૧ ના ચાતુર્માસ દરમ્યાન લૌકિક પચાગ મુજબ બે ભાદરવા આવતા સવત્સરીનો પ્રશ્ન ખૂબ જ ચર્ચાયો છે બૃહદ્ ગુજરાતના સાધુઓ અને મુબઇમા ઘાટકોપર સઘે પ્રથમ ભાદરવામા સવત્સરી કરી હતી, જ્યારે શ્રમણ સઘમા પ્રવેશેલા પ્રત્યેક સઘે શ્રમણ સઘના ઠરાવ પ્રમાણે બીજા ભાદરવામા સવત્સરી પર્વ મનાવ્યુ હતુ આ અગે સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમા ઘણી ચર્ચાઓ ચાલી વર્તમાનપત્રોમા પણ ઘણુ લખાઇ ગયુ કદાચ બૃહદ્ ગુજરાતના મુનિવરો શ્રમણ સઘમા જોડાવાનો નિર્ણય કરતા પહેલા આજ પ્રશ્ન આગળ ધરીને ખુલાસો માગશે

છતા, એમ ચોક્કસ માની શકાય છે કે દરેક જણ ધ્યેયની ઉચ્ચતાને સમજી, શાસ્ત્રને અનુસરી, સમાજ અને ધર્મના હિતને લક્ષ્યમા રાખી, દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવને અનુસરીને વર્તન કરશે એમ થશે તો એ દિવસ દૂર નથી કે જ્યારે સ્થાનકવાસી જૈન માત્ર એક જ શ્રમણ સઘ અને બૃહદ્ શ્રાવક સઘમા એકત્રિત થઇ, 'ભગવાન મહાવીરની જય' બોલતા હોય

પરિશિષ્ટ ૧

શ્રી લોંકાશાહથી પાંચ ધર્મ—સુધારકો સુધીની પરપરા

૧ શ્રી લોકાશાહ, ૨. ભાણજી, ૩ ભિદાજી, ૪. નુનાજી, ૫ ભીમાજી, ૬. જગમાલજી, ૭. સરવોજી, ૮ શ્રી રૂપચદજી, ૯ શ્રી. જીવાજી

શ્રી જીવાજી મહારાજના ત્રણ શિષ્યો હતા

૧ જગાજી મહારાજ, ૨ મોટાવરસિહજી, ૩. કુવરજી ઋષિ.

(૧) જગાજી મહારાજના શિષ્ય જીવરાજજી થયા તેમણે વિ. સ. ૧૬૦૮મા ક્રિયોદ્ધાર કર્યો.

(૨) મોટાવરસિંહજી પછી ૧ નાના વરસિહજી, ૨. યશવત ઋષિ, ૩ રૂપસિહજી, ૪ દામોદરજી, ૫ કર્મસિહજી, ૬ કેશવજી, ૭. તેજસિહજી થયા

અ કેશવજી પક્ષના યતિઓમાથી વજાગજીની પાટે શ્રી લવજીઋષિ વિ. સ. ૧૬૯૨–૧૭૦૪મા મહાવીરની ૭૭મી પાટે આવ્યા.

ब કેશવજીના શિષ્ય તેજસિહજીના સમયમા એકલપાત્રિયા શ્રાવક કલ્યાણજીના શિષ્ય ધર્મદાસજી થયા

क કેશવજી યતિની પરપરામા શ્રી હરજીઋષિ થયા. તેમણે સ. ૧૭૮૫મા ક્રિયોદ્ધાર કર્યો

(૩) કુવરજી ઋષિ પછી ૧ શ્રી મલ્લજી, ૨ શ્રી રત્નસિહજી, ૩ કેશવજી ૪. શિવજીઋષિ થયા

अ શિવજીઋષિના બે શિષ્યો થયા ૧. સઘરાજજી તેમની પાટે ૨. સુખમલજી, ૩ ભાગચદજી, ૪ ૫ માણેકચદજી, ૬. મૂલચદજી, ૭ વાલચદજી, જગતચદજી, ૮ રત્નચદજી, ૯. નૃપચદજી, (આ યતિપરપરા ચાલી તેમની ગાદી બાલાપુરમાં છે)

ब શિવજીઋષિના બીજા શિષ્ય ધર્મસિહજી મુનિ થયા તેમણે સ. ૧૬૮૫મા શુદ્ધ સાધુધર્મ અગીકાર કરી દરિયાપુરી સપ્રદાય ચલાવ્યો.

પરિશિષ્ટ ૨

શ્રી જીવરાજજી મહારાજની પરંપરા

શ્રી જીવરાજજી મહારાજના બે શિષ્યો ૧. ધનજી, ૨. લાલચદજી થયા.

૧ આચાર્ય ધનજી પછી વિષ્ણુજી, મનજી ઋષિ અને નાથુરામજી થયા. નાથુરામજી મહારાજના બે શિષ્યો (I) લક્ષ્મીચદજી, (II) રાયચદજી.

(I) લક્ષ્મીચદજીના શિષ્ય છત્રમલજીના બે શિષ્યો રાજારામાચાર્ય અને ઉત્તમચદાચાર્ય

રાજારામાચાર્યની પાટે રામલાલજી અને ફકીરચદજી મહારાજ થયા તેમના શિષ્ય ફૂલચદજી મહારાજ વિદ્યમાન છે. ઉત્તમચદાચાર્યની પછી રતનચદજી અને ભજ્જુલાલજી થયા. તેમના શિષ્ય મોતીલાલજી

(II) રાયચદજીના શિષ્ય રતિરામજીના શિષ્ય નદલાલજી મહારાજને ત્રણ શિષ્યો થયા.

જોકીરામજી, કીશનચદજી અને રૂપચદજી

જોકીરામજી પછી ચેનરામજી અને ઘાસીલાલજી થયા ઘાસીલાલજીના ત્રણ શિષ્યો ગોવિદરામજી, જીવણરામજી અને કુદનલાલજી. તે પૈકી ગોવિદરામજીના શિષ્ય છોટેલાલજી વિદ્યમાન છે

ટીકમચંદજી પછી અનુક્રમે બિહારીલાલજી, મહેશદાસજી, વૃષભાણજી અને ઋષિરામજી આવે છે

૨. પૂજ્યશ્રી લાલચંદજી મહારાજના ચાર શિષ્યો થયા (૧) અમરસિંહજી, (૨) શીતલદાસજી, (૩) ગંગારામજી, (૪) દીપચંદજી

(૧) અમરસિંહજી મહારાજનો પાટાનુક્રમ આ પ્રમાણે છે. ૨ તુલસીદાસજી, ૩. સુજાનમલજી, ૪ જિતમલજી, ૫ જ્ઞાનમલજી, ૬. પૂનમચંદજી, ૭. જ્યેષ્ઠમલજી, ૮. નેનમલજી, ૯ દયાલચંદજી, ૧૦ તારાચંદજી

(૨) શીતલદાસજી મહારાજનો પાટાનુક્રમ ૨ દેવીચંદજી, ૩ હીરાચંદજી, ૪. લક્ષ્મીચંદજી, ૫ ભેરુદાસજી, ૬ ઉદેચંદજી, ૭ પન્નાલાલજી, ૮ નેમચંદજી, ૯ વેણીચંદજી, ૧૦ પ્રતાપચંદજી, ૧૧ કનોડીમલજી.

(૩) ગંગારામજી મહારાજનો પાટાનુક્રમ ૨. જીવણરામજી, ૩. શ્રીચંદજી, ૪. જવાહરલાલજી, ૫. માનકચંદજી, ૬ પન્નાલાલજી, ૭. ચંદનમુનિ

(૪) દીપચંદજી મહારાજના બે શિષ્યો (I) સ્વામીદાસજી, (II) મલુકચંદજી.

(I) સ્વામીદાસજી મહારાજની પરંપરા આ પ્રમાણે. ૨ ઉગ્રસેનજી, ૩ ઘાસીરામજી, ૪ કનીરામજી, ૫ ઋષિરાજજી, ૬ રંગલાલજી, ૭ ફતેહચંદજી

(II) મલુકચંદજી મહારાજના શિષ્ય નાનકરામજી થયા તેમના બે શિષ્યો વીરભાણજી થયા

વીરભાણજી પછી અનુક્રમે લક્ષ્મણદાસજી, મગનમલજી, ગજમલજી, ધુલમલજી અને પન્નાલાલજી આવે છે

પછી શ્રી સુખલાલજી, હરખચંદજી, દયાળચંદજી, લક્ષ્મીચંદજી અને હગામીલાલજી અનુક્રમે થયા છે

પરિશિષ્ટ ૩

પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજી મુનિની પરંપરા

પૂજ્યશ્રી ધર્મસિંહજી મુનિની પાટે (૨) શ્રી સોમજી ઋષિ, (૩) મેઘજી ઋષિ, (૪) દ્વારકાદાસજી, (૫) મોરારજી, (૬) નાથાજી, (૭) જયચંદજી, (૮) મોરારજી, (૯) નાથાજી, (૧૦) જીવણજી, (૧૧) પ્રાગજી ઋષિ, (૧૨) શંકર ઋષિ, (૧૩) શ્રી ખુશાલજી (૧૪) શ્રી હર્ષસિંહજી, (૧૫) શ્રી મોરારજી, (૧૬) શ્રી ઝવેર ઋષિ, (૧૭) શ્રી પૂંજાજી, (૧૮) શ્રી નાના ભગવાનજી, (૧૯) શ્રી મલુકચંદજી, (૨૦) શ્રી હીરાચંદજી, (૨૧) શ્રી રઘુનાથજી, (૨૨) શ્રી હાથીજી, (૨૩) શ્રી ઉત્તમચંદજી, (૨૪) પૂજ્યશ્રી ઇશ્વરલાલજી મહારાજ વિદ્યમાન છે.

આ સંપ્રદાય દરિયાપુરી આઠ કોટિ સંપ્રદાયના નામે ઓળખાય છે તેમાં એક જ પાટાનુક્રમ ચાલ્યો આવે છે.

પરિશિષ્ટ ૪

પૂજ્યશ્રી લવજી ઋષિની પરંપરા

પૂજ્યશ્રી લવજી ઋષિ પછી તેમના શિષ્ય સોમજી ઋષિ પાટે આવ્યા તેમના બે શિષ્યો. (૧) કાનજી ઋષિ, (૨) હરદાસજી ઋષિ થયા

(૧) કાનજી ઋષિના શિષ્ય ત્રિલોક ઋષિના બે શિષ્યો થયા: ૧ તારા ઋષિ, ૨. મંગળા ઋષિ

૧. તારા ઋષિ દક્ષિણમાં વિચર્યા તેમનો સંપ્રદાય ઋષિ સંપ્રદાય કહેવાય છે તેમના પાટાનુક્રમમાં ૨. ખનુ ઋષિ, ૩ ધના ઋષિ, ૪ ખુબાજી ઋષિ, ૫. ચેના ઋષિ, ૬ અમોલખ ઋષિ, ૭ દેવજી ઋષિ, ૮. શ્રી આનંદ ઋષિજી, (તેઓ શ્રી વર્દ્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સંઘના પ્રધાનમંત્રી પદે બિરાજે છે)

૨ મંગળા ઋષિ ગુજરાતમાં ખંભાત તરફ વિચર્યા તેથી તેમનો સંપ્રદાય ખંભાત સંપ્રદાયના નામે પ્રસિદ્ધ છે. તેમનો પાટાનુક્રમ આ પ્રમાણે ચાલ્યો છે ૨ રણછોડજી, ૩ નાથાજી, ૪ બેચરદાસજી, ૫ મોટા માણેકચંદજી, ૬. હરખચંદજી, ૭ ભાણજી, ૮. ગિરધરલાલજી ૯ છગનલાલજી, ૧૦ ગુલાબચંદજી, (આ સંપ્રદાયમાં હાલ બે સાધુ અને માત્ર સાધ્વીઓ છે.)

(૨) સોમજી ઋષિના બીજા શિષ્ય હરદાસજી ઋષિની પાટે ૨ વૃન્દાવનજી, ૩ ભવાનીદાસજી, ૪ મલુકચંદજી, ૫. મહાસિંહજી, ૬. ખુશાલસિંહજી ૭ જસમલજી, ૮ રામલાલજી થયા રામલાલજીના શિષ્ય અમરસિંહજી મહારાજનો પંજાબ સંપ્રદાય બન્યો તેમાં અનુક્રમે મોતીરામજી, સોહનલાલજી, કાશીરામજી અને પૂજ્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજ (તેઓ આજે શ્રી વર્દ્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણસંઘના પ્રધાનાચાર્યપદે બિરાજે છે)

શ્રી ગમલાલજી મહારાજના બીજા શિષ્ય રામરતનજી મહારાજ માળવા પ્રાંતમાં વિચર્યા. તેમનો (માળવા સંપ્રદાય) રામરતનજી મહારાજનો સંપ્રદાય કહેવાય છે.

પરિશિષ્ટ ૫

પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મહારાજની પરંપરા

પૂજ્યશ્રી ધર્મદાસજી મહારાજના ૯૯ શિષ્યો હતા. તેમાંથી પહેલા શિષ્ય મૂળચંદજી મહારાજ કાઠિયાવાડમાં વિચર્યા. ૨. ધનાજી, ૩. નાના પૃથ્વીરાજજી, ૪ મનોહરદાસજી, ૫. રામચંદજી આ પાંચના સંપ્રદાયો નીચે મુજબ વિકાસ પામ્યા:

૧ મૂળચંદ મહારાજને સાત શિષ્યો થયા

૧ પચાણજી, ૨. ગુલાબચંદજી, ૩ વણારશીજી, ૪. ઇચ્છાજી, ૫. વિઠ્ઠલજી, ૬. વનાજી, ૭. ઇંદજી

૧. પચાણજી મહારાજના બે શિષ્યો (I) ઇચ્છાજી મ. અને (II) રતનશી સ્વામી થયા.

(I) ઇચ્છાજી સ્વામીની પાટે ૨ હીરાજી સ્વામી, ૩ નાના કાનજી, મ ૪. અજરામરજી સ્વામી, ૫ દેવરાજજી, ૬. ભાણજી, ૭ કરમશી, ૮. અવિચલજી સ્વામી થયા. આ સંપ્રદાય લીંબડી સંપ્રદાયના નામે પ્રખ્યાત છે

અવિચળજી સ્વામીના શિષ્ય હરચંદજી સ્વામીનો સંપ્રદાય લીંબડી મોટો સંપ્રદાય બન્યો. તેનો પાટાનુક્રમ. ૧ હરચંદજી, ૨. દેવજી, ૩. ગોવિંદજી, ૪. કાનજી, ૫. નથુજી, ૬ દીપચંદજી, ૭ લાધાજી, ૮ મેઘરાજજી, ૯ દેવચંદજી, ૧૦. લવજી, ૧૧. ગુલાબચંદજી, ૧૨ ધનજી સ્વામી, અવિચળજી સ્વામીના બીજા શિષ્ય હીમચંદજીથી લીંબડી નાનો સંપ્રદાય ચાલ્યો તેમા ૧. હીમચંદજી, ૨. ગોપાલજી, ૩ મોહનલાલજી, ૪ મણીલાલજી અને ૫. કેશવલાલજી અનુક્રમે પાટે આવ્યા.

(II) પચાણજી મહારાજના બીજા શિષ્ય રતનશી સ્વામીનો પાટાનુક્રમ આ પ્રમાણે છે ૧. રતનશી સ્વામી. (૨) ડુંગરશી સ્વામી. ૩. રવજી, ૪. મેઘરાજજી, ૫ ડાહ્યાજી, ૬. નેણશીજી, ૭. આબાજી, ૮. નાના નેણશીજી, ૯. દેવજી સ્વામી–દેવજી સ્વામીના શિષ્ય, જેચંદજી સ્વામીના શિષ્ય પ્રાણલાલજી મ.

(અ) દેવજી સ્વામીના શિષ્ય જાદવજી સ્વામીના શિષ્ય પુરુષોતમજી મ. (બ) બન્ને વિદ્યમાન છે. આ સંપ્રદાય ગોંડલ સંપ્રદાયના નામે પ્રસિદ્ધ છે

૨. ગુલાબચંદજી મહારાજની પરંપરા આ પ્રમાણે છે.

૧. ગુલાબચંદજી ૨ વાલજી ૩. નાગજી મ. મોટા ૪. મુલજી મ. ૫ દેવચંદજી મ ૬ મેઘરાજજી મ. ૭. પૂ સંઘજી મ. આ સંપ્રદાય સાયલા સંપ્રદાય કહેવાય છે

૩ વણારશીજી મના શિષ્ય જેસંગજી મ થયા. આ સંપ્રદાય ચુડા સંપ્રદાય કહેવાયો આજે તેમા કોઈ સાધુ નથી

૪. ઇચ્છાજી મહારાજના શિષ્ય રામજી મ થયા તેમનો સંપ્રદાય ઉદેપુર સંપ્રદાય કહેવાતો તેમા આજે કોઈ સાધુ નથી

૫. વિઠ્ઠલજી મહારાજથી ધ્રાંગધ્રા સંપ્રદાય ચાલ્યો. તેમા અનુક્રમે ૧ વિઠ્ઠલજી ૨. ભૂખણજી ૩. વશરામજી થયા

વશરામજીના શિષ્ય જસાજી મહારાજ બોટાદ તરફ આવ્યા અને તેમનો સંપ્રદાય, બોટાદ સંપ્રદાય કહેવાયો તેનો પાટાનુક્રમ આ પ્રમાણે છે જસાજી મ. અમરચંદજી મ માણેકચંદજી મ,

૬ વનાજી મહારાજનો સંપ્રદાય એ બરવાળા સંપ્રદાય. તેમા આ પ્રમાણે પાટોની પરંપરા ચાલી છે ૧ વનાજી ૨. પુરુષોત્તમજી ૩. વણારશીજી ૪. કાનજી મ ૫. રામરખજી ૬. ચુનીલાલજી ૭ ઉમેદચંદજી ૮ મોહનલાલજી

૭ ઇંદજી મહારાજ કચ્છમા વિચર્યા તેમની પરંપરા આ પ્રમાણે ચાલી ૧. ઇંદજી ૨. ભગવાનજી ૩ સોમચંદજી ૪ કરસનજી ૫. દેવકરણજી ૬. ડાહ્યાજી. ડાહ્યાજી મહારાજના બે શિષ્યો (I) દેવજી મ અને (II) જસરાજજી મ ના જુદા સંપ્રદાયો ચાલ્યા.

(I) દેવજી મ. ની પરંપરા કચ્છ આઠકોટિ મોટી પક્ષ છે તેમા અનુક્રમે ૧. દેવજી ૨ રંગજી ૩ કેશવજી ૪. કરમચંદજી ૫. દેવરાજજી ૬ મોણશીજી ૭ કરમશીજી ૮. વ્રીજપાલજી ૯ કાનજી ૧૦. નાગજી ૧૧. કૃષ્ણજી મ (આજે વિદ્યમાન છે.)

(ii) જસરાજજી મ. ની પરપરા કે જે આઠકોટિ નાની પક્ષને નામે ઓળખાય છે તેમા અનુક્રમે આ પ્રમાણે પાટો આવે છે. ૧. જસરાજજી, ૨. નથુજી, ૩. હસરાજજી, ૪. વ્રીજપાલજી, ૫ ડુગરશીજી, ૬. શામજી, ૭ લાલજીસ્વામી (આજે વિદ્યમાન છે)

(૨) પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજના બીજા શિષ્ય ધનાજી મહારાજના શિષ્ય ભુદરજી મહારાજને ત્રણ શિષ્યો હતા ૧. જયમલજી, ૨. રઘુનાથજી, ૩. કુશલાજી

૧. જયમલજી મહારાજની પાટ પરપરામા ૨ રામચદજી ૩ આસકરણજી ૪ સબળદાસજી અને ૫. હિરાચદજી આવે છે આ સપ્રદાય જયમલજી મહારાજના સપ્રદાયને નામે ઓળખાય છે

૨ રઘુનાથજી મહારાજના સમયમા તેમના એક શિષ્ય ભીખણજી થયા તેમણે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા કરવાથી પૂજ્ય રઘુનાથજી મહારાજે સ. ૧૮૧૫ ના ચૈત્ર વદ ૯ને શુક્રવારના રોજ સપ્રદાય બહાર મૂક્યા. આથી ભીખણજીએ સ ૧૮૧૭ ના અસાડ સુદ ૧૫ ના રોજ તેર સાધુઓ અને તેર શ્રાવકોનો સહકાર લઇ દયા–દાન વિરોધી તેરાપથની સ્થાપના કરી. એ સપ્રદાય હજુ પણ ચાલે છે

રઘુનાથજી મહારાજની પાટે ૨ ટોડરમલજી ૩ દીપચદજી અને ૪ ભેરૂદાસજી થયા ભેરૂદાસજીના બે શિષ્યો

(i) ખેતશીજી (ii) ચોથમલજી બન્નેના જુદા જુદા સપ્રદાયો ચાલ્યા,

(i) ખેતશીજીની પાટે અનુક્રમે ૨ ભીખણજી ૩ કોજમલજી અને ૪, સતોકચદજી આવ્યા.

(ii) ચોથમલજીની પાટે ૨ સતોકચદજી ૩. રામકીશનજી ૪. ઉદેચદજી ૫ શાર્દુલસિહજી આવ્યા

૩ કુશલાજી મહારાજના શિષ્ય (i) ગુમાનચદજી અને (ii) રામચદ્રજીના પણ જુદા જુદા સપ્રદાયો ચાલ્યા

(i) ગુમાનચદજીના પાટાનુક્રમમા ૨. દુર્ગાદાસજી ૩ રતનચદ્રજી ૪ કજોડીમલજી ૫ વિનયચદજી ૬. સોભાગચદજી ૭. હસ્તિમલજી આવ્યા.

(ii) શ્રી રામચદ્રજીની પાટે, અનુક્રમે ૨ ચીમનીરામજી ૩ નરોતમજી ૪ ગગારામજી ૫ જીવણજી ૬. જ્ઞાનચદજી ૭. સમર્થમલજી આ સપ્રદાય સમર્થમલજી મહારાજનો સપ્રદાય કહેવાય છે.

(૩) પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજના ત્રીજા શિષ્ય નાના પૃથ્વીરાજજીની પરપરા આ પ્રમાણે છે. ૨ દુર્ગાદાસજી ૩ હરિદાસજી ૪ ગગારામજી ૫ રામચદજી ૬ નારાયણદાસજી ૭. પુરામલજી ૮ રોડીદાસજી ૯ નરસીદાસજી ૧૦ એકલિગદાસજી ૧૧ મોતીલાલજી

(૪) પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજના ૪થા શિષ્ય મનોહરદાસજીની પાટો આપ્રમાણે ચાલી છે ૨ ભાગચદજી ૩ શીલારામજી ૪. રામદયાળજી ૫ નુનકરણજી ૬. રામસુખદાસજી ૭. ખ્યાલીરામજી ૮ મગળસેનજી ૯ મોતીરામજી ૧૦ પૃથ્વીચદજી

(૫) પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજના પાચમા શિષ્ય રામચદ્રજીના સપ્રદાયની પટ્ટાવલિ આ પ્રમાણે છે ૨ માનકચદજી ૩. જસરાજજી ૪. પૃથ્વીચદજી ૫. મોટા અમરચદજી ૬. નાના અમરચદજી ૭ કેશવજી ૮ મોકમસિહજી ૯. નદલાલજી ૧૦ ચપાલાલજી ૧૧ માધવમુનિ ૧૨. તારાચદજી

મહારાષ્ટ્ર મત્રી શ્રી કિશનલાલજી મહારાજ શ્રી નદલાલજી મહારાજના શિષ્ય છે અને પ. વક્તા શ્રી સૌભાગ્યમલજી મહારાજ શ્રી કિશનલાલજી મ ના શિષ્ય છે

પૂજ્ય ધર્મદાસજી મહારાજે પોતાના મોટા શિષ્ય સમુદાયને વ્યવસ્થિત રાખવા માટે બધા શિષ્યો અને પ્રશિષ્યોને બોલાવી સ ૧૭૭૨ ના ચૈત્ર સુદ ૧૩ ના દિવસે બાવીસ સપ્રદાયોમા વહેચી નાખ્યા તે બાવીસ સપ્રદાયના નામ નીચે મુજબ છે

૧	પૂજ્યશ્રી	ધર્મદાસજી	મહારાજનો	સપ્ર.
૨	,,	ધનાજી	,,	,,
૩	,,	લાલચદજી	,,	,,
૪	,,	મનાજી	,,	,,
૫	,,	મોટા પૃથ્વીરાજજી	,,	,,
૬	,,	નાના પૃથ્વીરાજજી	,,	,,
૭	,,	બાલચદજી	,,	,,
૮	,,	તારાચદજી	,,	,,
૯	,,	પ્રેમચદજી	,,	,,
૧૦	,,	ખેતશીજી	,,	,,
૧૧	,,	પદાર્થજી	,,	,,

૧૨	પૂજ્યશ્રી	લોકમલજી	મહારાજનો	સંપ્ર.
૧૩	,,	ભવાનીદાસજી	,,	,,
૧૪	,,	મલુકચંદજી	,,	,,
૧૫	,,	પુરુષોત્તમજી	,,	,,
૧૬	,,	મુકુટરાયજી	,,	,,
૧૭	,,	મનોહરદાસજી	,,	,,
૧૮	,,	રામચંદજી	,,	,,
૧૯	,,	ગુરુસહાયજી	,,	,,
૨૦	,,	વાલજી	,,	,,
૨૧	,,	રામરતનજી	,,	,,
૨૨	,,	મુળચંદજી	,,	,,

પરિશિષ્ટ ૬

પૂ. શ્રી. હરજી ઋષિની-પરંપરા

કેશવજી પક્ષના યતિઓની પરંપરામાંથી સં. ૧૭૮૫મા પાટમાં ધર્મસુધારક હરજી ઋષિ થયા. તેમની પાટે ૨. ગોદાજી ઋષિ અને ૩. ફરશુરામજી મહારાજ થયા.

ફરશુરામજી મહારાજના શિષ્યો (૧) લોકમલજી અને (૨) ખેતશીજીના જુદા જુદા સંપ્રદાયો ચાલ્યા.

૧. લોકમલજી મહારાજની પાટે ૨. મયારામજી અને ૩ દોલતરામજી થયા.

(૧) દોલતરામજીના શિષ્ય (I) ગોવિંદરામજી અને (II) લાલચંદજી

(I) ગોવિંદરામજીની પાટ પરંપરા આ પ્રમાણે છે ૨. ફતેહચંદજી ૩. જ્ઞાનચંદજી ૪ છગનલાલજી ૫ રોડમલજી ૬ પ્રેમરાજજી.

(II) લાલચંદજીની પાટે ૨. શીવલાલજી ૩ ઉદેસાગરજી ૪. ચોથમલજી મહારાજ થયા

શ્રી ચોથમલજી મહારાજ પછી આ સંપ્રદાયના બે ભાગ પડયા

પહેલામાં પૂ શ્રી લાલજી ૨. જવાહરલાલજી અને ૩. પૂ શ્રી ગણેશીલાલજી (જે આજે શ્રી વર્દ્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સંઘના ઉપાચાર્ય છે.)

બીજામાં પૂ શ્રી મનાલાલજી, નંદલાલજી, ખૂમચંદજી અને સહસ્રમલજી મહારાજ અનુક્રમે પાટે આવ્યા શ્રમણ સંઘની એકતા માટે સર્વ પ્રથમ પૂજ્ય પદ્વિનો ત્યાગ કરનાર પ શ્રી સહસ્રમલજી મહારાજ છે.

(૨) ખેતશીજીનો પાટાનુક્રમ આ પ્રમાણે છે ૨ ખેમશીજી, ૩. ફતેહચંદજી, ૪ અનોપચંદજી, ૫ દેવજી મ. ૬ ચંપાલાલજી ૭. ચુનીલાલજી, ૮. કીશનલાલજી, ૯. બળદેવજી, ૧૦. હરખચંદજી, ૧૧ માંગીલાલજી.

પટ્ટાવલિ સમુચ્ચય

સ્થાનકવાસી ધર્મના સ્થંભ સમા પાંચ, ધર્મક્રાંતિના પ્રણેતાઓનો લોંકાશાહ સુધીનો સંબંધ અને એ પાંચેના શિષ્ય સમુદાયથી વિસ્તરેલા સંપ્રદાયોની હકીકત આપણે આગળ જોઈ ગયા.

હવે ભગવાન મહાવીરથી લોંકાશાહ સુધીની પરંપરા જાણવી જરૂરી છે

ભગવાન મહાવીરની પાટે (૧) સુધર્મા સ્વામી વીર સં. ૧ (૨) જંબુસ્વામી વીર સં ૧૨ (૩) પ્રભવ સ્વામી (૪) શય્યંભવ સ્વામી વી. સં ૭૧ (૫) યશોભદ્રસ્વામી વી. સં. ૨૦ (૬) સંભૂતિ વિજય વી સં. ૧૪૮ (૭) ભદ્રબાહુ સ્વામી વી સં ૧૫૬ (૮) સ્થુલિભદ્ર વી સં ૧૭૦ (૯) આર્ય મહાગીરી વી. સં. ૨૧૫ (૧૦) આર્ય સુહસ્તિ અથવા બાહુલ સ્વામી વી. સં ૨૪૫ (૧૧) સાઇણ સ્વામી અથવા સુવન સ્વામી અથવા સુપ્રતિબદ્ધ સ્વામી વી સં. ૨૯૧ (૧૨) ઇંદ્રદિન અથવા વીર સ્વામી વી. સં ૩૩૯ (૧૩) સ્કંદિલાચાર્ય અથવા આર્યદિન સ્વામી વી સં ૪૨૧ (૧૪) વૈરસ્વામી અથવા જીતધર સ્વામી અથવા આર્ય સમુદ્ર સ્વામી વી. સં. ૪૭૬મા (૧૫) વજ્રસેન અથવા આર્ય મંગુ સ્વામી વી. સં. ૫૮૪મા (૧૬) ભદ્રગુપ્ત અથવા આર્યરોહ અથવા નંદલા સ્વામી વી. સં ૬૯૯ મ. (૧૭) વયર સ્વામી અથવા ફાલ્ગુણી મિત્ર અથવા નાગહસ્ત સ્વામી (૧૮) આર્યરક્ષિત અથવા ધરણીધર અથવા રેવત સ્વામી (૧૯) નંદિલ સ્વામી અથવા શિવભૂતિ અથવા સિંહગણ સ્વામી (૨૦) આર્ય નાગહસ્તી અથવા આર્યભદ્ર અથવા થંડલાચાર્ય (૨૧) શ્રી રેવતી આચાર્ય અથવા હેમવંત સ્વામી અથવા આર્ય નક્ષત્ર સ્વામી (૨૨) શ્રી નાગાર્જુન સ્વામી અથવા સિંહાચાર્ય વી. સં ૮૨૦ (૨૩) શ્રી ગોવિંદસ્વામી અથવા સ્કંદિલાચાર્ય અથવા નાગાચાર્ય (૨૪) શ્રી નાગ જીતાચાર્ય અથવા ભૂતદિન સ્વામી (૨૫) શ્રી ગોવિંદાચાર્ય અથવા શ્રી લોહગણ સ્વામી (૨૬) શ્રી ભૂતદિનાચાર્ય અથવા દુષગણી (૨૭) શ્રી દેવર્દ્ધિ ગણી ક્ષમાશ્રમણ.

આ સત્તાવીસ પાટોના નામોમાં જુદી જુદી પટ્ટાવ

લિઓમા લગભગ એકસરખા નામ આવે છે માત્ર ક્રમ આઘોપાછો હોય છે તે સિવાય સત્તાવીસમી પાટે શ્રી દેવર્દ્ધિ ગણી ક્ષમા શ્રમણનુ નામ બધામા મળે છે

અઠાવીસમી પાટથી પજાબની પટ્ટાવલિ મુજબ નીચે મુજબ પાટો ચાલી છે:

(૨૮) શ્રી વીરભદ્ર સ્વામી (૨૯) શ્રી શકરભદ્ર સ્વામી (૩૦) શ્રી જસભદ્ર સ્વામી (૩૧) શ્રી વીરસેન સ્વામી (૩૨) શ્રી વીરગ્રામસેન સ્વામી (૩૩) શ્રી જિનસેન સ્વામી (૩૪) હરીસેન સ્વામી (૩૫) શ્રી જયસેન સ્વામી (૩૬) શ્રી જગમાલ સ્વામી (૩૭) શ્રી દેવર્ષિજી (૩૮) શ્રી ભીમ ઋષિજી (૩૯) શ્રી કર્મજી (૪૦) શ્રી ગજર્ષિજી (૪૧) દેવસેનજી (૪૨) શ્રી શત્રુસેનજી (૪૩) શ્રી લક્ષ્મીલભજી (૪૪) શ્રી રામર્ષિજી (૪૫) શ્રી પદ્મસૂરિજી (૪૬) શ્રી હરિસેનજી (૪૭) શ્રી કુશળદત્તજી (૪૮) શ્રી જીવનઋષિજી (૪૯) શ્રી શ્રી જયસેનજી (૫૦) શ્રી વિજયઋષિજી (૫૧) શ્રી દેવર્ષિજી (૫૨) શ્રી સુરસેનજી (૫૩) શ્રી મહાસુરસેનજી (૫૪) શ્રી મહાસેનજી (૫૫) શ્રી જયરાજજી (૫૬) શ્રી ગજસેનજી (૫૭) શ્રી મિશ્રસેનજી (૫૮) શ્રી વિજયસિંહજી (૫૯) શ્રી શીવરાજઋષિ (૬૦) શ્રી લાલજીમલ (૬૧) શ્રી જ્ઞાનઋષિજી, જ્ઞાનઋષિજી પાસે લોકાશાહના ઉપદેશથી (૬૨) શ્રી ભાનુલુનાજી, ભીમજી, જગમાલજી તથા હરસેનજીએ દીક્ષા લીધી (૬૩) શ્રી રૂપજી મહારાજ (૬૪) શ્રી જીવરાજજી

દરીયાપુરી સપ્રદાયની પટ્ટાવલિ અનુસાર નીચે પ્રમાણે પાટ પરપરા ચાલી છે

(૨૮) શ્રી આર્યઋષિજી (૨૯) ધર્માચાર્ય સ્વામી (૩૦) શિવભૂતિ આચાર્ય (૩૧) સોમાચાર્ય (૩૨) આર્યભદ્ર સ્વામી (૩૩) વિષ્ણુચદ્ર સ્વામી (૩૪) ધર્મવર્ધનાચાર્ય (૩૫) ભુરાચાર્ય (૩૬) સુદત્તાચાર્ય (૩૭) સુહસ્તિ આચાર્ય (૩૮) વરદત્તાચાર્ય (૩૯) સુબુદ્ધિઆચાર્ય (૪૦) શિવદત્તાચાર્ય (૪૧) વીરદત્તાચાર્ય (૪૨) જયદત્તાચાર્ય (૪૩) જયદેવાચાર્ય (૪૪) જયઘોષાચાર્ય (૪૫) વીરચક્રધરાચાર્ય (૪૬) સ્વાતિસેનાચાર્ય (૪૭) શ્રી વસતાચાર્ય (૪૮) શ્રી સુમતિ આચાર્ય (૪૯) શ્રી લોકાશાહ જેમણે પોતાના ઉપદેશથી ૪૫ જણને દીક્ષા અપાવી અને પોતે સુમતિવિજય પાસે ૧૫૦૯ મા પાટણમા દીક્ષા લીધી અને દીક્ષા પર્યાયમા તેમનુ લક્ષ્મી વિજય મુનિ એવુ નામ હતુ

આમ કોઇ પટ્ટાવલિ બીજી પટ્ટાવલિ સાથે મળતી નથી જો પ્રયત્ન ફરી સશોધન કરવામા આવે તો ચોક્કસ પરપરા અને ક્રમ મળી શકે તેમ છે. વિદ્વાન મુનિરાજો આ સબધમા કાર્ય કરી શકે તેમ છે પરતુ ખેદની સાથે કહેવુ પડે છે કે જૈન પ્રકાશમા પોતાની પાસેની હકીકતો મોકલવા વિનતી કરી ત્યારે માત્ર કચ્છની મોટી અને નાની સપ્રદાય તથા દરિયાપુરી સપ્રદાય સિવાય કોઇએ એ તરફ ધ્યાન જ આપ્યુ નથી અમારી પાસે જે કાઇ હકીકતો આવી અને અમોએ જે કાઇ પ્રયત્ન કરીને મેળવ્યુ તેના આધારે આ ઇતિહાસ લખ્યો છે બનવાજોગ છે કે તેમા કેટલીક ઉપયોગી હકીકતો રહી પણ જવા પામી હોય, કોઇ પણ સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક કે શ્રાવિકા ભલે તે ગમે તે સપ્રદાયના હોય, જો કાઇ નક્કર હકીકતો કે માહિતી મોકલી આપશે તો વિસ્તૃત ઇતિહાસ તૈયાર કરવામા તે અતી ઉપયોગી થઇ પડશે

અગત્યની તવારિખ

વીર સ ૨ મા જબૂસ્વામી મોક્ષે ગયા ત્યારે દસ બોલ વિચ્છેદ ગયા

,, ,, ૧૬૪મા ચદ્રગુપ્ત રાજા થયો

,, ,, ૧૭૦ની આસપાસ આર્ય સુહસ્તિના બાર શિષ્યોના ૩૩ ગચ્છ થયા

,, ,, ૪૭૦મા વિક્રમ સવત શરૂ થયો.

,, ,, ૬૦૫મા શાલિવાહનનો શક શરૂ થયો

,, ,, ૬૦૯મા દિગબર અને શ્વેતાબર એમ જૈન ધર્મીઓના બે ભાગ પડયા

,, ,, ૬૨૦મા ચદ્રગચ્છની ચાર શાખાઓ થઇ

,, ,, ૬૭૦મા સાચોરમા વીરસ્વામીની પ્રતિમા સ્થપાઇ.

,, ,, ૮૮૨મા ચૈત્યવાસ શરૂ થયો.

,, ,, ૯૮૦મા શ્રી દેવર્દ્ધિગણી ક્ષમાશ્રમણે સૂત્રોને વલ્લભીપુરમા લિપિબદ્ધ કર્યા

વીર સં. ૧૦૦૦માં કાલિકાચાર્યે પાંચમને બદલે ચોથની સવત્સરી પ્રતિક્રમી

વીર સ. ૯૯૩ માં સર્વ પૂર્વો વિચ્છેદ ગયા

વિક્રમ સ. ૯૯૪ મા વડગચ્છ સ્થપાયો

,, ,, ૧૦૨૬ મા તક્ષશિલાકા ગચ્છ સ્થપાયો

,, ,, ૧૧૫૯ મા નવાગી ટિકાકાર અભયદેવ સૂરિ થયા

„ „ ૧૧૮૪ મા અચળ ગચ્છ સ્થપાયો.

„ „ ૧૨૨૯ મા હેમચંદ્રાચાર્ય થયા.

„ „ ૧૨૦૪ મા મૂર્તિપૂજક ખડતલ ગચ્છ સ્થપાયો

„ „ ૧૨૧૩ મા જગતચંદ્રે મૂર્તિપૂજક તપ ગચ્છ સ્થાપ્યો.

„ „ ૧૨૩૬ મા પુનમીયા મતની ઉત્પત્તિ થઇ.

„ „ ૧૨૫૦ મા આગમીયા મત સ્થપાયો.

„ „ ૧૫૩૧ મા ભસ્મગ્રહ ઉતર્યો ત્યારે શ્રી લોકા શાહે શાસ્ત્રાનુસાર શુદ્ધ ધર્મનો પુનરૂદ્ધાર કર્યો અને સાધુઓમા જે શિથિલતા આવી ગઇ હતી તે દૂર કરી

„ „ ૧૮૧૭ ના અસાડ શુદ ૧૫મે દયા–દાન વિરોધી તેરાપંથ શરૂ થયો.

„ „ ૧૯૬૧ મા મોરબી (સૌરાષ્ટ્ર)મા શ્રી અખિલ ભારત વર્ષીય શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સની સ્થાપના થઇ. (ઇ. સ. ૧૯૦૬).

„ „ ૧૯૮૯ મા શ્રી. સ્થાનકવાસી સાધુ સમાજનુ પ્રથમ સાધુ સમેલન અજમેરમા મળ્યુ તેની પ્રથમ બેઠક ચૈત્ર સુદ ૧૦ ને બુધવારે મળી.

„ „ ૨૦૦૮ મા સ્થાનકવાસી સમાજના બાવીસ સંપ્રદાયના મુનિવરોનુ સમેલન વૈશાખ સુદી ૩ ના દિવસે સાદડી મુકામે શરૂ થયુ. અને વૈશાખ સુદી ૯ને દિવસે શ્રી. વર્ધમાન સ્થાનકવાસી જૈન શ્રમણ સંઘના નામ નીચે બાવીસ સંપ્રદાયો એકત્રિત થયા અને જૈન ધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી. આત્મારામજી મહારાજશ્રીને આચાર્ય તરીકે સ્વીકાર્યા.

વિજ્ઞપ્તિ

જૈન ધર્મ પ્રત્યે સ્નેહ અને સદ્ભાવના ધરાવનાર પ્રત્યેક વાંચકોને વિજ્ઞપ્તિ છે કે આપની પાસે જૈન ધર્મના ઇતિહાસના આલેખનમાં મદદ રૂપ થાય તેવી જે કાંઇ સામગ્રી ઉપલબ્ધ હોય તે નીચેના સરનામે મોકલી આપવા કૃપા કરશોજી. જૈન ધર્મનો વિસ્તૃત ઇતિહાસ લખવાનુ કાર્ય ચાલુ છે

અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સ,
૧૨૯૦, ચાંદની ચોક,
દિલ્હી-૬.

શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સનો પચાસ વર્ષનો સંક્ષિપ્ત ઈતિહાસ

હિંદુસ્તાનમા જ્યારે રાજકીય અને સામાજિક સસ્થાઓની સ્થાપના કરીને વિવિધ સગઠ્નો સ્થાપિત કરવામા આવતા હતા, ત્યારે જૈન સમાજના મુખ્ય સપ્રદાયોએ પણ પોતપોતાનુ સગઠન સ્થાપિત કર્યું શ્વેતાબર જૈનોએ મળી શ્વેતાબર જૈન કોન્ફરન્સની સ્થાપના કરી અને દિગબરોએ પોતાની દિગબર જૈન મહાસભાની સ્થાપના કરી ઈ સ ૧૯૦૦ની આસપાસ આ સગઠ્નોની શરૂઆત થઇ

સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના અગ્રગણ્ય સજ્જનોએ પણ પોતાનું સગઠન કરવાનો નિર્ણય કર્યો અને સને ૧૯૦૬મા મોરબી (કાઠિયાવાડ) મા થોડા ભાઇઓએ મળીને અખિલ ભારતીય શ્વેતાબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સની સ્થાપના કરી કોન્ફરન્સની સ્થાપનામા મોરબીના પ્રતિષ્ઠિત શેઠ શ્રી અંબાવીદાસભાઇ ડોસાણીનો ખર્ચામા અને ધર્મવીર શ્રી દુર્લભજી ઝવેરી તથા શ્રી મગનલાલ દફતરીનો કાર્યમા મુખ્ય ભાગ રહ્યો હતો

પ્રથમ અધિવેશન

સ્થળ: (મોરબી)

તા ૨૭–૨૮–૨૯ ફેબ્રુઆરી (૧૯૦૬)

શ્રી અબાવીદાસભાઇ વગેરેની પ્રેરણાથી જ કોન્ફરન્સનુ પ્રથમ અધિવેશન સન ૧૯૦૬મા મોરબીમા ભરવામા આવ્યુ અધિવેશનનુ અધ્યક્ષપદ રાયશેઠ ચાંદમલજી અજમેરવાળાએ શોભાવ્યુ હતુ સ્વાગતાધ્યક્ષ શ્રી અમૃતલાલ વર્ધમાન શેઠ હતા

મોરબીમા કોન્ફરન્સનુ આ સર્વ પ્રથમ અધિવેશન હોવા છતા પણ સમાજમા ઉત્સાહનુ પૂર આવ્યુ અને જગ્યાએ જગ્યાએથી સમાજપ્રિય સજ્જનો લગભગ ૨૦૦૦ પ્રતિનિધિઓ અને ૩૫૦૦ પ્રેક્ષકો આવ્યા અને સક્રિય ભાગ લીધો આ અધિવેશનના કુલ ચૌદ ઠરાવો પસાર કરવામા આવ્યા હતા, જેમાથી ખાસ ઉલ્લેખનીય ઠરાવો નીચે પ્રમાણે છે

ઠરાવ ન. ૧: મોરબીના મહારાજા સાહેબ સર વાઘજી બહાદુર જી સી. આઇ ઇ એ કોન્ફરન્સનુ પેટ્રનપદ સ્વીકાર્યું, તે માટે તેઓશ્રીનો આભાર માનવામા આવ્યો

આથી સ્પષ્ટ છે કે કોન્ફરન્સ પ્રત્યે મોરબી નરેશની પૂર્ણ સહાનુભૂતિ હતી અને મોરબી રાજ્યમા સ્થાનકવાસી જૈનોનુ કેવુ પ્રભુત્વ હતુ

આ અધિવેશનની બીજી વિશેષતા એ હતી કે આ અધિવેશનનુ સમસ્ત ખર્ચ મોરબી નિવાસી ધર્માનુરાગી શેઠ શ્રી અબાવીદાસભાઇ ડોસાણીએ આપ્યુ હતુ, તેથી આ ઠરાવમા તેઓશ્રીનો પણ હાર્દિક આભાર માનવામા આવ્યો હતો

ઠરાવ ન. ૩ જે જે સ્થળોમા જૈન શાળાઓ હોય તેને સુચારૂ રીતિથી ચલાવવાની, જ્યા ન હોય ત્યા સ્થાપિત કરવાની અને તે જૈન શાળાઓ માટે એક વ્યવસ્થિત પાઠ્યક્રમ (જૈન–પાઠાવલી) તૈયાર કરવાની તથા સાધુ–સાધ્વીઓ માટે સિધ્ધાતશાળાની સુવિધા કરી આપવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકાર કરે છે

ઠરાવ ન. ૪ આ ઠરાવથી હુન્નર ઉદ્યોગ તથા શિક્ષા ઉપર ભાર મૂકવામા આવ્યો હતો

ઠરાવ ન. ૫: આ મહત્વપૂર્ણ ઠરાવ એ હતો કે કોન્ફરન્સ વિવિધ સપ્રદાયોના બધુઓ સાથે પ્રેમપૂર્વક વ્યવહાર કરવાની ભારપૂર્વક વિનતિ કરે છે

ઠરાવ ન. ૯: સ્થાનકવાસી જૈન સમાજની ડિરેક્ટરી તૈયાર કરવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકાર કરે છે.

ઠરાવ ન. ૧૦: આ ઠરાવથી બાળલગ્ન, વૃદ્ધલગ્ન તથા કન્યા–વિક્રયનો નિષેધ કરવામા આવ્યો હતો મૃત્યુ–ભોજનમા રૂપિયા ખર્ચ ન કરતા, તે રૂપિયા 'શિક્ષા–પ્રચારમા ખર્ચ કરવાની ભલામણ કરવામા આવી હતી

ઠરાવ ન. ૧૨: આ ઠરાવ મુનિરાજો સબધમા હતો તેમા સરકારને પ્રાર્થના કરવામા આવી હતી કે જૈન મુનિરાજોને ટેકસ લીધા વિના પુલ ઉપરથી જવા દેવામા આવે

મોરબી અધિવેશન પછી કોન્ફરન્સ ઓફીસના સંચાલન માટે સૌથી પ્રથમ બનેલી

મેનેજીંગ કમિટી

પ્રમુખ—રાયશેઠ ચાંદમલજી રિયાવાલા, અજમેર

૧. નગરશેઠ અમૃતલાલ વર્ધમાન, મોરબી સભ્ય
૨. દેશાઇ વનેચંદભાઇ રાજપાલ ,,
૩. શેઠ અંબાવીદાસભાઇ ડોસાણી ,,
૪ પારેખ વનેચંદભાઇ પોપટભાઇ ,,
૫. દફતરી ગોકળદાસભાઇ રાજપાલ ઓન મેનેજર
૬. ,, વનેચંદભાઇ પોપટભાઇ એકાઉન્ટન્ટ
૭ મેતા સુખલાલભાઇ મોનજી ટ્રેઝરર
૮. લખમીચંદભાઇ માણેકચંદ મોખાણી ઓન. સેક્રેટરી
૯ શેઠ ગીરધરલાલભાઇ સૌભાગ્યચંદ ઓ. જો ,,
૧૦. મહેતા મનસુખલાલભાઇ જીવરાજ ,, ,,
૧૧. ઝવેરી દુર્લભજીભાઇ ત્રિભુવનદાસ , ,,

દ્વિતીય અધિવેશન

સ્થળ: (રતલામ)

મોરબી અધિવેશન પછી બે વર્ષે સને ૧૯૦૮ મા ૨૭, ૨૮, ૨૯ માર્ચના દિવસોમા રતલામમા કોન્ફરન્સનુ બીજુ અધિવેશન ભરાયુ આ અધિવેશનના અધ્યક્ષ અમદાવાદ નિવાસી શેઠ કેવળદાસ ત્રિભુવનદાસ હતા

આ અધિવેશનમાં રતલામ અને મોરબીના મહારાજા સાહેબ તથા શિવગઢના ઠાકોરસાહેબ પણ પધાર્યા હતા પ્રારંભમા કોન્ફરન્સ પ્રત્યે રાજા-મહારાજાઓની પણ પૂર્ણ સહાનુભૂતિ હતી અને સ્થાનકવાસી જૈન સંઘોની પણ રાજ્યોમા ખૂબ પ્રતિષ્ઠા હતી, તેથી રાજા મહારાજાઓ વખતોવખત ઉપસ્થિત થઇ કાર્યવાહીમા સક્રિય ભાગ લેતા હતા, તે ઉપરોક્ત બને અધિવેશનોની કાર્યવાહીથી સ્પષ્ટ છે આ અધિવેશનમા રતલામના મહારાજાધિરાજ સજ્જનસિંહજી બહાદુરે કોન્ફરન્સના પેટ્રન પદનો સ્વીકાર કર્યો, તેથી તેમનો આભાર માનવામાં આવ્યો હતો

ઠરાવ ન ૩ તથા ૪મા મોરબીનરેશ તથા શિવગઢના ઠાકોરસાહેબનો આભાર માનવામા આવ્યો હતો કે જેઓ આ અધિવેશનમા પધાર્યા હતા બાકીના પ્રસ્તાવોમા મુખ્ય મુખ્ય પ્રસ્તાવો આ પ્રમાણે હતા

ગત અધિવેશનની પેઠે જૈનોના બધા ફિરકાઓમા સુલેહ સંપ વધારવો, પરસ્પર નિંદાત્મક લેખ લખવા નહિ. પ્રચારમા સહયોગ દેવો, ધાર્મિક શિક્ષણ, ધાર્મિક પાઠ્યક્રમ વગેરે માટે ઠરાવો પસાર કરવામાં આવ્યા

ઠરાવ ન. ૯: એમ ઠરાવવામા આવ્યુ કે ગત વર્ષે કોન્ફરન્સમા જે ફંડ થયુ હતુ અને દાતાઓએ પોતાની ઇચ્છાનુસાર જે જે ખાતાઓમા રકમો પ્રદાન કરી હતી તે ખાતાઓમાં જ તે પૈસાનો વ્યય કરવો.

ઠરાવ નં. ૧૨: દરેક પ્રાંતના સ્થા જૈન ભાઇઓ પોતપોતાની આવશ્યકતાઓની પૂર્તિ માટે તથા કોન્ફરન્સના ધ્યેયોનો પ્રચાર કરવા માટે પોતપોતાના પ્રાંતોમા પ્રાંતીય કોન્ફરન્સ ભરવાનો પ્રયત્ન કરે.

ઠરાવ ન. ૧૩: આગામી એક વર્ષ માટે કોન્ફરન્સનુ કેન્દ્રીય કાર્યાલય અજમેરમા રાખવાનો નિર્ણય કરવામા આવ્યો

ઠરાવ ન. ૧૪: કોન્ફરન્સના જનરલ સેક્રેટરીના સ્થાને નિમ્નોક્ત સજ્જનોની નિયુક્તિ કરવામા આવી

૧ રાયશેઠ ચાંદમલજી, અજમેર
૨. શેઠ કેવળદાસ ત્રિભુવનદાસ, અમદાવાદ
૩ શેઠ અમરચંદજી પિત્તલિયા, રતલામ
૪ શ્રી ગોકળદાસભાઇ રાજપાળ દફતરી, મોરબી
૫ લાલા ગોકળચંદજી જોહરી, દિલ્હી

ઠરાવ ન. ૧૫: દરેક ગામના સંઘો પોતાને ત્યા દરેક ઘેરથી વાર્ષિક લવાજમ ચાર આના વસૂલ કરે અને તે રકમની વ્યવસ્થા કોન્ફરન્સ આ પ્રમાણે કરે

$\frac{3}{4}$ આના, ભાગ, ધાર્મિક જ્ઞાન
૧ , , સાધર્મી સહાય
$\frac{3}{4}$,, ,, વ્યવહારિક જ્ઞાન
$\frac{3}{4}$,, ,, જીવદયા
$\frac{3}{4}$,, ,, કોન્ફરન્સ નિભાવ

આ ઠરાવનો અમલ દરેક પ્રતિનિધિ તથા વીઝીટર પોતપોતાના સંઘમા કરાવશે એવી કોન્ફરન્સ પૂર્ણ આશા રાખે છે

અન્ય ઠરાવો આભાર પ્રદર્શિત કરવાના હતા, જેમા શ્રી. દુર્લભજી ત્રિભોવન ઝવેરીનો તેમણે કરેલી કોન્ફરન્સની બે વર્ષ સુધી નિસ્વાર્થ સેવા માટે, શ્રી વાડીલાલ મોતીલાલ શાહનો, સામયિક પત્ર દ્વારા પ્રચાર કરવા માટે અને સ્વયંસેવકોની સેવા માટે આભાર માનવામા આવ્યો હતો.

આ અધિવેશનમા કુલ ૨૦ ઠરાવ પાસ થયા હતા

કોન્ફરંસ શરૂ થયા પછી પ્રારંભ થયેલી શુભ પ્રવૃત્તિઓ

૧ એક સંવત્સરી જૈનોમાં કરાવવા માટે પ્રયત્ન

૨. ઉપદેશકો મોકલી ધર્મપ્રચાર, કુરૂઢીઓ અને ફજુલ ખર્ચી છોડાવવા તથા કોન્ફરંસના વિવિધ ખાતાઓ માટે ફંડ કર્યાં.

૪. ડીરેકટરી જન–ગણના માટે પ્રયત્ન.

૫ મુંબઇ અમદાવાદ પરીક્ષા આપવા જનાર વિદ્યાર્થીઓ માટે ઉતારા તથા ભોજનની સગવડો કરાવી.

૬. ૧૦૦ જેટલા દેશી રાજ્યોને જીવદયા–પ્રાણીવધ બંધી માટે અપીલો મોકલીને ઠેકઠેકાણે હિંસા બંધ કરાવી.

૭. પૂલો ઓળંગતા લેવાતા ટોલટેક્ષથી જૈન મુનિઓને બાતલ કરાવ્યા

૮ જૈન મુનિઓની પણ જડતી લઇને કપડા પર જકાત લેવાની ચાલતી હાડમારીથી બાકાત રખાવ્યા.

૯ કચ્છ–માંડવી ખાતે શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ પાસેથી ૨૫ હજાર કોરી અપાવી 'સંસ્કૃત પાઠશાળા' ખોલાવી

૧૦. લીંબડી સંપ્રદાયએ લીંબડીમાં, દરિયાપુરીએ કલોલમાં અને ખંભાતના સાધુઓએ ખંભાતમાં સંમેલન કર્યાં સુધારા કરાવ્યા, એ વખતે લીંબડી સંપ્રદાયે શિથિલાચારીઓને સંઘાડાથી દૂર કર્યાં અને કેટલાકને તદ્દન મુકત કર્યાં

૧૧ દરેક જૈન ફિરકાને વ્યવહારિક કેળવણી માટે મુંબઇમાં બોર્ડિંગ (૧–૬–૦૯) અને ધાર્મિક કેળવણી માટે રતલામમાં જૈન ટ્રેનિંગ કોલેજ (૨૯–૮–૦૯) સ્થાપી.

૧૨. 'માગધી ભાષાની શિક્ષણમાળા' રચાવવા પ્રયત્નો કર્યાં

૧૩ સંઘાડા વાર સાધુ સાધ્વીઓની ગણના કરી.

૧૪ જૈન સાધુ–સાધ્વીઓને જાહેર વ્યાખ્યાનો કરતા બનાવ્યા.

૧૫ અમદાવાદમાં શા. નાથાલાલ મોતીલાલની સખાવતથી દશા શ્રીમાળી શ્રાવિકાશાળા તથા જામનગરમાં વીસા શ્રીમાળી શ્રાવિકાશાળા ખોલાવી

૧૬ પાલણપુર પીતાંબર હાથીભાઇ પાસેથી રૂા ૧૮ હજારની સખાવત, સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થીઓને સ્કોલરશીપ આપવાની વ્યવસ્થા કરી

૧૭. ધાર્મિક જ્ઞાનના પ્રચારાર્થે ઠેકઠેકાણે જૈન પાઠશાળાઓ, કન્યાશાળાઓ, શ્રાવિકાશાળાઓ, પુસ્તકાલયો, મંડળો, સભાઓ, પુસ્તકાલયો, વાચનાલયો ખોલાવ્યા વ્યવહારિક શિક્ષાપ્રચાર, બોર્ડિંગો, ઉદ્યોગશાળા શરૂ કરાવી

૧૮. જૈનોમાં ઐક્ય વૃદ્ધિ માટે પ્રયત્નો કર્યાં.

૧૯ સંપ્રદાયોને પોતાની મર્યાદાઓ બાંધવા અને એકલવિહાર અને આજ્ઞા બહાર રહેવાનો નિષેધ કર્યો તથા આચાર્ય નીમવા પ્રેરણા કરીને વ્યવસ્થિત કરવા પ્રયત્નો કર્યો.

૨૦. નિરાશ્રિત બહેનો, ભાઇઓ અને બાળકોને આશ્રય આપવાના પ્રયત્નો કર્યાં.

૨૧ ભીલોને માંસાહાર છોડાવ્યો. દશેરા અને નવરાત્રિમાં રાજામહારાજાઓ દ્વારા થતી હિંસા ઓછી કરાવી તથા દેવસ્થાનોમાં થતી પશુ–પક્ષી હિંસા રોકવા પ્રયત્નો કર્યો.

૨૨. મુનિરાજોને અન્યાન્ય પ્રાન્તોમાં વિચરવાની તથા જાહેર વ્યાખ્યાનો કરવાની સફળ પ્રેરણા કરી. તેથી રાજામહારાજા, સરકારી અધિકારીઓ અને અજૈનો પણ આકર્ષાયા અને હિંસા, શિકાર, મદ્ય–માંસ–કુવ્યસન આદિનો ત્યાગ થવા લાગ્યો જૈન ધર્મનો, નીતિ અને સદાચારનો પ્રચાર વધ્યો.

૨૩ જૈન તિથિ પત્ર–આઠમ પાખીની ટીપ તૈયાર કરાવી.

૨૪ જૈનના ત્રણે ફીરકાની સંયુક્ત કોન્ફરન્સ બોલાવવા પ્રયત્ન કર્યો પરસ્પર વિરોધી લખાણો અને દિક્ષીત સાધુઓને ભગાડવા કે બદલાવવાની સંઘ વિરોધી પ્રવૃતિઓ અટકાવવા પ્રયત્નો કર્યાં.

૨૫ મહાવીર જયંતિ જાહેર રીતે મનાવવાની પ્રેરણા આપી

પ્રારંભિક થોડા સમયમાં પ્રાંતિક કોન્ફરન્સો બોલાવી

૧ બોટેશ્વર '(લીંબડી) ઝાલાવાડ વિશા શ્રીમાળી' સ્થા. જૈનોની પ્રથમ પ્રા કોન્ફરન્સ સં. ૧૯૬૨ ભાદ્ર શુ '૯ 'મંગળવારે લીંબડી નરેશ શ્રી યશવંતસિંહજી કે. સી આઇ.ના પ્રમુખપદે અને સંઘવી ધારશી રવા (લીંબડી) ના ખર્ચે મળી અને ૧૧ તાલુકાના આગેવાનોએ આઠ દિવસ ચર્ચા કરી.

૨. શ્રી ગોધ્રા (દક્ષીણ)-ઓસવાલ જૈન પ્રા. કોન્ફરન્સ સતારાના શેઠ બાળમુકુંદજી હજારીમલજીની અધ્યક્ષતામા થઇ. આ વખતે સમાજસુધારા ઉપરાત શ્વેતાબર મૂ. પૂ. અને સ્થાનકવાસીઓની સયુક્ત કોન્ફરન્સ કરી એકતા સ્થાપવાનો ઠરાવ પણ થયેલો.

૩. વિશા શ્રીમાળી સ્થા. જૈન-ઝાલાવાડની વઢવાણમા ત્રીજી બેઠક થઇ.

૪. ગોહિલવાડ દશા શ્રીમાળી પ્રા કોન્ફરન્સ ઘોઘામા થઇ.

૫. ગુજગતના ગામોએ કલોલમાં પ્રા કોન્ફરન્સ કરી.

૬ પજાબ પ્રા. કોન્ફરન્સ જડિયાલામા પ્રથમ અધિવેશન

૭. ,, ,, સિનાલકોટમા બીજુ અધિવેશન

૮. ઝાલાવાડ દશાશ્રીમાળી સ્થા. જૈનોની લીબડીમા.

પ્રારભમા ઘણા વર્ષો સુધી કોન્ફરસ ઓફીસે જનરલ સેક્રેટરીઓ અને પ્રાતિક સેક્રેટરીઓની દોરવણી નીચે કાર્ય સચાલન કર્યું હતુ. તેમના નામો

જનરલ સેક્રેટરીઓ

૧. શેઠ કેવળદાસ ત્રિભોવનદાસ, અમદાવાદ.

૨. ,, અમરચદજી પિત્તલિયા, રતલામ,

૩. ,, લાલા સાદીરામજી ગોકુલચદજી, દિલ્હી,

૪. શ્રીયુત ગોકળદાસ રાજપાલ, મોરબી.

૫. રાય શેઠ ચાદમલજી રિયાવાલા, અજમેર

૬. શેઠ બાલમુકુદજી ચદનમલજી મૂથા, સતારા.

૭. દિ બ ઉમેદમલજી લોઢા, અજમેર.

૮. દિ. બ. બિશનદાસજી જૈન, જમ્મુ (કાશ્મીર)

પ્રતિક સેક્રેટરીઓ

પજાબ : લાલા નથુમલજી અમૃતસર
,, રેલારામજી જલધર

માલવા : શ્રી ચાદમલજી પિત્તલીયા, જાવરા
શ્રી. સુજાનમલજી બાહિયા, પિપલોદા
શ્રી. ફૂલચદજી કોઠારી ભોપાલ

મેવાડ : શ્રી. કોઠારી બલવતસિહજી, ઉદેપુર
શ્રી. નથમલજી ચોરડિયા, નીમચ

મારવાડ : શેઠ સમીરમલજી બાલિયા, પાલી
નોરતનમલજી ભાડાવત, જોધપુર
શેઠ ગણેશમલજી માલુ, બિકાનેર

રજપૂતાના : શેઠ શાર્દુલસિહજી મુણોત, અજમેર
શેઠ આણદમલજી ચોધરી અજમેર
શેઠ ગજમલજી કોઠારી, જયપુર
શેઠ ગુલાબચદજી કાકરિયા, નયા શહેર
શેઠ છોટેલાલજી ચુનીલાલજી જોહરી, જયપુર
શેઠ ધીસુલાલજી ચોરડિયા જયપુર

ગ્વાલીઅર : શેઠ ચાદમલજી નાહાર ભોપાલ
શેઠ સૌભાગમલજી મુથા ઇચ્છાવર

હાડોતી-ઢુઢાડ : શેખાવટી-લાલા કપુરચદજી આગ્રા
શ્રી. પુરૂષોત્તમ માવજી વકીલ, રાજકોટ.

કાઠિયાવાડ : શ્રી વનેચદ રાજપાળ દેશાઇ, મોરબી

બગાલ : શેઠ અગરચદજી ભૈરૂદાનજી શેઠિયા, કલકત્તા
જોઇન્ટ સેક્રેટરી-ડો ધારસીભાઇ ગુલાબચદ સઘાણી, કલકત્તા

બ્રહ્મદેશ : શેઠ પોપટલાલ ડાહ્યાભાઇ, રગુન

અરબસ્તાન : શેઠ હીરાચદ સુદરજી, એડન

આફ્રિકા : શેઠ મોહનલાલ માણેકચદ ખડેરિયા પિટર્સબર્ગ

અધિવેશન ત્રીજું

સ્થળ : અજમેર

તા ૧૦-૧૧-૧૨ માર્ચ ૧૯૦૯

પ્રારભમા સમાજમા સારો ઉત્સાહ હતો તેથી દરેક વર્ષે કે બે વર્ષે કોન્ફરન્સનુ અધિવેશ ન ભરાતુ હતુ ઉપસ્થિતિ પણ સારા પ્રમાણમા રહેતી હતી. કોન્ફરન્સનુ ત્રીજુ અધિવેશન સને ૧૯૦૯મા અજમેરમાં ભરવામાં આવ્યુ હતુ, જેના પ્રમુખપદે અહમદનગરના શાસ્ત્રજ્ઞ શેઠ બાલમુકુન્દજી મૂથા હતા.

આ અધિવેશમા મોરબીના મહારાજા સાહેબ સર વાઘજી બહાદુર અને લીબડીના ઠાકોરસાહેબ શ્રી દોલતસિહજી પધાર્યા હતા. તેથી તેમનો આભાર માનવામા આવ્યો હતો. વડોદરા નરેશ સર સિયાજીરાવ ગાયકવાડ પધારી શકયા ન હતા, પરતુ તેઓશ્રીએ અધિવેશનની સફળતા માટે પોતાની શુભ કામના મોકલી હતી, તેથી તેમનો પણ આભાર માનવામા આવ્યો હતો.

ઠરાવ ન. ૧૬: બી બી એન્ડ સી આઇ. રેલ્વે, આર એસ રેલ્વે, નોર્થ વેસ્ટર્ન રેલ્વે, સાઉથ રોહિલખંડ રેલ્વે, સહગદરા–સહરાનપુર રેલ્વે વગેરેએ કોન્ફરસમા આવનાર સજ્જનોને કન્સેશન આપવાની સગવડઆપી તે માટે એમનો તથા 'મુબઇ સમાચાર' 'સાંજ વર્તમાન' અને જૈન સમાચાર આદિ પત્રોએ પોતાના રીપોર્ટરો મોકલ્યા બદલ તમનો આભાર માનવામાં આવે છે

ઠરાવ ન. ૧૮: આ અધિવેશનના કામમા અજમેરના સ્વયસેવકોએ જે ઉત્સાહથી ભાગ લઇને સેવા કરી છે, તે બદલ તેમનો આભાર માન્યો તથા પ્રમુખ શ્રી બાલમુકુદજી મૂથા તરફથી તેમને રજતપદક ભેટ કરવાનો નિશ્ચય જાહેર કરવામા આવ્યો.

ઠરાવ નં. ૧૯ અજમેર અધિવેશનના કામને સફળતાપૂર્વક સપૂર્ણ કરવામા અજમેરના શ્રીસઘનો અને ખાસ કરીને દિ બ ઉમેદભાઇ તથા રાય શેઠ શ્રી ચાદમલજીનો અતકરણથી આભાર માને છે. રાય શેઠ ચાદમલજીએ કોન્ફરન્સનો સપૂર્ણ ખર્ચ તથા હેડ ઓફીસનો કારભાર પોતાની ઉપર લઇને જે મહાન સેવા કરી છે તેને માટે તેમને 'માનપત્ર' આપવાનુ ઠરાવ્યુ.

આ કોન્ફરસની બેઠકમા મુખ્ય ૨૨ ઠરાવો પાસ થયા.

અધિવેશન ચોથું

સ્થળ: જાલધર (પંજાબ).

તા. ૨૭–૨૮–૨૯ માર્ચ

કોન્ફરન્સનુ ચોથુ અધિવેશન ઇ. સ ૧૯૧૦ મા દિ બ શેઠ શ્રી ઉમેદમલજી લોઢા, અજમેરની અધ્યક્ષતામા જાલધર (પંજાબ)મા થયુ આ વખતે કુલ ૨૭ ઠરાવો થયા, તેમાથી ખાસ ખાસ નીચે પ્રમાણે છે

ઠરાવ ન. ૩: (સરકારોમા જૈન તહેવારોની રજાઓ વિષે) મુબઇ સરકારે કેટલાક જૈન તહેવારોની છુટ્ટી સ્વીકારી છે. તે બદલ આ કોન્ફરન્સ તેમનો હાર્દિક આભાર માને છે તથા બીજી સરકારોને તથા ભારત સરકારને અનુરોધ કરે છે કે તેઓ પણ જૈન તહેવારોની રજા સ્વીકારવાની કૃપા કરે.

ઠરાવ ૬: (અધિવેશનોમા ફીનિશ્ચિત કરવા વિષે) ભવિષ્યના કોન્ફરન્સના અધિવેશનોમા પ્રતિનિધિ ફી રૂ. ૪), દર્શકોની ફી રૂ ૩) બાળકોની રૂ ૧ાા (૧૨ વર્ષથી નાના) અને સ્ત્રી પ્રેક્ષકોના રૂ ૨) ઠરાવવામા આવે છે

ઠરાવ ન. ૭: (હિન્દી ભાષાની પ્રમુખતા વિષે) ભવિષ્યમા કોન્ફરન્સનુ કામકાજ હિન્દી ભાષા અને હિન્દી લિપિમા જ રાખવામા આવે

ઠરાવ ન. ૧૦ (જીવદયાના વિષયમા) કેટલાક પ્રસગોમા જીવિત જાનવરોનો ભોગ અપાય છે. તેવી જ રીતે પશુઓના માસ અને અવયવોથી બનેલી વસ્તુઓનો પ્રચાર વધવાથી ઘણી હિસા થાય છે તેને રોકવા માટે ઉપદેશકો દ્વારા, લેખકો દ્વારા તથા સાહિત્ય દ્વારા યોગ્ય પ્રચાર કરવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકારે છે.

(બ) નાનામોટા જાનવરો માટે પાજરાપોળો ખોલવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકારે છે અને જ્યા એવી સસ્થાઓ હોય ત્યા તેમના કાર્યને વધારવાની સૂચના કરે છે.

(સ) જીવહિસા બધ કરનારા અને જીવદયાના કામમા પ્રોત્સાહન દેનારા રાજા–મહારાજા તથા અહિસાના પ્રચારકોને આ કોન્ફરન્સ ધન્યવાદ આપે છે.

ઠરાવ ન. ૧૨: (સ્વધર્મીઓને સહાયતા આપવા વિષે) આપણા સમાજના અશક્ત, નિરુદ્યમી અને ગરીબ જૈન બધુઓ, વિધવાબહેનો અને નિરાશ્રિત બાળકોની દુખી અવસ્થા દૂર કરવા માટે તેમને ઔદ્યોગિક કાર્યોમા લગાડવા તથા અન્ય પ્રકારે સહાયતા પહોચાડવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકાર કરે છે અને શ્રીમત ભાઇઓનુ ધ્યાન તે તરફ કેન્દ્રિત કરવાનો આગ્રહ કરે છે.

ઠરાવ ન. ૧૩: (રાત્રીભોજન બધ કરવા વિષે) આપણી સમાજમા કેટલેક ઠેકાણે તો જાતીય રાત્રીભોજન-બધ જ છે, પરતુ જ્યા બધ ન હોય ત્યાના શ્રી સઘોને કોન્ફરન્સ અનુરોધ કરે છે કે તેઓ પણ પોતાને ત્યા રાત્રીભોજન બધ કરે.

ઠરાવ ન. ૧૪: (સાધુ–સાધ્વીઓને ટોલ ટેક્ષથી મુક્ત કરાવવા વિષે)

પંજાબ પ્રાન્તમા જ્યાં જ્યા રેલ્વે–પુલ ઉપર ચાલવાનો ટોલ–ટેક્ષ લાગે છે ત્યા જૈન સાધુ–સાધ્વી પાસેથી એવા ટેક્ષની માગણી કરવામા ન આવે. આ સબધે જેમ અન્ય રેલ્વે કપનીઓએ ટેક્ષ માફ કર્યા છે તેવી જ રીતે પંજાબની એન. ડબલ્યુ રેલ્વેને પણ અનુરોધ કરવા માટે એક ડેપ્યુટેશન મોકલવુ રેલ્વેના પુલ ઉપરથી પસાર થવાની મજુરી માટે પંજાબ સરકારને દરખાસ્ત મોકલવામા આવે.

ઠરાવ ન. ૧૬ કોન્ફરન્સનુ અધિવેશન ભવિષ્યમા ડીસેમ્બર મહિનામા ભરવામા આવે

ઠરાવ ન. ૧૭: (કોન્ફરન્સના પ્રચાર વિષે) કોન્ફરન્સને સુદૃઢ બનાવવા માટે તથા તેના પ્રસ્તાવોનો અમલ કરાવવા માટે કોન્ફરન્સના આગેવાન સજ્જનોની એક કમિટી બનાવવામા આવે અને તે પ્રચાર માટે પ્રવાસ કરે સુયોગ્ય ઉપદેશકો દ્વારા પણ પ્રચાર કરાવવામા આવે

ઠરાવ નં. ૧૮: આ કોન્ફરન્સના પાચ અધિવેશન થાય ત્યા સુધી નીચેના સજ્જનોને જનરલ સેક્રેટરીના પદ પર નીમવામા આવે છે

૧ રાય સેઠ ચાંદમલજી, અજમેર
૨ દિ બ શેઠ ઉમેદમલજી લોઢા, અજમેર
૩. શેઠ બાલમુકુન્દજી મૂથા, સતારા .
૪ ,, અમરચદજી પિતલિયા, રતલામ દિલ્હી
૫ ,, ગોકુલચદજી નાહર, દિલ્હી
૬. શ્રી ગોડલદાસ રાજપાલ, મોરબી.
૭ દિ. બા બિશનદાસજી જૈન, જમ્મુ (કાશ્મીર)

આ કોન્ફરન્સમા પણ મોરબી-નરેશ સર વાઘજી બહાદુર, યુવાચાર્ય શ્રી લખધીરજીની સાથે પધાર્યા હતા ચૂડાના ઠાકોરસાહેબ શ્રી જોરાવરસિંહજી પણ પધાર્યા હતા તેથી એ બન્નેનો આભાર માનવામા આવ્યો

કપુરથલાના મહારાજાસાહેબ તરફથી પણ કોન્ફરન્સને સહાયતા મળી હતી રેલ્વેકપનીઓએ અધિવેશનમા આવનાર સજ્જનોને કન્સેશન આપ્યુ હતુ. એટલા માટે તેમનો તથા પજાબ સઘ તેમજ સ્વયસેવકોનો પણ આભાર માનવામા આવ્યો સ્વયસેવકોને પ્રમુખ સાહેબ દિવાન બહાદુર શેઠ ઉમેદમલજી લોઢા તરફથી રજતપદક આપવાની ઘોષણા કરવામા આવી

અધિવેશન પાંચમું

(સ્થળ: સિકંદરાબાદ)

કોન્ફરન્સનુ પાચમુ અધિવેશન સન ૧૯૧૩ મા તા ૧૨-૧૩-૧૪ એપ્રિલે સિકંદરાબાદમા-જલગાવનિવાસી શેઠ લક્ષ્મણદાસજી મુલતાનમલજીની અધ્યક્ષતામા થયું આ અધિવેશનમા ઘણા મહત્ત્વપૂર્ણ ઠરાવો અને નિર્ણયો કરવામા આવ્યા. કુલ મળીને ૨૧ ઠરાવો પાસ થયા. જેમાના મુખ્ય ઠરાવો નીચે પ્રમાણે છે

ઠરાવ ન. ૪: (અ) (શાસ્ત્રોદ્ધારના વિષયમા) જૈન શાસ્ત્રોના સશોધન અને પ્રકાશન માટે આ કોન્ફરન્સ પ્રયત્ન કરશે એ માટે નીચેના સજ્જનોની એક કમિટી નીમવામા આવે છે.

૧ શ્રીમાન રાજા બહાદુર લાલા સુખદેવ સહાયજી જ્વાલાપ્રસાદજી, હૈદરાબાદ
૨ શ્રી શાસ્ત્રજ્ઞ બાલમુકુન્દજી મૂથા, સતારા,
૩ શ્રી અમરચદજી પિતલિયા, રતલામ
૪. શ્રી કેશરીચદજી ભડારી, ઇન્દોર
૫ શ્રી દામોદરભાઇ જગજીવનભાઇ, દામનગર
૬. શ્રી પોપટલાલ કેવળચદ શાહ, રાજકોટ
૭ ડૉ. જીવરાજ ઘેલાભાઇ, અમદાવાદ,
૮ ડૉ. નાગરદાસ મુળજી ધ્રુવ, વઢવાણ કેમ્પ
૯ શ્રી હજારીમલજી બાઠિયા, ભીનાસર તથા
૧૦. શ્રી મુલતાનમલજી મેઘરાજજી, બ્યાવર,

નામ વધારવાની સત્તા કોન્ફરન્સ ઓફીસને આપવામા આવે છે

(બ) ધાર્મિક તથા વ્યવહારિક શિક્ષણ વિષે રતલામ જૈન ટ્રેનિગ કોલેજ તથા મુબઇ બોર્ડિંગ હાઉસનો પાયો મજબુત બનાવવા માટે તેમના વિધાનમા જરૂરી ફેરફાર કરવા માટે તથા ગ્રાન્ટ વધારવાની જરુર હોય તો તેનો નિર્ણય કરવા માટે નીચેના સજ્જનોની એક 'ભીક્ષેક્ટ-કમિટી' બનાવવામા આવે છે.

૧ શ્રીમાન લક્ષ્મણદાસજી મુલતાનમલજી મુથા, જલગાંવ
૨. ,, બાલમુકુન્દજી ચદનમલજી મુથા, સતારા
૩. ,, કુવર છગનમલજી રિયાવાલે, અજમેર
૪. ,, ગોડલદાસ રાજપાલ, મોરબી
૫ ,, કુદનમલજી ફિરોદિયા, અહમદનગર
૬ ,, ફતેચદજી કપુરચદજી લાલન
૭. ,, બરધભાનજી પિતલિયા, રતલામ
૮ ,, કેશરીચદજી ભડારી, ઇદોર
૯ ,, વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ, અમદાવાદ,
૧૦ ,, દુર્લભજી ત્રિભોવન ઝવેરી, મોરબી,
૧૧ ,, લક્ષ્મીચદજી ઘોખાણી, મોરબી,
૧૨ ,, કિશનસિંહજી,
૧૩ ,, મિશ્રમલજી બોહરા,
૧૪ ,, ફુલચદજી કોઠારી, ભોપાલ,
૧૫, ,, વરધરાજજી, રૂપચદજી,
૧૬. ,, માણેકચદજી મુથા અહમદનગર તથા
૧૭ ,, ધારશીભાઇ ગુલાબચદ સઘાણી, ગોંડળ,

ઠરાવ ન. ૫: જે પ્રાન્તોમાંથી ચાર આના ફડ ૭૫ ટકા નિયમિત પ્રાપ્ત થશે તે પ્રાન્તોમા જો બોર્ડિંગો ખોલાશે તો કૉન્ફરન્સ ફંડમાથી બોર્ડિંગ ખર્ચનો ટ્ટ ખર્ચ આપવામાં આવશે. એવી સ્થિતિમા ત્યા ધાર્મિક શિક્ષણ અનિવાર્ય હોવુ જોઇએ

ઠરાવ નં. ૬: વિદ્વાન્ મુનિશ્રી જવાહિરલાલજી મહારાજના સબંધમા દક્ષિણમા જે અસતોષ ફેલાયો છે તેનુ નિરાકરણ કરવા માટે કૉન્ફરન્સની સબજેક્ટ કમિટી નીમવામા આવી.

૧. શ્રીમાન્ બાલમુકુન્દજી મૂથા, સતારા.
૨. „ લક્ષ્મણદાસજી મૂથા, જલગાંવ.
૩. „ ગોકલદાસ રાજપાલ, ઝવેરી મોરબી,
૪ „ છગનમલજી રિયાવાળા, અજમેર,
૫. „ બરધભાનજી પિતલિયા, રતલામ.
૬. „ વચ્છરાજજી રૂપચદજી, પાચોરા
૭ „ કુદનમલજી ફિરોદિયા, અહમદનગર
૮ „ ફુલચદજી કોઠારી, ભોપાલ.
૯. „ નથમલજી ચોરડિયા, નીમચ
૧૦. „ વીરચદજી સૂરજમલજી.
૧૧. „ શિવરાજજી સુરાણા, સિકદરાબાદ.
૧૨. „ લલ્લુભાઇ નારણદાસ પટેલ, ઇટોલા

આ કમિટીએ તા. ૧૩મીએ નીચેનો પ્રસ્તાવ તૈયાર કર્યો છે. તેને આ કૉન્ફરન્સ માન્ય રાખે છે

"ઇદોરના વિષયમાં પ્રારભમા જે લેખ કૉલેજના સેક્રેટરી શ્રી કેશરીમલજી ભડારી તથા કૉલેજના પ્રિન્સિપાલ શ્રી પ્રીતમલાલ કચ્છીના પ્રગટ થયા છે તે વાંચવાથી, અન્ય પત્રોની તપાસ કરવાથી તથા હકીકત સાભળવાથી જણાય છે કે, વિદ્યાર્થીઓને ભગાડવાનો જે આરોપ મુનિશ્રી મોતીલાલજી મહારાજ તથા શ્રી જવાહિરલાલજી ઉપર લગાડવામા આવ્યો છે તે સિદ્ધ થતો નથી. એટલા માટે કમિટી મુનિશ્રીને નિર્દોષ ઠરાવે છે.

ઠરાવ નં. ૭: (બાલાશ્રમ ખોલવા વિષે) દક્ષિણ પ્રાન્તમા એક જૈન બાલાશ્રમ ખોલવામા આવે. તેને કૉન્ફરન્સ તરફથી માસિક સો રૂપિયાની સહાયતા આપવાનુ ઠરાવવામા આવે છે આ આશ્રમની વ્યવસ્થા કરવા અને સ્થળનો નિર્ણય કરવા માટે નીચેના સજ્જનોની એક કમિટી નીમવામા આવે છે.

૧. શ્રી લક્ષ્મણદાસજી મુલતાનમલજી, જલગાવ.
૨. શ્રી બાલમુકુન્દજી મૂથા, સતારા.
૩ શ્રી કુન્દનમલજી ફિરોદિયા, અહમદનગર.
૪. શ્રી સુખદેવસહાયજી જ્વાલાપ્રસાદજી ઝવેરી હૈદરાબાદ. તથા
૫. શ્રી વચ્છરાજજી રૂપચદજી, પાચોરા.

ઠરાવ નં. ૮: (સમાજ–સુધાર વિષે) બાળલગ્ન, વૃદ્ધલગ્ન તથા કન્યા વિક્રય આદિ હાનિકારક રીવાજોને દૂર કરવાથી જ આપણા સમાજનું હિત સાધી શકાશે એટલા માટે આ કૉન્ફરન્સ આગ્રહપૂર્વક અનુરોધ કરે છે કે:

(ક) પુત્રની ઉમર ઓછામા ઓછી ૧૬ વર્ષ અને કન્યાની ઉમર ઓછામા ઓછી ૧૧ વર્ષની થયા પહેલા વિવાહ કરવામાં ન આવે.

(ખ) વધારેમા વધારે ૪૫ વર્ષની ઉમર પછી લગ્ન કરવા નહિ

(ગ) અનિવાર્ય કારણો સિવાય જાતિની રજા લીધા વિના એક સ્રીની હયાતીમા બીજી વાર લગ્ન કરવુ નહિ.

(ઘ) કન્યાવિક્રયનો રીવાજ બધ કરવા માટે દરેક સઘના સદ્‌ગૃહસ્થોએ દૃઢ પ્રયત્ન જરૂર કરવો જોઇએ

(ડ) આતશબાજી, વેશ્યાનૃત્ય, વિવાહ અને મૃત્યુ પ્રસગોમા નકામો ખર્ચ બધ કરવો કે ઓછો કરવો જોઇએ

ઠરાવ નં. ૧૦: (અ) સ્થાયી ગ્રાન્ટ સિવાય અન્ય સર્વ પ્રકારની ગ્રાન્ટોની વ્યવસ્થા માટે બધા જનરલ સેક્રેટરીઓની સલાહ લેવામા આવે અને બહુમતી પ્રમાણે ઑફિસ દ્વારા કાર્ય કરવામા આવે.

(બ) જાલધર કૉન્ફરન્સમા પ્રતિનિધિઓ, પ્રેક્ષક આદિની ફી માટે જે ઠરાવ કર્યો છે તેમા ન્યુનાધિક કરવાનો અધિકાર આમત્રણ આપનાર સઘને રહેશે નહિ.

(ક) કૉન્ફરન્સનુ અધિવેશન દર વર્ષે કરવામાં આવે. જો કોઇ ગામ કે સઘ તરફથી આમત્રણ ન મળે તો કૉન્ફરન્સના ખર્ચે કોઇ પણ અનુકુળ સ્થળે અધિવેશન કરવાનો નિર્ણય કરવો.

(ડ) કૉન્ફરસમાં આવનારા પ્રતિનિધિઓ અને પ્રેક્ષકો આદિની વ્યવસ્થા તેમના પોતાના ખર્ચે કરવી.

(ઇ) આ કૉન્ફરસ પ્રત્યેક ગામ અને શહેરના સ્વધર્મી ભાઇઓને આગ્રહપૂર્વક ભલામણ કરે છે કે

તેઓ પાવલી ફંડમા દરેક મદદ કરે. સહાયક મંડળના સદસ્ય બનીને તથા ધર્માર્થ પેટીઓ મંગાવીને શક્તિ અનુસાર કોન્ફરન્સને સહાયતા પહોચાડે.

ઠરાવ ન. ૧૨: (સંવત્સરી પર્વ એક સાથે ઉજવવા વિષે) સમસ્ત ભારતમા સ્થા. જૈનો એક જ દિવસે સંવત્સરી પર્વનુ આરાધન કરે એ આવશ્યક છે આ વિષે જુદા જુદા સંપ્રદાયોના મુનિઓ અને શ્રાવકો સાથે પત્રવ્યવહાર દ્વારા યોગ્ય નિર્ણય કરી લેવાની સૂચના કોન્ફરસ હેડ ઓફીસને કરવામા આવી.

ઠરાવ ન. ૧૩: (દીક્ષામા દખલ ન કરવા જોધપુર સ્ટેટને નિવેદન) હાલમા જ જોધપુર સ્ટેટમા એવો કાયદો લાગુ થયો છે કે—૨૧ વર્ષથી ઓછી ઉમરનાને સાધુ બનાવવા નહિ અને મારવાડમા જેટલા સાધુઓ છે તેમના નામો સરકારી રજીસ્ટરમા લખાવા જોઇએ આ બન્ને બાબતો જૈન શાસ્ત્રોની આજ્ઞા વિરૂદ્ધ છે અત આ કોન્ફરસ નમ્રતાપૂર્વક જોધપુર સ્ટેટને નિવેદન કરે છે કે—આ બાબત ધર્મ સબધી છે અને ધર્મના વિષયમા બ્રિટિશ સરકાર પણ દખલ કરતી નથી તો જોધપુર સ્ટેટે પણ કૃપા કરીને ઉક્ત કાનૂનથી સાધુઓને મુક્ત કરવા જોઇએ આ ઠરાવ કોન્ફરન્સ ઓફીસ જોધપુર સ્ટેટને મોકલીને યોગ્ય આજ્ઞા મગાવે.

ઠરાવ ન. ૧૪: (યોગ્ય દીક્ષા વિષે) આ કોન્ફરન્સ હિંદુસ્થાનના સમસ્ત સ્થા જૈન શ્રી સઘોને સૂચના કરે છે કે જે વૈરાગીને દીક્ષા આપવી હોય તેની યોગ્યતા આદિની સંપૂર્ણ તપાસ સ્થાનિક સંઘે કરી લેવી જોઇએ જે ગામમા ૫૦ ઘર ન હોય તો બાજુના ગામના મેળવીને પણ ૫૦ સ્થા. જૈન ઘરોની લેખીત સંમતિ મેળવ્યા પછી જ દીક્ષા અપાવવી જોઇએ

ઠરાવ ન. ૧૫: જૈનોમા ભાઇચારો વધારવા વિષે આ કોન્ફરન્સ સ્વીકાર કરે છે કે જૈન ધર્મની ઉન્નતિ માટે ભિન્ન ભિન્ન સંપ્રદાયો સાથે પરસ્પર ભ્રાતૃભાવ અને પ્રેમપૂર્ણ વ્યવહારની નિતાન્ત આવશ્યકતા છે. અત પ્રત્યેક ગામ અને શહેરના સઘોને સૂચના કરે છે કે તેઓ પોતાના ક્ષેત્રના ક્લેશો દૂર કરી શાતિ અને પ્રેમ વધારવાનો પ્રયત્ન કરે. જૈનોના ચારે ફિરકામા ઐક્યની સ્થાપના માટે પ્રત્યેક સંપ્રદાયના ૨૫-૨૫ ગૃહસ્થોનુ એક સંમેલન થાય. જો પ્રસગ આવે તો આપણી તરફથી દ્રવ્ય અને શ્રમ નો પણ સહયોગ આપવો તેવી આ કોન્ફરન્સ ઇચ્છા પ્રગટ કરે છે

ઠરાવ ન. ૧૬: (જીવદયા વિષે) (અ) નિરાધાર જાનવરોની રક્ષા કરવા માટે જ્યા જ્યા પાજરાપોળો ન હોય ત્યા સ્થાપિત કરવા માટે આ કોન્ફરન્સ પ્રત્યેક સંઘને ભલામણ કરે છે.

(બ) આ કોન્ફરન્સ જે જે વસ્તુઓની બનાવટમા જીવહિંસા થતી હોય તે તે વસ્તુઓનો ઉપયોગ ન કરવાની ભલામણ કરે છે

(ક) અન્ય ધર્માવલમ્બીઓમા ભોજન નિમિત્તે અથવા દેવી દેવતાઓના નામ ઉપર જે હિંસા થાય છે તેને પેમ્ફલેટો અને ઉપદેશકો દ્વારા બધ કરાવવાનો પ્રયત્ન કરવામા આવે

ઠરાવ ન. ૧૭: આ કોન્ફરન્સનુ છઠ્ઠુ અધિવેશન ન થાય ત્યા સુધી નીચેના સજ્જનોને જનરલ સેક્રેટરી તરીકે નિમવામા આવે છે

૧ શેઠ ચાદમલજી રિયાવાળા, અજમેર
૨. દિવાનબહાદુર ઉમેદમલજી લોઢા, અજમેર
૩ શ્રી બાલમુકુદજી મૂથા, સતારા
૪. શ્રી અમરચદજી પિતલિયા, રતલામ.
૫ શ્રી ગોકુલચદજી નાહર, દિલ્હી
૬. શ્રી ગોકુલદાસ રાજપાલ મહેતા, મોરબી
૭. દિ બ શ્રી બિશનદાસજી જૈન, જમ્મુ
૮. શ્રી લછમનદાસજી મુલતાનમલજી, જલગાવ
૯ લાલા સુખદેવસહાયજી જ્વાલાપ્રસાદજી, હૈદરાબાદ.

આ કોન્ફરન્સમા સેવા આપનાર સ્વયસેવકો ને, અને શ્રી નથમલજી ચોરડીઆને સભાપતિ શ્રી લછમનદાસજી મૂથા તરફથી ચાદ અર્પણ કર્યા

અધિવેશન છઠ્ઠુ

સ્થળ: મલકાપુર (બિહાર)

કોન્ફરસનુ છઠ્ઠુ અધિવેશન ૧૨ વર્ષ પછી મલકાપુરમા સન ૧૯૨૫મા તા૦ ૭-૮-૯ જૂનના થયુ પ્રમુખપદે શ્રીમાન શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ જે. પી. મુબઇવાળા હતા. સ્વાગતાધ્યક્ષ શ્રી મોતીલાલજી કોચેટા, મલકાપુર નિવાસી હતા અધિવેશનમા કુલ ૨૭ ઠરાવો થયા હતા તેમાથી મુખ્ય મુખ્ય નીચે આપ્યા છે

૧ પજાબ, ૨ મારવાડ, ૩ મેવાડ, ૪ માલવા, ૫ સયુક્ત પ્રાત, ૬ મધ્ય ભારત, ૭ મધ્યપ્રદેશ, ૮ ઉત્તર ગુજરાત, ૯ દક્ષિણ ગુજરાત, ૧૦ હાલાર, ૧૧ ઝાલાવાડ,

૧૨ ગોહિલવાડ, ૧૩ સોરઠ, ૧૪ કચ્છ, ૧૫ દક્ષિણ ૧૬ ખાનદેશ, ૧૭ વરાડ, ૧૮ બંગાલ, ૧૯ નિઝામ હૈદ્રાબાદ, ૨૦ મદ્રાસ, ૨૧ મુંબઇ, ૨૨ સિંધ અને ૨૩ કર્ણાટક.

ઉપરોક્ત પ્રાન્તો માટે નિમ્નોક્ત સજ્જનોને પ્રાંતિક મંત્રી નીમવામા આવે છે

૧. શ્રી. કુંદનમલજી ફીરોદિયા, અહમદનગર. દક્ષિણ પ્રાંત
૨ ,, મોતીલાલજી પિત્તલ્યા, ,, ,,
૪. ,, વીરચંદ ચોધરી, ઇચ્છાવર સી. પી પ્રાંત
૪ ,, ગુમાનમલજી સુરાણા, બરહાનપુર ,,
૫ ,, કેસરીમલજી ગુગલિયા, ધામણગાવ બરાડ પ્રાંત
૬ ,, મોહનમલજી હરખચંદજી, આકોલા ,,
૭ , રાજમલજી લલવાની, જામનેર ખાનદેશ પ્રાંત
૮. ,, રતનચંદજી દોલતરામજી, વાઘલી ,,
૯. ,, મગનલાલ નાગરદાસ વકીલ, લીંબડી, ઝાલાવાડ
૧૦ ,, દુર્લભજી કેશવજી ખેતાણી, મુંબઇ. મુંબઇ પ્રાંત
૧૧. ,, જગજીવન દયાલ, ઘાટકોપર. ,,
૧૨. ,, ઉમરશી કાનજીભાઇ, દેશલપુર, કચ્છ પ્રાંત
૧૩. ,, આનંદરાજજી સુરાણા. જોધપુર. મારવાડ
૧૪. ,, વિજયમલજી કુંભટ ,, ,,
૧૫. ,, સિરેમલજી લાલચંદજી, ગુલેદગઢ કર્ણાટક

પ્રાંતીય મંત્રીઓને સત્તા આપવામા આવે છે કે, તેઓ પોતાના ક્ષેત્રોમા એક કમિટી બનાવી લે અને પાવલી–ફંડ, 'ધર્માર્થ પેટી'ની રકમ પોતપોતાના પ્રાંતોમા વસૂલ કરીને કોન્ફરન્સ ઓફીસને મોકલે, આ ફંડની વ્યવસ્થા પૂર્વ નિર્ણયાનુસાર જુદા જુદા ફંડોમા કરવી.

ઠરાવ: નં, ૩. (મુંબઇમા કૉન્ફરન્સ ઓફીસ રાખવા માટે) કૉન્ફરન્સ ઓફીસ આગામી બે વર્ષ માટે સં ૧૯૮૨ના કારતક શુદ ૧થી મુંબઇમા રાખવી, અને જૈનપ્રકાશ પત્ર પણ મુંબઇથી જ પ્રગટ કરવુ. ઓફીસની વર્કિંગ કમિટીમા શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ જે પી પ્રેસીડેન્ટ અને શેઠ વેલજીભાઇ લખમશી તથા ઝવેરી સૂરજમલ લલ્લુભાઇને જોઇંટ સેક્રેટરી નીમવામાં આવે છે. આ ત્રણે સજ્જનોએ મુંબઇ જેવા કેન્દ્રમા ઓફીસને લઇ જવા જે સેવાભાવ બતાવ્યો છે તે બદલ આ કૉન્ફરન્સ તેમને ધન્યવાદ આપે છે

પ્ર૦ મોતીલાલજી મૂથા, અનુ શ્રી બરદભાણજી પિત્તલ્યા તથા અનુ શ્રી સરદારમલજી ભંડારી.

ઠરાવ નં. ૪: (જૈન ટ્રેનિંગ કૉલેજ ખોલવા વિષે) સભ્ય ગણાતી બધી દુનિયાનુ ધ્યાન અત્યારે 'અહિંસા'ની તરફ આકર્ષિત થયુ છે એવા અવસરે એ જરૂરી છે કે અહિંસાનુ સર્વદેશીય સ્વરૂપ દર્શાવનારા જૈન તત્ત્વજ્ઞાનનુ શિક્ષણ સુંદર પદ્ધતિથી પ્રાપ્ત થઇ શકે, માટે 'જૈન ટ્રેનિંગ કૉલેજ ખોલવાનો નિશ્ચય કરવામા આવે છે અને તેને માટે સ્થાન વગેરે વિષયમા યોગ્ય નિર્ણય કરવાનો અધિકાર નીચેના સજ્જનોની સમિતિને આપવામા આવે છે.

પ્રમુખ: શેઠ શ્રી મેઘજીભાઇ થોભણભાઇ, મુંબઇ. શેઠ વેલજીભાઇ લખમશી, શેઠશ્રી સૂરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી, શ્રી વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ, શ્રી દુર્લભજીભાઇ ત્રિભુવન ઝવેરી, શ્રી નથમલજી ચોરડિયા, શ્રી. વર્ધમાનજી પિત્તલિયા, શ્રી. મોતીલાલજી કોટેચા, શ્રી, ચીમનલાલ પોપટલાલ શાહ, શ્રી કુંદનમલજી ફીરોદિયા અને શેઠ લછમણદાસજી મૂથા, જલગાવ.

ઠરાવ નં. ૫: (હાનિકારક રીવાજો ત્યાગવા વિષે) જૈન સમાજમાથી બાલવિવાહ, વૃદ્ધવિવાહ, કન્યાવિક્રય એક સ્ત્રી ઉપર બીજી વાર લગ્ન કરવા, મદ્યસેવન, વેશ્યાનૃત્ય કરાવવુ આદિ હાનિકારક રીવાજોને દૂર કરવાનો અને લગ્ન તથા મરણ પ્રસંગના ફજુલ ખર્ચો ઓછા કરીને સન્માર્ગમા ધન વ્યય કરવાનો પ્રત્યેક સંઘ પ્રયત્ન કરે.

ઠરાવ નં. ૬: (જનરલ સેક્રેટરીની ચૂંટણી)

નીચેના સજ્જનોને જનરલ સેક્રેટરી તરીકે નીમવામા આવે છે

૧. શેઠ શ્રી મેઘજીભાઇ થોભણ જે પી. મુંબઇ
૨. ,, લછમનદાસજી મુલતાનમલજી, જલગાવ
૩. ,, મગનમલજી રિયાવાળા, અજમેર.
૪. ,, શેઠ વર્ધમાનજી પિત્તલિઆ, રતલામ.
૫ ,, મોતીલાલજી મૂથા, સતારા
૬. ,, જ્વાલાપ્રસાદજી ઝવેરી, હૈદરાબાદ
૭. ,, ગોકલચંદજી નાહર, દિલ્હી.
૮. ,, સૂરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી, મુંબઇ
૯. ,, વેલજીભાઇ લખમશી નપ્પુ, મુંબઇ
૧૦ ,, કેશરીમલજી ગુગલિઆ, ધાણુક
૧૧. ,, મોતીલાલજી કોટેચા, મલકાપુર

ઠરાવ નં. ૭: (જીવહિંસા બંધ કરાવનારાઓને ધન્યવાદ) મહિયર રાજ્યમા શારદાદેવી પર થતો પશુવધ સદાને માટે બંધ કર્યો એ બદલ આ કૉન્ફરન્સ મહિયર મહારાજાને અને દિવાન શ્રી. હીરાલાલભાઇ

ભંડારીઓને અને શેઠ મેઘજીભાઈ થોભણને આ કોન્ફરન્સ ધન્યવાદ આપે છે.

ઠરાવ નં. ૧૦: (અનાથ બાળકો માટે) અનાથ બાળકોના ઉદ્ધાર માટે આગ્રામાં જૈન અનાથાલય ખોલ્યું છે. તેના પ્રત્યે કોન્ફરન્સ સહાનુભૂતિ પ્રકટ કરે છે

ઠરાવ નં. ૧૧: શ્રીમાન્ દાનવીર શેઠ નાથૂલાલજી ગોદાવત. છોટીસાદડીવાળાએ સવા લાખ રૂપીઆ જેવી મોટી રકમ કાઢીને 'શેઠ નાથૂલાલજી ગોદાવત સ્થા૦ જૈન ગુરુકુળ અને પાઠશાળા' ખોલી છે અને શ્રીમાન્ શેઠ અગરચંદજી ભેરોંદાનજી શેઠીઆએ બિકાનેરમાં શાસ્ત્રોદ્ધાર, કન્યાશાળા, પાઠશાળા, લાયબ્રેરી વગેરે સંસ્થાઓ લગભગ બે લાખ રૂપીઆની ઉદારતાથી ખોલી છે તે બદલ આ કોન્ફરન્સ એ બન્ને મહાશયોને ધન્યવાદ આપે છે.

ઠરાવ નં. ૧૩. (શ્રી સુખદેવ સહાય જૈન પ્રેસ ઇંદોરમાં) કોન્ફરન્સના શ્રી સુખદેવ સહાય જૈન પ્રેસને બધા સામાન સાથે શ્રી. સરદારમલજી ભંડારીની દેખરેખમાં સં. ૧૯૮૨ ના કાર્તિક શુદ ૧ પહેલાં ઇંદોર મોકલી આપવો અને અર્ધમાગધી કોશના ત્રણ ભાગ પૂરા થતાં સુધી ત્યાંજ રહે તેના ખર્ચ માટે રૂા ૪૫૦) માસિક સુધી શ્રી. સરદારમલજી ભંડારીને આપવા. કોષ પૂરો થયા પછી પ્રેસ ઇંદોરમાં રાખવો કે બીજે સ્થળે મોકલવો? તે ઓફીસની ઇચ્છા પર રહેશે. કોષની છપાઈનું કામ વધુમાં વધુ બે વર્ષમાં પૂરું થવું જોઈએ પુસ્તકોની માલિકી કોન્ફરન્સની રહેશે. અજમેરથી ઇન્દોર પ્રેસ પહોંચાડવાનો તથા ફીટ કરવાનો જે ખર્ચ થશે તે કોન્ફરન્સ તરફથી આપવામાં આવશે મંત્રી તરીકે શ્રી. સરદારમલજી ભંડારીને નીમવામાં આવે છે. પ્રેસની વર્કિંગ કમિટી ઇન્દોરમાં બનાવી લેવાશે.

ઠરાવ નં. ૨૪: (ખાદી પ્રચાર વિષે) જૈન ધર્મના મૂળ આધાર ભૂત અહિંસા વ્રતને ધ્યાનમાં રાખીને આ કોન્ફરન્સ સર્વે સ્થાનકવાસી જૈન ભાઈઓ તથા બહેનોને અનુરોધ કરે છે કે તેઓ શુદ્ધ ખાદીનો ઉપયોગ કરે.

અન્ય કેટલાક શોક પ્રસ્તાવ અને ધન્યવાદાત્મક હતા. આ અધિવેશનમાં જૈન ટ્રેનિંગ કૉલેજ માટે અપીલ કરવામાં આવી કૉલેજ માટે તથા પ્રચાર ફંડ માટે ૬૨ હજારનું ફંડ થયું મલકાપુર અધિવેશન ટીકીટની આવકથી જ પૂર્ણ સફળ થયું, એ આ અધિવેશનની વિશેષતા હતી. જનતા ખર્ચના ભયથી અધિવેશન કરાવતા અચકાય છે, પરંતુ આ અધિવેશને બતાવી દીધું કે—ડેલીગેટ, વીઝીટર અને સ્વાગત સમિતિના સદસ્યોની ફીથી જ અધિવેશન જેવું મોટું કામ થઈ શકે છે અને આમંત્રણ આપનારને યશ અને સફળતા મળી શકે છે.

અધિવેશન સાતમું

સ્થળ—મુંબઈ

કોન્ફરન્સનું સાતમું અધિવેશન તા૦ ૩૧—૧૨—૨૬ અને તા૦ ૧—૨ જાન્યુઆરી ૧૯૨૭ના ત્રણ દિવસોમાં મુંબઈ માધવબાગમાં થયું. પ્રમુખ શેઠ ભેરોંદાનજી શેઠિયા, બિકાનેર નિવાસી હતા. આ અધિવેશનમાં કુલ ૩૨ ઠરાવો પાસ થયા હતા. પાછળનાં બધા અધિવેશનો કરતાં પ્રસ્તાવ સંખ્યા વધુ હતી. મુખ્ય ઠરાવો નીચે મુજબ થયા:

ઠરાવ નં. ૧: (સ્વામી શ્રદ્ધાનંદજીના ખૂન પ્રતિ દુઃખ પ્રકાશન) આપણા દેશના સુપ્રસિદ્ધ નેતા અને કર્મ—વીર સ્વામી શ્રદ્ધાનંદજીનું એક ધર્માન્ધ મુસલમાને ખૂન કર્યું, તેને આ કોન્ફરન્સ મહાન રાષ્ટ્રીય હાનિ સમજીને અત્યંત ખેદ તથા ખૂની પ્રત્યે તિરસ્કાર પ્રકટ કરે છે.

ઠરાવ નં. ૨: (પ્રાંતીય શાખાઓ વિષે) કોન્ફરન્સનું પ્રચારકાર્ય યોગ્ય પદ્ધતિથી તથા વ્યવસ્થિત રૂપે ચલાવવા માટે પ્રત્યેક પ્રાંતમાં એકેક ઓનરરી પ્રાંતિક મંત્રી નીમવામાં આવે છે.

(અ) પ્રત્યેક પ્રાંતિક મંત્રીને તેમની સૂચનાનુસાર એક પગારદાર સહાયક રાખવાની રજા આપવામાં આવે છે. તેના ખર્ચ માટે ઓફીસ તરફથી અર્ધો સહાયના અપાશે આ સહાયના રૂા. ૨૦) માસિકથી વધુ નહિ હોય. બાકીના ખર્ચની વ્યવસ્થા પ્રાંતિક મંત્રી કરે. તે પ્રાંતમાંથી એકત્રિત થયેલ રૂપિયા કે જેમાંથી નિયમાનુસાર જે રકમ કોન્ફરન્સ આપશે તેનો ઉપયોગ ઉપરોક્ત કાર્યમાં કરવાની સત્તા રહેશે

(ક) જે સજ્જનોએ પ્રાંતિકમંત્રી થવા સ્વીકાર કર્યો છે અને જે ભવિષ્યમાં સ્વીકાર કરશે તેમાંથી કોન્ફરન્સ ઓફીસ પ્રાંતિક મંત્રીઓ નીમશે.

ઠરાવ નં. ૩: (વીર—સંઘ સ્થાપવા વિષે) શ્રી. સંઘ તથા જૈન સમાજના હિત માટે જીવન સમર્પણ કરનારા સજ્જનોનો એક 'વીર—સંઘ' સ્થાપવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકારે છે. એને માટે આવશ્યક

નિયમોપનિયમ બનાવવા નીચેના સજ્જનોની એક કમિટિ બનાવવામા આવે છે આ કમિટી ત્રણ માસની અદર પોતાનો રીપોર્ટ કાર્યકારિણી સમિતિને સોંપે ૧ શેઠ ભેરૂદાનજી શેઠિયા, ૨ શેઠ સૂરજમલ લલ્લુભાઇ, ૩ શેઠ વેલજીભાઇ લખમશી, ૪ શેઠ કુદનમલજી ફીરોદિયા, ૫ શેઠ અમૃતલાલ દલપતભાઇ, ગણપુર, ૬ શેઠ રાજમલજી લલવાણી અને ૭ શ્રી- ચિમનલાલ ચકુભાઇ શાહ મુબઇ

ઠરાવ ન. ૪: (સવત્સરીની એકતા વિષે) સમસ્ત સ્થા જૈન સમાજમા સવત્સરી-પર્વ એક જ દિવસે મનાવાય, એ જરૂરી છે. એટલા માટે નીચેના સજ્જનોની એક કમિટી નીમવામા આવે છે. તેઓ પોતપોતાના સપ્રદાયનો પક્ષ ન કરતા પૂર્ણ વિચારવિનિમય દ્વારા સવત્સરી માટે એક દિવસ નિશ્ચિત કરે, તદનુસાર સમગ્ર સઘ સવત્સરી પાળે તમામ મુનિ-મહારાજોને પણ પ્રાર્થના છે કે, તેઓ આ ઠરાવને અમલમા લાવવા ઉપદેશ આપે અને પોતે પણ આનો કાર્યરૂપે અમલ કરે.

કમિટીના મેમ્બર્સ-૧. શ્રી ચદનમલજી મૂથા, સતારા ૨ શેઠ શ્રી. કિશનદાસજી મૂથા, અમહદનગર. ૩. શ્રી તારાચદજી વારીઆ, જામનગર ૪ શ્રી દેવીદાસજી લક્ષ્મીચંદજી શેવરિઆ, પોરબદર

ઠરાવ ન. ૬: (વિવિધ પ્રવૃત્તિઓની આવશ્યકતા વિષે) આપણા સમાજને સુસગઠિત કરવા માટે પ્રત્યેક ગામ અને શહેરમા મિત્રમડળ, ભજનમડળી, વ્યાપારશાળા અને સ્વયસેવકમડળની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકારે છે અને દરેક ગામના આગેવાનોને આવા મડળો શીઘ્ર સ્થાપિત કરવાનો આગ્રહ કરે છે.

ઠરાવ નં. ૭: (જાતિબહિષ્કાર વિરોધી) કોઇ પણ સ્થાનના પચ નાના દોષો માટે કોઇ વ્યક્તિ કે પરિવારનો જીવનભર માટે જાતિબહિષ્કાર ન કરે એવો આગ્રહ તેમને આ કોન્ફરન્સ કરે છે.

ઠરાવ ન. ૮ (શિક્ષણ પ્રચાર સબધ) આ કોન્ફરન્સ પ્રત્યેક પ્રકારના શિક્ષણ સાથે જરૂરી ધાર્મિક શિક્ષણ રખાવવા માટે એક સ્થા. જૈન શિક્ષા પ્રચાર વિભાગ'ની સ્થાપના કરે છે તે નીચેના કાર્યો કરવાની સત્તા જનરલ કમિટીને આપે છે

(૧) ગુરૂકુળ જેવી સસ્થા સ્થાપિત કરવાની આવશ્યકતા આ કોનફરસ સ્વીકારે છે. અને જનરલ કમિટિને સૂચના કરે છે કે ફડની અનુકુળતા થતા જ ગુરૂકુળ ખોલી દેવુ.

(૨) જ્યાં જ્યા કોલેજ હોય ત્યા ઉચ્ચ શિક્ષણ લેનારા વિદ્યાર્થીઓ માટે છાત્રાલય ખોલવા અને સ્કોલરશીપો આપવાની વ્યવસ્થા કરવી.

(૩) ઉચ્ચ શિક્ષણ મેળવવા માટે વિદેશ જનારા વિદ્યાર્થીઓને લોન રૂપે પણ છાત્રવૃત્તિ આપવી અને કોલેજના છાત્રોને કળા-કૌશલ્ય, શિલ્પ અને વિજ્ઞાનનુ ઉચ્ચ શિક્ષણ મેળવવા માટે છાત્રવૃત્તિઓ આપવી

(૪) પ્રૌઢ અધ્યાપકો તથા અધ્યાપિકાઓ તૈયાર કરવા (૫) સ્ત્રી-શિક્ષણને માટે સ્ત્રીસમાજોની સ્થાપના કરવી. (૬) જૈન જ્ઞાન પ્રચારકમડળ દ્વારા નિશ્ચિત કરેલી યોજનાને અમલમાં લાવવી અને સાહિત્યનો પ્રચાર કરવો

(૭) હિન્દી તથા ગુજરાતી બને વિભાગો માટે જુદી જુદી સેન્ટ્રલ લાયબ્રેરી સ્થાપવી તથા પબ્લિક લાયબ્રેરીઓમા જૈન સાહિત્યના કબાટ રખાવવાં.

તત્પશ્ચાત્ શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણે કહ્યુ કે પૂનાના હવાપાણી સારા છે, શિક્ષણના સાધનો પણ પુષ્કળ છે તથા ખર્ચ પણ ઓછો આવશે અત પૂનામા ઉચ્ચ શિક્ષણ લેનારા વિદ્યાર્થીઓને માટે એક બોર્ડિંગ ખોલવાની જરૂર છે. આ માટે નીચેના સજ્જનોની એક કમિટી બનાવવી તેના હાથમાં બોર્ડિંગ સબધી સપૂર્ણ સત્તા રહેશે.

૧ શેઠ સૂરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી, ૨ શેઠ વેલજીભાઇ લખમશી, ૩ શેઠ પુજ્જલાલ ખીમચદ શાહ ૪. શેઠ મોતીલાલજી મૂથા, ૫ શેઠ કુદનમલજી ફીરોદીયા તથા ૬. શેઠ મેઘજીભાઇ થોભણ

આ ઠરાવને શ્રી સૂરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરીએ તથા બીજાઓએ અનુમોદન આપ્યુ તેથી જયજીનેન્દ્ર ધ્વનિ સાથે બોર્ડિંગ માટે ફડ શરૂ થયુ. અને એ જ વખતે સારૂ ફડ થયુ.

ઠરાવ નં. ૯: (સાદડીના સ્થા. જૈન ભાઇઓ વિષે) જૈન ધર્મના ત્રણે સપ્રદાયોમાં ઐક્ય અને પ્રેમભાવ ઉત્પન્ન કરવાનો સમય આવી ગયો છે. તે માટે ત્રણે સપ્રદાયોમાં પ્રયત્નો પણ શરૂ થયા છે. તે સ્થિતિમા ઘાણેરાવ-સાદડીના સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇઓ પ્રત્યે ત્યાના મદિર માર્ગી ભાઇઓની તરફથી જે અન્યાય થઇ રહેલ છે તે સર્વથા અયોગ્ય છે એમ સમજીને આ કોન્ફરન્સ શ્રી શ્વે. મૂ.

પૂજક કોન્ફરન્સ અને તેમના કાર્યકર્તાઓને સૂચિત કરે છે કે તેઓ આ સબંધે જલ્દી યોગ્ય વ્યવસ્થા કરીને સાદડીના સ્થાનકવાસી ભાઇઓ પર જે અન્યાય થઇ રહ્યો છે તેને દૂર કરાવે અને પરસ્પરમા પ્રેમ વધારે

આ કોન્ફરન્સ મારવાડ, મેવાડ, માલવા અને રાજપૂતાનાના સ્વધર્મી ભાઇઓને સૂચિત કરે છે કે તેઓ આપણા સાદડીનિવાસી સ્વધર્મી ભાઇઓ સાથે જાતિ નિયમાનુસાર બેટી વ્યવહાર શરૂ કરીને સહાયતા કરે. આ પ્રસ્તાવને સફળ બનાવવા માટે કોન્ફરન્સ ઓફીસ વ્યવસ્થા કરે

ઠરાવ ન. ૧૦: (શત્રુંજય તીર્થના ટેક્ષ વિરોધમા સહાનુભૂતિ) સમસ્ત ભારતના સ્થા. જૈનોની આ પરિષદ શ્રી શત્રુંજય તીર્થ સબંધી ઉપસ્થિત થયેલી પરિસ્થિતિ પર આંતરિક દુઃખ પ્રકટ કરે છે અને પાલીતાણાના મહારાજા તથા એજન્ટ ટુ ધી ગવર્નર જનરલના નિર્ણય વિરૂદ્ધ પોતાનો વિરોધ પ્રકટ કરે છે. આશા છે કે, બ્રિટિશ સરકાર આ વિષયમા શ્વે. જૈન બન્ધુઓને અવશ્ય ન્યાય કરશે મુખ્યત. પાલીતાણા નરેશની પાસે આ પરિષદ એવી આશા રાખે છે કે, શ્વે જૈન બન્ધુઓની ધાર્મિક ભાવના અને હક્કને માની લેવાની ઉદારતા પ્રકટ કરશે

ઠરાવ નં. ૧૨: (મહિલા પરિષદ વિષે) કોન્ફરન્સના અધિવેશનની સાથે સાથે 'મહિલા પરિષદ'નુ પણ અધિવેશન અવશ્ય થવુ જોઇએ આ મહિલા પરિષદ કોન્ફરન્સની એક સસ્થા છે, અત તેનો ઓફીસ ખર્ચ કોન્ફરન્સ આપે

ઠરાવ ન. ૧૬: (જોધપુર નરેશને ધન્યવાદ) માદા પશુઓની નિકાસબધી અને સવત્સરીને દિવસે હિંસાબધી માટે.)

મહારાજાધિરાજ જોધપુર નરેશે પોતાના રાજ્યમા માદા પશુઓના નિકાસ સદાને માટે બધ કરી દીધો છે અને જૈનોની પ્રાર્થના સ્વીકારી સવત્સરીના દિવસે જીવહિંસા બધ કરાવી છે તથા સવત્સરીની છુટ્ટી રાખવાનો હુકમ ફરમાવ્યો છે એ બદલ આ પરિષદ ધન્યવાદ આપે છે. અને આશા રાખે છે કે તેઓ ભવિષ્યમા પણ આવા પુન્ય કાર્યોમાં યોગ આપતા રહેશે આ ઠરાવની નકલ મહારાજા જોધપુર નરેશની સેવામા તાર દ્વારા મોકલવામા આવે

ઠરાવ નં. ૧૭: શ્રાવિકાશ્રમની આવશ્યકતા માટે આ કોન્ફરન્સ શ્રાવિકાશ્રમની આવશ્યકતા સ્વીકારે છે, અને મુબઇમા શ્રાવિકાશ્રમ સ્થાપિત કરીને અથવા અન્ય ચાલુ સસ્થાઓ સાથે ચલાવવા માટે પ્રમુખ સાહેબે જે રૂા ૧૦૦૦) આપ્યા છે. તેમા સહાયતા દઇ ફડ વધારવા માટે અન્ય ભાઇઓ તથા બ્હેનોને આગ્રહપૂર્વક અનુરોધ કરે છે. તે સાથે જ બીજી સંસ્થાની સાથે સાથે ચલાવવામા ધર્મ સબધી કોઇ બાધા ઉપસ્થિત ન થાય તેનુ પુરૂ ધ્યાન રાખવાની સૂચના કરે છે

મારવાડ માટે બીકાનેરમા શેઠિયાજી દ્વારા સ્થાપિત શ્રાવિકા શ્રમનો લાભ લેવા માટે મારવાડી બહેનોનુ ધ્યાન ખેચવામા આવે છે અને આ ઉદારતા બદલ શ્રી. શેઠિયાજીને હાર્દિક ધન્યવાદ આપવામા આવે છે.

ઠરાવ ન. ૧૮: (ગોરક્ષા અને પશુરક્ષા વિષે) આ પરિષદ મુબઇ સરકારને પ્રાર્થના કરે છે કે ગૌવધ તથા દૂધ દેનાર અને ખેતીને લાયક ઉપયોગી પશુઓનો વધ બધ કરવાનો પ્રબંધ કરે મુબઇ કાઉન્સીલના બધા સદસ્યોને આગ્રહપૂર્વક નિવેદન કરે છે કે તેઓ આ ઠરાવને સફળ બનાવવા માટે યોગ્ય પ્રયાસ કરે.

ઠરાવ ન. ૧૯: (જૈન–ગણના વિષે) ભારતના સમસ્ત સ્થા જૈનોની ડિરેક્ટરી કોન્ફરન્સના ખર્ચે પ્રતિ દશ વર્ષે તૈયાર કરવામા આવે પ્રથમ ડિરેક્ટરી (જૈન ગણના) કોન્ફરન્સ તરફથી ચાલુ વર્ષમા કરવામા આવે,

ઠરાવ ન. ૨૦: (વેજીટેબલ ઘીના બહિષ્કાર વિષે) આ કોન્ફરન્સ ઠરાવ કરે છે કે વર્તમાનમા ભારત વર્ષમા વધુ પ્રમાણમા વેજીટેબલ ઘીના પ્રચારથી દેશના દુધારૂ અને ખેતીને ઉપયોગી પશુઓને હાનિ પહોચવાની સભાવના છે આ વેજીટેબલ ઘીમા ચરબીનુ મિશ્રણ થાય છે અને સ્વાસ્થ્ય સુધારક તત્ત્વ તેમા બિલકુલ નહિ હોવાથી ધાર્મિક ક્ષતિની સાથે સ્વાસ્થ્યની પણ હાનિ થાય છે અત આ પરિષદ પ્રસ્તાવ કરે છે કે અહિસા અને આરોગ્યને લક્ષ્યમા રાખીને વેજીટેબલ ઘીનો સર્વથા બહિષ્કાર કરવામા આવે અને તેના પ્રચારમા કોઇ પ્રકારે ઉત્તેજન આપવુ નહિ

ઠરાવ ન. ૨૧: (બર્માના બૌદ્ધોનો માસાહાર રોકવા વિષે.) બર્મા પ્રાતમા રહેનારી બર્મી પ્રજા પોતાના બૌદ્ધસિદ્ધાંત વિરૂદ્ધ માસાહાર કરે છે અત. આ કોન્ફરન્સ પ્રસ્તાવ કરે છે કે સારા ઉપદેશકોને મોકલીને બર્મામા માસાહાર રોકવાનો પ્રબધ કરવો

ઠરાવ નં. ૨૨: (ત્રણે જૈન ફિરકાઓની કોન્ફરન્સ વિષે) સમાજની સાથે સંબંધ ધરાવનારા અનેક સામાન્ય પ્રશ્નો સમાજની સામે આવે છે એ પ્રશ્નોનુ નિરાકરણ કરવા માટે તથા જૈનોના ત્રણે ફિરકામા પરસ્પર સદ્‌ભાવ પેદા કરવા માટે આ પરિષદ ત્રણે સંપ્રદાયોની એક સયુક્ત કોન્ફરન્સની આવશ્યકતા સ્વીકારે છે અને આવી પ્રવૃત્તિ શરૂ કરવા માટે બધા જૈન ફિરકાઓના આગેવાનોની એક કમિટી બોલાવવા માટે કોન્ફરન્સ ઓફિસને સત્તા આપે છે

ઠરાવ નં. ૨૩: (સાધુ-સમેલનની આવશ્યકતા વિષે) ભારતના સમસ્ત સ્થા. જૈન સાધુ મુનિરાજોનુ સમેલન યથા શીઘ્ર ભરવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરસ સ્વીકારે છે એ માટે યોગ્ય પ્રબધ કરવાની સૂચના કોન્ફરસ ઓફીસને કરવામા આવે છે

ઠરાવ નં. ૨૪: (ચાર આનાને બદલે એક રૂપિયાના ફંડ માટે) કોન્ફરસે જે પાવલી ફંડ કાયમ કર્યું છે, તેને બદલે હવેથી પ્રત્યેક સ્થા. જૈન ઘર પાસેથી રૂા. ૧) પ્રતિ વર્ષ લેવાનુ ઠરાવવામા આવે છે પ્રતિનિધિ તે જ થઇ શકશે જેમણે વાર્ષિક રૂા ૧) આપ્યો હશે.

ઠરાવ નં. ૨૮: (ગુરુકુળ શરૂ કરવા વિષે.) બ્રહ્મચર્યાશ્રમ અથવા ગુરુકુળની આપણા સમાજને ઘણી જ જરૂરત છે, એનાથી આપણે સાચા સેવકો પેદા કરી શકશુ જો કોન્ફરન્સ આવી સ્વતંત્ર સસ્થા માટે આવશ્યક સહાયતા ન આપી શકે તો જૈન ટ્રે કોલેજની સાથે જ આ કામ ચલાવવુ. કોલેજને મળનારી ગ્રાન્ટ (સહાયતા)થી ત્રણ વર્ષ સુધી કામ ચલાવી શકાય એવી યોજના થઇ શકે છે આ સબધે નિર્ણય કરવાની સત્તા નીચેના સદસ્યોની કમિટીને આપવામા આવે છે. તેઓ યથા શીઘ્ર પોતાનો અભિપ્રાય પ્રકટ કરે.

૧ શેઠ ભૈરોદાનજી સેઠિયા બિકાનેર, ૨ શ્રી શેઠ બરદભાણજી પિત્તલ્યા રતલામ, ૩ શ્રી દુર્લભજીભાઇ ઝવેરી જયપુર, ૪ શ્રી આનદરાજજી સુરાણા જોધપુર, ૫ શ્રી બાબુ હુકમીચદજી સુરાણા ઉદેપુર, ૬ શ્રી પૂનમચદજી ખીવસરા બ્યાવર, શ્રી મગનમલજી કોચેટા ભવાલ

બાકીના ઠરાવો ધન્યવાદાત્મક હતા.

આ અધિવેશનની સાથે સ્થા. જૈન મહિલા પરિષદનુ પણ આયોજન થયુ હતુ જેમા શ્રી. આનદકુવરબાઇ પિનલિયા, (રતલામ) વગેરેના ભાષણો થયા હતા.

મહિલા સમાજને માટે કેટલાયે ઉપયોગી તથા પ્રગતિશીલ પ્રસ્તાવો પણ પાસ થયા હતા શિક્ષા પ્રચાર, ગૃહોદ્યોગ, પર્દા પ્રથા પરિત્યાગ તથા મૃત્યુ પછી શોક રાખવાની પ્રથા આદિને સમાપ્ત કરવાના આદિ પ્રસ્તાવો પાસ થયા હતા

અધિવેશન આઠમુ

સ્થાન-બિકાનેર (રાજસ્થાન), સમય તા૦ ૬-૭-૮ ઓકટોબર ૧૯૨૭ કોન્ફરસનુ આઠમુ અધિવેશન સન ૧૯૨૭મા તા૦ ૬-૭-૮ ઓકટોબરે શ્રી. મિલાપચદજી બેદ (ઝાસીવાળા)ના ખર્ચે બિકાનેરમા થયુ.

પ્રમુખ-જૈન તત્ત્વજ્ઞ, પ્રખર વિચારક શ્રીયુત વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ હતા સ્વાગતાધ્યક્ષ શ્રીમાન્ મિલાપચદજી વૈદ, બિકાનેર હતા આ અધિવેશનમાં લગભગ ૮૦૦૦ પ્રતિનિધિઓ અને પ્રેક્ષકોની હાજરી હતી. મહિલાઓ પણ પુષ્કળ સખ્યામા હતી.

આ અધિવેશનની સફળતા માટે દેશના ગણ્યમાન નેતાઓ મહાત્મા ગાધીજી, લાલા લાજપતરાય, પં અર્જુનલાલજી સેઠી, શ્રી ચપતરાયજી જૈન બેરિસ્ટર, શ્રી એ. વી લઠ્ઠે કોલાપુર દિવાન, શેઠ બિરલાજી, શ્રી અબાલાલ સારાભાઇ, શ્રી નાનાલાલ દલપતરામ કવિ, બ્રહ્મચારી શીતલ પ્રસાદજી વગેરેના તથા શ્રી શ્વે. મૂર્તિ. પૂ. કોન્ફરસ વગેરે સસ્થાઓના શુભ સદેશા આવ્યા હતા.

આ અધિવેશનમા કુલ ૨૮ ઠરાવો પાસ થયા હતા તેમાથી મુખ્ય નીચે આપ્યા છે

પ્રસ્તાવ ૧-(જૈનોની અખડ એકતા માટે)

જૈન ધર્મની ઉજ્જ્વલતા અને જૈન સમાજની રક્ષા તથા પ્રગતિ માટે આ કોન્ફરસ ઇચ્છે છે કે, ભિન્ન ભિન્ન જૈન સંપ્રદાયોના ત્યાગી તથા ગૃહસ્થ ઉપદેશકો, નેતાઓ તથા પત્રકારોમા આજકાલ (વર્તમાનમા) ધાર્મિક પ્રેમના રૂપે જે ખોટા દેખાવો દેખાય છે તેને દૂર કરવા માટે પૂર્ણ સાવધાની રખાય, જૈન તત્ત્વજ્ઞાન, વ્યવહારિક શિક્ષણ, સમાજસુધાર અને સ્વદેશસેવાથી સબધિત બધા કાર્યો સર્વ સંપ્રદાયોના સયુક્ત બળથી કરવાં આ માટે કોન્ફરસના મુબઇ અધિવેશન વખતે પ્ર. નં. ૨૨ કર્યો હતો તેનો વહેલી તકે અમલ થાય એમ આ કોન્ફરસ ઇચ્છે છે

પ્રસ્તાવ નં. ૨: (સાર્વજનિક જીવદયા, ખાદી, ઘાટકોપરની પ્રસશા) દુધારૂ ગાયો, ભેસો તથા તેના

બચ્ચાને કસાઈખાને જતા બચાવીને તેની જીવન રક્ષાનુ જે મહાન કાર્ય ઘાટકોપર સાર્વજનિક જીવદયા ખાતુ કરી રહેલ છે, તેની આ કોન્ફરન્સ પ્રસશા કરે છે અને બધા સઘોને તથા ટ્રસ્ટીઓને ભલામણ કરે છે કે તેઓ આ સસ્થાની તન, મન, ધનથી યોગ્ય મદદ કરે

પ્રસ્તાવ ન. ૩: કોન્ફરસના વિધાનમા સશોધન કરવા માટે નિમ્નોકત સજ્જનોની એક કમિટી નીમવામા આવે છે આ કમિટી વિધાનનો મુસદ્દો બનાવીને જનરલ કમિટીના સદસ્યોને પોસ્ટ દ્વારા મોકલી તેમનો અભિપ્રાય જાણે અને યોગ્ય પ્રતીત થયે તદનુસાર સુધાર કરી નવુ વિધાન છપાવીને પ્રગટ કરે

૧ સભાપતિજી
૨. રેસીડેન્ટ જનરલ સેક્રેટરી
૩. મેઘજીભાઈ થોભણભાઈ મુબઈ
૪ સુરજમલ લલ્લુભાઈ ઝવેરી ,,
૫. કુદનમલજી ફીરોદિયા, અહમદનગર
૬. નગીનદાસ અમુલખરાય, ઘાટકોપર
૭ અમૃતલાલ રાયચદ ઝવેરી, મુબઈ

પ્રસ્તાવ ન. ૯: (જૈન અધ્યાપકો બનાવવા સબધી) જૈનશાળાઓ તથા ધાર્મિક જ્ઞાન સાથે પ્રાથમિક શિક્ષણ આપતી આપણી જૈન સ્કૂલો માટે જૈન શિક્ષકોની કમી ન રહે એટલા માટે જ્યા જ્યા સરકારો તથા દેશી રાજ્યો તરફથી ટ્રેનીગ કોલેજો ચાલતી હોય ત્યાના જૈન વિદ્વાનો (સ્કોલરો)ને જૈન ધર્મ સબધી શિક્ષણ આપવાની તથા તેમની ધાર્મિક પરીક્ષા લેવાની વ્યવસ્થા સાથે તેમને છાત્રવૃત્તિઓ આપવામાં આવે

પ્રસ્તાવ ન. ૧૦: (જૈન પ્રકાશની વ્યવસ્થા સબધી) આ કોન્ફરસ આગ્રહ કરે છે કે-ધર્મ, સઘ અને કોન્ફરસના હિત ખાતર જૈન પ્રકાશની વ્યવસ્થા સમાપ્તિ અત્યારથી પોતાના હસ્તક રાખે અને તેની હિંદી તથા ગુજરાતી જુદી જુદી આવૃત્તિઓ કાઢે

પ્રસ્તાવ ન. ૧૧: (જૈનોમા રોટી-બેટી વ્યવહાર કરવા સબધી) ઉચ્ચ કોટીની જાતિઓમાથી જેઓ જાહેર રીતે જૈન ધર્મ સ્વીકાર કરે, તેમની સાથે રોટી તથા બેટીનો વ્યવહાર કરવો એ જૈનોનુ કર્તવ્ય છે એવો આ કોન્ફરસ નિશ્ચય કરે છે

પ્રસ્તાવ ન. ૧૨: (બોર્ડિંગોને સહાયતા માટે) જેતપુર (કાઠિયાવાડ)મા સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થીઓને માટે એક બોર્ડિંગ હાઉસ ખોલવામા આવે તો એને માટે પાંચ વર્ષ સુધી માસિક રૂ. ૭૫) ભાડાવાલુ પોતાનુ મકાન વગર ભાડે આપવા અને બીજી માસિક રૂ ૨૫)ની આવક કરાવી દેવા બોર્ડિંગને ૫૦ ગાદલાં ભેટ દેવાનુ વચન જેતપુર નિવાસી ભાઈ જીવરાજ દેવચદ દલાલની તરફથી મલ્યુ. એ ઉપરથી આ કોન્ફરસ ઠરાવે છે કે, ઉપર પ્રમાણેની વ્યવસ્થાનુસાર સસ્થા શરૂ થાય ત્યારથી પાચ વર્ષ સુધી સસ્થાને વ્યવહારિક શિક્ષણ ફડમાથી માસિક રૂા ૫૦)ની સહાયતા આપવામાં આવે સસ્થામા ધાર્મિક શિક્ષણની ગોઠવણ જરૂર કરવી પડશે

એવી જ રીતે જયપુરમા અને ઓસિયા (મારવાડ)ની આસપાસ પણ બોર્ડિંગ ખોલવામા આવે તો કોન્ફરસની તરફથી માસિક ૫૦), ૫૦) રૂા ની સહાયતા આપવાનુ ઠરાવ્યુ

પ્રસ્તાવ ન. ૨૦: (નિરાશ્રિતો માટે)-૧ શ્રી અમૃતલાલ રાયચદ ઝવેરી, ૨ શ્રી જોરાલાલ સઘવી, ૩ શ્રી. મોતીલાલ મૂથા તથા ૪ શ્રી જીવરાજ દેવચદ દલાલની એક કમિટી બનાવવામા આવે છે. આ કમિટી હિદના કોઈ પણ ભાગમાથી અપગ જૈનો, વિધવાઓ અને અનાથ બાળકોને શોધી તેમની રક્ષા માટે સ્થપાયેલી સસ્થાઓમાં તેમને પહોચાડે અને અને શક્ય હોય તો તેને ધાર્મિક શિક્ષણની ગોઠવણ કરાવે આ કામ માટે નિરાશ્રિત ફડમાથી રૂા ૫૦૦ની રકમ શ્રી અમૃતલાલ રાયચદ ઝવેરીને સોપવાનુ ઠરાવવામા આવે છે

પ્રસ્તાવ ન. ૨૫: (સાદડી પ્રકરણ સબધી) (અ) મારવાડ, મેવાડ તથા માળવાના સ્થાનકવાસી જૈનભાઈઓને આ કોન્ફરસ આગ્રહપૂર્વક ભલામણ કરે છે કે ઘાણેરાવ સાદડીમા સ્વધર્મી ભાઈઓને ધર્મ માટે જે મુશ્કેલીઓ પડે છે તે બાબત વિચાર કરીને તેમની સાથે પ્રેમપૂર્વક કન્યા વ્યવહાર ચાલુ કરે

(બ) ગોડવાડ પ્રાન્તના બન્ને મૂર્તિપૂજક તથા સ્થા જૈનો વચ્ચે સેકડો વર્ષો થયાં લગ્નવ્યવહાર હતો તે કેટલાક ધાર્મિક ઝઘડાને નિમિત્તે સામાજિક ઐક્યમા જે વિઘ્ન નખાયું છે તેને દૂર કરવા માટે, તથા સામાજિક વ્યવહારમા વચ્ચે ન પડવાની મુનિ-મહારાજોને પ્રાર્થના કરવા માટે બન્ને મૂ પૂ. કોન્ફરસ ઓફિસને સમસ્ત જૈન સમાજની હિત દષ્ટિથી આ કોન્ફરન્સ આગ્રહપૂર્વક ભલામણ કરે છે કે.

(ક) આ પ્રસ્તાવને ક્રિયાન્વિત કરવા માટે આવશ્યક કાર્યવાહી કરવાની સત્તા સભાપતિજીને આપવામા આવે છે

પ્રસ્તાવ ન. ૨૬: (સાદગી ધારણ કરનારી વિધવા બહેનોને ધન્યવાદ).

શ્રીમતી કેશરબ્હેન (નથમલજી ચોરડિયાની સુપુત્રી), શ્રીમતી આનંદીબાઇ (શ્રી ગણપતદાસજી પુગલિયાની સુપુત્રી), શ્રી. જીવાબાઇ (શ્રી પન્નાલાલજી મિસ્ત્રીની સુપુત્રી), સમીબાઇ (શ્રી ચતુર્ભુજજી વોરાની સુપુત્રી) આદિ વિધવા બહેનોએ દાગીના તથા રંગીન વસ્ત્રો પહેરવાનો ત્યાગ કરીને શુદ્ધ ખાદી પહેરવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી છે તે માટે આ કૉન્ફરન્સ તેમને ધન્યવાદ આપે છે અને એમનુ અનુકરણ કરવાની બીજી વિધવા બહેનોને ભલામણ કરે છે.

અધિવેશન નવમું

(સ્થાન અજમેર સમય—તા૦ ૨૨—૨૩—૨૪—૨૫ એપ્રિલ ૧૯૩૩) શ્રી અ ભા શ્વે. સ્થા જૈન કૉન્ફરન્સનુ નવમુ અધિવેશન સાડા પાચ વર્ષ બાદ અજમેરમા તા૦ ૨૨—૨૩—૨૪ એપ્રિલ ઇ. સ ૧૯૩૩ મા સપન્ન થયુ તેના પ્રમુખ—શ્રીયુત હેમચદભાઇ રામજીભાઇ મ્હેતા (ભાવનગર) હતા સ્વાગત પ્રમુખ—દાનવીર રા બ. શેઠ જ્વાલાપ્રસાદજી ઝવેરી હતા આ અધિવેશન વિગત અધિવેશનોથી અધિક મહત્વપૂર્ણ હતુ પહેલાના અધિવેશનોમા પ્રાય બધા ઠરાવો મુખ્યત ભલામણ રૂપે થતા, પરતુ આ અધિવેશનના પ્રસ્તાવોમા સ્પષ્ટ નિર્દેશ અપાએલ હતા

એટલુ માનવુ પડશે કે અજમેર અધિવેશને સ્થા. જૈન સમાજમા ક્રાન્તિની ચિનગારી પ્રકટ કરી હતી શ્રી બૃહત્સાધુ સમ્મેલનની સાથે સાથે જ આ અધિવેશન હોવાથી ૪૦-૪૫ હજારની હાજરી આ વખતે હતી. અધિવેશન માટે ખાસ 'લોકાશાહ નગર' વસાવ્યુ હતુ. આ અધિવેશન અભૂતપૂર્વ હતુ

આ અધિવેશનમા આભાર પ્રસ્તાવો સિવાય ૨૫ પ્રસ્તાવો પસાર કર્યા હતા તેમાથી મુખ્ય નીચે મુજબ છે

પ્રસ્તાવ ન. ૨: (જેલનિવાસી શ્રી પૂનમચદજી રાકા પ્રત્યે સહાનુભૂતિ) આ કૉન્ફરસને શ્રી પૂનમચદજી રાકા (નાગપુર) જેવા ધાર્મિક નેતાની અનુપસ્થિતિ માટે ખેદ છે. તેમણે તા. ૪ માર્ચથી જેલમા લીધેલ અનશનત માટે ચિન્તા છે. તેમને ખડવાની ગરમ જેલમાં મોકલેલ છે તેથી આ કૉન્ફરસ સરકારને પ્રાર્થના કરે છે કે. તેમની માગણીઓ મજુર કરે અથવા તેમને જેલથી જલ્દી મુક્ત કરે.

પ્રસ્તાવ ન. ૩: (ધાર્મિક સસ્થાઓની સગઠિત વ્યવસ્થા સબધી) આ કૉન્ફરન્સ પ્રસ્તાવ કરે છે કે હિંદુસ્તાનમા સ્થા. જૈનોની જ્યા જ્યા ધાર્મિક અને વ્યવહારિક સસ્થાએ ચાલે છે અથવા જે નવી શરૂ થાય તે સસ્થાઓ તરફથી શિક્ષણક્રમ પાઠ્યપુસ્તકો, ફંડ, બાળક—બાળિકાઓની સખ્યા આદિ આવશ્યક વિવરણ મગાવીને એકત્ર કરવામા આવે અને શિક્ષણ પરિષદના પ્રસ્તાવ પર ધ્યાન દઇને હવે શુ કાર્ય કરવા યોગ્ય છે? તે ઉપર સલાહકાર અને પરીક્ષકસમિતિ જેવા કાર્ય પુરા કરવા માટે એક બોર્ડ બનાવવુ આ બોર્ડમા દરેક પ્રાત તરફથી ૧—૧. મેમ્બર નીમવા અને સર્વ શિક્ષણ સંસ્થા મળીને પાચ સભ્યો આ બોર્ડમા મોકલે

પ્રસાતવ ન. ૪: (વીર સઘ સબધી) શ્રી શ્વે સ્થાનકવાસી જૈન સમાજના હિતાર્થે સ્વય પોતાનુ જીવન સમર્પણ કરનાર સજ્જનોનો વીર સઘ અને ત્યાગી વર્ગ (બ્રહ્મચારી વર્ગ) સ્થાપવાની આવશ્યકતાનો આ કૉન્ફરસ સ્વીકાર કરે છે. આ માટે કયા કયા સાધનોની આવશ્યકતા છે? એ સાધનો કઇ રીતે એકઠા કરવા, કયા કયા સેવકોની કેવી યોગ્યતા હોવી જોઇએ, સઘનો કાર્યક્રમ અને તેના નિયમોથી નિયમ બનાવવા ઇત્યાદિ દરેક વિષયનો નિર્ણય કરવા માટે નિમ્નોક્ત સજ્જનોની એક કમિટી નીમવામા આવે છે. ઉક્ત બને વર્ગો દ્વારા જૈન ધર્મનો પ્રચાર પણ કરવામા આવશે. માટે આ સબધમા આજથી ત્રણ માસની અદર આ કમિટી પોતાની યોજના તૈયાર કરીને જૈન પ્રકાશમાં પ્રકટ કરે અને જનરલ કમિટીમા રજુ કરે આ સબધમા જે કઇ સૂચનાઓ કરવી હોય તે કમિટીના મત્રીને આપવી સદસ્યોના નામ—

પ્રમુખશ્રી અને કૉન્ફરસના મત્રી

શ્રી. ચિમનલાલ પોપટલાલ શાહ	મુબઇ
શ્રી. વેલજીભાઇ લખમશી નપુભાઇ	„
શ્રી. જેઠાલાલભાઇ રામજી	„
ડૉ. વૃજલાલ ધ. મેઘાણી	„
લાલા જગન્નાથજી જૈન	„ (ખાર)

શ્રી. મોતીલાલજી મૂથા, સતારા
શ્રી અમૃતલાલ રાયચંદ ઝવેરી, મુંબઇ
શ્રી દુર્લભજીભાઇ ઝવેરી, જયપુર

આ કમિટીનુ કોરમ ચારનુ ગણાશે મંત્રીપદે શ્રી ચિમનલાલ ચકુભાઇ શાહ રહેશે.

પ્રસ્તાવ નં. ૫: (જૈન ફીરકાઓની એકતા સબંધી જૈનોના તમામ ફીરકાઓમા પારસ્પરિક પ્રેમ વધવાથી જૈન ધર્મ પ્રગતિશીલ થઇને આગળ વધી શકે એમ આ કોન્ફરસ માને છે અને એટલા માટે પ્રસ્તાવ કરે છે કે જૈનોના અન્યાન્ય ફીરકાઓને તેમની કોન્ફરસ, પરિષદ કે સભાઓ દ્વારા પ્રેમ વધારવા તથા મતભેદો ભૂલીને ઐક્યસાધનાના જે જે કાર્યો સંયુક્ત બળથી થઇ શકે તે બધા કાર્યો કરવાની વિનંતિ કરે (આ પ્રવૃત્તિ કોન્ફરસ ઓફિસ કરશે)

પ્રસ્તાવ નં. ૬: (સાદડીના સ્થા જૈનો સબંધી) એકતાના આ યુગમા ૧૮ વર્ષો થયા સાદડી (ગોડ-વાડ)ના સ્થા જૈન ભાઇઓનો શ્વે મૂ. પૂ. જૈન ભાઇઓએ જે બહિષ્કાર કરી રાખ્યો છે તે વિષયમા મુબઇ કોન્ફરસના પ્રસ્તાવાનુસાર શ્વે મૂ. પૂ જૈન કોન્ફરસને આ કોન્ફરસ તરફથી પત્રો લખાયેલા, પરતુ તેમણે મૌન જ રાખ્યુ છે એ વ્યવહાર પ્રત્યે આ કોંન્ફરસ અત્યત અસતોષ પ્રકટ કરે છે અને શ્વે. મૂ પૂ. જૈન કોન્ફરન્સને પુન વિનંતિ કરે છે કે, તેઓ આ બહિષ્કારને દૂર કરવા માટે ભગીરથ પ્રયત્ન કરે અને એકતા સબધી એમણે કોન્ફરસમા કરેલા પ્રસ્તાવોનો ખરો પરિચય આપે

નોટ: આ કોન્ફરન્સ ખુશીથી નોધ લે છે કે, શ્રીયુત ગુલાબચદજી ઢઢ્ઢાની સૂચનાનુસાર સાદડીના બને પક્ષોનુ સમાધાન કરવા માટે બને પક્ષોના ચાર ચાર અને એક મધ્યસ્થ એમ નવ સજ્જનોની એક પંચ કમિટી નીમીને જે નિર્ણય થાય તે બને પક્ષોએ માન્ય રાખવાનુ ઠરાવ-વામા આવે છે

આપણી તરફથી ચારે નામ નીચે પ્રમાણે છે
૧. શ્રી દુર્લભજી ઝવેરી
૨. શ્રી નથમલજી ચોરડિયા
૩. રા બ. શ્રી મોતીલાલજી મૂથા
૪ શ્રી. કુંદનમલજી ફીરોદિયા
મધ્યસ્થ–પં. પ્યારેલાલજી, ઝાબુઆ દીવાન.

મૂ. પૂ. જૈનો તરફથી ચાર નામ શ્રી ગુલાબચદજી ઢઢ્ઢા દ્વારા કોન્ફરન્સ ઓફિસ પાસેથી મગાવી લેવા એટલે કાર્યારભ થઇ રહે

પ્રસ્તાવ નં. ૭: (ખાદી અને સ્વદેશીપ્રેમ વધા-રવા સબધ) અહિંસા ધર્મના કટ્ટર ઉપાસકોએ ચર્બીવાળા અને રેશમી કપડાને ત્યાજ્ય સમજવા જોઇએ. ચર્બી વગરના સ્વદેશી તથા હાથના કાતેલા–વણેલા શુદ્ધ કપડાં વાપરવાથી સ્વદેશસેવાના ભાવ પણ પ્રકટે છે એટલા માટે આ કોન્ફરન્સ સૌને શુદ્ધ કપડા અને સ્વદેશી ચીજો વાપર-વાનો આગ્રહ કરે છે

પ્રસ્તાવ નં. ૮: (સાધુ સમેલનની કાર્યવાહીની સ્વીકૃતિ) સાધુ સમ્મેલન માટે દૂર દૂરના પ્રાન્તોમાથી અનેક કષ્ટો સહીને જે મુનિરાજો અજમેર પધાર્યા છે, તેમનો આ કોન્ફરસ ઉપકાર માને છે સાધુ સમેલનનુ કાર્ય અત્યત દુસાધ્ય અને કષ્ટમય હોવા છતા મુનિવરોએ ૧૫ દિવસમા પરિશ્રમ-પૂર્વક પૂરુ કર્યું છે આ સમેલનમા મુનિમહારાજોએ જે યોજના બનાવી છે, તે આ કોન્ફરન્સને મજૂર છે પૂજ્યશ્રી જવાહરલાલજી મ આ સમેલનમા ૧૯૩ સાધુ–સાધ્વીઓ તરફથી આવે છે એવું ફોર્મ ભરીને આવેલ છે, યોજનાઓ બનાવવામા વખતોવખત સાથે રહીને સમતિ આપી રહેલ છે માટે એ યોજનાઓ એમને પણ બધનકારક છે

એ યોજનાઓ સમસ્ત સ્થા જૈન સાધુઓ માટે બનાવેલ છે, જે હાજર અને ગેરહાજર તમામ સાધુ–સાધ્વીઓ માટે બધનકારક છે, એમ આ કોન્ફરસ ઠરાવે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૦: (સાધુ સમેલનના નિયમો પળા-વવા માટે શ્રાવક સમિતિ) સાધુ સમેલન તરફથી આજ્ઞા અને ચતુર્વિધ શ્રી સંઘને કરેલી પ્રાર્થનાને શિરે ધરીને સાધુ સમેલનના નિયમોનુ યોગ્ય પાલન કરાવ[illegible] આ કોન્ફરન્સને એક સ્ટેન્ડિંગ કમિટી બ[illegible] આવશ્યકતા જણાય છે ઉક્ત કમિટીમા ૩[illegible] ૩૮ મેમ્બર ચૂટવા તે ઉપરાત પ્રમુખ અને બ[illegible] મળીને કુલ ૪૧ મેમ્બર રહે તેઓ બીજા [illegible] કો–ઓપ્ટ કરે ઉપરોક્ત ક્રમથી પ્રાત[illegible] પ્રમાણે ચૂટાયા છે

૧. રા. સા. લાલા ટેકચદજી જૈન,
૨. શ્રી ચુન્નીલાલજી જૈન, ડેરા [illegible]

૩ લાલા ગોકળચદજી નાદર, દિલ્હી
૪. શેઠ આણુદરાજજી સુગણા, જોધપુર
૫ શ્રી. ભૈરોંદાનજી શેઠિયા, બિકાનેર.
૬. શ્રી, અનોપચદજી પુનમિઆ, સાદડી
૭ શ્રી કેશુલાલજી તાકડિયા, ઉદયપુર.
૮. શ્રી કન્હૈયાલાલજી ભડારી, ઇન્દૌર
૯. શ્રી. હીરાલાલજી નાદેચા, ખાચરોદ
૧૦ શ્રી ચોથમલજી મૂથા, ઉજ્જૈન
૧૧. શ્રી કલ્યાણમલજી બેદ, અજમેર
૧૨. શ્રી સરદારમલજી છાજેડ, શાહપુરા
૧૩ શ્રી સુલ્તાનસિહજી જૈન, બડૌત
૧૪. શ્રી ફૂલચદજી જૈન, કાનપુર
૧૫. શ્રી અચલસિહજી જૈન, આગ્રા
૧૬ (બુદેલખડ તરફથી નામ આવે તે)
૧૭ શ્રી દીપચદજી ગોઠી, બેતુલ
૧૮. શ્રી સુગનચદજી લુણાવત, ધામક.
૧૯ શ્રી. રતિલાલ હાકેમચદ, કલોલ
૨૦ શ્રી વાડીલાલ ડાહ્યાભાઇ, અમદાવાદ.
૧. શ્રી જેસિગભાઇ હરખચદ ,,
૨૨. ડૉ. પોપટલાલ ત્રિકમલાલ સઘવી
૨૩ શ્રી મોહનલાલ મોતીચદ, ગઢડા,
૨૪. શ્રી પુરુષોત્તમ ઝવેરચદ, જૂનાગઢ
૨૫ શ્રી ઊમરશી કાનજી, દેશલપુર
૨૬. શ્રી કુન્દનમલજી ફીરોદિયા, અહમદનગર
૨૭ શ્રી દી બ મોતીલાલજી મૂથા, સતારા
૨૮ શ્રી પૂનમચદજી નાહટા, ભુસાવળ.

આ જનરલ સ્ટેન્ડિગ કમિટીના મેમ્બર આગામી
જૈન કૉન્ફરન્સ જ્યા સુધી નવી કમિટી ન ચૂટે ત્યા સુધી કાયમ
શ્રી બૃહત્ કોઇ પણ સાધુ–સાધ્વી શિથિલ બને અને શ્રાવકો
હોવાથી તેમને માટે યોગ્ય કાર્યવાહી કરવાની માગણી
અધિવેશન ની કમિટીને કરી હોય તો ૩ માસમા તે યોગ્ય
આ અધિવેશન કરે જો તે તદનુસાર ન કરે અને જરૂરી પગલા
પા સ્ટેન્ડિગ કમિટી તે સબધી વિચાર કરીને
આ અધિવેશન કરે આ રીતનો આ કૉન્ફરન્સ નિર્ણય કરે છે
પ્રસ્તાવો પસાર કર્યા.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૧: (આગમ વિદ્યા પ્રચાર ફડ
જબા શ્રીયુત હસરાજભાઇ લક્ષ્મીચદની
રાકા પ્રત્યે સહાનુભૂતિ આ હસરાજ જિનાગમ વિદ્યા પ્રચારક
રાંકા (નાગપુર) જેવા ધણીને તદનુસાર તેમના રૂા ૧૫,૦૦૦ની
ખેદ છે તેમણે તા. ૪ માચર કરવાનુ ઠરાવે છે અને આ
વિષે તેમની સાથે સમસ્ત પ્રબધ કરવાનો અધિકાર
જનરલ કમિટીને આપે છે તથા શ્રી હસરાજભાઇને
વિનતિ કરવાનુ ઠરાવે છે કે યથાસભવ ગ્રન્થોનુ પ્રકાશન
હિદી ભાષામા હોવાથી વધુ ઉપયોગી થશે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૨: (કુપ્રથાઓને ત્યાગવા સબધી) આપણા સમાજમા ચાલતી નીચેની પ્રથાઓ ધર્મવિરુદ્ધ અને અનુચિત છે જેમ કે કન્યાવિક્રય, વરવિક્રય, વૃદ્ધ-વિવાહ, બાલવિવાહ, બહુવિવાહ, અનમેલ વિવાહ, મૃત્યુ-ભોજન, વેશ્યાનૃત્ય, આતશબાજી, હાથીદાત–રેશમ આદિને માગલિક સમજી ઉપયોગ કરવો વિધવાઓને અનાદર દૃષ્ટિએ દેખવી, અશ્લીલ ગીતો (ફટાણા) ગાવા, હોળી ખેલવી, લૌકિક પર્વો મનાવવા, મિથ્યાત્વી દેવ–દેવીઓની માનતા આદિ બાબતો જલ્દી બધ કરાય, એવી સાધુ સમેલનની પણ સૂચના છે. અત આ કૉન્ફરન્સ તમામ જૈન ભાઇઓને આગ્રહ કરે છે કે આ બધા કુરિવાજોને યથાશક્તિ છોડી દે–દૂર કરે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૩ (ધાર્મિક ઉત્સવોમા ખર્ચ ઘટાડવા બાબત.) ધર્મ નિમિત્તે થતા તપ મહોત્સવ, દીક્ષા મહોત્સવ, સથારા મહોત્સવ, ચાતુર્માસમા દર્શનાર્થ આવાગમન, લોચ મહોત્સવ, મૃત્યુ મહોત્સવ આદિના આમત્રણ આપવા, આડબરભર્યા ઉત્સવ કરવા, અધિકાધિક ખર્ચ કરવો–આ બધુ ધાર્મિક અને આર્થિક દૃષ્ટિએ લાભપ્રદ નથી સાધુ સમેલનનુ પણ એવુ જ મતવ્ય છે અત ઉપરોક્ત બાબતોના ખર્ચ ઘટાડવામા આવે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૪: (સિદ્ધાન્તશાળા સબધી.) વૈરાગીઓને ધાર્મિક શિક્ષણ આપવા માટે અનુકૂળ સ્થાને 'સિદ્ધાતશાળા' ખોલવી આવશ્યક જણાય છે હાલ તુરત તો શેઠ હસરાજભાઇના દાનનુ કાર્ય પ્રારભ થાય ત્યા જ સિદ્ધાતશાળાનુ કાર્ય શરૂ કરવુ દીક્ષિત મુનિરાજો પણ કલ્પાનુસાર સિદ્ધાતશાળાનો લાભ લઇ શકશે. પાત્ર વૈરાગી માસિક રૂા ૧૦) શ્રી જૈન ટ્રેનિગ કૉલેજ ફડમાથી આપવા સિદ્ધાતશાળાની વ્યવસ્થા, નિયમોપનિયમ નિશ્ચિત કરવા અને આચાર સબધી ક્રિયાઓમા વિદ્વાન મુનિરાજોની સલાહ અનિવાર્ય ગણાશે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧૬: (શ્રાવકજીવન સબધી.) મુનિવર્ગના સુધારની જેટલી જરૂર છે, તેટલી જ શ્રાવક શ્રાવિકાઓના જીવનસુધાર અને ધાર્મિક ભાવનામા વૃદ્ધિ કરવાની પણ આવશ્યકતા છે. આ અગે સાધુ

સંમેલન તરફથી નીચેની સૂચનાઓ આવી છે તેનું પાલન કરવાનો તમામ ભાઇઓ અને બહેનોને આ કૉન્ફરન્સ આગ્રહ કરે છેઃ

(૧) બાળક-બાળિકાઓ પાંચ વર્ષના થાય ત્યારથી ધાર્મિક શિક્ષણ આપવું.

(૨) ૧૮ વર્ષ સુધી છોકરાને અને ૧૪ વર્ષ સુધી છોકરીને બ્રહ્મચારી રાખવા.

(૩) ૭ પર્વ તિથિઓને દિવસે લીલોતરીનો ત્યાગ કરવો.

(૪) રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કરવો

(૫) કંદમૂળ ખાવાનો ત્યાગ કરવો જમણવારમા કંદમૂળનો ઉપયોગ ન કરવો

(૬) પર્વના દિવસે ઉપવાસાદિ વ્રત કરવા, બ્રહ્મચર્ય પાળવું અને સામાયિક પ્રતિક્રમણ જરૂર કરવું

(૭) અભક્ષ્ય પદાર્થોનું સેવન ન કરવું

(૮) દરરોજ શ્રાવક-શ્રાવિકાએ ઓછામાં ઓછું સામાયિક અને સ્વાધ્યાય તો જરૂર કરવું જોઇએ

(૯) વિધવાઓ પ્રત્યે આદરનો વ્યવહાર કરવો જોઇએ.

(૧૦) પ્રાન્તવાર ૫૧ સદસ્યોની જે કમિટી સાધુ સંમેલનના નિયમો પળાવવાનું ધ્યાન રાખે તેઓ જ શ્રાવકો વિગેના ઉપરોક્ત નિયમ-પાલનની દેખરેખ રાખે

પ્રસ્તાવ નં. ૯: (દાનપ્રણાલિ દ્વારા કૉન્ફરન્સની સહાયતા સંબંધી) આપણા સમાજમા દાનની નિયમિત પ્રણાલિ શરૂ થાય અને સામાજિક સુધારાનું કાર્ય કૉન્ફરન્સ સારી રીતે કરી શકે એટલા માટે આ કૉન્ફરન્સ સમસ્ત સ્થાનકવાસી જૈનોને આગ્રહ કરે છે કે-

(અ) પ્રત્યેક સ્થાનકવાસી જૈનને ઘરેથી રોજ ૧ પાઇ નિયમિત કાઢવામ આવે અને એ રીતે માસિક યા ૭ માસિક રકમ એકત્ર કરીને દરેક ગામનો સંઘ કૉન્ફરન્સને મોકલતો રહે

(બ) હિંદમા દરેક સ્થાનકવાસી જૈન પોતાને ત્યાના લગ્ન પ્રસંગે કૉન્ફરન્સને ઓછામાં ઓછો રૂ. ,૧) આપે

(ક) લગ્ન, જમણવાર, ધાર્મિક ઉત્સવ (દીક્ષા, તપ, મૃત્યુ, શોચ આદિ)ના ખર્ચ ઘટાડી બચત રકમ પારમાર્થિક કાર્યોમા ખર્ચવા માટે કૉન્ફરન્સને મોકલી આપે.

દાતાની ઇચ્છાનુસાર કૉન્ફરન્સ સદુપયોગ કરશે.

નોટ-અ, બ અનુસાર આવેલ સહાયતાનો ઉપયોગ પાવલી ફંડની માફક જુદા જુદાં પારમાર્થિક કામોમા થશે

પ્રસ્તાવ નં. ૧૮: (હિન્દીમા કાર્યવાહી કરવા બાબતે) હિન્દી ભાષામા વધુ લોકો સમજે છે અને રાષ્ટ્રીય ભાવના પ્રમાણે પણ હિન્દીનો પ્રયોગ કરવા યોગ્ય છે એટલે આ કૉન્ફરન્સ નિશ્ચય કરે છે કે, કૉન્ફરન્સની કાર્યવાહી બનતા સુધી હિંદીમા કરવામાં આવે

પ્રસ્તાવ નં ૧૯: (જીવદયા સંબંધી) દુષ્કાળાં પશુઓની કતલ થવાથી દેશનું પશુધન નષ્ટ થાય છે તથા ધર્મ, રાષ્ટ્ર અને સમાજને ધાર્મિક તથા આર્થિક દૃષ્ટિએ ભયંકર હાનિ થાય છે. તેને રોકવામા જ સાચી જીવદયા છે. અતઃ આ સંબંધમાં થનાર જુદી જુદી સંસ્થાના પ્રયાસો અધિક ઉપયોગી અને કાર્યસાધક થાય એવો પ્રબંધ કરવા માટે આ પરિષદ નિમ્નોક્ત સજ્જનોની એક સમિતિ બનાવે છે અને બધા જૈનોને પોતાને ઘેર ગાય-ભેંસ રાખવા (પાળવા)નો આગ્રહ કરે છેઃ

૧ શ્રી. શેઠ બગદમાણજી પિત્તલ્યા, રતલામ.
૨ ,, અમૃતલાલ રાયચંદ ઝવેરી, મુંબઇ
૩. ,, મોતીલાલજી મૂથા, સતારા.
૪. ,, ચિમનલાલ પોપટલાલ શાહ, મુંબઇ.
૫ ,, જગજીવન દયાળ, ઘાટકોપર.

પ્રસ્તાવ નં. ૨૦: (એકલવિહારી સાધુ-સાધ્વીઓ સંબંધી) વર્તમાનકાળે એકલવિહાર અસહ્ય હોવાથી આ કૉન્ફરન્સ એકલા વિચરનાર સાધુ-સાધ્વીઓને ચેતવણી આપે છે કે, તેઓ આવતા અષાઢ સુદ ૧૫ સુધી કોઇ ને કોઇ સંપ્રદાયમા ભળી જાય જો તેઓ ન [illegible] તો કોઇ પણ શ્રીસંઘ એકલવિહારી સાધુનું [illegible] ન કરે. વૃદ્ધાવસ્થા, અસ્વસ્થતા, આદિ [illegible] કારણવિશેષથી એકલા રહી ગયા હો[illegible] વાત જુદી છે. ચારિત્ર્યહીનોએ જૈન [illegible] રાખવો એ જૈન સમાજને દગો [illegible] ચારિત્ર્યહીનોને સાધુ વેષ (ધાર્મિક ચિહ્ન) [illegible] હક્ક નથી. અતઃ આવા કોઇપણ [illegible] દેખાય તો સાધુવેષ ઉતારવાનો પ્રય[illegible] કરી શકશે, અને કૉન્ફરન્સ યોગ્ય કાર્ય[illegible]

વૃદ્ધાવસ્થા આદિ કારણે વિહાર કરવા અસમર્થ સાધુઓની સેવામા સંપ્રદાયના સાધુઓને મોકલવા જોઇએ

પ્રસ્તાવ નં. ૨૧: (સાહિત્ય નિરીક્ષણ સબંધી.) આપણા સમાજમા સાહિત્ય પ્રકાશનનુ કાર્ય વધારવા જરૂર છે, પરતુ જે સાહિત્ય હોય તે સમાજ અને ધર્મને ઉપયોગી હોવુ જોઇએ અત આ કોન્ફરન્સ પ્રકાશન યોગ્ય સાહિત્યને સર્ટિફાઇડ (પ્રમાણિત કરવા માટે નીચેના સાધુઓ તથા શ્રાવકોની એક સમિતિ નીમે છે. હરપ્રકારનુ સાહિત્ય ઓફિસ દ્વારા આ સમિતિને મોકલીને પ્રમાણિત કરાવ્યા બાદ પ્રકટ કરવામા આવે.)

ઉપાધ્યાય શ્રી આત્મારામજી મહારાજ.
પં. મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી
શ્રી ભૈરોદાનજી સેઠિયા, બિકાનેર.
શ્રી વરદભાણજી પિત્તલ્યા, રતલામ
લાલા હરજસરાયજી જૈન, અમૃતસર.
ઠાકુર લક્ષ્મણસિંહજી જૈન, દેવાસ
ધીરજલાલ કે તુરખીઆ, બ્યાવર.

પ્રસ્તાવ નં. ૨૨: (સમાજસેવકોનુ સન્માન) આ કોન્ફરન્સ શ્રી. દુર્લભજીભાઇ ઝવેરીની અનન્ય ધર્મ-સેવાની કદર કરતા 'જૈન ધર્મવીર'ની અને શ્રી. નથમલજી ચોરડિયાને 'જૈન સમાજભૂષણ'ની ઉપાધિ (પદવી) આપે છે.

પ્રસ્તાવ નં ૨૩: (બિકાનેર સરકારને અનુરોધ)
શ્રીમજ્જૈનાચાર્ય પૂજ્યશ્રી જવાહિરલાલજી મ. દ્વારા રચિત 'સદ્ધર્મ મંડન' અને 'ચિત્રમય અનુકંપાવિચાર' નામક જે પુસ્તકો પ્રકટ થયા છે તે વિષે બિકાનેર સરકાર તરફથી બિકાનેરના સ્થા જૈનોને એવી નોટીસ મળી કે આ પુસ્તકો જપ્ત કેમ ન કરવા? આ નોટીસનો ...મ બિકાનેરના સ્થા જૈનો તરફથી બિકાનેર સરકારને ... છે આશા છે કે, બિકાનેર સરકાર તેની ઉપર ...દૃષ્ટિથી વિચાર કરશે તદપિ આ કોન્ફરન્સ બિકાનેર ...પ્રાર્થના કરે છે કે આ બન્ને પુસ્તકો ધાર્મિક ...ર માટે તથા સ્થા જૈન સમાજને પોતાના ...ર રાખવા નિમિત્તેજ પ્રકાશીત કરેલ ...ભાવના પર આઘાત પહોચાડવા માટે ...કે બિકાનેર સરકાર આ પુસ્તકો પર ...ની કૃપા કરશે

(હાંસિયામાં: જૈન શ્રી બૃહ. હોવાથી ર અધિવેશન આ અધિવેશન આ અધિવે પ્રસ્તાવો પસાર કર્યા પ્રસ્તાવ નં. રાક્ષ પ્રત્યે સહાનુભૂતિ, રાક્ષ (નાગપુર) જેવા ખેદ છે. તેમણે તા. ૪ માર્ચ)

...નાવની નકલ બિકાનેર નરેશને ...શ્રીને આપવામા આવે છે.

બાકીના પ્રસ્તાવો આભારપ્રદર્શક હતા

આ અધિવેશનમા લીંબડી નરેશ સર દોલતસિંહજી પધાર્યા હતા એમનો પણ આભાર માન્યો હતો.

આ અધિવેશનની સાથે સાથે શ્રી સ્થા. જૈન નવ-યુવક પરિષદ, મહિલા પરિષદ અને શિક્ષણ પરિષદ પણ થઇ હતી, તેની કાર્યવાહી સક્ષિપ્તમા હવે પછી આપી છે

શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન યુવક પરિષદ, અજમેર

સ્થળ: અજમેર

સમય તા ૨૪ એપ્રિલ, ૧૯૩૩

શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન નવયુવક પરિષદનુ અધિવેશન તા ૨૪-૪-૩૩ ને રોજ શેઠ અચલસિંહજી જૈન (આગરા) ની અધ્યક્ષતામા સપન્ન થયુ હતુ. સ્વાગતાધ્યક્ષ શ્રી સુગનચંદજી લુણાવત (ધામણગાવ) હતા સભામા પાસ થએલા પ્રસ્તાવોમાથી ખાસ ખાસ નીચે આપ્યા છે

પ્રસ્તાવના નં. ૪: (અસ્પૃશ્યતા નિવારણ) આ પરિષદ જૈન સિદ્ધાતાનુસાર અસ્પૃશ્યતાનો નિષેધ કરે છે અને અનુરોધ કરે છે કે અન્ય જૈનેતર ભાઇઓની માફક જ અસ્પૃશ્ય (હરિજન) ભાઇઓ સાથે પણ વ્યવહાર કરવામાં આવે

પ્રસ્તાવના નં ૫: (અહિંસક વસ્તુઓ વાપરવા સબધી) આ પરિષદ ધાર્મિક તથા દેશહિતની દૃષ્ટિએ રેશમ, હિંસક વસ્ત્ર અને હાથીદાતના ચૂડલા વગેરે વાપરવાનો નિષેધ કરે છે અને નવયુવકો તથા નવ યુવતીઓને અનુરોધ કરે છે કે કેવળ સ્વદેશી વસ્તુઓનો જ વપરાશ કરે.

પ્રસ્તાવ નં. ૬: (કુપ્રથાઓ ત્યાગવા સબધી) આ પરિષદ અયોગ્ય લગ્ન, બાળવિવાહ, વૃદ્ધવિવાહ, કન્યા-વિક્રય વરવિક્રય, લગ્ન ખર્ચા, મૃત્યુ ભોજન આદિ કુપ્રથાઓનો સખ્ત વિરોધ કરે છે, અને પર્દાપ્રથા જે અત્યત હાનિકારક છે તેને યથાશક્ય હટાવવાનો પ્રયત્ન કરવાનુ કહે છે

૪ ઠાકુર કિશનસિહજી ચોથરી મદમ્ય
૫ ,, સુગનસિહજી ,, ,,
૬ ડૉ વૃજલાલ ધ. મેઘાણી મુબઈ ,
૭ શ્રી ડાયાલાલ મણીલાલ મ્હેતા, પાલણપુર
૮. શ્રી. સુગનચદજી લૂણાવત, ધામણગાવ
૯. શ્રી નાનિલાલ દુલભજી ઝવેરી, જયપુર
૧૦ શેઠ શ્રી. ગજમલજી લલવાણી, જામનેર.
૧૧. શ્રી હરખલાલજી બગોટા, પૂના.
૧૨ શ્રી દીપચદજી ગોઠી, બેતુલ
૧૩ શ્રી. ચાદમલજી પારૂ, મન્દસોર
૧૪ શ્રી છોટેલાલજી જૈન, દિલ્હી
૧૫ શ્રી મગનમલજી કોચેટા, અમદપાદમ.
૧૬ શ્રી આણદરાજજી સુરાણા, જોધપુર.
૧૭ શ્રી અમોલખચદજી લોઢા, બગડી

શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન મહિલા પરિષદ, અજમેર

સ્થાન-અજમેર,

સમય તા૦ ૨૫ એપ્રિલ, ૧૯૩૩

શ્રી શ્વે સ્થા જૈન મહિલા પરિષદનુ અધિવેશન તા૦ ૨૫ ૪-૩૩ ને રોજ થયુ હતુ અધ્યક્ષના શ્રીમતી જગવતી દેવી (ધર્મપત્ની શેઠ અચલસિહજી જૈન, આગરા) એ કરી હતી સ્વાગત ભાષણ શ્રીમતી કેશરબહેન ચોરડિયા (સુપુત્રી શે૰ શ્રી. નથમલજી ચોરડિયા, નીમચ)એ વાચ્યુ હતુ મહિલા પરિષદમા પાસ થએલા પ્રસ્તાવમાથી મુખ્ય નીચે પ્રમાણે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૧: (શિક્ષા પ્રચાર) આ મહિલા પરિષદ સમસ્ત જૈન સમાજની મહિલાઓમા શિક્ષાની કમી ઉપર ખેદ પ્રગટ કરે છે. અને ભવિષ્યમા પુરૂષોની માફક જ વધુમા વધુ શિક્ષા (કેળવણી) મેળવવા માટે સર્વે બહેનોને અનુરોધ કરે છે

પ્રસ્તાવ ન ૨: (પર્દા-ઘુઘટ પ્રથા દૂર કરવા સબધી) આ પરિષદ પર્દા (ઘુઘટ)ની પ્રથાને સ્ત્રી જાતિની ઉન્નતિમા બાધક અને ત્યાજ્ય સમજીને તેને ઘૃણાની નજરે જુએ છે અને બધી બહેનોને પર્દા પ્રથા છોડવાનો અનુરોધ કરે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૩: (સ્વદેશી વસ્ત્ર સબધી) આ પરિષદ બધી બહેનોને અપીલ કરે છે કે તેઓ પોતાના દેશ તથા ધર્મની રક્ષા ખાતર ખાદી અથવા સ્વદેશી વસ્ત્રોનો જ ઉપયોગ કરે.

પ્રસ્તાવ ન. ૪: (બાળવિવાહ અને વૃદ્ધવિવાહનો વિરોધ) આ પરિષદ બાળવિવાહ તથા વૃદ્ધવિવાહને સ્ત્રી જાતિના અધિકારોને હરણ કરનાર તથા અત્યાચાર રૂપ સમજે છે. અને તેને સર્વથા બધ કરી દેવા ભારપૂર્વક અનુરોધ કરે છે

પ્રસ્તાવ ન. ૫: (રડવા કૂટવાના ત્યાગ સબધી) આ પરિષદ સ્ત્રી-સમાજમા પ્રચલિત રોવાકૂટવાની પ્રથાને નિન્દનીય માને છે અને બહેનોને અનુરોધ કરે છે કે તેઓ આ અમાનુષી પ્રથાને બિલકુલ બધ કરી દે

પ્રસ્તાવ ન. ૬: (કુરૂઢીઓનો ત્યાગ) આ પરિષદ સર્વ નિરર્થક કુરૂઢીઓ જે સ્ત્રીસમાજમા પ્રચલિત છે તેની નિંદા કરે છે. જેમકે-ફટાણા ગાવા, માટીના પૂતળા-સીતળા વગેરે, કબર, ભેરૂ, ભવાની વગેરેની પૂજા આદિ, તથા આવી માનતા અને વહેમો છોડવાનો અનુરોધ કરે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૭: (કન્યા ગુરૂકુળ સબંધી) આ પરિષદ શ્રી શેઠ નથમલજી ચોરડિયાને રૂા ૭૦ હજારની ઉદાર સખાવત માટે ધન્યવાદ આપે છે અને આગ્રહ કરે છે કે વહેલાસર આ ધન વડે 'કન્યા ગુરૂકુળ'ની સ્થાપના અવિલબ કરે.

શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન શિક્ષણ પરિષદ

અજમેર અધિવેશન વખતે લોકાનગર વિશેષરૂપે શ્રી શ્વે. સ્થા. જૈન શિક્ષણ પરિષદનુ પણ આયોજન કર્યુ હતુ આ પરિષદના અધ્યક્ષ શાંતિનિકેતનના પ્રો શ્રી. જિન વિજયજી હતા બનારસથી ૫ સુખલાલજી પણ આવ્યા હતા. અધ્યક્ષનુ વિદ્વતાપૂર્ણ ભાષણ થયુ હતુ પરિષદમા નીચે મુજબ મુખ્ય પ્રસ્તાવો પાસ થયા હતા

પ્રસ્તાવ નં. ૧. (સ્થા જૈન સસ્થાઓનું સગ[illegible]
આ પરિષદ એવુ મન્તવ્ય પ્રકટ કરે છે કે, સ્થા[illegible] સમાજની ભિન્ન ભિન્ન પ્રાન્તોમા ચાલતી અથવા [illegible] શરૂ થનારી બધી શિક્ષણ સસ્થાઓ (બાલાશ્રમ, ગુરૂકુળ આદિ) ઓછામા ઓછા ખર્ચે અધિક[illegible] સિદ્ધ થાય એટલા માટે બધી શિક્ષણ સ[illegible] એવા તત્ર (વ્યવસ્થા નીચે આવે કે[illegible] સસ્થાઓનુ નિરીક્ષણ શક્ય સહેલ[illegible] ત્રુટીઓનો તથા ખામીઓને દૂર કરવા[illegible] આવા તત્ર પ્રત્યે શિક્ષણ સસ્થાઓ[illegible]

પ્રસ્તાવ નં. ૨: (ધાર્મિક પાઠ્યક્રમ સંબંધી) આ પરિષદ્ નીચેની ત્રણ બાબતો માટે વિશેષ વ્યવસ્થાની આવશ્યકતા સમજે છે.

(અ) કેવળ ધાર્મિક પાઠશાળાઓમાં તથા અન્ય સંસ્થાઓ માટે એવો ધાર્મિક પાઠ્યક્રમ હોવો જોઈએ કે તે જગતને ઉપયોગી સિદ્ધ થાય તથા સમયાનુકુળ પણ હોય

(બ) ગુરુકુળો તથા બ્રહ્મચર્યાશ્રમો માટે ધાર્મિક તથા વ્યવહારિક શિક્ષણ અને વિશ્વસંસ્થાઓ માટે ઉચ્ચ દૃષ્ટિએ પાઠ્યક્રમ બનાવવો જોઈએ

(ક) ઉપરોક્ત પ્રસ્તાવને અમલમા લાવવા માટે ગ્રન્થપુસ્તકો તથા આવશ્યક પાઠ્ય પુસ્તકો નિશ્ચિત કરવા જોઈએ

પ્રસ્તાવ નં ૩: (સાધુ-સાધ્વીઓના શિક્ષણ સંબંધી) આ શિક્ષણ પરિષદ વર્તમાન સ્થિતિમાં સાધુ-સાધ્વીઓ માટે વ્યવસ્થિત તથા કાર્યસાધક અભ્યાસની ખાસ આવશ્યકતા સમજે છે. જેથી શાસ્ત્રોક્ત તથા ઇતર જ્ઞાન ઃ રીતે પ્રાપ્ત કરાય એ ઉદ્દેશ્યની સિદ્ધિ માટે આ સંઘના તત્ત્વાવધાનમાં એક કેન્દ્ર-સંસ્થા તથા અન્ય જ્ઞાનવાર સંસ્થાઓ સ્થપાય. આ સંસ્થાઓનું મુખ્ય તત્ત્વ એવું હોવું જોઈએ કે સમસ્ત સાધુ સંઘને અનુકુળ હોય અને અભ્યાસ કરવામા બાધક સિદ્ધ ન થાય.

આ સંસ્થામાં ભણનારા સાધુ-સાધ્વીઓને તેમની યોગ્યતા પ્રમાણે પ્રમાણ પત્રો આપવા અને વિવિધ શિક્ષણ દ્વારા તેમના જીવનને અધિક કાર્યસાધક અને વિશાળ બનાવવા.

જૈન ૨ પ્રસ્તાવ નં. ૪: (દીક્ષાર્થીઓની પરીક્ષા સંબંધી)
શ્રી ઋતુ પરિષદ્‌ની દૃઢ માન્યતા છે કે, સાધુપદ સુશોભિત
હોવાથી ૪ સુશિક્ષિત બનાવવા માટે પ્રત્યેક સાધુ-સાધ્વી
અધિવેશન ૪ની પરીક્ષા કરે. યોગ્ય શિક્ષણ આપ્યા પહેલા
આ અધિવેશનથી તે ગુરુપદની અવહેલના કરશે અને સાધુત્વને

આ અવિવેકપૂર્ણ અને પરીક્ષણ કર્યા પછી જ દીક્ષા આપવી.

પ્રસ્તાવો પસાર થયા.

દશમું અધિવેશન

પ્રસ્તાવ નં. ૧

સ્થાન ઘાટકોપર

રાકા પ્રત્યે સહાનુભૂતિ;

ગઢ (નાગપુર) જેવા ધ

૨૧-૨૨-૨૩ એપ્રિલ ૧૯૪૧

એદ છે તેમણે તા ૪ માર્ચમું અધિવેશન આઠ વર્ષ પછી એપ્રિલ સન ૧૯૪૧ના દિવસોમાં થયું

પ્રમુખ શ્રીમાન્ શેઠ વીરચંદભાઈ મેઘજી થોભણ હતા સ્વાગતાધ્યક્ષ શ્રી ધનજીભાઈ દેવશીભાઈ (ઘાટકોપર) હતા આ અધિવેશનમા કુલ ૨૮ પ્રસ્તાવો પાસ કરવામાં આવ્યા હતા જેમાના મુખ્ય પ્રસ્તાવો નીચે પ્રમાણે હતા·

પ્રસ્તાવ નં. ૩: (રાષ્ટ્રીય મહાસભાની પ્રવૃત્તિઓમાં સહયોગ આપવા વિષે) રાષ્ટ્રીય મહાસભાના રચનાત્મક કાર્યક્રમમા અને મુખ્યરૂપે નીચે જણાવેલ કાર્યોમા શક્ય સહયોગ આપવા માટે આ કૉન્ફરન્સ પ્રત્યેક ભાઈ-બ્હેનને સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે

ખાદી દ્વારા આર્થિક અસમાનતા દૂર થાય છે, સામાજિક સમાનતાની ભાવના પ્રગટ થાય છે અને ગરીબી અને ભૂખમરો ઓછો થાય છે. ખાદીના વ્યવહારથી ઓછામા ઓછી હિંસા થાય છે એટલા માટે પ્રત્યેક જૈન ધર્મીનું આવશ્યક કર્તવ્ય છે કે તેઓ ખાદીનો જ ઉપયોગ કરે.

ગ્રામોદ્યોગના ઉત્તેજનમાં તથા સ્વદેશી વસ્તુઓના ઉપયોગમા રાષ્ટ્રની આર્થિક આબાદી હિંદના ગ્રામોનો ઉદ્ધાર તથા રાજકીય પરતંત્રતા દૂર કરવાનું સાધન છે એટલા માટે પ્રત્યેક જૈન ભાઈ-બ્હેને સ્વદેશી વસ્તુઓનો જ ઉપયોગ કરવો જોઈએ.

જૈન ધર્મમાં અસ્પૃશ્યતાને જરા પણ સ્થાન નથી. જૈન ધર્મ પ્રત્યેક મનુષ્યની સામાજિક સમાનતામા માને છે એટલા માટે પ્રત્યેક જૈનનું એ આવશ્યક કર્તવ્ય છે કે તે અસ્પૃશ્યતાનું નિવારણ કરે અને હરિજનોદ્ધારના રાષ્ટ્રીય મહાસભાના કાર્યમા યોગ્ય સહકાર આપે

પ્રસ્તાવ નં. ૮: (ધાર્મિક શિક્ષણ સમિતિની સ્થાપના) આ કૉન્ફરન્સ એમ માને છે કે જૈનધર્મના સંસ્કારોનું સિંચન કરનાર ધાર્મિક શિક્ષણ આપણી પ્રગતિ માટે આવશ્યક છે. એટલા માટે ચાલુ શિક્ષણ જે નિર્જીવ અને સત્ત્વહીન છે. તેમા પરિવર્તન આણી તેને હૃદયસ્પર્શી અને જીવન્ત શિક્ષણ બનાવવાની ખાસ આવશ્યકતા છે. આ માટે શિક્ષણક્રમ તથા પાઠ્યક્રમ તૈયાર કરવા માટે તથા સમસ્ત હિંદમા એકજ પ્રકારના ક્રમથી ધાર્મિક શિક્ષણ આપવામાં આવે, તેની પરીક્ષા લેવામાં આવે એવી ધાર્મિક-શિક્ષણની એક યોજના બનાવવા માટે નીચે જણાવેલ સજ્જનોની-અન્ય સહયોગીને કો-ઑપ્ટ કરવાની સત્તા સાથે-એક ધાર્મિક શિક્ષણ સમિતિની સ્થાપના કરવામાં આવે છે.

આ શિક્ષણ સમિતિની યોજનામા જૈન દર્શનના ગભીર અધ્યયન કરનાર માટે પણ અભ્યાસક્રમનો પ્રબન્ધ કરવામા આવશે

૧. શ્રીમાન મોતીલાલજી મૂથા, પ્રમુખ, સતારા
૨ ,, ખુશાલભાઈ ખેંગારભાઈ, મુબઈ
૩ ,, જેઠમલજી સેઠિયા, બીકાનેર.
૪ ,, ચીમનલાલ પોપટલાલ શાહ, મુબઈ
૫ ,, મોતીલાલજી શ્રી શ્રીમાલ, રતલામ
૬. ,, કુદનમલજી ફિરોદિયા, અહમદનગર
૭. ,, લા હરજસરાયજી જૈન અમૃતસર
૮ ,, કેશવલાલ અબાલાલ, ખભાત
૯ ,, ચુનીલાલ નાગજી વોરા, રાજકોટ
૧૦ ,, માણેકચદજી કિશનદાસજી મૂથા અહમદનગર
૧૧. ,, ધીરજલાલ કે તુરખિયા બ્યાવર

પ્રસ્તાવ ન ૫ (મહાવીર જયતીની છુટ્ટી વિષે) શ્રી અ. ભા. શ્વે સ્થા જૈન કોન્ફરન્સ, ભગવાન મહાવીરના જન્મદિવસની સાર્વજનિક છુટ્ટી માટે દરેક પ્રાતિય અને કેન્દ્રીય સરકારો પાસે પોતાની નમ્ર માગણી કરે છે ભારતના સમસ્ત જૈનોએ આ માટે સહયોગપૂર્વક યોગ્ય પ્રવૃત્તિ કરવી જોઈએ

(બ) જે જે દેશી રાજ્યોએ પોતપોતાનાં રાજ્યોમાં ભગવાન મહાવીરના જન્મદિવસની સાર્વજનિક છુટ્ટીનો સ્વીકાર કરેલ છે તેમનો આ કમિટી પૂર્ણ આભાર માને છે અને બાકીના રાજ્યોને અનુરોધ કરે છે કે તે પણ તે પ્રમાણે સાર્વજનિક છુટ્ટીની જાહેરાત કરે

(ક) સમસ્ત જૈન ભાઈઓને આ શુભ દિવસે પોતાનો વ્યાપાર વગેરે બધ રાખવાનો આ કમિટી અનુરોધ કરે છે.

પ્રસ્તાવ ન. ૬: (કન્યા–શિક્ષણના વિષે) કન્યા–શિક્ષણની આવશ્યકતા વિષે આજે બે મત ન હોવા છતા આ દિશામા આપણી પ્રગતિ બહુ જ મદ અને અસતોષજનક છે એટલા માટે પોતાની કન્યાઓને યોગ્ય શિક્ષણ આપી સસ્કારી બનાવવી એ પ્રત્યેક માતા–પિતાનુ કર્તવ્ય છે.

પ્રસ્તાવ ન ૭: (સામાજિક–સુધાર વિષે) બાળલગ્ન, અસમાન વયના વિવાહો, કન્યાવિક્રય તથા બહુપત્નીત્વના અનિષ્ટો વિશે મતભેદ ન હોવા છતા જ્યા ત્યા એવા બનાવો બની રહ્યા છે જે શોચનીય છે આવા પ્રસગો ઉપસ્થિત ન થાય એવો લોકમત જાગ્રત કરવો જોઈએ અને આવા અનિષ્ટ પ્રસગોમાં કોઈ પણ સ્થાનકવાસી સ્ત્રી–પુરુષે ભાગ લેવો ન જોઈએ.

આ કોન્ફરન્સ એવી ભલામણ કરે છે કે –

૧. વિવાહની ઉમર કન્યાની ઓછામા ઓછી ૧૬ વર્ષની હોવી જોઈએ અને વરની ૨૦ વર્ષની હોવી જોઈએ

૨, વિવાહ સબધ સ્થાપિત કરવામા આજની પ્રચલિત, ભૌગોલિક અને જાતિવિષયક મર્યાદા આધુનિક સામાજિક પરિસ્થિતિની સાથે બીલકુલ અસગત અને પ્રગતિમાં બાધક છે માટે આ મર્યાદાઓને દૂર કરવી જોઈએ

૩. લગ્ન વરવધૂની સમતિપૂર્વક હોવાં જોઈએ જે જે ક્ષેત્રોમા સમ્મતિ લેવાનો પ્રતિબધ છે તે વહેલી તકે દૂર થવો જોઈએ.

પ્રસ્તાવ ન. ૮: (પૂના બોર્ડિંગના મકાનફડ વિષે) પૂના બોર્ડિંગ માટે મકાન બનાવવા માટે બોર્ડિંગ સમિતિએ પૂનામા પ્લોટ (જમીન) ખરીદી લીધો છે. જ્યા ૮૦ વિદ્યાર્થીઓ રહી શકે એવુ મકાન બાધવાનો નિર્ણય કરવામા આવે છે. આ મકાન મા તથા બોર્ડિંગમા અભ્યાસ કરનાર ગરીબ વિદ્યાર્થીઓ છાત્રવૃત્તિ આપવા માટે ફડ કરવાનો પ્રસ્તાવ કરવામા આવે છે અને પ્રત્યેક–ભાઈ–બહેન તેમા પોતાનો શક્ય સહયોગ અવશ્ય આપે એવો કોન્ફરન્સ દરેકને અનુરોધ કરે છે. આ ફડ બોર્ડિંગ સમિતિ એકત્રિત કરે અને તે દ્વારા યથાશીઘ્ર મકાન બંધાવે એવો નિશ્ચય કરવામા આવે છે

પ્રસ્તાવ ન. ૧૦: (મુનિ–સમિતિની બેઠક કરવા વિષે) સાધુ–સાધ્વી–સઘની એકતા જ સ્થાનકવાસી સમાજના અભ્યુત્થાનનો એકમાત્ર ઉપાય છે આ મુનિ–સમિતિના ચાર સભ્યોએ એક યોજનાની તૈયાર કરેલ છે તેનો મૂળ સિદ્ધાત ઉ આ યોજના સાધુ–સમિતિ દ્વારા વિશેષ છે એટલા માટે અજમેર સાધુ–સમેલનમા મુનિ–સમિતિની એક બેઠક યોગ્ય સ્થાને બોલાવવાનો આ અધિવેશન પ્રસ્તાવ કરે સપન્ન કરવા માટે નીચે જણાવેલ સમિતિ નિયુક્ત કરવામા આવે છે –

૧ શ્રી ચુનીલાલ ભાઈચદ મહેતા
૨ , માણેકલાલ અમુલખરાય

૩. શ્રી જગજીવન દયાળજી મુંબઈ
૪. ,, ગિરધરલાલ દામોદર દફતરી ,,
૫. શ્રી જીવણલાલ છગનલાલ સંઘવી, અમદાવાદ
૬. ,, દીપચંદ ગોપાળજી, થાન-તથા મુંબઈ
૭. ,, જમનાદાસ ઉદાણી, ઘાટકોપર
૮. ,, કાલુંરામજી કોઠારી, બ્યાવર
૯. ,, પુનમચંદજી કોઠારી, હૈદરાબાદ
૧૦ ,, દી. બ. મોતીલાલજી મુથા, સતારા
૧૧. ,, રતનલાલજી નાહર, બરેલી
૧૨. ,, રા. સા. ટેકચંદજી જૈન, જંડિયાલા
૧૩. ,, લા. રતનચંદજી હરજસરાયજી જૈન, અમૃતસર
૧૪. ,, દી. બ. બિશનદાસજી, જમ્મૂ
૧૫. ,, ધોંડીરામજી મૂથા, પૂના
૧૬. ,, નવલમલજી ફિરોદિયા, નગર
૧૭ ,, કલ્યાણમલજી વેદ, અજમેર
૧૮. ,, પ્રેમરાજજી બહોરા, પીપલિયા
૧૯ ,, જીવાભાઈ ભણશાલી, પાલણપુર
૨૦, ,, માનમલજી ગોલેચ્છા, ખીચન
,, ચુનીલાલજી નાગજી વોરા, રાજકોટ
,, રા. સા. ઠાકરશીભાઈ મકનજી ઘીયા, રાજકોટ
૨૩. રા. સા. મણિલાલ વનમાળીદાસ શાહ, રાજકોટ
૨૪. શ્રી સરદારમલજી છાજેડ, શાહપુરા-મંત્રી
૨૫ ,, ધીરજલાલ કે. તુરખિયા, બ્યાવર ,,

ઉપર જણાવેલ સમિતિને આ કાર્ય માટે સંપૂર્ણ પ્રબંધ કરવાની તથા ફંડ કરવાની સત્તા પણ આપવામાં આવે છે.

પ્રસ્તાવના નં. ૧૧. (સ્ત્રી-શિક્ષણ સહાયના ફંડ વિષે)

...ા તથા સ્ત્રી-શિક્ષણ તેમ જ વિધવા બહેનોની શિક્ષા એક ફંડ એકઠું કરવાનો નિર્ણય કરવામાં આવે છે. ...વાથી ...ા ફંડ કોન્ફરન્સની પાસે રહેશે પરંતુ તેની વ્યવસ્થા એક ઉપસમિતિ કરશે આ માટે નીચે જણા-...ની એક સમિતિ કો-ઓપ્ટ કરવાની સત્તાની ...માં આવે છે –

...ચંચળબેન હેમચંદભાઈ રામજીભાઈ, મુંબઈ
...મીબેન વીરચંદભાઈ મેઘજીભાઈ ,,
...જળબેન ટી. જી. શાહ ,,
...ન અમૃતલાલ રાયચંદ ઝવેરી ,,
...રબેન પુંજાભાઈ ,,
...ઉમેદચંદ ગુલાબચંદ ,,

(પાનાની ડાબી કિનારે કપાયેલા અક્ષરો:) આ અધિવે... ...ત્તાવો પસાર કર્યા ...પ્રસ્તાવ નં. ...કા પ્રત્યે સહાનુભૂતિ ...કા (નાગપુર) જેવા ધં... ...છે તેમણે તા. ૪ માર્ચ ... ...ન ...બૂહદ ...વાથી ...ધિવેશન ...અધિવેશન

પ્રસ્તાવ નં. ૧૨: સંગઠ્ઠન વધારવા વિષે આ અધિવેશન દૃઢતાપૂર્વક એમ માને છે કે, આપણામાં જ્યાં સુધી સંગઠ્ઠન પેદા નહિ થાય ત્યાં સુધી સંઘની ઉન્નતિ થવી બહુ જ મુશ્કેલ છે. એટલા માટે પ્રત્યેક ગામે પોતપોતાનું વિધાન તૈયાર કરી સંગઠ્ઠન કરવા માટે આ અધિવેશન આગ્રહ કરે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૩: (વીરસંઘની નિયમાવલી તથા તેના સંચાલન વિષે) વીરસંઘનો પ્રસ્તાવ અને તેનું ફંડ મુંબઈ અધિવેશનમાં થએલ છે. નિયમાવલી પણ બનાવવામાં આવેલ છે. પરંતુ હજી સુધી કાર્યરૂપે વીરસંઘ બનેલ નથી એટલા માટે આ કોન્ફરન્સ એવો નિર્ણય કરે છે કે, સ્થા. જૈન સમાજમાં આજીવન અથવા ઉચિત સમય માટે સેવા આપનાર સ્થા. જૈન સમાજના સાચા શ્રાવકો-પછી ભલે તેઓ ગૃહસ્થી હોય કે બ્રહ્મચારી-પણ તેમનો 'વીરસેવા સંઘ' જલ્દી બનાવી લેવામાં આવે. વીરસંઘના સદસ્યની યોગ્યતા અને આવશ્યકતાનુસાર જીવનનિર્વાહનો પ્રબંધ કરવા માટે વીરસંઘના ફંડનો ઉપયોગ કરવામાં આવે

વીરસંઘની નિયમાવલીમાં સંશોધન કરવા માટે તેમ જ વીરસંઘની યોજનાને જલ્દી કાર્યરૂપમાં પરિણત કરવા માટે નીચે જણાવેલ સજ્જનોની એક સમિતિ બનાવવામાં આવે છે –

૧. શ્રી બરદભાણજી પિતલિયા, રતલામ
૨. ,, સરદારમલજી છાજેડ, શાહપુરા
૩. ,, કુંદનમલજી ફિરોદિયા, અહમદનગર
૪. ,, જગજીવન દયાળ, ઘાટકોપર

પ્રસ્તાવ નં. ૧૪: બનારસ ગવર્નમેન્ટ સંસ્કૃત કોલેજમાં જૈન દર્શનશાસ્ત્રી તથા જૈન દર્શન આચાર્ય પરિક્ષાઓની યોજનાને આ કોન્ફરન્સ સંતોષની દૃષ્ટિએ જુએ છે. પરંતુ ઉપરોક્ત વિષયોનો અભ્યાસ કરવા-કરાવવા માટે હજી સુધી કોઈ પણ અધ્યાપકની નિયુક્તિ થએલ નથી તે પ્રત્યે ખેદ પ્રગટ કરે છે. જૈન દર્શનનું ભારતવર્ષ અને સંસારની વિભિન્ન સંસ્કૃતિઓમાં એક આદરણીય સ્થાન છે. આ સંબંધમાં કેવળ પરીક્ષાઓની યોજના જ પર્યાપ્ત નથી એટલા માટે આ કોન્ફરન્સ યૂ. પી. સરકારને ભારપૂર્વક અનુરોધ કરે છે કે ઉપર્યુક્ત કોલેજમાં જૈન દર્શનના અધ્યયન-અધ્યાપન માટે અધ્યાપકની નિયુક્તિ માટે બજેટમાં ઉચિત ફંડનો પ્રબંધ કરે

આ પ્રસ્તાવની એક નકલ યૂ. પી. પ્રાન્તના ગવર્નર શિક્ષણ મંત્રી, Director of public instruction તથા કોલેજના પ્રિન્સિપાલ તથા રજિસ્ટ્રારને મોકલી આપવામાં આવે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૫: (સિદ્ધાંત શાળાઓ વિષે) વર્તમાનમાં સાધુ-સાધ્વીઓના અભ્યાસને માટે જુદે જુદે ઠેકાણે પગારદાર પંડિતો રખાય છે તેથી જુદા જુદા સંઘોને ખૂબ ખર્ચ થાય છે. તેથી નાના ગામોમાં આવા ચાતુર્માસ પણ થઈ શકતા નથી. અતઃ આ કોન્ફરન્સ ભિન્ન ભિન્ન પ્રાંતોમાં સિદ્ધાંત શાળાઓ ખોલવા માટે અલગ અલગ પ્રાન્તોના શ્રીસંઘોને વિનંતિ કરે છે જ્યારે આ સંસ્થાઓ શરૂ થાય ત્યારે તે પ્રાંતમાં વિચરનારા મુનિઓ પોતાના શિષ્યોને ભણવા માટે ત્યાં મોકલે એવી પ્રાર્થના કરવામાં આવે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૬: (સાંપ્રદાયિક મંડળો માટે વિરોધ) આ કોન્ફરન્સ સ્થા. જૈન સમાજને અનુરોધ કરે છે કે સમાજનું સંગઠન વધારવા માટે અને સાંપ્રદાયિક કલેષ ન વધે એ માટે સાંપ્રદાયિક મંડળોની સ્થાપના ન કરે.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૭: (જૈન ગણના વિષે) ભારતમાં સ્થા. જૈનોની સંખ્યા તથા વાસ્તવિક પરિસ્થિતિનો અભ્યાસ કરવા માટે જનગણના કરવાની નિતાન્ત આવશ્યકતા છે અતઃ નિર્ણય કરવામાં આવે છે કે આ કામને શરૂ કરી દેવું. આ માટે કોન્ફરન્સ ઓફિસ દ્વારા તૈયાર કરેલા ફોર્મ તમામ સંઘોને મોકલી આપવા અને અમુક સમયની મર્યાદામાં ભરીને મોકલી દેવાનો અનુરોધ કરવો.

પ્રસ્તાવ નં. ૧૮: (સ્થા. જૈન ગૃહો બનાવવા વિષે) વ્યાપાર, ઉદ્યોગ કે નોકરી માટે દૂર દેશાવરોમાં આપણા સ્વધર્મી ભાઈઓ નિર્ભયતા અને સરલતાપૂર્વક આવી જઈ શકે અને પરદેશમાં સ્વધર્મી ભાઈઓના સહવાસમાં રહીને તેમના સહયોગથી વ્યાપાર ધંધા દ્વારા પોતાના જીવનને સુખશાંતિમય બનાવી શકે એ માટે હિંદમાં મુંબઈ, કલકત્તા, મદ્રાસ, કરાચી, અમદાવાદ, દિલ્હી, ઇંદોર, કાનપુર આદિ મોટા મોટા વ્યાપાર કેન્દ્રોમાં તથા હિંદથી બહાર રંગૂન, એડન, મોમ્બાસા, કોબે (જાપાન) આદિ કેન્દ્રોમાં આપણા સ્વધર્મી ભાઈઓને ઉચિત રૂપે રહેવાની અને ખાવાપીવાની સગવડ મળે એવી વ્યવસ્થાવાળા શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન ગૃહો (S S Jain Homes) સર્વત્ર સ્થાપિત કરવાની આવશ્યકતા આ કોન્ફરન્સ સ્વીકારે છે. આર્થિક પ્રશ્નોનું નિરાકરણ કરવા અને આ યોજનાને અમલમાં લાવવા માટે તે તે કેન્દ્રોના શ્રી સંઘો અને શ્રીમન્ત સજ્જનોને ભલામણ કરે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૨૦: હિંદના સ્થા. જૈનોની વેપારી પેઢીઓ, દુકાનો અને કારખાનાઓના નામ તથા યુનિવર્સિટીમાં પાસ થએલા ગ્રેજ્યુએટ ભાઈ બહેનો પોતાના નામો સાથે રૂા. ૧) કોન્ફરન્સ ઓફિસને મોકલી આપે તેમના નામો કોન્ફરન્સ તરફથી પુસ્તક રૂપે પ્રકટ કરવા.

પ્રસ્તાવ નં. ૨૨ (પાર્શ્વનાથ વિદ્યાશ્રમ, બનારસ વિષે) શ્રી સોહનલાલ જૈન ધર્મપ્રચારક સમિતિ-અમૃતસર જે જૈન દર્શન અને ઇતિહાસના ઉચ્ચાભ્યાસને માટે સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થીઓને પ્રોત્સાહન આપે છે, જેનું કાર્ય શ્રી પાર્શ્વનાથ વિદ્યાશ્રમ, બનારસ દ્વારા થઈ રહેલ છે તેને આ કોન્ફરન્સ પસંદ કરે છે અને સ્થા. જૈન વિદ્યાર્થીઓ તથા શ્રીમંતોનું ધ્યાન તે તરફ આકર્ષિત કરે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૨૩: (જૈનોની એકતા વિષે) આ કોન્ફરન્સ જૈન સમાજની એકતા માટે આગ્રહપૂર્વક સમર્થન કરે છે અને જ્યારે પરસ્પરની એકતામાં બાધક પ્રસંગ ઊભો થાય તો તેનો યોગ્ય ઉપાય કરીને એકતાની પુષ્ટી માટે પ્રયત્ન કરવા પ્રત્યેક સ્થા. જૈન ભાઈઓ તથા બહેનોને પ્રાર્થના કરે છે. જૈન ધર્મના ત્રણે ફિરકાની કતિપય માન્યતા ભેદને બાજુએ રાખીને પરસ્પરને સમાનરૂપે સ્પર્શતા અનેક પ્રશ્નોની ચર્ચા કરવા માટે તથા આન્તરિક એકતા વધારવા માટે સમગ્ર જૈન સમાજની સંયુક્ત પરિષદ્ ભરવાની આવશ્યકતા કોન્ફરન્સ સ્વીકારે છે અને એવી કોઈ યોજના હો તેમાં પૂર્ણ સહયોગ દેવાનું જાહેર કરે છે.

પ્રસ્તાવ નં. ૨૫ (બેકારી નિવારણ) આપણા સમાજમાં વ્યાપેલી બેકારી નિવા[illegible] કોન્ફરન્સ 'જૈન અનઇમ્પ્લોયમેન્ટ ઇન્ફર્મે[illegible] (બેકારોની ખબર મેળવી કામે લગાડનાર) સ્થાપવાનો નિર્ણય કરે છે તથા આપણા ઉદ્યોગપતિઓને વિનંતિ કરે છે કે તેઓ જૈન ભાઈઓને કામે લગાડીને બેકારી[illegible]

પ્રસ્તાવ નં. ૨૬ અખિલ ભા[illegible] સંઘોનું પ્રતિનિધિત્વ કરનારી આ

હ્યાળ

(૧૦) સપ્રમિતિ-વર્ધમાન સંચાલકોને વિનંતિ કરે છે કે જૈન ધર્મના સ્થાનકોના પાઠ્ય પુસ્તકોમાં જેમ અન્ય ધર્મોના તેમજ અવતારી પુરુષોના ચરિત્ર-વર્ણન અપાય છે, એવી જ રીતે સાધુ-સંમેલનના રત્નોના જીવન-ચરિત્રો પણ આપવાની આભાર સાથે માંગણી છે, (બાકી પ્રસ્તાવો ધન્યવાદાત્મક હતા.)

નથી ઘાટકોપરમા આ દશમુ અધિવેશન, ફંડની દૃષ્ટિએ તેઓ પ્રતિસ્પર્ધ શું. પૂના બોર્ડિંગને માટે ૪૫ હજાર ફંડ થયું સ્ત્રી-શિક્ષણ અને વિધવા સહાય પણ રૂ. ૧૦ હજાર થયા. બીજી વિશેષતા એ કે કૉન્ફરંસના જુના વિધાનમા પરિવર્તન કરીને નવુ લોકશાહી વિધાન બનાવ્યુ જેમા સદસ્ય ફી રૂ. ૧) વાર્ષિક રાખીને હરેક ભાઇને સભાસદનો અધિકાર આપ્યો.

આ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન યુવક પરિષદ્

સ્થા જૈન યુવક પરિષદ્નુ બીજુ અધિવેશન તા. ૧૦-૪-૪૧ ઘાટકોપરમા થયુ. પ્રમુખસ્થાને પંજાબના સુપ્રસિદ્ધ લાલા હરજસરાયજી જૈન B A બિરાજ્યા હતા. ડૉ. વ્રજલાલ ધ. મેઘાણી સ્વાગતાધ્યક્ષ હતા. પરિષદમા કુલ ૧૮ ઠરાવ પાસ થયા હતા. તેમાના મુખ્ય નીચે પ્રમાણે છે—

(૪) વીરસંઘની યોજના, (૬) સર્વદેશીય શિક્ષા પ્રચારક ફંડની યોજના (૭) આર્થિક અસમાનતા નિવારણ (૮) ઐચ્છિક વૈધવ્ય પાલન એટલે બલાત્ નહિ, (૯) ...ન જૈનોના ત્રણે ફિરકાના ઐક્યીકરણ (૧૨) સ્ત્રી-શિક્ષા પ્રચાર (૧૪) જૈન બેન્કની સ્થાપના, (૧૭) જૈન યુવક સંઘને વાથી ...યી સંસ્થા બનાવવી, (૧૮) યુવક સંઘનુ વિધાન ...વવા વિષે.

અધિવેશનમા લાલા હરજસરાય જૈનનુ ભાષણ, મનનીય હતુ. આ અધિવેશનમા ... સમસ્યાઓ પર એમણે સારો પ્રકાશ પાડયો હતો. ...તાવો પસાર કર્યા.

...શ્રી. જૈન મહિલા પરિષદ

પ્રસ્તાવ નં. ... અધિવેશન વખતે મહિલા પરિષદ પણ થઈ ... પ્રત્યે સહાનુભૂતિ ... અધ્યક્ષતા શ્રીમતી નવલબેન હેમચંદભાઇ (નાગપુર) જેવા ધા. તેમનું ભાષણ પણ ઘણું સુંદર હતુ. ... છે તેમણે તા. ૪ માર્ચ ... ઉન્નતિના ઉપાયો બતાવ્યા હતાં.

... શિક્ષણ પ્રચાર, સમાજ સુધાર, ... ઘણા ઠરાવ થયા હતા.

અગ્યારમું અધિવેશન, સ્થાન-મદ્રાસ

ઘાટકોપર અધિવેશનથી આઠ વર્ષ બાદ કૉન્ફરન્સનુ ૧૧મું અધિવેશન તા૦ ૨૪-૨૫-૨૬ ડિસેમ્બર, ૧૯૪૯ના દિવસોએ મદ્રાસમા થયુ હતુ તેના અધ્યક્ષ મુંબઇ લેજીસ્લેટીવ એસેમ્બલી (નાગપુરના)ના સ્પીકર માનનીય શ્રી કુંદનમલજી ફીરોદિયા હતા સ્વાગતાધ્યક્ષ શેઠ મોહનમલજી ચોરડિયા, મદ્રાસ હતા. અધિવેશનનુ ઉદ્ઘાટન મદ્રાસ સરકારના મુખ્ય મંત્રી શ્રી કુમાર સ્વામી રાજાએ કર્યું હતુ

મદ્રાસ જેવા દૂર પ્રાંતમા આ અધિવેશન હોવા છતા પણ સમાજમાં સારી જાગૃતિની લહેર પ્રસરી ગઇ હતી. પાંચ છ હજાર લગભગની હાજરી હતી અધિવેશનની વ્યવસ્થા સુંદર હતી આવનારા મ્હેમાનોને દરેક પ્રકારે સારી સગવડ આપવામા આવી હતી. ગત અધિવેશનોની અપેક્ષા આ અધિવેશન અલૌકિક હતુ, લોકો આજ પણ એને યાદ કરે છે.

આ અધિવેશનમા કુલ ૧૯ ઠરાવો થયા હતા. પ્રમુખશ્રી સુંદર રીતે કાર્ય સંચાલન કર્યું હતુ વિવાદાસ્પદ વિષયો ઊભા થયા તેનુ નિરાકરણ પણ શાંતિથી થયુ હતુ. તેનુ શ્રેય અધિવેશનના સુદક્ષ અને યોદ્ધા પ્રમુખશ્રીને જ હતુ

આ સંમેલનમા નીચે મુજબ અગત્યના પ્રસ્તાવો પસાર કરવામા આવ્યા હતા.

હિંદની સ્વતંત્રતા અંગે

પ્રસ્તાવ નં. ૧ : સેંકડો વર્ષોની ગરીબી અને અજ્ઞાનપૂર્ણ ગુલામી બાદ, વિશ્વવ્યાપી પ્રચંડ બ્રિટીશ સલ્તનત પાસેથી અહિંસક માર્ગ દ્વારા ભારતને સ્વતંત્રતા પ્રાપ્ત થઇ તે સમસ્ત હિંદીઓ માટે મહાન ગૌરવ, સ્વમાન અને આનંદનો વિષય છે, આઝાદી બાદ પ્રથમ વાર થતુ કોન્ફરન્સનુ આ અધિવેશન ભારતને મળેલ આઝાદી માટે પોતાનો હાર્દિક આનંદ વ્યક્ત કરે છે અને મળેલ આઝાદીને ચિરસ્થાયી બનાવવા માટે રાષ્ટ્રને હાર્દિક સહકાર દેવાનો પ્રત્યેક ભારતીયને અનુરોધ કરે છે. હિન્દ જેવા મહાન ભવ્ય અને પ્રાચીન રાષ્ટ્રની આઝાદી, વિશ્વને માટે અતિ મહત્વનો પ્રસંગ છે, આથી વર્તમાન વિશ્વના આંતરરાષ્ટ્રીય પ્રવાહમા અનેક પરિવર્તન થવાનો સંભવ છે. તથા સમસ્ત એશિયાઇ

નૂતન જાગૃતિ પ્રગટ થશે આ પ્રકારે હિન્દ ...થી, સમસ્ત વિશ્વને વિશિષ્ટ અહિંસક પ્રકાશ ...ન મળશે અને વિશ્વની સમગ્ર ગુલામ ...નમાર્ગ સફળ થશે

આગામી વસ્તીગણતરી અંગે

પ્રસ્તાવ ન. ૫: ઓલ ઇન્ડિયા સ્થા. જૈન કોન્ફરન્સનું અધિવેશન કેન્દ્રિય સરકારને પ્રાર્થના કરે છે આગામી વસ્તી ગણતરીમા હિન્દુ, મુસ્લિમ, ... શીખ, ખ્રિસ્તી જૈન ધર્મવાચક શબ્દ રાખવામા ... છે તેમ 'જૈન' પણ ધર્મવાચક શબ્દ હોવાથી, ...ના અનુયાયીઓની જનસંખ્યાની માહિતી માટે, ગણત્રીમા 'જૈન'નુ કોલમ રાખવામા આવે માહિતી-પત્રક ખાતાને આ પ્રકારની ખાસ આપવામા આવે કે તેઓ જનતાને ખાસ પૃથક ધર્મવાચક જનગણના સિદ્ધાંત પર 'જૈન' નામ 'જૈન' કોલમમા ભરે, સાથે જૈન ભાઈ-...ના આપવામાં આવે છે કે આગામી જન-...'જૈન' કોલમમા જ તેઓ પોતાનુ નામ લખાવે.

પ્રસ્તાવની નકલ કેન્દ્રિય સરકારના ગૃહવિભાગને ...ની મત્તા પ્રમુખશ્રીને આપવામા આવે છે

સંઘ–ઐક્ય યોજના

'આજ સુધી સંઘ ઐક્ય યોજના અંગે થયેલ ...ને બતાવી આપતા, જેઓએ સ્વીકૃતિ આપેલ તેમને ધન્યવાદ અને હજી સુધી જેઓએ સ્વીકૃતિ ...લ નથી તેમને સ્વીકૃતિ મોકલી આપવાનો આગ્રહ ...ઠરાવ કરતો' ઠરાવ શ્રી ચીમનલાલ ચકુભાઈ શાહે કર્યો હતો અને આજના સંગઠનના જમાનામા ...ઐક્ય યોજનાની અનિવાર્ય આવશ્યકતા દર્શાવી ... આ યોજનાને શ્રી ખીમચંદ મગનલાલ વોરા, ... ગીરધરલાલ દામોદર દફતરી, શ્રી જમનત-... એન્જીનીયર, શ્રી. નટવરલાલ કપુરચંદ શાહ, શ્રી ...ભાનુ ડાગી, શ્રી બાલચંદજી, શ્રી. શ્રીમાળી, શ્રી ...ચંદજી-ભણશાળી, શ્રી. માણેકચંદજી ગુલેચ્છા, શ્રી. ...જી સુરાણા, શ્રી. ઇન્દ્રચંદજી શાસ્ત્રી, શ્રી. ...લાલજી તાતેડ, શ્રી વનેચંદભાઈ દુર્લભજી ઝવેરી,

આપ્યો હતો. એટલુ જ ... પરંતુ આ યે... પાડવા માટે શક્ય બધો મદદાર આપ... દર્શાવી હતી.

શ્રી ચંદુલાલ અમરતલાલ શાહે ... ધર્મસિંહજી મ ના સંપ્રદાય ... કોટી–આઠ કોટી વચ્ચે અંતર હોઇ, ... સંગઠીત થયા બાદ, અમો ભળવા ... આના અનુસંધાને, શ્રી ચીમનલાલ ચકુભાઈ ... કે છ કોટી–આઠ કોટીનો પ્રશ્ન વિકટ છે એ ખરૂ, પ... જો આપણે એકતા સાધવી હશે તો બન્નાએ એક કોટી ... થવુ પડશે પ્રમુખ મહાશયે પણ સંઘ–ઐક્ય યોજના અંગે બોલતાં કહ્યુ કે આ યોજનાને પાર પાડવા માટે આપણામા મક્કમતા જોઇએ અને આપણામા જો મક્કમતા હશે તો આ યોજના સરળતાથી પાર પડી શકશે.

શ્રી ચીમનલાલ ચકુભાઇ શાહના પ્રસ્તાવમા કોઇ વિરૂદ્ધમા ન હોવાથી, નીચેનો ઠરાવ સર્વાનુમતે પસાર થયો હતો –

પ્રસ્તાવ ન. ૬: ધર્મ અને સમાજના ઉત્થાન માટે સંગઠન અને ઉચ્ચ ચારિત્રની આવશ્યકતા છે, સ્થા-નકવાસી જૈન ધર્મમા પણ વર્ષોથી સંગઠનનો વિચાર ચાલી રહ્યો છે, અજમેરનુ સાધુ-સમેલન આ વિચારનુ ફળ હતુ, અજમેર અને ઘાટકોપરના અધિવેશનોમા પણ આ આંદોલન હતુ, સંગઠનની અખંડ વિચારધારાથી તા. ૨૨–૧૨–'૪૮ના રોજ બ્યાવરમાં મળેલ કોન્ફ-રન્સની જનરલ કમીટી થઇ ત્યારે સંઘ ઐક્યનો પ્રસ્તાવ થયો બ્યાવર થી ... સંઘ ઐક્યની ... નિર્ણય પ્રતિજ્ઞા કરી અને જનરલ કમીટી બાદ તુરત માનનીય ત્રિવેદીયાજી મા ના નેતૃત્વમા ડેપ્યુટેશન ઐક્યની સિદ્ધિ માટે નીકળ્યુ, સંઘ–ઐક્યની બનાવવામા આવી–તેમા શરૂઆતમા એકતાની ... સાત કલમો તાત્કાલિક અમલમા લાવવાની ... રૂપે એક આચાર્ય અને એક સમાચારીમા સર્વ જૈન સંપ્રદાયોનો એક શ્રમણ સંઘ બનાવ... તૈયાર કરવામા આવી આ યોજનાનો આ... હૃદયથી સ્વીકાર કરે છે અને તેની સિ... ધર્મનો ઉત્કર્ષ જુએ છે, આજ સુ...

સુપ્રામિહાયેના મુનિવરો અને શ્રી સઘોએ આ
ાનો સ્વીકાર કરેલ છે તેમને આજનુ અધિવેશન
ધન્યવાદ આપે છે, તેવી જ રીતે જેમણે અજમેર
સંમેલનના ઠરાવો-પ્રસ્તાવોનુ પાલન કર્યુ છે તેમનો પણ
...ર્યો છે, જેમના તરફથી હજુ સ્વીકૃતિ મળી
...આપશ્રી આ અધિવેશન સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે કે
...સંઘ-ઐક્ય યોજનાનો સ્વીકાર કરે

સાધુ–સંમેલન નિયોજક સમિતિ

ત્યારબાદ સાધુ સંમેલન ભરવાની આવશ્યકતા દર્શા-
તો અને સાધુ-સંમેલન મેળવવા અગે ઘટતી કાર્યવાહી
વા માટે એક કમિટી નીમતો ઠરાવ શ્રી ધીરજલાલ
તુરખીયાએ રજુ કર્યો હતો ઠરાવમા કમીટીના જે
ામો આપવામા આવે છે તે ઉપરાત જે કોઈ ભાઈ
ાતાની સેવા આપવા ઇચ્છા હોય તેઓ કોન્ફરન્સને
ખબર લખી જણાવે એટલુ, ઠરાવ રજુ કરીને શ્રી
...તુરખીયાએ ઉમેર્યુ હતુ શ્રી દુર્લભજી ઝવેરીએ
...રાવને ટેકો આપ્યો હતો

શ્રી ચીમનસિહજી લોઢાએ કહ્યુ કે સાધુ-સમેલન
ારતા પહેલા, તેમા વિચારવાની પ્રશ્નાવલી પ્રથમ તૈયાર
ાવી જોઇએ શ્રી ભવરલાલજી ઓહરાએ પણ સાધુ-
ામેલન ભરવાની આવશ્યકતા દર્શાવી હતી

શ્રી ધીરજભાઇ કે તુરખીયાના ઠરાવને શ્રી શાતિલાલ
ર્લભજી ઝવેરી ઉપરાત શ્રી જવાહરલાલજી મુણોત અને
ી નવલચદ અભેચદ મહેતાએ ટેકો આપ્યો હતો

પ્રસ્તુત ઠરાવ પર મત લેવાતા, એક મત વિરૂદ્ધમા હતો
તેથી નીચે મુજબ ઠરાવ બહુમતે પસાર થયો હતો –

પ્રસ્તાવ નં. ૯: આ અધિવેશન સઘ-ઐક્ય
...ને સફળ બનાવવા માટે ભારતના બધા સપ્રદ-
ાવાથી સાધુ-સમેલન યોગ્ય સ્થાન અને યોગ્ય સમય
ાધિવેશન ભરવાની આવશ્યકતા માને છે, સાધુ-સમેલન
ા અધિવેશન માટે તથા તેમા સર્વ પ્રકારનો સહયોગ દેવા
આ અધિ... સભ્યોની એક સાધુ સમેલન નિયોજક
સ્તાવો પસાર કરવામા આવે છે,

પ્રસ્તાવ નં. ...સમેલન બે વર્ષ સુધીમા બોલાવવુ
...પ્રત્યે સહાનુભૂતિ ... ભૂમિકા તૈયાર કરવા માટે યથા-
... (નાગપુર) જેવા ...મેલન કરવા જોઇએ, તેનુ સયો-
... છે. તેમણે તા ૪ માર્ચ ...ર્યવાહિયા કરશે.

ત્યારે બાદ સરકારી કાનૂનના વિષયમા અને ...
અગે નીચે મુજબ ઠરાવો સર્વાનુમતે મજૂર થ...

પ્રસ્તાવ નં. ૧૦: ધાર્મિક શિક્ષણ મ... ...ના
જૈન વિદ્યાર્થી અને વિદ્યાર્થીનીઓ માટે ... ...
જનરલ કમીટીની સુચનાનુસાર તૈયાર કરવામા આ...
છે–જે પૈકી બે પુસ્તકો હિંદીમા પ્રગટ થયેલ છે અને
બીજા પચ પુસ્તકો પ્રગટ થનાર છે તે કાર્ય પ્રતિ આ
અધિવેશન સતોષ પ્રગટ કરે છે અને રતલામ તેમજ
પાથર્ડી પરીક્ષા બોર્ડને તથા સર્વે સ્થા જૈન શિક્ષણ
સસ્થાઓને આ પાઠયપુસ્તકોને પાઠયક્રમમા સ્થાન આપ-
વાનો સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે

આક્રમક સરકારી કાનૂનો

પ્રસ્તાવ નં. ૧૧: અખીલ ભારતીય શ્વે સ્થા
વાસી જૈન કોન્ફરન્સનુ આ અધિવેશન ભારતની વર્તમાન
પ્રજાતત્રીય, કેન્દ્રિય અને પ્રાન્તીય તથા સસ્થાનિક સરકારને
માનપૂર્વક સાગ્રહ અનુરોધ કરે છે કે જૈન ...હતા.
માન્યતાઓ, સિદ્ધાતો અને સસ્કૃતિને આઘાત પહોંચે ...વિવા-
જૈનોના દિલ દુભાય તેવા નવા નવા કાનૂનો બન...તિથી
આવે નહિ; સરકારની શુભ ભાવના હોવા છતા ...યોદ્ધા
દિલ દુભાવવાની ભાવના ન હોવા છતા પણ ...
માન્યતાઓ અને સિદ્ધાતોના પૂરા ન સમજવાને કારણ
ગત વર્ષોમા કેટલીક એવી બાબતો લોકો સમક્ષ આવેલ
છે, જેમકે—

(અ) હિન્દુ શબ્દની વ્યાખ્યા સ્પષ્ટ ન કરતાં હિન્દુ
શબ્દમા જૈનોનો સમાવેશ કરવો

નોંધ:–હિન્દી પ્રજાના કોઇ વર્ગનો અમુક એક
ધર્મના અનુયાયી તરીકે ઉલ્લેખ કરવામા આવે ત્યારે
જૈનોનો સ્પષ્ટ અને સ્વતત્ર ઉલ્લેખ કરવો જોઇએ

(બ) બેકાર ભિખારીઓમા અપરિગ્રહી અને આત્માર્થી
સાધુ મુનિરાજોને પણ ગણી લેવા;

(ક) દીક્ષાર્થીના અભ્યાસની યોગ્યતાના વિષયોમા
કાનુની પરાધીનતા લાદવી, વગેરે

ધર્મ અને સસ્કૃતિના સરક્ષણ માટે જૈન ધર્મને
સ્વતત્ર રાખવો જરૂરી છે.

આ પ્રસ્તાવ કેન્દ્રીય, પ્રાતીય અને સસ્થાનિક
સરકારોના પ્રધાનોને મોકલવાની સત્તા પ્રમુખશ્રીને
આપવામા આવે છે

બહુ ઓછા પધારતા. કારણ કે તે સમયે ત્યા ચૈત્યવાસીઓનુ ઘણુ જોમ હતુ. અને તેમના તરફથી ઘણા ઉપદ્રવો થતા આ પરિસ્થિતિ સુધારવા માટે પ્રાગજીઋષિ અમદાવાદ આવ્યા. અને સારગપુર તળિયાની પોળમા ગુલાબચદ હીરાચદના મકાનમા ઊતર્યા

તેઓશ્રીના ઉપદેશથી અમદાવાદમા શા. ગિરધર શકર, પાનાચદ ઝવેરચદ, રાયચદ ઝવેરચદ, ખીમચદ ઝવેરચદ વગેરે શ્રાવકોને શુદ્ધ સાધુમાર્ગી જૈનધર્મની શ્રદ્ધા થઈ. આમ અમદાવાદમાં આ ધર્મનો પ્રચાર કરવાનું શ્રેય શ્રી પ્રાગજીઋષિને છે.

આ શુદ્ધ ધર્મના પ્રચારને લીધે સ. ૧૮૭૮ મા સાધુમાર્ગી પ્રત્યે મદિરમાર્ગી શ્રાવકોને ઈર્ષ્યા થવા લાગી છેવટે આ ઝઘડો કોર્ટમાં પહોચ્યો

સાધુમાર્ગીઓ તરફથી પૂજ્યશ્રી રૂપચદજીના શિષ્ય શ્રી જેઠમલજી વિગેરે સાધુઓ તથા સામા પક્ષ તરફથી વીરવિજય વિગેરે મુનિઓ અને શાસ્ત્રીઓ કોર્ટમા હાજર રહ્યા હતા.

સ ૧૮૭૮મા માહ વદ ૩ના રોજ આ ખટલાનો ચૂકાદો ન્યાયાધિશ જ્હોન સાહેબે આપ્યો અને તેમા સાધુમાર્ગીઓનો વિજય થયો

આ ઝઘડાના સ્મારકરૂપે સાધુમાર્ગીઓના સરદાર જેઠમલજી મહારાજે "સમકિત સાર" નામનો શાસ્ત્રીય ચર્ચા કરતો ગ્રથ રચ્યો છે, અને સામા પક્ષે ઉત્તમવિજયે 'ઢુઢકમત ખડનરાસ' નામે ૯૭ કડીનો એક રાસ લખ્યો છે, જેમા સાધુમાર્ગીઓને પેટ ભરીને ગાળો જ દેવામા આવી છે. આ રાસમા લખ્યુ છે કે.

> "જેઠો રીખ આવ્યો રે, કાગળ વાચી ફરી,
> પુસ્તક બહુ લાવ્યો રે, ગાડુ એક ભરી"

વિરોધ પક્ષના પ્રતિસ્પર્ધીઓ જ્યારે આમ લખે છે, ત્યારે એ સ્પષ્ટ થાય છે કે તે જમાનામાં જ્યારે મુદ્રણકળાનો વિકાસ થયો નહતો ત્યારે પણ આટલા બધા ગ્રથો અદાલતમા રજૂ કરનાર શ્રી જેઠમલજીનુ વાંચન કેટલુ વિશાળ હશે! ખરેખર તેઓ શાસ્ત્રજ્ઞાનના મલ્લ અને જંગ-મલ્લ જ હશે એમ સાધારણ રીતે માનવું જ પડે તેમ

જરૂરત માટે મહિલા સમ્મેલન પણ ઉત્સાહી કાર્યકરોએ યોજવાની તક લીધી હતી તથા ચારપાંચ હજાર બહેનોએ આ સમ્મેલનમાં ભાગ લઇ કોન્ફરન્સના કાર્યમાં પોતાનો સૂર પૂરાવ્યો હતો તેવી જ રીતે યુવકોએ પરસ્પરની નિકટ આવવાની આ તકનો લાભ લઇ યુવક સમ્મેલન પણ યોજ્યુ હતુ તથા વિચારોની આપ-લે કરી હતી

ઉત્સાહ, આશા, કંઇક કરવાની મનોવૃત્તિ અને સફળતાના હર્ષનાદો વચ્ચે સાધુ સમ્મેલન તથા યુવક સમ્મેલન પાર પડયા હતા અને હાજર રહેલ હજારો લોકોના હર્ષનાદ વચ્ચે જૈન સમાજનું ઐતિહાસિક મહાન કાર્ય પાર પડયુ હતુ ભગવાન મહાવીર પછીથી ઉત્તરોત્તર જે ભાગલાની પરિસ્થિતિ જૈન સમાજમા પ્રવર્તતી તેને

શ્વે૦ સ્થા૦ જૈન કૉન્ફરન્સ-સુવર્ણ ...ન્તી-ગ્રન્થ

તથા ...
એકતા સાથે બાળ મજૂરી કાનૂનના વિષયમા અને ...
મૂકયા છે એમ ... ઠરાવો સર્વાનુમતે મજૂર થયેલ ...
સાનો સૂર્ય જૈન સં. ૧૦: ધાર્મિક શિક્ષણ ...
ઊગ્યો છે અને જો સમવિદ્યાર્થીનીઓ માટે ...
પણ ધૈર્યપૂર્વક પ્રગતિ પન્થે ... તૈયાર કરવામા આ...
તો માત્ર જૈન સમાજનુ જ ... પ્રગટ થયેલ છે ...
ગચ્છના પોતે અંગ છે તેનું પણ ... તે કાર્ય પ્રતિ ...
તેમા શક નથી
... તલાશ તેમ...

જૈનમ્ જયતિ શાસનમ્ ' એ શુભ ... જૈન શિક્ષા...
—ચુનીલાલ ... ગ્રંથ ન આ...